अंग सुत्ताणी

16.4

3030

3030

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

१

आयारो • सूयगडो • ठाणं • समवाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ११००

मूल्य : ८५/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

I

ĀYĀRO • SŪYAGADO • THANAM •
SAMAWĀO •

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NAṬHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 1100

Rs. 85/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं।।

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं।।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं।।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

●

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक : **मुनि नथमल**
सहयोगी : मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन : ,, मुनि सुदर्शन
,, मुनि मधुकर
,, मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय
२. सम्पादकीय (हिन्दी)
३. भूमिका (हिन्दी)
४. सम्पादकीय (अंग्रेजी)
५. भूमिका (अंग्रेजी)
६. विषयानुक्रम
७. संकेत निर्देशिका
८. आयारो १
९. आयारचूला ८१
१०. सूयगडो २५१
११. ठाणं ४८७
१२. समवाओ ८२५

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल
२. आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर
३. शुद्धिपत्रम्

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुँचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये ? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गईं और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक वार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और में तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रवन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रंथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नही भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

आयारो—

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षापूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांच उद्देशकों में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढो पास' (आयारो, १।४०) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, १।५३) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है[1]।

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांचों उद्देशकों में स्वीकृत किए हैं।

आठवें अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्ठणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तंतुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ[3]।'

यहां प्रतीत होता है कि 'कुंभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दों से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं था इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ-संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० बेचरदास दोशी ने ८–१२–६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने

---

[1] देखें—आयारो, पृ० ७ पादटिप्पण ७; पृ० ९ पादटिप्पण ३०;
पृ० १० पादटिप्पण १; पृ० ११ पादटिप्पण ६;
पृ० १२ पादटिप्पण १; पृ० १३ पादटिप्पण ५;
पृ० १४ पादटिप्पण ८; पृ० १५ पादटिप्पण १;

[2] आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

[3] वही, पृ० २६१।

लिखा है—'प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरंभ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझकर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े, उतना अच्छा, ऐसा समझकर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहां तक कम आरंभ करना पड़े, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों की सहायता से हजारों श्लोक व सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।'

श्रुत को कंठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-सक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रंथ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयां भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौंदर्य की दृष्टि से हमारे वाचना-प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा कि संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमों को ग्रंथ-बद्ध करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहां-जहां शास्त्रों में समान पाठ आए वहां-वहां उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णागकुमारा जाव विहरन्ति', 'तेण कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि[1]।

इस परम्परा का प्रारंभ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तर-वर्ती काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र संक्षिप्त है तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठांश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये

---

[1] जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है[1]। लिपिकर्त्ता अनेक स्थलों में अपनी सुविधानुसार पूर्वागत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवर्ती आदर्शों में उनका अनुसरण होता चला जाता। उदाहरण स्वरूप—रायपसेणइय सूत्र में 'सव्विड्ढीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीणं) ऐसा पाठ मिलता है[2]। इस पाठ में अपूर्णता–सूचक संकेत भी नहीं है। 'सव्विड्ढीए' और 'अकालपरिहीणं' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—'सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूइए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निवाएणं महया इड्ढीए महया जुइए महया वलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमयपडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुभि-निग्घोस-नाइयरवेणं णियग परिवाल सद्धिं संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं।'

आयार-चूला ५।१४ में 'महद्धणमोल्लाइं' तथा १५।१६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं हैं।

प्रमादवश कहीं-कहीं अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—

फासुयं……………लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा। (आयारचूला १।१०१)

बहुकंटगं……………लाभे संते जाव णो…………। (आयारचूला १।१३४)

समर्पण-सूत्र—

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आयारचूला में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव—अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)

तहेव—अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४,३५)

एवं—एवं णायव्वं जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रुवपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा—पाणाइं जहा पिंडेसणाए (५।५)

संख्या—थूणंसि वा (४) (७।११)

असणं वा (४) (१।१२)

से भिक्खू वा २।

---

[1] औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७ :
पुस्तकान्तरे समग्रमिदं सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

[2] देखें—पं० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित 'रायपसेणइयं,' पृष्ठ ७३।

तं चेव—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४६-१५४)
सेसं तं चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो—एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३।४०-७५)

आचारांग का वाचना-भेद—

समवायांग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है[1]। वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएं प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत्त पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—'आयारो' पृष्ठ २० पादटिप्पण संख्यांक १०, पृष्ठ २१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३० पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३१ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ३५ पादटिप्पण संख्यांक ५, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ४० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५२ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ८, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ६, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ६६ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७३ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ४।

आचारांग के उद्धृत पाठ—

उत्तरवर्ती अनेक ग्रंथों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजितसूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं[2]।

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आंशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों के पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना	आचारांग
तथा चोक्तमाचाराङ्गे:— सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खादं। इह खलु संयमाभिमुखा दुविहा इत्थी पुरिसा जादा भवंति। तं जहा—सव्व समण्णा गदे णो सव्व समागदे चेव। तत्थ जे सव्व समण्णागदे थिरागं हत्थ पाणि पादे सव्विंदिय समण्णागदे तस्स णं णो कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं	× ×

---

[1] समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १३६।

[2] मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२।

एवं परिहिउं एवं अण्णत्थ एगेण पडिलेहगेण ।	
अह पुण एवं जाणिज्जा—उपातिकते हेमंते गिम्हे सुपडिवण्णे से अथ पडिजुण्णमुवधिं पदिट्ठावेज्ज । —४।४२१ टीका, पत्र ६११	अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवण्णे अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा । आयारो ८।५०, ६९, ७२ ।
पडिलेहणं, पादपुंछणं, उग्गहं कडासणं अण्णदरं उवधिं पावेज्ज । —४।४२१ टीका, पत्र ६११	वत्थं पडिग्गहं कंबलं, पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं एतेसु चेव जाणेज्जा । आयारो २।११२ ।
तथावत्थेसणाए—वुत्तं तत्थ एसे हिरिमणे सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणगं विदियं, तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणगं तदियं तत्थ एसे परिसाइं अणधिहासस्स तओ वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं चउत्थं । —४।४२१ टीका, पत्र ६११	जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारेज्जा णो वितियं । आयारचूला ५।२ ।
तथा पाएसणाए कथितं — हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णगे वा तस्स ण कप्पदि वत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पादचरित्तए ।	से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए ।
आलावु पत्तं वा दारुग पत्तं वा मट्टिगपत्तं वा, अप्पाणं अप्पबीजं अप्पसरिदं तथा अप्पकारं पत्तलाभे सति पडिग्गहिस्सामि । ४।४२१ टीका, पत्र ६११	तं जहा—अलाउपायं वा दारुपायं वा, मट्टिया पायं वा तहप्पगारं पायं ।—(आयारचूला ६।१) फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा । आयारचूला ६·२२
भावनायां चोक्तं— चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे । ४।४२१ टीका, पत्र ६११	× ×

प्रति परिचय

(अ.) आचारांग (दोनों श्रुतस्कंध)

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{१}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १-२७ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। संवत् आदि नहीं है।

(क.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। पंक्तियां १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अंत में लिखा हैं—

संवत् १६७९ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राक्याणगोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्तं श्री मदूनागपुरीय तपागच्छ सं० श्रीमानकीर्तिसूरि शिष्य माघव ज्योतिविद्।

अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में बावड़ी तथा तीन बड़े-बड़े लाल टीके हैं।

(ख.) आचारांग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियां पाठ की ७ तथा टब्बे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७३२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे।
लिखितं पूज्य ऋषिश्री ५ अमराजी तत्शिष्येण लिपिकृतं मुनिविकी
आत्मार्थो शुभं भवतु कल्याणमस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्ण मस्ति ॥

(ग.) आचारांग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) पंच पाठी (बालावबोध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४। इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक हैं। अन्तिम प्रशस्ति नहीं है।

(घ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध (जीर्ण)

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है।

इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इंच लम्बा, ५ इंच चौड़ा है। पक्तियां १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु। कल्याणमस्तु ॥छ॥ संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार समत्तं ॥छ॥ ॥छ॥ श्री ॥छ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र होगए हैं।

(च.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध,

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपतभाई ज्ञान भंडार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है। बीच में बावड़ी है।

(छ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके २९० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है मूलपाठ की पंक्तियां १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त हैं—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावणशुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ श्रीविक्रमपुरमध्ये लिपिकृतं ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभं भूयादिति ॥

(ब.) आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध टब्बा (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा १०$\frac{१}{२}$ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक अक्षर हैं। बीच-बीच में बावड़ियां हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भादपदमासे पंचम्यां तिथौ ओरसगच्छे भट्टारक श्रीकक्वसूरि तत्पट्टे वर्तमानभट्टारकदेवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी तपागच्छीय पं० श्री दयालदास पार्श्वान् पंचचत्वारिंशत् ४५ वर्षोत्तरात् महतोद्यमेन।

(वृ), (वृपा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्रीसिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति विक्रम संवत् १९९१।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि १९९८।

सूयगडो

हमने सूत्रकृत का पाठ किसी एक आदर्श को मान्य कर स्वीकार नहीं किया है। उसका स्वीकार पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि तथा वृत्ति के पाठों के तुलनात्मक अध्ययन तथा समीक्षापूर्वक किया गया है।

प्राचीनकाल में लिखने की पद्धति बहुत कम थी। प्रायः सभी ग्रन्थ कंठस्थ परम्परा में सुरक्षित रहते थे। इसीलिए घोषशुद्धि (उच्चारणशुद्धि) को बहुत महत्व दिया जाता था। शिष्यों की घोषशुद्धि करना आचार्य का एक कर्त्तव्य था। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र में लिखा है[1]—'घोषशुद्धि कारक होना आचार्य की एक संपदा है।' पाठ और अर्थ के मौलिक रूप की सुरक्षा के लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था थी। छेदसूत्रों से उसकी पूर्ण जानकारी मिलती है।

ज्ञानाचार के आठ प्रकार बतलाए गए हैं[2]। उनमें तीन आचारों का उक्त व्यवस्था से सम्बन्ध है। वे ये हैं[3]—

१. व्यंजन—सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु और शब्दों को यथावत् बनाए रखना।
२. अर्थ—सूत्र के आशय को यथावत् बनाए रखना।
३. व्यंजन-अर्थ—सूत्र और अर्थ—दोनों को मौलिक रूप में सुरक्षित रखना।

चूर्णिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है[4]—'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं'—यह प्राकृत भाषा है। इसका 'धर्मो मंगलमुत्कृष्टम्' इस प्रकार संस्कृत में पाठ करना भाषागत व्यंजनातिचार हैं।

'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'—इसकी मात्रा बदलकर जैसे—'सव्वे सावज्जे जोगे पच्चक्खामि', उच्चारण करना मात्रागत व्यंजनातिचार है। 'णमो अरहंताणं' का 'णमो अरहंताण' इस प्रकार प्राप्त बिन्दु को छोड़कर उच्चारण करना, 'णमो अरंहंताणं' इस प्रकार 'र' के साथ अप्राप्त बिन्दु का उच्चारण करना—यह बिन्दुगत ब्यंजनातिचार है।

---

[1] दशाश्रुतस्कन्ध, दशा ४।

[2] निशीथभाष्य, गाथा ८, भाग–१, पृ० ६ :

काले विणये बहुमाने, उवधाने तहा अणिण्हवणे।
वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविधो णाणमायारो॥

[3] वही, गाथा १७, भाग १, पृ० १२।

सक्कयमत्ताबिंदू, अण्णाभिधाणेण वा वि तं अत्थं।
वंजेति जेण अत्थं, वंजणमिति भण्णते सुत्तं॥

[4] निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १२।

'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।' इनके मौलिक शब्दों को हटाकर वहां उनके पर्यायवाची शब्दों की योजना करना, जैसे—पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं, दयासंवर-णिज्जरा। यह अन्याभिधान नामक व्यंजनातिचार है।

सूत्र के अक्षर-पदों का हीन या अतिरिक्त उच्चारण करना अथवा उनका अन्यथा उच्चारण करना भी व्यंजनातिचार है।

इस सारे विवरण का निष्कर्ष यह है कि सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, विन्दु, शब्द, शब्द-संख्या और पाठ्य-क्रम मौलिकता सुरक्षित रहनी चाहिए। इस व्यवस्था के अतिक्रमण के लिए प्रायश्चित्त की व्यवस्था की गई। भाषा, मात्रा, बिन्दु आदि का परिवर्तन करने पर लघुमासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है। सूत्रपाठ को अन्यथा करने पर लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[1]।

चूर्णिकार ने विषय के उपसंहार में लिखा है[2]—सूत्रभेद से अर्थभेद, अर्थभेद से चरणभेद, चरणभेद से मोक्ष असंभव हो जाता है। वैसा होने पर दीक्षा आदि कर्म प्रयोजन-शून्य हो जाते है। इसलिए व्यंजन-भेद नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार अर्थभेद भी नहीं करना चाहिए। जो अर्थ अनुक्त और अघटित हो, वह नहीं करना चाहिए। अर्थ का परिवर्तन करने पर गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[3]।

सूत्र और अर्थ दोनों का एक साथ परिवर्तन करने पर पूर्वोक्त दोनों प्रायश्चित्त प्राप्त होते हैं।[4]

सूत्र और अर्थ के मौलिक स्वरूप के सुरक्षित रखने की दिशा में आगमों के रचना-काल में चिन्तन प्रारंभ हो गया था। प्रस्तुत सूत्र में इसका स्पष्ट निर्देश है। ग्रन्थाध्ययन में मुनि को सावधान किया गया है कि वह सूत्र और अर्थ की अन्यरूप में योजना न करे। अथवा

---

[1] निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२।

[2] निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२ :
सुत्तभेया अत्थभेओ। अत्थभेया चरणभेओ। चरणभेया अमोक्खो मोक्खाभावा दिक्खादयो किरियाभेदा अफला भवन्ति। तम्हा वंजणभेदो ण कायव्वो।

[3] निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १३।

[4] वही;

उसका अन्यथा प्रतिपादन न करे[1]। इसकी व्याख्या में चूर्णिकार ने लिखा है[2]——सूत्र को सर्वथा ही अन्यथा न करे। अर्थ वही करे जो स्वसिद्धान्त से अविरुद्ध है। वृत्तिकार ने लिखा है[3]——सूत्र में स्वमति से न जोड़े अथवा सूत्र और अर्थ को अन्यथा न करे।

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि सूत्र अर्थ के मौलिक स्वरूप की सुरक्षा का तीव्र प्रयत्न किया गया था। फलतः एक सीमा तक उसकी सुरक्षा भी हुई है। फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि उसमें परिवर्तन नहीं हुआ है। वह उसके कारण भी प्राप्त हैं। जैसे——

१. विस्मृति, २. लिपिपरिवर्तन, ३. व्याख्या का मूल में प्रवेश, ४. देश-काल का व्यवधान।

शीलांकसूरि सूत्रकृतांग की वृत्ति लिख रहे थे तब उनके सामने उसके आदर्श और प्राचीन टीका——दोनों विद्यमान थे। दूसरे श्रुतस्कन्ध के दूसरे अध्ययन के एक स्थल में आदर्शों में एक जैसा पाठ नहीं था और टीका में जो पाठ व्याख्यात था उसका संवादी पाठ किसी भी आदर्श में नहीं था। इसलिए उन्होंने एक आदर्श को मान्य कर चर्चित अंश की व्याख्या की[4]।

कुछ स्थानों पर हमने चूर्णि के पाठ स्वीकृत किए हैं। आदर्शों और वृत्ति की अपेक्षा से वे अधिक संगत प्रतीत होते हैं।

२।६।४५ में 'णिहो णिसं' पाठ है। वह वृत्ति में 'णिवो णिसं' इस प्रकार व्याख्यात है। वहां हमने चूर्णि का पाठ स्वीकृत किया है।[5]

पादटिप्पणों में हमने पाठ-परिवर्तन व उनके कारणों की चर्चा की है। वैदिक परम्परा में भी वेदों के मौलिक पाठ की सुरक्षा के लिए तीव्र प्रयत्न किए थे। किन्तु उनके पाठों में भी कालजनित अतिक्रमण हुए हैं। डा० विश्वबन्धु ने लिखा है[6]——"यह सर्वमान्य तथ्य है

---

[1] सूयगडो, १।१४।२६ :
णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्णं।

[2] सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० २९६ :
न सूत्रमन्यत् प्रद्वेषेण करोत्यन्यथा वा, जहा रण्णो भत्तंसिणो उज्ज्वलप्रश्नो नामार्थः तमपि नान्यथा कुर्यात्, जहा 'आवंती के आवंती—एके यावंती तं लोगो विप्परामसंति' सूत्रं सर्वथैवान्यथा न कर्त्तव्यं, अर्थविकल्पस्तु स्वसिद्धान्ताविरुद्धो अविरुद्धः स्यात्।

[3] सूत्रकृतांगवृत्ति, पत्र २५८ :
न च सूत्रमन्यत् स्वमतिविकल्पनतः स्वपरत्रायी कुर्वीतान्यथा
वा सूत्रं तदर्थं वा संसारात्त्रायीत्राणशीलो जन्तूनां न विदधीत।

[4] वही, पत्र ७९।
इह च प्रायः सूत्रादर्शे नानाभिधानि सूत्राणि दृश्यन्ते, न च टीकासंवाद्येकोप्यस्माभिरादर्शः समुपलब्धोऽत एकमादर्शमंगीकृत्यास्माभिर्विवरणं क्रियते।

[5] देखें—२।६।४५ का पादटिप्पण।

[6] अखिल भारतीय प्राच्य-विद्या-सम्मेलन, चौबीसवां अधिवेशन, वाराणसी १९६८, मुख्याध्यक्षीय भाषण, पृष्ठ ८, ९।

कि लगभग ५ हजार वर्षों से इस देश में वैदिक ग्रन्थों के प्राचीन पाठों को उनके मौलिक शुद्धरूप में सुरक्षित रखने के लिए उन्हें परम सावधानी और उत्कृष्ट श्रद्धा के साथ कण्ठस्थ करने का इतना घोर प्रयत्न होता रहा है कि जिसका किसी भी दूसरे देश के साहित्यिक इतिहास में उदाहरण नहीं है। किन्तु ऐसा होने पर भी, जैसा कि इस वैदिक अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले हमारे पूर्ववर्ती विद्वानों को देखने में संयोगवश कुछ-कुछ और गत चालीस वर्षों के सतत शोध कार्य के मध्य में हमारे देखने में, विस्तृत रूप में आया है कि ये ग्रन्थ भी कालकृत विध्वंस और मानवकृत संक्रमण की अपूर्णता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। यदि ऐसा बहुधा होता तो सचमुच यह एक अविश्वसनीय चमत्कार ही होता।"

कण्ठस्थ-परंपरा से चलने वाले तथा प्रलंब अवधि में लिपि-परिवर्तन के युग में संक्रमण करने वाले प्रत्येक ग्रन्थ के कुछ स्थल मौलिकता से इतस्ततः हुए हैं।

प्रतिपरिचय

(क) सूत्रकृतांग मूलपाठ

यह प्रति 'धेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र-संख्या ९४ व पृष्ठ संख्या १८८ है। प्रत्येक पत्र मे ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३७ तक अक्षर है। प्रति की लम्बाई ११॥ इंच व चौड़ाई ४॥। इंच है। प्रति शुद्ध व बड़े अक्षरों में स्पष्ट लिखी हुई है। यह प्रति संवत् १५८१ में लिखी हुई है। इसके अन्त में निम्न प्रशस्ति है।—

संवत् १५८१ वर्षे पत्तन नगरे श्री खरतरगच्छे श्रौ जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि। श्री जिनसागरसूरि। श्री जिनसुन्दरसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनहर्षसूरिपट्टे श्री जिनचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ऊकेशवंशे साधुशाखायां। सो० जीवाभार्या श्रावारुपुत्ररत्न सो० महिपाल सो० गांगाख्यो सा० तंत्र सो गांगा भार्या श्रा० धीरुपुत्र सो० पदमसी सो० हरिचंदविद्यमानपुत्र सो० शिवचन्द सो० देवचंद्राभ्या श्री एकादशांगी सूत्राणि अलेखिषत तत्रेदं श्री सूत्रकृतांगसूत्रं। सम्पूर्णः ॥श्री रस्तु॥

(ख) सूत्रकृतांग बालावबोध प्रथमश्रुतस्कन्ध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदाशहर की है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। इसके पत्र ४३ व पृष्ठ ८६ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ५-६ करीब हैं व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ६०-६२ करीब हैं। प्रति की लम्बाई १०$\frac{३}{४}$ इंच व चौड़ाई ४$\frac{१}{२}$ इंच है। अनुमानतः यह प्रति १७वीं शताब्दि की लगती है। प्रति के अन्त में प्रशस्ति नहीं है।

(ग) सूत्रकृतांग द्वितीय बालावबोध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'घेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसके पत्र ६५ व पृष्ठ १३० है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ४ से १२ तक हैं व प्रत्येक में ४५ से ५० तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १० इंच व चौड़ाई ४$\frac{१}{२}$ इंच करीब है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है––

मूलपाठ प्रशस्ति––सूयगडस्स बीयं खंधो सम्मत्ते। श्री सूगडांग द्वितीय श्रुतस्कन्धः सूत्र संपूर्ण समाप्तः ॥ सुभं भवतु, कल्याणमस्तु। श्री रस्तुः ॥ ब ॥ ब ॥ पंड्या भवांन सूत मेघज्जी लक्षतं ॥ बालावबोध प्रशस्ति––सूत्रकृतं आदितः सर्वमध्ययनं ।२३। श्री साधुरत्त-शिष्येण पाशचन्द्रेण वृत्तितः बालावबोधार्थं द्वितीयांगस्यवार्त्तिकं सम्पूर्णः ॥ ब ॥ सूभ भवतुः। कल्याणमस्तुः श्रीरस्तु ॥ संवत् ॥ १६६३ वर्षे फागुणवदि ८ बुधे प्रति सूगडांगनी पूरी कीधी प्रति ठीक है।

(क्व) सूत्रकृतांग बालावबोध पंचपाठी

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त, पत्र संख्या ६८ व पष्ठ १३६। पाठ की पंक्तियां एक से १३ तक व प्रत्येक पंक्ति में ३४ से ३७ करीब अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०$\frac{१}{४}$ इंच व चौड़ाई ४$\frac{१}{२}$ इंच करीब है। संवत् व प्रशस्ति नहीं है। आनुमानिक सं० १७वीं शदी।

(क्व) सूत्रकृतांग (मूलपाठ) निर्युक्ति सहित

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ४२ व पृष्ठ संख्या ८४ है। प्रत्येक पत्र में १६ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ६३ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १३ इंच व चौड़ाई ४$\frac{१}{४}$ इंच है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—सूयगडस्स निज्जुत्ती सम्मत्ता। पद्मोपमं पत्रपरं परान्वितं, वर्णोज्जलसूक्तमरदं सुन्दरं मुमुक्षु-भृंगप्रकरस्यवल्लभं, जीयाच्चिरं सूत्रकृदंग पुस्तकं ॥ संवत १५१२ वर्षे आसोज वदि दीपा ॥ ऊएसगच्छे भट्टारक श्रीकक्कसूरीणां ॥ विक्रमपुरे ॥

(वृ) सूत्रकृतांग वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। इसके पत्र ९० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६७ के करीब अक्षर है। इसकी लम्बाई १०$\frac{३}{४}$ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रति सुन्दर व सूक्ष्म अक्षरों में लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—

शुभं भवतु संवत् १५२५ वर्षे श्री यवनपुर नगरे। श्रीखरतरगच्छे। श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकार श्री जिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये। श्री कमल संयमे। महोपाध्यायैः स्ववाचनार्थं ग्रंथोयं लेखितः

॥श्रीः॥ व ॥श्रीः॥ श्री पद्मकीर्त्युपाठकेभ्यः पं० महिमसारगणिना प्रतिरियं प्रदत्ता स्वपुण्यार्थं ॥

(वृ०) सूत्रकृतांग वृत्ति मुद्रित श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी ।

(चू०) सूत्रकृतांग चूर्णि मुद्रित श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्वर संस्था रतलाम ।

ठाणं

प्राकृत में एक शब्द के अनेक रूप बनते हैं। आगमों में वे अनेक रूप प्रयुक्त भी हैं। आगम का संपादन करने वाले कुछ विद्वानों का यह आग्रह रहा है कि पाठ-संपादन में विभिन्न रूपों में एकरूपता लानी चाहिए। हमने पाठ-संपादन की इस पद्धति को मान्य नहीं किया है। यद्यपि प्रस्तुत सूत्र में 'नकार' और 'णकार' की एकता स्वीकार कर सर्वत्र 'णकार' का ही प्रयोग किया है; पर रूप-भेदों में एकता लाने के सिद्धान्त का सर्वत्र उपयोग नहीं किया है। ३।३७३ में 'सुगती' और 'सुग्गती'—ये दो रूप मिलते हैं। ३।३७५ में 'सोगता', 'सुगता' और 'सुग्गता'—ये तीन रूप मिलते हैं। हमने उन्हें यथावत् रखा है। ग्रंथकार प्रयोग करने में स्वतन्त्र हैं। वे एकरूपता के नियम से बंधे हुए नहीं हैं, फिर संपादन कार्य में एकरूपता का प्रयत्न अपेक्षित नहीं लगता।

आगमों में अनेक भाषाओं और वर्णादेशों के विविध प्रयोग मिलते हैं। उनमें एकरूपता लाने पर विविधता की विस्मृति की संभावना हो सकती है। 'वाएणं', 'कायसा'—ये दोनों रूप प्रयुक्त होते हैं। 'अंडजा' के 'अंडया' और 'अंडगा' तथा 'कर्मभूमिजा' के 'कम्मभूमिया' और 'कम्मभूमिगा'—ये दोनों रूप बनते हैं। जिस स्थल में जो रूप प्राप्त हो उस स्थल में उसे रखना संपादन की त्रुटि नहीं है।

प्रति परिचय

(क) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र ७४ तथा पृष्ठ १४८ हैं। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां, प्रत्येक पंक्ति में ६० के करीब अक्षर हैं। यह प्रति १०॥ इंच लम्बी ४॥ इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। लिपि संवत् १५६५। प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ॥छ॥ श्री खरतरगच्छे श्री सागरचन्द्राचार्यान्वये वा० दयासागरगणिभिः स्वशिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिवाचनार्थं ग्रंथोऽयं लेखयांचक्रे ॥ संवत् १५६५ वर्षे जिनश्रीवर्धमानसंवत् २०३५ वर्षे चैत्रप्रथमाष्टम्यां श्री वोहिथिरागोत्रे मंत्रीश्वरवच्छराज नंदन प्रधानशिरोमणि मं० वरसिंहगेहिन्या मंत्रिणी वीऊलदेवी श्री विकया पुत्र मं० मेघराज मं० भोजराज मं० नगराज मं० हरिराज मं० अमरसिंह मं० डूंगरसिंह पुत्रिका वीराई

प्रभृति पौत्रादि परिवारपरिवृतया सुपुण्यार्थं श्री ज्ञानभक्तिनिमित्तं श्री स्थानांग सूत्रवृत्तिसहितं लेखयित्वा विहारितं श्रीखरतरगच्छे वृहतिश्रीवीकानयरे श्रीजिनहंससूरि विजयिराज्ये वा० महिमराजगणीद्राणां शिष्य वा० दयासागगणीवराणां शिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिदेवतिलकादिपरिवृतानां वाच्यमानं चिरं नंदतु। शुभं वोभोतु श्री चतुर्विध श्री संघाय ॥छ॥ श्री रस्तु ॥

(ख) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

घेवर पुस्तकालय सुजानगढ़ से प्राप्त। इसके पत्र १०८ और पृष्ठ २१६ है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां। प्रत्येक पंक्ति में ४५ करीब अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध तथा स्पष्ट है। लिपि संवत् १६८५ है।

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त (वृत्ति की प्रति)।
इसके पत्र २८३ और पृष्ठ ५६६ हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच है तथा चौड़ाई ४½ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५८ से ६० तक अक्षर हैं।

(घ) ठाणांग (मूलपाठ)

यह प्रति लालभाई भाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) की है। इसके पत्र ६६ तथा पृष्ठ १३२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। पत्रों के दोनों ओर कलात्मक वापिका है। अन्त में लिखा है—
संवत् १५१७ वर्षे ठाणांग सूत्रं लेखयित्वा तेषामेव गुरुणामुपकारिता। साधुजनैर्वा चिरं नंदतात् ॥छ॥ ॥०॥

समवाओ

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-संशोधन तीन आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। कुल स्थलों में पाठ-संशोधन के लिए अन्य ग्रन्थों का भी उपयोग किया गया है। प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३४) में प्रयुक्त आदर्शों में 'अस्ससेणे' पाठ नहीं है। यह चतुर्थ चक्रवर्ती के पिता का नाम है। इसके बिना अगले नामों की व्यवस्था विसंगत हो जाती है। उल्लिखित सूत्र की संग्रह गाथाओं में पद्मोत्तर नाम अतिरिक्त है। इसे पाठान्तर रूप में स्वीकार किया गया है। आवश्यक निर्युक्ति (३९९) में 'अस्ससेणे' पाठ उपलब्ध है। उसके आधार पर 'अस्ससेणे' मूल-पाठ के रूप में स्वीकृत किया गया है।

प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३०) की संग्रह गाथा में बलदेव वासुदेव के पिता के नाम है। उक्त गाथा में स्थानांग (९।१९) तथा आवश्यक निर्युक्ति (४११)के आधार पर संशोधन

किया गया है। तीसरे बलदेव-वासुदेव के पिता का नाम रुद्द है, किन्तु समवायांग की हस्तलिखित वृत्ति में 'रुद्द' के स्थान में 'सोम' है। वस्तुतः 'सोम' के वाद रुद्द' होना चाहिए[1]।

समवाय ३० (सूत्र १, गाथा २६) में सभी सभी आदर्शों में 'सज्झायवायं' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने भी उसकी स्वाध्यायवादं—इस रूप में व्याख्या की है। अर्थ की दृष्टि से यह संगत नहीं है। दशाश्रुतस्कन्ध (सूत्र २६) में उक्त गाथा उपलब्ध है। उसमें 'सज्झाय-वायं' के स्थान पर 'सब्भाववायं' पाठ है। दशाश्रुतस्कन्ध के वृत्तिकार ने इसका संस्कृत रूप 'सद्भाववादं' किया है। अर्थ-मीमांसा करने पर यह पाठ संगत प्रतीत होता है।[2]

प्राचीन लिपि में संयुक्त 'झकार' और संयुक्त 'भकार' एक जैसे लिखे जाते थे। इस प्रकार के लिपिहेतुक पाठ-परिवर्तन अनेक स्थानों में प्राप्त होते हैं।

प्रति परिचय

(क) समवायांग मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्दजी गोठी, सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६४ तथा पृष्ठ १२८ हैं किन्तु २४ वां पत्र नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ में ४ या ५ पंक्तियां हैं तथा प्रत्येक पंक्ति में ११० अक्षर हैं। लिपि सं० १४०१।

(ख) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १०६ तथा पृष्ठ २१२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति में ३०,३२ अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। इसके अन्त में संवत् दिया हुआ नहीं है। किन्तु पत्रों की जीर्णता व लिपि के आधार पर यह पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के लगभग की है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—

।।छ।। समवाउ चउत्थमंगं ।।छ।। अंकतोपि ग्रंथाग्र १६६७ ।।छ।।

(ग) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों तरफ वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र ८१ तथा पृष्ठ १६२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से १२ पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ४७ तक अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। लिपि संवत् १३४५ लिखा है; पर संवत् की लिखावट से कुछ संदिग्ध सा लगता है। फिर भी प्राचीन है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है—

---

[1] देखें, समवाओ, पइण्णगसमवाओ सू० २३० का पाद-टिप्पण।

[2] देखें, समवाओ, समवाय ३०, सू० १, गाथा २६ का दूसरा पाद-टिप्पण।

॥छ॥ समवाउ चउत्थमंगं संमत्तं ॥छ॥ ग्रंथाग्र १६६७ ॥छ॥

इस प्रति में पाठ बहुत संक्षिप्त है। अनेक स्थानों पर केवल प्रथम अक्षर ही लिखे गए हैं।

श्रीमदभयदेवसूरिवृत्तिः (मुद्रित)—

प्रकाशक—श्रेष्ठी माणिकलाल चुन्नीलाल, कान्तिलाल, चुन्नीलाल—अहमदाबाद।

संपादक—मास्टर नगीनदास, नेमचन्द।

सहयोगानुभूति—

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज ये १५०० वर्ष पूर्व त… आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टि समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप-सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगमवाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापनकर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्यश्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठ संपादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि शुभकरणजी इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबंध-संपादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ये कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, जैन विश्व भारती के कार्यालय तथा आदर्श साहित्य संघ के कार्यालय के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

मुनि नथमल

अणुव्रत-विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस

भूमिका

१. आगमों का वर्गीकरण

जैन साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—द्वादशांग गणिपिटक[1] और चतुर्दश पूर्व[2]। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य[3]। आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन विषयक जितने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अंगों और पूर्वों से संबंधित हैं। जैसे—

१. सामायिक आदि ग्यारह अंगों को पढ़ने वाले—'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, पंचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्ज़इ' (अंतगड, षष्ठ वर्ग १५वां अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तककुमार के विषय में प्राप्त है।

२. बारह अंगों को पढ़ने वाले—'बारसंगी' (अंतगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

३. चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ' (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विषय में प्राप्त है।

---

[1] समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८।
[2] वही, समवाय १४, सू० २।
[3] नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के साढ़े तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[1]।

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[2]।

समवायांग और अनुयोगद्वार में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य का विभाग नहीं है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अंग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरों ने की है। नंदी की रचना से पूर्व अनेक अंग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दस-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचे गये थे। इस लिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप आगम के दो विभाग किए गए—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। यह विभाग अनुयोगद्वार (वीर-निर्वाण छठी शताब्दी) तक नहीं हुआ था। यह सबसे पहले नंदी (वीर-निर्वाण दसवीं शताब्दी) में हुआ है।

नंदी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते हैं—पूर्व, अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। आज 'अंग-प्रविष्ट' और 'अंग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं हैं। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२. पूर्व

जैन परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एक मत नहीं हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया[3]। आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है[4]। दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वों की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए हैं। बारहवां अंग दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है—पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्वगत' के अन्तर्गत हैं। भगवान् महावीर ने प्रारंभ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवां अंग—ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्वसाधारण के लिए वह

---

[1] समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १४।

[2] वही, सू० १२।

[3] समवायांग वृत्ति, पत्र १०१।
प्रथनं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।

[4] नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४०:
अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थमर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

सुलभ नहीं था। अंगों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद में समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अंगों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई[1]। ग्यारह अंगों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अंग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिगम्बर परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण बासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उनके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उनके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। उनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अंगधर रहे[2]।

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अंगों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अंगों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवें अंग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अंगों को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले––ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,[3] फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अंगों के अध्येता नहीं थे और बारह अंगों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है[4]। वे चतुर्दश-पूर्वी और अंगधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशांगवित्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया है।

ग्यारह अंग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है, वह स्वाभाविक रूप से द्वादशांगवित् होता है। बारहवें अंग में चौदह पूर्व समाविष्ट हैं। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः चतुर्दश-पूर्व होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं––चौदह पूर्व और ग्यारह अंग। द्वादशांगी का स्वतन्त्र स्थान नहीं है। यह पूर्वों और अंगों का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पूर्वों को भगवान् पार्श्वकालीन और अंगों को भगवान् महावीरकालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पूर्वों और अंगों की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अंग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब मुनियों का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे

---

[1] विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५४ :

जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य॥

[2] जयधवला, प्रस्तावना पृष्ठ ४९।

[3] देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

[4] उत्तराध्ययन, २३।७।

माना जा सकता है ? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी बिन्दु पर पहुंचते हैं कि अंगो की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है, इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अंग नहीं। सामान्य ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वों और अंगों का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अंग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में सम्भवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३. अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-काल में गौतम आदि गणधरों ने पूर्वों और अंगों की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य मुनियों ने आगम ग्रन्थों की रचना नहीं की। यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे[1]। उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नही की, ऐसा सम्भव नहीं लगता। नंदी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे[2]। ये पूर्वों और अंगो से अतिरिक्त थे। उस समय अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने ग्रंथ रचे तब संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रामाण्य और अप्रामाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दश-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचित ग्रन्थों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रामाण्य परतः था। वे द्वादशांगी में अविरुद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रामाण्य था, इसीलिए उन्हें अंग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के सन्दर्भ में आगम की अंग-बाह्य कोटि का उद्‌भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

१. जो गणधर कृत होता है,

२. जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है

---

[1] समवाओ, समवाय १४, सू० ४।

[2] नन्दी, सू० ७८ :
चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

३. जो ध्रुव—शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अंग-प्रविष्ट होता है[1]।

इसके विपरीत।

१. जो स्थविर-कृत होता है,

२. जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है,

३. जो चल होता है, तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अंग-बाह्य है।

अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है[2]। जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अंगों के रूप में स्वीकृत होता है इसलिए उसे अंग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—१. तीर्थंकर २. श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और ३. आरातीय[3]। आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अंग-बाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अंग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते हैं इसीलिए वे अंग-बाह्य कहलाते हैं[4]। अंग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग-स्थानीय हैं।

४. अंग

द्वादशागी में संगर्भित बारह आगमों को अंग कहा गया है। अंग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अंग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

१. शिक्षा—शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।

२. कल्प—वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।

३. व्याकरण—पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।

४. निरुक्त—पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।

५. छन्द—मन्त्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक-शास्त्र।

६. ज्योतिष—यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

---

[1] विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२ :

गणहर-थेरकयं वा, आएसा मुक्क-वागरणओ वा।
धुव-चल विसेसओ वा, अंगाणंगेसु नाणत्तं॥

[2] तत्त्वार्थभाष्य, १।२० :

वक्तृ-विशेषाद् द्वैविध्यम्।

[3] सर्वार्थसिद्धि, १।२० :

त्रयो वक्तारः—सर्वज्ञस्तीर्थंकरः, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

[4] तत्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :

आरातीयाचार्यकृतांगार्थं प्रत्यासन्नरूपमंगबाह्यम्।

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गयी है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए ये वेद-शरीर के अंग कहलाते हैं[1]।

पालि-साहित्य में भी, 'अंग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्धवचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

नवांग—

१. सुत्त—भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
२. गेय्य—गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
३. वैय्याकरण—व्याख्यापरक ग्रन्थ।
४. गाथा—पद्य में रचित ग्रन्थ।
५. उदान—बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्‌गार।
६. इतिवुत्तक—छोटे-छोटे व्याख्यान, जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसा कहा' से होता है।
७. जातक—बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएं।
८. अब्भुतधम्म—अद्‌भुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
९. वेदल्ल—वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं[2]।

द्वादशांग—

१. सूत्र, २. गेय, ३. व्याकरण, ४. गाथा, ५. उदान, ६. अवदान ७. इतिवृत्तक, ८. निदान, ९. वैपुल्य, १०. जातक, ११. उपदेश-धर्म और १२. अद्‌भुत-धर्म[3]।

जैनागम बारह अंगो में विभक्त हैं—१. आचार, २. सूत्रकृत, ३. स्थान, ४. समवाय, ५. भगवती, ६. ज्ञाताधर्मकथा, ७. उपासकदशा, ८. अन्तकृतदशा, ९. अनुत्तरोपपातिकदशा, १०. प्रश्न-व्याकरण, ११. विपाक और १२. दृष्टिवाद।

'अंग' शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में हुआ है। वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं। उनके साथ 'अंग' शब्द का कोई योग नहीं है। जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है। उसके साथ 'अंग' शब्द का योग हुआ है। गणिपिटक के बारह अंग हैं—'दुवालसंगे गणिपिडगे'[4]।

---

[1] पाणिनीयशिक्षा, ४१।४२।

[2] सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, पृ० ३४

[3] बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालंकार' की टीका' पृ० ३५ :

सूत्रं गेयं व्याकरणं, गाथोदानावदानकम्।
इतिवृत्तकं निदानं, वैपुल्यं च सजातकम्।
उपदेशाद्‌भुतौ धर्मौ, द्वादशांगमिदं वचः॥

[4] समवाओ पइण्णगसमवाओ, सूत्र ८८।

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है। आचार आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अंगस्थानीय हैं। संभवतः इसीलिए उन्हें बारह अंग कहा गया[१]। इस प्रकार द्वादशांग 'गणिपिटक' और 'श्रुत-पुरुष'—दोनों का विशेषण बनता है।

आयारो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का पहला अंग है। इसमें आचार का वर्णन है, इसलिए इसका नाम 'आयारो' (आचार) है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं—आयरो और आयारचूला।

विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन, और शयितासन), गमन, चंक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुंजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है[२]।

आचार्य उमास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है[३]—

१. षड्जीवकाय यतना।
२. लौकिक संतान का गौरव-त्याग।
३. शीत-ऊष्ण आदि परीषहों पर विजय।
४. अप्रकम्पनीय सम्यक्त्व।
५. संसार से उद्वेग।
६. कर्मों को क्षीण करने का उपाय।
७. वैयावृत्य का उद्योग।
८. तपस्या की विधि।
९. स्त्री-संग-त्याग।

---

[१] मूलाराधना, ४।५९९ विजयोदया :
श्रुतं पुरुषः मुखचरणाद्यंगस्थानीयत्वादंगशब्देनोच्यते।

[२] (क) समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९।
(ख) नंदी, सू० ८०।

[३] प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७।

१०. विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण।
११. स्त्री, पशु, क्लीव आदि से रहित शय्या।
१२. गति-शुद्धि।
१३. भाषा-शुद्धि।
१४. वस्त्र की एषणा-पद्धति।
१५. पात्र की एषणा-पद्धति।
१६. अवग्रह-शुद्धि।
१७. स्थान-शुद्धि।
१८. निषद्या-शुद्धि।
१९. व्युत्सर्ग-शुद्धि।
२०. शब्दासक्ति-परित्याग।
२१. रूपासक्ति-परित्याग।
२२. परक्रिया-वर्जन।
२३. अन्योन्यक्रिया-वर्जन।
२४. पंच महाव्रतों की दृढ़ता।
२५. सर्वसंगों से विमुक्तता।

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

१. सत्थपरिण्णा—जीव संयम।
२. लोगविजय—बंध और मुक्ति का प्रबोध।
३. सीओसणिज्ज—सुख-दुःख-तितिक्षा।
४. सम्मत्त—सम्यक्-दृष्टिकोण।
५. लोगसार—असार का परित्याग और लोक में सारभूत रत्नत्रयी की आराधना।
६. धुय—अनासक्ति।
७. महापरिण्णा—मोह से उत्पन्न परीषहों और उपसर्गों का सम्यक् सहन।
८. विमोक्ख—निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-आराधना।
९. उवहाणसुय—भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन[1]।

---

[1] आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३३, ३४ :
जिअसंजमी अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजहियव्वं।
सुहदुक्खतितिक्खाबिय, सम्मत्तं लोगसारो य॥
निस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा।
निज्जाणं अट्ठमए नवमे य जिणेण एवंति॥

आचार्य अकलंक के अनुसार आचारांग का समग्र विषय चर्या-विधान[1] तथा अपराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है[2]।

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पांच प्रकार बतलाए गए हैं—१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चरित्राचार, ४. तपाचार और ५. वीर्याचार[3]। प्रस्तुत सूत्र में इन पांचों आचारों का निरूपण है

सूयगडो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का दूसरा अंग है। इसका नाम 'सूयगडो' है। समवाय, नंदी और अनुयोगद्वार—तीनों आगमों में यही नाम उपलब्ध होता है[4]। निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी ने प्रस्तुत आगम के गुण-निष्पन्न नाम तीन बतलाए हैं[5]—

१. सूतगड—सूतकृत
२. सुत्तकड—सूत्रकृत
३. सूयगड—सूचाकृत

प्रस्तुत आगम मौलिक दृष्टि से भगवान् महावीर से सूत (उत्पन्न) है तथा यह ग्रन्थरूप में गणधर के द्वारा कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूतकृत' है।

इसमें सूत्र के अनुसार तत्त्वबोध किया जाता है, इसलिए इसका नाम 'सूत्रकृत' है।

इसमें स्व और पर समय की सूचना कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूचाकृत' है।

वस्तुतः सूत, सुत्त और सूय—ये तीनों सूत्र के ही प्राकृत रूप हैं। आकार भेद होने के कारण तीन गुणात्मक नामों की परिकल्पना की गई है।

---

[1] तत्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :
आचारे चर्याविधानं शुद्ध्यष्टकपंचसमितित्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते।

[2] मूलाराधना, आश्वास २, श्लोक १३०, विजयोदया:
रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथमभंगमाचारशब्देनोच्यते।

[3] समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९ :
से समासओ पंचविहे पं० तं—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे।

[4] (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८
(ख) नंदी, सू० ८०।
(ग) अणुओगदाराइं, सू० ५०।

[5] सूत्रकृतांगनिर्युक्ति, गाथा २ :
सूतगडं सुत्तकडं सूयगडं चेव गोण्णाइं।

सभी अंग मौलिक रूप में भगवान् महावीर द्वारा प्रस्तुत और गणधर द्वारा ग्रन्थरूप में प्रणीत हैं। फिर केवल प्रस्तुत आगम का ही सूत्रकृत नाम क्यों? इसी प्रकार दूसरा नाम भी सभी अंगों के लिए सामान्य है। प्रस्तुत आगम के नाम का अर्थस्पर्शी आधार तीसरा है। क्योंकि प्रस्तुत आगम में स्वसमय और परसमय की तुलनात्मक सूत्रता के सन्दर्भ में आचार की प्रस्थापना की गई है। इसलिए इसका संबंध सूचना से है। समवाय और नंदी में यह स्पष्टतया उल्लिखित है—'सूयगडे णं ससमयासूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमय-परसमया सूइज्जंति[1]।

जो सूचक होता है उसे सूत्र कहा जाता है। प्रस्तुत आगम की पृष्ठभूमि में सूचनात्मक तत्त्व की प्रधानता है, इसलिए इसका नाम सूत्रकृत है।

सूत्रकृत के नाम के सम्बन्ध में एक अनुमान और किया जा सकता है। वह वास्तविकता के निकट प्रतीत होता है। दृष्टिवाद के पांच प्रकार हैं—परिकर्म, सूत्र, पूर्वानुयो ा, पूर्वगत और चूलिका।

आचार्य वीरसेन के अनुसार सूत्र में अन्य दार्शनिकों का वर्णन है[2]। प्रस्तुत आगम की रचना उसी के आधार पर की गई इसलिए इसका सूत्रकृत नाम रखा गया। सूत्रकृत शब्द के अन्य व्युत्पत्तिक अर्थों की अपेक्षा यह अर्थ अधिक संगत प्रतीत होता है। 'सुत्तगड' और बौद्धों के 'सुत्तनिपात' में नामसाम्य प्रतीत होता है।

अंग और अनुयोग—

द्वादशांगी में प्रस्तुत आगम का स्थान दूसरा है। अनुयोग चार हैं—

१. चरणकरणानुयोग,
२. धर्मकथानुयोग,
३. गणितानुयोग।
४. द्रव्यानुयोग।

चूर्णिकार के अनुसार प्रस्तुत आगम चरणकरणानुयोग (आचार शास्त्र) है[3]। शीलांकसूरि ने इसे द्रव्यानुयोग (द्रव्य शास्त्र) की कोटि में रखा है। उनके अनुसार आचारांग प्रधानतया चरणकरणानुयोग तथा सूत्रकृतांग प्रधानतया द्रव्यानुयोग हैं[4]।

---

[1] (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९०।
(ख) नंदी, सू० ८२।

[2] कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३४।

[3] सूत्रकृतांगचूर्णि पृ० ५।
इह चरणाणुओगे ण अधिकारो।

[4] सूत्रकृताँग वृत्ति, पत्र १
तत्राचाराङ्गे चरणकरणप्राधान्येन व्याख्यातम्, अधुना अवसरायातं द्रव्यप्राधान्येयसूत्रकृताख्यं द्वितीयमङ्गं व्याख्यातुमारभ्यते।

समवाय तथा नन्दी में द्वादशांगी का विवरण दिया हुआ है। वहां सभी अंगों के विवरण के अंत में 'एवं चरणकरणपरूवणता' पाठ मिलता है। अभयदेवसूरी ने 'चरण' का अर्थ श्रमण धर्म और 'करण' का अर्थ पिण्डविशुद्धि, समिति आदि किया है[1]।

चूर्णिकार ने कालिकश्रुत को चरणकरणानुयोग तथा दृष्टिवादको द्रव्यानुयोग माना है।[2]

द्वादशांगी में मुख्यतः द्रव्यशास्त्र दृष्टिवाद है। शेष अंगों में द्रव्य का प्रतिपादन गौण है। द्रव्यशास्त्र में भी गौणरूप में आचार का प्रतिपादन हुआ है। चूर्णिकार ने मुख्यता की दृष्टि से प्रस्तुत आगम को आचार शास्त्र माना है और वह उचित भी है। वृत्तिकार ने इसमें प्राप्त द्रव्य विषयक प्रतिपादन को मुख्य मानकर इसे द्रव्यशास्त्र कहा है। इन दोनों वर्गीकरणों में सापेक्ष दृष्टिभेद है।

ठाणं

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का तीसरा अंग है। इसमें संख्या-क्रम से जीव, पुद्गल आदि की स्थापना की गई है इसलिए इसका नाम ठाणं है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम में 'स्वसमय' (अर्हत् का दर्शन), 'परसमय' तथा स्वसमय और परसमय—दोनों की स्थापना की गई है। जीव और अजीव, लोक और अलोक की स्थापना की गई है।[3] इसमें संग्रह नय की दृष्टि से जीव की एकता और व्यवहार नय की दृष्टि से उसकी भिन्नता प्रतिपादित है। संग्रह नय के अनुसार चैतन्य की दृष्टि से जीव एक है। व्यवहार नय के दृष्टिकोण से प्रत्येक जीव विभक्त होता है, जैसे—ज्ञान और दर्शन की दृष्टि से वह दो भागों में विभक्त है। कर्मचेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना की दृष्टि से अथवा ध्रौव्य, उत्पाद और

---

[1] समवायांग वृत्ति, पत्र १०२ :

चरणम्—व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधम्।

करणम्—पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम्।

[2] सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० ५।

कालियसुयं चरणकरणाणुयोगो, इसिभासिओत्तरज्झयणाणि धम्माणुयोगो, सूरपण्णत्तादि गणितानुयोगो, दिट्ठवातो दव्वाणुजोगोत्ति।

[3] समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ६१॥

विनाश की दृष्टि से वह तीन भागों में विभक्त है। गति-चतुष्टय में परिभ्रमण करने के कारण वह चार भागों में विभक्त है। पारिणामिकआदि पांच भावों की दृष्टि से वह पांच भागों में विभक्त है। भवान्तर में संकमण के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अधः—इन छह दिशाओं में गमन करने के कारण वह छह भागों में विभक्त है। स्यादस्ति, स्यादूनास्ति की सप्तभंगी की दृष्टि से वह सात भागों में विभक्त है। आठ कर्मों की दृष्टि से वह आठ भार्गो में विभक्त है। नौ पदार्थों में परिणमन करने के कारण वह नौ भागों में विभक्त है। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येक वनस्पतिकायिक, साधारण वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति और पंचेन्द्रियजाति की दृष्टि से वह दस भागों में विभक्त है।[1] इसी प्रकार प्रस्तुत आगम पुद्‌गल आदि के एकत्व तथा दो से दस तक के पर्यायों का वर्णन करता है। पर्यायों की दृष्टि से एक तत्त्व अनन्त भागों में विभवत हो जाता है और द्रव्य की दृष्टि से वे अनन्त भाग एक तत्त्व में परिणत हो जाते हैं। प्रस्तुत आगम में इस अभेद और भेद की व्याख्या उपलब्ध है।

समवाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का चौथा अंग है। इसका नाम समवाओ है। इसमें जीव-अजीव आदि पदार्थों का परिच्छेद या समवतार है, इसलिए इसका नाम समवाओ है[2]। दिगम्बर साहित्य के अनुसार इसमें जीव आदि पदार्थों का सादृश्य-सामान्य के द्वारा निर्णय किया गया है; इसलिए इसका नाम समवाओ है[3]।

समवाओ में द्वादशांगी का वर्णन है। यह द्वादशांगी का चौथा अंग है; इसलिए इसमें इसका विवरण भी प्राप्त है।

द्वादशांगी का क्रम-प्राप्त विवेचन नन्दी सूत्र में है। उसके अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।
२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

---

[1] कसायपाहुड भाग पृ० १२३

[2] समवायांग वृत्ति, पत्र १ :
समिति—सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः—परिच्छेदो जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौ समवायः, समवयन्ति वा—समवसरन्ति संमिलन्ति नानाविधा आत्मादयो भावा अभिधेयतया यस्मिन्नसौ समवाय इति।

[3] गोमटसार, जीवकाण्ड, जीवप्रबोधिनी टीका, गाथा ३५६ :
"सं—संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अवेयंते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्था द्रव्यकालभावनाश्रित्य अस्मिन्निति समवायाङ्गम्।"

३. द्वादशांग गणिपिटक का वर्णन[1]।

समवायांग के अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है[2]—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।

२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

३. द्वादशांग-गणिपिटक का वर्णन।

४. आहार

५. उच्छ्वास

६. लेश्या

७. आवास

८. उपपात

९. च्यवन

१०. अवगाह

११. वेदना

१२. विधान

१३. उपयोग

१४. योग

१५. इन्द्रिय

१६. कषाय

१७. योनि

१८. कुलकर

१९. तीर्थंकर

२०. गणधर

२१. चक्रवर्ती

२२. बलदेव-वासुदेव।

दोनों विषय-सूचियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि समवायांग की नदि- त,विषय-सूची संक्षिप्त है जौर समवाओ-गत विषय-सूची विस्तृत। विषय-सूची के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का आकार भी छोटा और बड़ा हो जाता है।

दोनों विवरणों में 'सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है' इसका उल्लेख है। अनेकोत्तरिका वृद्धि का दोनों में उल्लेख नहीं है। नन्दीचूर्णी, हारिभद्रीयावृत्ति तथा मलयगिरीयावृत्ति—इन तीनों में अनेकोत्तरिका वृद्धि का कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग की वृत्ति में अभयदेवसूरि ने अनेकोत्तरिका वृद्धि की चर्चा की है। उनके अनुसार सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है और उसके पश्चात् अनेकोत्तरिका वृद्धि होती है[3]।

वृत्तिकार का यह उल्लेख समवायांग के विवरण के आधार पर नहीं, किन्तु उपलब्ध पाठ के आधार पर है—ऐसा प्रतीत होता है।

---

[1] नन्दी, सू० ८३ :
से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति। ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ। लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ। समवाएणं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयं-निवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लयग्गे समासिज्जइ।

[2] समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९२।

[3] समवायांग, वृत्ति, पत्र १०५ :
'च शब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च, तत्र शतं यावदेकोत्तरिका परतोऽनेकोत्तरिकेति।'

दोनों विवरणों की समीक्षा करने पर दो प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१. नन्दी में समवायांग का जो विवरण है, उससे उपलब्ध समवायांग क्या भिन्न नहीं है ?

२. क्या उपलब्ध समवायांग देवर्धिगणी की वाचना का है ? यदि है तो समवायांग के दोनों विवरणों में इतना अन्तर क्यों ?

प्रथम प्रश्न के समाधान में यह कहा जा सकता है कि नन्दीगत समवायांग-विवरण के अनुसार समवायांग सूत्र का अन्तिमविषय द्वादशांगी के आगे अनेक विषय प्रतिपादित हैं। इससे ज्ञात होता है कि समवायांग का वर्तमान आकार नन्दीगत समवायांग-विवरण से भिन्न है।

दूसरे प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर देना कठिन है, फिर भी इतना कहा जा सकता है कि आगमों की अनेक वाचनाएं रही हैं। इसीलिए प्रत्येक अंग के विवरण में अनेक वाचनाओं (परित्ता वायणा) का उल्लेख किया गया है। अभयदेवसूरि ने समवायांग की बृहद्-वाचना का उल्लेख किया है[1]। इससे अनुमान किया जा सकता है कि नन्दी में लघु वाचना वाले समवायांग का विवरण है।

अभयदेवसूरि को प्रस्तुत-सूत्र के वाचनान्तर प्राप्त थे, ऐसा उनकी वृत्ति से ज्ञात होता है[2]।
समवायांग परिवर्धित आकार के विषय में दो अनुमान किये जा सकते हैं—

१. प्रस्तुत सूत्र देवर्धिगणी की वाचना से भिन्न वाचना का है।

२. अथवा द्वादशांगी के उत्तरवर्ती अंश देवर्धिगणी के पश्चात् इसमें जोड़े गए हैं।

यदि प्रस्तुत सूत्र भिन्न वाचना का होता तो इस विषय में कोई अनुश्रुति मिल जाती। ज्योतिष्करण्ड माथुरी वाचना का है--यह अनुश्रुति वरावर चलती आ रही है। उपलब्ध समवायांग भी यदि माथुरी वाचना का होता तो उस विषय की कोई अनुश्रुति मिल जाती।

प्रथम अनुमान की पुष्टि की संभावना कम होने पर दूसरे अनुमान की संभावना बढ़ जाती है। किन्तु भगवती तथा स्थानांग से दूसरे अनुमान का भी निरसन हो जाता है। भगवती में कुलकर, तीर्थंकर आदि के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[3]। इसी प्रकार स्थानांग में भी बलदेव-वासुदेव के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[4]। इससे ज्ञात होता है कि परिशिष्ट-भाग देवर्धिगणी के समय में ही जोड़ा गया था।

---

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र ५८ : बृहद्वाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वयं नाधीयते।
   (ख) वही, पत्र ५९ : वृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते।

२. समवायांग वृत्ति, पत्र १४४ : वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम

३. भगवई शतक ५, उद्देशक ५।

४. ठाणं ९।१९,२०।

एक आगम के लिए एक संकलनकार के द्वारा दो प्रकार के विवरण (समवायांग तथा नंदी में) दिए गए—यह विचित्र बात है।

माथुरी और वल्लभी—ये दो मुख्य वाचनाएं थीं। गौण वाचनाएं अनेक थीं। इसीलिए अनेक वाचनान्तर मिलते हैं। ये वाचनान्तर संभवतः व्याख्यांश या परिशिष्ट जोड़ने से हो जाते। समवायांग में द्वादशांगी का उत्तरवर्ती भाग उसका परिशिष्ट भाग है —ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिशिष्ट का विवरण समवायांग के विवरण में परिवर्धित किया गया, इसलिए उसकी विषय-सूची नन्दीगत समवायांग की विषय-सूची से लम्बी हो गई। परिशिष्ट भाग में प्रज्ञापना के ग्यारह पदों का संक्षेप है, ये किस हेतु से यहां जोड़े गए, यह अन्वेषण का विषय है।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Editorial

Ayaro

The text of the Āćārānga, adopted by us, does not depend on one specimen only. We have adopted it on the review with reference to the specimens in use, the Ćūrṇi and the Vṛitti. The three sūtras (27-29) in the second 'Uddeśaka' of the first Adhyayana of the 'Āyāro' are found in all the other five Uddeśakas also. In the specimens used in the redemption of the text as well as in the Āćārānga Vṛitti they are not found. In the Āćārānga Ćurṇi, commencing from the Sūtrā 'lajjamāṇā puḍhopasa' (Āyāro, Sū. 16, page 4) to the Sūtra 'Appege Sampamārae, Appege Uddawae' (Āyāro, Sū. 29, page 6), it is considered as 'Dhruvakanḍikā' (the one and the same text)[1].

On the basis of the indications found in the Čūrṇi, we have adopted the three Sūtras in the second Uddeśaka in the rest five Uddeśakas.

In place of 'Kumbhārāyataṇamsi wā, in the Ćūrṇi[2] of the second Uddeśaka (Sū. 21) of the eighth Adhyayana, many a word is found, e.g. 'uwattaṇagihe wā, gāmdeulie wā, kammagārasālāe wā, tantuwāyagasālāe wā, lohagārasālāe wā'. The Čūrṇikāra further writes—'Jaćiyāo Sālā Sawwāo māṇiyawwāo'[3].

Here it appears that the word 'Kumbhārāyataṇamsi wā' was added with many other words meaning 'Śālā' or house but, in the course of time due to the faulty scribing, all the other words were left out. It is not possible to decide the text-system on the basis of the Čūrṇi only. This is why it has not been included in the text.

---

1. See—Ayaro, page 8, footnote no 2, page 11 ; footnote no. 2, page 14 ; footnote no 1, page 16 ; footnote no. 3, page 19 ; footnote no. 4.
2. Acaranga Curni, page 260–261
3. Acaranga Curni, page 261.

We have completed the abridged text, too. The tradition to abridge the text was in vouge due to learning of the Śruta by heart and making the scribing easy. Pandit Bećar Das Joshi had written to Āćarya Tulsi, throwing light on this topic in an article, on 8th December 1966. He observes, "The traditional Jain Śramaṇas considered the tendency to write and get written as sinful activities. They, nevertheless, adopted this path as an acception to safe-guard the scriptures. The less writing, the better. Taking this they, surely, tried to search out the way to reduce the sinful activity to the least for the safeguard of the scriptures. In the search of this path they found two novel words as 'Waṇṇao' and 'Jāwa'. With the help of these two words, they could abridge thousands of Ślokas and hundreds of sentences and their beginning was shortened as well as no deficiency occured in understanding the meaning of the scripture."

Three reasons—the system to learn the Śruta by heart, convenience by the script and the intention to write briefly, are probable to cause the abridgement of the text. It has undoubtly, caused no deficiency in the meaning, but it has marred the charm of the text. The difficulties of the reader have also increased. The Munis, having the whole Āgama literature learnt by heart, can make out the antecedents and precedents referred to by the words 'Jāwa' and 'Waṇṇaga' but the class of Munis learning with the help of the manuscripts cannot do so. The text, having the references of 'Jāwa' and 'Waṇṇaga', has not proved to be much beneficial to them. We, too have been experiencing this difficulty apparently. To solve this difficulty and bring back the beauty of the text Āćārya Tulsi, our Vāćanā-head, desired that the abridged text be recompleted. We have accordingly, completed the abridged text in most places. To indicate that 'dot-marks' have been given. In the first and the second appendices, the tables to point out the places of completion in the 'Āyāro' and the 'Āyāra-ćūla' have been added.

According to Bećara Das Joshi, the text-abridgement was done by Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa. He writes—"Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa, while reducing the Āgamas in writing, kept some important points in mind. Where ever he found similar readings he avoided the later one by using the words e.g. 'Jahā Uwawāie', 'Jahā Paṇṇawaṇae' etc. to denote the omitted text. When some statement occured again and again in a work, he used the word 'Jāwa' and wrote the last word of it refraining from the repetition, e. g. 'Nāga Kumārā Jāwa wiharanti', 'Teṇa Kāleṇa Jāwa Parisā Niggaya' etc.'[1]

---

[1] Jain Sahitya ka Vrihat Itihas, page 81.

The process of abridgement might have been started by Devardhigaṇi, but it developed in later period. In the specimens, available at present, the abridged text is not uniformal. A Sūtra has been abridged in one specimen but written in its full version in the other. The commentators have also mentioned it in many places. In the Āupapatik Sūtra, for example, these two passages, "Ayapāyāṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā" and 'Ayabandhaṇaṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā' are found. They were in the abridged form in the main specimens the Vṛittikāra had, but their ful version too, was found in other specimens. The commentator himself has noted it[1]. Many a time, the scribes, according to their own convenience did not write the preceding text again others followed them in the later specimens.

SŪYAGADO

We have adopted the text of the Sūtra Kṛita depending not on one specimen only. It has been redeemed after the comparative study, based on the specimens used in the text-redemption, the Ćūrṇi and the readings of the Vṛitti, and their critical review as well.

The system to write was little popular in ancient times. Almost all the scriptures were maintained traditionally learnt by heart. This is why the 'Ghośa-Suddhi' (correctness of pronounciation) was much stressed upon. This was a pious duty of the Āćārya to correct the seat of utterence of the disciples. The Daśāśrutaskandha Sūtra says[2]—to become 'Ghośa-Sudhi-Kārka' is one of the virtues of an Āćārya. Special arrangement was there to maintain the text and the meaning in the original form. The Ćhedasūtras throws full light on it.

Eight kinds of the Jnānāćāra have been enumerated[3]. Of them, the three Āćāras are concerned with the said arrangement.
They are[4]—

---

[1] (a) Aupapatika Vritti, patra 177.
(b) Pustakantare Samagramidam Sutradwayamastyeveti.

[2] Dasasrutaskandha, Dasa 4.

[3] Nisithabhasya, Gatha 8, part 1, page 6:
Kale vinaye bahumane, uwadhane taha aninhawane,
wanjana-atthatadubhae, atthawidho nanamayaro.

[4] Ibid, gatha 17, part 1, page 12:
Sakkayamattabindu Annabhidhanena wa witam Attham,
Wanjeti Jena Attham, wanjanamiti bhannate suttam.

1. Vyanjana—To maintain the language, vowel-marks, nasal points and words of the text of Sūtra, as it is.

2. Artha—To maintain the purport (meaning) of the sutra as it is.

3. Vyanjana as well as artha—To maintain the Sūtra and its meaning both in the original form.

The Ćūrṇikāra makes it clear with examples[1]. 'Dhammoma ngalam mukkiṭṭham' is expressed in Prākṛit language. To render this reading in Sanskṛit 'Dharmo Mangalamutkṛiṣṭam' as such is a dialectical sin of Vyanjana.

In the same way, to utter 'Sawwam sāwwajjam Jogam paććakkhāami' as 'Sawwesāwajje joge paććakkhami' by changing its vowels is a diacritical sin of Vyanjana.

likewise, to utter 'Namo arahantāṇani' as 'Namo arahantāṇa' omitting the therepotent point of nasal sound and also to pronounce 'Namo aramhantāṇam' adding the point of nasal sound with 'ra' when it is not there, is a nasal-point-change sin of Vyanjana.

To bring in the synonyms, in place of the original words of 'Dhammo mangalam mukkittham', such as 'Puṇam Kallāṇa mukk osam' is also a different-word-sin of Vyanjana.

The conclusion of all this account is to stress upon that the originality of language, vowel mark, point of nasal sound, word, word-number, and text-order must be maintained in all respects. Rules were laid down to expiate the sin against this arrangement. On changing the language, the vowel-mark or the point of nasal sound one has to undergo the specified atonement. On doing the Sūtra-Pātha otherwise an expiation of four months followed.[2]

In the conclusion of the topic, the Ćūrnikāra writes[3]—A change of Sūtra causes a change of meaning, a change of meaning causes a change of

---

1. Nisithabhasya curni, Part I, page 12.
2. Ibid.
3. Nisithbhasya, Gatha 18, Curnibhasya 1, page 12.
   Suttabheya atthabheo, atthabheya caranabheyo, caranabheya amokkho. Mokkhabhawat dikkhadayo Kiriyabheda aphalạ ḅhạwạṇtị. Ṭaha vanjanabhedọ ṇa kayawwo,

conduct and the change of conduct makes the salvation impossible. In that case all the rites, such as Dīkśā etc. become futile. A change of Vyanjana, therefore, be not done.

Likewise, a change of meaning also be not made. The meaning that is uncouth and not applicable be not carried out. On changing the meaning, an expiation for four months follows[1].

Similarly, on changing the Sūtra and its meaning together, both the aforesaid expiations fall on[2].

A deep thinking had taken place to maintain the originality of the Sūtras and their meaning even in the period of composition of the Āgamas. In the present Sūtra, it is clearly stated. A muni studying the work has been alerted that he in no way is set up a Sūtra and its meaning differently or expound it otherwise.[3] The Ćūrṇikāra annotates it thus[4]. In no way a Sūtra be done otherwise. The meaning and that meaning only be carried out which is consistant with its own principle. The Vṛittikara writes[5]—A Sūtra be not added to intentionally or a Sūtra or its meaning be not done otherwise.

From the aforesaid account it is learnt that it was keenly endeavoured to maintain the Sūtra and its meaning in its original form. As a result, it has been maintained also to some extent. We can, nevertheless, not say that it has not been changed. It has been done and the reasons for it are also there, e.g.

1. Forgetfulness

---

[1] Nisithbhasya Curni, part 1, page 13.

[2] Ibid.

[3] Sutrakrita 1/14/26.
No Suttamattha cakarejja annam.

[4] Sutrakrita Curni, page 296.
Na Sutramanyat praddhesena karotyanyathawa. Jaha ranno bhattansino ujjawalaprasno namarthas tamapi nanyatha kuryat; Jaha 'Awantike Awantieke Yawanti tamtogo wipparmsanti'. Sutram sarwathaiwanyatha na Kartawyam; arthavikalpastu swasiddhantavinuddho aviruddah syat.

[5] Suttrarkitavrtti, page 258.
Na ca Sutramanyat Swamativikalpanatah swarparatrayi Kuritanyatha wa suttram todartha wa sansarattrayitrana sito jantunam na vidadhita.

2. Change of script
3. Assimilation of the commentary with the text.
4. Intervention of time and place.

When Sīlānkarsūri wrote his Vṛitti on the 'Sūtrakṛita', he had its specimens and ancient commentary (Tīka) both. In one place of the second Addhyayna of the second Śrutāskandha, the reading was not similar to that of the specimens, and the reading, that was commented on, was not found consistant with that of any specimen. He, therefore, commented on the said passage honouring only one specimen.[1]

We have adopted the readings of the Ćūrṇī in some places. In comparision to that of the specimens and the Vṛitti they appear more relevant.

In 2/6/45 the reading is 'ṇiho nisam'. It has been commented on in the Vṛitti as 'ṇiwo ṇisam'. We have adopted the reading of the Ćūrṅi there[2].

We have discussed the changes in the text and their causes under the footnotes. It was keenly endeavoured in the Vedic tradition also to maintain the originality of the text of the Vedas. But in their texts, too, there have been timely violations. Dr. Viśwabandhu writes[3]—"It is a fact accepted by all that great pains, which know no parallel in the world history of literature, were taken in this country to maintain the texts of the Vedic literature in their original and correct form by learning them by heart with great care and utmost reverençe during the past five thousand years. Nevertheless, as the scholars, preceding to us, inicidently found here and there as we have largely seen during our incessant research work for the past forty years, these works, too, could not be saved from the effects of time bound damages and insufficient human hurlings. Had it been mostly the other way, truly, it would be an incredible miracle."

Continuing with the tradition of cramming and passing from one to the other age of script-change in the prolonged period. Some places of every work have deviated from their originality.

---

[1] Suttrakritavritti, page 79 :
Iha ca prayah suttradarsesu nanabhidhani Suttrani drisyante, na ca tika sambadhekapyasmabhiradarsah samuphabdhot ekamadarsamangikrityasmabhi viwaranam kriyate.

[2] See, Footnote on 2/6/45.

[3] Akhilabharatiya praciya-vidya Sammelan, Twentifourth gathering, Varanasi 1968, Mukhyadyaksiya speech, page, 8-9.

THĀṆAM

A word has different forms in Prākṛit, and these different forms are used, too, in the Āgamas. Some scholars, engaged in the editing work of the Āgamas, have stressed upon that the uniformity in the form of words should be brought up. We have not adopted this method of editing. Although accepting the sameness of the sound 'na' and 'ṇa', only 'ṇa' has been used in all the places, the principle to bring up uniformity in different forms everywhere has not been observed. In 3/373 two forms 'Sugati' and 'Suggati' are found; in 3/375 'Sogata', 'Sugata' and 'Suggata', three forms are found. We have adopted them as they are. The authors are free in their usages. As they are not the bondsmen of the rule of uniformity, to try to bring uniformity in the editing-work does not seem desirable.

The Āgamas contain the usages of different languages and syllable changes. In bringing up uniformity in them, the probability to forget the multiformity may arise. 'Wayeṇam' as well as 'Kamasā' both the forms are used. 'Anḍaya' as well as 'Anḍagā' for 'Anḍajāh' and 'Kammabhumiyā' as well as 'Kammabhūmigā' for 'Karmabhumijāh' both the forms are formed. To keep up the form as found in a particular place is not a fault of editing.

SAMAWĀO

The text redemption of this Sūtra is based on three specimens and the Vṛitti as well. In some places other works, too, have been used to redeem the text. In the specimens of the 'Prakīrṇa Samawāya' (Sūtra 234) the reading 'Assaseṇe' is not found. This is the name of the father of fourth Cakrawarti. In the absence of it, the arrangement of further names becomes inconsistent. In the Sangraha Gathas of the said Sūtra, the name 'Padmottara' is in excess. It has been taken as a recension. The reading 'Assaseṇe' is found in the Āwaśyaka Niryukti (399). Basing on it 'Assaseṇe' has been adopted as the text-reading.

In the Sangraha Gatha of the Prakirṇa Samawāya (Sūtra 230) Baldeva-Vasudeva's father's name are given. Basing on the Sthānānga (9/19) and the Āwaśyaka Niryukti the amendment has been carried out. The name of the third Baladeva-Vāsudeva's father is 'Rudda', but the manuscript of the Vṛitti of Samawāyānga mentions it as 'Soma' instead of 'Rudda'. In fact, 'Rudda' should follow 'Soma'.

---

1. See, Samawao, painnagasamawao, Sutra. 230, the first footnote.

In all the specimens of the Samawāya 30 (Sūtra 1, gatha 26) it reads 'Sajjhayawāyam'. The vrittikāra, too, explains it as 'Swādhyāyawādam'. But it is not relevent as far as the meaning is concerned. The said 'gāthā' is found in the Daśāṣrutaskandha (Sūtra 26) where the reading is 'Sabbhāwawāyam' instead of 'Sajjhayawāyam'. The Vṛittikāra of 'Daśāsrutaskandha' has given its Sanskrit form as 'Sadbhāwa wādam'. On reviewing the meaning critically, this reading appears to be relevent[1].

---

[1] See, Saṃawaọ, Saṃawaya 30, Sutrạ. 1, thẹ sẹcond fọotṇote ọf Suṭra 230.

Forward

The Classification of the Agamas

The most ancient part of the Jain literature is the Āgama. The Samawāyānga mentions two forms of the Āgama, such as, 1. Dwadaśanga gaṇipitaka[2] and 2. Ćaturadaśapūrwa[3], In the Nandi, two divisions of the Śrūta-Jyāña (Āgama) have been given. 1. Anga Praviṣṭa and Angavāhya[3]. The accounts, found regarding the Adhyayanas of the Sādhus and Sadhwis (monks and nuns), pertain to the Angas and pūrwas, as

1. The readers of the eleven Angas beginning from the Sāmayika—
Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin ahijajai (Antagaḍa, Prathama Varga). This statement is found regarding Gautama, the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa angāin Ahijajai (Antāgaḍa, Panćam Varga, Prathama Adhyayana). This statement relates to Padmavati, the disciple of lord Ariṣtānemi.

Sāmāiyamāiyāin ckkarasa-angāin (Antagaḍa, Aṣtama Varga, Prathama Adhyayana). This statement pertains to Kāli, the disciple of lord Mahavīra.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin Ahijajai (Antagaḍa Saṣṭa Varga, 15th Adhyayana). This statement has been given regarding Atimuktakumara, the disciple of lord Mahavīra.

2. The readers of the twelve Angas—

The statement regarding Jālīkumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi, is given as such Bārasangī (Antagaḍa, Ćaturtha Varga, Prathama Adhyayana).

---

1. Samawayanga, Prakirnaka, Samawaya, Sutra. 88.
2. Ibid, Samawaya 14, Sutra. 2.
3. The Nandi, Sutra. 43.

3. The readers of the fourteen Pūrwas—

Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tṛitiya Varga, Navama Adhyayana). This is the statement found regarding Sumukhakumāra the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tṛitīya Varga, Prathama Adhyayana). This statement is found regarding Aṇiyasakumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi.

There were three hundred and fifty ćaturdaśa-pūrwī munis of lord Pārśwa.[1]

There were three hundred ćaturdaṣa- pūrwī munis of lord Mahāvirā.[2]

The division, Anga-Praviṣta and Anga-Vāhya, have not been given in the Samawāyānga and Anuyogadwāra. This division first have been made in the Nandi. The later sthaviras composed the Anga-Vāhya. Many anga-vāhyas had been composed before the composition of the Nandi and they were done by the ćatūrdaśa-pūrwi or daśa-pūrwi sthaviras. They were, therefore, taken as solemn as the Āgama and two divisions were made of it such as, 1. Anga-praviṣta and 2. Anga-Vāhya. This division is not found in the Anuyogdwāra (sixth century of the Vira-Nirwaṇa). This was first done in the Nandi (tenth century of the Vira-Nirwaṇa)

When the Nandi was composed, the Āgama was classified threefold, 1. Pūrwa, 2. Anga-Praviṣta and 3. Anga-Vahya. What we have today is only 'Anga-Pravista and 'Anga-vahya'. The 'purwas' are extinct. Their extinction is a subject of delibration from the historical point of view.

PŪRWA

According to the Jaina tradition, the Pūrwa is the Akśaya-Koṣa (in exhaustible lexicon) of the Śruta-Jyaña (word knowledge). All do not hold one and the same view about the meaning of the title and their composition. The ancient Āćāryas hold that as they were composed before the 'Dwādaśāngī' they were given the title 'Purwa'[3] But the modern, scholars

---

1. Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 14.
2. Ibid, Sutra. 12.
3. Samawayanga vritti, Patra 101:

Prathamam Purwam tasya Sarwa pravac rat puıwam Kriyamanatwat.

view that the 'Pūrwa' was the Śruta-Rāśi of the tradition of lord 'Pārśwa and preceding to Lord Mahāvīra, it was, therefore called 'Pūrwa'. Whatever view of the two is accepted, the conclusion is the same that the 'Pūrwas' were composed before the 'Dwadaśāngī' or the 'Dwādaśangi' is a later composition than the 'Pūrwas'[1].

In the form the 'Dwādaśāngi' is now found, the 'Pūrwas' are assimilated. The twelfth Anga is 'Driṣṭiwāda'. One of its divisions is 'Pūrwagata'. The fourteen 'Pūrwas' are included in it. The opinion that lord Mahāvira first composed the 'Pūrwagata 'Śruta', leads us to the conclusion that the forteen 'Pūrwas' and the twelfth Anga are one and the same. The 'Pūrwaśruta was very difficult to understand. The common people could not follow it. The Angas were composed for the benefit of less intelligent persons. Jinabhadra-gaṇī Kśamāśramaṇa says 'The Dṛiṣṭiwāda contains all the word-knowledge (śabda-Jyaña). The eleven Angas, nevertheless, have been composed for the good of less intelligent people.[2] The eleven Angas were studied only by those monks (Sadhus) who were not very intelligent. The intelligent munis studied the 'Pūrwas'. From the order of classification of the Āgama, it is concluded that the eleven Angas are easier than Dṛiṣṭiwāda or Pūrwas or have been in a different order from theirs.

According to the Digambara tradition the Kewalis became extinct after 62 years of 'Vīra-nirwāṇa'. After that, for a hundred years only Srūta-Kewalis (Caturdaśa-Pūrwis) were found. Beyond that for one hundred and eightythree years only Daśapūrvīs were found. And, later to them for a period of two hundred and twenty years only the eleven-Angadharas were found.[3]

The discussion, given above, makes it quite clear that so long as the Āćāra etc. Angas were not composed, the Śruta-Raśī of lord Mahavira was called 'Čaudaha Pūrwaś or 'Dṛiṣṭīwāda'. When the eleven Āćāra etc. Angas were composed, the Dṛiṣṭīwāda was given in the form of the twelfth Anga.

---

[1] Nandi, Malayagiri vritti, Patra 240.
Anye tu wyacaksate purwam purwagatasutrarthamarhan bhaste, Ganadhara api purwam purwagata Sutram Viracayanti, Pascadaearadikam.

[2] Visesawasyaka Bhasya, Gatha 554.
Ja-i-wi ya Bhutawa-e sawwassa waogayassa Nijjuhana Tahawi hu, dummehe pappa itthi oyaro ya.

[3] Jayadhawala, Prastawana, Page 49.

Though the two different accounts[1], such as, 'readers of the twelve Angas' and 'readers of the fourteen Pūrwas' are found, it cannot be said that the scholars in the fourteen Pūrwas were not scholars in the twelve Angas and vice-versa. Gautama Swami was called 'Dwādaśāngavit'[2]. He was a 'ćaturdaśa-pūrvī' as well as 'Angadhara'. A 'śruta-kewali' was somewhere called 'Dwādaśāngavit' and sometimes 'ćaturdaśa-pūrvī' as well.

As the eleven Angas are taken from or a collection of the Pūrwas, a 'ćaturdasa-pūrvi' is, of course, a 'Dwādaśāngī' also. As the fourteen Pūrwas are incorporated in the twelfth Anga, a 'Dwādaśāngavit' too. We, therefore, reach this conclusion that the Āgama had only two ancient classifications 1. the Fourteen Pūrwas and 2. the eleven Angas. The 'Dwādaṣangi' had no independent standing. This is the title given to the Pūrwas and the Angas jointly.

Some modern scholars hold the Pūrwas, to be of the period of lord Pārśwa and the Angas of lord Mahāvīra. But this view is not correct. The tradition of the Pūrwas and the Angas was prevelent at the time of lord Ariṣṭanemi and lord Pārśwa too. That the Angas were composed for the use of less intelligent people has been told before. That the intelligence quotient of all the Munis at the time of lord Pārśwa was equal is incredible. The intelligence quotients have always differed in each and every age. Considering from the psychological and practical view, we reach the conclusion that the necessity of the Angas prevailed in the order of lord Pārśwa too. To support this view that at the time of lord Pārśwa only the Pūrwas and not the Angas existed, no evidence is, therefore, found. By common sense this fact is estabilished that the Pūrwas and the Angas were renovated according to the purport, language, style and necessity of the age in the order of lord Mahāvīra. Fancy has, perhaps, played a main role to support the view that the Pūrwas were received traditionally from lord Pārswa and the Angas were composed in the tradition of Lord Mahāvīra.

3. Anga-Praviṣṭa and Anga-Vāhya

It is heard by all that the gaṇadharas Gautama etc., composed the Pūrwas and the Angas at the time of lord Mahāvīra. A simple question arises if other Munis did not compose the Āgama works. There had been fourteen thousand desciples of lord Mahāvīra[1]. Of them seven hundred were 'Kewalīs' and four hundred 'Wādīs'. That they did not take part in the composition of the Āgamas does not seem credible. The Nandī says that the disciples of Lord Mahāvīra composed fourteen thousand 'Prakīrṇakas'[2] besides the aforesaid 'Pūrwas' and 'Angas'. Nothing proves that the classification, such as 'Anga-Praviṣṭa' and 'Anga-Vāhya' was done at that time. When the later Āćāryas compiled the works after the 'Nirwana' of lord Mahāvīra, the discussion was, perhaps, held to classify them under the Āngamas or not and the question of their authenticity, too, arose. After the discussion it was decided to classify the works, composed by the 'ćaturdasa-pūrvī' and the 'Dasa-pūrvī' sthaviras, under the Āgama but they were not considered authentic by themselves. Their authenticity depended on others. That they are consistent with the 'Dwādaśāngī' was the touch-stone to give them the title of the Āgama. As their authenticity was dependent, the necessity was felt to keep them out of the class of the 'Anga Praviṣtā' and, in this content only, the 'Anga-Vahya' class of the Āgama took place.

---

[1] See the beginning of the preface.

[2] Uttaradhyayana, 23/7.

Jinabhadragaṇi Kṣmāṣramaṇa ascertains the kinds of 'Anga-Praviṣṭa and 'Anga-Vahya' on three grounds, such as—

1. That which is composed by a gaṇadhara.

2. That which is expounded by a Tīrthankara on the query of a gaṇadhara.

3. That which is pertaining to the firm-eternal truths, and is perpetual and permanent; and that Śruta only is entitled as 'Anga-Praviṣṭa'.

Contrary to this 1. that Śruta which is composed by a Sthavira, temporary or suited to the times only is entitled as 'Anga-Vāhya'[3].

The main ground to differenciate the Anga-Praviṣṭa from the Anga-vāhya is based on the difference of the person who has spoken it[1]. The Āgama delivered by Lord Mahavira and compiled by the gaṇadharas, is accepted as the basic Angas of the Śruta-Puruṣa. It is, therefore called the 'Anga-Praviṣṭa.' According to Sarvārthsiddhi the speakers are of three kinds, 1. the Tīrthankara, 2. the Śruta-Kewali and 3. the Ārātiya[2]. The Āgamas Composed by the Ārātīya Āćāryas are regarded as 'Anga-Vāhya'. According to Āćārya Akalanka, the Āgamas composed by the Ārātiya-Āćārya reflect the meaning supported by the Angas[3]. They are, therefore, called the 'Anga-Vāhyas.'[3] The Anga-Vāhya Agamas are as good as the Pratyaṇga or Upānga of the Śruta-purusa.

---

[1] Samawayanga, Samawaya 14, Sutra 4.

[2] Nandi, Sutra. 78.
Coddaspa-i-nnagasasahassani Bhagwa-O Baddhamanassa.

[3] Visesavasyakabhasya, Gatha 552.
Ganahara-therakatham wa, Aesa. Mukka-wagarana-O wa. Dhuva-cala visesa-O wa, Anganamgesu Nanattam.

ANGA

The twelve Āgamas incorporated in the Dwādaśāngī are called Angas. The word 'Anga' is found in the literature of Sanskrit and Prakrit both. In the Vedic literature the works assisting the study of Vedas are given the title of 'Anga' They are six—

1. **Siksa**—The work that expounds the rules of utterence of the words.
2. **Kalpa**—The scripture that expounds the vedic rites and rituals in an order and agreement.
3. **Vyakarana**—The scripture that expounds the theories of morphology and meaning of the words.
4. **Nirukta**—The scripture that expounds etamology of the words.
5. **Chandas**—The scripture that expounds the theories of morpheme to recite the Mantras.
6. **Jyotis**—The scripture that expounds the theories to find correct time for the rites of Yajna-Yāga etc.

The Vedas have been personified in the Vedic-literature. Accordingly the 'Sikṣā' has been regarded as nose, the' kalpa' as hands, the 'Vyākaraṇa' as mouth, the 'Nirukta' as ears, the Čhandas as feet and the Jyotiṣ as eyes of the Veda-person. They are therefore, called the parts of the body of Vedas[4]. In the Pali-literature, too, the word 'Anga' has beenu sed. At one place the 'Buddha-Vaćanas' have been called 'Nawānga' and 'Dwādaṣānga' at the other.

---

[1] Tatwartha-bhasya, 1/20.
Waktri-visesad dwaividhyam.

[2] Sarvarthasiddhi, 1/20
Trayo waktarah - Sarvajna Tirthankarah, itaro wa Srutakewali Aratiyasceti.

[3] Tattwartha - Rajavarttika, 1/20.
Aratiayacarya Kritangarthapratyasannarupamangavahyam.

[4] Paniniyasiksa, 41, 12.

Nawanga

1. **Sutta**—The sermons of lord Buddha in prose.
2. **Geyya**—The mixed portion of prose and verse.
3. **Vaiyyakarana**—The works containing explanation.
4. **Gatha**—The works composed in verse.
5. **Udana**—The gistful and affectionate expressions delivered from the mouth of lord Buddha.
6. **Itibuttaka**—Small lectures beginning with the words, 'Lord Buddha said thus'.
7. **Jataka**—The stories of the former births of lord Buddha.
8. **Abbbutadhamma**—The work that explains the mysterious things or the superhuman powers born of the 'Yoga'.
9. **Vedalla**—Those sermons which have written in the form of dialogues.[1].

Dwadasanga

1. The Sutra, 2. the Geyya, 3. the Vyākarane, 4. the Gatha, 5. the Udana, 6. the Awadana, 7. The Itivṛittāka, 8. The Niduna, 9. the Vaipālya 10. The Jataka, 11. the Upadeśa-dharma and, 12. the Adbhuta-dharma.[2]

The Jaināgama has been divided into twelve Angas—

1. The Aćara 2. The Sūtrakṛita 3. The Sthāna 4. The Samawāya 5. The Bhagawati 6. The Jynātā Dharmekatha 7. the Upāsakadaśa 8. the Antakṛita 9. the Anuttaropapātika 10. the Praśna-Vyākaraṇa 11. the Vipāka and 12. the Dṛiṣtiwāda.

The word 'Anga' has been used in the three chief Indian philosophical schools. The main works of the Vedic and Buddhist literature are the Vedas and the Pitakas respectively. Nowhere the word 'Anga' has been added to them. The main works in the Jain literature have been classified as the Gaṇipitaka. The Gaṇipitaka has the twelve Angas—'Duwālasange gaṇipitage[3].

---

[1] Saddharma Pundakrika Sutra, page 34.

[2] Buddha Sanskrit Grantha 'Achisamayalankar' Ki tika, Page, 35.
Sutram Geyam Vyakaranam, Gathoanavadanakam.
Itibrittakam Nidanam, Vaipulayam ca Sajatakam.
Upadesadbhutau dharman, Dwadasangamidam vacah.

[3] Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 88.

The personification of 'Śruta-Puruṣa' too, is found in the Jain-tradition. The twelve Āgamas, Āćara etc., are like the parts of the 'Śruta Puruṣa'. They are, therefore, called the twelve Angas[1]. So the Dwādaśānga becomes the adjective of the Gaṇipitaka and the Śruta-Puruṣa' both.

ĀYĀRO

The title

This Āgama is the first Anga of the 'Dwādaśāngī'. As it contains the account of the conduct (Āćāra), the title 'ĀYĀRO'. It has two Śruta-skandhas—1. ĀYĀRO, 2. ĀYĀRAČULA

The Contents

The Samawāyānga and the Nandi give an account of the Āćārānga. According to that the present Sūtra explains the Āćara, Goćar, Vinaya, Vainayika (fruit of vinaya), (Utthitāsana, Niṣaṇāsana and Śayitāsana), Gamana, ćamkramaṇa. Dose of food etc., application of Yoga in self study etc., language, Samiti, Gupti, Śayya, Upadhi, Bhakta-Pāna (edibles and drinks), Udgama-Utthana, the purity of 'eṣṇā' (motives) etc[1]. the discernment of taking Śuddhāśuddha, Vṛita, Niyama, Tapas, Updhan etc[2].

Āćārya Umāswāti has expounded the topics of every Adhyayana in the Āćārānga in brief That is given in the order as under :[3]

1. Śaḍajīvakāya Yātnā.
2. Renunciating the glory of the wordly off-springs.
3. Winning over of the Pariṣahas, such as cold-hot etc.
4. Undaunted Samyaktwa.
5. Udvegas of the world.
6. The means of nullifying the 'Karmas' (deeds).
7. The endeavour to 'Vaiyavṛitya'.
8. The way to penance.

---

1. Mularadhna 4/599, Vijayodaya :
   Srutam Purusah Mukhcaranadyangasthaniyatwadangasabdenocyate.
2. (a) Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 89.
   (b) Nandi, Sutra. 80,
3. Prasamarati Prakarana,114-117,

9. Renunciation of passion for woman.
10. Rules to receive the alms.
11. Bed without woman, Creature, eunuch etc.
12. Purity in movement.
13. Purity of language.
14. Method of begging cloth.
15. Method of begging bowls.
16. Purity of habit (Avagraha).
17. Purity of Place (Sthāna).
18. Purity of 'Visadya'.
19. Purity of 'Vyutsarga'.
20 Renunciation of attachment to sound.
21. Renunciation of attachment to form.
22. Giving up 'Parakriya'.
23. Giving up 'Anyonya-kriya'.
24. Steadfastness to the Five Mahāvṛitas.
25. Libration from 'Sarvasangas' (all associations).

The Niryuktikāra has enumerated the topics of the nine Adhyayanas of Brahmaćarya as under :

1. *Satya Parinna*—Jiva Samyama.
2. *Loga Vijaya*—Knowledge of bondage and libration.
3. *Siosanijja*—Equanimity of pleasure and pain.
4. *Sammatta*—Right vision.
5. *Loga-Sara*—Renunciation of worthless and adoration of the Ratnatrayi, worthy in the world.

---

1. Acaranga Niryukti, Gatha 33-34 :
Jiyasamjamo a logo jaha bajjhai jaha ya am pajahiyav vam,
Suhadukkhatitikkhaviya sammattam logasaro ya.
Nissangaya ya chatthe mohasamuttha parisahuwasagga,
Nijjanam atthamae nawame ya jinena evamti.

2, Tatwartha Rajavarttika, 1/20.
Acare carya-vidhanam sudhyastaka paniasamiti-triguptivikalpam kathyate.

6. *Dhuya*—non-attachment.
7. *Mahaparinna*—Enduring properly the Parişahas and Upsargas born of 'Moha'.
8. *Vimokkha*—Proper observanes of 'Niravaṇā' (the final state).
9. *Uvahanasuya*—Explanation of the conduct observed by lord Mahāvira[1].

Āćārya Akalaṅka holds that the total matter of the Āćārānga is concerning the 'Ćarya-Vidhana' (mode of behaviour and conduct)[2]. While Aparājit Suri opines that it is the ascertainment of the conduct of the 'Ratna-trayī'[1].

SŪYAGAḌO

The Title

This Āgāma, the second part of the Dwādasāngi, is given the title as 'Sūyagaḍo'. The Samawāya, the Nandi and the Anuyogadwār, all the three Āgāmas have this title only for it.[2] Bhadrawāhu-Swāmi, the Niryuktikāra has given three titles of this Āgama according to its tributes.[3]

1. Sūtagaḍa—Sūtakṛita
2. Suttakaḍa—Sūtrakrita
3. Sūyagaḍa—Sūćākrita

Originally this Āgama is 'Sūta' (hails from) by lord Mahāvīra and was given the form of a work by gaṇadhara. This is, therefore, entitle as 'Sutakrita'.

As the truth in it has been ascertained according to the 'Sūtrā', it is 'Sutrakṛita'.

As the 'Sūćanā' of 'Swa' and 'Para' Samaya has been given in it, it is called 'Sūćā-krita.'

---

[1] Mularadhna, Aswasa 2, Sloka 130, vijayodaya :
Ratnatrayacarana nirupanaparataya prathamabhangamacare sabdenocyate.

[2] (a) Samawao, Paissagamawao, Sutra. 88.
(b) Nandi, Sutra. 80.
(c) Anuogadwarain, Sutra. 50.

[3] Sutrakritanga-niryukti, Gatha 2:
Sutagadam, suttakadam, suyagadam cewa gonna-in.

'Sūta', 'Sutta' and 'Sūya' are as a matter of fact, the Prakṛit forms of 'Sūtra' only. These different formations led to the imagination of the three attributive titles.

Originally, all the Angas were delivered by lord Mahāvīra and brought into a composed form by Gaṇadhara. Then, how can this Āgama only be called 'Sūtrakṛita'? Similarly, the second title, too, is common to all the Angas. The third is the significant basis of the title of this 'Āgama'. As the conduct has been ascertained in the context of a comparative preception (Sūtrnā) in this Āgama, it is concerned with 'Sūćana'. The Samawāya and the Nandi clearly state this—

Sūyagaḍe ṇam sasamayāsūhajjanti, Parasamaya Sūhajjanti sasamaya-parasamayā suhajjanti.[1] What is preceptive is called a 'Sutra'. The background of this Āgama mainly consists of preceptive element. Its title is, therefore, 'Sūtrakṛita'.

Another thought, which seems to touch the reality more closely, can be put forth regarding the title 'Sutrakṛita'. The Drisṭiwāda is five fold—

1. Parikarma
2. Sūtra
3. Pūrwānuyoga
4. Pūrwāgata
5. Ćūlikā

According to Āćarya Vīrasena the Sūtra has an account of other philosophers[2]. As this Āgama was composed on that basis only, it was given the title 'Sūtrakṛita.' This meaning seems to be more logical than the other etomological meanings of the word 'Sūtrakṛita'. The 'Suttagaḍa' and the 'Suttanipāta' of the Budhists seem to be identical in their titles.

Anga and Anuyoga—

This Āgama has the second place in the Dwādāśāngi. There are four kinds of Anuyoga—

1. Čaranakaranānuooga.
2. Dharmakathānuyoga.
3. Ganitānuyoga.
4. Drawyānuyoga.

---

[1] (a) Samawao, paissagasamawao, Sutra 90.
(b) Nandi, Sutra. 82.

[2] Kasayapahuda, Part 1, page 134.

The Ćurṇikāra holds that this Āgama is 'ćaraṇakaraṇānuyoga (treatise on conduct).[1] Sīlānkasūri has classified it under 'Drawyānuyoga' (treatise on substances). According to him the Āćārānga is primarily a ćaraṇakaraṇayoga while 'Sūtrakṛitānga' is primarily a 'Drawyānuyoga'[2].

The Samawāya and the Nandi give an account of the 'Dwādaśāngī.' At the end of the account of the Angas, the lines read 'ewam ćarṇakaraṇa-paruwaṇayā'. Abhayadeva Sūri connotes the meaning of 'ćaraṇa' as 'Sramaṇa-dharma' and of 'Karaṇa' as 'Piṇḍa-viśuddhi, Samiti etc.'[3]

The ćūrṇikara has regarded the Kālikasruta as a 'ćaraṇakaranayoga' and the 'Driṣtiwāda' as a 'drawyanuyoga'.[4]

The Dwādaśāngī primarily expounds the Driṣtiwāda, treatise on substances and secondarily the code of conduct. The Ćurṇikara legimately regards this Āgama primarily as a treatise on the code of conduct while the Vrittikāra lying stress upon its ascertainment of Dravya (substance), calls it Dravyāśaśtra (a treatise on substance). Both of these classifications have a dialectical variation.

ṬHAṆAM

The title

This Āgama is the third part of the Dwādaśāngī. It sets up the Jīva, Pudgala etc., in number-order. Hence the title, 'Ṭhaṇam'.

The Contents

Swa-samaya (Arhat-philosophy), Para-Samaya as well as swa-samaya and Para-samaya both have been set up in this Āgama. The Jīva and the Ajīva, the Loka and the Aloka have been founded here.[5]

One-ness of the Jīva and its sevarality, according to the views of the 'Sangraha Naya' and the 'Vyavahāra Naya,' have been expounded in it. According to the Sangraha Naya, the Jīva is one and the same far as the soul is concerned. From the view point of the 'vyavahāra-naya' each and every Jīva is parted with, i.e. it is divided into two parts according to the knowledge and appaerance, into three parts according to the 'Karma-ćetnā' or 'Phrowge-utpāda' and 'Vināśa', into four parts because of its wandering in the four-fold motion; into five parts from the view point of 'Pariṇāmikādi' five states; into six parts due to the accession to the six directions, such as the East, West, North, South, up-ward and down-ward at the time of transgression to other birth; into seven parts according to the seven kinds of 'Syādasti-Syādnāsti'; into eight parts according to the eight 'Karmas'; into nine parts as it changes into the nine substances; and into ten parts from the view point of the 'Prithivi-Kāyika', 'Jala Kāyika', 'Agni-Kāyika', 'Wāyu-Kāyika', 'Pratyeka Vanaspati-Kāyika', 'Sādhāraṇa Vanaspati-Kāyika' species having two organs, species having three organs, species having four organs, and species having five organs.[1] Likewise, this Āgama gives an account of one-ness of 'Pudgala' etc. and their various 'Paryāyas' (modifications) counting from two to ten. From the viiew of 'Paryāyas', one and the same element parts with into innumerable and unlimited parts, and, from the view point of the matter (Dravya), these innumerable parts conform into one and the same element. This exposition of conformity and deformity is well found in this Āgama.

---

[1] Sutrakritainga Curni, page 5.
iha carananu-o-gena adhikaro.

[2] Srtrakritangaritti, page, 1.
Tatracaranga carnakaranam pradhanyena Vyakhyatam, adhuna awasarayatam drawya pradhanyena sutrakritakhyam dwitiyamangam Vyakhyatumarabhyate.

[3] Samawayangavritti, Patra 102.
Caranam—Vratasramanadharma Samyamadyanekavidham.
Karanam-Pindavisuddhi Samityadyaneka vidham.
Sutrakritanga Curni—

[4] Kaiyasuyam caranakarananuyogo isibhsiottar ajjhayanani dhammanuyogo, Surpannattadi ganitanuyogo; ditthiwado dawwanujogotti.

[5] Samawao, painnagasamawao, Sutra. 92

Samawāo

The title

The Āgama is the fourth part of the 'Dwādaśāngī' having the title 'Samawāo'. The substances, Jīva-Ajiva etc., have been put into divisions or brought down properly in this Āgama, therefore, the title 'Samawāo'.[2] According to the Digamber literature, this Āgama speaks of similarity of the Jivadi substances therfore, called the 'Samawāo'.[3] The 'Samawāo'

---

1. Kasayapahuda, part 1, page 123.
2. Samawao-Vrithi, patra 1,
   Samit-Samyaka avetyadhikyena ayanamayah Paticchedo Jivajivadi-vividha-padartha Sarthasya yasaminnasan Samawayah
   Samawayanti wa, Samawasaranti Sammilanti nanawidha Atmadayo Bhawa Bhawa abhidheya.aya Yasminnasan Samawaya iti.
3. Gommatasara Jivakanda Jivaprabodhni Tika, gatha 356.
   "Sam-Sangrahena Sadrisya-Samanyena Avayante jnayante jivadipadartha dravya kalabhavan a sritya asmitnniti 'Samawayangam.
   Nandi, Sutra. 83

gives an aocount of the 'Dwādaśangī'. And, as it is the fourth part of the 'Dwādaśangī', it narrates the 'Samawāo', too.

The Nandi-Sūtra discusses the 'Dwadaśangī in order. The table of contents of the 'Samawāo' has been given in it as under:

1. The description of the Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and Swa-Samaya as the well as Para-samaya.
2. The evolution of the number beginning from one to hundred.
3. The account of the Dwadaśanga ganipitaka.[1]

According to the 'Samawāyānga' the table of contents of the 'Samawā-o' is as follows:

1. The description of Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and swa-samaya as well as Para-samaya,
2. The evolution of the number beginning from one to hundred.
3. The account of the 'Dwādaśānga-gaṇi- pitaka'.
4. Āhāra
5. Uććhwāsa
6. Leśyā
7. Āwāsa
8. Upapāta
9. Čyawana
10. Awagāha
11. Vedanā
12. Vidhāna
13. Upayoga
14. Yoga
15. Indriya (organs)
16. Kaṣāya
17. Yoni
18. Kulakara

---

[1] Se kim tam samawae nam jiva samasijjanti, ajiva samaanjsa jti jivajiva samasijjanti.
Sasamae samasijjai, para-samaye samasijjai, sasamaya para sama-e samasijja-i. Loe sa masijjai, aloe samasijjai, lo-a-loe samasijjai, samawaenam ega-i-yanam eguttariyanam thanasaya-niwaddhiyanam bhawanam paruwana adhhawijja-i duwalasa vihassa ya ganipidagssa pallawagge samasijja-i,

19. Tīrathankara
20. Gaṇadhara
21. Ċakrawarti
22. Baladeva-Vasudeva[1].

A comparative study of both the tables of contents makes it clear that the table of contents given in the Nandi is a brief one, and that of the 'Samawa-o' large, The volume of the Sūtra, too, becomes short and long according to the tables of contents.

That the 'ekottarika Vṛiddhi' (Increasing one by one) takes place upto hundred is mentioned in both the accounts. In either of them, there is no mention of the 'Anekottarika Vriddhi'. The Anekottarika Vriddhi has not at all been mentioned in the Nandī Čūrnī, Hāribhadrīyā Vṛitti and the Malaya Girīyavṛitti, all the three Abhayadeva Sūri has discuss the Anekottarikā Vṛiddhi in his Vṛitti of Samawāyānga. According to him, the Ekottarika Vṛiddhi takes place upto hundred and beyond that the Anekottarikā Vṛiddhi.[2]

It appears that the Vṛittikāra has discussed it not on the account given in the 'Samawāyānga' but on the text then available to him.

On reviewing both the accounts, two questions arise—

1. Is not the present Samawāyānga different from the account of the Samawāyānga given in the Nandi ?

2. Is the present Samawāyānga is of the Vaćna by Devardhigaṇī ? If so, why then such a variation in both the accounts of the 'Samawāyānga' ?

In reply to the first question, it can be said that 'Dwādasānngi' is the final content of the Samawāyānga-Sutra according to the account, relating to the Samawāyānga, given in the Nandi. Many a content has been expounded beyond the 'Dwadaśāngī' in the present Samawāyānga. It is therefore, established that the present volume of the 'Samawāyānga' is different from that of the account of the Samawāyānga given in the Nandi.

---

[1] Samawa-o, pa-i-nnagasamawo, Sutra. 92.

[2] Samawa-o Vritti, patra 105.
'ca sabdasya canyatra sambandhatdkottarika anekottarika ca, tatra satam yawadekottarika parato gnekottariketi.

Difficult it is to give an assertive answer to the second question. So much, nevertheless, can be said that there had been various Vāćanās of the Āgamas. This is why a mention of various Vāćanās (Parittā Vāyaṇā) has been made while giving the account of each and every 'Anga'. Abhayadeva Sūri gives a mention of the large (Brihat) Vāćanā of the Samawāyānga[1]. From it, this may be inferred that the Nandī gives an account of the Samawāyānga relating to the short 'Vāćanā.'

It is established from the Vṛitti[2] written by him, that Abhayadeva Sūri had with him various Vāćanās of this Sūtra.

There can be two likelihoods regarding the enlarged edition of the 'Samawāyānga.'

1. That this Sūtra is based upon the Vāćanā different from that of the Vāćanā of Dewardhigaṇī,' or 2. That the portions beyond the 'Dwadasāngī' have been added to it after 'Devardhigaṇī'. Had this Sūtra depended on some different 'Vāćanā,' there would have been some tradition mentioned. This agelong traditional mention has been coming down that the Jyotiś-Kaṇḍa is based upon the 'Māthurī Vāćanā'. Had the present Samawāyānga, too, been based on the Māthurī Vāćanā, there would have been some traditional mention of it.

The first likelihood lacking the probablity of its support, the second likelihood gains the ground. But it too, is refuted by the Bhagwati, and the Sthānānga, The Bhagwati refers to the final part of the Samawāyānga for the full account of Kulakar, Tirathankar etc.[3] Likewise, the final part of the Samawāyānga has been referred to for the full account of the Baldeva-Vasudeva by the Sthānānga also[4]. It is, therefore, obvious that the appendix was added in the time of Devardhigaṇī only.

---

[1] (a) Samawao Vritti, Patra 58 : Brihadvacanayamanantaroktamatisayadwayamcradhi yate.
(b) Ibid, Patra 69:
Brihadvacanayamidamanyadatisayadwayamadhiyate.

[2] Samawao Vritti, Patra 144 : Vacanantaretu paryasana Kalpo tasramentyabhi hitam.

[3] Bhagwati Satara 5; Uddesaka 5.

[4] Sthananga, 9/19-20.

It is strange that one and the same editor gave two different accounts (in the Samawāyānga and the Nandi) of one and the same Āgama.

There were two main Vācanās, the Māthuri and the Vallabhi. There were many other secondary Vāćanās also. This is why there are many different readings. These different readings, probabily occured on adding the explanation or appendix portions. This can well be inferred that the later part of the Dwādasāngi in the Samawāyānga is its appendix. The account of the appendix was added to the account of the Samawāyānga with the result that its table of contents swelled more than the table of the Samawāyānga found in the Nandi. There is a summary of eleven stenzas of the 'Prajñāpnā' in the appendix. It is a matter of investigation why they were added here ?

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Âgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Āchārya Tulasi

Anuvrata Vihar
Delhi

विसयाणुक्कम

आयारो

पढमं अज्झयणं सू० १-१७७ पृ० १-१६

अप्पणा अत्थित्त-पदं १, आस्सव-पदं ६, संवर-पदं ७, आस्सव-परिणाम-पदं ८, कम्म-सोय-पदं ९, संवर-साहणा-पद ११, अण्णाण-पदं १३, पुढवि-काइयाहिंसा-पदं १५, पुढविकाइयाणं जीवत्त-वेदनाबोध-पदं २८, हिंसाविवेग-पदं पद-३१, समप्पण-पदं ३५, आउकाइयाणं अत्थित्त-अभयदाण-पदं ३८, आउकाइयहिंसा-पदं ४०, आउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ५१, हिंसाविवेग-पदं ५४, तेउकाइयाणं अत्थित्त-पदं ६६, तेउकाइयहिंसा-पदं ६९, तेउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ८२, हिंसाविवेग-पदं ८५, गिहचाइणो वि गिहवास-पदं ९३, वणस्सइ-काइयहिंसा-पदं ९९, वणस्सइकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ११०, वणस्सइजीवाणं माणुस्सेण तुलणा-पदं ११३, हिंसाविवेग-पदं ११४, संसार-पदं ११८, तसकाइयहिंसा-पदं १२३, तसकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं १३७, हिंसाविवेग पदं १४०, अत्ततुला-पदं १४५, वाउकाइयहिंसा-पदं १५०, वाउकाइयाणं जीवत्त-वेदणावोध-पदं १६१, हिंसाविवेग-पदं १६४, मुणि-संवोध-पदं १६९, हिंसाविवेग-पदं १७६ ।

●

बीयं अज्झयणं सू० १-१८६ पृ० १७-२७

आसत्ति-पदं १, असरणाणुपेहापुव्वं अप्पमाद-पदं ४, अरति-निवत्तण-पदं २७, अणगार-पदं ३६, दंड-समादाण-पदं ४०, हिंसाविवेग-पदं ४६, अणासत्ति-पदं ४७, समत्त-पदं ४९, परिग्गह-तद्दोस-पदं ५७, भोग-भोगि-दोस-पदं ७५, आहारस्स अणासत्ति-पदं १०४, काम-अणासत्ति-पदं १२१, तिगिच्छा-पदं १४०, परिग्गह-परिच्चाय-पद १४८, अणासत्तस्स ववहार-पदं १६०, बंध-मोक्ख-पदं १७१, धम्मकहा-पदं १७४ ।

●

तइयं अज्झयणं सू० १-८७ पृ० २८-३३

सुत्त-जागर-पदं १, परमबोध-पदं २६, अणेगचित्त-पदं-४२, संजमाचरण-पदं ४४, अज्झत्थ-पदं ५१, कसायविरइ-पदं ७१ ।

●

चउत्थं अज्झयणं सू०१-५३ पृ० ३४-३८

सम्मावाए अहिंसा-पदं १, सम्मानाणे अहिंसापरिक्खा-पदं १२, सम्मातव-पदं २७, कसाय-विवेग-पदं ३४, सम्माचरित्त-पदं ४० ।

●

पंचमं अज्झयणं सू० १-१४० पृ० ३९-४७

काम-पदं १, अप्पमादमग्ग-पदं १९, परिग्गह-पदं ३१, अपरिग्गह-कामनिव्वेयण-पदं ३९, अवियत्तस्स एगल्लविहार-पदं ६२, इरिया-पदं ६९, कम्मणो बंध-विवेग-पदं ७१, बंभचेर-पदं ७५, आयरिय-पदं ८९, सद्धा-पदं ९३, मज्झत्थ-पदं ९६, अहिंसा-पदं ९९, आय-पदं १०४, मग्गदंसण-पदं १०७, सच्चस्स अणुसीलण-पदं ११६, परमप्प-पदं १२३ ।

●

छट्ठं अज्झयणं सू० १-११३ पृ० ४८-५६

नाणस्स निरूवण-पदं १, अणत्तपण्णाणं अवसाद-पदं ५, पाणि-क्किलेस-पदं १२, तिगिच्छापसंगे अहिंसा-पदं १५, सयणपरिच्चायधुत-पदं २४, कम्मपरिच्चायधुत-पदं ३०, उवगरणपरिच्चाय-धुत-पदं ५९, सरीरलाघवधुत-पदं ६६, संजमधुत-पदं ७०, विणयधुत-पदं ७४, गोरवपरि-च्चायधुत-पदं ७६, तितिक्खाधुत-पदं ९९, धम्मोवदेसधुत-पदं १००, कसायपरिच्चायधुत-पद १०६ ।

●

अट्ठमं अज्झयणं सू० १-१३० श्लोक १-२५ पृ० ५७-७१

असमणुण्णविमोक्ख-पदं १, असम्मायार-पदं ३, विवेग-पदं ९, अहिंसा-पदं १७, अणाचरणीय-विमोक्ख-पदं २१, पव्वज्जा-पदं ३०, अपरिग्गह-पदं ३२, आहारहेउ-पदं ३४, अगणि-असेवण-पदं ४१, उवगरण-विमोक्ख-पदं ४३, शरीर-विमोक्ख-पदं ५७, उवगरण-विमोक्ख-पदं ६२, गिलाणस्स भत्तपरिण्णा-पदं ७५, वेयावच्चपकप्प-पदं ७६, उवगरण-विमोक्ख-पदं ८५, एगत्तभावणा-पदं ९७, अणासाय-लाघव-पदं १०१, संलेहणा-पदं १०५, इंगिणिमरण-पदं १०६, उवगरण-विमोक्ख-पदं १११, वेयावच्चपकप्प-पदं ११६, पाओवगमण-पदं १२५, अण-सण-पदं श्लो० १, भत्तपच्चक्खाण-पदं श्लो० २, इंगिणिमरण-पदं श्लो० १२, पाओवगमण-पदं श्लो० १९ ।

●

नवमं अज्झयणं श्लोक ७० पृ० ७२-७९

पढमो उद्देसो—भगवओ चरिया-पद श्लोक १-२३, बीओ उद्देसो—भगवओ सेज्जा-पदं श्लोक १-१६, तइओ उद्देसो—भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं श्लोक १-१४, चउत्थो उद्देसो—भगवओ अतिगिच्छा-पदं श्लोक १-३, भगवओ आहार-चरिया-पदं श्लोक ४-१७ ।

●

आयारचूला

पढमं अज्झयणं सू० १-१५६ पृ० ८३-११९

सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं १, ओसहि-आदि-पदं ४, अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं ८,

अस्सिंपडियाए-पदं १२, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद १६, कुल-पदं १९, अट्ठमी-आदि-पव्व-पदं २१, कुल-पदं २३, महामह-पदं २४, संखडि-पदं २६, विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं ३६ सव्वभंडगमायाए-पदं ३७, कुल-पदं ४१, संखडि-पदं ४२, खीरिणी-गावी-पदं ४४, माइट्ठाण-पदं ४६, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ५०, वियाल-परक्कम-पदं ५२, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ५३, कंटक-बोंदिय-पदं ५४, अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पदं ५५, परिभायण-संभुंजण-पदं ५७, पुव्व-पविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं ५८, भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं ६१, गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं ६२, पुरेकम्म-आदि-पदं ६३, पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं ८२, लोण-पदं ८३, अगणि-णिक्खित्त-पदं ८४, मालोहड-पदं ८७, मट्टिओलित्त-पदं ९०, पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं ९२, आउकाय-पइट्ठिय-पदं ९३, अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं ९४, अच्चुसिण-वीयण-पदं ९६, वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं ९७, तसकाय-पइट्ठिय-पदं ९८, पाणग-जाय-पदं ९९, गंध-आघायण-पदं १०५, सालुय-आदि-पदं १०६, पिप्पलि-आदि-पदं १०७, पलंब-जाय-पदं १०८, पवाल-जाय-पदं १०९, सरडुय-जाय-पदं ११०, मंथु-जाय-पदं १११, आमडाग-आदि-पदं ११२, उच्छु-मेरग-आदि-पदं ११३, उप्पल-आदि-पदं ११४, अग्गबीय-आदि-पदं ११५, उच्छु-पदं ११६, लसुण-पदं ११७, अत्थिय-आदि-पदं ११८, कण-आदि-पदं ११९, पच्छाकम्म-पदं १२१, पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं १२२, गिलाण पदं १२४, माइट्ठाण-पदं १२५, बहियानीहड-पदं १२८, माइट्ठाण-पदं १३०, बहुउज्झिय-धम्मिय-पदं १३३, अजाणया-लोण-दाण-पदं १३६, माइट्ठाण-पदं १३८, मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं १३९, सत्त पिंडेसणा सत्त पाणेसणा-पदं १४०।

बीयं अज्झयणं सू० १-७७ पृ० १२०-१३८

उवस्सयएसणा-पदं १, अस्सिंपडियाए उवस्सय-पदं ३, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं ७, परिकम्मिय-उवस्सय-पदं १०, बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं १४, अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं १८, सागारिय-उवस्सय-पदं २०, तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं ३१, वज्जियव्व-उवस्सय-पदं ३३, कालाइक्कंत-किरिया-पदं ३४, उवट्ठाण-किरिया-पदं ३५, अभिक्कंत-किरिया-पदं ३६, अणभिक्कंत-किरिया-पदं ३७, वज्ज-किरिया-पदं ३८, महावज्ज-किरिया-पदं ३९, सावज्ज-किरिया-पदं ४०, महासावज्ज-किरिया-पदं ४१, अप्पसावज्ज-किरिया-पदं ४२, उवस्सय-छलण-पदं ४४, उवस्सय-जयण-पदं ४५, उवस्सय-जायणा-पदं ४७, सेज्जायर-नाम-गोय-जायणा-पदं ४८, उवस्सय-विसुद्धि-पदं ४९, संथारग-पदं ५७, संथारग-पडिमा-पदं ६२, संथारग-पच्चप्पण-पदं ६८, उच्चारपासवण-भूमि-पदं ७०, सयण-विहि-पदं ७२।

तइयं अज्झयणं सू० १-६२ पृ० १३९-१५२

वासावास-पदं १, गामाणुगाम-विहार-पदं ४, नावा विहार-पदं १४, नावा-विहार-पदं २४, जंघासंतारिम-उदग-पदं ३४, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ४१, अभिणिचारिय-पदं ४४, पडिपहिय-पदं ४५, अंगचेट्ठापुव्वं निज्झाण-पदं ४७, आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं विहार-पदं ५०, आहारातिणिय-सद्धिं-विहार-पदं ५२, पाडिपहिय-पदं ५४, वियाल-पदं ५९, आमोसग-पदं ६०।

चउत्थं अज्झयणं सू० १-३९ पृ० १५३-१६०

वइ-अणायार-पदं १, सोडस-वयण-पदं ३, अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं ५, भासज्जात-पदं ६, सावज्ज-भासा-पदं १०, असावज्ज-भासा-पदं ११, आमंतणी-भासा-पदं १२, विधि-निसिद्ध-भासा-पदं १६, कक्कस-भासा-पदं १९, अकक्कस-भासा-पदं २०, सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद २१, अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं ३८ ।

पंचमं अज्झयणं सू० १-५१ पृ० १६१-१७२

वत्थजाय-पदं १, अद्धजोयण-मेरा-पदं ४, अस्सिं पडियाए वत्थ-पदं ५, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं ९, भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-वत्थ-पदं १२, महद्धणमुल्लवत्थ-पदं १४, अजिणवत्थ-पदं १५, वत्थपडिमा-पदं १६, संगार-वयणपुव्वं वत्थ-पदं २२, वत्थ-आघंसण पदं २३, वत्थ-उच्छोलण-पदं २४, वत्थ-विसोहण-पदं २५, वत्थ-पडिलेहण-पदं २६, सअंडाइ-वत्थ-पदं २८, अप्पंडाइ-वत्थ-पदं २९, वत्थ-परिकम्म-पदं ३१, वत्थ-आयावण-पदं ३५, णो धोएज्जा रएज्जा-पदं ४१, सव्वचीवरमायाए-पदं ४२, पाडिहारिय-वत्थ-पदं ४६, वत्थ-विक्किया-पदं ४८, आमोसग-पदं ४९ ।

छट्ठं अज्झयणं सू० १-५९ पृ० १७३-१८४

पायजाय-पदं १, एगपाय-पदं २, अद्धजोयण-मेरा-पदं ३, अस्सिंपडियाए पाय-पदं ४, समण-माहणाइ समुद्दिस्स पाय-पदं ८, भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं ११, महद्धणमुल्लपाय-पदं १३, पाय-बंधण-पदं १४, पाय-पडिमा-पदं १५, संगार-वयणपुव्वं पाय-पदं २१, पाय अब्भंगण-पद २२, पाय-आघंसण-पद २३, पाय-उच्छोलण-पदं २४, पाय-विसोहण-पदं २५, सपाण-भोयण-पडिग्गह-पदं २६, पडिग्गह-पडिलेहण-पदं २७, सअंडाइ-पाय-पदं २९, अप्पंडाइ-पाय-पदं ३०, पाय-परिकम्म-पदं ३२, पाय-आयावण-पदं ३८, पडिग्गह-पेहा-पदं ४४, सीओदगादि-संजुत्तपाय-पदं ४६, सपडिग्गहमायाए-पदं ५०, पाडिहारिय-पडिग्गह-पदं ५४, पायविक्किया-पदं ५६, आमोसग-पदं ५७ ।

सत्तमं अज्झयणं सू० १-५८ पृ० १८५-१९४

अदिन्नादाण-पच्चक्खाण-पदं १, ओग्गह-पद ३, अंबओग्गह-पदं २५, उच्छुओग्गह-पदं ३२, लसुण-ओग्गह-पदं ३९, ओग्गह-पदं ४६, ओग्गह-पडिमा-पदं ४८, पंचविह-ओग्गह-पदं ५७ ।

अट्ठमं अज्झयणं सू० १-३१ पृ० १९५-१९९

ठाण एसणा-पदं १, अस्सिंपडियाए ठाण-पदं ३, समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पदं ७, परिकम्मिय-ठाण-पदं १०, बहियता-निस्सारिय ठाण-पदं १४, ठाण-पडिमा-पदं १६, संथारग-पच्चप्पण-पदं २२, उच्चारपासवणभूमि-पदं २४, ठाण-विहि-पद २६ ।

नवमं अज्झयणं सू० १-१७ पृ० २००-२०३

णिसीहिया-एसणा-पदं १. अस्सिपडियाए णिसीहिया-पदं ३, समण-माहणाइं-समुद्दिस्स णिसीहिया-पदं ७. परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं १०, वहिया निस्सारिय-णिसीहिया-पदं १४।

●

दसमं अज्झयणं सू० १-२९ पृ० २०४-२०८

पाय-पुंछण-पदं १, थंडिल-पदं २।

●

एक्कारसमं अज्झयणं सू० १-२० पृ० २०९-२१२

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं १, तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं २, ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ३, झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ४, विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ५, सद्दासत्ति-पदं १९।

●

बारसमं अज्झयणं सू० १-१७ पृ० २१३-२१५

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं १. रूवासत्ति-पदं १६।

●

तेरसमं अज्झयणं सू० १-८० पृ० २१३-२२३

किरिया-पदं १, पाद-परिकम्म-पदं २, काय-परिकम्म-पदं १२, वण-परिकम्म-पदं १९, गंड-परिकम्म-पदं २८, मल-णीहरण-पदं ३५, वाल-रोम-पदं ३७, लिक्ख-जूया-पदं ३८, पाद-परिकम्म-पदं ३९, काय-परिकम्म-पदं ४९, वण-परिकम्म-पदं ५६, गंड-परिकम्म-पदं ६५, मल-णीहरण पदं ७२, वाल-रोम-पदं ७४, लिक्ख-जूया-पदं ७५, आभरण-आविंधण-पदं ७६, पाद-परिकम्म-पदं ७७, तिगिच्छा-पदं ७८।

●

चउद्दसमं अज्झयणं सू०१-८० पृ० २२४-२३०

किरिया-पदं १, पाद-परिकम्म-पदं २, काय-परिकम्म पदं १२, वण-परिकम्म-पदं १९, गंड-परिकम्म-पदं २८, मल-णीहरण-पदं ३५, बाल-रोम-पदं ३७, लिक्ख-जूया-पदं ३८. पाद-परिकम्म पदं ३९, काय-परिकम्म-पदं ४९, वण-परिकम्म-पदं ५६, गंड-परिकम्म-पदं ६५, मल-णीहरण-पदं ७२, बाल-रोम-पदं ७४, लिक्ख-जूया-पदं ७५, आभरण-आविंधण-पदं ७६, पाद-परिकम्म-पदं ७७, तिगिच्छा-पदं ७८।

●

पनरसमं अज्झयणं सू० १-७८ पृ०२३१-२४८

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पदं १, गब्भ-पदं ३, चवण-पदं ४, गब्भसाहरण-पदं ५, जम्म-पदं ८, नामकरण-पदं १२, बाल-पदं १४, विवाह-पदं १५, नाम-पदं १६, परिवार-पदं १७, माउ-पिउ-काल-पदं २५, अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं २६, देवागमण-पदं २७, अलंकरण-सिविया करण-पदं २८, अभिणिक्खमण-पदं २९, लोय-पदं ३०, सामाइय-चरित्त-गहण-पदं ३२, मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं ३३, अभिग्गह-पदं ३४, विहार-पदं ३५,

केवलनाण-लद्धि-पदं ३८, देवागमण-पदं ४०, धम्मोवदेस-पदं ४१, अहिंसामहव्वय-पदं ४३, अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पदं ४४, सच्चमहव्वय-पदं ५०, सच्चमहव्वयस्स भावणा-पदं ५१, अतेणगमहव्वय-पदं ५७, अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पदं ५८, बंभचेरमहव्वय-पदं ६४, बंभचेरमहव्वय-स्सभावणा-पदं ६५, अपरिग्गहमहव्वय-पदं ७१, अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पदं ७२ । ●

सूयगडो

पढमं अज्झयणं श्लो० १-८८ पृ० २५३-२६३

बंध-मोक्ख-पदं १, पंचमहब्भूत-पदं ७, एगप्प-वाद-पदं ९, तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पदं ११, अकारक-वाद-पदं १३, आयच्छट्ठ-वाद-पदं १५, बुद्धाणं पंचक्खंध-चतुधातु-वाद-पदं १७, णिस्सारता-निदंसण-पदं १९, णियति-वाद-पदं २८, अण्णाणिय-वाद-पदं ४१, सोगताणं कम्मोवचय-चिंता-पदं ५१, सुत्तकारस्स उत्तर-पदं ५६, पूइकम्म-आहार-दोस-पदं ६०, कयवाद-पदं ६४, अवतार-वाद-पदं ७०, अत्त-पवाद-पसंसा पदं ७२, सिद्ध-वाद-पदं ७४, उवसंहार-पदं ७५, जावणा पदं ७६, लोग-वाय-पदं ८०, अहिंसा-पदं ८३, भिक्खु-चरिया-पदं ८६ । ●

बीयं अज्झयणं श्लो० १-७६ पृ० २६४-२७५

संबोधि-पदं १, अणिच्च-भावणा-पदं ५, कम्म-विवाग-पदं ७, कसाय-परिणाम-पदं ९, सिक्खा-पदं १०, वीर-पदं १२, कम्म-विधूणण-पदं १३, अणुलोम-परीसह-पदं १६, माण-विवज्जण-पदं २३, समता-धम्म-पदं ३८, सामण्णस्स माहप्प-पदं ३२, सुहुम सल्ल-पदं ३३, एगचारि-पदं ३४, राय-संसग्ग विवज्जण-पदं ४०, अहिगरण-विवज्जण-पदं ४१, गिहि-भायण-पदं ४२, उत्तम-धम्म-गहण-पदं ४३, बंभचेर-पदं ४७, मुणीणं विवेग-पदं ५०, आयहित-पदं ५२, सामाइय-पदं ५३, कम्मावचय-पदं ५५, काम-पुच्छा पदं ५६, आरंभ-परिणाम-पदं ६३, परलोग-संदेह-पदं ६४, परलोग-सद्दहणा-पदं ६५, आयतुला-पदं ६६, अगारवासे-धम्म-पदं ६७, सच्चोवकम्म-पदं ६८, असरण-भावणा-पदं ७०, बोहि-दुल्लह-पदं ७३, धम्मस्स तेकालियत्त-पदं ७४ । ●

तइयं अज्झयणं श्लो० १-८२ पृ० २७६-२८६

ओघ-उवसग्ग-पदं १, सीत-परीसह-पदं ४, गिम्ह-परीसह-पदं ५, जायणा-परीसह-पदं ६, वध-परीसह-पदं ८, अक्कोस-परीसह-पदं ९, फास-परीसह पदं १२, केसलोय-बंभचेर-परीसह-पदं १३, वध-बंध-परीसह-पदं १४, उक्खेव-पदं १७, अणुकूल-परीसह-पदं १८, भोग-निमंतण-पदं ३२, अज्झत्थ-विसीदण-पदं ४०, परवाद-वयण-पदं ४७, अणुस्सुत-विसीदण-पदं ६१, सातं सातेण विज्जई-पदं ६६, अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पदं ६९ । ●

चउत्थं अज्झयणं **श्लो० १-५३** **पृ० २८७-२९३**
इत्थिसंसग्ग-विवज्जण-पदं १, इत्थि-आसत्तस्स विडंबणा-पदं ३ । •

पंचमं अज्झयणं **श्लो० १-५२** **पृ० २९४-३००**
णरग-वेदणा-पदं १ । •

छट्ठं अज्झयणं **श्लो० १-२९** **पृ० ३०१-३०४**
महावीर-माहप्प-वण्णग-पदं १ । •

सत्तमं अज्झयणं **श्लो० १-३०** **पृ० ३०५-३०९**
ओघतो कुसील-पदं १, पासंड-कुसील-पदं ५, कुसील-विवाग-पदं १०, कुसील-दंसण-पदं १२, कुसील-उवालंभ-पदं १६, सलिंग-कुसील-पदं २१, सुसील-पदं २२, कुसील-पदं २३, सुसील-पदं २७ । •

अट्ठमं अज्झयणं **श्लो० १-२७** **पृ० ३१०-३१३**
वीरिय-पदं १, बाल-वीरिय-पदं ४, पंडित-वीरिय-पदं १०, अबुद्ध-परक्कंत-पदं २३, बुद्ध-परक्कंत-पदं २४ । •

नवमं अज्झयणं **श्लो० १-३६** **पृ० ३१४-३१८**
धम्म-पदं १, मूलगुण-पदं ८, उत्तरगुण-पदं ११, भासा-विवेग-पदं २५, ससंग्गि-वज्जण-पदं २८, सामण्ण-चरिया-पदं २९ । •

दसमं अज्झयणं **श्लो० १-२४** **पृ० ३१९-३२२**
समाधि-पदं १, चरित्त-समाधि-पदं ४, असमाधि-पदं १६, मूलगुण-समाहि-पदं २०’ उत्तरगुण-समाहि-पदं २३ । •

एगारसमं अज्झयणं **श्लो० १-३८** **पृ० ३२३-३२७**
मग्ग-सार-पदं १, अहिंसा-पदं ७, एसणा-पदं १३, भासा-समिति-पदं १६, धम्म-दीव-पदं २२, बोद्धदिट्ठी-समीक्खा-पदं २५, मग्ग-संधाण-पदं ३२ । •

बारसमं अज्झयणं **श्लो० १-२२** **पृ० ३२८-३३१**
समोसरण-चउक्क-पदं १, अण्णाण-वादि-पदं २, वेणइयवादि-पदं ४, अकिरिय-वादि-पदं ५ किरिय-वादि-पदं ११ । •

तेरसमं अज्झयणं **श्लो० १-२३** **पृ० ३३२-३३५**
उक्खेव-पदं १, सिस्स-दोस-गुण-पदं २, मद-परिहार-पदं १०, अणाणुगिद्ध-पदं १७, धम्म-वागरण-विवेग-पदं १८, निक्खेव-पदं २३ । •

चउद्दसमं अज्झयणं श्लो० १-२७ पृ० ३३६-३३९

बंभचेरवासे गंथसिक्खा-पदं १, बंभचेरवासे अगुसिट्ठि-सहण-पदं ७, बंभचेरवास-फल-पदं १२, बंभचेरवासे लद्धगंथस्स कायव्व-पदं १८।

पणरसमं अज्झयणं श्लो० १-२५ पृ० ३४०-३४२

अणेलिस-पदं १।

सोलसमं अज्झयणं सू० १-६ पृ० ३४३-३४४

उक्खेव-पदं १, माहण-पदं ३, समण-पदं ४, भिक्खु-पदं ५, निग्गंथ-पदं ६।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं सू० १-७२ पृ० ३४५-३६७

पउमवरपोंडरीय-पदं १, पढम-पुरिसजात-पदं ६, दोच्च-पुरिसजात-पदं ७, तच्च-पुरिसजात-पदं ८, चउत्थ-पुरिसजात-पदं ९, भिक्खु-पदं १०, पुव्वुत्त-णातस्स अट्ठ-पदं ११, तज्जीव-तस्सरीर-वादि-पदं १३, पंच महब्भूतवादि-पदं २३, ईसरकारणिय-पदं ३२, णियतिवादि-पदं ३९, भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं ४९, भिक्खुणो लोगनिस्सा विहार-पदं ५३, अहिंसा-धम्म-पदं ५६, भिक्खुचरिया-पदं ५९, धम्म-देसणा-पदं ६६, भिक्खु-वयणिज्ज-पदं ७१।

बीयं अज्झयणं सू० १-८१ पृ० ३६८-४०२

उक्खेव-पदं १, अधम्मपक्खे किरिया-पदं २, अट्ठादंड-पदं ३, अणट्ठादंड-पदं ४, हिंसादंड-पदं ५, अकस्मादंड-पदं ६, दिट्ठिविपरियासियादंड-पदं ७, मोसवत्तिय-पदं ८, अदिण्णादाणवत्तिय-पदं ९, अज्झत्थिय-पदं १०, माणवत्तिय-पदं ११, मित्तदोसवत्तिय-पदं १२, मायावत्तिय-पदं १३, लोभवत्तिय-पदं १४, इरियावहिय-पदं १६, पावसुयज्झयण-पदं १८, चउद्दसविह-कूरकम्मकरण-पदं १९, सप्पओयणं कूरकम्मकरण-पदं २०, सद्दादि विसएहिं विरुद्धस्स कूरकम्मकरणं-पदं २१, संपदायलित्तस्स असव्ववहारकरण-पदं २५, वीमंसरहियस्स कूरकम्म-करण-पदं २६, धम्मपक्खे भिक्खुणो भिक्खायरियासमुट्ठाण-पदं ३३, भिक्खुणो लोगनिस्सा विहार-पदं ३७, अहिंसाधम्म-पदं ४०, भिक्खुचरिया-पदं ४३, धम्मदेसणा-पदं ५१, मीसग-पक्ख-पदं ५६, अधम्म-पक्ख-पदं ५८, धम्म-पक्ख-पदं ६३, मीसग-पक्ख-पदं ७१, तिपद-समोयार-पदं ७५, दुपद-समोयार-पदं ७६, अहिंसा-पदं ७७, उवसंहार-पदं ८०।

तइयं अज्झयणं सू० १-१०२ पृ० ४०३-४४८

उक्खेव-पदं १, पुढविजोणियरुक्खस्स आहार-पदं २, अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं ६, पुढविजोणियतणस्स आहार-पदं १०, पुढविजोणियओसहिस्स-आहार-पदं १४, पुढविजोणिय-हरियस्स आहार-पदं १८, पुढविजोणियकुहणस्स आहार-पदं २२, उदगजोणियरुक्खस्स आहार-पदं २३, अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं २७, उदगजोणियतणस्स आहार-पदं ३१।

उदगजोणियओसहिस्स आहार-पदं ३५, उदगजोणियहरियस्स आहार-पदं ३९, उदगजोणिय-सेवालादिस्स आहार-पदं ४३, रुक्खजोणियतसपाणस्स आहार-पदं ४४, अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ४७, तणजोणिय-तसपाणस्स आ हार-पदं ५०, ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५३, हरियजेगणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५६, कुहणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ५९, रुक्खजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६०, अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६३, तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६६, ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ६९, हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं ७२, सेवालादिजोणियतसपाणस्स आहार-पदं ७५, मणुस्सस्स आहार-पदं ७६, जलचरस्स आहार-पदं ७७, चउप्पय थलचरस्स आहार-पदं ७८, उरपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं ७९, भुयपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं ८०, खहचरस्स आहार-पदं ८१, विगलिंदियस्स आहार-पदं ८२, आउकायस्स आहार-पदं ८५, अगणिकायस्स आहार-पदं ८९, वाउकायस्स आहार-पदं ९३, पुढविकायस्स आहार-पदं ९७, निक्खेव-पदं १०१ ।

●

चउत्थं अज्झयणं सू० १-२५ पृ० ४४९-४५७

पइण्णा-पदं १, चोयगस्स अक्खेव-पदं २, हेउ-पदं ३, दिट्ठंत-पदं ४, उवणय-पदं ५, णिगमण-पदं ६, चोयगस्स अक्खेव-पदं ७, सण्णि-असण्णि-दिट्ठंत-पदं ८, सण्णि-असण्णि-दिट्ठंतस्स परिसेस पदं १८, संजय-पदं २१ ।

●

पंचमं अज्झयणं श्लोक १-३३ पृ० ४५८-४६०

सासय-असासय पदं १, सरिस असरिस-पदं ६, अहाकम्म-पदं ८, सरीरवीरिय-पदं १०, लोगादीणं अत्थित्त-सण्णा-पदं १२, वइ-विवेग-पदं ३० ।

●

छट्ठं अज्झयणं श्लोक १-५५ पृ० ४६०-४६७

गोसालस्स अक्खेव-पदं १, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४, गोसालस्स अक्खेव-पदं ७, अद्दगस्स उत्तर-पदं ८, गोसालस्स अक्खेव-पदं ११, अद्दगस्स उत्तर-पदं १२, गोसालस्स अक्खेव-पदं १५, अद्दगस्स उत्तर-पदं १७, गोसालस्स अक्खेव-पदं १९, अद्दगस्स उत्तर-पदं २०, बुद्ध-भिक्खुणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं २६, अद्दगस्स उत्तर-पदं ३०, वेय-वाईणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ४३, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४४, संख-परिवायगाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ४६, अद्दगस्स उत्तर-पदं ४८, हत्थितवसाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं ५२, अद्दगस्स उत्तर-पदं ५३ ।

●

सत्तमं अज्झयणं सू० १-३८ पृ० ४६८-४८६

उक्खेव-पदं १, लेव-गाहावइ-पदं ३, उदगपेढालपुत्तस्स पण्हाणुमइ-पदं ८, उदगपेढालपुत्तस्स पण्ह-पदं १०, भगवओ गोयमस्स उत्तर-पदं ११, उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्ह-पदं १२, भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं १३, उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा-पदं १५, भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर पदं १६, समणदिट्ठंत-पदं १७, पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं २०, णवभंगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय उवदंसण-पदं २९, तस-थावर-पाणाणं अव्वोच्छित्ति-पदं ३०, उवसंहार-पदं ३१ ।

●

ठाणं

पढमं ठाणं सू० १-२५६ पृ० ४८९-४९९

अत्थिवाय-पदं २, पइण्णग-पदं १७, पोग्गल-पदं ५५, अट्ठारसपाव-पदं ९१, अट्ठारसपाव-वेरमण-पदं १०९, ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं १२७, चउवीसदंडग-पदं १४१, भव-अभव-सिद्धि-पदं १६५, दिट्ठि-पदं १७०, कण्ह-सुक्क-पक्खिय-पदं १८६, लेसा-पदं १९१, सिद्ध-पदं २१४, पोग्गल-पदं २३०, जंबुद्दीव-पदं २४८, महावीर-णिव्वाण-पदं २४९, देव-पदं २५०, णक्खत्त-पदं २५१, पोग्गल-पदं २५४।

●

बीअं ठाणं सू० १-४६५ पृ० ५००-५३९

दुपओआर-पदं १, किरिया-पदं २, गरहा-पदं ३८, पच्चक्खाण-पदं ३९, विज्जा-चरण-पदं ४०, आरंभ-परिग्गह-पदं ४१, सोच्चा-अभिसमेच्च-पदं ६३, कालचक्क-पदं ७४, उम्मायं-पदं ७५, दंड-पदं ७६, दंसण-पदं ७९, णाण-पदं ८६, धम्म-पदं १०७, संजम-पदं ११०, जीव-णिकाय-पदं १२३, दव्व-पदं १३८, जीव-णिकाय-पदं १३९, दव्व-पदं १४४, जीव-णिकाय-पदं १४५, दव्व-पदं १५०, सरीर-पदं १५३, काय-पदं १६४, दिसादुगे करणिज्ज-पदं १६७, वेदणा-पदं १७०, गति-आगति-पदं १७३, दंडग-मग्गणा-पदं १७७, आहोहि-णाण-दंसण-पदं १९३, देसेण सव्वेण पदं २०१, सरीर-पदं २०९, सद्द-पदं २१२, पोग्गल- पदं २२१, इंदिय-विसय-पदं २३४, आयार-पदं २३९, पडिमा-पदं २४३, सामाइय-पदं २४९, जम्म-मरण-पदं २५०, गब्भत्थ-पदं २५४, ठिति-पदं २५९, आउय-पदं २६२, कम्म-पदं २६५, खेत्त-पदं २६८, पव्वय-पदं २७२, गुहा-पदं २७९, कूड-पदं २८१, महादह-पदं २८७, महाणदी-पदं २९०, पवाय-दह-पदं २९४, महाणदी-पदं ३०१, कालचक्क-पदं ३०३, सलागा-पुरिस-वंस-पदं ३०९, सलागा-पुरिस-पदं ३१२, कालाणुभव-पदं ३१६, चंद-सूर-पदं ३२१, णक्खत्त-पदं ३२३, णक्खत्तदेव-पदं ३२४, महग्गह-पदं ३२५, जंबुद्दीव-वेइआ-पदं ३२६, लवण-समुद्द-पदं ३२७, धायइसंड-पदं ३२९, पुक्खरवर-पदं ३४७, वेदिका-पदं ३५१, इंद-पदं ३५३, विमाण-पदं ३८५, देव-पदं ३८६, जीवाजीव-पदं ३८७, कम्म-पदं ३९३, अत्त-णिज्जाण-पदं ३९८, खय-उवसम-पदं ४०३, ओवमिय-काल-पदं ४०५, पाव-पदं ४०६, जीव-पदं ४०८, मरण-पदं ४११, लोग-पदं ४१७, बोधि-पदं ४२०, मोह-पदं ४२२, कम्म-पदं ४२४, मुच्छा-पदं ४३२, आराहणा-पदं ४३५, तित्थगर-वण्ण-पदं ४३८, पुव्व-वत्थु-पदं ४४२, णक्खत्त-पदं ४४३, समुद्द-पदं ४४७, चक्कवट्टि-पदं ४४८, देव-पदं ४४९, पावकम्म-पदं ४६१, पोग्गल-पदं ४६३।

●

तइयं ठाणं सू० १-५४२ पृ० ५४०-५९३

इंद-पदं १, विकुव्वणा-पदं ४, संचित-पदं ७, परियारणा-पदं ९, मेहुण-पदं १०, जोग-पदं १३, करण-पदं १५, आउय-पगरण-पदं १७, गुत्ति-अगुत्ति-पदं २१, दंड-पदं २४, गरहा-पदं २६, पच्चक्खाण-पदं २७, उपकार-पदं २८, पुरिसजात-पदं २९, मच्छ-पदं ३६, पक्खि-पदं ३९, परिसप्प-पदं ४२, इत्थी-पदं ४८, पुरिस-पदं ५१, णपुंसग-पदं ५४, तिरिक्खजोणिय-पदं ५७, लेसा-पदं ५८, तारारूव-चलण-पदं ६९, देवविक्किया-पदं ७०, अंधयार-उज्जोयाइ-पदं ७२, दुप्पडियार-पदं ८७, संसार-वीईवयण-पदं ८८, कालचक्क-पदं ८९, अच्छिन्न-पोग्गल-चलण-पदं ९३, उवधि-पदं ९४, परिग्गह-पदं ९५, पणिहाण-पदं ९६, जोणि-पदं १००, तणवणस्सइ-पदं १०४, तित्थ-पदं १०५, कालचक्क-पदं १०९, सलागा-पुरिस-वंस-पदं ११७, सलागा-पुरिस-पदं ११९, आउय-पदं १२१, जोणि-ठिइ-पदं १२५, णरय-पदं १२६, सम-पदं १३१, समुद्दपदं १३३, उववाय-पदं १३५, विमाण-पदं १३७, देव-पदं १३८, पण्णत्ति-पदं १३९ ।

लोग-पदं १४०, परिसा-पदं १४३, जाम-पदं १६१, वय-पदं १७३, बोधि-पदं १७६, मोह-पदं १७८, पव्वज्जा-पदं १८०, णियंठ-पदं १८४, सेहभूमि-पदं १८६, थेरभूमि-पदं १८७, गंता-अगंता-पदं १८८, आगंता-अणागंता-पदं १९५, चिट्ठित्ता-अचिट्ठित्ता-पदं २०१, णिसिइत्ता-अणिसिइत्ता-पदं २०७, हंता-अहंता-पदं २१३, छिंदित्ता-अछिंदित्ता-पदं २१९, बूइत्ता-अबूइत्ता-पदं २२५, भासित्ता-अभासित्ता-पदं २३१, दच्चा-अदच्चा-पदं २३७, भुंजित्ता-अभुंजित्ता-पदं २४३, लभित्ता-अलभित्ता-पदं २४९, पिवित्ता-अपिवित्ता-पदं २५५, सुइत्ता-असुइत्ता-पदं २६१, जुज्जित्ता-अजुज्जित्ता-पदं २६७, जइत्ता-अजइत्ता-पदं २७३, पराजिणित्ता-अपराजिणित्ता-पदं २७९, सुणेत्ता-असुणेत्ता-पदं २८५, पासित्ता-अपासित्ता-पदं २९१, अग्घाइत्ता-अणग्घाइत्ता-पदं २९७, आसाइत्ता-अणासाइत्ता-पदं ३०३, फासेत्ता-अफासेत्ता-पदं ३०९, गरहिय-पदं ३१५, पसत्थ-पदं ३१६, जीव-पदं ३१७, लोगठिता-पदं ३१९, दिसा-पदं ३२०, तस-थावर-पदं ३२६ अच्छेज्जादि-पदं ३२८, दुक्ख-पदं ३३६, आलोयणा-पदं ३३८, सुयधर-पदं ३४४, उपधि-पदं ३४५, आयरक्ख-पदं ३४८, वियडदत्ति-पदं ३४९, विसंभोग-पदं ३५०, अणुण्णादि-पदं ३५१, वयण-पदं ३५५, मण-पदं ३५७, वुट्ठि-पदं ३५९, अहुणोववण्ण-देव-पदं ३६१, देवस्स मणट्ठिइ-पदं ३६३, विमाण-पदं ३६७, दिट्ठि-पदं ३७०, दुग्गति-सुगति-पदं ३७२, तव-पाणग-पदं ३७६, पिंडेसणा-पदं ३७९, ओमोयरिया-पदं ३८१, निग्गंथ-चरिया-पदं ३८३, सल्ल-पदं ३८५, तेउलेस्सा-पदं ३८६, भिक्खुपडिमा-पदं ३८७, कम्मभूमी-पदं ३९०, दंसण-पदं ३९२, पओग-पदं ३९४, ववसाय-पदं ३९५, अत्थजोणी-पदं ४००, पोग्गल-पदं ४०१, नरग-पदं ४०२, मिच्छत्त-पदं ४०३, धम्म-पदं ४१०, उवक्कम-पदं ४११, तिवग्ग-पदं ४१६, पडिमा-पदं ४१९, काल-पदं ४२५, वयण-पदं ४२९, णाणादीणं पण्णवणा-सम्म-पदं ४३०, उवघात-विसोहि-पदं ४३२, आराहणा-पद ४३४, संकिलेस-असंकिलेस-पदं ४३८, अइक्कम-आदि पदं ४४०, पायच्छित्त-पदं ४४८, अकम्मभूमि-पदं ४४९, वास-पदं ४५१, वासहरपव्वय-पदं ४५३, महादह-पदं ४५५, नदी-पदं

४५७, धाइयसंड-पुक्खरवर-पदं ४६३, भूकंप-पदं ४६४, देवकिव्विसिय-पदं ४६६, देवठिति-पदं ४६७, पायच्छित्त-पदं ४७०, पव्वज्जादि-अजोग्ग-पदं ४७४, अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पदं ४७६ दुसण्णप्प-सुसण्णप्प-पदं ४७८, मंडलिय-पव्वय-पदं ४८०, महतीमहालय-पदं ४८१, कप्पठिति-पदं ४८२, सरीर-पदं ४८३, पडिणीय-पदं ४८८, अंग-पदं ४९४, मणोहर-पदं ४९६, पोग्गल-पडिघात-पदं ४९८, चक्खु-पदं ४९९, अभिसमागम-पदं ५००, इड्ढि-पदं ५०१, गारव-पदं ५०५, करण-पदं ५०६, सुयक्खायधम्म-पदं ५०७, जाणु-अजाणु-पदं ५०८, अंत-पदं ५११, जिण-पदं ५१२, लेसा-पदं ५१५, मरण-पदं ५१९, असद्दहंतस्स पराभव-पदं ५२३, सद्दहंतस्स विजय-पदं ५२४, पुढवी-वलय-पदं ५२५, विग्गह-गइ-पदं ५२६, खीणमोह-पदं ५२७, णक्खत्त-पदं ५२८, तित्थकर-पदं ५३०, गेविज्ज-विमाण-पदं ५३६, पावकम्म-पदं ५४०, पोग्गल-पदं ५४१,•

चउत्थं ठाणं सू० १-६६२ पृ० ५९४-६८०

अंतकिरिया-पदं १, उन्नत-पणत-पदं २, उज्जु-वंक-पदं १२, भासा-पदं २२, सुद्ध-असुद्ध-पदं २४, सुत-पदं ३४, सच्च-असच्च-पदं ३५, सुचि-असुचि-पदं ४५, कोरव-पदं ५५, भिक्खाग-पदं ५६, तणवणस्सइ-पदं ५७, अहुणोववण्ण-णेरइय-पदं ५८, संघाडि-पदं ५९, झाण-पदं ६०, देवाणं पदमेरा-पदं ७३, संवास-पदं ७४, कसाय-पदं ७५, कम्मपगडि-पदं ९२, पडिमा-पदं ९६, अत्थिकाय-पदं ९९, आम-पक्क-पदं १०१, सच्च-मोस-पदं १०२, पणिधाण-पदं १०४, आवात-संवास-पदं १०७, वज्ज-पदं १०८, लोगोपचार-विणय-पदं १११, सज्झाय-पदं ११६, लोगपाल-पदं १२१, देव-पदं १२३, पमाण-पदं १२५, महत्तरिया-पदं १२६, देवठिति-पदं १२८, संसार-पदं १३०, दिट्ठिवाय-पदं १३१, पायच्छित्त-पदं १३२, काल-पदं १३४, पोग्गल-परिणाम-पदं १३५, चाउज्जाम-पदं १३६, दुग्गति-सुगति-पदं १३८, कम्मंस-पदं १४२, हासुप्पत्ति-पदं १४५, अन्तर-पदं १४६, भयग-पदं १४७, पडिसेवी-पदं १४८, अग्गमहिसि-पदं १४९, विगति-पदं १८३, गुत्त-अगुत्त-पदं १८६, ओगाहणा-पदं १८८, पण्णत्ति-पदं १८९, पडिसंलीण-अपडिसंलीण-पदं १९०, दीण-अदीण-पदं १९४, अज्ज-अणज्ज-पदं २११, जाति-पदं २२९, कुल-पदं २३३, बल-पदं २३५, हत्थि-पदं २३६, विकहा-पदं २४१, कहा-पदं २४६, किस-दढ-पदं २५१, अतिसेस-नाण-दंसण-पदं २५४, सज्झाय-पदं २५६, लोगठिति-पदं २५९, पूरिस-भेद-पदं २६०, आय-पर-पदं २६१, गरहा-पदं २६४, अलमंथु-पदं २६५, उज्जु-वंक-पदं २६६, खेम-अखेम-पदं २६७, वाम-दाहिण-पदं २६९, णिग्गंथ-णिग्गंथी-पदं २७४, तमुक्काय-पदं २७५, दोस-पदं २७९, जय-पराजय-पदं २८०, माया-पदं २८२, माण-पदं २८३, लोभ-पदं २८४, संसार-पदं २८५, आहार-पदं २८८, कम्मावत्था-पदं २९०, संखा-पदं ३००, कूड-पदं ३०३, काल-चक्क-पदं ३०४, अकम्मभूमि-पदं ३०७, महाविदेह-पदं ३०८, पव्वय-पदं ३०९, सलागा-पुरिस-पदं ३१५, मंदर-पव्वय-पदं ३१६, धायइसंड-पुक्खरवर-पदं ३१९, दार-पदं ३२०, अंतरदीव-पदं ३२१, महापायाल-पदं ३२९, आवास-पव्वय-पदं ३३०, जोइस-पदं ३३२, दार-पदं ३३५, धायइसंड-पुक्खरवर-पदं ३३६, णंदीसरवरदीव-पदं ३३८, सच्च-पदं ३४९, आजीविय-तव-पदं ३५०, कोह-पदं ३५४, भाव-पदं ३५५, रुत-रूव-पदं ३५६,

पत्तिय-अपत्तिय-पदं ३५७, उपकार-पदं ३६१, आसास-पदं ३६२, उदित-अत्थमित-पदं ३६३, जुम्म-पदं ३६४, सूर-पदं ३६७, उच्चणीय-पदं ३६८, लेसा-पदं ३६९, जुत्त-अजुत्त-पदं ३७१, सारहि-पदं ३७९, जुत्ता-अजुत्ता-पदं ३८०, पंथ-उप्पह-पदं ३८८, रूव-सील-पदं ३८९, जाति-पदं ३९०, कुल-पदं ३९६, बल-पदं ४०१, रूव-पदं ४०५, सुय-पदं ४०८, सील-पदं ४१०, आयरिय-पदं ४११, वेयावच्च-पदं ४१२, अट्ठ-माण-पदं ४१४, धम्म-पदं ४१९, आयरिय-पदं ४२२, अंतेवासि-पदं ४२४, महाकम्म अप्पकम्म-निग्गंथ-पदं ४२६, महाकम्म-अप्पकम्म-निग्गंथी-पदं ४२७, महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासग-पदं ४२८, महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासिथा-पदं ४२९, समणोवासग-पदं ४३०, अहुणोववण्ण-देव-पदं ४३३, अंधयार-उज्जोयाइ-पदं ४३५, दुहसेज्जा-पदं ४५०, सुहसेज्जा-पदं ४५१, अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पदं ४५२, आयपर-पदं ४५४, दुग्गत-सुग्गत-पदं ४५५, तम-जोति-पदं ४६०, परिण्णात-अपरिण्णात-पदं ४६३. इहत्थ-परत्थ-पदं ४६६, हाणि-वुड्ढि-पदं ४६७, आइण्ण-खलुंक-पदं ४६८, जाति-पदं ४७०, कुल पदं ४७४, बल-पदं ४७७, रूव-पदं ४७९, सीह-सियाल-पदं ४८०, सम-पदं ४८१, विसरीर-पदं ४८३, सत्त-पदं ४८६, पडिमा-पदं ४८७, सरीर-पदं ४९१, फुड-पदं ४९३, तुल्ल-पदं ४९५, णो सुपस्स-पदं ४९६, इंदियत्थ-पदं ४९७, अलोग-अगमण-पदं ४९८, णात-पदं ४९९, हेउ-पदं ५०४, संखाण-पदं ५०५, अंधगार-उज्जोय-पदं ५०६, पसप्पग-पदं ५०९, आहार-पदं ५१०, आसीविस-पदं ५१४, वाहि-तिगिच्छा-पदं ५१५, वणकर-पदं ५१८ अंतोबाहि-पदं ५२१, सेयंस-पावंस-पदं ५२३, आघवण-पदं ५२७, रुक्खविगुव्वणा-पदं ५२९, वादि-समोसरण-पदं ५३०, मेह-पदं ५३३, अम्म-पियर-पदं ५३८, राय-पदं ५३९, मेह-पदं ५४०, आयरिय-पदं ५४१, भिक्खाग-पदं ५४४, गोल-पदं ५४५, पत्त पदं ५४८, कड-पदं ५४९, तिरिय-पदं ५५०, भिक्खाग-पदं ५५३, णिक्कट्ठ-अणिक्कट्ठ-पदं ५५४, बुध-अबुध-पदं ५५६, अणुकंपग-पदं ५५८, संवास-पदं ५५९, अवद्धंस-पदं ५६६, पव्वज्जा-पदं ५७१, सण्णा-पदं ५७८, काम-पदं ५८३, उत्ताण-गंभीर-पदं ५८४, तरग-पदं ५८८, पुण्ण-तुच्छ-पदं ५९०, चरित्त-पदं ५९५, महु-विस-पदं ५९६, उवसग्ग-पदं ५९७, कम्म-पदं ६०२, संघ-पदं ६०५, बुद्धि-पदं ६०६, मइ-पदं ६०७, जीव-पदं ६०८, मित्त-अमित्त-पदं ६१०, मुत्त-अमुत्त-पदं ६१२, गति-आगति-पदं ६१४, संजम-असंजम-पदं ६१६, किरिया-पदं ६१८, गुण-पदं ६२१, सरीर-पदं ६२३, धम्म-दार-पदं ६२७, आउ-बंध-पदं ६२८, वज्ज-नट्टआइ-पदं ६३२, विमाण-पदं ६३८, देव-पदं ६३९, गब्भ-पदं ६४०, पुव्ववत्थ-पदं ६४३, कव्व-पदं ६४४, समुग्घात-पदं ६४५, चोदसपुव्वि-पदं ६४७, वादि-पदं ६४८, कप्प-पदं ६४९, समुद्द-पदं ६५२, कसाय-पदं ६५३, नक्खत्त-पदं ६५४, पाव-कम्म-पदं ६५७, पोग्गल-पदं ६५९ ।

•

पंचमं ठाणं सू० १-२४० पृ० ६८१-७१६

महव्वय-अणुव्वय-पदं १, इंदिय-विसय-पदं ३, आसव-संवर-पदं १६, पडिमा-पदं १८, थावर-काय-पदं १९, अइसेस-नाण-दंसण-पदं २१, सरीर-पदं २३, तित्थभेद-पदं ३२, अब्भणुण्णात-पदं ३४, महानिज्जर-पदं ४४, विसंभोग-पदं ४६, पारंचित-पदं ४७, वुग्गहट्ठाण-पदं ४८, अवुग्गहट्ठाण-

पदं ४९, णिसिज्जा-पदं ५०, अज्जवट्ठाण-पदं ५१, जोइसिय-पदं ५२, देव-पदं ५३, परिचारणा-पदं ५४, अग्गमहिसी-पदं ५५, अणिय-अणियाहिवइ-पदं ५७, देवठिति-पदं ६८, पडिहा-पदं ७०, आजीव-पदं ७१, राय-चिंध-पदं ७२, उदिन्न-परिस्सहोवसग्ग-पदं ७३, हेउ-पदं ७५, अहेउ-पदं ७९, अणुत्तर-पदं ८३, पंच-कल्लाण-पदं ८४, महाणदी-उत्तरण-पदं ९८, पढमपाउस-पदं ९९, वासावास-पदं १००, अणुग्घातिय-पदं १०१, रायंतेउर-पवेस-पदं १०२, गब्भधरण-पदं १०३, णिग्गंथ-णिग्गंथी-एगओवास-पदं १०७, आसव-संवर-पदं १०९, दंड-पदं १११, किरिया-पदं ११२, परिण्णा-पदं १२३, ववहार-पदं १२४, सुत्त-जागर-पदं १२५, रयादाण-वमण-पदं १२८, दत्ति-पदं १३०, उवघात-विसोहि-पदं १३१, दुल्लभ-सुलभबोहि-पदं १३३, पडिसंलीण-अपडिसंलीण-पदं १३५, संवर-असंवर-पदं १३७, संजम-असंजम-पदं १३९, तण-वणस्सइ-पदं १४६, आयारपदं १४७, आयारपकप्प-पदं १०८, आरोवणा-पदं १४९, वक्खार-पव्वय-पदं १५०, महादह-पदं १५४, वक्खारपव्वय-पदं १५६, धायइसंड-पुक्खरवर-पदं १५७, समयक्खेत्त-पदं-१५८, ओगाहणा-पदं १५९, विबोध-पदं १६४, निग्गंथी-अवलंबण-पदं १६५, आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पदं १६६, आयरिय-उवज्झाय-गणावक्कमण-पदं १६७, इड्ढिमंत-पदं १६८, अत्थिकाय-पदं १६९, गइ-पदं १७५, इंदियत्थ-पदं १७६, मुंड-पदं १७७, बायर-पदं १७८, अचित्त-वाउकाय-पदं १८३, णियंठ-पदं १८४, उपधि-पदं १९०, णिस्साट्ठाण-पदं १९२, णिहि-पदं १९३, सोच-पदं १९४, छउमत्थ-केवलि-पदं १९५, महाणिरय-पदं १९६, महाविमाण-पदं १९७, सत्त-पदं १९८, भिक्खाग-पदं १९९, वणीमग-पदं २००, अचेल-पदं २०१, उक्कल-पदं २०२, समिती-पदं २०३, जीव-पदं २०४, गति-आगति-पदं २०५, जीव-पदं २०८, जोणि-ठिइ-पदं २०९, संवच्छर-पदं २१०, जीवस्स णिज्जाणमग्ग-पदं २१४, छेयण-पदं २१५, आणंतरिय-पदं २१६, अणंत-पदं २१७, णाण-पदं २१८, पच्चक्खाण-पदं २२१, पडिक्कमण-पदं २२२, सुत्त-पदं २२३, कप्प-पदं २२५, बंध-पदं २२८, महाणदी-पदं २३०, तित्थगर-पदं २३४, सभा-पदं २३५, णक्खत-पदं २३७, पाव-कम्म-पदं २३८, पोग्गल-पदं २३९।

छट्ठं ठाणं सू० १-१३२ पृ० ७१७-७३२

गण-धारण-पदं १, निग्गंथी-अवलंबण-पदं २, साहम्मियस्स अंतकम्म-पदं ३, छउमत्थ-केवलि-पदं ४, असंभव-पदं ५, जीव-पदं ६, गति–आगति-पदं ९, जीव-पदं ११, तणवणस्सइ-पदं १२, णो-सुलभ-पदं १३, इंदियत्थ-पदं १४, संवर-असंवर-पदं १५, सात-असात-पदं १७, पायच्छित्त-पदं १९, मणुस्स-पदं २०, कालचक्क-पदं २३, संघयण-पदं ३०, संठाण-पदं ३१, अणत्तव-अत्तव-पदं ३२, आरिय-पदं ३४, लोगट्ठिति-पदं ३६, दिसा-पदं ३७, आहार-पदं ४१, उम्माय-पदं-४३, पमाय-पदं ४४, पडिलेहणा-पदं ४५, लेसा-पदं ४७, अग्गमहिसी-पदं ५०, देवठिति-पदं ५२, महत्तरिया-पदं ५३, अग्गमहिसी-पदं ५५, सामाणिय-पदं ५६, मइ-पदं ६१, तव-पदं ६५, विवाद-पदं ६७, खुड्डपाण-पदं ६८, गोयरचरिया-पदं ६९, महाणिरय-पदं ७०, विमाण-पत्थड-पदं ७२, नक्खत्त-पदं ७३, इतिहास-पदं ७६, संजम-

असंजम-पदं ८१, खेत्त-पव्वय-पदं ८३, महादह-पदं ८८, णदी-पदं ८९, धायइसंड-पुक्खरवर-पदं ९३, उउ-पदं ९५, ओमरत्त-पदं ९६, अतिरत्त-पदं ९७, अत्थोग्गह-पदं ९८, ओहिणाण-पदं ९९, अवयण-पदं १००, कप्पस्स-पत्थार-पदं १०१, पलिमंथु-पदं १०२, कप्पठिति-पदं १०३, महावीरस्स-छट्ठभत्त-पदं १०४, विमाण-पदं १०७, देव-पदं १०८, भोयण-परिणाम-पदं १०९, विसपरिणाम-पदं ११०, पट्ठ-पदं १११, विरहिय-पदं ११२, आउयवंध-पदं ११६, परभवियाउय-पदं ११९, भाव-पदं १२४, पडिक्कमण-पदं १२५, नक्खत्त-पदं १२६, पावकम्म-पदं १२८, पोग्गल-पदं १२९।

●

सत्तमं ठाणं **सू० १-१५५** **पृ० ७३३-७५५**

गणावक्कमण-पदं १, विभंगणाण-पदं २, जोणिसंगह-पदं ३, गति-आगति-पदं ४, संगहट्ठाण-पद ६, असंगहट्ठाण-पदं ७, पडिमा-पदं ८, आयारचूला-पदं ११, पडिमा-पदं १३, अहेलोगट्ठिति-पदं १४, बायरवाउकाइय-पदं २५, संठाणं-पदं २६, भयठाणं-पदं २७, छउमत्थ-पदं २८, केवलि-पदं २९, गोत्त-पदं ३०, णय-पदं ३८, सरमंडल-पदं ३९, कायकिलेस-पदं ४९, खेत्त-पव्वय-नदी-पदं ५०, कुलगर-पदं ६१, चक्कवट्टिरयण-पदं ६७, दुस्समा-लक्खण-पदं ६९, सुसमा-लक्खण-पदं ७०, जीव-पदं ७१, आउभेद-पदं ७२, जीव-पदं ७३, बंभदत्त-पदं ७४, मल्लीपव्वज्जा-पदं ७५, दंसण-पदं ७६, छउमत्थ-केवलि-पदं ७७, महावीर-पदं ७९, विकहा-पदं ८०, आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पदं ८१, संजम-असंजम-पदं ८२, आरंभ-पदं ८४, जोणि-ठिइ-पदं ९०, ठिति-पदं ९१, अग्गमहिसी-पदं ९४, देव-पदं ९७, णंदीसरवर-पदं ११०, सेढी-पदं ११२, अणिय-अणियाहिवइ-पदं ११३, वयणविकप्प-पदं १२९, विणय-पदं १३०, समुग्घात-पदं १३८, पवयणणिण्हग-पदं १४०, अणुभाव-पदं १४३, णक्खत्त-पदं १४५, कूड पदं १५०, कुलकोडि-पदं १५२, पावकम्म-पदं १५३, पोग्गल-पदं १५४।

●

अट्ठमं ठाणं **सू० १-१२८** **पृ० ७५६-७७६**

एगल्लविहार-पडिया-पदं १, जोणिसगह-पदं २, गति-आगति-पदं ३, कम्म-बंध-पदं ५, आलोयणा-पदं ६, संवर-असंवर-पदं ११, फास-पदं १३, लोगट्ठिति-पदं १४, गणिसंपया-पदं १५, महाणिहि-पदं १६, समिति-पदं १७, आलोयणा-पदं १८, पायच्छित्त-पदं २०, मदट्ठाण-पदं २१, अकिरियावादि-पदं २२, महाणिमित्त-पदं २३, वयणविभत्ति-पदं २४, छउमत्थ-केवलि-पदं २५, आउवेद-पदं २६, अग्गमहिसी-पदं २७, महग्गह-पदं ३१, तणवणस्सइ-पदं ३२, संजम-असंजम-पदं ३३, सुहुम-पदं ३५, भरहचक्कवट्टि-पदं ३६, पास-गण-पदं ३८, दंसण-पदं ३८, ओवमिय-पदं ३९, अरिट्ठनेमि-पदं ४०, महावीर-पदं ४१, आहार-पदं ४२, कण्हराइ-पदं ४३, मज्झपदेस-पदं ४८, महापउम-पदं ५२, कण्ह-अग्गमहिसी-पदं ५३, पुव्व-वत्थू-पदं ५४, गति-पदं ५५, दीवसमुद्द-पदं ५६, काकणिरयण-पदं ६१, मागध-जोयण-पदं ६२, जंबूदीव-पदं ६३, धायइसंड-पदं ८६, पुक्खरवर-पदं ८९, कूड-पदं ९१, जगति-पदं ९२, कूड-पदं

९३ महत्तरिया-पदं ९९, कप्प-पदं १०१, पडिमा-पदं १०४, जीव-पदं १०५, संजम-पदं १०७, पुढवि-पदं १०८, अब्भुट्ठितव्व-पदं १११, विमाण-पदं ११२, वादि-पदं ११३, केवलिसमुग्घात-पदं ११४, अणुत्तरोववाइय-पदं ११५, वाणमंतर-पदं ११६, जोइस-पदं ११८, दार-पदं १२०, बंधठिति-पदं १२२, कुलकोडि-पदं १२५, पावकम्म-पदं १२६, पोग्गल-पदं १२७।

●

नवमं ठाणं सू १-७३ पृ० ७७७-७९४

विसंभोग-पदं १, बंभचेरअज्झयण-पदं २, बंभचेरगुत्ति-पदं ३, बंभचेरअगुत्ति-पदं ४, तित्थगर-पदं ५, सब्भावपयत्थ-पदं ६, जीव-पदं ७, गति-आगति-पदं ८, जीव-पदं १०, ओगाहणा-पदं ११, संसार-पदं १२, रोगुप्पति-पदं १३, दरिसणावरणिज्ज-पदं १४, जोइस-पदं १५, मच्छ-पदं १८, बलदेव-वासुदेव-पदं १९, महाणिहि-पदं २१, विगति-पदं २३, बोंदि-पदं २४, पुण्ण-पदं २५, पावायतण-पदं २६, पावासुयपसग-पदं २७, णेउणिय-पदं २८, मण-पदं २९, भिक्खा-पदं ३०, देव-पदं ३१, आउपरिणाम-पदं ४०, पडिमा-पदं ४१, पायच्छित्त-पदं ४२, कूड-पदं ४३, पास-पदं ५९, तित्थगरणामनिव्वत्तण-पदं ६०, भावितित्थगर-पदं ६१, महापउम-पदं ६२, णक्खत्त-पदं ६३, विमाण-पदं ६४ कुलगर-पदं ६५, तित्थगर-पदं ६६, दीव-पदं ६७, महग्गह-पदं ६८, कम्म-पदं ६९, कुलकोडि-पदं ७०, पावकम्म-पदं ७२, पोग्गल-पदं ७३।

●

दसमं ठाणं सू० १-१७८ पृ० ७९५-८२३

लोगट्ठिति-पदं १, इंदियत्थ-पदं २, अच्छिन्न-पोग्गल-चलण-पदं ६, कोधुप्पत्ति-पदं ७, संजम-असंजम-पदं ८, संवर-असंवर-पदं १०, अहमंत-पदं १२, समाधि-असमाधि-पदं १३, पव्वज्जा-पदं १५, समणधम्म-पदं १६, वेयावच्च-पदं १७, परिणाम-पदं १८, असज्झाइय-पदं २०, संजम-असंजम-पदं २२, सुहुम-पदं २४, महाणदी-पदं २५, रायहाणि-पदं २७, राय-पदं २८, मंदर-पदं २९, दिसा-पदं ३०, लवणसमुद्द-पदं ३२, पायाल-पदं ३४, पव्वय-पदं ३६, खेत्त-पदं ३९, पव्वय-पदं ४०, दवियाणुओग-पदं ४६, उप्पातपव्वय-पदं ४७, ओगाहणा-पदं ६२, तित्थगर-पदं ६५, अणंत-पदं ६६, पुव्ववत्थु-पदं ६७, पडिसेवणा-पदं ६९, आलोयणा-पदं ७०, पायच्छित-पदं ७३, मिच्छत ७४, तित्थगर-पदं ७५, वासुदेव-पदं ७८, तित्थगर-पदं ७९, वासुदेव-पदं ८०, भवणवीस-पदं ८१, सोक्ख-पदं ८३, उवघात-विसोहि-पदं ८४, संकिलेस-असंकिलेस-पदं ८६, बल-पदं ८८, भासा-पदं ८९, दिट्ठिवाय-पदं ९२, सत्थ-पदं ९३, दोस-पदं ९४, विसेस-पदं ९५, सुद्धवायाणुओग-पदं ९६, दाण ९७, गति-पदं ९८, मुंड-पदं ९९, संखाण-पदं १००, सामायारी-पदं १०२, महावीर सुमिण-पदं १०३, रुचि-पदं १०४, सण्णा-पदं १०५, वेयणा-पदं १०८, छउमत्थ-केवलि-पदं १०९, दसा-पदं ११०, कालचक्क-पदं १२१, अणंतर-परंपर-उववण्णादि-पदं १२३, णरय-पदं १२४, ठिति-पदं १२५, भाविभद्दत्त-पदं १३३, आसंसप्पओग-पदं १३४, धम्म-पदं १३५, थेर-पदं १३६, पुत्त-पदं १३७, अणुत्तार-पदं १३८, कुरा-पदं १३९, दुस्समा-लक्खण-पदं १४०, सुसमा-लक्खण-पदं

१४१, रुक्ख-पदं १४२, कुलगर-पदं १४३, वक्खार-पव्वय-पदं १४५, कप्प-पदं १४८, पडिमा-पदं १५१, जीव-पदं १५२, सताउय-दसा-पदं १५४, तणवणस्सइ-पदं १५५, सेढि-पदं १५६, गेविज्जग-पदं १५८, तेयसा-भासकरण-पदं १५९, अच्छेरग-पदं १६०, कंड-पदं १६१, उव्वेह-पढं १६४, णक्खत्त-पदं १६८, णाणविड्ढिकर-पदं १७०, कुलकोडि-पदं १७१, पावकम्म-पदं १७३, पोग्गल-पदं १७४।

●

समवाओ

पढमो समवाओ सू० १-४६ पृ० ८२७-८२९

उक्खेव-पदं १, आय-आदि-पदं ४, जम्बुद्दीव-पदं २२, नरय-पदं २३, जाणविमाण-पदं २४, सव्वट्ठसिद्धमहाविमाण-पदं २५, नक्खत्त-पदं २६, ठिइ-पदं ३०, आणपाण-पदं ४४, आहारट्ठ-पदं ४५, सिद्धि-पदं ४६।

●

बीओ समवाओ सू० १-२३ पृ० ८२९-८३०

दंड-पदं १, रासि-पदं २, बंध-पदं ३, नक्खत्त-पदं ४, ठिइ-पदं ८, आणपाण-पदं २१, आहारट्ठ-पदं २२, सिद्धि-पदं २३।

●

तइओ समवाओ सू० १-२४ पृ० ८३०-८३१

दंड-पदं १, गुत्ति-पदं २, सल्ल-पदं ३, गारव-पदं ४, विराहणा-पदं ५, नक्खत्त-पदं ६, ठिइ-पदं १३, आणपाण-पदं २२, आहारट्ठ-पदं २३, सिद्धि-पदं २४।

●

चउत्थो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८३२

कसाय-पदं १, झाण-पदं २, विगहा-पदं ३, सण्णा-पदं ४, बंध-पदं ५, जोयण-पदं ६, नक्खत्त-पदं ७, ठिइ-पदं १०, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८।

●

पंचमो समवाओ सू० १-२२ पृ० ८३३-८३४

किरिया-पदं १, महव्वय-पदं २, कामगुण-पदं ३, आसवदार-पदं ४, संवरदार-पदं ५, निज्जरट्ठाण-पदं ६, समिइ-पदं ७, अत्थिकाय-पदं ८, नक्खत्त-पदं ९, ठिइ-पदं १४, आणपाण-पदं २०, आहारट्ठ-पदं २१, सिद्धि-पदं २२।

●

छट्ठो समवाओ सू० १-१७ पृ० ८३४-८३५

लेसा-पदं १, जीवनिकाय-पदं २, तवोकम्म-पदं ३, समुग्घाय-पदं ५, अत्थुग्गह-पदं ६, नक्खत्त-पदं ७, ठिइ-पदं ८, आणपाण-पदं १५, आहारट्ठ-पदं १६, सिद्धि-पदं १७।

●

सत्तमो समवाओ सू० १-२३ पृ० ८३५-८३६

भयट्ठाण-पदं १, समुग्घाय-पदं २. महावीर-पदं ३, वासहरपव्वय-पदं ४, वास-पद ५,

कम्म-पदं ६, नक्खत्त-पदं ७, ठिइ-पदं १२, आणपाण-पदं २१, आहारट्ठ-पदं २२, सिद्धि-पदं २३ ।

●

अट्ठमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८३७-८३८

मयट्ठाण-पदं १, पवयणमाया-पदं २, चेइयरुक्ख-पदं ३, जंबू-पदं ४, कूडसामलि-पदं ५, जंबुद्दीव-पदं ६, समुग्घाय-पदं ७, गण-गणहर-पदं ८, नक्खत्त-पदं ९. ठिइ-पदं १०, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८ ।

●

नवमो समवाओ सू० १-२० पृ० ८३८-८४०

बंभचेर-गुत्ति-पदं १, बंभचेर-अगुत्ति-पदं २, बंभचेर-पदं ३, पास-पदं ४, नक्खत्त-पदं ५, तारा-पदं ७. मच्छ-पदं ८, भोम-पदं ९, सुधम्मसभा-पदं १०, कम्म-पदं ११, ठिइ-पदं १२, आणपाण-पदं १८, आहारट्ठ-पदं १९, सिद्धि-पदं २० ।

●

दसमो समवाओ सू० १-२५ पृ० ८४०-८४२

समण-धम्म-पदं १, चित्तसमाहि-ट्ठाण-पदं २, मंदरपव्वय-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, वासुदेव-वलदेव-पदं ५, नक्खत्त-पदं ७, रुक्ख-पदं ८, ठिइ-पदं ९, आणपाण-पदं २३, आहारट्ठ-पदं २४, सिद्धि-पदं २५ ।

●

एक्कारसमो समवाओ सू० १-१६ पृ० ८४२-८४३

उवासगपडिमा-पदं १, जोइसंत-पदं २, जोइस-पदं ३, गणहर-पदं ४, नक्खत्त-पदं ५, विमाण-पदं ६, मंदर-पव्वय-पदं ७, ठिइ-पदं ८, आणपाण-पदं १४, आहारट्ठ-पदं १५, सिद्धि-पदं १६ ।

●

बारसमो समवाओ सू० १-२० पृ० ८४३-८४५

भिक्खुपडिमा-पदं १, संभोग-पदं २, कितिकम्म-पदं ३, विजयरायहाणी-पदं ४, बलदेव-पदं ५, मंदरपव्वय-पदं ६, जंबूदीव-वेइया-पदं ७, राइ-पदं ८, दिवस-पदं ९, ईसिपब्भार-पदं १०, ठिइ-पदं १२, आणपाण-पदं १८, आहारट्ठ-पदं १९, सिद्धि-पदं २० ।

●

तेरसमो समवाओ सू० १-१७ पृ० ८४५-८४६

किरियाठाण-पदं १, विमाणपत्थड-पदं २, विमाण-पदं ३, जाइकुलकोडी-पदं ५, पुव्व-पदं ६, पओग-पदं ७, सूरमंडल-पदं ८, ठिइ-पदं ९. आणपाण-पदं १५, आहारट्ठ-पदं १६, सिद्धि-पदं १७ ।

●

चउद्दसमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८४६-८४८

भूअग्गाम-पदं १, पुव्व पदं २, महावीर-पदं ४, जीवट्ठाण-पदं ५, भरहेरवय-पदं ६, रयण-पदं ७, महानई-पदं ८. ठिइ-पदं ९, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८ ।

पण्णरसमो समवाओ सू० १-१६ पृ० ८४८-८४९

परमाहम्मिय-पदं १, णमि-पदं २, धुवराहु-पदं ३, नक्खत्त-पदं ५, दिवस-पदं ६, राइ-पदं ७, पुन्न-पदं ८, पओग-पदं ९, ठिइ-पदं १०, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८।

सोलसमो समवाओ सू० १-१६ पृ० ८५०-८५१

गाहा सोलसग-पदं १, कसाय-पदं २, मंदर-पव्वय-पदं ३, पास-पदं ४, पुव्व-पदं ५, चरम-बलि-पदं ६, उस्सेहपरिवुड्ढि-पदं ७, ठिइ-पदं ८, आणपाण-पदं १४, आहारट्ठ-पदं १५, सिद्धि-पदं १६।

सत्तरसमो समवाओ सू० १-२१ पृ० ८५१-८५३

असंजमं-पदं १, संजम-पदं २, माणुसुत्तर-पव्वय-पदं ३, आवास पव्वय-पदं ४, लवणसमुद्द-पदं ५, चारण-पदं ६, उप्पाय-पव्वय-पदं ७, मरण-पदं ९, कम्म-पदं १०, ठिइ-पदं ११, आणपाण-पदं १९, आहारट्ठ-पदं २०, सिद्धि-पदं २१।

अट्ठारसमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८५३-८५४

बंभ-पदं १, तित्थयर-पदं २, अट्ठारस-ठाण-पदं ३, आयार-पदं ४, लिवि-पदं ५, पुव्व-पदं ६, धूमप्पभा-पदं ७, दिवस-राइ-पदं ८, ठिइ-पदं ९, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८।

एगूणवीसइमो समवाओ सू० १-१५ पृ० ८५५-८५६

णायज्झयण-पदं १, सूरिय-पदं २, सुक्क-पदं ३, जंबुद्दीव-कला-पदं ४, तित्थयर-पदं ५, ठिइ-पदं ६, आणपाण-पदं १३, आहारट्ठ-पदं १४, सिद्धि-पदं १५।

वीसइमो समवाओ सू० १-१७ पृ० ८५६-८५७

असमाहिट्ठाण-पदं १, तित्थयर-पदं २, घणोदहि-पदं ३, देव-पदं ४, कम्म-बंध-ठिइ-पदं ५, पुव्व-पदं ६, ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं ७, ठिइ-पदं ८, आणपाण-पदं १५, आहारट्ठ-पदं १६, सिद्धि-पदं १७।

एक्कवीसइमो समवाओ सू० १-१४ पृ० ८५७-८५८

सबल-पदं १, कम्म-पदं २, ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं ३, ठिइ-पदं ५, आणपाण-पदं १२, आहारट्ठ-पदं १३, सिद्धि-पदं १४।

बावीसइमो समवाओ सू० १-१४ पृ० ८५९-८६०

परीसह-पदं १, दिट्ठिवाय-पदं २, पोग्गलपरिणाम-पदं ३, ठिइ-पदं ४, आणपाण-पदं १२, आहारट्ठ-पदं १३, सिद्धि-पदं १४।

तेवीइसमो समवाओ सू० १-१३ पृ० ८६०-८६१

सूयगडज्झयण-पदं १, जिण-पदं २, तित्थकर-पुव्वभव पदं ३, ठिइ-पदं ५, आणपाण-पदं ११, आहारट्ठ-पदं १२, सिद्धि-पदं १३ ।

चउव्वीसइमो समवाओ सू० १-१५ पृ० ८६१-८६२

देवाहिदेव-पदं १, चुल्लहिमवंत-पदं २, सइंद-देवट्ठाण-पदं ३, सूरिय-पदं ४, महाणदी-पदं ५, ठिइ-पदं ७, आणपाण-पदं १३, आहारट्ठ-पदं १४, सिद्धि-पदं १५ ।

पणवीसइमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८६२-८६४

भावणा-पदं १, तित्थयर-पदं २, दीहवेयड्ढ-पदं ३, आवास-पदं ४, आयार-पदं ५, कम्मबंध-पदं ६, महाणदी-पदं ७, पुव्व-पदं ९, ठिइ-पदं १०, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पदं १८ ।

छव्वीसइमो समवाओ सू० १-११ पृ० ८६४-८६५

आगम-पदं १, कम्म-पदं २, ठिइ-पदं ३, आणपाण-पदं ९, आहारट्ठ-पदं १०, सिद्धि-पदं ११ ।

सत्तावीसइमो समवाओ सू० १-१५ पृ० ८६५-८६६

अणगारगुण-पदं १, नक्खत्त-पदं २, नक्खत्तमास-पदं ३, देवलोयपदं ४, कम्म-पदं ५, सूरिय-पदं ६, ठिइ-पदं ७, आणपाण-पदं १३, आहारट्ठ-पदं १४, सिद्धि-पदं १५ ।

अट्ठावीसइमो समवाओ सू० १-१५ पृ० ८६७-८६९

आयारपकप्प-पदं १, कम्म-पदं २, णाण-पदं ३, आवास-पदं ४, कम्म-पदं ५, ठिइ-पद ७, आणपाण-पदं १३, आहारट्ठ-पदं १४, सिद्धि-पदं १५ ।

एगूणतीसइमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८६९-८७०

पावसुयपसंग-पदं १, मास-पदं २, चंददिण-पदं ८, कम्म-पदं ९, ठिइ-पदं १०, आणपाण-पदं १६, आहारट्ठ-पदं १७, सिद्धि-पद १८ ।

तीसइमो समवाओ सू० १-१६ पृ० ८७०-८७४

मोहणीयठाण-पदं १, गणहर-पदं २, अहोरत्त-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, इंद-पदं ५, पास-पदं महावीर-पदं ७, आवास-पदं ८, ठिइ-पदं ९, आणपाण-पदं १४, आहारट्ठ-पदं १५, सिद्धि-पदं १६ ।

एकतीसइमो समवाओ सू० १-१४ पृ० ८७४-८७५

सिद्धाइगुण-पदं १, मंदर-पव्वय-पदं २, सूरिय-पदं ३, अभिवड्ढिय-मास-पदं ४, आइच्च-मास-पदं ५, ठिइ-पदं ६, आणपाण-पदं १२, आहारट्ठ-पदं १३, सिद्धि-पदं १४ ।

बत्तीसइमो समवाओ सू० १-१४ पृ० ८७५-८७६
जोगसंगह-पदं १, देविंद-पदं २, तित्थयर-पदं ३, आवास-पदं ४, नक्खत्त-पदं ५, नट्ट-पदं ६, ठिइ-पदं ७, आणपाण-पदं १२, आहारट्ठ-पदं १३, सिद्धि-पदं १४।

तेत्तीसइमो समवाओ सू० १-१४ पृ० ८७७-८७९
आसायणा-पदं १, भोम-पदं २, महाविदेह-पदं ३, सूरिय-पदं ४, ठिइ-पदं ५, आणपाण-पदं १२, आहारट्ठ-पदं १३, सिद्धि-पदं १४।

चोत्तीसइमो समवाओ सू० १-६ पृ० ८७९-८८१
बुद्धाइसेस-पदं १, चक्कवट्टिविजय-पदं २, दीहवेयड्ढ-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, आवास-पदं ५।

पणतीसइमो समवाओ सू० १-६ पृ० ८८१-८८२
सच्चवयणाइसेस-पदं १, तित्थयर-पदं २, वासुदेव-बलदेव-पदं ३, जिण-सकहा-पदं ५, आवास-पदं ६।

छत्तीसइमो सणवाओ सू० १-४ पृ० ८८२
उत्तरज्झयण-पदं १, सुहम्मसभा-पदं २, महावीर-पदं ३, सूरिय-पदं ४।

सत्ततीसइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८८२-८८३
गणहर-पदं १, जीवा-पदं २, देवलोय-पदं ३, आगम-पदं ४, सूरिय-पदं ५।

अट्ठत्तीसइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८८३
पास-पदं १, जीवा-धणुपट्ठ-पदं २, अत्थपव्वय-पदं ३, आगम-पदं ४।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ सू० १-८ पृ० ८८३-८८४
तित्थयर-पदं १, कुलपव्वय-पदं २, आवास-पदं ३, कम्म-पदं ४।

चत्तालीसइमो समवाओ सू० १-८ पृ० ८८३-८८४
तित्थयर-पदं १, मंदरचूलिया-पदं २, तित्थयर-पदं ३, आवास-पदं ४, आगम-पदं ५, सूरिय-पदं ६, आवास-पदं ८।

एक्कचत्तालीसइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८८४
तित्थयर-पदं १, आवास-पदं २, आगम-पदं ३।

बायालीसइमो समवाओ सू० १-१० पृ० ८८४-८८५
महावीर-पदं १, अंतर-पदं २, चंद-सूरिय-पदं ४, ठिइ-पदं ५, कम्म-पदं ६, लवणसमुद्द-पदं ७, आगम-पदं ८, ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं ९।

तेयालीसइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८८५

कम्मविवागज्झयण-पदं १, आवास-पदं २, अंतर-पदं ३, आगम-पदं ४ ।

चोयालीसइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८८५

इसिभासिय-पदं १, तित्थयर-पदं २, आवास-पदं ३, आगम-पदं ४ ।

पणयालीसइमो समवाओ सू० १-८ पृ० ८८५-८८६

समयखेत्त-पदं १, सीमंत-नरय-पदं २, उडुविमाण-पदं ३, ईसिपब्भारपुढवी-पदं ४, तित्थयर-पदं ५, अंतर-पदं ६, नक्खत्त-पदं ७, आगम-पदं ८ ।

छायालीसइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८८६

दिट्ठिवाय-पदं १, बंभी-लिवि-पदं २, आवास-पदं ३ ।

सत्तचालीसइयो समवाओ सू० १,२ पृ० ८८६

सूरिय-पदं १, गणहर-पदं २ ।

अडयालीसइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८८६

चक्कवट्टि-पदं १, गण-गणहर-पदं २, सूरमंडल-पदं ३ ।

एगूणपण्णासइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८८७

भिक्खुपडिमा-पदं १, देवकुरु- उत्तरकुरु-पदं २, ठिइ-पदं ३ ।

पण्णासइमो समवाओ सू० १-७ पृ० ८८७

तित्थयर-पदं १, वासुदेव-पदं ३, दीहवेयड्ढ-पदं ४, आवास-पदं ५, गुहा-पदं ६, कंचणगपव्वय-पदं ७ ।

एगपण्णासइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८८७

आगम-पदं १, सुहम्मसभा-पदं २, बलदेव-पदं ४, कम्म-पदं ५ ।

बावण्णइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८८८

कम्म-पदं १, अंतर-पदं २, कम्म-पदं ४, आवास-पदं ५ ।

तेवण्णइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८८८

जीवा-पदं १, महावीर-पदं ३, ठिइ-पदं ४ ।

चउवण्णइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८८९

उत्तमपुरिस-पदं १, तित्थयर-पदं २, महावीर-पदं ३, गण-गणहर-पदं ४।

पणपण्णइमो समवाओ सू० १-६ पृ० ८८९

तित्थयर-पदं १, अंतर-पदं २, महावीर-पदं ४, आवास-पदं ५, कम्म-पदं ६।

छप्पणइो समवाओ सू० १-२ प० ८८९

नक्खत्त-पदं १, गण-गणहर-पदं २।

सत्तावण्णइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८९०

गणिपिडग-पदं १, अंतर-पदं २, तित्थगर-पदं ४, जीवाधणुपट्ठ-पदं ५।

अट्ठावण्णइमो सवाओ सू० १-४ पृ० ८९०

आवास पदं १, कम्म-पदं २, अंतर-पदं ३।

एगूणसट्ठइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८९०

चंद-संवच्छर-पदं १, तित्थगर-पदं २।

सट्ठिमो समवाओ सू० १-६ पृ० ८९१

सूरिय-पदं १, लवणसमुद्द-पदं २, तित्थयर-पदं ३, इंद-पदं ४, आवास-पदं ६।

एगसट्ठिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९१

रिदुमास पदं १, मंदर-पव्वय-पदं २, चंदमंडल-पदं ३, सूरमंडल-पदं ४।

बावट्ठिमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८९१

पंचसंवच्छरिय-पदं १, गण-गणहर-पदं २, चंद-पदं ३, विमाण-पद ४, विमाणपत्थड-पदं ५।

तेवट्ठिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९१,८९२

तित्थयर-पदं १, हरिवास-रम्मयवास-पदं २, निसह-पव्वय-पदं ३, नीलवंत-पव्वय-पदं ४।

चउसट्ठिमो समवाओ सू० १-६ पृ० ८९२

भिक्खुपडिमा-पदं १, आवास-पदं २, चमर-पदं ३, दधिमुह-पव्वय-पदं ४, विमाणावास-पदं ५, चक्कवट्टि-पदं ६।

पणसट्ठिमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८९२

सूरमंडल-पदं १, गणहर-पदं २, भोम-पदं ३।

छावट्ठिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९२,८९३

चंद-सूरिय-पदं १, गण-गणहर-पदं ३, ठिइ-पदं ४।

सत्तसट्ठिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९३

नक्खत्तमास-पदं १, हेमवत-हेरण्णवत-पदं २, अंतर-पद ३, नक्खत्त-पदं ४।

अट्ठसट्ठिमो समवाओ सू० १-७ पृ० ८९३

धायइपंड-पदं १, पुक्खरवर-दीवड्ढ-पदं ४, तित्थयर-पदं ७।

एगूणसत्तरिमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८९४

वासधर-पव्वय-पदं १, अंतर-पदं २, कम्म-पदं ३।

सत्तरिमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८९४

महावीर-पदं १, पास पदं २, तित्थयर-पदं ३, कम्म-पदं ४, इंद-पदं ५।

एक्कसत्तरिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९४

सूरिय-पदं १, पुव्व-पदं २, तित्थयर-पदं ३, चक्कवट्टि-पदं ४।

बावत्तरिमो समवाओ सू० १-८ पृ० ८९५,८९६

देव-पदं १, लवणसमुद्द-पदं २, महावीर-पदं ३, मणहर-पदं ४, चंद-सूरिय-पदं ५, चक्कवट्टि-पदं ६, कला-पदं ७, ठिइ-पदं ८।

तेवत्तरिमो समवाओ सू० १-२ पृ० ८९६

हरिवास-रम्मयवास-पदं १, बलदेव-पदं २।

चोवत्तरिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९६

गणहर-पदं १, महाणई-पदं २, आवास-पदं ४।

पण्णत्तरिमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८९६

तित्थयर-पदं १।

छावत्तरिमो समवाओ सू० १-२ पृ० ८९७

देव-पदं १।

सत्तत्तरिमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९७

चक्कवट्टि-पदं १, अंगवंसराय-पदं २, देव-पदं ३, काल-पदं ४।

अट्ठसत्तरिमो समवाओ सू० १-४ ८९७

इंद-पदं १, गणहर-पदं २, सूरिय-पदं ३ ।

एगूणासीइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९८

अंतर-पदं १ ।

असीइइमो समवाओ सू० १-७ पृ० ८९८

तित्थयर-पदं १, वासुदेव-बलदेव-पदं २, कंड-पदं ५, इंद-पदं ६, सूरिय-पदं ७ ।

एक्कासीइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ८९८

भिक्खुपडिमा-पदं १, तित्थयर-पदं २, आगम-पदं ३ ।

बासीतिइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ८९८

सूरिय-पदं १, महावीर-पदं २, अंतर-पदं ३,

तेयासीइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ८९९

महावीर-पदं १, तित्थयर-पदं २, गणहर-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, चक्कवट्टि-पदं ५ ।

चउरासीइमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८९९-९००

आवास-पदं १, तित्थयर-पदं २, भरह-आदि-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, वासुदेव-पदं ५, इंद-पदं ६, मंदर-पदं ७, अंजणग-पव्वय-पदं ८, हरिवास-पदं ९, अंतर-पदं १०, आगम-पदं ११, देव-पदं १२, पइण्णग-पदं १३, जोणिप्पमुह-पदं १४, गुणकार-पदं १५, तित्थयर-पदं १६, आवास-पदं १८ ।

पंचासीइइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ९००

आगम-पदं १, धायइसंडपदं २, मंडलिय-पव्वय-पदं ३, अंतर-पदं ४ ।

छलसीइइमो समवाओ सू० १-३ पृ० ९००

गण-गणहर-पदं १, तित्थयर-पदं २, अंतर-पदं ३ ।

सत्तासिइइमो समवाओ सू० १-७ पृ० ९००-९०१

अंतर पदं १, कम्म-पदं ५, अंतर-पदं ६ ।

अट्ठासीइइमो समवाओ सू० १-८ पृ० ९०१-९०२

चंदसूरिय-पदं १, दिट्ठिवाय-पदं २, अंतर-पदं ३, सूरिय-पदं ७ ।

एगूणणउइइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ९०२
तित्थयर-पदं १, महावीर-पदं २, चक्कवट्टि-पदं ३, तित्थयर-पदं ४।

णउइइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ९०२-९०३
तित्थियर-पदं १, गण-गणहर-पदं २, वासुदेव-पदं ४, अंतर-पदं ५।

एक्क-णउइइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ९०३
पडिमा-पदं १, कालोय-समुद्द-पदं २, तित्थयर-पदं ३, कम्म-पद ४।

बाणउइइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ९०३
पडिमा-पदं १, गणहर-पदं २, अंतर-पदं ३।

तेणउइमो समवाओ सू० १-३ पृ०९०३
गण-गणहर-पदं १, तित्थयर-पदं २, सूरिय-पदं ३।

चउणइइमो समवाओ सू० १-२ पृ० ९०३
जीवा-पदं १, तित्थयर-पदं २।

पंचाणउइइमो समवाओ सू० १-५ पृ० ९०४
गण-गणहर-पदं १, महापायाल-पदं २, लवणसमुद्द-पदं ३, तित्थयर-पदं ४, गणहर-पदं ५।

छणउइइमो समवाओ सू० १-९ पृ० ९०४
चक्कवट्टि-पदं १, आवास-पदं २, ववहारिय-दंड-आदि-पदं ३, आतिमुहुत्त-पदं ९।

सत्ताणउइइमो समवाओ सू० १-४ पृ० ९०४, ९०५
अंतर-पदं १, कम्म-पदं ३, चक्कवट्टि-पदं ४।

अट्ठाणउइइमो समवाओ सू० १-७ पृ० ९०५
अंतर-पदं १, धणुपट्ठ-पदं ४, सूरिय-पदं ५, नक्खत्त-पदं ७।

णवणउइइमो समवाओ सू० १-७ पृ० ९०५-९०६
मंदर-पव्वय-पदं १, अंतर-पदं २, सूरियमंडल-पदं ४, अंतर-पदं ७।

सततमो समवाओ सू० १-८ पृ० ९०६
भिक्खुपडिमा-पदं १, नक्खत्त-पदं २, तित्थयर-पदं ३, पास-पदं ४, गणहर-पदं ५, दीहवेयड्ढ-पदं ६, चुल्लहिमवंत-पदं ७, कंचणग-पव्वय-पदं ८।

पइण्णगसमवाओ सू० १-२६१ पृ० ६०४-६५४

तित्थयर-पदं १, देवलोय-पदं २, तित्थयर-पदं ४, वासहर-पव्वय-पदं ५, कंचण-पव्वय-पदं ६, तित्थयर-पदं ७, देव-पदं ८, तित्थयर-पदं ९, देव-पदं ११, महावीर-पदं १२, जीवप्प-देसोगाहणा-पदं १३, पास-पदं १४, तित्थयर-पदं १५, वासहर-पव्वय-पदं १७, वक्खार-पव्वय-पदं १८, देवलोय-पदं १९, महावीर-पदं २०, तित्थयर-पदं २१, चक्कवट्टि-पदं २२, वक्खार-पव्वय-पदं २३, वासहरकूड-पद २४, तित्थयर-पदं २५, चक्कवट्टि-पद २६, वक्खार-पव्वय-पदं २७, वक्खार-पव्वयकूड-पदं २८, नंदणकूड-पदं २९, विमाण-पदं ३०, अंतर-पदं ३२, पास पदं ३४, कुलगर-पदं ३५, तित्थयर पदं ३६, विमाण पदं ३७, महावीर-पदं ३८, तित्थयर-पदं ४०, अंतर-पदं ४१, विमाण-पदं ४३, भोमेज्ज-विहार-पदं ४४, महावीर-पदं ४५, सूरिय-पदं ४६, तित्थयर-पदं ४७, विमाण-पदं ४८, अंतर-पदं ४९, कुलगर-पदं ५१, तारारूव-पदं ५२, अंतर-पदं ५३, विमाण-पदं ५५, जमग-पव्वय-पदं ५६, चित्त-विचित्तकूड-पदं ५७, वट्टवेयड्ढ-पव्वय-पदं ५८, हरि-हरिस्सहकूड-पदं ५९, बलकूड-पदं ६०, तित्थयर-पदं ६१, पास-पदं ६२, दह-पदं ६४, विमाण-पदं ६५, पास-पदं ६६, दह-पदं ६७, अंतर-पदं ६८, दह-पदं ६९, मंदर-पव्वय-पदं ७०, आवास-पदं ७१, अंतर-पद-७२, हरिवास-रम्मयवास-पदं ७३, जीवा-पदं ७४, मंदर पव्वय-पदं ७५, जंबुद्दाव-पदं ७६, लवणसमुद्द-पदं ७७, पास-पदं ७८, धायइसंड-पदं ७९, अंतर-पदं ८०, चक्कवट्टि-पदं ८१, अंतर-पदं ८२, आवास-पदं ८३, तित्थयर-पदं ८४, वासुदेव-पदं ८५, महावीर-पदं ८६, उसभ-महावीर-पदं ८७, दुवालसंग-पदं ८८, रासि-पद १३५, पज्जत्तापज्जत्त-पदं १४०, आवास-पदं १४१, ठिइ-पदं १५३, सरीर-पदं १५८, ओहि-पदं १७२, वेयणा-पदं १७३, लेसा-पदं १७४, आहार-पदं १७५, आउगबंध-पदं १७६, उववाय-उवट्टणा-विरह-पदं १७९, आगरिस-पदं १८४, संघयण-पदं १८६, संठाण-पदं १९६, वेय-पदं २०९, समवसरण-पदं २१५, कुलगर-पदं २१६, तित्थयर-पदं २२०, चक्कवट्टि-पदं २३४, बलदेव-वासुदेव-पदं २३८, एरवय-तित्थगर पदं २४८, भावि-कुलगर-पदं २४९, भावि-तित्थगर-पदं २५१, भावि-चक्कवट्टि-पदं २५४, भावि-बलदेव-वासुदेव-पदं २५६, एरवय-भावि-तित्थगर-पदं २५८, एरवय-भावि-चक्कवट्टि-बलदेव-वासुदेव-पदं २५९, निक्खेव-पदं २६१।

संकेत-निर्देशिका

● ०	ये दोनों बिन्दु पूर्त्त-पाठ के द्योतक हैं। पूर्त्त-पाठ के प्रारंभ में भरा बिन्दु [●] और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ १४ सू० १४० ।
[?]	कोष्ठकवर्ती पाठ के आगे प्रश्न [?] आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृ० ४०४ सू० २ ।
‘ ’	यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें—पृ० ६ सू० २९ ।
×	क्रास [×] पाठ न होने का सूचक है। देखें--पृ० ४ सू० ४ ।
०	पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें--पृ० ४ टिप्पणी १२, २ ।
	‘वण्णओ’ व ‘जाव’ शब्द के टिप्पण में उसके पूर्तिस्थल का निर्देश है। देखें--पृ० ४६९ टिप्पण ३ तथा पृ० ४६५ टिप्पण ४ ।
	‘एव’, ‘जहा’ ‘तहेव’ आदि के टिप्पण में उनकी पूर्तिस्थल का निर्देश है। देखें--पृ० ४९६, सू० १९०, १८४ तथा
	अ, क, ख, ग, घ, च, छ ब। देखें—संपादकीय में ‘प्रतिपरिचय’ शीर्षक स्थल।
क्व	क्वचित् प्रयुक्तादर्श।
सं०पा०	संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृ० ४ टिप्पण ३ ।
वृ	वृत्ति का सूचक है। देखें--पृ० ४ टिप्पण ५ ।
वृपा	वृत्ति सम्मत पाठान्तर। देखें--पृ० ४ टिप्पण १० ।
दी०	दीपिका सम्मत पाठान्तर। देखें--पृ० २५६ टिप्पण ९ ।
व्या०वि०	व्याकरण विमर्श। देखें--पृ० २६० टिप्पण ३ ।
पू०	पूर्ण पाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें--पृ० ५५४ टिप्पण ६ ।
चू०	चूर्णि का सूचक है। देखें--पृ० ४० टिप्पण ५ ।
चू०पा०	चूर्णि सम्मत पाठान्तर। देखें--पृ० ४ टिप्पण १० ।
	पद, विशेष गाथा तथा विशेष सूक्तियों को गहरे टाइप में दिया गया है। देखें--आयारो।
अ०	अणुओगदाराणि
ओ०	ओववाइयं
चंद	चंदपण्णत्ती
जं	जंबूद्दीवपण्णत्ती
ठा०	ठाणं
दसा०	दसासुयक्खंधो
नि०	निसीहज्झयणं
प०	पइण्णगसमवाओ
पण्ण०	पण्णवणा
भ०	भगवई
राय०	रायपसेणइयं
स०	समवाओ
सू०	सूयगडो

आयारो

पढमं अज्झयणं

सत्थपरिण्णा

पढमो उद्देसो

अप्पणो अत्थित्त-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं[1]—इहमेगेसिं नो सण्णा भवइ, तं जहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
'अहे वा दिसाओ'[2] आगओ अहमंसि,
'अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
अणुदिसाओ वा'[3] आगओ अहमंसि,

२. एवमेगेसिं णो णातं भवति[4]—अत्थि मे आया ओववाइए[5], णत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुओ[6] इह पेच्चा भविस्सामि ?

---

[1] ॰मखायं (ख) ।

[2] अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च) अहो दिसाओ वा (छ) ।

[3] अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ); अण्णयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ); अण्णतराए दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (च) ।

[4] भवति, तं जहा (चू) ।

[5] ओववातिते (क); उववादिए (च) ।

[6] चुते (घ) ।

३. सेज्जं पुण जाणेज्जा—सहसम्मुइयाए[1], परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा तं जहा—

पुरत्थिमाओ[2] वा दिसाओ आगओ अहमंसि,[3]
•दक्खिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
अहे वा दिसाओ आगओ अहमंसि°,
अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि,

४. एवमेगेसिं जं णातं[4] भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए। जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'[5] अणुसंचरइ[6], सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ अणुसंचरइ,'[7] सोहं ॥

५. से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ॥

आस्सव-पदं

६. अकरिस्सं चहं, कारवेसुं[8] चहं, करओ यावि समणुण्णे भविस्सामि ॥

संवर-पदं

७. एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ॥

आस्सव-परिणाम-पदं

८. अपरिण्णाय-कम्मे[9] खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति, अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ[10], विरूवरूवे फासे य[11] पडिसंवेदेइ[12] ॥

---

[1] संमदियाए (क); सहसंमुइयाओ (घ); सहस्समुइए (च)।

[2] पुरित्थि° (ख, च)।

[3] सं° पा°—अहमंसि जाव अण्णयरी।

[4] णाणं (ख); णायं (घ)।

[5] दिसाओ वा अणुदिसाओ (ख, छ); दिसाओ वा अणुदिसाओ य (चू, वृ)।

[6] अणुसंसरइ; अणुसंभरति (चूपा); अणुसंसरइ (वृपा)।

[7] × (क, ख, ग, च)।

[8] काराविस्सं (क, ख, ग); कारावेस्सं (घ); कारावेस्सुं (च)।

[9] कम्मा (क, घ)।

[10] संधावती (चू); संधेइ (चूपा); संधावइ (वृपा)।

[11] × (ख, ग, घ, च)।

[12] °संवेतेइ (क); °संवेदयइ (घ, च)।

कम्म-सोय-पदं

९. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥

१०. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए[1], दुक्खपडिघायहेउं ॥

संवर-साहणा-पदं

११. एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ॥

१२. जस्सेते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।
—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अण्णाण-पदं

१३. अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए ॥

१४. अस्सिं लोए पव्वहिए[2] ॥

पुढविकाइयहिंसा-पदं

१५. तत्थ तत्थ पुढो पास[3], आतुरा[4] परितावेंति ॥

१६. संति पाणा पुढो सिया ॥

१७. लज्जमाणा पुढो पास ॥

१८. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१९. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[5] अण्णे वणेगरूवे[6] पाणे विहिंसति ॥

२०. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥

२१. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥

२२. से सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभंते[7] समणुजाणइ ।

२३. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

२४. से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ॥

---

[1] °भोयणाए (चू, वृपा) ।
[2] पच्चविए (च) ।
[3] पासे (क, घ) ।
[4] आतुरा अस्सिं (वृ) ।
[5] संभारंभमाणा (ख, ग, छ) ।
[6] अणेग° (घ, च) ।
[7] समारंभमाणे (घ) ।

२५. सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा[१] अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए[२] ।।

२६. इच्चत्थं गढिए लोए ।।

२७. जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[३] पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[४] अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसइ ।।

पुढविकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

२८. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे[५], अप्पेगे अंधमच्छे[६] ।।

२९. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे, अप्पेगे 'गुप्फमब्भे, अप्पेगे गुप्फमच्छे, अप्पेगे जंघमब्भे, अप्पेगे जंघमच्छे, अप्पेगे जाणुमब्भे'[७] अप्पेगे जाणुमच्छे, अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे, अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे, अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे, अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे, अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे, अप्पेगे पिट्ठमब्भे[८], अप्पेगे पिट्ठमच्छे, अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे, अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे, अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे, अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे, अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे, अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे, अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे, अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे, अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे, अप्पेगे हणुयमब्भे[९] अप्पेगे हणुयमच्छे, अप्पेगे होट्ठमब्भे[१०], अप्पेगे होट्ठमच्छे, अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे, अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे, अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे, अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे, अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे, अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे, अप्पेगे णासमब्भे[११], अप्पेगे णासमच्छे, अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे, अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे, अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे, अप्पेगे सीसमब्भे[१२], अप्पेगे सीसमच्छे ।।

३०. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

---

१. × (घ) ।

२. निरए (क, ख, घ, च) ।

३. °रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।

४. समारंभमाणे (क, ख, ग, च, छ) ।

५. अत्त° (च) ।

६. °मच्चे (घ) ।

७. पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंघापुप्फगमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।

८. पुट्ठि° (क); पिट्ठि° (ख, ग, च); पट्ठि° (घ) ।

९. हणुम° (क, घ, च, छ) ।

१०. उट्ठ° (घ) ।

११. नक्क° (घ, च) ।

१२. सिर° (च) ।

हिंसाविवेग-पदं

३१. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति ।।

३२. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाता भवंति ।।

३३. **तं परिण्णाय मेहावी** नेव सयं पुढवि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहिं पुढवि-सत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णे पुढवि-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

३४. जस्सेते पुढवि-कम्म-समारंभा[1] परिण्णाता भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

समप्पण-पदं

३५. से बेमि—से[2] जहावि अणगारे उज्जुकडे, णियागपडिवण्णे[3], अमायं कुव्वमाणे वियाहिए ।।

३६. **जाए सद्धाए णिक्खंतो, तमेवअणुपालिया[4] । 'विजहित्तु विसोत्तियं'[5] ।।**

३७. **पणया वीरा महावीहिं ।**

आउकाइयाणं अत्थित्त-अभयदाण-पदं

३८. लोगं च आणाए अभिसमेच्चा[6] अकुतोभयं ।।

३९. से बेमि—णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।
जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ ।।

आउकाइयहिंसा-पदं

४०. **लज्जमाणा[7] पुढो पास ।।**

४१. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

४२. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[8] पाणे विहिंसति ।।

---

[1] °काय° (च) ।

[2] × (क, छ) ।

[3] निकाय° (चू, वृपा) ।

[4] तामेव° (घ, च); °अणुपालेज्जा (वृ) ।

[5] विजहित्ता° (ख, ग, घ, च); तिन्नोहुसि विसोत्तियं (चू); विजहित्ता पुव्वसंजोगं (वृपा) ।

[6] °समिच्चा (ख, घ) ।

[7] अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए, अस्सिं लोए पव्वहिए, तत्थ-तत्थ पुढो पास, आतुरा परितावेंति । एस आढत्तं पुढविक्काइय-उद्देसयगमेणं धुवगंडिया सुत्तत्थतो भाणियव्वा अप्पेगे अंधमब्भे (चू) ।

[8] अणेग° (ग, घ) ।

४३. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।।

४४. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

४५. से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं समारंभावेति, अण्णे वा[1] उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति ।।

४६. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

४७. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ।।

४८. सोच्चा खलु[2] भगवओ अणगाराणं वा[3] अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ।।

४९. **इच्चत्थं गढिए लोए** ।।

५०. जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[4] उदय-कम्म-समारंभेणं उदयसत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[5] पाणे विहिंसति ।।

आउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

५१. से बेमि—'अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।।

५२. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे ।।

५३. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए'[6] ।।

हिंसाविवेग-पदं

५४. से बेमि—संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।।

५५. इहं[7] च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।।

५६. सत्थं चेत्थ[8] अणुवीइ पासा[9] ।।

५७. **'पुढो सत्थं'[10] पवेइयं** ।।

५८. **अदुवा अदिण्णादाणं** ।।

५९. कप्पइ णे[11], कप्पइ णे पाउं, अदुवा विभूसाए ।।

---

१. × (ख, ग)

२. × (घ, च) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. ° रूवेसु सत्थेसु (च) ।

५. अणेग ° (घ, च) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ); एतानि त्रीणि सूत्राणि वृत्तौ न व्याख्यातानि प्रतिष्वपि नोपलभ्यन्ते, केवलं चूर्णाविव ध्रुवकण्डिका निर्देशेन गृहीतानि सन्ति । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्—१।२८-३० ।

७. इह (छ) ।

८. चेत्थं (क, ख, छ) ।

९. पास (घ, च) ।

१०. पुढोऽपासं (वृपा) ।

११. णो (घ) ।

६०. पुढो सत्थेहिं विउट्टंति ।।

६१. एत्थवि तेसिं णो णिकरणाए ।।

६२. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

६३. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

६४. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं उदय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं उदय-सत्थं समारंभावेज्जा, उदय-सत्थं समारंभंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा ।।

६५. जस्सेते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

तेउकाइयाणं अत्थित्त-पदं

६६. 'से बेमि'[१]—णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।।
जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोगं अब्भाइक्खइ ।।

६७. जे दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे ।
जे असत्थस्स खेयण्णे, से दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे ।।

६८. **वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं**, संजतेहिं सया जतेहिं सया अप्पमत्तेहिं ।।

तेउकाइयहिंसा-पदं

६९. **जे पमत्ते गुणट्ठिए[२], से हु दंडे पवुच्चति ।।**

७०. **तं परिण्णाय मेहावी** इयाणिं णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।।

७१. **लज्जमाणा पुढो पास[३]** ।।

७२. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

७३. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे, अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

७४. तत्थ खलु[४] भगवया परिण्णा पवेइया ।।

७५. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

७६. से सयमेव अगणि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा अगणि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।।

---

[१] सेयं मिणं (च) ।

[२] गुणट्ठी (क, वृ); गुणट्ठीए (ख, ग) ।

[३] धुवगंडियं भणिऊणं जाव से बेमि (चू) ।

[४] × (च) ।

७७. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

७८. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ॥

७९. सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥

८०. **इच्चत्थं गढिए लोए** ॥

८१. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

तेउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

८२. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ॥

८३. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ॥

८४. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

हिंसाविवेग-पदं

८५. से बेमि—संति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया, कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया ।

संति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य[2] ।
अगणिं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ॥

जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति[3] ।
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ॥

८६. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

८७. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

८८. **तं परिण्णाय मेहावी** नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहिं अगणि-सत्थं समारंभावेज्जा, अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे न समणुजाणेज्जा ॥

८९. जस्सेते अगणि-कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] द्रष्टव्यम्— १।५३ सूत्रस्य पाददिप्पणम् ।

[2] × (क, ख, ग, च) ।

[3] ०विज्जंति (क, ख, छ) ।

पंचमो उद्देसो

अणगार-पदं

९०. **तं[1] णो करिस्सामि समुट्ठाए ॥**

९१. **मंता[2] मइमं अभयं विदित्ता ॥**

९२. तं जे णो करए एसोवरए, एत्थोवरए एस **अणगारेत्ति पवुच्चइ** ॥

गिहचाइणो वि गिहवास-पदं

९३. **जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे ॥**

९४. उड्ढं अहं[3] तिरियं पाईणं 'पासमाणे रूवाइं पासति'[4], **'सुणमाणे सद्दाइं सुणेति'**[5] ॥

९५. उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सद्देसु आवि ॥

९६. एस लोए वियाहिए ॥

९७. एत्थ अगुत्ते अणाणाए ॥

९८. **पुणो-पुणो गुणासाए**, वंकसमायारे, **पमत्ते गारमावसे ॥**

वणस्सइकाइय हिंसा-पदं

९९. **लज्जमाणा पुढो पास[6] ॥**

१००. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१०१. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[7] पाणे विहिंसति ॥

१०२. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ॥

१०३. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाती-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥

१०४. से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइ-सत्थं समारंभावेइ, **अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ॥**

१०५. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

१०६. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए ॥**

१०७. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—**एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ॥**

---

[1] ते (च)।

[2] मत्ता (क, घ, च)।

[3] अवं (वृ); अहे य (ख)।

[4] पासियाइं दरिसेति (चू); पस्समाणो रूवाइं पासइ (चूपा)।

[5] सुणिमाणि सुणेति (चू); सुणमाणो सद्दाइं सुणेति। एवं गंधरसफासेहि वि भाणियव्वं (चूपा)।

[6] धुवगंडिया (चू)।

[7] अणेग° (ख, ग, च)।

१०८. इच्चत्थं गढिए लोए।

१०९. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभेमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

वणस्सइकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

११०. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।।

१११. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ।।

११२. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

वणस्सइजीवाणं माणुस्सेण तुलणा-पदं

११३. से बेमि—इमंपि जाइधम्मयं, एयंपि जाइधम्मयं। इमंपि बुड्ढिधम्मयं, एयंपि बुड्ढिधम्मयं। इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं। इमंपि छिन्नं मिलाति, एयंपि छिन्नं मिलाति। इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं। इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं। इमंपि असासयं, एयंपि असासयं। इमंपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं[2]। इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं ।।

हिंसाविवेग-पदं

११४. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

११५. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

११६. **तं परिण्णाय मेहावी**—णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

११७. जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे।

—त्ति बेमि ।।

छट्ठो उद्देसो

संसार-पदं

११८. से बेमि—संतिमे तसा पाणा, तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया ओववाइया ।।

११९. एस संसारेत्ति[3] पवुच्चति ।।

---

[1] द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। (ख, ग)।

[2] चओवचइयं (क, घ, च, छ, चू); चयावचयं

[3] संसारित्ति (क, ख)।

१२०. मंदस अवियाणओ ॥

१२१. णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं ॥

१२२. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अस्सायं[1] अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं ति बेमि ॥

तसकाइयहिंसा-पदं

१२३. तसंति पाणा पदिसोदिसासु य ॥

१२४. तत्थ-तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेंति[2] ॥

१२५. संति पाणा पुढो सिया ॥

१२६. लज्जमाणा पुढो पास ॥

१२७. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१२८. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

१२९. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥

१३०. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥

१३१. से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा[3] तसकाय-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ॥

१३२. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

१३३. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ॥

१३४. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं 'वा अंतिए'[4] इहमेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥

१३५. इच्चत्थं गढिए लोए ॥

१३६. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

तसकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१३७. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ॥

१३८. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[5] ॥

१३९. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

---

[1] आसयं (क्व)।

[2] अट्टा 'ते जाव परितावेंति' धुवगंडिया (चू)।

[3] वि (घ)।

[4] × (क)। सर्वत्र नास्ति।

[5] द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

हिंसाविवेग-पद

१४०. से बेमि—अप्पेगे अच्चाए वहंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,[1] अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,[2] °अप्पेगे हिययाए[3] वहंति, अप्पेगे पित्ताए वहंति, अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति, अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे बालाए वहंति, अप्पेगे सिंगाए वहंति, अप्पेगे विसाणाए वहंति, अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति, अप्पेगे नहाए वहंति, अप्पेगे ण्हारुणीए वहंति, अप्पेगे अट्ठीए वहंति, अप्पेगे अट्ठिमिजाए वहंति, अप्पेगे अट्ठाए वहंति, अप्पेगे अणट्ठाए° वहंति, अप्पेगे 'हिंसिसु मेत्ति वा'[4] वहंति, अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ॥

१४१. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

१४२. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

१४३. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

१४४. जस्सेते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

अत्तुला-पदं

१४५. **'पहू एजस्स'[5] दुगंछणाए ॥**

१४६. **आयंकदंसी अहियं ति नच्चा ॥**

१४७. जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ । जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ ॥

१४८. **एयं तुलमण्णेसिं ॥**

१४९. **इह[6] संतिगया दविया, णावकंखंति वीजिउं[7] ॥**

वाउकाइयहिंसा-पदं

१५०. **लज्जमाणा[8] पुढो पास ॥**

---

[1] हणंति (च); वधंति (क); हिंसंति (घ) ।

[2] सं० पा०—एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए बालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिजाए अट्ठाए अणट्ठाए ।

[3] हितयाए (क, च) ।

[4] हिंसिसु इति वा (ख, ग) ।

[5] पहू य एगस्स (वृ); पभू एयस्स (क) ।

[6] इति (चूपा) ।

[7] जीवियं (क, छ); जीविउं (ख, ग, घ, च, वृ); मूलपाठः चूर्ण्याधारेण स्वीकृतोस्ति । 'दसवेआलिय' सूत्रस्य (६।३७) श्लोकेनास्य पुष्टिर्जायते ।

[8] अट्टा परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परिताविता धुवगंडिया (चू) ।

१५१. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

१५२. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

१५३. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।।

१५४. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

१५५. से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा वाउ-सत्थं समारंभावेति, अण्णे वा वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणइ ।।

१५६. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

१५७. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ।।

१५८. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ।।

१५९. **इच्चत्थं गढिए लोए** ।।

१६०. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

वाउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१६१. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१६२. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ।।

१६३. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

हिंसाविवेग-पदं

१६४. से बेमि—**संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ।।**
फरिसं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ।।
जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।।

१६५. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

१६६. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

१६७. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वाउ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

१६८. जस्सेते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे त्ति बेमि ।।

---

[1] द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

मुणि-संबोध-पदं

१६९. एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ।।

१७०. जे आयारे न रमंति ।।

१७१. आरंभमाणा विणयं वियंति ।।

१७२. छंदोवणीया अज्झोववण्णा ।।

१७३. 'आरंभसत्ता पकरेंति संगं'[1] ।।

१७४. से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मं ।।

१७५. तं[2] णो अण्णेसिं ।।

हिंसाविवेग-पदं

१७६. तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे छज्जीवणिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

१७७. जस्सेते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] 'आरंभसत्ता पकरेंति संगं', अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्ण्यां निम्नः पाठ उपलभ्यते—'एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयारे रमंति, अणारंभमाणा विणयं वदंति, पसत्थछंदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरंभे असत्ता णो पगरेंति संगं'।

[2] × (ख, ग, छ)।

बीअं अज्झयणं

लोगविजओ

पढमो उद्देसो

आसत्ति-पदं

१. जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे ।।

२. इति से गुणट्ठी महता परियावेणं[1] वसे पमत्ते[2]—माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुण्हा मे[3], सहि-सयण-संगंथ-संथुया मे, विवित्तोवगरण[4]-परियट्टण-भोयण-अच्छायणं[5] मे, इच्चत्थं[6] गढिए लोए—वसे पमत्ते ।।

३. अहो य[7] राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे[8], विणिविट्ठचित्ते[9], एत्थ सत्थे[10] पुणो-पुणो ।।

असरणाणुपेहापुव्वं अप्पमाद-पदं

४. अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं[11] माणवाणं, तं जहा—सोय-परिण्णाणेहिं[12] परिहायमाणेहिं, चक्खु-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाण-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, रस-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, फास-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं ।।

---

[1] °वेणं पुणो पुणो (छ); चूर्णौ वृत्तौ च नैतत् पदं व्याख्यातमस्ति ।

[2] पमत्ते, तं जहा (क, ख, ग, घ, च) ।

[3] मे, सहाया मे (घ) ।

[4] विचित्तो° (ख,च) ।

[5] च्छायणं (क); अच्छादयणं (चू) ।

[6] इच्चत्थं से (क); इच्चत्थं इत्थं से (ग); इच्चत्थं एत्थ से (च) ।

[7] × (क,ख,ग,घ) ।

[8] सहसाकारे (क,ख,ग,छ); सहस्सकारे (च) ।

[9] °चिट्ठे (चू,वृ,च) ।

[10] सत्ते (चू, वृपा); सत्थे (चूपा) ।

[11] इधम्मेकेसिं चि (च) ।

[12] °पण्णाणेणं (चू,क) ।

५. अभिक्कंतं[1] च खलु वयं संपेहाए[2] ॥

६. तओ से एगया मूढभावं जणयंति[3] ॥

७. जेहिं वा सद्धिं संवसति[4] 'ते वा णं'[5] एगया णियगा तं पुव्विं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ॥

८. **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।**
तुमं पि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

९. से ण हस्साए[6], ण किड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए ॥

१०. इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए ॥

११. अंतरं च खलु इमं संपेहाए[7]—धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए ॥

१२. **वयो[8] अच्चेइ जोव्वणं व ॥**

१३. **जीविए इह जे पमत्ता ॥**

१४. से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवित्ता उत्तासइत्ता ॥

१५. अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे ॥

१६. जेहिं वा सद्धिं संवसति 'ते वा णं'[9] एगया णियगा तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ॥

१७. **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ॥**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

१८. उवाइय[10]-सेसेण[11] वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ[12], इहमेगेसिं असंजयाणं[13] भोयणाए ॥

१९. तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ॥

२०. जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा तं[14] पुव्विं परिहरंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिहरेज्जा ॥

२१. **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ॥**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

---

१. अहिक्कंतं (क); अहिकंतं (घ); अतिकंतं (च) ।

२. सपेहाए (क, घ, छ); वृत्तौ 'स पेहाए' इति पदद्वयं पृथग् व्याख्यातम्—प्रेक्ष्य पर्यालोच्य से इति प्राणी (वृ) ।

३. जणयति (वृ); जणयंति (वृपा) ।

४. संवसंति (घ,च,छ) ।

५ ते वणं (क,छ); ते विणं (घ); त एव णं (वृ)।

६. हासाए (क,ख,ग,छ) ।

७. सपेहाए (क, ख, च); वृत्तिकृता पचमसूत्रे स प्रेक्ष्य इति व्याख्यातम्, अत्र च संप्रेक्ष्य ।

८. वओ (क,ख,ग) ।

९. त एव वा णं (वृ); ते व णं (ख) ।

१०. उवादीत (क, च) ।

११. सेसं तेण (क, ख, घ, च, छ) ।

१२. किज्जइ (ख, ग, छ) ।

१३. माणवाणं (च) ।

१४. × (क, ख, ग, घ) ।

२२. जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं[1] सायं ॥
२३. अणभिक्कंतं[2] च खलु वयं संपेहाए[3] ॥
२४. **खणं जाणाहि पंडिए !**
२५. जाव सोय-'पण्णाणा अपरिहीणा,'[4]
जाव णेत्त-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ॥
२६. इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पण्णाणेहिं अपरिहीणेहिं[5] आयट्ठं सम्मं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्दसो

अरति-निव्वत्तण-पदं

२७. अरइं आउट्टे से मेहावी ॥
२८. खणंसि मुक्के ॥
२९. अणाणाए पुट्ठा 'वि एगे'[6] णियट्टंति ॥
३०. **मंदा मोहेण पाउडा ॥**
३१. "अपरिग्गहा भविस्सामो" समुट्ठाए, **लद्धे कामेहिगाहंति[7]** ॥
३२. अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति ॥
३३. **एत्थ मोहे पुणो पुणो सण्णा ॥**
३४. **णो हव्वाए णो पाराए ॥**
३५. **विमुक्का[8] हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ॥**

अणगार-पदं

३६. **लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ[9] ॥**
३७. **विणइत्तु[10] लोभं निक्खम्म,** एस अकम्मे जाणति-पासति ॥

---

[1] पत्तेय (क, ख, ग, घ, च) ।
[2] अणतिक्कंतं (क) ।
[3] सपेहाए (क, ख, ग, घ, च) ।
[4] परिण्णाणेहिं अपरिहायमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ) सर्वत्र ।
[5] अपरिहीयमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ,वृ) ।
[6] × (चू) ।
[7] °अभिग्गाहति (क); °अभिग्गहति (ख,छ); अभिगाहति (ग) ।
[8] विमुत्ता (क,ख,ग,घ,छ) ।
[9] णोभिगाहइ (क, च) ।
[10] विणावि (क, ग, छ, वृ) ।

३८. पडिलेहाए णावकंखति ।।

३९. **एस अणगारेत्ति पवुच्चति ।।**

दंड-समादाण-पदं

४०. **अहो य राओ य[1] परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे,[2]** विणिविट्ठचित्ते, **एत्थ सत्थे पुणो-पुणो ।।**

४१. से आय-बले, से णाइ-बले[3], से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले, से किवण[4]-बले, से समण-बले ।।

४२. इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाणं ।।

४३. सपेहाए[5] भया कज्जति'[6] ।।

४४. पाव-मोक्खोत्ति मण्णमाणे ।।

४५. अदुवा आसंसाए ।।

हिंसाविवेग-पदं

४६. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेवण्णं[7] एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, 'णेवण्णं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतं समणुजाणेज्जा'[8] ।।

अणासत्ति-पदं

४७. एस मग्गे **आरिएहिं[9] पवेइए ।।**

४८. जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

समत्त-पदं

४९. 'से असइं उच्चागोए, असइं णीयागोए । णो हीणे, णो अइरित्ते'[10], णो पीहए[11] ।।

---

१. × (क,ख) ।

२. सहसाकारे (क, ख, ग) ।

३. बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च) ।

४. किविण (क, ख, ग) ।

५. संपेहाए (क, ख, ग, घ, च, छ); 'संप्रेक्षया' पर्यालोचनया एवं संप्रेक्ष्य वा (वृ) ।

६. दंडं समारभति (चू); दंड-समायाणं··· कज्जइ (चूपा) ।

७. णेव अन्नेहिं (छ) ।

८. एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९. आयरिएहिं (क, ख, घ) ।

१०. नागार्जुनीया—एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइं उच्चागोए असइं णीयागोए कंडगट्ठयाए णो हीणे नो अइरित्ते (चू, वृ) ।

११. पीहेइ (ख, ग) ।

५०. इति[1] संखाय के गोयावादी ? के माणावादी ? कंसि वा एगे गिज्झे ?

५१. तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्झे ॥

५२. **भूएहिं जाण पडिलेह सातं’**[2] ॥

५३. **समिते एयाणुपस्सी** ॥

५४. तं जहा—अंधत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुंटत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं ॥

५५. सहपमाएणं अणेगरूवाओ जोणीओ संधाति[3], विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ[4] ॥

५६. से अबुज्झमाणे ‘हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे’[5] ॥

परिग्गह-तद्दोस-पदं

५७. जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं, खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं ॥

५८. आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण, इत्थियाओ परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ॥

५९. ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ॥

६०. संपुण्णं वाले जीविउकामे लालप्पमाणे मूढे विप्परियासुवेइ[6] ॥

६१. **इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुवचारिणो ।**
जाती-मरणं परिण्णाय, चरे संकमणे दढे ॥

६२. **णत्थि कालस्स णागमो** ॥

६३. **सव्वे पाणा पियाउया**[7] सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा ॥

६४. **सव्वेसिं जीवियं पियं** ॥

६५. तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं संसिंचियाणं तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ॥

६६. से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोयणाए ॥

६७. तओ से एगया विपरिसिट्ठं[8] संभूयं महोवगरणं भवइ ॥

---

१. एवं (चू) ।

२. नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खविवागगवेसएणं पुव्विं ताव जीवाभिगमे कायव्वे, जाइं च इच्छिताणिच्छे, तं सातासातं वियाणिया हिंसोवरती कायव्वा (चू) ।
नागार्जुनीया :—पुरिसे णं खलु दुक्खुव्वयसुहेसए (वृ) ।

३. संधाएति (ख, ग, च) ।

४. परि° (घ, वृ) ।

५. हतोवहते विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्ते पुणो पुणो (चू) ।

६. विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।

७. पियायया (वृपा) ।

८. विविहं परिसिट्ठं (क, ख, ग, घ, च) ।

६८. तं पि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो[1] वा से अवहरति,[2] रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से डज्झइ ॥

६९. इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[3] विप्परियासुवेइ[4] ॥

७०. मुणिणा हु एयं पवेइयं ॥

७१. **अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए।**
अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए।
अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए ॥

७२. **आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ।**
वितहं पप्पखेयण्णे[5], तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥

७३. उद्देसो पासगस्स णत्थि ॥

७४. बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

भोग-भोगि-दोस-पदं

७५. तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ॥

७६. जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियया पुव्विं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ॥

७७. **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

७८. **जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ॥**

७९. भोगामेव अणुसोयंति ॥

८०. इहमेगेसिं माणवाणं ॥

८१. तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ॥

८२. से तत्थ गढिए चिट्ठति, भोयणाए ॥

८३. ततो से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति ॥

---

[1] अदत्ताहारा (ख, ग)।

[2] अवहरंति (ख, ग)।

[3] संमूढे (क, घ)।

[4] विप्परियासमुवेति (ख, ग, घ, च, छ)।

[5] °अखेतण्णो (चू)।

८४. तं पि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो वा से अवहरति[1], रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारडाहेण वा डज्झइ ।।

८५. इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[2] विप्परियासुवेइ ।।

८६. **आसं च छंदं च विगिंच[3] धीरे** ।।

८७. तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु ।।

८८. जेण सिया तेण णो सिया ।।

८९. **इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा मोहपाउडा** ।।

९०. **थीभि लोए पव्वहिए** ।।

९१. ते भो वयंति--एयाइं आयतणाइं ।।

९२. से दुक्खाए मोहाए माराए णरगाए णरग-तिरिक्खाए[4] ।।

९३. सततं मूढे धम्मं णाभिजाणइ[5] ।।

९४. उदाहु वीरे—**अप्पमादो महामोहे** ।।

९५. अलं कुसलस्स पमाएणं ।।

९६. संति-मरणं संपेहाए[6], भेउरधम्मं संपेहाए ।।

९७. णालं पास ।।

९८. अलं ते एएहिं ।।

९९. एयं पास मुणी ! महब्भयं ।।

१००. **णाइवाएज्ज कंचणं** ।।

१०१. **एस वीरे पसंसिए**[7], जे ण णिविज्जति आदाणाए ।।

१०२. **“ण मे देति” ण कुप्पिज्जा,थोवं लद्धुं न खिंसए ।**
‘पडिसेहिओ[8] परिणमिज्जा’[9] ।।

१०३. एयं मोणं समणुवासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] हरति (क, छ) ।

[2] संमूढे (क, घ, च) ।

[3] विविच्च (क) ।

[4] तिरियाए (घ) ।

[5] न जानाति (वृ) ।

[6] सपेहाए (क, च) ।

[7] नमंसिते (चूपा) ।

[8] पडिलाभिओ (वृपा) ।

[9] पडिलाभितो परिणमे, णवोवासं चेव कुज्जा (चूपा) ।

पंचमो उद्देसो

आहारस्स अणासत्ति-पदं

१०४. जमिणं विरूवरूवेहिं 'सत्थेहिं लोगस्स कम्म-समारंभा'[1] कज्जंति, तं जहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं णातीणं धातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्म-कराणं कम्मकरीणं आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।।

१०५. सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए ।।

१०६. समुट्ठिए अणगारे आरिए आरियपण्णे आरियदंसी 'अयं संधीति अदक्खु'[2] ।।

१०७. से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ।।

१०८. **सव्वामगंधं[3] परिण्णाय, णिरामगंधो परिव्वए ।।**

१०९. **अदिस्समाणे कय-विक्कएसु** । से ण किणे, ण किणावए, किणंतं ण समणुजाणइ ।।

११०. से भिक्खू कालण्णे बलण्णे[4] मायण्णे खेयण्णे खणयण्णे[5] विणयण्णे समयण्णे[6] भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे, कालेणुट्ठाई, अपडिण्णे ।।

१११. दुहओ छेत्ता नियाइ ।।

११२. वत्थं पडिग्गहं, **कंबलं पायपुंछणं, उग्गहं च कडासणं ।
एतेसु चेव जाएज्जा[7]** ।।

११३. लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं ।।

११४. **लाभो त्ति न मज्जेज्जा ।।**

११५. **अलाभो त्ति ण सोयए[8] ।।**

११६. **बहुं पि लद्धुं ण णिहे ।।**

११७. परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ।।

११८. 'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'[9] ।।

११९. एस मग्गे आरिएहिं पवेइए ।।

१२०. जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि त्ति बेमि ।।

कामं-अणासत्ति-पदं

१२१. **कामा दुरतिक्कमा ।।**

---

[1] सत्थेहिं विरूवरूवाणं अट्ठाए (चूपा) ।

[2] अयं संधिमदक्खु (वृपा); °अद्दक्खु (क, ख, ग, छ) ।

[3] °गंधे, (घ, च) ।

[4] बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।

[5] खणण्णो (चू) ।

[6] समयण्णे परसमयण्णे (घ, च); ससमयण्णे परसमयण्णे (छ) ।

[7] जाणेज्जा (क, ख, ग, घ, च, वृ) ।

[8] सोएज्जा (ख, ग, च, छ) ।

[9] अण्णतरेण पासाएण परिहरिज्जा (चूपा) ।

१२२. **जीवियं दुप्पडिवूहणं**[1] ।।
१२३. कामकामी खलु अयं पुरिसे ।।
१२४. से सोयति जूरति तिप्पति[2] पिड्डुति[3] परितप्पति ।।
१२५. **आयतचक्खू लोग-विपस्सी** लोगस्स अहो भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ ।।
१२६. गढिए[4] अणुपरियट्टमाणे ।।
१२७. **संधि विदित्ता इह मच्चिएहिं** ।।
१२८. **एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए** ।।
१२९. **जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो** ।।
१३०. **अंतो अंतो पूतिदेहंतराणि,** पासति पुढोवि सवंताइं ।।
१३१. **पंडिए पडिलेहाए** ।।
१३२. **से मइमं परिण्णाय, मा य हु लालं पच्चासी** ।।
१३३. मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ।।
१३४. कासंकसे[5] खलु अयं पुरिसे, बहुमाई, **कडेण मूढे पुणो तं करेइ लोभं** ।।
१३५. **वेरं वड्ढेति अप्पणो** ।।
१३६. **जमिणं परिकहिज्जइ,** इमस्स चेव पडिवूहणयाए[6] ।।
१३७. **अमरायइ[7] महासड्ढी** ।।
१३८. **अट्टमेतं पेहाए[8]** ।।
१३९. **अपरिण्णाए कंदति** ।।

तिगिच्छा-पदं

१४०. 'से तं जाणह जमहं बेमि'[9] ।।
१४१. 'तेइच्छं पंडिते'[10] पवयमाणे ।।
१४२. से[11] हंता 'छेत्ता भेत्ता'[12] 'लुंपइत्ता विलुंपइत्ता'[13] उद्दवइत्ता ।।

---

[1] °वूहगं (घ. चू) ।
[2] तप्पति (चू) ।
[3] पिट्टइ (क, ख, ग); × (च, चू) ।
[4] गढिए लोए (ख, ग, घ) ।
[5] कासंकसे य (घ); कासंकासे (वृ); इमं अज्ज करेमि इमं हिज्जो काहामि (चू) ।
[6] पडिवूहणट्ठाए (वृ, छ) ।
[7] अमराइ (घ, च) ।
[8] उपेहाए (चू); तु पेहाए (क, घ, च, छ) ।
[9] से एव मायाणह जं बेमि (चू); से एव मायाणह जमहं बेमि (क, ख, ग) ।
[10] तेइच्छपंडितो (चू) ।
[11] × (चू) ।
[12] भेत्ता छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।
[13] लुंपित्ता विलुंपित्ता (ख, ग, च, छ) ।

१४३. अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे ।।

१४४ जस्स वि य णं करेइ ।।

१४५. अलं बालस्स संगेणं ।।

१४६. जे वा से कारेइ बाले ।।

१४७. 'ण एवं'[1] अणगारस्स जायति ।

—त्ति बेमि ।।

छट्ठो उद्देसो

परिग्गह-परिच्चाय-पदं

१४८. से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए ।।

१४९. तम्हा पावं कम्मं, णे व कुज्जा न कारवे ।।

१५०. सिया से[2] एगयरं विप्परामुसइ[3], छसु अण्णयरंसि कप्पति ।।

१५१. सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति ।।

१५२. सएण विप्पमाएण, पुढो वयं पकुव्वति ।।

१५३. जंसिमे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए णो णिकरणाए[4] ।।

१५४. एस परिण्णा पवुच्चइ ।।

१५५. कम्मोवसंती ।।

१५६. जे ममाइय-मतिं जहाति, से जहाति[5] ममाइयं ।।

१५७. से हु दिट्ठपहे[6] मुणी, जस्स णत्थि ममाइयं ।।

१५८. तं परिण्णाय मेहावी ।।

१५९. विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णं, 'से मतिमं'[7] परक्कमेज्जासि[8] त्ति बेमि ।।

अणासत्तस्स ववहार-पदं

१६०. णारतिं[9] सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं ।
जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ।।

१६१. सद्दे य[10] फासे अहियासमाणे ।।

१६२. णिव्विंद णंदिं इह जीवियस्स ।।

---

[1] ण हु एवं (चू) ।
[2] तत्थ (क, ख, ग, घ, छ, वृ) ।
[3] विपरामुसति (क) ।
[4] णिकरणयाए (ख, ग) ।
[5] चयइ (क, ख, ग, च) ।
[6] दिट्ठभये (घ, च, चूपा, वृपा) ।
[7] स मइमं (ख); स इति मुनिः (वृ) ।
[8] परक्कमेज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
[9] णो रइं (क, च) ।
[10] × (ख, ग, च, छ) ।

१६३. मुणी मोणं समादाय, धुणे[1] कम्म-सरीरगं ।।
१६४. पंतं लूहं सेवंति, वीरा समत्तदंसिणो[2] ।।
१६५. एस ओघंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरते, वियाहिते त्ति बेमि ।।
१६६. दुव्वसु मुणी अणाणाए ।।
१६७. तुच्छए गिलाइ वत्तए ।।
१६८. एस वीरे पसंसिए ।।
१६९. अच्चेइ लोयसंजोयं ।।
१७०. एस णाए पवुच्चइ[3] ।।

बंध-मोक्ख-पदं

१७१. जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं, तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति[4] ।।
१७२. इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।।
१७३. जे अणण्णदंसी, से अणण्णारामे,
जे अणण्णारामे, से अणण्णदंसी ।।

धम्मकहा-पदं

१७४. जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ ।।
१७५. अवि य हणे अणादियमाणे[5] ।।
१७६. एत्थंपि जाण, सेयंति णत्थि ।।
१७७. के यं पुरिसे ? कं च णए ?
१७८. एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए ।।
१७९. उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, से सव्वतो सव्वपरिण्णचारी ।।
१८०. ण लिप्पई छणपएण वीरे ।
१८१. से मेहावी अणुग्घायणस्स खेयण्णे, जे य बंधप्पमोक्खमण्णेसी ।।
१८२. कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।।
१८३. से जं च आरभे, जं च णारभे, अणारद्धं च णारभे ।।
१८४. छणं छणं परिण्णाय, लोगसण्णं च सव्वसो ।।
१८५. उद्देसो पासगस्स णत्थि ।।
१८६. बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] धूण (चू) ।
[2] सम्मत्त° (वृपा, चू) ।
[3] स वुच्चइ (घ) ।
[4] पतिण्ण° (छ) ।
[5] × (चू) ।

तइयं अज्झयणं

सीओसणिज्जं

पढमो उद्देसो

सुत्त-जागर-पदं

१. **सुत्ता अमुणी सया[1], मुणिणो सया[2] जागरंति ॥**

२. **लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ॥**

३. **समयं लोगस्स जाणित्ता,** एत्थ सत्थोवरए ॥

४. जस्सिमे सद्दा य रूवा य गंधा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं धम्मवं बंभवं'[3] ॥

५. पण्णाणेहिं परियाणइ लोयं, 'मुणीति वच्चे'[4], धम्मविउत्ति अंजू[5] ॥

६. आवट्टसोए संगमभिजाणति ॥

७. सीओसिणच्चाई से निग्गंथे अरइ-रइ-सहे फरुसियं[6] णो वेदेति ॥

८. जागर-वेरोवरए वीरे[7] ॥

९. **एवं दुक्खा पमोक्खसि[8] ॥**

१०. जरामच्चुवसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

११. **पासिय आउरे[9] पाणे, अप्पमत्तो परिव्वए ॥**

---

[1] × (चू, च) ।

[2] सततमनवरतम् (वृ) ।

[3] आतवि वेदवि धम्मवि बंभवि (चू); आतवं० (चूपा); आयवी णाणवी वेदवी धम्मवी बंभवी (वृपा) ।

[4] मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

[5] उजू (क, च, छ) ।

[6] फरुसयं (चू) ।

[7] धीरे (छ) ।

[8] पमुच्चसि (क, ख, ग, घ, छ) ।

[9] आतुरे मो (चू) ।

१२. **मंता एयं मइमं ! पास ॥**

१३. **आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा ॥**

१४. **माई पमाई[1] पुणरेइ गब्भं ॥**

१५. **उवेहमाणो सद्द-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी[2] मरणा पमुच्चति ॥**

१६. अप्पमत्तो कामेहिं, उवरतो पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते 'जे खेयण्णे'[3] ॥

१७. जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे,
जे असत्थस्स खेयण्णे, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे ॥

१८. अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ॥

१९. कम्मुणा[4] उवाही[5] जायइ ॥

२०. **कम्मं च पडिलेहाए ॥**

२१. **'कम्ममूलं च'[6] जं छणं ॥**

२२. पडिलेहिय सव्वं समायाय ॥

२३. दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणे ॥

२४. **तं परिण्णाय मेहावी ॥**

२५. विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णं से मइमं[7] परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

परमबोध-पदं

२६. **जातिं[8] च वुड्ढिं च इहज्ज ! पासे ॥**

२७. **भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ॥**

२८. **तम्हा तिविज्जो[9] परमंति णच्चा, समत्तदंसी[10] ण करेंति पावं ॥**

२९. **उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं ॥**

३०. **आरंभजीवी 'उ भयाणुपस्सी'[11] ॥**

---

१. पमाया (घ) ।

२. मारावसक्की (चूपा) ।

३ × (चू०) ।

४. कम्मणा (क, ख, ग) ।

५. उवही (चू) ।

६. कम्ममाहूय (चूपा, वृपा) ।

७. मेहावी (ख, ग, च) ।

८. आदर्शेषु २६ सूत्रादारभ्य ३५ सूत्रपर्यन्तं गाथाचतुष्कमङ्कितमस्ति ।

९. चूर्णौ एतत् पदं द्विधा व्याख्यातमस्ति—विज्जत्ति हे विद्वन् ! अहवा अतिविज्जू । वृत्तौ केवलं 'अतिविज्जं' पदं व्याख्यातमस्ति—अतीव विद्या—तत्त्वपरिच्छेत्री यस्यासावतिविद्यः ।

१०. सम्मत्त° (क, वृपा) ।

११. उभयाणुपस्सी (वृ) ।

३१. कामेसु गिद्धा णिचयं करेंति, संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं ॥

३२. अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्नति ।
अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्ढेति[1] अप्पणो ॥

३३. तम्हा तिविज्जो परमंति णच्चा, आयंकदंसी ण करेति पावं ॥

३४. 'अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे'[2] ॥

३५. पलिच्छिंदिया णं णिक्कम्मदंसी ॥

३६. एस मरणा पमुच्चइ ॥

३७. से हु दिट्ठपहे[3] मुणी ॥

३८. लोयंसी परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते,
समिते[4] सहिते सया जए कालकंखी परिव्वए ॥

३९. बहुं च खलु पावकम्मं पगडं ॥

४०. सच्चंसि धितिं कुव्वह ॥

४१. एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावकम्मं झोसेति[5] ॥

अणेगचित्त-पदं

४२. अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरइत्तए ॥

४३. से अण्णवहाए अण्णपरियावाए[6] अण्णपरिग्गहाए, जणवयवहाए[7] जणवयपरियावाए[8] जणवयपरिग्गहाए ॥

संजमाचरण-पदं

४४. आसेवित्ता एतमट्ठं, इच्चेवेगे समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं[9] नो सेवए[10] ॥

४५. णिस्सारं पासिय णाणी, उववायं चवणं[11] णच्चा । अणण्णं चर माहणे !

४६. से ण छणे ण छणावए, छणंतं णाणुजाणइ[12] ॥

४७. णिव्विंद णंदिं अरते पयासु ॥

४८. अणोमदंसी 'णिसन्ने पावेहिं कम्मेहिं'[13] ॥

---

[1] वड्ढति (क, ख, ग) ।

[2] °वीरे (क, ग, च, चू); मूलं च अग्गं च विइत्तु वीरो (चूपा) । नागार्जुनीयाः—मूलं च अग्गं च विएत्तु वीरे, कम्मासवं चेइ विमोक्खणं च (चू) ।

[3] दिट्ठभए (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृ); दिट्ठवहे (चूपा) ।

[4] समिते अप्पमाई (ती) (घ, छ) ।

[5] सोसेइ (घ) ।

[6] °परियावणाए (च, छ); °परियावए (क, ख, ग) ।

[7] जाणवय° (ख, ग, च) ।

[8] ° परिवायाए (क, ख, ग, च, वृ) ।

[9] बीयं (ख, ग, घ, च) ।

[10] सेवे (क, ख, ग, घ) ।

[11] चयणं (क, ख, ग, घ, चू) ।

[12] णाणुमोदए (चू) ।

[13] तेसु कम्मेसु पावं (चूपा) ।

४९. कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं ।
तम्हा हि[1] वीरे विरते वहाओ, 'छिंदेज्ज सोयं लहुभूयगामी'[2] ॥
५०. गंथं परिण्णाय इहज्जेव वीरे[3], सोयं परिण्णाय चरेज्ज दंते ।
उम्मग्ग[4] लद्धुं इह माणवेहिं, णो पाणिणं पाणे समारभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-पदं

५१. संधि लोगस्स जाणित्ता ॥
५२. आयओ बहिया पास ॥
५३. तम्हा ण हंता ण विघायए ॥
५४. जमिणं अण्णमण्णवितिगिच्छाए पडिलेहाए ण करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया ?
५५. समयं तत्थुवेहाए, अप्पाणं विप्पसायए ॥
५६. अणण्णपरमं नाणी, णो पमाए कयाइ वि ।
आयगुत्ते सया वीरे, जायामायाए जावए ॥
५७. 'विरागं रूवेहिं'[5] गच्छेज्जा, महया खुड्डएहि वा[6]'[7] ॥
५८. आगतिं गतिं परिण्णाय, दोहिं वि अंतेहिं अदिस्समाणे[8] ।
से ण छिज्जइ ण भिज्जइ ण डज्झइ, ण हम्मइ कंचणं सव्वलोए ॥
५९. 'अवरेण पुव्वं ण सरंति एगे, किमस्सतीतं ? किं वागमिस्सं ?
भासंति एगे इह माणवा उ, जमस्सतीतं[9] आगमिस्सं'[10] ॥
६०. णातीतमट्ठं[11] ण य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छंति तहागया उ ।
विधूत-कप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'[12] ॥

---

[1] य (ख, ग, घ) ।
[2] छिंदिज्ज सोतं न हु भूतगाम (चूपा) ।
[3] धीरे (क, ख, ग, घ, छ) ।
[4] उम्मुज्ज (क, ख, ग); उम्मुग (घ, छ) ।
[5] रूवेसु (क, ख, ग) ।
[6] य (ख, ग, घ, च) ।
[7] नागार्जुनीयाः—विसयपंचगम्मि वि, दुविहम्मि तियं तियं । भावओ सुट्ठु जाणित्ता, से न लिप्पइ दोसु वि (चू); नागार्जुनीयाः– विसयंमि° (वृ) ।
[8] अदिस्समाणेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
[9] °तीतं तं (ख); °तीतं किं (घ) ।
[10] अवरेण पुव्वं किह से अईयं,
किह आगमिस्सं न सरंति एगे ।
भासंति एगे इह माणवा उ,
जह से अईयं तह आगमिस्सं ॥
(चूपा, वृपा) ।
[11] °मद्धं (च) ।
[12] × (क, घ, च) ।

६१. का अरई ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे[1] चरे ।
सव्वं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ।।

६२. पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?

६३. जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।
जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ।।

६४. पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि ।।

६५. पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि[2] ।।

६६. सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'[3] मेहावी मारं तरति ।।

६७. सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ।।

६८. दुहओ जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेंति ।।

६९. 'सहिए दुक्खमत्ताए'[4] पुट्ठो णो झंझाए ।।

७०. पासिमं दविए[5] लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

कसायविरइ-पदं

७१. से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ।।

७२. एयं पासगस्स दंसणं 'उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स[6] ।।

७३. आयाणं [णिसिद्धा[7] ?] सगडब्भि'[8] ।।

७४. जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ।।

७५. सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ।।

७६. 'जे एगं नामे, से बहुं नामे, जे बहुं नामे, से एगं नामे'[9] ।।

७७. दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ।।

७८. वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा[10] महाजाणं ।
परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ।।

---

[1] अगरहे (चू) ।

[2] °जाणहि (क); °जाणेहि (च) ।

[3] से उवट्ठिए से (क, ख, ग); से समुट्ठिए (घ); से उवट्ठिए (च) ।

[4] सहिते धम्ममादाय (चू); सहिते दुक्खमत्ताते (चूपा); °मेत्ताते (क); °माताते (च) ।

[5] दविए लोए (छ) ।

[6] °कडस्स (क) ।

[7] द्रष्टव्यम् सू० ८६ ।

[8] × (चू) ।

[9] जे एगनामे, से बहुनामे, जे बहुनामे, से एगनामे (क); द्वादशारनयचक्रवृत्तौ 'एगणामे बहुणामे' इति पाठो विवृतोस्ति—यद् एकस्य भावः तत् सर्वस्यापि, यत् सर्वस्य तद् एकस्यापि (पृ० ३७५) ।

[10] धीरा (क) ।

७९. एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढो विगिंचमाणे एगं विगिंचइ ॥

८०. सड्ढी आणाए मेहावी ॥

८१. लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ॥

८२. अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ॥

८३. जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से मायदंसी ।
जे मायदंसी से लोभदंसी, जे लोभदंसी से पेज्जदंसी ।
जे पेज्जदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मोहदंसी ।
जे मोहदंसी से गब्भदंसी, जे गब्भदंसी से जम्मदंसी ।
जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से निरयदंसी ।
जे निरयदंसी से तिरियदंसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदंसी ॥

८४. से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा[1] कोहं च, माणं च, मायं च, लोहं च, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, जम्मं च, मारं[2] च, नरगं च, तिरियं च, दुक्खं च ॥

८५. एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स ॥

८६. आयाणं 'णिसिद्धा सगडब्भि ॥

८७. किमत्थि उवाही[3] पासगस्स ण विज्जइ'[4] ?
णत्थि[5] ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] °निव्वट्टेज्जा (क, घ, छ) ।

[2] मरणं (ख, ग) ।

[3] उवही (धी) (क, घ, छ) ।

[4] × (चू) ।

[5] चतुर्थाध्ययनस्य ५३ सूत्रस्य 'अह णत्थि'° 'णत्थि वा'° इति पाठान्तरद्वयं लभ्यते । तदाधारेण 'पासगस्स' इति पदानन्तरं 'अह' इति पदं अध्याहार्यम् ।

चउत्थं अज्झयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देसो

सम्मावाए अहिंसा-पदं

१. से बेमि—जे[१] अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा अरहंता[२] भगवंतो[३] ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा ॥

२. एस धम्मे सुद्धे[४] णिइए सासए समिच्च लोयं **खेयण्णेहिं[५] पवेइए** ॥

३. तं जहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा । उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा । उवरयदंडेसु वा, अणुवरयदंडेसु वा । सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा । संजोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा ॥

४. **तच्चं चेयं तहा चेयं, अस्सिं चेयं पवुच्चइ** ॥

५. तं आइइत्तु[६] णं णिहे ण णिक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा[७] तहा ॥

६. दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा ॥

७. **णो लोगस्सेसणं चरे** ॥

८. **जस्स णत्थि इमा णाई, अण्णा तस्स कओ[८] सिया ?**

९. दिट्ठं सुयं मयं विण्णायं, जमेयं[९] परिकहिज्जइ ॥

---

[१] जे य (ख, ग, घ, छ) ।

[२] अरिहंता (ख, घ) ।

[३] भगवंता (घ, च) ।

[४] सुद्धे धुवे (घ) ।

[५] खेत्तन्नेहिं (च) ।

[६] आइत्तु (ख, ग, च, छ, वृ) ।

[७] अहा (घ) ।

[८] कुतो (च) ।

[९] जं लोए (चू) ।

१०. **समेमाणा पलेमाणा**[1], पुणो-पुणो जातिं पकप्पेंति ॥

११. **अहो य राओ य[2] 'जयमाणे, वीरे[3]'[4] सया आगयपण्णाणे।**
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

सम्मानाणे अहिंसापरिक्खा-पदं

१२. जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा,
जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा—एए पए संबुज्झमाणे,
लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं ॥

१३. **आघाइ[5] णाणी इह माणवाणं** संसारपडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विण्णाणपत्ताणं ॥

१४. **अट्टा वि संता अदुआ पमत्ता ॥**

१५. अहासच्चमिणं ति बेमि ॥

१६. **णाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि, इच्छापणीया वंकाणिकेया[6]।**
कालग्गहीआ णिचए णिविट्ठा, 'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'[7] ॥

१७. 'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति। अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ॥

१८. **चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं चिट्ठं परिचिट्ठति[8]।**
अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति[9] ॥'[10]

१९. **एगे वयंति अदुवा वि णाणी, णाणी वयंति अदुवा वि एगे ॥**

---

[1] पालेमाणा (क, च); चलेमाणा (शु)।

[2] × (ख, ग, छ)।

[3] धीरे (ख, ग, घ, वृ)।

[4] जताहि एवं वीरे (चू)।

[5] अक्खाइ (घ); नागार्जुनीयाः आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तंजहा—संसारपडिवन्नाणं मणुस्सभवत्थाणं आरंभविणईणंदु दुक्खुव्वे-असुहेसगाणं धम्मसवणगवेसगाणं निक्खित्त-सत्थाणं सुस्सूसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विन्नाणपत्ताणं (चू, वृ)।

[6] अत्रैकपदे दीर्घत्वम्, वक्क=वंका।

[7] पुढो पुढो जाइं पकरेंति (चू); एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइं पगप्पेंति (चूपा); °पकप्पेंति (क); °पकप्पन्ति (ख, ग, च;) °पकुप्पंति (छ)।
'पुढो पुढो जाइं पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुब्रिंग संपादिते पुस्तके एतादृश पाठान्तरम्—एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेयन्ति ;
चित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, चित्तं परिविचिट्ठइ,
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, नो चित्तं परिविचिट्ठइ।

[8] परिविचिट्ठई (क, चू)।

[9] परिविचिट्ठई (क)।

[10] × (शु)।

२०. आवंति केआवंति लोयंसि समणा य माहणा य पुढो विवादं वदंति—से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, **उड्ढं अहं[1] तिरियं दिसासु** सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—"सव्वे पाणा 'सव्वे भूया सव्वे जीवा'[2] सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा[3], उद्दवेयव्वा।

एत्थ[4] वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२१. अणारियवयणमेयं।।

२२. तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी—से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुम्मयं च भे, दुव्विण्णायं च भे, **उड्ढं अहं तिरियं दिसासु** सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे, जण्णं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं पण्णवेह'[5]—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा, उद्दवेयव्वा।

एत्थ वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'[6]।।"

२३. वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं पण्णवेमो—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।

एत्थ वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२४. आरियवयणमेयं।।

२५. पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं[7] पुच्छिस्सामो—हंभो पावादुया[8]! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं?

२६. समिया पडिवन्ने[9] यावि एवं बूया—सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं। —त्ति बेमि।।

तइओ उद्देसो

सम्मातव-पदं

२७. उवेह[10] एणं बहिया य लोयं, से सव्वलोगंसि जे केइ विण्णू।
अणुवीइ[11] पास णिक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति[12]।।

२८. नरा[13] मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजू।।

---

[1] अहेयं (क)।

[2] सव्वे जीवा सव्वे भूया (वृ, क, घ, छ)।

[3] परियावेयव्वा किलामेयव्वा (क, ख, ग)।

[4] एत्थं पि (ख, ग, घ)।

[5] पन्नवेह, एवं परूवेह (चू, क)।

[6] नत्थित्थ दोसो। अणारियवयणमेयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।

[7] पत्तेयं-पत्तेयं (ख, ग, च, छ)।

[8] पवादिया (छ); समणा माहणा (चू)।

[9] पडिवण्णे (चू)।

[10] उवेहणं (क, घ); उवेहेणं (ख, ग); उव्वेहेणं (च, छ)।

[11] अणुवितिय (क, च); अणुचितिय (छ)।

[12] जहंति (चू, छ)।

[13] नरे (क, ख, ग, घ, च)।

२९. **आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा, एवमाहु समत्तदंसिणो**[1] ।।

३०. ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति ।।

३१. इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।।

३२. इह आणाकंखी पंडिए अणिहे एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरं,[2] कसेहि[3] अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ।।

३३. **जहा जुण्णाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो[4] पमत्थति, एवं अत्तसमाहिए अणिहे ।।**

कसाय-विवेग-पदं

३४. **विगिंच कोहं अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए ।।**

३५. **दुक्खं च जाण[5] अदुवागमेस्सं ।।**

३६. **पुढो फासाइं च फासे[6] ।।**

३७. **लोयं च पास विप्फंदमाणं ।।**

३८. **जे णिव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया ।।**

३९. तम्हा तिविज्जो[7] णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

सम्माचरित्त-पदं

४०. आवीलए पवीलए निप्पीलए[8] **जहित्ता पुव्वसंजोगं,** हिच्चा उवसमं ।।

४१. **तम्हा अविमणे वीरे** सारए समिए सहिते सया जए ।।

४२. दुरणुचरो मग्गो वीराणं अणियट्टगामीणं ।।

४३. **विगिंच मंस-सोणियं ।।**

४४. **एस पुरिसे दविए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।**
जे धुणाइ समुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ।।

४५. **णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं, आयाणसोय-गढिए बाले ।**
अव्वोच्छिन्नबंधणे, अणभिक्कंतसंजोए ।
तमंसि[9] अविजाणओ आणाए लंभो णत्थि त्ति बेमि ।।

४६. **जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कओ[10] सिया ?**

४७. से हु पण्णाणमंते बुद्धे आरंभोवरए ।।

---

[1] सम्मत्त° (क, वृपा) ।

[2] सरीरगं (वृ) ।

[3] किसेहि (चू); कम्मेहिं जरेहिं (ख) ।

[4] हव्ववाहू (घ, च, छ) ।

[5] बहु (क) ।

[6] फासए (क, छ) ।

[7] द्रष्टव्यम्—३।२८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[8] निप्फीलए (क, घ) ।

[9] अंधस्स तमस्स (चू); तमंसि (चूपा) ।

[10] कुओ (क, च, छ) ।

४८. सम्ममेयंति पासह ॥

४९. जेण बंधं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ॥

५०. पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, णिक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं ॥

५१. 'कम्मुणा सफलं'[1] दट्ठुं, तओ णिज्जाइ वेयवी ॥

५२. जे खलु भो! वीरा समिता सहिता सदा जया संघडदंसिणो[2] आतोवरया अहा-तहा[3] लोगमुवेहमाणा, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिंसु[4], साहिस्सामो[5] णाणं वीराणं समिताणं सहिताणं सदा जयाणं संघडदंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ॥

५३. किमत्थि उवाधी[6] पासगस्स 'ण विज्जति ?
णत्थि'[7] ॥

त्ति बेमि ॥

---

१. कम्माण सफलत्तं (वृ) ।

२. सत्थड° (च); संथड° (चू) ।

३. तहं (क) ।

४. परिविचिट्ठिंसु (क, ख, ग, च, छ); विपरिचिट्ठिंसु (चू) ।

५. अग्घातिस्सामो (च) ।

६. उवही (क, घ, च, छ) ।

७. अह णत्थि ? ण विज्जति (चू); णत्थि वा ण विज्जति (छ) ।

पंचमं अज्झयणं

लोगसारो

पढमो उद्देसो

काम-पदं

१. ‘आवंती केआवंति लोयंसि विप्परामुसंति, अट्ठाए अणट्ठाए वा’[1], एएसु चेव विप्परामुसंति ।।

२. गुरू से कामा ।।

३. तओ से मारस्स अंतो, जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे ।।

४. णेव से अंतो, णेव से दूरे[2] ।।

५. से पासति फुसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं ।
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविजाणओ ।।

६. कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे, तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ[3] ।।

७. मोहेण गब्भं ‘मरणाति एति’[4] ।।

८. एत्थ मोहे पुणो-पुणो ।।

९. संसयं परिजाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,
संसयं अपरिजाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति ।।

१०. जे छेए से सागारियं ण सेवए ।।

---

[1] × (ख, ग, घ, च, छ); नागार्जुनीया :— जावंति केइ लोए छक्कायवहं समारभंति अट्ठाए अणट्ठाए वा (वृ) ।

[2] बाहिं (चू) ।

[3] विप्परियासमुवेति (क, ख, ग, छ); °समेति (च, चू) ।

[4] मरणादुवेति (चूपा) ।

११. **'कट्टु एवं अविजाणओ''[१] बितिया मंदस्स बालया ॥**

१२. लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणयाए—त्ति बेमि ॥

१३. पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ॥

१४. **'एत्थ फासे'[२] पुणो-पुणो ॥**

१५. आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी ॥

१६. एत्थ वि बाले परिपच्चमाणे[३] रमति पावेहिं कम्मेहिं, 'असरणे सरणं' ति मण्णमाणे ॥

१७. इहमेगेसिं एगचरिया भवति—से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोहे बहुरए बहुनडे बहुसढे[४] बहुसंकप्पे, **आसवसक्की पलिउच्छन्ने,**
उट्ठियवायं पवयमाणे "मा मे केइ अदक्खू"
अण्णाण-पमाय-दोसेणं, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणइ ॥

१८. **अट्टा पया माणव ! कम्मकोविया**[५] जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं[६] अणुपरियट्टंति ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अप्पमादमग्ग-पदं

१९. आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभजीवी, एतेसु[७] चेव मणारंभजीवी[८] ॥

२०. एत्थोवरए तं झोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ॥

२१. जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे त्ति मन्नेसी'[९] ॥

२२. **एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते ॥**

२३. **उट्ठिए णो पमायए ॥**

२४. **जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं''[१०] ॥**

२५. **पुढोछंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ॥**

---

[१] °अवयाणतो (चू); °अवियाणतो (चूपा); नागार्जुनीयाः—जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अहवा तं परं सएण वा दोसेण उवलिंपिज्जा (वृ, चू) ।

[२] एत्थ मोहे (चू, वृपा); तत्थ फासे (चूपा) ।

[३] परिवच्चमाणे (च); परितप्पमाणे (छ,चू,वृ); परिपच्चमाणे (चूपा, वृपा) ।

[४] चूर्णिकृता 'बहुसढे' इति न व्याख्यातम् ।

[५] कम्मअकोविता (चू) ।

[६] आवट्टमेव (ख, ग, च) ।

[७] तेसु (वृ) ।

[८] अणारंभ° (ग, च) ।

[९] अन्नेसि (ख, ग, च) ।

[१०] पत्तेय-सायं (क, च, छ) ।

२६. से अविहिंसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो[1] फासे विप्पणोल्लए ॥

२७. एस समिया-परियाए वियाहिते ॥

२८. जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं, उदाहु ते आयंका फुसंति ॥
इति उदाहु वीरे[2] 'ते फासे पुट्ठो हियासए' ॥

२९. से पुव्वं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अधुवं, अणितियं, असासयं, चयावचइयं[3], विपरिणाम-धम्मं, पासह एयं 'रूवं ॥

३०. संधिं'[4] समुप्पेहमाणस्स एगायतण[5]-रयस्स इह विप्पमुक्कस्स, णत्थि मग्गे विरयस्स त्ति बेमि ॥

परिग्गह-पदं

३१. आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—से अप्पं वा, बहुं[6] वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, एतेसु चेव परिग्गहावंती ॥

३२. एतदेवेगेसिं[7] महब्भयं भवति, लोगवित्तं[8] च णं उवेहाए ॥

३३. एए संगे अविजाणतो ॥

३४. से 'सुपडिबुद्धं सूवणीयं ति णच्चा'[9], पुरिसा ! परमचक्खू ! विपरक्कमा[10] ॥

३५. एतेसु चेव बंभचेरं ति बेमि ॥

३६. **से सुयं च मे अज्झत्थियं[11] च मे, "बंध-पमोक्खो तुज्झ[12] अज्झत्थेव"** ॥

३७. **एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिक्खए ।
पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिव्वए'[13]** ॥

३८. एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अपरिग्गह-कामनिव्वेयण-पदं

३९. आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती, एएसु चेव अपरिग्गहावंती ॥

---

[1] पुढो (ख, ग, घ) (अशुद्धम्) ।
[2] धीरे (क, ख, ग, छ, चू) ।
[3] चयो° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
[4] रूव-संधि (क, च, छ, वृ, चू) ।
[5] एगायण (घ) ।
[6] बहुयं (क, घ, च, छ) ।
[7] एयमेगेसिं (ख, ग); एयमेवेगेसिं (घ) ।
[8] लोगं वित्तं (ख, ग, छ) ।
[9] सुपडिबद्धं° (क, घ, छ, वृ); सुतं अणुविचिंतेति णच्चा (चूपा) ।
[10] विपरक्कम (ख, ग, च) ।
[11] अज्झत्थं (क, ख, ग, घ, च); अज्झत्थयं (क्व) ।
[12] × (ख, ग, घ, छ) ।
[13] अप्पमाय सुसिक्खेज्जा (चू) ।

४०. **सोच्चा वई[१] मेहावी, पंडियाणं णिसामिया ।**
समियाए[२] धम्मे, आरिएहिं पवेदिते ॥

४१. जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए भवति, तम्हा बेमि—
णो णिहेज्ज[३] वीरियं ॥

४२. जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई ।
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ॥

४३. **सेवि तारिसए सिया[४], जे परिण्णाय लोगमणुस्सिओ[५] ॥**

४४. **एयं णियाय मुणिणा पवेदितं—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे,**
पुव्वावररायं जयमाणे, सया सीलं संपेहाए,
सुणिया भवे अकामे अझंझे ॥

४५. **इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ?**

४६. **'जुद्धारिहं खलु दुल्लहं'[६] ॥**

४७. जहेत्थ कुसलेहिं परिण्णा-विवेगे भासिए ॥

४८. चुए हु बाले गब्भाइसु रज्जइ[७] ॥

४९. **अस्सिं चेयं पव्वुच्चति, रूवंसि वा छणंसि वा ॥**

५०. से हु एगे संविद्धपहे[८] मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे ॥

५१. **इति कम्मं परिण्णाय, सव्वसो से ण हिंसति । संजमति णो पगब्भति ॥**

५२. उवेहमाणो पत्तेयं सायं ॥

५३. वण्णाएसी णारभे कंचणं सव्वलोए ॥

५४. **एगप्पमुहे विदिसप्पइण्णे, निव्विन्नचारी अरए पयासु ॥**

५५. से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं[९] अकरणिज्जं पाव कम्मं ॥

५६. तं णो अन्नेसिं[१०] ॥

५७. **जं सम्मं ति पासहा[११], तं मोणं ति पासहा ।**
जं मोणं ति पासहा, तं सम्मं ति पासहा ॥

---

१. वर्ति (क, ख, ग); वातं (छ) ।
२. समया (घ, च) ।
३. णिहणिज्ज (ख, ग); निण्हवेज्ज (शु) ।
४. चेव (चू) ।
५. °मण्णेसति (चू, क); °मण्णुसिया (ख, ग, छ); °मण्णेसिंति (च); °मणुस्सिते (चूपा) ।
६. जुद्धारियं च दुल्लहं (वृपा) ।
७. रिज्जइ (वृ, चूपा) ।
८. संविद्धभए (चू, वृपा); संविद्धपहे (चूपा) ।
९. × (चू, घ, च) ।
१०. अन्नेसी (क, ख, ग, घ, च) ।
११. पासह (ख, ग) (सर्वत्र) ।

५८. ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं[1] गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं ॥

५९. मुणी मोणं समायाए, धुणे कम्म-सरीरगं[2] ॥

६०. पंतं लूहं सेवंति, वीरा समत्तदंसिणो[3] ॥

६१. एस ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

अवियत्तस्स एगल्लविहार-पदं

६२. गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कंतं भवति **अवियत्तस्स[4] भिक्खुणो** ॥

६३. वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा ॥

६४. उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्झति[5] ॥

६५. संबाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो ॥

६६. एयं ते मा होउ ॥

६७. एयं कुसलस्स दंसणं ॥

६८. **तद्दिट्ठीए तम्मोत्तीए[6]** तप्पुरक्कारे, **तस्सण्णी तन्निवेसणे** ॥

इरिया-पदं

६९. जयंविहारी चित्तणिवाती[7] पंथणिज्झाती पलीवाहरे,[8] पासिय पाणे गच्छेज्जा ॥

७०. से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचेमाणे[9] पसारेमाणे विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे[10] ॥

कम्मणो बंध-विवेग-पदं

७१. एगया गुणसमियस्स रीयतो कायसंफासमणुचिण्णा एगतिया पाणा उद्दायंति ॥

७२. इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ॥

७३. जं 'आउट्टिकयं कम्मं'[11], तं परिण्णाए[12] विवेगमेति ॥

७४. एवं से अप्पमाएणं, विवेगं किट्टति वेयवी ॥

---

[1] आदिज्ज° (क); अदिज्ज° (ख, ग, घ, च, छ) ।

[2] 'कम्म' नास्ति (क, घ, च, छ) ।

[3] सम्मत्त° (क, वृपा, चू) ।

[4] अव्वत्तस्स (क) ।

[5] वुज्झति (चू पा) ।

[6] तम्मुत्तिए (क, च) ।

[7] चित्तणिधायी (चूपा) ।

[8] पलिबहिरे (क, ग); पलिवाहरे (च); बलिबाहिरे (शु); पलिबाहिरे (ख, घ, छ, वृ) ।

[9] संकुच° (च) ।

[10] संपलिज्ज° (ख) ।

[11] आउट्टीकम्मं (क, च); आवट्टीकम्मं (घ) ।

[12] परिन्नाय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

बंभचेर-पदं

७५. से पभूयदंसी पभूयपरिण्णाणे उवसंते समिए सहिते सया जए दट्ठुं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—

७६. किमेस जणो करिस्सति ?

७७. **'एस से'[1] परमारामो, जाओ लोगम्मि इत्थीओ ।।**

७८. मुणिणा हु एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गामधम्मेहिं—

७९. अवि णिब्बलासए ।।

८०. **अवि ओमोयरियं कुज्जा ।।**

८१. अवि उड्ढंठाणं ठाइज्जा ।।

८२. अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

८३. अवि आहारं वोच्छिंदेज्जा ।।

८४. अवि चए इत्थीसु मणं ।।

८५. **पुव्वं[2] दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा ।।**

८६. इच्चेते कलहासंगकरा भवंति । पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए त्ति बेमि ।।

८७. से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए[3] णो कयकिरिए वइगुत्ते अज्झप्प-संवुडे परिवज्जए सदा पावं ।।

८८. एतं मोणं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

पंचमो उद्देसो

आयरिय-पदं

८९. से बेमि—तं जहा ।

अवि हरए पडिपुण्णे, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'[4] ।
उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झगए ।।

९०. **से पास सव्वतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,**
जे य पण्णाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया ।।

९१. **सम्ममेयंति पासह[5] ।।**

९२. कालस्स कंखाए परिव्वयंति त्ति बेमि ।।

---

[1] एसे (सो) (क, घ, च) ।

[2] पुव्विं (घ) ।

[3] ममायए (छ); मामए (शु) ।

[4] समंसि भोमे चिट्ठइ (च) ।

[5] पासहा (क, च, छ) ।

सद्धा-पदं

९३. वितिगिच्छ[1]-समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं ।।

९४. सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,
अणुगच्छमाणेहिं अणणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ?

९५. **तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।।**

मज्झत्थ-पदं

९६. सड्ढिस्स णं समणुण्णस्स संपव्वयमाणस्स—
समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
असमियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
असमियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होइ उवेहाए ।
असमियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होइ उवेहाए ।।

९७. उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया **उवेहाहि समियाए** ।।

९८. इच्चेवं तत्थ संधी झोसितो भवति ।।

अहिंसा-पदं

९९. उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुपासह ।।

१००. एत्थवि बालभावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।।

१०१. तुमंसि नाम सच्चेव[2] जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव जं 'अज्जावेयव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव जं 'परितावेयव्वं' ति मन्नसि,
[3]°तुमंसि नाम सच्चेव जं 'परिघेतव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव° जं 'उद्दवेयव्वं' ति मन्नसि ।।

१०२. अंजू चेय[4]-पडिबुद्ध[5]-जीवी, तम्हा **ण हंता ण विघायए** ।।

१०३. **अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति[6] णाभिपत्थए ।।**

आय-पदं

१०४. **जे आया से विण्णाया, जे विण्णाया से आया । जेण विजाणति से आया ।।**

---

[1] वितिगिंछ (छ); विगिंछ (शु) ।
[2] तं चेव (क, घ, च) ।
[3] सं० पा०—एवं जं 'परिघेतव्वं' ति मन्नसि जं ।
[4] चेयं (क, ख, ग, च, चू, छ) ।
[5] पडिबुज्झ (क, च, चू) ।
[6] × (ख, ग, घ, च, छ) ।

१०५. **तं पडुच्च पडिसंखाए ॥**

१०६. एस आयावादी समियाए-परियाए वियाहिते ।

—त्ति बेमि ॥

छट्ठो उद्देसो

मग्गदंसण-पदं

१०७. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा ॥

१०८. एतं ते मा होउ ॥

१०९. **एयं कुसलस्स दंसणं ॥**

११०. **तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए**, तप्पुरक्कारे **तस्सण्णी तन्निवेसणे ॥**

१११. अभिभूय अदक्खू, अणभिभूते पभू निरालंबणयाए ॥

११२. जे महं[1] अबहिमणे ॥

११३. पवाएणं पवायं जाणेज्जा ॥

११४. सहसम्मइयाए[2], परवागरणेणं अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा ॥

११५. **णिद्देसं णातिवट्टेज्जा** मेहावी ॥

सच्चस्स अणुसीलण-पदं

११६. सुपडिलेहिय[3] सव्वतो सव्वयाए[4] सम्ममेव[5] समभिजाणिया[6] ॥

११७. **इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए ॥**
णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि त्ति बेमि ॥

११८. **उड्ढं सोता अहे सोता, तिरियं सोता वियाहिया,**
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ॥

११९. **‘आवट्टं तु उवेहाए’[7], ‘एत्थ विरमेज्ज वेयवी’[8] ॥**

१२०. **विणएत्तु[9] सोयं णिक्खम्म[10]**, एस महं अकम्मा जाणति पासति ॥

१२१. पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं गतिं परिण्णाय ॥

१२२. अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमग्गं[11] वक्खाय[12]-रए ॥

---

[1] अहं (चू) ।

[2] °सम्मुइ (ति) याए (क, घ, च, छ) ।

[3] °लेहियं (चू) ।

[4] सव्वत्ताए (चू); सर्वात्मना (वृ) ।

[5] °मेतं (चू) ।

[6] °ज्जा (घ) ।

[7] आवट्टमेयं तु पेहाए (ख, ग, घ); अट्टमेयं उवेहाए (चू) ।

[8] विवेगं किट्टइ वेदवी (चू, वृपा); एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा) ।

[9] विणएत्ता (चूपा) ।

[10] णिक्कम्म (घ, छ) ।

[11] वदुमग्गं (क); वड्डुमग्गं (च, शु) ।

[12] विक्खाय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

परमप्प-पदं

१२३. सव्वे सरा णियट्टंति ॥

१२४. तक्का जत्थ ण विज्जइ ॥

१२५. मई तत्थ ण गहिया ॥

१२६. ओए अप्पतिट्ठाणस्स[1] खेयन्ने ॥

१२७. से ण दोहे, ण हस्से[2], ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले ॥

१२८. ण किण्हे, न णीले, ण लोहिए', ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ॥

१२९. ण सुब्भिगंधे[3], ण दुरभिगंधे ॥

१३०. ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे ॥

१३१. ण कक्खडे[4], ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे ॥

१३२. ण काऊ ॥

१३३. ण रुहे ॥

१३४. ण संगे ॥

१३५. ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अण्णहा ॥

१३६. परिण्णे सण्णे[5] ॥

१३७. उवमा ण विज्जए ॥

१३८. अरूवी सत्ता ॥

१३९. अपयस्स पयं णत्थि ॥

१४०. से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] वृत्तिकृता एतत्पदं षष्ठ्यन्तं व्याख्यातम्, तेन अर्थस्य जटिलता जाता । प्राकृतशैल्या एतत् विभक्तिपरिवर्तनपूर्वकं प्रथमान्तं व्याख्यायते, तदा अर्थसारल्यं स्यात् ।

[2] हुस्से (क, घ, च); रहस्से (ख);हरस्से(छ) ।

[3] सुरहि ° (क, ख, ग) ।

[4] कक्कडे (घ, छ) ।

[5] सव्वओ (चू); × (घ) ।

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पढमो उद्देसो

नाणस्स निरूवण-पदं

१. **ओबुज्झमाणे इह माणवेसु आघाइ[1] से णरे ॥**

२. जस्सिमाओ जाईओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति,
अक्खाइ से णाणमणेलिसं ॥

३. से किट्टति तेसिं समुट्ठियाणं णिक्खित्तदंडाणं समाहियाणं पण्णाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं ॥

४. **एवं पेगे महावीरा** विप्परक्कमंति ॥

अणत्तपण्णाणं अवसाद-पदं

५. पासह एगेवसीयमाणे[2] अणत्तपण्णे ॥

६. से बेमि—से जहा वि कुम्मे हरए विणिविट्ठचित्ते, पच्छन्न-पलासे, उम्मग्गं[3] से णो लहइ ॥

७. भंजगा इव सन्निवेसं णो चयंति, एवं पेगे[4]—
'अणेगरूवेहिं कुलेहिं'[5] जाया,
'रूवेहिं सत्ता'[6] कलुणं थणंति,
णियाणाओ ते ण लभंति मोक्खं ॥

---

[1] अक्खाति (क, ख, ग, घ); अग्घाति (चू) ।
[2] विसीय ° (क, ख, ग, घ, चू) ।
[3] उम्मुग्गं (क, घ, छ) ।
[4] वेगे (च) ।
[5] अणेगगोतेसु कुलेसु (चू) ।
[6] रूवेसु गिद्धा (च) ।

८. अह पास 'तेहिं-तेहिं'[१] कुलेहिं आयत्ताए[२] जाया—

गंडी अदुवा कोढी[३], रायंसी अवमारियं।
काणियं झिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा॥
उदरिं पास मूयं[४] च, सूणिअं च गिलासिणिं।
वेवइं[५] पीढसप्पिं च, सिलिवयं[६] महुमेहणिं[७]॥
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो।
अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा॥
मरणं तेसिं संपेहाए[८], उववायं चयणं च णच्चा।
परिपागं[९] च संपेहाए, तं सुणेह जहा तहा॥

९. संति पाणा अंधा तमंसि[१०] वियाहिया॥

१० तामेव सइं असइं अतिअच्च[११] उच्चावयफासे पडिसंवेदेंति[१२]॥

११. बुद्धेहिं एयं पवेदितं॥

पाणि-किलेस-पदं

१२. संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदयचरा, आगासगामिणो॥

१३. पाणा पाणे किलेसंति॥

१४. पास लोए महब्भयं॥

तिगिच्छापसंगे अहिंसा-पदं

१५. बहुदुक्खा हु जंतवो॥

१६. सत्ता कामेहिं[१३] माणवा॥

१७. अबलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण॥

१८. अट्टे से बहुदुक्खे, इति बाले पगब्भइ[१४]॥

---

१. तेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
२. ×(चू)।
३. कोट्ठी (ग, छ)।
४. मूइं (क, घ, चू)।
५. वेवयं (क, ख, ग, च); वेवइयं (घ)।
६. सिलेवइं (घ, च)।
७. मधुमेहणं (छ)।
८. सपेहाए (क, घ, च); पेहाए (ख, ग)।
९. परियागं (ख, ग, घ) (अशुद्धं); पलिपागं (चू)।
१०. तमसि (क, घ)।
११. अतिगच्च (क)।
१२. °वेदेति (क, ख, घ, च, छ)।
१३. कामेसु (च)।
१४. पकुव्वइ (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चू); पगब्भइ (चूपा); वृत्तौ चूर्णौ च 'पकुव्वइ' पाठो व्याख्यातोस्ति। किन्तु उत्तराध्ययनस्य पञ्चमाध्ययने सप्तमे श्लोके 'इइ बाले पगब्भई' एवं पाठोस्ति। चूर्णिकृता पाठान्तरत्वेन एष पाठो व्याख्यातः। अर्थमीमांसयासौ अधिकं संगच्छते। तेनासौ मूले स्वीकृतः।

१९. एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए ।।

२०. णालं पास ।।

२१. अलं तवेएहिं ।।

२२. एयं पास मुणी ! महब्भयं ।।

२३. णातिवाएज्ज कंचणं ।।

सयणपरिच्चायधुत-पदं

२४. आयाण भो ! सुस्सूस भो ! 'धूयवादं पवेदइस्सामि'[1] ।।

२५. इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहिं अभिसेएण[2] अभिसंभूता, अभिसंजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसंवुड्ढा[3], अभिसंबुद्धा अभिणिक्खंता, **अणुपुव्वेण महामुणी** ।।

**२६. तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, "मा णे चयाहि[4]" इति ते वदंति ।।
छंदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंदकारी जणगा रुवंति ।**

२७. अतारिसे मुणी, णो[5] ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा ।।

२८. सरणं तत्थ णो समेति । किह णाम से तत्थ रमति ?

२९. एयं[6] णाणं सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

कम्मपरिच्चायधुत-पदं

३०. **आतुरं लोयमायाए, 'चइत्ता पुव्वसंजोगं'[7]** हिच्चा[8] उवसमं वसित्ता बंभचेरम्मि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा[9] तहा, **'अहेगे तमचाइ कुसीला** ।।

३१. वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं विउसिज्जा[10] ।।

३२. अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए ।।

३३. **कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्ते[11] वा** अपरिमाणाए भेदे ।।

---

[1] नागार्जुनीयाः—धूयोवायं पवेयइस्सामि (चू); धूतोवायं पवेयंति (वृ) ।

[2] × (घ, च) ।

[3] × (क, छ); °संवड्ढा (ख, ग); अभिबुद्धा (घ) ।

[4] जहाहि (चू) ।

[5] × (क, घ, च, छ) ।

[6] एवं (च) (अशुद्धं) ।

[7] जहित्ता पुव्वमायतणं (चू) ।

[8] हिच्चा इह (चू) ।

[9] जहा (ख) ।

[10] विओ° (छ) ।

[11] मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ) ।

३४. एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं[1] अवितिण्णा[2] चेए'[3] ॥
३५. **'अहेगे धम्म मादाय'**[4] 'आयाणप्पभिइं सुपणिहिए'[5] चरे[6] ॥
३६. **अपलीयमाणे[7] दढे** ॥
३७. **सव्वं गेहिं[8] परिण्णाय, एस पणए महामुणी** ॥
३८. **अइअच्च सव्वतो संगं** "ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि ॥"
३९. जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते[9] ॥
४०. जे अचेले परिवुसिए[10] संचिक्खति[11] ओमोयरियाए ॥
४१. **से अक्कुट्ठे व[12] हए व लूसिए[13] वा** ॥
४२. **पलियं पगंथे अदुवा पगंथे[14]** ॥
४३. अतहेहिं सद्द-फासेहिं, इति संखाए ॥
४४. एगतरे अण्णयरे अभिण्णाय, **तितिक्खमाणे परिव्वए** ॥
४५. जे य हिरी, जें य अहिरीमणा[15] ॥
४६. **चिच्चा सव्वं विसोत्तियं, 'फासे फासे'[16] समियदंसणे** ॥
४७. **एते भो ! णगिणा वुत्ता, जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो** ॥
४८. **आणाए मामगं धम्मं** ॥
४९. **एस उत्तरवादे, इह माणवाणं वियाहिते** ॥
५०. एत्थोवरए तं झोसमाणे ॥
५१. **आयाणिज्जं परिण्णाय, परियाएण विगिंचइ** ॥
५२. 'इहमेगेसिं एगचरिया होति'[17] ॥
५३. तत्थियराइयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ॥
५४. **से मेहावी परिव्वए** ॥

---

१. अकेवलि° (चू)।
२. अवतिन्ना (ग, छ, वृ)।
३. एताणि विवज्जतेण पढिज्जंति अत्थआसावातो—अहेगे तं चाई सुसीले वत्थं पडिग्गहं कंबलं पाय-पुंछणं अविउसिज्ज, अणुपुव्वेण अहियासमाणो परीसहे दुरहियासओ, कामे अममायमाणस्स इदाणिं वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे। एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं वितिन्ना चेए (चू)।
४. सहिए धम्ममायाय (चूपा)।
५. °पभितिसु पणि° (क, ख, ग, च, छ, वृ)।
६. उवदेसमेव चर (चू)।
७. अप्प° (क, ग, घ, छ)।
८. गिहिं (ख, घ); गंधं (थं) (चू)।
९. रीयते (क, घ, च)।
१०. °जुसिते (छ); × (चू)।
११. संचिट्ठति (छ)।
१२. वा (ख, च, छ)।
१३. लुंचिए (ख, ग, छ, वृ)।
१४. पकत्थ (क); पकंथे (ख, ग, च); पगत्थ (छ)।
१५. °माणे (णा) (ख, घ, च, छ)।
१६. फासे (ख, घ); संफासे फासे (च)।
१७. × (चू)।

५५. सुब्भि अदुवा दुब्भि ।।

५६. अदुवा तत्थ भेरवा ।।

५७. पाणा पाणे किलेसंति ।।

५८. ते फासे पुट्ठो धीरो[1] अहियासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

उवगरणपरिच्चायधुत-पदं

५९. 'एयं खु मुणी'[2] आयाणं सया सुअक्खायधम्मे विधूतकप्पे णिज्झोसइत्ता[3] ।।

६०. जे अचेले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—परिजुण्णे[4] मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि[5], पाउणिस्सामि ।।

६१. अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंसमसगफासा फुसंति ।।

६२. एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ।।

६३. 'लाघवं आगममाणे'[6] ।।

६४. तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

६५. जहेयं[7] भगवता पवेदितं तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो[8] सव्वत्ताए समत्तमेव[9] समभिजाणिया[10] ।।

सरीरलाघवधुत-पदं

६६. एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाणं पास अहियासियं ।।

६७. आगयपण्णाणाणं किसा बाहा[11] भवंति, पयणुए य मंससोणिए ।।

६८. विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए[12] ।।

---

[1] वीरो (रे) (क, च) ।

[2] एस मुणी (चू) ।

[3] ०सइत्ता (क, ख, ग, छ, वृ) ।

[4] ०जिण्णे (घ, छ) ।

[5] × (क, घ, च) ।

[6] नागार्जुनीयाः—एवं खलु से उवगरणलाघवियं तवं कम्मक्खयकारणं करेइ (चू, वृ) ।

[7] से जहेयं (चू) ।

[8] नागार्जुनीयाः—सव्वं ।

[9] सम्मत्तमेव (ख, ग, घ, च, छ, वृ); समत्तमेव (वृपा) ।

[10] ०जाणित्ता (ख, ग, च) ।

[11] बाधा (कं, च); बाहवो (छ) ।

[12] ०ण्णाय (ख, ग, च, छ) ।

६९. एस तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि ॥

संजमधुत-पदं

७०. विरयं भिक्खुं रीयंतं, चिररातोसियं, अरती तत्थ किं विधारए[1] ?
७१. संधेमाणे[2] समुट्ठिए[3] ॥
७२. जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे 'आयरिय-पदेसिए'[4] ॥
७३. 'ते अणवकंखमाणा'[5] अणतिवाएमाणा[6] दइया[7] मेहाविणो पंडिया ॥

विणयधुत-पदं

७४. एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे[8] जहा से दिया[9]-पोए ॥
७५. एवं ते सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइय ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

गोरवपरिच्चायधुत-पदं

७६. एवं ते सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइया 'तेहिं महावीरेहिं'[10] पण्णाणमंतेहिं ॥
७७. तेसिंतिए[11] पण्णाणमुवलब्भ[12] हिच्चा उवसमं 'फारुसियं समादियंति'[13] ॥
७८. वसित्ता बंभचेरंसि आणं 'तं णो' त्ति मण्णमाणा ॥
७९. अग्घायं[14] तु सोच्चा णिसम्म समणुण्णा जीविस्सामो एगे णिक्खम्म ते—
असंभवंता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्झोववण्णा ।
समाहिमाघायमझोसयता, सत्थारमेव फरुसं वदंति ॥
८०. सीलमंता उवसंता, संखाए रीयमाणा । असीला अणुवयमाणा ॥
८१. बितिया मंदस्स बालया ॥

---

[1] न धारए (चूपा) ।
[2] संधणाए (चू); संधेमाणे (चूपा) ।
[3] °ट्ठाय (ख, ग, च, छ) ।
[4] आरिय-देसिए (क, च, चू) ।
[5] ते अवयमाणा भावसोया (चू); ते अणवकंखेमाणा (चूपा) ।
[6] पाणे अणति° (ख, ग, छ, वृ); अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा (चू) ।
[7] चियत्ता (चू) ।
[8] आणुट्ठाणे (चू) ।
[9] दिय (ग) ।
[10] तेसिं महावीराणं (चू) ।
[11] तेसंतिए (क, च); तेसिमंतिए (छ) ।
[12] °पइलब्भ (चू) ।
[13] अहेगे फारुसियं समारभंति (चूपा); अहेगे फारुसियं समारुहंति (वृपा) ।
[14] आघायं (क, ख, घ, च) ।

८२. णियट्टमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खंति णाणभट्ठा दंसणलूसिणो ।।

८३. णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेंति ।।

८४. **पुट्ठा वेगे णियट्टंति, जीवियस्सेव कारणा[1] ।।**

८५. णिक्खंतं पि तेसिं दुन्निक्खंतं भवति ।।

८६. **बालवयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जातिं[2] पकप्पेंति ।।**

८७. अहे संभवंता विद्दायमाणा, **अहमंसी[3] विउक्कसे** ।।

८८. **उदासीणे[4] फरुसं वदंति ।।**

८९. **पलियं पगंथे अदुवा पगंथे** अतहेहिं ।।

९०. तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ।।

९१. अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे, हणमाणे[5], घायमाणे, हणओ यावि समणुजाणमाणे, **घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए ।।**

९२. एस विसण्णे वितद्दे वियाहिते त्ति बेमि ।।

९३. किमणेण भो ! जणेण करिस्सामित्ति मण्णमाणा[6] —'एवं पेगे वइत्ता'[7],
मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।
'वीरायमाणा[8] समुट्ठाए, अविहिंसा सुव्वया दंता'[9] ।।

९४. अहेगे[10] पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे[11] ।।

९५. वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति ।।

---

[1] कारणाए (क, घ, छ) ।

[2] गब्भाइ (चू) ।

[3] °मंसीति (ख, ग, च) ।

[4] उदासीणा (छ) ।

[5] हण पाणे (क, ख, ग, घ च); हयमाणे (छ); 'छ' प्रतौ 'हयमाणे' इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्याधारेण 'हणमाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयापि 'हणमाणे' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । 'घायमाणे' अत्र कारितस्य 'हणओयावि समणुजाणमाणे' अत्रानुमोदनस्यार्थोस्ति । अस्मिन् संदर्भे यदि 'हणमाणे' पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । चूर्णावपि (पृ० २३०) अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते—'पुढविकाइयादि जीवे हणसि हणावेसि हणंतोवि' योगत्रिककरणत्रिगेण ।

[6] मण्णमाणे (क, ख, घ, च, छ) ।

[7] एवमेगे विदित्ता (क); एवं एगे विभत्ता (चूपा); विदित्ता (छ) ।

[8] °माणे (क, घ, च, छ) ।

[9] नागार्जुनीया—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करिस्सामो समुट्ठाए (चू, वृ) ।

[10] × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

[11] पडियमाणे (च, छ) ।

९६. अहमेगेसिं सिलोए[1] पावए भवइ, "से समणविब्भंते समणविब्भंते"[2] ॥

९७. पासहेगे[3] समण्णागएहिं असमण्णागए[4], णममाणेहिं अणममाणे, विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ॥

९८. अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासि[5] ।

—त्ति बेमि ॥

पंचमो उद्देसो

तितिक्खाधुत-पदं

९९. से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा, नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवएसु वा 'जणवयंतरेसु वा'[6], संतेगइया जणा लूसगा भवंति, अदुवा—
फासा फुसंति ते फासे, पुट्ठो वीरोहियासए[7] ॥

धम्मोवदेसधुत-पदं

१००. **ओए समियदंसणे** ॥

१०१. **दयं लोगस्स जाणित्ता** पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं, आइक्खे[8] विभए किट्टे वेयवी ॥

१०२. से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु[9] वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—संतिं, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं[10], सोयवियं[11], अज्जवियं, मद्दवियं, लाघवियं, अणइवत्तियं[12] ॥

१०३. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा ॥

---

[1] लोए (च, छ) ।

[2] समणवितंते (क, घ, चू); समणे भवित्ता समणविब्भंते (ख, ग); समणे भवित्ता विब्भंते विब्भंते (छ) ।

[3] पास एगे (क); पासवेगे (च) ।

[4] सह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।

[5] सव्वओ परिव्वएज्जासि (चू) ।

[6] जणवयंतरेसु वा जाव रायहाणीसु वा रायहाणीअंतरेसु वा गामणयरंतरे वा गाम जणवयंतरे वा णगरजणवयंतरे वा जाव गाम-रायहाणीअंतरे वा उज्जाणे वा उज्जाणंतरे वा विहारभूमी गयस्स वा गच्छंतस्स वा अद्धाणपडिवन्नस्स अच्छंतस्स वा जाव काउसग्गं ठाणं वा ठियस्स (चू, वृ) ।

[7] धीरो ° (च) ।

[8] नागार्जुनीया :—'जे खलु समणे बहुस्सुए बब्भागमे आहारणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-संपन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसंपन्नो ? एवं गुण जाइए पभू धम्मस्स आघवित्तए' ।

[9] अणुट्ठिएसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा (चू) ।

[10] णेव्वाणं (क, च) ।

[11] सोयं (ख, ग) ।

[12] अणतिवातियं (चू) ।

१०४. अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा ।।

१०५. से अणासादए अणासादमाणे वुज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीवे असंदीणे, एवं से भवइ सरणं महामुणी ।।

कसायपरिच्चायधुत-पदं

१०६. एवं से उट्ठिए ठियप्पा[1], अणिहे अचले चले, अबहिलेस्से परिव्वए ।।

१०७. संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ।।

१०८. तम्हा संगं ति पासह ।।

१०९. गंथेहिं गढिया[2] णरा, विसण्णा कामविप्पिया[3] ।।

११०. ‘तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा’[4] ।।

१११. जस्सिमे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, ‘जेसिमे लूसिणो णो परिवित्तसंति’[5], से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च ।।

११२. एस तुट्टे[6] वियाहिते त्ति बेमि ।।

११३. कायस्स विओवाए,[7] एस संगामसीसे वियाहिए ।
से हु पारंगमे मुणी, अवि हम्ममाणे[8] फलगावयट्ठि[9],
कालोवणीते कंखेज्ज कालं, जाव सरीरभेउ ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] उट्ठितप्पा (चू, च) ।

[2] गहिता (छ) ।

[3] कामक्कंता (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।

[4] जंसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसंति (चू); तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसिज्जा (चूपा) ।

[5] × (चू); जस्सि° (च, छ) ।

[6] तिउट्टे (चू) ।

[7] विवाघाए (ख, ग); विघाए (छ); विवायाए (च), व्याघातः (विआघाए) (वृ) ।

[8] हन्न° (क) ।

[9] °तट्ठि (क, छ) ।

अट्ठमं अज्झयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देसो

असमणुण्णविमोक्ख-पदं

१. से वेमि—समणुण्णस्स[1] वा असमणुण्णस्स[2] वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे त्ति बेमि ।।

२. धुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा, पायपुंछणं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता[3] विउकम्म विभत्तं धम्मं झोसेमाणे[4] समेमाणे पलेमाणे[5], पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं—परं अणाढायमाणे त्ति बेमि ।।

असम्मायार-पदं

३. इहमेगेसिं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवति, ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हणमाणा[6] घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ।।

४. अदुवा अदिन्नमाइयंति ।।

५. अदुवा वायाओ विउंजंति[7], तं जहा—अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, साइए[8] लोए, अणाइए[9] लोए, सपज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते

---

[1] अतः पूर्वं 'से भिक्खू' इति गम्यमस्ति ।

[2] अमणु ° (क, ख, ग ।

[3] वियत्ता (क, छ); विवत्ताणं (ख, ग); विइयत्ता (च); विवत्तूण (चू) ।

[4] जोसे ° (च) ।

[5] मलेमाणा (घ); बलेमाणे (च); चलेमाणे (छ); मालेमाणा (चू) ।

[6] द्रष्टव्यम्—६।६१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[7] विप्पउंजंति (क, ख, ग, च, छ) ।

[8] साइ (घ) ।

[9] अणाइ (घ) ।

लोए, सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा, कल्लाणेत्ति वा पावेत्ति[1] वा, साहुत्ति वा असाहुत्ति वा, सिद्धीति वा असिद्धीति वा, णिरएत्ति वा अणिरएत्ति वा ।।

६. जमिणं विप्पडिवण्णा मामगं धम्मं पण्णवेमाणा ।।

७. एत्थवि जाणह[2] अकस्मात्[3] ।।

८. 'एवं तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपण्णत्ते धम्मे भवति'[4] ।।

विवेग-पदं

९. से जहेयं भगवया पवेदितं आसुपण्णेण जाणया पासया ।।

१०. अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्ति बेमि ।।

११. सव्वत्थ सम्मयं पावं ।।

१२. तमेव उवाइकम्म ।।

१३. एस महं विवेगे वियाहिते ।।

१४. गामे वा अदुवा रण्णे ?

णेव गामे णेव रण्णे धम्ममायाणह—पवेदितं माहणेण मईमया ।।

१५. जामा तिण्णि उदाहिया[5], जेसु इमे आरिया[6] संबुज्झमाणा समुट्ठिया ।

१६. जे णिव्वुया पावेहिं[7] कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।।

अहिंसा-पदं

१७. **उड्ढं अहं तिरियं दिसासु,** सव्वतो सव्वावंति च णं पडियक्कं[8] 'जीवेहिं कम्मसमारंभे णं'[9] ।।

१८. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभावेज्जा, णेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा ।।

१९. जेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंति, तेसिं पि वयं लज्जामो ।।

२०. **तं परिण्णाय मेहावी** तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंडभी[10] दंडं समारंभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] पावइत्ति (क); पावएत्ति (घ, च, छ) ।

[2] जाण (क, च); जाणे (घ) ।

[3] अकम्हा (चू) ।

[4] न एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ (चू) ।

[5] उदाहडा (घ, छ, चू); उदाहया (ख, ग) ।

[6] आयरिया (घ, छ) ।

[7] निव्वुडा (चू) ।

[8] पाडेक्कं (क); पाडियक्कं (घ, चू) ।

[9] दंडं समारभंते (चू) ।

[10] दंडभीरू (चू) ।

बीओ उद्देसो

अणाचरणीय-विमोक्ख-पद

२१. से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, रुक्खमूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं[1] अभिहडं आहट्टु[2] चेतेमि[3], आवसहं[4] वा समुस्सिणोमि, से भुंजह वसह आउसंतो समणा !

२२. भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं पडियाइक्खे—आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि, से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ॥

२३. से भिक्खू परक्कमेज्ज वा[5], चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, रुक्खमूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा°, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं बा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[6] तं भिक्खुं परिघासेउं ॥

२४. तं च भिक्खू जाणेज्जा—सहसम्मइयाए[7], परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए[8] सोच्चा अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ[9] °समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु°

---

[1] °सिट्ठं (ख, ग, घ)।

[2] आफुडं (च)।

[3] वेतेमित्ति केयि भणंति करेमि, तं तु ण युज्जति (चू)।

[4] आवसधं (ख, ग); आवसथं (छ)।

[5] सं० पा०—परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था।

[6] °स्सिणोति (क)।

[7] सम्मु° (क, घ, च, छ)।

[8] × (क, ग, घ, च, छ)।

[9] सं० पा०—समारब्भ जाव चेएइ।

चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[1], तं च भिक्खू पडिलेहाए[2] आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए[3] त्ति बेमि ॥

२५. भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा फुसंति—"से हंता ! हणह, खणह, छिंदह, दहह, पचह, आलुंपह, विलुंपह, सहसाकारेह[4], विप्परामुसह"—ते फासे **'धीरो पुट्ठो'**[5] **अहियासए** ॥

२६. अदुवा **आयार-गोयरमाइक्खे, तक्किया ण मणेलिसं**। 'अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते ॥

२७. अदुवा गुत्ती गोयरस्स'[6] ॥

२८. **बुद्धेहिं एयं पवेदितं**—से समणुण्णे असमणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावाडियं—परं आढायमाणे[7] त्ति बेमि ॥

२९. **धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया**—समणुण्णे समणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाएज्जा, णिमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे[8]।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

पव्वज्जा-पदं

३०. मज्झिमेणं[9] वयसा एगे[10], संबुज्झमाणा समुट्ठिता ॥

---

[1] °स्सिणोति (क)।

[2] संपडिलेहाए (ख, ग, घ)।

[3] °सेवणयाए (घ)।

[4] सहसक्कारेह (क)।

[5] पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ); पुट्ठो वीरो (घ)। वीरो पुट्ठो (च)।

[6] अदुवा वइगुत्तीए गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते (क, ख, ग, घ, छ, वृ); चूर्णिव्याख्यातः पाठः सङ्गतोस्ति, यथा—'असरिसं जं भणितं—अणण्णतुल्लं, अणुव्वणाणि सम्मं, जं भणितं – कम्मेण कित असरिसं, पडिलेहा पेक्खिता, आयगुत्ते तिहिं गुत्तीहिं उववत्तो उत्तरेवि दिज्जमाणे कुप्पति ण वा, सतं उत्तरसमत्थो भवति ताहे, अह गुत्ती एगंतेणं गुत्ती वयोगोयरे'। आदर्शेषु पाठपरिवर्तनं जातम्। वृत्तिकृतापि परिवर्तितपाठानुसारेण विवरणं कृतम्, किन्तु अर्थमीमांसया नैतत् समीचीनं प्रतिभाति। अस्यैवाध्ययनस्य दशमे सूत्रे 'अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स' इति पाठो लभ्यते। तेनास्माभिः चूर्णिसम्मतः पाठः स्वीकृतः।

[7] °मीणे (क, च)।

[8] °मीणे (क, च)।

[9] मज्झ° (ख)।

[10] वि एगे (क, ख,ग,च,छ,वृ); मिह एगे (घ)।

३१. 'सोच्चा वई मेहावी'[1], पंडियाणं निसामिया ।
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं[3] पवेदिते ।।

अपरिग्गह-पदं

३२. ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो 'परिग्गहावंती सव्वावंती'[4] च णं लोगंसि ।।

३३. णिहाय दंडं पाणेहिं, पावं कम्मं अकुव्वमाणे, एस महं अगंथे वियाहिए ।।

आहारहेउ-पदं

३४. ओए जुतिमस्स[5] खेयण्णे उववायं[6] चवणं[7] च णच्चा ।।

३५. आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।।

३६. पासहेगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।।

३७. ओए दयं दयइ ।।

३८. जे सन्निहाण[8]-सत्थस्स खेयण्णे ।।

३९. से भिक्खू कालण्णे बलण्णे मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाई अपडिण्णे ।।

४०. दुहओ छेत्ता नियाइ ।।

अगणि-असेवण-पदं

४१. तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाणगायं उवसंकमित्तु गाहावई बूया—आउसंतो समणा ! णो[9] खलु ते गामधम्मा उव्वाहंति ?
आउसंतो गाहावई ! णो[10] खलु मम गामधम्मा उव्वाहंति । सीयफासं[11] णो खलु अहं संचाएमि अहियासित्तए । णो खलु मे कप्पति अगणिकायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा वयणाओ ।।

४२. सिया से एवं वदंतस्स परो अगणिकायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए ।
—त्ति बेमि ।।

---

[1] सोच्चा मेहावी वयणं (क, ख, ग, घ, छ); सोच्चा मेहावी णं वयणं (चू) ।

[2] समयाए (क) ।

[3] आयरिएहिं (घ, छ) ।

[4] °वंति सव्वावंति (ख, ग, घ, च, छ); °वंती स सव्वा° (चू); चूर्णिकृता 'स सव्वावंति च णं लोगंसि' इति पाठस्य सम्बन्धः 'णिहाय दंडं पाणेहिं' अनेन सूत्रेण सह योजितोस्ति ।

[5] जुइमंतस्स (ख, ग, च); अहवा जुत्तिमं (चू) ।

[6] ओवायं (क, घ) ।

[7] चयणं (घ, च) ।

[8] संनिहाणस्स (चू) ।

[9] × (चू) ।

[10] अप्पं (चू) ।

[11] ° फासं च (क, ख, च) ।

चउत्थो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

४३. जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते[1] पायचउत्थेहिं, तस्स णं णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि[2] ।।

४४. से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।।

४५. अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।।

४६. णो धोएज्जा[3], णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।।

४७. अपलिउंचमाणे[4] गामंतरेसु ।।

४८. ओमचेलिए[5] ।।

४९. एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

५०. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

५१. अदुवा संतरुत्तरे[6] ।।

५२. अदुवा एगसाडे ।।

५३. 'अदुवा अचेले'[7] ।।

५४. लाघवियं आगममाणे ।।

५५. तवे से अभिसमन्नागए भवति ।।

५६. जमेयं[8] भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए[9] समत्तमेव[10] समभिजाणिया ।।

सरीर-विमोक्ख-पदं

५७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो खलु अहमंसि, नालमहमंसि सीय-फासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए आउट्टे ।।

---

१. °उसिते (घ,छ) ।

२. धारिस्सामि (चू) ।

३. धावेज्जा (ग); धाएज्जा (घ) ।

४. °ओवमाणे (ख, च, छ) ।

५. अवम° (क, ख, ग) ।

६. अथवावमचेल एककल्पपरित्यागात् द्विकल्पधारीत्यर्थः (वृ) ।

७. × (चू) ।

८. जहेयं (घ) ।

९. सव्वयाए (घ); सव्वताए (च); आवट्टे (ख, ग) ।

१०. सम्मत्त° (ख, ग, घ, च, छ, वृ); समत्त° (वृपा) ।

५८. तवस्सिणो हु तं सेयं, जमेगे[1] विहमाइए[2] ॥

५९. तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

६०. से वि तत्थ विअंतिकारए ॥

६१. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं[3], आणुगामियं ।

—ति बेमि ॥

पंचमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

६२. जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्स णं णो एवं भवति—तइयं वत्थं जाइस्सामि ॥

६३. से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा[4] ॥

६४. °अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

६५. णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

६६. अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ॥

६७. ओमचेलिए° ॥

६८. एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ॥

६९. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

७०. अदुवा एगसाडे ॥

७१. अदुवा अचेले ॥

७२. लाघवियं आगममाणे ॥

७३. तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥

७४. जमेयं भगवता[5] पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[6] समभिजाणिया ॥

गिलाणस्स भत्तपरिण्णा-पदं

७५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—"पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि 'गिहंतर-संकमणं'[7] भिक्खायरिय[8]-गमणाए" 'से एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा

---

[1] जंसेगे (क, घ, च) ।

[2] वेहसादिए (छ) ।

[3] निस्सेमं (ख, ग, घ, च); निस्सेसियं (चू) ।

[4] सं० पा०—जाएज्जा जाव एयं ।

[5] जहेयं (घ, छ) ।

[6] सम्मत्त° (ख,ग,घ,च,छ,वृ); समत्त° (वृपा) ।

[7] गृहाद्गृहान्तरं सङ्क्रमितुम्' इति वृत्तौ ।

[8] भिक्खायरियं (क, घ, च, छ) ।

पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा आउसंतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ ‘अभिहडे असणे’[2] वा पाणे खाइमे वा साइमे वा भोत्तए[3] वा, पायए[4] वा, अण्णे वा एयप्पगारे[5]’[6] ।।

वेयावच्चपकप्प-पदं

७६. जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे—अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं, अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि। अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए[7] ।।

७७. आहट्टु पइण्णं[8] आणक्खेस्सामि[9], आहडं च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ।।

७८. ‘लाघवियं आगममाणे ।।

७९. तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

८०. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिया’[10] ।।

८१. एवं से अहाकिट्टियमेव धम्मं समहिजाणमाणे संते विरते सुसमाहितलेसे ।।

८२. तत्थावि तस्स कालपरियाए ।।

८३. से तत्थ विअंतिकारए ।।

८४. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं[11] ।

—ति बेमि ।।

---

१. पुव्व ° (ख, ग, घ) ।

२. अभिहडं असण (ख, ग, च) ।

३. भोइत्तए (ख, ग) ।

४. पायत्तए (ख); पित्तए (घ); पातुए (छ); पात्तए (च) ।

५. तहप्पगारे (छ) ।

६. तं भिक्खुं केइ गाहावई उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो समणा ! अहन्नं तव अट्ठाए असणं वा (४) अभिहडं दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो गाहावई ! जन्नं तुमं मम अट्ठाए असणं (४) अभिहडं चेतेसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगार असण वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे (वृपा) ।

७. करणयाए (क, च) ।

८. परिण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ); चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽयं पाठः (सर्वत्र) ।

९. आणिक्खि ° (ख, ग); अणिक्खि ° (चू) ।

१०. चिन्हान्तर्वर्ती पाठः चूर्णौ वृत्तौ च समस्ति, प्रतिषु नोपलभ्यते । चूर्ण्यनुसारेणायं पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ ‘समभिजाणमाणे’ एतस्य पश्चादसौ स्वीकृतोऽस्ति ।

११. अणु ° (क ख, ग, च, छ) ।

छट्ठो उद्देसो

८५. जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायबिइएण, तस्स णो एवं भवइ—बिइयं वत्थं जाइस्सामि ॥

८६. से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ॥

८७. अहापरिग्गहियं वत्थं धारेज्जा[1] ॥

८८. °णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्तं वत्थं धारेज्जा ॥

८९. अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ॥

९०. ओमचेलिए ॥

९१. एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ॥

९२. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते°, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णं वत्थं परिट्ठवेत्ता—

९३. 'अदुवा अचेले'[2] ॥

९४. लाघवियं आगममाणे[3] ॥

९५. °तवे से अभिसमण्णागए भवति ॥

९६. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए° समत्तमेव[4] समभिजाणिया ॥

एगत्तभावणा-पदं

९७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सइ[5], एवं से एगागिणमेव[6] अप्पाणं समभिजाणिज्जा[7] ॥

९८. लाघवियं आगममाणे ॥

९९. तवे से अभिसमन्नागए भवइ ॥

१००. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[8] समभिजाणिया ॥

अणासायलाघव-पदं

१०१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेमाणे

---

१. सं० पा०—धारेज्जा जाव गिम्हे ।

२. अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, शु) ।

३. सं० पा०–आगममाणे जाव समत्तमेव ।

४. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. कस्सवि (घ) ।

६. एगाणिय° (च, चू) ।

७. एतेसु अट्ठसुवि उद्देसएसु एस आलावओ सव्वत्थ भाणियव्वो—ण मे अत्थि कोयि णाहमवि कस्सति, अहवा वेहाणसमरणउद्देसगातो आरब्भ एस आलावओ वत्तव्वो, ण मम अत्थि कोयि° (चू) ।

८. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा[1] आसाएमाणे[2], दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा आसाएमाणे, से अणासायमाणे ॥

१०२. लाघवियं आगममाणे ।

१०३. तवे से अभिसमन्नागए भवइ ॥

१०४. जमेयं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[3] समभिजाणिया ॥

संलेहणा-पदं

१०५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—से 'गिलामि च'[4] खलु अहं इमंसि समए'[5] इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,

कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ॥

इंगिणिमरण-पदं

१०६. अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं[6] वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणिं वा, 'तणाइं जाएज्जा'[7], तणाइं जाएत्ता, से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिग-पणग-दग मट्टिय-मक्कडासंताणए, 'पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता'[8] एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा ॥

१०७. तं सच्चं सच्चावादी[9] ओए तिण्णे छिण्ण-कहंकहे आतीतट्ठे[10] अणातीते **वेच्चाण**[11] **भेउरं कायं**, संविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं 'विस्सं भइत्ता'[12] भेरवमणुचिण्णे ॥

---

१. साहरेज्जा (चू) ।

२. आढायमाणे (चूपा वृपा) ।

३. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. गिलाणा मिव (ख, ग); गिलाणमिव (छ,चू) ।

५. समये णो संचाएमि (ख, ग); न शक्नोमि (वृ) ।

६. मंडवं (ग) ।

७. × (क, ग, घ, च) ।

८. पडिलेहित्ता संथारगं सथरेइ संथारगं संथरेत्ता (चू) ।

९. सच्चवादी (ख, ग, च, छ) ।

१०. अइअट्ठे (क, घ, च) ।

११. चेच्चाण (ख, ग, घ, च, छ, वृ); वकार-चकारयोर्लिपिसादृश्यात् वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन 'वेच्चाण' स्थाने 'चेच्चाण' इति रूप संवृत्तम् । वृत्तिकृता उपलब्धपाठाधारेण 'त्यक्त्वा' इति व्याख्यातम्, किन्तु चूर्णिकृता 'विइत्ता' इति व्याख्यातम् । प्रकरणसङ्गत्या-स्माभिः 'वेच्चाण' इति पाठः स्वीकृतः ।

१२. विस्संभणयाए (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ);

१०८. तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

१०९. से[1] तत्थ विअंतिकारए ॥

११०. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

१११. जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, 'तस्स णं'[2] एवं भवति—चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए, सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं[3] अहियासित्तए, दंस-मसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अण्णतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं चहं[4] णो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए ॥

११२. अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंस-मसगफासा फुसंति, एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ॥

११३. लाघवियं आगममाणे ॥

११४. तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥

११५. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[5] समभिजाणिया ॥

वेयावच्चपकप्प-पदं

११६. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु[6] दलइस्सामि,[7] आहडं च सातिज्जिस्सामि ॥

११७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ॥

११८. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अण्णेसिं भिक्खूणं'[8] असणं वा

वृत्तिकृता 'विश्रंभणतया' इति व्याख्यातम्, किन्तु प्रकरणदृष्ट्या देहात्मभेदभावनाभिधायकपाठः सुसङ्गतोस्ति, तेन चूर्णिकृता व्याख्यातः पाठः स्वीकृतः ।

[1] से वि (ख, ग, च, छ) ।

[2] तस्स णं भिक्खुस्स (वृ) ।

[3] चूर्णौ असौ पाठो न व्याख्यातो दृश्यते ।

[4] च (ख, ग, घ, च) ।

[5] द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[6] आहट्टु पइण्णं (चू); चतुर्ष्वपि सूत्रेषु असौ पाठभेदो द्रष्टव्यः ।

[7] दाहामि (चू) ।

[8] × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि ।।

११९. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ।।

१२०. अहं च खलु तेण अहाइरित्तेणं[1] अहेसणिज्जेणं अहापरिग्गहिएणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए ।।

१२१. अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहापरिग्गहिएण असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि ।।

१२२. लाघवियं आगममाणे[2] ।।

१२३. °तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

१२४. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए° समत्तमेव[3] समभिजाणिया ।।

पाओवगमण-पदं

१२५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—से गिलामि[4] च खलु अहं इमम्मि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता **कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी, उट्ठाय भिक्खू अभिणिव्वुडच्चे** ।।

१२६. अणुपविसित्ता गामं वा[5], °णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा°, रायहाणिं वा, तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता एत्थ वि समए कायं च, जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा ।।

१२७. 'तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतट्ठे अणातीते **वेच्चाण**[6]

---

[1] आहा° (क, च, छ) ।

[2] सं० पा० —आगममाणे जाव समत्तमेव ।

[3] द्रष्टव्यम् – ८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[4] गिलाएमि (ख, छ) ।

[5] सं० पा०—गाम वा जाव रायहाणिं ।

[6] द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

भेउरं कायं, संविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं 'विस्सं भइत्ता'[1] भेरव-मणुचिण्णे ।।

१२८. तत्थावि तस्स कालपरियाए ।।

१२९. से तत्थ विअंतिकारए ।।

१३०. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं'[2] ।

—ति बेमि ।।

अट्ठमो उद्देसो

अणसण-पदं

१. 'आणुपुव्वी - विमोहाइं'[3], जाइं धीरा[4] समासज्ज ।
वसुमंतो[5] मइमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं ।।

भत्तपच्चक्खाण-पदं

२. दुविहं पि 'विदित्ताणं, बुद्धा धम्मस्स पारगा'[6] ।
अणुपुव्वीए[7] संखाए, आरंभाओ[8] तिउट्टति ।।
३. कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिक्खए ।
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं ।।
४. जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए ।
दुहतोवि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ।।
५. मज्झत्थो णिज्जरापेही, समाहिमणुपालए ।
अंतो बहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ।।
६. जं किंचुवक्कमं[9] जाणे, आउक्खेमस्स अप्पणो ।
तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ।।
७. गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ।
अप्पपाणं तु विण्णाय[10], तणाइं संथरे मुणी ।।
८. अणाहारो तुअट्टेज्जा[11], पुट्ठो तत्थहियासए ।
णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं वि पुट्ठओ[12] ।।

---

[1] द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
[2] नागार्जुनीया :—कट्ठमिव आतट्ठे तत्थ संचतितं सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकहं कहेज्जा जाव आणुगामियं (चू) ।
[3] अणुपुव्वेण विमोहाइं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
[4] वीरा (क, च) ।
[5] वुसिमंतो (चू) ।
[6] विगिंचित्ता दुट्ठादुट्ठाण जाणगा (चूपा) ।
[7] °पुव्वीइ (ग) ।
[8] कम्मुणाओ (घ, च, चूपा, वृपा) ।
[9] किंचिवुक्कमं (च) ।
[10] वियाणित्ता (चू) ।
[11] णिवज्जेज्जा (चू, वृ) ।
[12] °पुट्ठवं (क, च, छ); °पुट्ठए (ख, ग) ।

९. संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहेचरा ।
भुंजंति मंस-सोणियं, ण छणे ण पमज्जए ।।
१०. पाणा देहं विहिंसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे[1] ।
'आसवेहिं विवित्तेहिं'[2], तिप्पमाणेऽहियासए[3] ।।
११. गंथेहिं विवित्तेहिं[4], आउ-कालस्स पारए ।

इंगिणिमरण-पदं

पग्गहियतरगं[5] चेयं, दवियस्स वियाणतो[6] ।।
१२. अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए ।
आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ।।
१३. हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'[7] ।
विउसिज्ज[8] अणाहारो, पुट्ठो तत्थहियासए ।।
१४. इंदिएहिं गिलायंते, समियं साहरे[9] मुणी ।
तहावि से अगरिहे[10], अचले जे समाहिए ।।
१५. अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ।
काय-साहारणट्ठाए[11] , एत्थं[12] वावि अचेयणे ।।
१६. परक्कमे[13] परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते ।
ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ।।
१७. 'आसीणे णेलिसं'[14] मरणं, इंदियाणि समीरए ।
कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए ।।
१८. जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए ।
ततो उक्कसे[15] अप्पाणं, सव्वे फासेहियासए ।।

---

[1] वि उब्भमे (क, ख, ग, घ, वृ) ।

[2] अवसव्वेहिं विचित्तेहिं (चू) ।

[3] तप्प° (छ) ।

[4] विचित्तेहिं (क, ख, घ, च, छ, चू) ।

[5] °तरागं (क); °तरं (चू) ।

[6] सुयाहितो (चू) ।

[7] मुणि आसए (च, चू) ।

[8] वियो° (ख, ग, च, छ) ।

[9] आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

[10] अगरहे (क, ख, ग, छ) ।

[11] साहरण° (क, ग, छ); संधारण (चू); संहारण (च) ।

[12] इत्थं (घ) ।

[13] परिक्कमे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

[14] आसीण मणेलिसं (क, घ, च); उदासीणो अणेलिसो (चू) ।

[15] उवक्कसे (ग, घ, छ) ।

१९. अयं चायततरे[1] सिया, जो एवं अणुपालए।
सव्वगायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे॥
२०. अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे।
अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे॥
२१. अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं।
वोसिरे सव्वसो कायं, ण मे देहे परीसहा॥
२२. जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'[2]।
संवुडे देहभेयाए, इति पण्णेहियासए॥
२३. भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु[3] वि।
इच्छा[4]-लोभं ण सेवेज्जा, सुहुमं[5] वण्णं सपेहिया॥
२४. सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'[6] ण सद्दहे।
तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया॥
२५. सव्वट्ठेहिं[7] अमुच्छिए, आउकालस्स पारए।
तितिक्खं परमं णच्चा, विमोहण्णतरं हितं॥

—ति बेमि॥

---

१. चायतरे (ख); चाततरे (चू, क); आयरे द्रढग्गाहतरे धम्मे (चूपा); यदि वा··· आत्ततरः (वृ)।

२. तिति संखाते (क); इति संखया (ता) (ग, घ, छ); इति संखाय (च, वृ)।

३. बहुलेसु (चूपा, वृपा)।

४. इच्छ° (क)।

५. घुवं (घुव°) (क, ख, ग, घ, च, छ, घूपा, वृपा)।

६. दिव्वमाय (छ, घ, च, चूपा)।

७. सव्वत्थेहिं (चू)।

नवमं अज्झयणं

उवहाणसुयं

पढमो उद्देसो

भगवओ चरिया-पदं

१. अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय ।
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था[1] ॥

२. णो चेविमेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते ।
से पारए आवकहाए[2], एयं खु अणुधम्मियं[3] तस्स ॥

३. चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया[4] आगम्म ।
अभिरुज्झ कायं[5] विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥

४. संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि वत्थगं भगवं ।
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥

५. अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो झाइ ।
अह चक्खु-भीया[6] सहिया, तं "हंता हंता" बहवे कंदिंसु ॥

६. सयणेहिं वितिमिस्सेहिं[7], इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय ।
सागारियं[8] ण सेवे, इति से सयं पवेसिया झाति ॥

---

[1] रीइत्था (क, चू); रीयित्था (च); रीएत्था (ग) ।
[2] आवकहं (घ) ।
[3] आणु° (छ) ।
[4] °जाती (क) ।
[5] आरुज्झ° (चू) ।
[6] °भीय (ग, च, छ) ।
[7] विमिस्सेहिं (घ) ।
[8] साकारियं (घ, छ) ।

७. जे के इमे अगारत्था, मीसीभावं पहाय से झाति।
पुट्ठो[१] वि णाभिभासिसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू॥
८. णो सुगरमेतमेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे।
हयपुव्वो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुव्वो अप्पपुण्णेहिं॥
९. फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे।
आघाय-णट्ट-गीताइं, दंडजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं॥
१०. गढिए मिहो[२]-कहासु[३], समयंमि[४] णायसुए[५] विसोगे अदक्खू।
एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते[६] असरणाए॥
११. अविसाहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते।
एगत्तगए[७] पिहियच्चे, से अहिण्णायदंसणे संते॥
१२. पुढविं च आउकायं[८], तेउकायं च वाउकायं च।
पणगाइं[९] बीय-हरियाइं, तसकायं च सव्वसो णच्चा॥
१३. एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिण्णाय।
परिवज्जिया[१०] ण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे॥
१४. अदु[११] थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए।
अदु सव्वजोणिया सत्ता, कम्मुणा[१२] कप्पिया पुढो बाला॥
१५. भगवं च 'एवं मन्नेसिं'[१३], सोवहिए हु लुप्पती बाले।
कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं॥
१६. दुविहं समिच्च मेहावी, किरियमक्खायणेलिसिं[१४] णाणी।
आयाण-सोयमतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा॥
१७. अइवातियं[१५] अणाउट्टे[१६], सयमण्णेसिं अकरणयाए।
जस्सित्थिओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से[१७] अदक्खू॥

---

[१] नागार्जुनीया :—पुट्ठो व सो अणुपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावगं भगवं। पुट्ठे व से अपुट्ठे वा° (चू)।
[२] मिधु° (च); मिहु° (छ)।
[३] °कहासुं (क, घ)।
[४] समतो (चू)।
[५] °पुत्ते (ख, ग, वृ)।
[६] णाइ° (छ)।
[७] एगत्ति° (चू)।
[८] °कायं च (क, ग, च, छ)।
[९] पणगाय (ख)।
[१०] °वज्जिया (ख, ग)।
[११] अदुवा (ख, ग, च, छ); अदुव (क)।
[१२] कम्मणा (चू)।
[१३] एवमन्नेसिं (क, घ, च, छ, ब); एवमणिसित्ता (चू)।
[१४] °मणेलिसं (ख, ग)।
[१५] °वत्तियं (छ)।
[१६] अणाउट्टिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
[१७] × (क, घ, च, छ)।

१८. अहाकडं[1] न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा 'य अदक्खू'[2] ।
जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ॥
१९. णो सेवती य परवत्थं[3], परपाए वि से ण भुंजित्था ।
परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए[4] ॥
२०. मायण्णे असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे ।
अच्छिंपि णो पमज्जिया[5], णोवि य कंडूयये मुणी गायं ॥
२१. अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए[6] ।
अप्पं वुइएऽपडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ॥
२२. सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसज्ज[7] वत्थमणगारे ।
पसारित्तु बाहुं परक्कमे, णो अवलंबियाण कंधंसि[8] ॥
२३. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[9] ॥

— त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

भगवओ सेज्जा-पदं

१ चरियासणाइं[10] सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ बुइयाओ ।
आइक्ख ताइं सयणासणाइं[11], जाइं सेवित्था से महावीरो ॥
२. आवेसण[12] - 'सभा-पवासु'[13], पणियसालासु एगदा वासो ।
अदुवा पलियट्ठाणेसु, पलालपुंजेसु एगदा वासो ॥
३. आगंतारे आरामागारे, गामे[14] णगरेवि[15] एगदा वासो ।
सुसाणे सुण्णगारे[16] वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो ॥

---

[1] आहा° (च, छ) ।
[2] बंधं अदक्खू (क); अदक्खू (ख, ग, च); य दक्खू (घ) ।
[3] परं वत्थं (ख, ग) ।
[4] असरणयाए (घ, च) ।
[5] पमज्जिज्जा (ख) ।
[6] व पेहाए (घ) ।
[7] वोसरिज्ज (घ, चू) ।
[8] खंधंसि (क, च) ।
[9] बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।
[10] अयं च श्लोकः चिरंतनटीकाकारेण न व्याख्यातः (वृ) ।
[11] सयणाइं (क, च) ।
[12] आएसण (चू) ।
[13] सभप्पवासु (क, घ, छ) ।
[14] × (क, च); तह य (घ, छ, ब) ।
[15] °वा (क) ।
[16] सुण्णागारे (छ) ।

४. एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी[1] पतेरस[2] वासे ।
राइं दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ॥
५. 'णिद्दं पि णो पगामाए, सेवइ[3] भगवं उट्ठाए'[4] ।
जग्गावती[5] य अप्पाणं, ईसिं 'साई या'[6] सी अपडिण्णे ॥
६. संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिंसु भगवं उट्ठाए ।
णिक्खम्म एगया राओ, बहिं[7] चंकमिया[8] मुहुत्तागं ॥
७. सयणेहिं तस्सुवसग्गा[9], भीमा आसी अणेगरूवा य ।
संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
८. अदु[10] कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्था य ।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ॥
९. इहलोइयाइं परलोइयाइं, भीमाइं अणेगरूवाइं ।
अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेगरूवाइं ।
१०. अहियासए सया समिए[11], फासाइं विरूवरूवाइं ।
अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहुवाई ॥
११. स जणेहिं तत्थ पुच्छिंसु, एगचरा वि एगदा राओ ।
अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ॥
१२. अयमंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु ।
अयमुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए स कसाइए झाति ॥
१३. जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते ।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति ॥
१४. संघाडिओ पविसिस्सामो[12], एहा य समादहमाणा ।
पिहिया वा सक्खामो[13], अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥
१५. तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए ।
णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ[14] भगवं समियाए ॥

---

[1] वासी (छ) ।
[2] पतेलस (च) ।
[3] सेवइ य (ख, ग) ।
[4] नागार्जुनीयाः—णिद्दावि ण प्पगामा, आसी तहेव उट्ठाए (चू) ।
[5] जगा० (ख, छ) ।
[6] साइ य (क, च, छ) ।
[7] बहिं (च) ।
[8] चंकमित्ता (छ) ।
[9] तत्थु० (क, ख, ग, घ, छ) ।
[10] अदुवा (क, छ) ।
[11] सहिए, इति मंता भगवं अणगारे (चूपा) ।
[12] पहिरिस्सामो (चू) ।
[13] पस्सामो (चू) ।
[14] च ठाएइ (ग)—अशुद्धं प्रतिभाति ।

१६. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[१]॥

—त्ति बेमि॥

तइओ उद्देसो

भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं

१. तणफासे[२] सीयफासे य, तेउफासे य दंस-मसगे य।
अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं॥
२. अह[३] दुच्चर-लाढमचारी, वज्जभूमिं च सुब्भ[म्ह?]भूमिं च।
पंतं सेज्जं सेविंसु, आसणगाणि चेव पंताइं॥
३. लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिंसु।
अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु णिवतिंसु॥
४. अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे[४]।
छुछुकारंति आहंसु, समणं कुक्कुरा डसंतुत्ति॥
५. एलिक्खए जणे[५] भुज्जो, बहवे वज्जभूमि फरुसासी।
लट्ठिं गहाय णालीयं[६], समणा तत्थ एव विहरिंसु॥
६. एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणएहिं।
संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि[७] तत्थ लाढेहिं॥
७. निधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसज्जमणगारे।
अह[८] गामकंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा॥
८. णाओ संगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे।
एवं पि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वो वि एगया गामो॥
९. उवसंकमंतमपडिण्णं, गामंतियं पि अप्पत्तं।
पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु[९], एत्तो[१०] परं पलेहित्ति॥
१०. हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु 'कुंताइ-फलेणं'[११]।
अदु लेलुणा कवालेणं, हंता हंता बहवे कंदिंसु॥

---

[१] बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, छ, वृ, चूपा)।
[२] °फास (क, ख, ग, च)।
[३] अवि (चू)।
[४] डसमाणे (च) भसमाणे (चू)।
[५] जणा (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
[६] नालियं (ख, ग, चू)।
[७] दुच्चराणि (क, च, छ, वृ)।
[८] अदु (घ, छ)।
[९] लूसिंति (चू)।
[१०] एताओ (तो) (क, ख, ग, घ, च, छ)।
[११] कुंतेण फलेण (घ)।

११. मंसाणि[1] छिन्नपुव्वाइं, उट्ठुभंति[2] एगया कायं।
परीसहाइं लुंचिसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु[3]॥
१२. उच्चालइय णिहणिंसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु।
वोसट्ठकाए पणयासी, दुक्खसहे भगवं अपडिण्णे॥
१३. सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे।
पडिसेवमाणे फरुसाइं, अचले भगवं रीइत्था॥
१४. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[4]॥

—त्ति बेमि॥

चउत्थो उद्देसो

भगवओ अतिगिच्छा-पदं

१. ओमोदरियं चाएति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं।
पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छं॥
२. संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं[5] सिणाणं च।
संबाहणं 'ण से कप्पे'[6], दंतपक्खालणं परिण्णाए॥
३. विरए[7] गामधम्मेहिं, रीयति माहणे अबहुवाई।
सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसी य॥

भगवओ आहार-चरिया-पदं

४. आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभिवाते[8]।
अदु जावइत्थं[9] लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं॥
५. एयाणि तिण्णि पडिसेवे, अट्ठ मासे य जावए भगवं।
अपिइत्थ[10] एगया भगवं, अद्धमासं अदुवा मासं पि॥

---

[1] मंसूणि (क, ख, ग, घ, च, छ)।
[2] उट्टंभिया (क, ख, ग, च, छ, वृ); उट्टभियाए (घ)।
[3] उवकरिंसु (क, ख, ग, घ, च, छ)—वृत्ति-चूर्ण्यनुसारेण अशुद्धं प्रतिभाति।
[4] बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा)।
[5] °मब्भंगणं (घ)।
[6] ण सेवित्था (चू)।
[7] विरए य (क, घ, च, छ)।
[8] अभितावे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
[9] जावइ (घ)।
[10] अपियत्थ (चू)।

६. अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता[1] ।
रायोवरायं अपडिण्णे, अन्नगिलायमेगया भुंजे ।।
७. छट्ठेणं एगया भुंजे, अदुवा[2] अट्ठमेण दसमेणं ।
दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ।।
८. णच्चाणं[3] से महावीरे, णो वि य पावगं सयमकासी ।
अण्णेहिं वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ।।
९. गामं पविसे[4] णयरं वा, घासमेसे[5] कडं परट्ठाए ।
सुविसुद्धमेसिया भगवं, आयत-जोगयाए सेवित्था[6] ।।
१०. अदु वायसा दिगिंछत्ता[7], जे अण्णे रसेसिणो सत्ता ।
घासेसणाए चिट्ठंते, सययं[8] णिवतिते य पेहाए ।।
११. अदु माहणं व समणं वा, गामपिंडोलगं च अतिहिं वा ।
सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं 'वावि विहं ठियं'[9] पुरतो ।।
१२. वित्तिच्छेदं वज्जंतो, तेसप्पत्तियं[10] परिहरंतो ।
मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घासमेसित्था ।। (त्रिभिः कुलकम्)
१३. अवि सूइयं व[11] सुक्कं वा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अदु बक्कसं[12] पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ।।
१४. अवि झाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए झाणं ।
उड्ढमहे[13] तिरियं च, पेहमाणे[14] समाहिमपडिण्णे ।।
१५. अकसाई विगयगेही[15], सद्दरूवेसुऽमुच्छिए[16] झाति ।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो[17] पमायं सइं पि कुव्वित्था ।।

---

[1] रीयित्था (चू); विहरित्था (च) ।

[2] अदु अट्ठ० (ख); अदुट्ठ० (ग) ।

[3] णच्चाण (क, ख, ग, घ, च) ।

[4] पविस्स (शु) ।

[5] घासमातं (चू) ।

[6] गवेसित्था (चू) ।

[7] दिगिंच्छित्ता (ख, ग) ।

[8] समयं (क, ख, ग, घ, च, छ); स्वीकृतपाठः चूर्णिवृत्त्यनुसारी वर्तते ।

[9] वा विट्ठियं (क, ख); वा विचिट्ठियं (घ); वा उवट्ठियं (चू); वा चिट्ठियं (च); वा विविधं० (वृ) ।

[10] तेसिमप्पत्तियं (ख, ग); तेसिं पत्तिय (क, च); 'त्रासमकुर्वन्' (वृ) ।

[11] वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

[12] बुक्कसं (ख) ।

[13] उड्ढं अहे य (यं) (ख, ग, घ, छ) ।

[14] लोए झायइ (ख, ग); झायइ (चू) ।

[15] गेही य (क, ख, ग, घ, च) ।

[16] अमुच्छिए (ख, ग, च) ।

[17] ण (च) ।

१६. सयमेव अभिसमागम्म, आयतजोगमायसोहीए ।
अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी ॥
१७. एस विही अणुक्कंतो, माहणेणं मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर २६९२७
अनुष्टुप् श्लोक-८४१ अक्षर १५

---

[1] बहुसो अपडिण्णण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा)।

आयारचूला

पढमं अज्झयणं

पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं[१] पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—पाणेहिं वा, पणएहिं वा, बीएहिं वा, हरिएहिं वा—संसत्तं, उम्मिस्सं, सीओदएण वा ओसित्तं[२], रयसा वा परिवासियं[३], तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे वि[४] संते णो पडिग्गाहेज्जा[५] ॥

२. से य आहच्च पडिग्गाहिए[६] सिया, से तं आयाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे, अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए विगिंचिय-विगिंचिय, उम्मिस्सं[७] विसोहिय-विसोहिय तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ॥

३. जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, 'से तमायाय'[८] एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट[९]-रासिंसि

---

[१] से जं (क, ब) ।

[२] उस्सित्तं (क); अभिसित्त (चू) ।

[३] °घासियं (अ, क, घ, च, ब) ।

[४] × (चू) ।

[५] पडिगा° (घ, छ, ब) ।

[६] °गाहे (अ, घ, च, छ, ब) ।

[७] उम्मीसं (क, च) ।

[८] सेत्त° (अ, च, छ) ।

[९] किट्टि° (छ) ।

वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि[1] पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा ।।

ओसहि-आदि-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जाओ[2] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छच्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंता-भज्जियं[3] पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाओ[5] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छच्छिन्नाओ, वोच्छिण्णाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं[7] वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलंबं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[9], •बहुरजं वा, भुंज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा असइं भज्जियं—दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं[10] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धिं-पदं

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[11] •पिंडवाय-पडियाए°पविसितुकामे णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[12] अपरिहारिएण वा[13] सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

---

[1] थंडिल्लंसि (अ, छ) ।

[2] से जाओ (क, ब, छ) ।

[3] °क्कंतभज्जियं (क, च); °क्कंतमभज्जियं (घ) ।

[4] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[5] से जाओ (क, ग, छ, ब) ।

[6] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[7] भुंजियं (क, घ, च, छ, ब); भज्जियं (अ); हस्त° वृत्तौ दुब्भियंति ।

[8] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[9] सं० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं ।

[10] सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे ।

[11] सं० पा०—गाहावइकुलं जाव पविसितुकामे ।

[12] परिहारिओ वा (अ, क, च, छ, ब) ।

[13] × (अ, क, च, छ, ब) ।

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज[1] वा पविसेज्ज वा ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दुइज्जमाणे—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[2] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।।

अस्सिंपडियाए-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए[4] एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं 'समारब्भ समुद्दिस्स'[5] कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ । तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं[6] वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्त वा'[7] 'अपरिभुत्तं वा'[8] आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं[9] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१३. [10]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ । तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

---

[1] न प्रविशेत् नापि ततो निष्क्रामेत् (वृ) ।

[2, 3] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[4] अस्सं° (क, च, छ, ब, वृ) ।

[5] समारंभमुद्दिस्स (च,ब); समारभ° (अ,घ) ।

[6] अबहिया अणीहडं (क, च) ।

[7] × (चू)

[8] × (क) ।

[9] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

[10] सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ।

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकड वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्त वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[1] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा भूयाइं वा जीवाइं वा सत्ताइं वा समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[2] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं, 'अबहिया

१, २. सं० पा०—गाहावइकुलं जाव पविट्ठे।

णीहडं'[1], अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं[2] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१८. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुय एसणिज्जं[3] °ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

कुल-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसितुकामे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा—इमेसु खलु कुलेसु णितिए पिंडे दिज्जइ, णितिए[4] अग्ग-पिंडे दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ—तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।।

२०. एयं[5] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

— त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

अट्ठमी-आदि-पव्व-पद

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अट्ठमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा, मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा, चाउमासिएसु वा, पंचमासिएमु वा, छमासिएसु वा उउसु[6] वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्टेसु वा, बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, 'तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[7] 'चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[8], कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ[9] वा सण्णिहि-'सण्णिचयाओ वा'[10] परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं,[11]

---

[1] बहिया अणीहडं (अ) ।

[2] सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो ।

[3] सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।

[4] × (क, च) ।

[5] एवं (घ, च, छ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

[6] उदुसु (च) ।

[7] × (च) ।

[8] × (अ, क, घ, च, ब) ।

[9] कालओ वा ततो(छ);कालओ वा तिण्णो(ब)।

[10] संणिचयाओ वा तओ एवं विहं जावतियं पिंडं समणादीणं परिएसिज्जमाणं पेहाए (वृ) ।

[11] सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं।

°अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं°, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२२. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं,[2] °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं°, आसेवियं—फासुयं[3] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

कुल-पदं

२३. से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—उग्ग-कुलाणि वा, 'भोग-कुलाणि'[5] वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय[6]-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा फासुयं एसणिज्जं[7] °ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

महामह-पदं

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इंद-महेसु वा, खंद-महेसु वा, रुद्द-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, थूभ-महेसु वा, चेतिय-महेसु वा, रुक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा, अगड-महेसु वा, तडाग[8]-महेसु वा, दह-महेसु वा, णई-महेसु वा[9], सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु, बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए[10] एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं[11] °उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा° सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं,[12]

---

[1] सं० पा०—अणेसणिज्जं···णो ।

[2] सं० पा०—पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं ।

[3] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।

[4] सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे ।

[5] भोज-कुलाणि (चू) ।

[6] वोक्क° (अ, छ, ब, चू) ।

[7] सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।

[8] तलाग (घ, च, छ) ।

[9] वा असणमहेसु वा (क) ।

[10] वणीमएसु (अ, क, च, छ, ब) अशुद्धं ।

[11] सं० पा०—दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ ।

[12] °गयं (अ, क, च); °कयं (छ); सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव णो ।

•अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

२५. अह पुण एवं जाणेज्जा—दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।
अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा[2]—आउसि ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं भोयणजायं ? से सेवं वदंतस्स परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं[3] जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[4] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

संखडि-पदं

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे, अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे ।।

२८. जत्थेव सा संखडी सिया, तं जहा—गामंसि वा, णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि[5] वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा 'सण्णिवेसंसि वा रायहाणिंसि वा'[6]—संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

२९. केवली बूया आयाणमेयं[7]—संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उद्देसियं वा, मोसजायं[8] वा, कोयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्छेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं भुंजेज्जा ।
असंजए[9] भिक्खू-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ[10] कुज्जा, महल्लिय-

---

१. पुव्व° (क, च) ।
२. आलोएज्जा पभू वा पभूसंदिट्ठो (च); प्रभुं प्रभुसंदिष्टं वा ब्रूयात् (वृ) ।
३. × (घ, छ) ।
४. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
५. मंडबंसि (ब) ।
६. रायहाणिंसि वा सण्णिवेसंसि वा (वृ); चूर्णौ—'गामादि पुव्ववण्णिया' इति सङ्केतेन १।८।१०६ अनुक्रमः अनुसृतः ।
७. आययण° (वृपा) ।
८. °ज्जायं (च, छ, ब) ।
९. अस्सं° (घ, छ, ब) ।
१०. महाद्वाराः (वृ) ।

दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा, बहिं वा उवस्सयस्स[1] हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथरेज्जा—'एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए।'[2] तम्हा से संजए णियंठे[3] तहप्पगारं पुरे-संखडिं[4] वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

३०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

३१. से एगइओ अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा, वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा से दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा ।।

३२. केवली बूया आयाणमेयं—इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा, गाहावइणीहिं वा, परिवायएहिं वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झ सद्धिं[5] सोंडं पाउं भो ! वतिमिस्सं[6] हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिभावमावज्जेज्जा[7] ।।

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा, किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो ! समणा ! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, राओ वा, वियाले वा, गामधम्म[8]-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो। तं चेगइओ सातिज्जेज्जा। अकरणिज्जं चेयं संखाए। एते आयाणा[9] संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवंति[10]। तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा[11] गमणाए ।।

---

[1] कुज्जा उवासयस्स (क, छ); उवस्सयस्स कुज्जा (घ); उपाश्रयं संस्कुर्यात् (वृ)।

[2] एस विलुंगयामो सिज्जाए अक्खाए (अ, छ); एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए (क); एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए (च); एस खलु गयामो सिज्जाए (ब)।

[3] निग्गंथे अण्णयरं वा (घ)।

[4] × (क, घ, च)।

[5] सद्धिं (ब)।

[6] विति० (च, छ)।

[7] मिश्रीभावम्० (वृ)।

[8] गाम० (चू); ग्रामासन्ने वा (वृ)।

[9] आयतणाणि (घ, वृ)।

[10] × (अ, क, घ, च, छ)।

[11] ०धारेज्ज (अ)।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयरं[1] संखडिं सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ[2] उस्सुय-भूयेणं अप्पाणेणं।

धुवा संखडी। णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं[3] एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा॥

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा[4], •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा[5], •णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा, संखडी सिया। तं पि य गामं वा जाव रायहाणिं वा, 'संखडि-पडियाए'[6] णो अभिसंधारेज्जा गमणाए॥

३५. केवली बूया आयाणमेयं—आइण्णावमाणं[7] संखडिं अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वे भवइ, सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे[8] भवइ, अणेसणिज्जें[9] वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अण्णेसिं वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ—तम्हा से संजए णिग्गंथे तहप्पगारं आइण्णोमाणं संखडिं संखडि-पडियाए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए॥

विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—विचिगिच्छ[10]-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए, तहप्पगारं असणं वा[11] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

---

[1] अण्णयरिं (अ, च)।

[2] संप्रधावति (वृ)।

[3] समु° (अ, क, च, छ)।

[4] सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।

[5] सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि।

[6] संखडिं संखडि-पडियाए (ब)।

[7] आइण्णो° (अ, घ, ब)। अशुद्धं।

[8] परिज्जासित° (क); परियासित° (च,छ)।

[9] °णिज्जेण (अ, छ)।

[10] वितिगिच्छ (ब); वितिगिंछ (अ); विचिगिंछ (छ)।

[11] सं० पा०—असणं वा…लाभे।

सव्वभंडगमायाए-पदं

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[1] °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ॥

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडगमायाए बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह[2] पुण एवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं[3] पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं[4] संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा। बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा[5] दूइज्जेज्जा ॥

कुल-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण[6] वा, अंतो वा बहिं[7] वा गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा असणं वा[8] °पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

[एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि[9] ॥]

---

[1] स० पा०— गाहावइकुलं···पविसितुकामे ।

[2] अह यं (घ, छ) ।

[3] °माणं (अ, घ) ।

[4] तिरिच्छ (अ, क, घ, च) ।

[5] × (क, छ, ब); च (अ) ।

[6] ०वंसुट्ठियाणं (घ) ।

[7] बहियं (अ, छ); बाहियं (च); बहिया (घ) ।

[8] सं० पा०—असणं वा···लाभे ।

[9] कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुताध्ययनस्य रचनाक्रमेणासौ युज्यते । उद्देशकान्ते सर्वत्र एतस्य दर्शनात् ।

चउत्थो उद्देसो

संखडि-पदं

४२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[1] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा--मंसादियं[2] वा, मच्छादियं[3] वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं[4] वा, आहेणं[5] वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं[6] वा हीरमाणं पेहाए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगा, बहवे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता उवागमिस्संति, तत्थाइण्णावित्ती[7]। णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[8]-धम्माणुओगचिंताए। सेवं[9] णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए ॥

४३. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा हीरमाणं पेहाए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा[10] °अप्पपाणा अप्पबीया अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगा, णो तत्थ[11] बहवे समण-माहण[12]-°अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता°उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती। पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[13]-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-सखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए ॥

खीरिणी-गावी-पदं

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[14] °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—खीरिणीओ[15] गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए, असणं

---

[1] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।

[2] मंस° (घ)।

[3] मज्जा° (घ, ब)।

[4] मज्ज° (घ)।

[5] अहेणं (घ, ब)।

[6] समीलं (च, ब)।

[7] अन्नाइण्णा° (क, च); अच्चाइण्णा° (चू)।

[8] °पेहाए (क, च, ब); पेहा (घ)।

[9] स एवं (क, च); से एवं (अ, घ)।

[10] सं० पा०—अप्पंडा जाव संताणगा।

[11] जत्थ (अ, क, च, छ, ब)।

[12] सं० पा०—समण-माहण जाव उवागमिस्संति।

[13] °पेहाए (क, ब); पेहा (च)।

[14] सं० पा०—गाहावइ-कुलं जाव पविसितुकामे।

[15] खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, ब)।

वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवसंखडिज्जमाणं[1] पेहाए, पुरा अप्पजूहिए,[2] सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा । से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।।

४५. अह पुण एवं जाणेज्जा - खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए, पुरा पजूहिए, से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

माइट्ठाण-पदं

४६. भिक्खागा णामेगे[3] एवमाहंसु—'समाणे वा, वसमाणे'[4] वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे—"खुड्डाए खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए, णो महालए, से हंता ! भयंतारो ! बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए[5] वयह ।"

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा परिवसंति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा । तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा, पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अवि य इत्थ लभिस्सामि—पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, णवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं[6] वा, फाणियं वा, 'पूयं वा'[7], सिहरिणिं वा, तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय संमज्जिय, तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा । माइट्ठाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा ।।

४७. से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरेतरेहिं[8] कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।।

४८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[9], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ।।°

---

[1] उवक्खडि° (अ, क, घ, छ, ब, चू) ।

[2] अप्पमूहितो (क); अप्पयूहिए (घ); अप्पबूहिए (छ) ।

[3] °नाम मेगे (ब) ।

[4] समाणा वा वसमाणा (च) ।

[5] °पडियाए (घ, ब) ।

[6] सकुलिं (घ, छ); सक्कुलिं (क्व) ।

[7] × (घ, छ, वृ) ।

[8] तत्थियराइयरेहिं (घ, ब) ।

[9] सं० पा०—सामग्गियं…।

पंचमो उद्देसो

४९. से भिक्खू वा[1] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अग्ग-पिंडं[2] उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणाइ[3] वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थण्णे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमगा खद्धं-खद्धं उवसंकमंति—से हंता अहमवि खद्धं[4] उवसंकमामि। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ॥

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५०. से भिक्खू वा[5] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि[6] वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

५१. केवली बूया आयाणमेयं—से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'[7], पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'[8], पवडमाणे वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिंघाणेण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा उवलित्ते सिया। तह्प्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीव-पइट्ठिए सअंडे सपाणे[9] °सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा °संताणए णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा, 'णो णिल्लिहेज्ज वा'[10], णो[11] उव्वलेज्ज वा, णो उवट्टेज्ज वा, णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्करं वा जाइज्जा, जाइत्ता से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि

---

[1] सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।

[2] अग्रपिण्डो—निष्पन्नस्य शाल्योदनादेराहारस्य देवताद्यार्थं स्तोकस्तोकोद्धारस्तमुक्षिप्यमाणं दृष्ट्वा (वृ)।

[3] असणाइ (क, ब); असिणेइ (छ)।

[4] खद्धं खद्धं (छ, ब)।

[5] सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।

[6] पोगाराणि (अ); पोग्गलाणि (ब)।

[7] × (अ, क, घ, च, ब)।

[8] × (अ, क, घ, च, ब)।

[9] सं० पा०—सपाणे जाव संताणए।

[10] × (छ)।

[11] × (अ, क, घ, च, ब) सर्वत्र।

वा[1], •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

वियाल-परक्कम-पदं

५२. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा[3]—गोणं वियालं पडिपहे[4] पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं[5], सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोलसुणयं, कोकंतियं, चित्ताचिल्लडयं—वियालं[6] पडिपहे पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५३. से भिक्खू वा[7] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी[8] वा, भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा परियावज्जेज्जा—सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

कंटक-बोंदिया-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं कंटक-बोंदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।।

अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पदं

५५. से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

---

[1] सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि ।
[2] सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे ।
[3] यथात्र किञ्चिद्‌गवादिकमास्त इति (वृ) ।
[4] पडिपहं (अ, क, च) ।
[5] हत्थी (अ, क, च, छ) ।
[6] वियालं—दृप्तम् (वृ) ।
[7] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
[8] घसा (ब) ।
[9] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा[1]—समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ।।

५६. 'केवली बूया आयाणमेयं -पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा'[2] । से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।।

परिभायण-संभुंजण-पदं

५७. से से[3] परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा, सेयं[4] वदेज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा सव्वजणाए निसिट्ठे, तं भुंजह वा[5] णं परिभाएह वा णं । तं चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अवियाइं एवं मम मेव सिया । एवं[6] माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा । से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भें असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सव्वजणाए णिसिट्ठे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं । 'से णेवं'[7] वदंतं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! तुमं चेव णं परिभाएहि । से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसियं-रसियं मणुण्णं-मणुण्णं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं,[8] से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसममेव परिभाएज्जा । से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! मा णं तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा, पाहामो वा । से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खद्धं खद्धं डायं डायं ऊसढं ऊसढं रसियं रसियं मणुण्णं मणुण्णं णिद्धं णिद्धं लुक्खं-लुक्खं, से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसममेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा ।।

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८. से भिक्खू वा[9] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहिं

---

१. यथात्र गृहे श्रमणादिः कश्चित्प्रविष्टः (वृ) ।

२. × (अ, क, छ, वृ) ।

३. × (घ) ।

४. से एव (घ) ।

५. व (अ, ब) ।

६. × (अ, घ, च) ।

७. एवं (घ); अथैनं साधुमेवम् (वृ) ।

८. न गृण्हीयादिति (वृ) ।

९- सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

वा पुव्वपविट्ठं पेहाए णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।।

५९. अह पुणेवं जाणेज्जा—**पडिसेहिए व[1] दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए।** संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ।।

६०. एयं[2] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[3], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि° ।।

छट्ठो उद्देसो

भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं

६१. से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—रसेसिणो बहवे पाणा[5], घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए, तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं

६२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—नो गाहावइ-कुलस्स 'दुवार-साहं'[7] अवलंबिय-अवलंबिय चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डुणमत्ताए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा। णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधिं वा, दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय[8]-उक्खलुंपिय जाएज्जा। णो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा। 'णो व णं'[9] फरुसं वएज्जा ।।

---

[1] वा (छ)।

[2] एवं (अ, क, छ, वृ)।

[3] सं० पा०—सामग्गियं……।

[4] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

[5] ताऽव (वृ)।

[6] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।

[7] दुवारसामग्गियं (अ); दुवारवाहं (क, च, चू); वारसाहं (घ)।

[8] चाउगुलंपिय २(अ); उक्खलंपिय २(क, च); उक्खुलंबिय २ (घ, ब)।

[9] णो चेव णं (अ); णो वयणं (च, छ, ब)।

पुरेकम्म-आदि-पदं

६३. अह तत्थ कंचि[1] भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइं[2] वा[3], °गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा,° कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं भोयणजायं ?

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा– आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पहोएहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं[4] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

६४. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण[5]। तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[6] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

६५. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण[7]। °तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा[8] ॥

६६. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण। तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा ॥

६७. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससरक्खेण, मट्टिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

६८. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो मट्टिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

---

[1] किंचि (क, घ, छ)।

[2] गाहावइयं (च, छ)।

[3] सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं।

[4] सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो।

[5] अतः ८१ सूत्रपर्यन्तं 'देज्जा' इति क्रियापदमध्याहार्यम्।

[6] सं० पा०–अफासुयं जाव णो।

[7] सं० पा०—ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण।

[8] अतः ८० सूत्रपर्यन्तं पूर्णपाठार्थं १।६४ सूत्रं द्रष्टव्यम्।

६९. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७०. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७१. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो हिंगुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७२. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७३. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण लोण-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७४. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण गेरुय-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७५. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो गेरुय-संसट्ठेण, वण्णिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण वण्णिया-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७६. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो वण्णिया-संसट्ठेण, सेडिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सेडिया[1]-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७७. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो सेडिया-संसट्ठेण, सोरट्ठिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सोरट्ठिया-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७८. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो सोरट्ठिया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण। तहप्पगारेण पिट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

७९. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो पिट्ठ-संसट्ठेण, कुक्कस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण कुक्कस-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

८०. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो कुक्कस-संसट्ठेण, उक्कुट्ठ[2]-संसट्ठेण। तहप्पगारेण उक्कुट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा° ॥

८१. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो 'असंसट्ठे, संसट्ठे'[3]। तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा फासुयं[4] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा[5]॥

---

[1] सेढिय (क)।

[2] उक्किट्ठ (क)।

[3] पूर्वपरिपाट्या एतत् पदद्वयमपि तृतीयान्तं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु प्रथमान्तं लिखितमस्ति, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्यातमस्ति, तेन यथा लब्ध एव पाठः स्वीकृतः।

[4] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।

[5] अह पुणेवं जाणेज्जा असंसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा 'छ' प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति।

Ganesh Varṇi Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं

८२. से भिक्खू वा[1] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा, बहुरयं वा[2], °भज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउलपलंबं वा, अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए[3], °चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडासंताणाए कोट्टेंसु वा, कोट्टिंति वा, कोट्टिस्संति वा, उप्पणिंसु[4] वा, उप्पणिंति वा, उप्पणिस्संति वा—तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा—अफासुयं[5] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

लोण-पदं

८३. से भिक्खू वा[6] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं, अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए[7], °चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणाए भिंदिंसु वा, भिंदंति वा, भिंदिस्संति वा, रुचिंसु वा, रुचिंति वा, रुचिस्संति वा—बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं—अफासुयं[8] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४. से भिक्खू वा[9] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा - असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणि-णिक्खित्तं, तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[10] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८५. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए[11] भिक्खु-पडियाए उस्सिंचमाणे वा, निस्सिंचमाणे वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा, उव्वत्तमाणे[12] वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा…सेज्ज ।

२. सं० पा०—बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं ।

३. सं० पा०—सिलाए जाव मक्कडा ।

४. उप्फ° (अ, क, च) ।

५. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

६. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

७. सं० पा०—सिलाए जाव सताणाए ।

८. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

९. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

१०. सं० पा०—अफासुयं लाभे ।

११. असंजए (छ) ।

१२. ओयत्तेमाणे (अ, क); पवत्तेमाणे (छ) ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे, तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणि-णिक्खित्तं—अफासुयं अणेसणिज्जं[१] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

८६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ।।

सत्तमो उद्देसो

मालोहड-पदं

८७. से भिक्खू वा[२] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा खंधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खित्ते सिया—तहप्पगारं मालोहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[३] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

८८. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, अवहट्टु उस्सविय आरुहेज्जा[४] । से तत्थ दुरुहमाणे[५] पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं[६] वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा[७] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

८९. से भिक्खू वा[८] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा कोट्ठियाओ वा, कोलज्जाओ[९] वा, अस्संजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय,

---

१. स० पा०—अणेसणिज्जं लाभे ।

२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

३. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

४. द्रुहेज्जा (अ, ब); दूहिज्जा (घ); दुरुहेज्जा (च) ।

५. दूहमाणे (घ) ।

६. बाहं (अ, क, घ, ब) ।

७. सं० पा०—असणं वा ४ लाभे ।

८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

९. कोलेज्जाओ (क, च); कोलिज्जाओ (घ) ।

ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मालोहडं[1] ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

मट्टिओलित्त-पदं

९०. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मट्टिओलित्तं[3]—तहप्पगारं असणं वा[4] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे °लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

९१. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खू-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा, तह तेउ-वाउ-वणस्सइ-तसकायं समारंभेज्जा, पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[5] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा[6] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°प्पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा[8] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं°—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

९३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[10] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु° पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

---

[1] माला° (छ) ।

[2] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

[3] °ओवलित्तं (घ, छ) ।

[4] सं० पा०—असणं वा ४ जाव लाभे ।

[5] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं ।

[6] सं० पा०—असणं वा ४ लाभे ।

[7] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[8] सं० पा०—असणं वा ४ अफासुयं ।

[9] सं० पा०— अफासुयं जाव णो ।

[10] सं० पा०—भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव । एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे ।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

९५. केवली बूया आयाणमेयं—अस्सजए भिक्खु-पडियाए अगणिं ओसक्किय[१], णिस्सक्किय[२], ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[३] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे, जं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[४] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अच्चुसिणं, अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण[५] वा, विहुवणेण[६] वा, तालियंटेण वा, 'पत्तेण वा'[७], साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा मा एयं तुमं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अच्चुसिणं सूवेण वा, विहुवणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमाहि वा, वीयाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वदंतस्स परो सूवेण वा जाव फुमित्ता वा, वीइत्ता वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[८] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं

९७. से भिक्खू वा[९] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे °समाणे

---

[१] उस्सक्किय (क, घ, च); उस्सिक्किय (छ); ओसिक्किय (अ) ।

[२] णिस्सिक्किय (अ, छ, ब) ।

[३] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव णो ।

[४] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[५] सुप्पेण (अ, च) ;

[६] विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।

[७] × (घ, वृ) ।

[८] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

[९] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं —अफासुयं अणेसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

तसकाय-पइट्ठिय-पदं

९८. [2]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठिय—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।।

पाणग-जाय-पदं

९९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[4] जाणेज्जा, तं जहा—उस्सेइमं वा, संसेइमं वा, चाउलोदगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं अहुणा-धोयं, अणंबिलं, अव्वोक्कंतं[5], अपरिणयं, अविद्धत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

१००. अह पुण एव जाणेज्जा—चिराधोयं, अंबिलं, वुक्कंतं[6], परिणयं, विद्धत्थं—फासुयं[7] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

१०१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[9] जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्ध-वियडं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणी ! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पाणग-जायं ?

से सेवं वदंतं[10] परो वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! तुमं चेवेदं पाणग-जायं पडिग्गहेण[11] वा उस्सिंचियाणं, ओयत्तियाणं गिण्हाहि—तहप्पगारं पाणग-जायं सयं वा[12] गिण्हेज्जा, परो वा से देज्जा--फासुयं[13] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—अणेसणिज्जं लाभे ।

[2] सं० पा०—एवं तसकाए वि ।

[3] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[4] पाणगं (घ, ब) ।

[5] अवुक्कंतं (घ); अवोक्कंतं (छ) ।

[6] वक्कंतं (छ) ।

[7] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।

[8] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[9] पाणगं (क, च) ।

[10] वयंतस्स (घ) ।

[11] पडिग्गहेण वा मत्तएण वा(च);पडिगाहेण(छ)

[12] वा णं (अ) ।

[13] सं० पा०—फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा ।

१०२. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[2] जाणेज्जा— अणंतरहियाए पुढवीए[3], •ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंत्ताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए ओद्धट्टु[4] निक्खित्ते सिया। असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा, सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं पाणग-जायं—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१०३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,[6] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि° ॥

अट्ठमो उद्देसो

१०४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ठ-पाणग वा, मातुलिंग[8]-पाणगं वा, मुद्दिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए[9] भिक्खु-पडियाए छब्बेण[10] वा, दूसेण[11] वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण[12] आहट्टु दलएज्जा— तहप्पगारं[13] पाणग-जायं— अफासुयं[14] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

गंध-आघायण-पदं

१०५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[15] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
२. पाणगं (चू, वृ, च)।
३. सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए।
४. ओहट्ट (क)।
५. सं० पा०—अफासुय···लाभे।
६. सं० पा०—सामग्गियं।
७. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८. मातुलुंग (अ, छ); मातुलेंग (क); मातुलंग (च)।
९. असंजए (क, च)।
१०. छप्पेण (अ, च); छट्ठेण (घ)।
११. दूयेण (छ)।
१२. परिसाइयाण (क,छ,ब); परिसावियाण(घ)।
१३. अहप्पगारं (घ)।
१४. सं० पा०—अफासुयं···लाभे।
१५. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।

समाणे से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा अग्घाय[१]-अग्घाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंधमाघाएज्जा ॥

सालुय-आदि-पदं

१०६. से भिक्खू वा[२] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[३] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[४] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिप्पलिं[५] वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिरियं वा, मिरिय-चुण्णं वा, सिंगबेरं वा, सिंगबेर-चुण्णं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[६] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

पलंब-जाय-पदं

१०८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[७] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पलंब[८]-जायं जाणेज्जा, तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा, झिज्झिरि[९]-पलंबं वा, सुरभि[१०]-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं[११] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पवाल-जाय-पदं

१०९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[१२] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा, तं जहा—आसोत्थ[१३]-पवालं वा,

---

[१] आघाय (अ, क, च) ।

[२] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

[३] सं० पा०—अफासुयं जाव लाभे ।

[४] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[५] पिप्पिलिं (छ) ।

[६] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

[७] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[८] पलंबग (ब) ।

[९] झिल्लिर (अ); झिज्झिर (घ, छ) ।

[१०] सुरघु (छ) ।

[११] सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव लाभे ।

[१२] सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।

[१३] आसोट्ठ (क, घ); आसत्थ (छ); आसट्ठ (वृ) ।

णग्गोह[1]-पवालं वा, पिलुंखु-पवालं वा, णीपूर[2]-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं[3] •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

सरडुय-जाय-पदं

११०. से भिक्खू वा[4] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा, त जहा—अंब-सरडुयं[5] वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल[6]-सरडुयं वा[7]—अण्णयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[8] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

मंथु-जाय-पदं

१११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण मंथु-जाय जाणेज्जा, तं जहा उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु[10]-मंथुं वा, आसोत्थ-मंथुं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुरुक्कं साणुबीयं—अफासुयं[11] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

आमडाग-आदि-पदं

११२. से भिक्खू वा[12] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—आमडागं वा, पूइपिण्णागं वा, महुं वा, 'मज्जं वा'[13], सप्पि वा, खोलं वा पुराणगं । एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा संवुड्ढा, एत्थ पाणा अवुक्कंता[14], एत्थ पाणा अपरिणया, एत्थ पाणा अविद्धत्था[15]—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३. से भिक्खू वा[16] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

---

१. णिग्गोह (छ) ।
२. णीयूर (अ, घ, छ, ब) ।
३. स० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो ।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
५. अबद्धास्थिफलम् (वृ) ।
६. फिल्ल (क); पिल्ल (घ) ।
७. वा पिप्पलि (च) ।
८. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
९. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
१०. पिलक्खु (क, च) ।
११. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
१२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
१३. × (चू) ।
१४. वक्कंता (क, छ); ऽवक्कंता (च); वुक्कंता (ब) ।
१५. णो विद्धत्था (घ, छ) ।
१६. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुगं वा, सिंघाडगं वा, पूतिआलुगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

उप्पल-आदि-पदं

११४. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-मुणालं वा, पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं[3] वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं[4] •आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

अग्गबीय-आदि-पदं

११५. से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अग्ग-बीयाणि वा, मूल-बीयाणि वा, खंध-बीयाणि वा, पोर-बीयाणि वा, अग्ग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंध-जायाणि वा, पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ[6] तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा, णालिएरि[7]-मत्थएण वा, खज्जूरि[8]-मत्थएण वा, ताल-मत्थएण वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[9]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

उच्छु-पदं

११६. से भिक्खू वा[10] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उच्छुं वा काणगं[11] अंगारियं संमिस्सं विगदूमियं[12], वेत्तग्गं[13] वा, कंदलीऊसुयं[14] वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[15]—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।

[2] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

[3] °विभागं (क, च) ।

[4] सं० पा०—तहप्पगारं जाव णो ।

[5] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

[6] अण्णत्थ (चू) ।

[7] णालिएर (अ, च, ब) ।

[8] खज्जूर (ब) ।

[9] सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।

[10] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

[11] काण (घ, ब) ।

[12] वइदूमिय (अ); विगदूसिय (घ, ब); वियिदूमियं (छ) ।

[13] वेत्तगं (अ); वित्तज्जगं (घ); वेत्तगागं (छ) ।

[14] °उस्सुगं (चू); °ऊसिगं (छ); चूर्णौ अन्येपि शब्दा दृश्यन्ते—कलतो सिम्बाकलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चेव, एवं मुग्ग मासाणावि ।

[15] सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।

लसुण-पदं

११७. से भिक्खू वा[१] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा, लसुण-चोयगं[२] वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[३]—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

अत्थिय-आदि-पदं

११८. से भिक्खू वा[४] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अत्थियं[५] वा कुंभिपक्कं, तिंदुगं वा, वेलुयं[६] वा, कासवणालियं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[७]—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

कण-आदि-पदं

११९. से भिक्खू वा[८] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—कणं वा, कण-कुंडगं वा, कण-पूयलियं[९] वा, चाउलं वा, चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[१०]—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१२०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[११], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि° ।।

नवमो उद्देसो

पच्छाकम्म-पदं

१२१. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—गाहावई वा,[१२] °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
२. चोयं (क, घ, च, छ, ब) ।
३. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
५. अच्छियं (च) ।
६. पेल्लुगं (क); पलुगं (च) ।
७. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
९. पूयलि (क, च छ, ब) ।
१०. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
११. सं० पा०—सामग्गियं ।
१२. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।

सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे[1] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायत्तए[2] वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए[3] णिट्ठियं, तं जहा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं[4] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं

१२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, 'समाणे वा, वसमाणे वा'[5], गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा[6], •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा । इमंसि खलु गामंसि वा,[7] •णगरंसि वा, खेडंसि वा कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा,° रायहाणिंसि वा—संतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया[8] वा, पच्छासंथुया वा परिवसंति, तं जहा—गाहावई वा,[9] •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा । तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

१२३. केवली बूया आयाणमेयं—पुरा पेहाए 'तस्स परो अट्ठाए'[10] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा । से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावाय-मसंलोए चिट्ठेज्जा । से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, अणुपविसेत्ता तत्थियरेयरेहिं

---

१. असणं (क) ।

२. पात्तए (क); पायए (च); पाएत्तए (घ) ।

३. सयट्ठाए (अ, क, च) ।

४. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव लाभे ।

५. समाणे वसमाणे वा (क, च, ब); समाणे (घ, छ) ।

६. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं ।

७. सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि ।

८. पुव्व° (ब) ।

९. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।

१०. अस्य स्थाने १।५६ सूत्रे 'तस्सट्ठाए परो' इत्येवं रूपः पाठः ।

कुलेहिं सामुदाणियं,[1] एसियं, वेसियं, पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारेज्जा । सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा । तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा, पायए वा । मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि । से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेत्ता आहट्टु दलएज्जा । तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[2] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

गिलाण-पदं

१२४. से भिक्खू वा[3] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं[4] पेहाए,[5] तेल्लपूयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंकमित्तु ओभासेज्जा[6], णन्नत्थ गिलाणाए[7] ।।

माइट्‌ठाण-पदं

१२५. से भिक्खू वा[8] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-सुब्भि भोच्चा दुब्भि-दुब्भि परिट्ठवेइ । माइट्ठाणं[9] संफासे, णो एवं करेज्जा ।

सुब्भि वा दुब्भि वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ।।

१२६. से भिक्खू वा[10] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता पुप्फं-पुप्फं[11] आविइत्ता[12] कसायं-कसायं परिट्ठवेइ । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा । पुप्फं पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा सव्वमेयं भुंजेज्जा, णो किंचि वि परिट्ठवेज्जा ।।

१२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता[13]

---

१. समुदा° (क, घ, च, छ, ब) ।

२. सं° पा°—अफासुयं लाभे ।

३. सं° पा°—भिक्खू वा जाव समाणे ।

४. भिज्जमाणं (अ); भज्जमानमिति (वृ) ।

५. पेहाए सक्कुलिं वा (चू) ।

६. याचेत (वृ) ।

७. गिलाणीए (अ, क, च); गिलाणणीसाए(छ) ।

८. सं° पा°—भिक्खू वा जाव समाणे ।

९. साति° (ब) ।

१०. सं° पा°—भिक्खू वा जाव समाणे ।

११. वर्णगन्धोपेतं पुष्पं तद् विपरीतं कषायम्(वृ) ।

१२. आवेइत्ता (च); आवीइत्ता (छ) ।

१३. पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, ब) ।

साहम्मिया तत्थ वसति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया। तेसिं अणालोइया[1] अणामंतिया[2] परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसंतो! समणा! इमे मे असणे[3] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं[4]।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! आहारमेयं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा जावइयं-जावइयं परिसडइ[5], तावइयं-तावइयं भोक्खामो वा, पाहामो वा। सव्वमेयं परिसडइ[6], सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा॥

बहिया नीहड-पदं

१२८. से भिक्खू वा[7] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परं समुद्दिस्स बहिया णीहडं, जं[8] परेहिं असमणुण्णायं अणिसिट्ठं—अफासुयं[9] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

जं[10] परेहिं समणुण्णायं सम्मं[11] णिसिट्ठं—फासुयं[12] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा॥

१२९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[13], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि°॥

दसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३०. से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलाति[14]। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता[15] वएज्जा[16]—आउसंतो!

---

१. °इय (च, छ)।

२. °मंते (घ)।

३. असणं (क)।

४. व णं (अ, ब)।

५. °सरइ (घ, च, छ)।

६. °सरइ (घ, च)।

७. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।

८. तं (अ, क, घ, च)।

९. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

१०. तं (अ, क, घ, च)।

११. सम (अ, क, घ, ब)।

१२. सं० पा०—फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा।

१३. सं० पा०—सामग्गियं।

१४. दलयति (अ)।

१५. गच्छेत्ता पुव्वामेव (अ, छ, ब)।

१६. आलोएज्जा (ब)।

समणा ! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं जहा—आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा। अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं दाहामि।

'से णेवं'[१] वयंतं परो वएज्जा—कामं खलु आउसो ! अहापज्जत्तं णिसिराहि[२]। जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा। सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा।।

१३१. से एगइओ मणुण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण[३] पलिच्छाएति **मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए।** आयरिए वा[४], °उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा° गणावच्छेइए वा। णो खलु मे कस्सइ किंचि वि दायव्वं सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु—'इमं खलु'[५] इमं खलु त्ति आलोएज्जा, णो किंचि वि णिगूहेज्जा।।

१३२. से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता **भद्दयं-भद्दयं भोच्चा, विवन्नं विरसमाहरइ।** माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा।।

बहुउज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३. से भिक्खू वा[६] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-मेरुगं[७] वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं[८] वा, सिंबलिं[९] वा, सिंबलि-थालगं[१०] वा। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि, **अप्पे सिया[११] भोयणजाए, बहुउज्झिय-धम्मिए।** तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा जाव सिंबलि-थालगं वा—अफासुयं[१२] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।।

---

१. सेवं (घ)।

२. णिसराहि (अ, छ)।

३. भोयणे जाईण (घ)।

४. सं० पा०—आयरिए वा जाव गणावच्छेइए।

५. × (क, ध, छ, ब)।

६. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।

७. °मेरगं (अ, ब)।

८. आचाराङ्गस्य १।१० वृत्तौ—'डालगं' ति शाखैकदेशः ! ७।२ वृत्तौ—'डालगं' ति आम्रश्लक्ष्णखण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्य षोडशोद्देशे डगलं' पाठो लभ्यते। तद् भाष्यचूर्णौ डगलस्यार्थो विहितः। भाष्ये यथा—'डगलं' चक्कलिछेदो (५४११); चूर्णौ यथा—चक्कलिछेदे छिण्णं डगलं भणति (भा० ४ पृष्ठ ६६)। आचारांगे लिपिदोषतः परिवर्तनमिदं जातमिति संभाव्यते।

९. संबलिं (अ, क, च, छ); संपलिं (ब)।

१०. थालियं (अ)।

११. × (क, घ, च, छ)।

१२. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

१३४. से भिक्खू वा[1] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—**बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं**। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि, **अप्पेसिया भोयण-जाए, बहुउज्झियधम्मिए**। तहप्पगारं **बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं**—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१३५. से भिक्खू वा[2] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण[3] उवणिमंतेज्जा—आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए ?

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए, अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहगंसि[4] बहु-अट्ठिय मंसं परिभाएत्ता[5] णिहट्टु दलएज्जा। तहप्पगारं पडिग्गहगं[6] परहत्थसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं[7] °ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो अणहित्ति[8] वएज्जा। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए[9] °अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा °संताणए मंसगं मच्छगं[10]° भोच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय, से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा[11], °अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय°, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा ॥

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६. से भिक्खू वा[12] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया से परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहए बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं

---

[1] सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।

[2] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

[3] मंसेण मच्छेण (अ, ब, छ)।

[4] पडिग्गहंसि (अ)।

[5] परिभोउत्ता (अ); परियाभोएत्ता (क, च)।

[6] °ग्गहणं (अ)।

[7] सं० पा०—अणेसणिज्जं लाभे संते जाव णो।

[8] अणिहित्ति (छ)।

[9] सं० पा०—अप्पंडए जाव संताणए।

[10] × (घ)।

[11] सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय।

[12] सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा, से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया दिन्नं ? उदाहु अजाणया'[2] ?

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया। कामं[3] खलु आउसो ! इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं परिभाएह च णं।

तं परेहिं समणुण्णायं समणुसिट्ठं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा। जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा। साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुपदातव्वं। सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावण्णे कीरति, तहेव कायव्वं सिया।।

१३७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[4], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि°।।

एगारसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३८. भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'[5] मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता "से[6] भिक्खू गिलाइ, से हंदह[7] णं तस्साहरह। से य भिक्खू णो भुंजेज्जा। तुमं चेव णं भुंजेज्जासि।"

से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय आलोएज्जा, तं जहा—इमे पिंडे, इमे[8] लोए[9], इमे तित्तए, इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। तहाठियं[10] आलोएज्जा, जहाठियं[11] गिलाणस्स सदति—तं तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा।।

---

[1] सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो।
[2] अजाणया दिन्नं (घ)।
[3] इमं (अ)।
[4] सं० पा०—सामग्गियं।
[5] दूइज्जमाणे वा (अ); दूइज्जमाणे (च,छ,ब)।
[6] से य (अ)।
[7] गृण्हीत यूयम् (वृ)।
[8] × (क, च, छ)।
[9] लुक्खए (छ)।
[10] तहेव तं (अ, च, छ)।
[11] जहेव तं (अ, च, छ)।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९. भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं [वा ?] दूइज्जमाणे मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता "से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह। से य भिक्खू णो भुंजेज्जा। आहरेज्जासि[१] णं।"

णो खलु मे[२] अंतराए आहरिस्सामि। इच्चेयाइं[३] आयतणाइं उवाइकम्म ॥

सत्त पिंडेसणा सत्त पाणेसणा-पदं

१४०. अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ॥

१४१. तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण[४] वा असणं वा [पाणं वा][५] खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[६] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा पिंडेसणा ॥

१४२. अहावरा दोच्चा पिंडेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते[७]—°तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पिंडेसणा° ॥

१४३. अहावरा तच्चा पिंडेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—गाहावई वा[८], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूवरूवेसु भायण-जाएसु उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—थालंसि वा, पिढरंसि[९] वा, सरगंसि वा, परगंसि वा, वरगंसि वा।

अह पुणेवं जाणेज्जा—असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे[१०] मत्ते। से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए[११] वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा एएणं तुमं असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेण,

---

[१] आहारेज्जासि (अ, घ, छ, ब); आहारेज्जा से (क, च)।

[२] इमे (अ, क, च, छ, ब)।

[३] इच्चेइयाइं (क, छ, ब)।

[४] मत्तएण (अ, छ, ब)।

[५] पिण्डैषणायां 'पाणं वा' इति पाठो नापेक्षितोस्ति। असौ प्रवाहपाती एव बोध्यः। एवमेव पानैषणायामपि 'असणं वा खाइमं वा साइमं वा' इति पाठा नापेक्षिताः सन्ति।

[६] सं० पा०—फासुयं पडिगाहेज्जा।

[७] सं० पा०—मत्ते तहेव दोच्चा पडिमा।

[८] स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

[९] पिढरगंसि (अ, च); पिठरगंसि (घ); पिठरंसि (ब)।

[१०] असंसट्ठे वा (क, च)।

[११] °पडिग्गहिए (छ, ब)।

संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठण मत्तेण, अंसि पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि। तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[१] °ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा॥

१४४. अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा[२], °भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[३] °बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा। अंसि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा[४]—°फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा॥

१४५. अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[५] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे उवहितमेव[६] भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा।

अह पुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे। तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा[७] °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा॥

१४६. अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[८] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° पग्गहियमेव[९] भोयण-जायं जाणेज्जा—जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-परियावन्नं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं[१०] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिंडेसणा॥

१४७. अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[११] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे बहुउज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—जं चण्णे बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा[१२]—°फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—सत्तमा पिंडेसणा। इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ॥

---

१. सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे।

२. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।

३. स० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं।

४. सं० पा०—देज्जा जाव पडिगाहेज्जा।

५. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

६. उग्गहिय° (घ)।

७. सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा।

८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पग्गहिय°।

९. उग्गहिय° (अ,क,च); उग्गहितं पग्गहितं (चू)।

१०. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।

११. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

१२. सं० पा०—देज्जा जाव फासुयं पडिगाहेज्जा।

१४८. अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते[1] ।।

१४९. °अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते ।।

१५०. अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति ।।

१५१. अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा । अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए । तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

१५२. अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे उवहितमेव पाणग-जायं जाणेज्जा ।।

१५३. अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे पग्गहियमेव पाणग-जायं जाणेज्जा ।।

१५४. अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे बहुउज्झिय-धम्मिय पाणग-जायं जाणेज्जा° ।।

१५५. इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ।।

१५६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ।।

---

[1] अतः १५४ सूत्रपर्यन्तं पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं १।१४१-१४७ सूत्राणि । सं० पा०—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तं जहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहेज्जा ।

बीयं अज्झयणं

सेज्जा

पढमो उद्देसो

उवस्सयएसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए[1], अणुपविसित्तए। गामं वा[2], •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा, सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सअंडं[3] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा संताणयं। तहप्पगारे उवस्सए णो 'ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा'[4] ॥

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं[5] •अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं। तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ॥

अस्सिंपडियाए-उवस्सय-पदं

३. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे

---

१. एसित्तए से (अ, ब)।

२. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।

३. सं० पा०—सअडं जाव संताणयं।

४. स्थानं—कायोत्सर्गः, शय्या—संस्तारकः, निषीधिका—स्वाध्यायभूमिः, 'नो चेइज्ज' त्ति नो चेतयेत्—नो कुर्यात् इत्यर्थः (वृ)।

५. सं० पा०—अप्पपाणं जाव संताणगं।

वा[1], °अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा° अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

४. [2]°सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

५. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

६. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा° ।।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स[3] पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं[4] °समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे

---

[1] सं० पा०—अपुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविते; १।१२ सूत्रे 'अपुरिसंतरकडं वा' इति पदानन्तरं 'बहिया णीहडं वा अणीहडं वा' इति पाठो विद्यते, तथापि उपाश्रयप्रकरणे नैष प्राप्तोस्ति, तेन नासौ ग्राह्यः।

[2] सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ।

[3] समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं (घ, च)।

[4] सं० पा०—सत्ताइं जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए।

उवस्सए अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[1], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए[2] वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा । तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[3], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

११. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[4], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसोहियं वा चेतेज्जा ।।

१२. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, [5]°महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय° संथारगं संथारेज्जा[6], बहिया वा णिण्णक्खु[7], तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[8], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[9], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [उवस्सयं ?] जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?][10], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[11],

---

[1] सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए ।

[2] उक्कंपिए (क, घ, च, ब) ।

[3] सं० पा० —अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए ।

[4] सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए ।

[5] सं० पा०—जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं ।

[6] संथारेज्जा (अ, क, घ, च, ब) ।

[7] णिणक्खु (क, छ) ।

[8] सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविते ।

[9] सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए ।

[10] यद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावत्र युज्यते ।

[11] सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव णो ।

°अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते° णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[1], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।।

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[2], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए° णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१७. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[3] °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।।

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तं जहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहिं[4] कारणेहिं ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा । णो तत्थ ऊसढं[5] पगरेज्जा, तं जहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूतिं वा, सोणियं वा, अण्णयरं वा सरीरावयवं ।।

१९. केवली बूया आयाणमेयं—से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे[6] वा पवडमाणे[7] वा हत्थं वा[8], °पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा,° उदरं वा, सीसं वा, अण्णतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[9], °वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ° ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, [10]°एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,°

---

[1] सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा ।

[2] सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव णो ।

[3] सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा ।

[4] गाढा° (क, च, ब); आगाढावगाढेहिं (घ); आगाढादीहिं (छ) ।

[5] 'उत्सृष्टम्' उत्सर्जनं—त्यागमुच्चारादेः (वृ)।

[6] पयले° (क, च, छ) ।

[7] पवडे° (क, च, छ) ।

[8] सं० पा०—हत्थं वा जाव सीसं ।

[9] सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज ।

[10] सं० पा०—पइण्णा जाव जं ।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं। तहप्पगारे सागारिए[1] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२१. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स—अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा[2]। अण्णतरे वा से दुक्खे रोगातंके[3] समुप्पज्जेज्जा। अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा। सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[4] वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा। सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, 'उच्छोलेज्ज वा',[5] पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा। दारुणा वा दारुपरिणामं[6] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२२. आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स[7]—इह खलु गाहावई वा[8], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, बंधंति[9] वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति[10] वा।

अह भिक्खू णं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अण्णमण्णं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु वा मा वा बंधंतु, रुंभंतु वा मा वा रुंभंतु, उद्दवेंतु वा मा वा उद्दवेंतु।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[11], °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°

---

[1] साकारिए (छ, ब)।

[2] उप्पा° (क, च, ब)।

[3] रोगे आयंके (घ)।

[4] लोद्देण (अ, ब)।

[5] उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (ब)।

[6] दारुणं परि° (अ, च); दारुण° (क)।

[7] वसमाणस्स (ब)।

[8] सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

[9] पहंति (क); × (च, ब); वहंति (अ)।

[10] उद्दंति वा उद्दवेंति (घ); उद्दवंति वा उद्दवेंति (छ)।

[11] सं० पा०—पइण्णा जाव जं।

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२३. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स[१]—इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा। अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्झावेंतु वा मा वा विज्झावेंतु।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[२] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२४. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'[३], 'सुवण्णे वा'[४], कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि[५] वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं बूया, इति वा णं मणं साएज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[६] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२५. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा, गाहावइ-कम्मकरीओ वा। तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो[७] °सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्तं खलु सा

---

[१] वस (अ, घ, च, छ, ब)।
[२] स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
[३] × (अ)।
[४] × (छ)।
[५] तिसराणि (च)।
[६] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज।
[७] सं० पा०—भगवंतो जाव उवरया।

लभेज्जा—ओयस्सि तेयस्सि वच्चस्सि जसस्सि संपराइयं[1] आलोयण-दरिसणिज्जं। एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सड्ढी[2] तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टावेज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा॥

२६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[4], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि°॥

बीओ उद्देसो

२७. गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवंति, भिक्खू य असिणाणए[5] मोयसमायारे, 'से तग्गंधे'[6] दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं। तं भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा'[7]।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[8] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[9], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

२८. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स[10] अप्पणो सअट्ठाए विरूवरूवे भोयण-जाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा, वियट्टित्तए[11] वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[12] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[13], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

२९. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्न-पुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदेज्ज वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,

---

[1] संपहारियं (अ)।

[2] सहियं (अ); सहितं (छ)।

[3] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।

[4] सं० पा०—सामग्गियं।

[5] असिणाणाए (अ)।

[6] से से गंधे (अ, क, घ, च, छ, ब, चू)।

[7] करेज्जा (अ); करेज्जा वा (छ, ब)।

[8] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।

[9] सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।

[10] तत्रैवाहारगृद्धया विवर्त्तितुम् आसितुमाकाङ्क्षेत् (वृ)।

[11] तृतीयार्थे षष्ठी (वृ)।

[12] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।

[13] सं० पा०—ठाणं वा चेतेज्जा।

दारुणा वा दारुपरिणामं[1] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा । तत्थ भिक्खू अभिकंखेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, वियट्टित्तए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[2] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[3], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा, तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा । तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदत्तिए—अयं तेण पविसइ वा णो वा पविसइ, उवल्लियइ[4] वा णो वा उवल्लियइ, अइपतति[5] वा णो वा अइपतति, वदति वा णो वा वदति, तेण हडं अण्णेण हडं, तस्स हडं अण्णस्स हडं, अयं तेणे अयं उवचरए, अयं हंता अयं एत्थमकासी तं तवस्सिं भिक्खुं[6] अतेणं तेणं ति संकति ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[7] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे[8] •सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे[9] •अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए, तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

वज्जियव्व-उवस्सय-पदं

३३. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहिं ओवयमाणेहिं णोवएज्जा[10] ॥

---

[1] दारुण° (घ, च) ।

[2] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।

[3] सं० पा०—ठाणं वा चेतेज्जा ।

[4] उव्वलियति (च); उवलियत्ति (घ)

[5] आवयति (घ, च) ।

[6] भिक्खुयं (अ, छ) ।

[7] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा ।

[8] चूर्णावत्र बहुवचनं लभ्यते—'संडेहिं'; सं० पा०—सअंडे जाव संताणए ।

[9] चूर्णावत्र बहुवचनं लभ्यते—'अप्पंडेहिं' सं० पा०—अप्पडेहिं जाव चेतेज्जा ।

[10] णोयवएज्जा (अ); णो उवएज्जा (क,घ,च) ।

कालाइक्कंत-किरिया-पदं

३४. से आगंतारेसु वा[1], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता[2] तत्थेव भुज्जो[3] संवसंति, अयमाउसो ! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ॥

उवट्ठाण-किरिया-पदं

३५. से आगंतारेसु वा[4], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण[5] अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति, अयमाउसो[6] ! उवट्ठाण-किरिया वि[7] भवइ ॥

अभिक्कंत-किरिया-पदं

३६. इह खलु पाईण वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा[8], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ[9]।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ[10] वा पवाओ[11] वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहाकम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध[12]-कम्मंताणि वा, वक्क[13]-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि

---

[1] सं० पा०—आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु।

[2] °तिणित्ता (अ, क, घ, च, ब)।

[3] भुज्जो-भुज्जो (घ)।

[4] सं० पा०—आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु।

[5] दुगुणेण (अ, क, घ, च, ब)। स्वीकृतः पाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते।

[6] अयमाउसो ! इतरा (अ, च, ब)।

[7] या वि (अ, ब)।

[8] सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

[9] साधूनामेवंभूतः प्रतिश्रयः कल्पते नैवंभूतः, इत्येवं न ज्ञातं भवतीत्यर्थः, प्रतिश्रयदानफलं च स्वर्गादिकं तैः कुतश्चिदवगतम् (वृ)।

[10] सहाणि (क, घ, छ, ब)।

[11] पवाणि (अ, क, घ, छ, ब)।

[12] वत्थ° (छ)।

[13] वल्कज° (वृ)।

वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा[1], गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर[2]-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा[3], भवणगिहाणि वा ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं ओवयमाणेहिं ओवयति, अयमाउसो ! अभिक्कंत-किरिया वि[4] भवइ ॥

अणभिक्कंत-किरिया-पदं

३७. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति, अयमाउसो ! अणभिक्कंत-किरिया वि भवति ॥

वज्ज-किरिया-पदं

३८. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता[5] °वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसिं भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए ।

सेज्जाणिमाणि[6] अम्हं अप्पणो सअट्ठाए[7] चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । सव्वाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सअट्ठाए चेतिस्सामो, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[8] पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ॥

---

[1] वा सुण्णागारकम्मंताणि वा (अ) ।

[2] कंदरा (अ) ।

[3] वा सयण-गिहाणि वा (छ) ।

[4] या वि (अ, क, घ, च, ब) ।

[5] सं० पा०—सीलमंता जाव उवरया ।

[6] °इमाणि (च) ।

[7] अट्ठाए (अ, छ, ब) ।

[8] इतरातिरेहिं (क, घ); इयरातरेहिं (अ, च) ।

महावज्ज-किरिया-पदं

३९. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा भवणगिहाणि वा। जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[1] पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो! महावज्ज-किरिया वि भवइ॥

सावज्ज-किरिया-पदं

४०. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ॥

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। महया पुढविकाय-समारंभेणं, [2]°महया आउकाय-समारंभेणं, महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं, महया वणस्सइकाय-समारंभेणं°, महया तसकाय-समारंभेणं, महया संरंभेणं, महया समारंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, तं जहा—छायणओ लेवणओ संथार-दुवार-पिहणओ। सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ, अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव

---

[1] इतरातरेहिं (अ); इयराइयरेहिं (घ)।

[2] सं० पा०—एवं आउतेउवाउवणस्सइ।

भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ॥

अप्पसावज्ज-किरिया-पदं

४२. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं अप्पणो सअट्ठाए तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । महया पुढविकाय-समारंभेणं[1] °महया आउकाय-समारंभेणं, महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं, महया वणस्सइकाय-समारंभेणं, महया तसकाय-समारंभेणं, महया संरंभेणं, महया समारंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, तं जहा—छायणओ लेवणओ संथार-दुवार-पिहणओ । सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ° अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्ज-किरिया वि भवइ ॥

४३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि° ॥

तइओ उद्देसो

उवस्सय-छलण-पदं

४४. सिय[3] णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तं जहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-दुवार-पिहणओ[4], पिंडवाएसणाओ ।

से[5] भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-संथार-पिंडवाएसणा-रए । संति भिक्खुणो एवमक्खाइणो उज्जुया[6] णियाग-पडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया ।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइय-

---

[1] सं० पा०—समारंभेणं जाव अगणिकाए ।

[2] सं० पा०—सामग्गियं ।

[3] से य (क, घ, च, छ, ब) ।

[4] पिहुणाओ (अ); पिहाणओ (क, च, छ, ब) ।

[5] से य (अ) ।

[6] उज्जुअडा (अ, छ) ।

पुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए[1] वियागरेति ?

हंता भवइ ॥

उवस्सय-जयण-पदं

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—खुड्डियाओ, खुड्डुदुवारियाओ[2], निइयाओ[3] [नीयाओ ?] संनिरुद्धाओ[4] भवंति । तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा, पुरा हत्थेण पच्छा पाएण तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४६. केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, 'नालिया वा, चेलं वा'[5], चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले—भिक्खू य राओ वा वियाले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा[6], °बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अण्णयरं वा कायंसि ° इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[7], °वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीवियाओ ° ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

उवस्सय-जायणा-पदं

४७. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए,[8] ते उवस्सयं अणुण्णवेज्जा—कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[9] उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

---

१. समिय (घ); समिया (छ) ।

२. °दुवाराओ (घ) ।

३. नेरइयाओ (अ); निययाओ (घ) ।

४. सनिरुद्धिओ (अ) ।

५. नालिया वा चेले वा (अ); चेलं वा नालिया वा (घ, ब); नालिया वा (छ) ।

६. सं० पा०-— पायं वा जाव इंदिय ।

७. सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज ।

८. समाहिट्ठाए (अ,क,घ, छ); समाहिट्ठए (ब) ।

९. एवावता (अ); इत्ता त्ता (क); इत्ता वा (च); इं ताव (छ) ।

सेज्जायर-णाम-गोय-जायणा-पदं

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वामेव णाम-गोयं जाणेज्जा। तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—अफासुयं[1] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं, णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण[2]-°पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथं पडिबद्धं वा[3], णो पण्णस्स[4] °णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[5], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णमक्कोसंति वा[6], °बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स[7] °णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[8], °सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगे [गें ?] ति वा, मक्खे [खें ?] ति वा, णो पण्णस्स[9] °णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[10], °सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण

---

१. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

२. सं० पा०—वायण जाव चिंताए।

३. × (अ)।

४. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

५. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

६. सं० पा०—अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति।

७, ९. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

८, १०. सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।

वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसंति वा, पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स[1] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[2], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा,° चेतेज्जा ॥

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा- इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स[3] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[4], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स[5] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[6], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं[7], णो पण्णस्स[8] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

संथारग-पदं

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[9] •सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा °संताणगं, तहप्पगारं संथारगं[10]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[11] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, गरुयं, तहप्पगारं संथारगं[12]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[13] •अप्पपाणं

[1,3,5,8] सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

[2,4,6] सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।

[7] संलिखे (घ); ° संलेखे (छ)।

[9] सं० पा०—सअडं जाव संताणगं।

[10,12] सं० पा०—संथारगं लाभे।

[11,13] सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं अपाडिहारियं, तहप्पगारं संथारगं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[2] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारगं[3]—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[4] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारयं[5]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

संथारग-पडिमा-पदं

६२. इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा, इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए ॥

६३. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संथारगं जाएज्जा, तं जहा—इक्कडं वा, कढिणं[6] वा, जंतुयं वा, परगं वा, मोरगं[7] वा, तणं[8] वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'[9], पिप्पलगं वा, पलालगं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ? तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[10] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

६४. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं[11] वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि !

---

१. क्वचित् 'सेज्जा संथारगं' इति पाठोऽस्ति। तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्तः इति संभाव्यते; सं० पा०—संथारगं लाभे।

२. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

३. सं० पा०—संथारगं लाभे।

४. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

५. सं० पा०—संथारयं जाव लाभे।

६. कढिणगं (घ)।

७. पोरगं (घ)।

८. तणगं (क, च, छ, ब)।

९. कुच्चगं वा वच्चगं वा (चू)।

१०. सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे।

११. कम्मकरी (अ,घ,ब); कम्मकरीयं (च,छ)।

त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ? तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

६५. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तं जहा—इक्कडे वा[2] °कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

६६. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव संथारगं जाएज्जा, तं जहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

६७. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे[3] °णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया°, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

संथारग-पच्चप्पण-पदं

६८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तिए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[4] °सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ॥

६९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[5] अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धणिय-[6]विणिद्धणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ॥

उच्चारपासवण-भूमि-पदं

७०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं[7] पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।

२. सं० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले ।

३. सं० पा०—पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए ।

४. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।

५. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।

६. विहुणिय २ (क,च); विद्धुणिय २ (घ,ब) ।

७. × (क, घ, च) ।

७१. केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू[1] वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा[2] •बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं° लूसेज्ज वा पाणाणि वा[3] •भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ° ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा॥

सयण-विहि-पदं

७२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, गण्णत्थ आयरिएण वा, उवज्झाएण वा[4], •पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा°, गणावच्छेइएण[5] वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा,

अंतेण[6] वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा 'तओ संजयामेव'[7] पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय[8] बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेज्जा॥

७३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा॥

७४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा॥

७५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा,

---

१. से भिक्खू (छ, ब)।

२. सं० पा०—पायं वा जाव लूसेज्ज।

३. सं० पा०—पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज।

४. सं० पा०—उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण।

५. गणावच्छेएण (च)।

६. अन्तेन वेत्यादीनां पदानां तृतीया सप्तम्यर्थे (वृ)।

७. × (क, घ, च, ब)।

८. पमज्जिय तओ संजयामेव (क,घ,च,छ,ब)।

छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए[1] वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज[2] वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ॥

७६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा—तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ॥

७७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] उड्डोए (घ, च, छ) ।

[2] ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

तइयं अज्झयणं

इरिया

पढमो उद्देसो

वासावास-पदं

१. अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे, बहवे पाणा अभिसंभूया, बहवे बीया अहुणुब्भिन्ना[1], अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया[2] •बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगा, अणभिक्कंता पंथा, णो विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ॥

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा[3], •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा[4], •णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा—णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए[5], •णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओग-

---

[1] अहुणुब्भिया (अ); अहुणोब्भिन्ना (घ); अहुणाभिन्ना (च, ब)।

[2] सं० पा०—बहुबीया जाव संताणगा।

[3] सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।

[4] सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि।

[5] सं०पा०—निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु°।

चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा णगरं वा जाव रायहाणिं वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ।।

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा जाव रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा—महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण[1]-°माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती[2]—°पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा जाव° रायहाणिं वा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।।

गामाणुगाम-विहार-पदं

४. अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा[3] °बहुबीया बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगा, णो जत्थ बहवे समण[4]-°माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य । सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५. अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा[5] °अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगा, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्सति य । सेवं णच्चा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा, साहट्टु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं[6] वा कट्टु पायं रीएज्जा । सति परक्कमे संजतामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा, मट्टिया वा अविद्धत्था । सति परक्कमे[7] °संजतामेव परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—समण जाव उवागया ।

[2] सं० पा०—वित्ती जाव रायहाणिं ।

[3] सं पा०—बहुपाणा जाव संताणगा ।

[4] सं० पा०—समण जाव उवागया

[5] सं० पा०—अप्पंडा जाव संताणगा ।

[6] वितिरिच्छं (अ, घ, च, ब) ।

[7] सं० पा०—परक्कमे जाव णो ।

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।।

९. केवली बूया आयाणमेयं—ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा[1], °बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा°, उद्दवेज्ज[2] वा । वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं 'अच्छिदेज्ज वा'[3], अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[4] वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[5] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि[6] °मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।।

११. केवली बूया आयाणमेयं—ते णं बाला 'अयं तेणे'[7] °'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा । वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज° गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण

---

[1] सं० पा०—अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।

[2] उवद्दवेज्ज (अ, क, च, ब) ।

[3] अच्छिदेज्ज वा भिंदेज्ज वा (च, छ, ब); अच्छिदेज्ज वा अभिंदेज्ज वा (अ) ।

[4] परिट्ठवेज्ज (घ, च, ब) ।

[5] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं ।

[6] सं० पा०—दस्सुगायतणाणि जाव विहार-वत्तियाए ।

[7] सं० पा०—अयं तेणे तं चेव जाव गमणाए ।

वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणज्ज वा। तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं, सति लाढे[1] °विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ॥

१३. केवली बूया आयाणमेयं—अतरा से वासे सिया पाणेसु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु[2] वा अविद्धत्थाए।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं[4], °सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा° गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

नावा-विहार-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे[5] अंतरा से णावासंतारिमे उदए सिया। सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णाव[6]-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा। तहप्पगारं णावं उड्ढगामिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरियगामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं जाणेज्जा, जाणेत्ता से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता भंडगं पडिलेहेज्जा[7], पडिलेहेत्ता एगाभोयं[8] भंडगं करेज्जा, करेत्ता ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव णावं दुरुहेज्जा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरूहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा, णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलिए[9] उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय. उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ॥

---

[1] सं० पा०—लाढे जाव णो।
[2] मट्टिएसु (क, च); मट्टियाएसु (घ, छ)।
[3] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
[4] सं० पा०—अणेगाहगमणिज्जं जाव गमणाए।
[5] दूइज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब)।
[6] णावं (क, घ, च, छ, ब)।
[7] पडिगाहेज्जा (घ, छ, ब)।
[8] °भाय (अ); °भोयण (छ)।
[9] अंगुलियाए (च, छ, ब)।

१७. से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता[1] तुमं णावं उक्कसाहि वा, वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए[2] वा गहाय आकसाहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा[3], तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१८. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा, वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय आकसित्तए । आहर एतं णावाए रज्जूयं, सयं चेव णं वयं णावं उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा, रज्जुयाए[4] वा गहाय आकसिस्सामो । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१९. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता[5] तुमं णावं अलित्तेण[6] वा, पिहएण[7] वा, वंसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण[8] वा वाहेहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२०. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा, मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिंचणेण वा उस्सिंचाहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२१. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एतं ता तुमं णावाए उत्तिंगं हत्थेण वा, पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा[9] वा, उदरेण वा, सीसेण वा, काएण वा, णावा-उस्सिंचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए वा, कुसपत्तएण वा'[10], कुविंदेण[11] वा पिहेहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिंगेणं उदयं आसवमाणं पेहाए, उवरुवरि[12] णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एवं बूया—आउसंतो ! गाहावइ ! एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेति । एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए

---

[1] × (अ, छ) ।

[2] रज्जूए (अ, क, घ, ब) ।

[3] जाणेज्जा (घ, ब) ।

[4] रज्जूए (च ।

[5] × (छ) ।

[6] आलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

[7] पीढेण (अ, क, घ, च, छ, ब) । अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृतः ।

[8] अवल्लेण (च) ।

[9] उरुणा (घ, च, छ, ब) ।

[10] निशीथ-चूर्णि, भाग ४, पृष्ठ २०९ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने 'कुसमट्टियाए वा' इति पाठोस्ति ।

[11] कुरुविंदेण (अ, क, घ, च, छ, ब) । अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृतः ।

[12] उवरूवरिं (घ) ।

अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज[1] समाहीए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ॥

२३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

नावा-विहार-पदं

२४. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा[2], °मत्तगं वा, दंडगं वा, लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलिमिलिं वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा°, चम्म-छेयणगं वा गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा'[3] पज्जेहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२५. से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह[4] । एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया, खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्ज वा, णिव्वेढिज्ज वा, उप्फेसं वा करेज्जा ॥

२६. अह पुणेवं जाणेज्जा—अभिक्कंत-कूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।

से पुव्वामेव वएज्जा—आउसंतो ! गाहावइ ! मा मेत्तो बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे[5] सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा, अप्पुस्सुए[6] °अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ॥

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'[7] तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ॥

---

[1] विउसज्ज (क) ।

[2] सं० पा०—छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं ।

[3] × (क, घ, च) ।

[4] पक्खिवेज्जा (क, ग, च, छ, ब) ।

[5] दुमणे (घ, छ, ब) ।

[6] सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए ।

[7] से अणासादए अणा° (अ) ।

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्ग[1]-णिमग्गियं[2] करेज्जा। मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं पाउणेज्जा। खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णो चेव णं सातिज्जेज्जा[3] ॥

३०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा ॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

३२. अह पुण एवं जाणेज्जा—विगओदए मे काए, वोच्छिन्नसिणेहे[4] मे काए। तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जंघासंतारिमे उदए सिया। से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता[5] °सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता° एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए[6] अहारियं रीएज्जा ॥

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'[7] पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा। 'से अणासायमाणे'[8] तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ॥

३६. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय[9]-वडियाए, णो परदाह-वडियाए, महइमहालयंसि उदगंसि कायं विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ॥

---

[1] उम्मुग्गं (घ, च, ब)।

[2] णिम्मुग्गियं (घ, च)।

[3] सातिज्जेज्ज वा (छ)।

[4] छिन्न° (क, घ, च, ब)।

[5] सं० पा०—पमज्जेत्ता जाव एगं।

[6] उदगंसि (क, घ, च)।

[7] हत्थेण वा हत्थं (अ) (सर्वत्र)।

[8] से अणासादए अणा° (अ)।

[9] साया (अ)।

३७. अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण[1] वा काएण दगतीरए[2] चिट्ठेज्जा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।।

३९. अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा[3] •पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । "जहेयं[4] पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु" । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा । सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

४२. केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[5], जे तत्थ पाडिपहिया[6] उवागच्छंति, ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[7], तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूवरूवं सण्णिविट्ठं[8] पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

---

[1] ससिणिद्धेण (च) ।

[2] उदगतीरए (घ) ।

[3] सं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज ।

[4] जमेतं (छ) ।

[5] उत्तारेज्जा (अ) ।

[6] पाडिवधेया (क); पाडिवाहेया (घ); पाडिपडिया (छ) ।

[7] उत्तारेज्जा (अ) ।

[8] सणिरुद्धं (ब) ।

अभिणिचारिय-पदं

४४. से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिणिचारियं[1] करेइ। से णं बाहाए गहाय आगसह। से णं परो बाहाहिं गहाय आगसेज्जा। तं णो सुमणे सिया[2], °णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाण घाताए वहाए समुट्ठेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पदं

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! केवइए एस गामे वा[3], °णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ? से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? 'एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा, एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा'[4] ॥

४६. एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[5], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि° ॥

तइओ उद्देसो

अंगचेट्ठापुव्वं निज्झाण-पदं

४७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा[6], °तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा°, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा[7], °आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ

---

[1] अभिणिवारियं (अ, क, घ, च, ब)।

[2] सं० पा०—सिया जाव समाहीए।

[3] सं० पा०—गामे वा जाव रायहाणी।

[4] × (ब); एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ); एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ)।

[5] सं० पा०—सामग्गियं।

[6] सं० पा०—पागाराणि वा जाव दरीओ।

[7] सं० पा०—आएसणाणि वा जाव भवण-गिहाणि।

वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा°, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छाणि वा, दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा, गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा, पोक्खरिणीओ वा, दीहियाओ वा, गुंजालियाओ वा, सराणि वा, सर-पंतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[1], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

४९. केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ मिगा वा, पसुया[2] वा, पक्खी वा सरीसिवा[3] वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा वा, खहचरा वा सत्ता, ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा, वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा। चारे त्ति मे अयं समणे।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[4] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय°, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं-विहार-पदं

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण हत्थं[6], °पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से° अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से

---

[1] सं० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा।

[2] पसू (अ)।

[3] सिरीसिवा (अ, घ, च)।

[4] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।

[5] सं० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा।

[6] स० पा०—हत्थं जाव अणासायमाणे।

पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा गच्छिहिह ?

जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा, वियागरेज्जा वा । आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा, तओ संजयामेव आहारातिणिए[1] दूइज्जेज्जा ॥

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं[2], °पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा । से° अणासायमाणे तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा गच्छिहिह ?

जे तत्थ सव्वरातिणिए[3] से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा । रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं भासेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[4] । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तं जहा—मणुस्सं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं[5] वा, जलयरं वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं[6] तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५५. से भिक्खू वा भिक्खुणो वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[7] । ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा'[8], उदगं वा

---

१. °राइणियाए (अ, ब); अहा° (घ, च) ।

२. सं० पा०—हत्थं जाव अणासायमाणे ।

३. रातिणिए (घ) ।

४ आगच्छेज्जा (अ, च, छ) ।

५. सिरीसिवं (अ, छ, ब); सिरीसवं (च) ।

६. तस्स (क, च, छ) ।

७. आगच्छेज्जा (अ, छ) ।

८. तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

संणिहियं, अगणिं वा संणिक्खित्तं ? से आइक्खह[1], •दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं° दूइज्जेज्जा ॥

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह–जवसाणि वा[2], •सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा°, सेणं वा विरूवरूवं संणिविट्ठं ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया[3] •उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा°—आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामे वा[4], •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा मडंबे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा[5], •खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंबस्स वा, पट्टणस्स वा, दोणमुहस्स वा, आगरस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा° रायहाणीए वा मग्गे ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगाणं दूइज्जेज्जा ॥

वियाल-पदं

५९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाणं दूइज्जमाणे अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए[6], •महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थि, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं,

---

[1] सं० पा०—आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा ।

[2] सं० पा०—जवसाणि वा जाव सेणं ।

[3] सं० पा०—पाडिपहिया जाव आउसंतो ।

[4] सं० पा०—गामे वा जाव रायहाणी ।

[5] सं० पा०—णगरस्स वा जाव रायहाणीए ।

[6] सं० पा०—पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं ।

कोल-सुणयं, कोकंतियं,° चित्ताचिल्लडं—वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए[1] °अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आमोसग-पदं

६०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेजा ॥

६१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! 'आहर एयं'[2] वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा—देहि, णिक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

ते णं आमोसगा 'सयं करणिज्जं'[3] ति कट्टु अक्कोसंति वा[4], °बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवंति वा। वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[5] वा। तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा जाव परिभवेंति[6] वा। एयप्पगारं मणं वा वइं[7] वा णो पुरओ कट्टु, विहरेज्जा,

---

[1] सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए।

[2] आहारं एवं (छ); आहर एत्थ (अ,क,ब)।

[3] सयं करणिज्जा करणिज्जं (च)।

[4] सं० पा०—अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति।

[5] परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, ब)।

[6] परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, ब)।

[7] वायं (च); वयं (छ, ग)।

अप्पुस्सुए[1] •अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

६२. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] १. सं॰ पा॰—अप्पुस्सुए जाव समाहीए।

चउत्थं अज्झयणं

भासज्जातं

पढमो उद्देसो

वइ-अणायार-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा णिसम्म इमाइं अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति, जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति, सव्वमेयं[1] सावज्जं वज्जेज्जा विवेगमायाए ।।

२. धुवं चेयं जाणेज्जा, अधुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा णो आगए, अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ।।

सोडस-वयण-पदं

३. अणुवीइ[2] णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा, तं जहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयणं, इत्थीवयणं[3], पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं, अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं, परोक्खवयणं ।।

---

[1] सव्वं वेयं (क, च, ब); सव्वं चेयं (घ) ।

[2] अणुवीय (छ) ।

[3] इत्थि° (अ) ।

४. से १. एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा[1], २. °दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा, ३. बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वएज्जा, ४. इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा, ५. पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा, ६. णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वएज्जा, ७. अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा, ८. उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा, ९. अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा, १०. उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं वएज्जा, ११. अवणीय-उवणोयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं वएज्जा, १२. तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वएज्जा, १३. पडुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयणं वएज्जा, १४. अणागयवयण वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा, १५. पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा°, १६. परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ।।

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पदं

५. 'इत्थी वेस, पुरिस वेस, णपुंसग वेस'[2], एवं[3] वा चेयं, अण्णं[4] वा चेयं अणुवीइ णिट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ।।

भासज्जात-पदं

६. अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तं जहा—सच्चमेगं[5] पढमं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव सच्चं णेवमोसं णेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं भासज्जातं ।।

७. से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा, पण्णवेंति वा, पण्णविस्संति वा ।।

८. सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं[6] विप्परिणामधम्माइं[7] भवंतीति अक्खायाइं[8] ।।

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयविइक्कंता[9] भासिया भासा अभासा ।।

---

[1] सं० पा०—वएज्जा जाव परोक्खवयणं ।

[2] इत्थीवेद पुंवेय णपुंसगवेय (घ, छ, ब) ।

[3] एयं (घ, छ) ।

[4] अण्णहा (अ, च, छ, ब) ।

[5] °मेय (अ, घ, छ); °मेतं (क) ।

[6] चओवए (अ); चयोवचयाइं (छ); चयोवचयमंताणि (ब) ।

[7] विविहपरिणाम° (च, छ) ।

[8] समक्खयाइं (अ) ।

[9] °विइक्कंतं च णं (क, घ, च, छ) ।

सावज्ज-भासा-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख 'णो भासेज्जा'[1] ॥

असावज्ज-भासा-पदं

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं असावज्जं अकिरियं[2] •अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं° अभूतोवघाइयं अभिकंख[3] भासेज्जा ॥

आमंतणी-भासा-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा अपडिसुणेमाणे णो एवं वएज्जा—'होले ति वा, गोले ति वा'[4], वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइं तुमं एयाइं'[5] ते जणगा वा—एतप्पगारं[6] भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख नो भासेज्जा ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे एवं वएज्जा—अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो[7] ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थिं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी नो एवं वएज्जा—होले ति वा, गोले ति वा[8], •वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा, घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइं तुमं एयाइं ते जणगा वा—एतप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा° ॥

---

[1] णो भासं भासेज्जा (अ, ब); भासं णो भासेज्जा (घ)।

[2] सं० पा०—अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं।

[3] अभिकंखं भासं (अ, घ, छ)।

[4] होले इ वा गोले इ वा (घ); होलि त्ति वा गोलि त्ति वा (छ)।

[5] इतियाइं तुमं इतियाइं (अ); एयाइं तुमं° (क, च) एतिया तुमं° (ब)।

[6] तहप्पगारं (छ)।

[7] आउसंतारो (क, घ, छ)।

[8] सं० पा०—गोले ति वा इत्थीगमेणं णेतव्वं।

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा—आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'[1], भगवई ति वा, साविगे ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये[2] ति वा—एतप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइय अभिकंख भासेज्जा ।।

विधि-निसिद्ध-भासा-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णा एवं वएज्जा—णभोदेवे[3] ति वा, गज्जदेवे[4] ति वा, विज्जुदेवे ति वा, पवुट्ठदेवे[5] ति वा, निवुट्ठदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं[6] मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ।।

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए[7] ति वा 'पओए, वएज्ज'[8] वा वुट्ठबलाहगे ति वा ।।

१८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

कक्कस-भासा-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा,[9] °रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, झिमियं झिमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा°, महुमेहणी महुमेहणी[10] ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, [11]°पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्ठ-

---

[1] भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।

[2] धम्मिणिए (क) ।

[3] णभं देवे (घ) ।

[4] गज्जं देवे (ब) ।

[5] पवुट्ठो° (अ) ।

[6] सासं (अ, ब) ।

[7] णिवडिए (च) ।

[8] तओ एवं वदेज्जा (छ) ।

[9] सं० पा०—कुट्ठी ति वा जाव महुमेहणी ।

[10] महुमेही (छ) ।

[11] सं० पा०—एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा ।

छिन्नं ° ओट्ठछिन्ने ति वा"[१] जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहिं[२] भासाहिं बुइया-बुइया[३] कुप्पंति माणवा। ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख णो भासेज्जा।।

अकक्कस-भासा-पदं

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा[४] तं जहा—ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयंसी ति वा, वच्चंसी वच्चंसी ति वा, जसंसी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं[५] भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा। ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं[६] भासाहिं अभिकंख भासेज्जा[७]।।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पदं

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—वप्पाणि वा[८], °फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,° भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा'[९], करणिज्जे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं[१०] °सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख° णो भासेज्जा।।

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—

---

१. एवं पाद नक्क कण्ण ओट्ठ° (अ); एवं पाद कण्ण नक्क° (छ, ब)।

२. एयप्प° (क, छ)।

३. × (अ)।

४. भासेज्जा (छ)।

५. एयप्प° (अ, घ, च)।

६. पूर्वं सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते, किन्तु अत्र प्रतिषु तथा नास्ति।

७. भासेज्जा। तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा (अ, ब)।

८. सं° पा°—वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि।

९. साहुकल्लाणं ति वा (अ, छ)।

१०. सं° पा°—सावज्जं जाव णो।

वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं एवं वएज्जा, तं जहा—आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा– एयप्पगारं भासं असावज्जं[1] °अकिरियं अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं अभूतोवघाइयं अभिकंख° भासेज्जा ।।

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए तहावि[2] तं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा; कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दयं भद्दए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा, मणुण्णं मणुण्णे ति वा—एयप्पगारं[3] भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[4] वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा, से त्तं[5] परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा—थूले[6] ति वा, पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्झे ति वा, पाइमे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[7] °वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा°, जलयरं वा, से त्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेजा ।।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणो वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वएज्जा, तं जहा—गाओ दोज्झाओ[8] ति वा, दम्मे[9] ति वा, गोरहे[10] ति वा, 'वाहिमा ति वा

---

१. सं० पा०—असावज्जं जाव भासेज्जा ।

२. तहाविहं (घ, ब) ।

३. तहप्प° (अ, च) ।

४. माणुस्सं (घ, छ) ।

५. तं (छ) ।

६. थुल्ले (अ, क, च, छ) ।

७. सं० पा०—मणुस्सं जाव जलयरं ।

८. दोज्झा (अ, क, च, छ, ब) ।

९. दम्मा (अ, च, ब) ।

१०. गोरहा (अ, च, ब) ।

रहजोग्गाति वा'[1]—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—जुवंगवे ति वा, धेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से[2] ति वा, महल्लए[3] ति वा, महव्वए ति वा संवहणे ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि य[4] रुक्खा महल्ला पेहाए** णो एवं वएज्जा, तं जहा—पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'[5] ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'[6]-नावा-उदगदोणि-पीढ-चंगबेर[7] - णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी-णाभि-गंडी-आसण-सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए** एवं वएज्जा, तं जहा—जातिमंता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला [अंबा ?] पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तं जहा—पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया[8] ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'[9] पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा, भूयरूवा ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तं जहा—पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया[10] ति वा, लाइमा ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

---

[1] वाहनयोग्यो रथयोग्यः (वृ) ।

[2] ह्रस्से (घ, छ); रहस्से (ब) ।

[3] महल्ले (छ, ब) ।

[4] वा (च, ब) ।

[5] तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ, ब) ।

[6] अग्गलजोग्गा ति वा फलिह ° (च) ।

[7] सिंगबेर (अ, ब) ।

[8] वेलोविगा (अ); वेलोतिया (क, घ, च); वेलोविया (ब) ।

[9] वणफणा (क, च, ब); फलअंबा (वृ) ।

[10] छवी (अ) ।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा ससारा[1] ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा, तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'[2]—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

३६. 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा'[3], ताइं एवं वएज्जा, तं जहा—सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'[4]—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

३७. एवं रूवाइं—कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा,
सुकिल्ले ति वा,
गंधाइं—सुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा,
रसाइं—तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा,
महुराणि वा,
फासाइं—कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा,
सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, लुक्खाणि वा ।।

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पदं

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'[5], अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्मभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ।।

३९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] संसारा (अ, छ) ।
[2] × (च, छ) ।
[3] × (अ, क, च, छ, ब) ।
[4] × (च, छ) ।
[5] कोहवयणं माणं वा ४ (क, घ, च, ब) ।

पंचमं अज्झयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाय-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए, सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जहा—जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं[1]—

२. जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं[2] बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं वत्थं धारेज्जा, णो बितियं ॥

३. जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा—एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं, तहप्पगारेहिं[3] वत्थेहिं असंविज्जमाणेहिं[4] अह पच्छा एगमेगं संसीवेज्जा ॥

अद्धजोयण-मेरा-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए वत्थ-पडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

अस्सिंपडियाए वत्थ-पदं

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं[5] •भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं वत्थं

---

[1] धारयेदित्युत्तरेण सम्बन्धः (वृ) ।

[2] जुववं (घ) ।

[3] एएहिं (अ, च, ब) ।

[4] अविज्ज° (अ, ब) ।

[5] सं० पा०—पाणाइं जहा पिंडेसणाए ।

पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुय अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

६. [1]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-

---

[1] सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणस्स तहेव, पुरिसंतरं जहा पिंडेसणाए।

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

११. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ।।

भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-वत्थ-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—असंजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं[1] वा, संपधूमियं[2] वा, तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं[3], °अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं[4], °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

महद्धणमुल्लवत्थ-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धण-मोल्लाइं तं जहा—आजिणगाणि[5] वा, सहिणाणि[6] वा, सहिण-कल्लाणाणि वा, आयकाणि[7] वा, कायकाणि[8] वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा, अंसुयाणि वा, चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि[9] वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालियाणि[10] वा, कोयहा[वा?]णि[11] वा, कंबलगाणि वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं महद्धणमोल्लाइं[12]—°अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

अजिणवत्थ-पदं

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि[13] जाणेज्जा,

---

१. संसट्ठ (क)।

२. °धूवितं (अ, छ)।

३. सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं।

४. सं० पा०—पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहेज्जा।

५. आतिणाणि (अ); अजिणमाणि (क, च)।

६. सहणाणि (छ)।

७. आयाणाणि (अ, क, घ, च); आयाण (ब)।

८. कायाणाणि (घ, ब)।

९. वेसरागाणि (अ); देसराणि (छ); वेसराणि (ब)।

१०. फलियाणि (क, च, छ, ब)।

११. कायहाणि (अ); कोहयाणि (घ); निशीथस्य १७ उद्देशकस्य चूर्णौ 'कोतवाणि' इति पाठो लभ्यते।

१२. सं० पा०—मद्धणमोल्लाइं … लाभे।

१३. वा वत्थाणि वा (क, छ)।

तं जहा—उद्दाणि[1] वा, पेसाणि[2] वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकताणि[3] वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि[4]—°अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थपडिमा-पदं

१६. इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए ॥

१७. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तं जहा—जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

१८. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए वत्थं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा[5], °गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं ? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[6] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

१९. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जहा—अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा[7] °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणं लाभे संते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

२०. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा, ज चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से[8] देज्जा—

---

१. उद्दवाणि (घ); ओड्डाणि (छ) ।

२. पेसणाणि (छ) ।

३. कणगकंताणि (अ, क, घ, च, छ, ब); कनककान्तीनि (वृ) ।

३. सं० पा०—वत्थाणि···लाभे ।

५. सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं ।

६. सं० पा०—फासुयं···लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा ।

७. सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।

८. णं (अ, ब) ।

फासुयं[1] •एसणिज्जं[2] ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

२१. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं[3] •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति° ॥

संगार-वयणपुव्वं वत्थ-पदं

२२. सिया णं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे[4] वा, तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं वत्थं दाहामो[5]। एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे[7] संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं[8] वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि, तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स वत्थं[9] चेइस्सामो। एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[10] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-आघंसण-पदं

२३. सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा[11], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा,

---

[1] सं० पा०—फासुयं पडिगाहेज्जा।

[2] °यं (अ)।

[3] स० पा०—पडिमाणं जहा पिंडेसणाए।

[4] °तराए (घ, च, छ, ब)।

[5] दासामो (अ, च, ब)।

[6] तहप्प° (अ)।

[7] °गारं (छ)।

[8] णेवं (क, घ, च, छ); एवं (व)।

[9] जाव (अ, क, घ, च, छ, ब)।

[10] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

[11] सं० पा०—सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता।

पउमेण वा° आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा जाव आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[1] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-उच्छोलण-पदं

२४. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा[2], पधोवेत्ता[3] वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा पधोवेहि वा, अभिकंखसि[4] °मे दाउं? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-विसोहण-पदं

२५. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—कंदाणि वा[5], °मूलाणि वा, [तयाणि वा?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[6] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-पडिलेहण-पदं

२६. सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि॥

---

[1] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

[2] × (छ)।

[3] पच्छोलेत्ता (छ)।

[4] सं० पा०—अभिकंखसि सेसं तहेव जाव णो।

[5] सं० पा०—कंदाणि वा जाव हरियाणि।

[6] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

२७. केवली बूया आयाणमेयं—'वत्थंतेण उ'[1] बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा[2], °मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा° रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ॥

सअंडाइ-वत्थ-पदं

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—सअंडं[4] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[5] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा--अप्पंडं[6] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[7] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अप्पंडं[8] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—फासुयं[9] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-परिकम्म-पदं

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण[10] सिणाणेण वा[11], °कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°, पघंसेज्ज वा ॥

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण

---

[1] वत्थे ते उ (च); वत्थेण उ (घ, ब)।

[2] सं० पा०—मणी वा जाव रयणावली।

[3] सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।

[4] सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।

[5] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

[6,8] सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

[7] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

[9] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।

[10] निशीथे (१४।१५) 'बहुदेवसिएण' पाठो लभ्यते। आचारांगस्य चूर्णावपि (पृ० ३६४) 'बहुदेवसिएण' पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) 'बहुदेसिएण' पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृतः।

[11] सं० पा०—सिणाणेण वा जाव पघंसेज्ज।

सीओदग-वियडेण वा[1], •उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा[2], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा° ।।

वत्थ-आयावण-पदं

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धाए[3] पुढवीए[4], •णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि[5] वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, 'लेलुंसि वा'[6], अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए[7] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए[8] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

---

१. सं० पा०—सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्जा ।

२. सं० पा— सिणाणेण वा तहेव सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ ।

३. ससिणि° (क, च) ।

४. सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए ।

५. ऊसु° (अ) ।

६. जाव (अ); × (छ) ।

७. सं० पा०—अंतलिक्खजाए जाव णो ।

८. सं० पा०—अंतलिक्खजाए जाव णो ।

३९. से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा[1], °अट्ठिरासिंसि किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

४०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।।

बीओ उद्देसो

णो धोएज्जा रएज्जा-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा, अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

सव्वचीवरमायाए-पदं

४२. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४३. [3]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४५. अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि ।

[2] सं० पा०—सामग्गियं ।

[3] सं० पा०—एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेजा अह पुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए ।

पाडिहारिय-वत्थ-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[1] पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण[2] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु[3] एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा। तहप्पगारं 'वत्थं ससंधियं'[4] तस्स चेव णिसिरेज्जा, 'णो णं'[5] साइज्जेज्जा ॥

४७. से एगइओ एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[7] जाइत्ता[8] एगाहेण[9] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति[10], °णो पामिच्चं करेंति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति। तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति°, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं[11] पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता एगाहेण[12] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि। अवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ॥

वत्थविक्किया-पदं

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं

---

[1] मुहुत्तगं (घ, च, छ, ब)।

[2] जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।

[3] °मित्ता (घ, च, छ, ब)।

[4] ससंधियं वत्थं (अ); वत्थं ससंधियं वत्थं (च, छ)।

[5] णो अत्ताणं (अ, क, छ); न अत्ताणं (ब)।

[6] तह° (ब)।

[7] मुहुत्तगं (छ)।

[8] जाएज्जा (छ)।

[9] जाव एगाहेण (अ, क, घ च, छ, ब)।

[10] तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणोए भासियव्वं (अ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भाणियव्वं (घ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणेणं भासियव्वं (ब); सं० पा०—अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं।

[11] मुहुत्तं (अ, छ, ब)।

[12] जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।

णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अण्णं वा वत्थं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा[1], णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेयं[2] वत्थं पावगं परो मन्नइ ।

परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा[3], °णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वण वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए°, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

आमोसग-पदं

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा - इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिंडिया[4] गच्छेज्जा[5], °णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव° गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया[6] गच्छेज्जा । तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि[7] । °तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा । तं णो गाम-संसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—

---

[1] कुज्जा (च) ।

[2] वेयं (अ, च); मेयं (क, घ, ब) ।

[3] सं० पा०—गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए…… तओ ।

[4] संपडिया (क, च, ब) ।

[5] सं० पा०—गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं ।

[6] पडिया (अ); सपडिया (क,घ,च); संपडिया (छ) ।

[7] सं० पा०—निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्तं वत्थपडियाए ।

आउसंतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिंदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

५१. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि° ॥

---

[1] सं० पा०—सामग्गियं।

छट्ठं अज्झयणं

पाएसणा

पढमो उद्देसो

पायजाय-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए, सेज्जं पुण पाय जाणेज्जा, तं जहा—अलाउपायं[1] वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा—तहप्पगारं पायं—

एगपाय-पदं

२. जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं पायं धारेज्जा, णो बीयं[2] ॥

अद्धजोयण-मेरा-पदं

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

अस्सिंपडियाए पाय-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं[3] °भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं पायं

---

[1] लाउयपायं (क, च, छ); अलाउयपायं (घ)।

[2] बितियं (च, छ, ब)।

[3] सं० पा०—पाणाइं जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा। पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणा वत्थेसणालावओ।

पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

समण-माहणाइ समुद्दिस्स पाय-पदं

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

९. से[1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-

---

[1] यद्यपि प्राप्तप्रतिषु 'बहवे समणमाहण' इति सूत्रात् पूर्वं 'अस्संजए भिक्खुपडियाए' एतत् सूत्रं लभ्यते, किन्तु वस्त्रैषणायाः (१०-१३) क्रमेण पूर्वं 'बहवे समण-

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकड, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१२. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा °॥

महद्धणमुल्लपाय-पदं

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तं जहा—अय-पायाणि वा, तउ[1]-पायाणि वा, तंब-पायाणि वा, सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-कंस-पायाणि वा, संख-सिंग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफासुयाइं[2] °अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-बंधण-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धणबंधणाइं तं जहा—अयबंधणाणि वा[3], °तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा, सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि वा, रीरियबंधणाणि

माहण °' सूत्रं तत्पश्चात् 'अस्संजए भिक्खु-पडियाए' एतत् सूत्रं युज्यते, अतः एष एव क्रमोत्र स्वीकृतः। सूत्रस्य विपर्ययो लिपि-दोषेण जात इति प्रतीयते। चूर्णौ वृत्तौ च न व्याख्याते इमे सूत्रे। प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति संकेतितम्।

[1] तउय (घ)।

[2] स० पा०—अफासुयाइं जाव णो।

[3] सं० पा०—अयबंधणाणि वा जाव चम्म-बंधणाणि।

वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-बंधणाणि वा°, चम्मबंधणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं—अफासुयाइं[1] °अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-पडिमा-पदं

१५. इच्चेयाइं आयतणाइं[2] उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए ॥

१६. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा, तं जहा—लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा[3], °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

१७. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा[4], °गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं, तं जहा—लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा मट्टिया-पायं वा ? तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा[5], °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

१८. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, संगतियं वा, वेजयंतियं[6] वा—तहप्पगारं पायं सयं वा[7] °णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

१९. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा, जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं पायं सयं वा णं[8] °जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

२०. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं[9] °पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

---

[1] सं० पा०—अफासुयाइं जाव णो ।

[2] आया° (घ) ।

[3] सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।

[4] सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं ।

[5] स० पा—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।

[6] वेजयंति (अ, ब, क, घ, च, छ) ।

[7] सं० पा०—सयं वा जाव पडिगाहेज्जा ।

[8] सं० पा०—सयं वा णं जाव पडिगाहेज्जा ।

[9] सं० पा०—पडिमं जहा पिंडेसणाए ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ।।

संगार-वयणपुव्वं पाय-पदं

२१. से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जासि तुमं मासेण वा,[1] °दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं पायं दाहामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा · आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं[2] चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।।

पाय-अब्भंगण-पदं

२२. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'[3] अब्भंगेत्ता वा[4], °मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा जाव अब्भंगाहि वा मक्खाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।" से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा जाव अब्भंगेत्ता वा मक्खेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पाय-आघंसण-पदं

२३. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—

---

[1] सं० पा० – मासेण वा जहा वत्थेसणाए ।

[2] जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

[3] × (क, च, ब) ।

[4] सं० पा०—अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओदगादि कंदादि तहेव ।

सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा जाव आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेव वा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

पाय-उच्छोलण-पदं

२४. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

पाय-विसोहण-पदं

२५. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—कंदाणि वा, मूलाणि वा [तयाणि वा ?] पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॰॥

सपाण-भोयण-पडिग्गह-पदं

२६. से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेंसु वा, उवक्खडेंसु वा, तो ते वयं आउसो ! सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दासामो,

तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो सुट्ठु साहु भवइ। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणगं सभोयणं पडिग्गहगं दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं—अफासुयं[1] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

पडिग्गह-पडिलेहण-पदं

२७. सिया से परो णेत्ता[2] पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि॥

२८. केवली बूया आयाणमेयं—अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[3], °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो° जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा॥

सअंडाइ-पाय-पदं

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअंडं[4] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा॥

---

[1] सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

[2] उवणेत्ता (घ, च, ब)।

[3] सं० पा०—पइण्णा जाव जं।

[4] सं० पा०—सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा।

पाय-परिकम्म-पदं

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।।

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।।

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।।

पाय-आयावण-पदं

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए [अण्णयरे ?] जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भिंत्तिसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा,

हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ॥

४२. से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतवमक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा, अट्ठिरासिंसि वा, किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

४३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

पडिग्गह-पेहा-पदं

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसमाणे[1] पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४५. केवली बूया आयाणमेयं—अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[2], °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो° जं पुव्वामेव पहाए पडिग्गहं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ॥

सीओदगादिसंजुत्तपाय-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु[3] अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं[4] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

४७. से य आहच्च पडिग्गहिए सिया[5] खिप्पामेव उदगंसि साहरेज्जा[6], सपडिग्गहमायाए पाणं[7] परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए 'वा णं'[8] भूमीए णियमेज्जा ॥

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं णो आमज्जेज्ज

---

[1] पविट्ठे° (क, च, चू) ।

[2] सं० पा०—पइण्णा जाव जं ।

[3] अभिहट्टु (अ, क, च, छ, ब) ।

[4] सं० पा०—अफासुय जाव णो ।

[5] सिया से (अ) ।

[6] आहरेज्जा (च) ।

[7] वणं (अ); एवं (छ) ।

[8] वण (घ, च); च णं (छ) ।

वा[1], °पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा ॥

४९. अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-सिणेहे मे पडिग्गहए, तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा ॥

सपडिग्गहमायाए-पदं

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ॥

५१. [2]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा ॥

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५३. अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ॥

पाडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा। तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो णं साइज्जेज्जा ॥

५५. से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि

---

[1] सं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज ।

[2] सं० पा०—एवं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा बिइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे ।

पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तगं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेंति, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति। तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि। आवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ॥

पायविक्किया-पदं

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अण्णं वा पडिग्गहगं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आमोसग-पदं

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गहपडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा !

आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि।" तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिल्लेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

५६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

— त्ति बेमि ॥

सत्तमं अज्झयणं

ओग्गह-पडिमा

पढमो उद्देसो

अदिन्नादाण-पच्चक्खाण-पदं

१. समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते ! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।।

२. से अणुपविसित्ता गामं वा[1], °णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणिं वा °—णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा, णेवण्णेणं[2] अदिण्णं गिण्हावेज्जा, णेवण्णं अदिण्णं गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।।

ओग्गह-पदं

३. जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिं पि याइं भिक्खू छत्तयं[3] वा, मत्तयं वा, दंडगं वा[4], °लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°, चम्मछेदणगं वा—तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज[5] वा । तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज[6] वा, पगिण्हेज्ज वा ।।

४. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो,

---

[1] सं० पा०—गामं वा जाव···।

[2] णेवण्णेहिं (घ, छ)।

[3] छत्तं (घ, च)।

[4] सं० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं।

[5] परिगिण्हेज्ज (अ)।

[6] उ° (घ); उव° (छ)।

जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया ‘एत्ता, ताव’[1] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।।

५. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए[2] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।।

६. से आगंतारेसु वा[3], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो° ।।

७. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए[4] पोढे वा, फलए वा, सेज्जा-संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुण्णे उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।।

८. से आगंतारेसु वा,[5] °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो° ।।

९. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा सूई[6] वा, पिप्पलए वा, कण्णसोहणए वा, णहच्छेयणए वा, तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं[7] जाइत्ता णो अण्णमण्णस्स देज्ज वा, अणुपदेज्ज वा, सयं करणिज्जं ति कट्टु से तमादाए[8] तत्थ गच्छेज्जा, गच्छत्ता पुव्वामेव उताणए हत्थे[9] कट्टु भूमीए वा ठवेत्ता ‘इमं खलु’[10] त्ति आलोएज्जा, णो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणेज्जा ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससणिद्धाए पुढवीए[11], °ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए,

---

[1] एतावता (अ, क, घ, च, छ ब) ।

[2,4] °सित्तए (अ, क, घ, च, छ) ।

[3,5] सं० पा०—से आगंतारेसु वा जाव ।

[6] सूती (अ); सूयी (च); सुई (छ); सुयी (ब) ।

[7] पडि° (अ, छ, ब) ।

[8] °ताए (छ) ।

[9] हत्थेत्ति (छ) ।

[10] इमं खलु इमं खलु (अ, ब) ।

[11] सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए ।

चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए, तहप्पगारं ओग्गहं णो ओगिण्हेज्ज[1] वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे[2] °दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—कुलियंसि वा[3], °भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पण ओग्गहं जाणेज्जा—खंधंसि वा[4], °मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं सइत्थिं सखुड्डुं सपसुं सभत्तपाणं, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए[5] °णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओगचिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए ससागारिए जाव सखुड्डु-पसु-भत्तपाणे णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथे पडिबद्धं वा णो पण्णस्स[6] °णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परिट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[7], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्ण-

---

[1] गिण्हेज्ज (च, छ, ब)।

[2] सं० पा०—दुब्बद्धे जाव णो।

[3] सं० पा०—कुलियंसि वा जाव णो।

[4] सं० पा०—खंधंसि वा…अण्णयरे वा तहप्पगारे जाव णो।

[5] सं० पा०—णिक्खमण-पवेसाए जाव धम्माणुओग।

[6] सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

[7] सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

मण्णं अक्कोसंति वा[1], °बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेंति वा, मक्खेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसंति वा, पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा° ॥

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स[2] °णिक्खमण-पवेसाए णो पणस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। [सेवं णच्चा ?] तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

---

[1] सं० पा०—अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गह-वत्तव्वया।

[2] सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

२२. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ॥

बीओ उद्देसो

२३. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे[2] तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा[3] । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[4] ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

२४. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा[5], •मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा°, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, णो[6] सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि[7] अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा ॥

अंब-ओग्गह-पदं

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु[8] •आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो ॥

२६. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू[9] इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, [पायए वा ?] । सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—सअंडं[10] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं अंबं—अफासुयं[11] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

---

[1] सं० पा०—सामग्गिय ।

[2] × (अ) ।

[3] °वित्ता (अ, क, च, ब) ।

[4] एताव (अ, घ, च, ब); एतावता (क, छ) ।

[5] सं० पा०—छत्तए वा जाव चम्मछेदणए ।

[6] × (क, घ, च, छ) ।

[7] किंचिवि (क, घ, च, ब) ।

[8] सं० पा०—खलु जाव विहरिस्सामो ।

[9] भिक्खुणं (छ) ।

[10] सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।

[11] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[1] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अतिरिच्छछिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[2] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[3] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[4] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबभित्तगं वा, अंबपेसियं वा, अंबचोयगं वा, अंबसालगं वा, अंबडगलं[5] वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा सअंडं[6] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं—अफासुयं[7] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[8] °अप्पाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[9] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं[10] वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[11] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[12] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-ओग्गह-पदं

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे[13], °जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

३३. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुं भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं [पुण ?] उच्छुं जाणेज्जा—सअंडं[14]

[1,3] सं० पा०—अप्पडं जाव संताणगं ।

[2] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

[4] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।

[5] °डालगं (अ, क, घ, छ, ब) ।

[6] सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।

[7,9] सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

[8,11] सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।

[10] अंबं वा अंबचित्तगं (घ, च, छ) ।

[12] सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।

[13] सं० पा०—ईसरे जाव एवोग्गहियंसि ।

[14] सं० पा०—सअंडं जाव णो ।

°सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं उच्छुं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—अप्पंडं[1] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं[2] °अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोस अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ।।

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[3] अंतरुच्छुयं वा, उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा सअंडं[4] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा अप्पंडं[1] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा[5] ।।

लसुण-ओग्गह-पदं

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं उवागच्छित्तए, °[6]जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो,

---

[1] सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।

[2] सं० पा०—अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव ।

[3] सेज्जं पुण अभिकखेज्जा (अ) ।

[4] सं० पा०—सअंडं जाव णो ।

[5] सं० पा०—अप्पंडं जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं तहेव ।

[6] सं० पा०—तहेव तिन्निवि आलावगा णवरं ल्हसुण ।

जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।।

४०. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा, [पायए वा ?] । सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४२. से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ।।

४३. से भिक्खू वा भिक्खुणो वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं[1] वा, ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं[2] वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं[3] वा सअंडं[4] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

४४. [5]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

ओग्गह-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा[6], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे

---

१. लहसुण (च); लसण (व) ।

२. डालगं (अ, घ) ।

३. बीयं (क्व) ।

४. सं० पा०—सअंडं जाव णो ।

५. सं० पा०—एवं अतिरिच्छच्छिन्नेवि तिरिच्छ-च्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा ।

६. सं० पा०—आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि ।

तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसा, जाव आउसंतस्स आग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, तांव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

४७. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवाइक्कम्म[2]॥

ओग्गह-पडिमा-पदं

४८. अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं ओग्गहं ओगिण्हित्तए ॥

४९. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा[3]—°जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ॥

५०. अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं 'ओग्गहे ओग्गहिए'[4] उवल्लिस्सामि"—दोच्चा पडिमा ॥

५१. अहावरा तच्चा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिए णो उवल्लिस्सामि"—तच्चा पडिमा ॥

५२. अहावरा चउत्था पडिमा —जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं च ओग्गहे ओग्गहिए उवल्लिस्सामि"—चउत्था पडिमा ॥

५३. अहावरा पंचमा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ, "अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं, णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं—पंचमा पडिमा ॥

५४. अहावरा छट्ठा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव ओग्गहे उवल्लिएज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागए, तं जहा—इक्कडे वा[5] °कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा।

---

[1] आयाणाइं (क, च); आययाणाइं (घ); आयणाइं (छ); आययणा (ब)।

[2] परिहृत्यावग्रहमवग्रहीतुं जानीयात् (वृ)।

[3] सं० पा०—जाएज्जा जाव विहरिस्सामो।

[4] ओग्गहिए ओग्गहे (अ)।

[5] सं० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले।

तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए[1] वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—छट्ठा पडिमा ।।

५५. अहावरा सत्तमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव, तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा—सत्तमा पडिमा ।।

५६. इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं[2] °पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए, एवं च णं विहरंति° ।।

पंचविह-ओग्गह-पदं

५७. सुयं मे आउसं ! ते णं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तंजहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारिय-ओग्गहे, साहम्मिय-ओग्गहे ।।

५८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[3], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।।

---

[1] उक्कडए (अ, ब) ।

[2] सं० पा०—अण्णयरं जहा पिंडेसणाए ।

[3] सं० पा०—सामग्गियं ।

अट्ठमं अज्झयणं

ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[1] ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसेज्जा 'गामं वा, णगरं वा'[2], •खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा•, रायहाणिं वा'[3], से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडा-संताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं—अफासुयं अणेसणिज्जं[5] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

२. [6]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं । तहप्पगारे ठाणे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।।

अस्सिंपडियाए ठाण-पदं

३. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

---

[1] °कंखेइ (अ, घ); °कंखे (च, ब) ।

[2] सं० पा०—णगरं वा जाव रायहाणिं ।

[3] गामं वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

[4] सयंडं (अ, च); सं० पा०—सअंडं जाव मक्कडा ।

[5] सं० पा०—अणेसणिज्जं···लाभे ।

[6] सं० पा०—एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति ।

अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

४. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

६. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-ठाण-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपुरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-

पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा। तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

११. अह पुणेवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा ठाणस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय दालिय-दालिय संथारगं संथारेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता-पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

बहिया निस्सारिय-ठाण-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [ठाणं ?] जाणेज्जा— अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा° ॥

ठाण-पडिमा-पदं

१६. इच्चेयाइं आयतणाइं[१] उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए ॥

१७. तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि[२], अवलंबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा ॥

---

[१] आयाणाइं (क, घ, च)।

[२] आदर्शेषु सूत्रचतुष्टयेऽपि 'उवसज्जेज्जा अवलंबेज्जा, काएण विपरिक्कमादी' इति पाठो वर्तते। किन्तु प्रस्तुतपाठश्चूर्णिवृत्त्योराधारेण स्वीकृतः।

१८. अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, अवलंबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ॥

१९. अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ॥

२०. अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु[1] उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेस-मंसु-लोम-णहे सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ॥

२१. इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं[2] °अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

संथारग-पच्चप्पण-पदं

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ॥

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ॥

उच्चारपासवणभूमि-पदं

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहिज्जा ॥

२५. केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा, उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा ।

---

[1] खलु णो (क, ब) ।

[2] सं० पा०—पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ॥

ठाण-विहि-पदं

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा, उवज्झाएण वा, पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा, गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा, अंतेण वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथारेज्जा ॥

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा ॥

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा ॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा उड्डुए वा वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा वायणिसग्गं वा करेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं° पग्गहियतरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा[1] ॥

३१. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि। —त्ति बेमि ॥

---

[1] चरेज्जा (अ)।

[2] सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं[1] पुण णिसीहियं जाणेज्जा—सअंडं[2] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं—अफासुयं अणेसणिज्जं[3] °ति मण्णमाणे° लाभे संते णो चेतिस्सामि[4] [चेएज्जा ?]

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अप्पंडं[5] °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं[6] °ति मण्णमाणे° लाभे संते चेतिस्सामि[7] [चेएज्जा ?] ॥

अस्सिंपडियाए णिसीहिया-पदं

३. [8]°सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए

---

[1] से (अ, क, घ, च, ब)।

[2] सं० पा०—सअंडं जाव मक्कडा।

[3] सं० पा०—अणेसणिज्जं···लाभे।

[4] वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते।

[5] सं० पा०—अप्पंडं जाव मक्कडा।

[6] सं० पा०—एसणिज्जं···लाभे।

[7] वृत्तौ 'गृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते।

[8] सं० पा०—एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगप्पसूयाइंति।

वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

४. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

६. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

११. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

बहिया निस्सारिय-णिसीहिया-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [णिसीहियं?] जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा° ॥

१६. जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा अभिसंधारेंति णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं आलिंगेज्ज वा विलिंगेज्ज वा, चुंबेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं वा अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज[1] वा ।।

१७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिणं मणेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

———

---

[1] वोच्छि० (च) ।

दसमं अज्झयणं

उच्चारपासवण-सत्तिक्कयं

पाय-पुंछण-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपावसण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे[1] सयस्स पायपुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा ।।

थंडिल-पदं

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणज्जा—सअंडं सपाणं[2] °सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अप्पंडं[3] अप्पपाणं अप्पबीअं[4] °अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स[5] °पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ । तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा

---

[1] उप्पा° (क)।

[2] सं० पा०—सपाणं जाव मक्कडा ।

[3] आदर्शेषु एतत् पदं न दृश्यते, वृत्तौ च उल्लिखितमस्ति । 'सअंड' इति पदस्य प्रतिपक्षं 'अप्पडं' इति पदं स्वतः प्राप्तमस्ति ।

[4] सं० पा०—अप्पबीअं जाव मक्कडा ।

[5] सं० पा०—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिंपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव उद्देसिय चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकड वा जाव बहिया णीहडं वा अणीहड वा ।

अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा° ॥

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही[1] समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थडिलं अपुरिसंतरकडं[2], °अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं[3], °अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

---

[1] पूर्वपाठेभ्यः (१।१७; २।८; ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति।

[2] सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा…अण्णयरंसि।

[3] सं० पा०—पुरिसतरकडं जाव बहिया णीहडं वा…अण्णयरंसि।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं[1] वा, छण्णं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, लित्तं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिल जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि वा[2], °[तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति, बहियाओ[3] वा अंतो साहरंति, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि[4] वा, पासायंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियाकडाए[5], चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुयाए, कोलावासंसि वा[6] दारुयंसि जीवपइट्ठियंसि[7] °सअंडंसि सपाणंसि सबीअंसि सहरियंसि सउसंसि सउदयंसि सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयंसि, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा[8], °मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा°, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा परिसाडिंति वा परिसाडिस्संति वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि

---

[1] पामच्चियं (अ, क, घ, च)।

[2] सं० पा०—मूलाणि वा जाव हरियाणि।

[3] बाहीतो (अ, क)।

[4] हम्मियतलंसि (घ)।

[5] एष पाठो निशीथस्य (१४।२३)। सूत्रानुसारेण स्वीकृतः। सर्वासु आचाराङ्गप्रतिषु 'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति। असौ न शुद्धं प्रतिभाति।

[6] अस्मिन् सूत्रे प्रतिषु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियंसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्दः सकृदेव युज्यते।

[7] सं० पा०—जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा।

[8] सं० पा०—कंदाणि जाव बीयाणि।

वा, कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, 'पतिरिंसु वा पतिरिंति वा'[1] पतिरिस्संति वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि[2] वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—माणुस-रंधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिंजल-करणाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—वेहाणस-ट्ठाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेसु वा, तरुपडण[3]-ट्ठाणेसु वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेसु'[4] वा, विसभक्खण-ट्ठाणेसु वा, अगणिफंडण[5]-ट्ठाणेसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि [थंडिलंसि ?] णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा - तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडयथूभियासु वा, मडयचेइएसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—णदीआययणेसु वा,

---

[1] पइरंसु वा पइरंति वा (घ, च, छ) ।

[2] कडंबाणि (अ, ब) ।

[3] °पवडण (अ, च, छ) ।

[4] × (छ) ।

[5] °फडय (क,ख,घ,च); °पडण (छ) ।

पंकाययणेसु वा, ओघाययणेसु वा, सेयणपहंसि[1] वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु, गवायणीसु[2] वा, खाणोसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा, हत्थंकरवच्चंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइवणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि वा, पुण्णागवणंसि वा[3], अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[4] ॥

२८. से[5] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि[6] अप्पपाणंसि[7] °अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[8] ॥

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा, झामथंडिलंसि[9] वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा ॥

२९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[10], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] °वहंसि (अ); °पथं (छ) ।

[2] गवाणीसु (अ, घ) ।

[3] वा पुण्णगवणंसि वा (अ) ।

[4] अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'गुत्तागारादयः' अनेके शब्दा व्याख्याताः सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिषु च नोपलभ्यन्ते ।

[5] चूर्णौ भिन्नरूपः पाठो व्याख्यातो दृश्यते—'से भिक्खू वा २ राओ वा वियाले वा, वारगं णाम उच्चारमत्तओ, अप्पणगं परायगं वा जाइत्ता अभिग्गहिओ धरेति न णिक्खवति विगिंचति वोसिरति विसोहिति निल्लेवेति से तमादाए झामथंडिलादीसु परिट्ठावेति' ।

[6] °लोइयंसि (अ) ।

[7] सं० पा०—अप्पपाणंसि जाव मक्कडा ।

[8] वोसिरेज्जा उच्चारपासवणं वोसिरित्ता (क्व) ।

[9] द्रष्टव्यम्—१।३ ।

[10] सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

एगारसमं अज्झयणं

सद्द-सत्तिक्कयं

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा [अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा ?] मुइंग-सद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा'[1], झल्लरीसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि विततांइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—वीणा-सद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, बद्धीसग[2]-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव[3]-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंकुण[4]-सद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं तालसद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—संख-सद्दाणि

---

[1] × (क, च)।

[2] वप्पी° (घ, च); पप्पी° (छ); वव्वी° (क्व)।

[3] पणय (अ, छ, ब)।

[4] ढकुण (अ)।

वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा, खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपिरिय[1]-सद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं झुसिराइं[2] कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा[3], °उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा°, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसरपंतियाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[4] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[5] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[7] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

---

१. °परि (अ, वृ); परिपरिय (क, च, छ, ब)।

२. प्रथम-तृतीय-सूत्रयोः 'विततांइं सद्दाइं, ताल-सद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-सूत्रयोः सद्दाइं तताइं, सद्दाइं झुसिराइं' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयोर्व्यत्य-योस्ति ।

३. सं० पा०—फलिहाणि वा जाव सराणि ।

४-७. सं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा[1], °कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[2] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा[3], °कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[4] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—'जूहिय-ट्ठाणाणि'[5] वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[8] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[10] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[11] °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति, तं जहा—खुड्डियं वारियं परिवुतं[12] मंडियालंकियं[13] निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए

---

[1] स० पा०—हत्थिट्ठाण-करणाणि वा जाव कविंजल ।

[2] सं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।

[3] सं० पा०—हत्थि-जुद्धाणि वा जाव कविंजल ।

[4] सं० पा०—तहप्पगाराइं णो ।

[5] निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे 'उज्जूहिया ठाणाणि' इति पाठो विद्यते ।

[6] सं० पा०—तहप्पगाराइं णो ।

[7] स० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति ।

[8] सं० पा०—तहप्पगाराइं णो ।

[9] सं० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति ।

[10] मं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।

[11] सं० पा०—भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं ।

[12] परिभुयं (क्व); मण्डितालंकृतां बहुपरिवृतां (वृ) ।

[13] मंडिय° (घ, छ) ।

णीणिज्जमाणं पेहाए, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[1] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि[2] वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

सद्दासत्ति-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो परलोइएहिं सद्देहिं, णो सुएहिं सद्देहिं, णो असुएहिं सद्देहिं, णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहिं, णो इट्ठेहिं सद्देहिं, णो कंतेहिं सद्देहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।।

२०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,[3] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] सं० पा०—तहप्पगाराइं णो ।

[2] मज्झ° (छ, व) ।

[3] सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

बारसमं अज्झयणं

रूव-सत्तिक्कयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—गंथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा, संघाइमाणि वा, कट्ठकम्माणि[1] वा, पोत्थकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, दंतकम्माणि वा[2], पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, ‘विहाणि वा, वेहिमाणि वा’[3], अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं [रूवाइं ?] चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

२. [4]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासाइ, तं जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसरपंतियाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

---

[1] कट्ठाणि (क, घ, च)।

[2] वा मालकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, ब); वृत्तौ चूर्ण्यां च न व्याख्यातम्, अतो न गृहीतम्।

[3] विविहाणि वा वेढिमाइं (अ, क, घ, छ, ब)। निशीथस्य १२ उद्देशकस्य १७ सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः। आचाराङ्ग-प्रतिषु लिपि-दोषाद् वर्णविपर्ययो जात इति प्रतीयते।

[4] सं० पा०—एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि।

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ तं जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, कुक्कड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-

तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ तं जहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं मंडियालंकियं निवुज्भमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाणं पेहाए, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्भिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

रूवासत्ति-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं रूवेहिं, णो परलोइएहिं रूवेहिं, णो सुएहिं रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं, णो दिट्ठेहिं रूवेहिं, णो अदिट्ठेहिं रूवेहिं, णो इट्ठेहिं रूवेहिं, णो कंतेहिं रूवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्भेज्जा, णो मुज्भेज्जा, णो अज्भोववज्जेज्जा ।।

१७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि° ।

—त्ति बेमि ।।

तेरसमं अज्झयणं

परकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१. परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं—णो तं साइए[1], णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

२. 'से से'[2] परो पादाइं आमज्जेज्ज वा, 'पमज्जेज्ज वा'[3]—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३. से से परो पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा —णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४. से से परो पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५. से से परो पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए[4] वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज[5] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६. से से परो पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७. से से परो पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

८. से से परो पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

९. से से परो पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

[1] सायए (घ) ।

[2] सिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।

[3] × (अ, क, च, छ, ब) ।

[4] निशीथे सर्वत्रापि 'तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा' इति पाठो विद्यते ।

[5] भिलं° (छ) ।

१०. से से परो पादाओ खाणुं[1] वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा--णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

११. से से परो पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

काय-परिकम्म-पदं

१२. से से परो कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१३. से से परो कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए णो तं णियमे ।।

१४. से से परो कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज[2] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१५. से से परो कायं लोद्धेण[3] वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१६. से से परो कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१७. से से परो कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१८. से से परो कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

१९. से से परो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०. से से परो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२१. से से परो कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२२. से से परो कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२३. से से परो कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

[1] खाणुयं (क, घ, च, ब) ।

[2] भिल्लंगेज्ज (च) ।

[3] लोद्देण (अ, क) ।

२४. 'से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२५. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे'[1] ॥

२६. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२७. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

गंड-परिकम्म-पदं

२८. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं[2] वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२९. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३०. से से परो कायंसि गंडं वा[3], •अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३१. से से परो कायंसि गंडं वा[4], •अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३२. से से परो कायंसि गंडं वा[5], •अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे । से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे][6] ॥

---

[1] २४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिषु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ) ।

[2] पुलयं (अ, च); पुलइयं (क, छ, ब); पुलइं (घ)। एवं सर्वासु प्रतिषु 'पिडयं' पाठः नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठानां नार्थोऽवगम्यते । निशीथे तृतीयोद्देशके चतुस्त्रिंशत्तम-सूत्रे 'पिडयं' पाठः । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठः स्वीकृतः । उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते ।

३,४,५. सं० पा०—गंडं वा जाव भगंदलं ।

[6] २४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तर्गते सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिषु नोपलभ्यते ।

३३. से से परो कायंसि गंडं वा[1], °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३४. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

मल-णीहरण-पदं

३५. से से परो कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३६. से से परो अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वाल-रोम-पदं

३७ से से परो दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज[2] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पदं

३८. से से परो सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

पाद-परिकम्म-पदं

३९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४०. [3]°से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं तेल्लेण वा घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

---

[1] सं० पा०—गंडं वा जाव भगंदलं ।

[2] संबद्धेज्ज (च); संवज्जेज्ज (छ) ।

[3] सं० पा०—एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो ।

४४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

काय-परिकम्म-पदं

४९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

५६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, लिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

गंड-परिकम्म-पदं

६५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे] ॥

७०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

मल-णीहरण-पदं

७२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वाल-रोम-पदं

७४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पदं

७५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

आभरण-आबिंधण-पदं

७६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं[1] वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आबिंधेज्ज[2] वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

---

[1] सुवण्णगेवेयं (घ)।

[2] आबंधेज्ज (घ, च)।

पाद-परिकम्म-पदं

७७. से से परो आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।[1]
[एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।][2] ॥

तिगिच्छा-पदं

७८. से से परो सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,
से से परो असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,
से से परो गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७९. कडुवेयणा[3] कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति ॥

८०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

[1,2] अस्मात् सूत्रात् पुरतोपि 'पादाइं संवाहेज्ज वा' (सू० ३) अतः प्रभृति 'सीसाओ लिक्खं वा' (सू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते' परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीयः संकेतः प्रतिषु प्राप्यते । "एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि" इति सूत्रमत्रानावश्यकं प्रतिभाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो लिपिदोषेण अन्यथा जातः । इत्यपि सम्भाव्यते 'एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि' इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्यां वाचनायां उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य पाठः प्रवेदितः, अपरस्यां च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पृथग्रूपेण प्रतिपादितः । वर्तमाने समुपलब्धः पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते । तेनास्माभिरुक्तसूत्रं कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

[3] कम्मकय° (च) ।

चउद्दसमं अज्झयणं

अण्णुण्णकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१. अण्णमण्णकिरियं[1] अज्झत्थियं संसेसियं—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

२. से अण्णमण्णं पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३. [2]°से अण्णमण्णं पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४. से अण्णमण्णं पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५. से अण्णमण्णं पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६. से अण्णमण्णं पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७. से अण्णमण्णं पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

८. से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

९. से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

[1] अण्णोण° (वृ) । त्रयोदशाध्ययने 'से भिक्खू वा २' इति पाठो नास्ति । चतुर्दशाध्ययने प्रतिषु विद्यते, किन्तु वृत्तौ उभयत्रापि नास्ति व्याख्यातः ।

[2] सं० पा०—सेसं तं चेव, एयं खलु° जइज्जासि ।

१०. से अण्णमण्णं पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

११. से अण्णमण्णं पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

काय-परिकम्म-पदं

१२. से अण्णमण्णं कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१३. से अण्णमण्णं कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१४. से अण्णमण्णं कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१५. से अण्णमण्णं कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१६. से अण्णमण्णं कायं सोओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१७. से अण्णमण्णं कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

१८. से अण्णमण्णं कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वण-परिकम्म-पदं

१९. से अण्णमण्णं कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०. से अण्णमण्णं कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२१. से अण्णमण्णं कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२२. से अण्णमण्णं कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२३. से अण्णमण्णं कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२४. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२५. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२६. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२७. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

गंड-परिकम्म-पदं

२८. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२९. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३०. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३१. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा –णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३२. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा –णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे । से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे ।] ।।

३३. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३४. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

मल-णीहरण-पदं

३५. से अण्णमण्णं कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३६. से अण्णमण्णं अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वाल-रोम-पदं

३७. से अण्णमण्णं दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्ख-रोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पदं

३८. से अण्णमण्णं सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

पाद-परिकम्म-पदं

३९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

काय-परिकम्म-पदं

४९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

५६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

गंड-परिकम्म-पदं

६५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे] ॥

७०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिंदित्ता

वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

मल-णीहरण-पदं

७२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वाल-रोम-पदं

७४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पदं

७५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

आभरण-आबिंधण-पदं

७६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आबिंधेज्ज वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

७७. से अण्णमण्णं आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

तिगिच्छा-पदं

७८. से अण्णमण्णं सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे ।
से अण्णमण्णं असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे ।
से अण्णमण्णं गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७९. कडुवेयणा कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति ।।

८०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ॰ ।

—त्ति बेमि ।।

पनरसमं अज्झयणं

भावणा

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि होत्था—१. हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते २. हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए ३. हत्थुत्तराहिं जाए ४. हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ५. हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

२. साइणा भगवं परिनिव्वुए ।।

गब्भ-पदं

३. समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए—सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु वीतिक्कंताए—पण्णहत्तरीए[1] वासेहिं, मासेहि य अद्धणवमेहिं[2] सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे—आसाढसुद्धे, तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[3], महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं[4] पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे[5] दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि[6] उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसि गब्भं वक्कंते ।।

---

[1] पण्णत्तरीए (अ, क, घ, च) ।

[2] °णवमसेसेहिं (क, घ, च) ।

[3] जोगोवगएणं (अ, च) ।

[4] अहाउयं (क, घ, च) ।

[5] °द्दीवेणं (क, घ, च, छ, ब) ।

[6] °वेसंमि (छ) ।

चवण-पदं

४. समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ, सुहुमे णं से काले पण्णत्ते ।।

गब्भसाहरण-पदं

५. तओ णं 'समणस्स भगवओ महावीरस्स'[1] अणुकंपए[2] णं देवे णं "जीयमेयं" ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसंसि णायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठ-सगोत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करेत्ता[3] कुच्छिसि गब्भं साहरइ ।।

६. जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे, तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिसि साहरइ ।।

७. समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि[4] जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—चेत्तसुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया ।।

९. जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया[5] अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य

---

[1] समणे भगवं महावीरे (अ, क, घ, च, छ, ब); कल्पसूत्रे (३०) 'समणे भगवं महावीरे' इति पाठोस्ति, किन्तु 'हरिणेगमेसिणा' 'साहरिए' इति पदयोः सन्दर्भे स युक्तोस्ति, किन्तु अत्र 'साहरइ' इति क्रियापदस्य सन्दर्भे प्रथमान्तोसौ नैव युक्तः स्यात् ।

[2] हियअणु० (छ) ।

[3] करेत्ता अव्वावाहं अव्वावाहेणं (चू); कल्पसूत्रे (३०) प्येष पाठो दृश्यते ।

[4] वि न (च); न (छ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

[5] आरोया० (क, घ, च) ।

ओवयंतेहि य उप्पयंतेहि य[1] एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते[2] देव-कहक्कहे उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ॥

१०. जण्णं[3] रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं[4] रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, चुण्णवासं च[5], हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिंसु ॥

११. जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं[6] तित्थयराभिसेयं च करिंसु ॥

नामकरण-पदं

१२. जओ णं पभिइ समणे भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भं आहुए[7], तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ[8] ॥

१३. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि सुचिभूयंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेत्ता बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण विच्छड्डेंति विगोवेंति[9] विस्साणेंति, दायारे[ए ?]सु[10] णं दायं[11] पज्जभाएंति, विच्छड्डित्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता दायारे[ए ?]सु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेंति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं करेंति[12]—जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि

---

[1] य संपयतेहि य (क, घ, च)।
[2] °वाते णं (अ, क, च, छ)।
[3] जं (च, छ)।
[4] तं (च, छ)।
[5] च पुप्फवासं च (क, घ, ब)।
[6] °सुइ °(छ)।
[7] आहए (क्व)।
[8] पवि° (अ)।
[9] विग्गो° (अ, क, घ, च)।
[10] 'ओवाइय' सूत्रे 'दाणं च दाइयाणं परिभाय-इत्ता' (सू० २३) इति पाठो दृश्यते। 'राय-पसेणइय' सूत्रे 'दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता' (सू० ६९५) इति पाठो विद्यते। 'कप्पसुत्ते' 'दाणं दायारेहिं परिभाएत्ता दाइयाणं परिभा-एत्ता' (सू० १११) इति पाठोस्ति। आलोच्य-पाठस्य विविधरूपावलोकनेन इत्यनुमीयतेस्य लिपिकाले परिवर्तनं जातम्। वस्तुतः 'दाया-एसु इति पाठः सङ्गतोस्ति। अस्मिन् पाठे सत्येव 'पज्जभाएंति' इति विभागार्थस्य धातु-पदस्य क्षयपदस्य दायपदस्य च सार्थकता स्यात्।
[11] दाणं (घ, छ)।
[12] कारवेंति (क, च); करावेंति (घ)।

गब्भे आहुए[1], तओ णं पभिइ इमं कुलं, विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे "वद्धमाणे" ।।

बाल-पदं

१४. तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, [तं जहा—खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेल्लावणधाईए, अंकधाईए[2],] अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकंदरमल्लीणे[3] व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ ।।

विवाह-पदं

१५. तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये[4] विणियत्तबाल-भावे[5] अप्पुस्सुयाइं[6] उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।।

नाम-पदं

१६. समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. अम्मापिउसंतिए "वद्धमाणे" २. सह-सम्मुइए "समणे" ३. "भीमं भयभेरवं उरालं अचेलयं परिसहं सहइ" त्ति कट्टु देवेहिं से णामं कयं "समणे भगवं महावीरे" ।।

परिवार-पदं

१७. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं । तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. सिद्धत्थे ति वा २. सेज्जंसे ति वा ३. जसंसे ति वा ।।

१८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठ-सगोत्ता । तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. तिसला ति वा २. विदेहदिण्णा ति वा ३. पियकारिणी ति वा ।।

१९. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए 'सुपासे' कासवगोत्तेणं ।।

२०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया 'णंदिवद्धणे' कासवगोत्तेणं ।।

२१. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा[7] भइणी 'सुदंसणा' कासवगोत्तेणं[8] ।।

---

१. आहते (च) ।

२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

३. समल्लीणे (अ, घ) ।

४. °परिणय (घ, च, छ, ब) ।

५. विणिवित्त° (च) ।

६. अणुस्सुयाइं (अ, ब) ।

७. कणिट्ठा (घ, च) ।

८. कासवी° (च) ।

२२. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया' कोडिण्णागोत्तेणं ॥

२३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. अणोज्जा ति वा २. पियदंसणा ति वा ॥

२४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं[1] । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. सेसवती ति वा २. जसवती ति वा ॥

माउ-पिउ-काल-पदं

२५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । ते णं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता, छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं[2] आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता, अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा[3] कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा । तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते णायकुल-विणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता, दायारे [ए ?]सु[4] णं 'दायं[5] पज्जभाएत्ता'[6], संवच्छरं दलइत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था—

संगहणी-गाहा

संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स ।
तो अत्थ-संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥

---

[1] कोसिया° (घ) ।
[2] सारक्खण° (घ, च) ।
[3] सुसिय° (अ, घ); झुसिय°(च); झोसिय° (ब) ।
[4] द्रष्टव्यम्—१५।१३ सूत्रस्य द्वितीयं पाद-टिप्पणम् ।
[5] दाणं (अ) ।
[6] दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।

एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा ।
सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति[१] ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं[२] च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया ।
बोहिंति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥
बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे ।
लोगंतिया विमाणा, अट्ठसु वत्था असंखेज्जा ॥५॥
एए देवणिकाया, भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं ।
सव्वजगजीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि ॥६॥

देवागमण-पदं

२७. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलसमुदएणं सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं दुरुहंति, सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तेणेव झत्तिवेगेण उवट्ठिया ॥

अलंकरण-सिवियाकरण-पदं

२८. तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरित्ता एगंतमवक्कमेति, एगंमवक्कमेत्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहण्णति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता एगं महं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति। तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणय-

---

[१] उ (घ) ।

[२] असियं (अ, घ, छ, ब) ।

रयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सिंहासणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति, अब्भंगेत्ता गंधकसाएहिं[1] उल्लोलेति, उल्लोलित्ता सुद्धोदएणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता जस्स जंतपलं[2] सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं सीतएणं[3] गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता ईसिंणिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं[4] छेयायरियकणग-खचियंतकम्मं[5] हंसलक्खणं पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता हारं अद्धहारं उरत्थं एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-मउड-रयणमालाइं आविंधावेति, आविंधावेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति, समालंकेत्ता दोच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइ, तं जहा—ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर-कुंजर-रुरु-सरभ-चमर-सद्दूलसीह-वणलय-विचित्तविज्जाहर-मिहुण-जुयल-जंत-जोगजुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरूवित-मिसिमिसित-रूवगसहस्सकलियं, ईसिंभिसमाणं, भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवरलंबूस-पलंबंतमुत्तदामं, हारद्धहार-भूसणसमोणयं, अहियपेच्छणिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, 'असोगलयभत्तिचित्तं, कंदलयभत्तिचित्तं'[6] णाणालयभत्ति-विरइयं सुभं चारुकंतरूवं णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं[7] दरिसणीयं सुरूवं ।

संगहणी-गाहा

सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स ।
ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥७॥

---

१. °कासायिएहिं (च, छ) ।
२. णं मुल्लं (अ, घ, च, ब) ।
३. सरसीएण (क, घ, च) ।
४. °लालपेसियं (घ); °लालपेलवं (छ); °लालप्पेसलव (ब) ।
५. मसूरियकणयकणयंत° (घ) ।
६. × (अ); असोगलयभत्तिचित्तं (क) ।
७. सुभं चारुकंतरूवं पासादीयं (अ, क, घ, च, ब) ।

सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं[1] ।
सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ।।८।।

आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी ।
खोमयवत्थणियत्थो[2], जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ।।९।।

छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण[3] जिणो ।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ।।१०।।

सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं ।
वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ।।११।।

पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमपुलएहिं[4] ।
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ।।१२।।

पुरओ सुरा वहंती, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ।।१३।।

वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ।।१४।।

सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ।।१५।।

वरपडहभेरिझल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।
गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ।।१६।।

ततविततं घणझुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं ।
वायंति तत्थ देवा, बहूहिं आणट्टगसएहिं ।।१७।।

अभिणिक्खमण-पदं

२९. तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'[5] जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए[6] पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए, चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए[7], सदेवमणुयासुराए परिसाए समण्णिज्जमाणे-समण्णिज्जमाणे

---

[1] °चिचइयं (घ) ।
[2] खोमिय° (क, छ, ब) ।
[3] सुंदरेण (क, घ, च, ब) ।
[4] साहट्टु° (अ, क, च, ब) ।
[5] हत्थुत्तर° (अ, घ, छ) ।
[6] वीयाए (छ) ।
[7] °वाहिणीयाए (क, घ, व) ।

उत्तरखत्तियकुंडपुर-संणिवेसस्स मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ईसिंरयणिप्पमाणं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं-सणियं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ, पच्चोयरित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ। तओ णं वेसमणे देवे जन्नुव्वायपडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं[1] आभरणालंकारं पडिच्छइ ।।

लोय-पदं

३०. तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।।

३१. तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नुव्वायपडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता "अणुजाणेसि भंते" त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ ।।

सामाइयचरित्त-गहण-पदं

३२. तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ, करेत्ता, "सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं" ति कट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं मणुयपरिसं च आलिक्ख-चित्तभूयमिव ठवेइ ।

संगहणी-गाहा

दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण ।
खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ।।१८।।
पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहितं ।
साहट्टुलोमपुलया[2], पयया देवा निसामिंति ।।१९।।

मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं

३३. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने—अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं[3] मणोगयाइं भावाइं जाणेइ ।।

---

[1] पडिसाडएणं (छ) ।
[2] साहट्ठ° (अ, क, ब) ।
[3] °मणुस्साणं (छ) ।

अभिग्गह-पदं

३४. तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं[1] एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—“बारस-वासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे[2] जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति[3], तं जहा—दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया[4] वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे ‘अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते’[5] सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइस्सामि ॥”

विहार-पदं

३५. तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता ‘वोसट्ठकाए चत्तदेहे’[6] दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मारं[7] गामं समणुपत्ते ॥

३६. तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तीए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेणं ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं[8], अणुत्तरेणं सुचरियफलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

३७. एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिंसु[9]—दिव्वा वा माणुसा[10] वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण[11]-माणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

केवलनाण-लद्धि-पदं

३८. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस-वासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, पाईण-गामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए

---

१. तओणं इमं (छ) ।
२. चियत्त ० (च, छ, ब) ।
३. समुप्पज्जंति (घ, छ, ब) ।
४. तेरिच्छा (च, ब) ।
५. × (अ, क, घ, च, ब) ।
६. वोसट्ठचत्तदेहे (क,घ); वोसट्ठचियत्तदेहे (छ) ।
७. कुमार (क, घ, च, छ, ब) ।
८. कम्मेण (क, घ, च, छ) ।
९. ०पज्जंति (क, घ, ब) ।
१०. माणुस्सा (च) ।
११. अद्दीण (अ, घ, च) ।

उजुवालिया[1] उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, उड्ढंजाणुअहोसिरस्स, धम्मज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अव्वाहए, णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

३९. से भगवं अरिहं[2] जिणे जाए[3], केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, तं जहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं[4] जाणमाणे पासमाणे, एवं च णं विहरइ ।।

देवागमण-पदं

४०. जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे[5] •पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे तण्णं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि[6] य[7] •उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे° उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ।।

धम्मोवदेस-पदं

४१. तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ पच्छा मणुस्साणं ।।

४२. तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं णिग्गंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ[8] परूवेइ, तं जहा—पुढविकाए[9] •आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°, तसकाए ।।

अहिंसामहव्वय-पदं

४३. पढमं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा थावरं वा—णेव सयं पाणाइवायं करेज्जा, णेवण्णेहिं पाणाइवायं

---

१. उज्जु° (घ, ब) ।

२. अरहा (अ, छ, ब); अरहं (क, घ) ।

३. जाणए (घ, च) ।

४. °भावेणं (अ) ।

५. सं० पा०—कसिणे जाव समुप्पणे ।

६. ओवयंतेहि २ (अ. ब) ।

७. सं० पा०—ओवयंतेहि य जाव उप्पिंजलगभूए ।

८. भासइ पण्णवइ (ब) ।

९. सं० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए ।

कारवेज्जा, णेवण्णं पाणाइवायं करंतं समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पदं

४४. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए[1] त्ति । केवली बूया—इरियाअसमिए से णिग्गंथे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए त्ति पढमा भावणा ।।

४५. अहावरा दोच्चा भावणा—मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए[2] पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा । मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'[3] त्ति दोच्चा भावणा ।।

४६. अहावरा तच्चा भावणा—वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया[4] °अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया° भूओवघाइया—तहप्पगारं वइं णो उच्चारिज्जा । जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ।।

४७. अहावरा चउत्था भावणा—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए । केवली बूया—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए से णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा[5], °वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए त्ति चउत्था भावणा ।।

४८. अहावरा पंचमा भावणा—आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाणभोयणभोई । केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा[6], °वत्तेज्ज वा परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाणभोयणभोई त्ति पंचमा भावणा ।।

---

[1] अइरियासमिए (अ); अणइरियासमिते (छ) ।

[2] अहिगरणकरे कलहकरे (घ, वृ) ।

[3] णो जे अमणे पावए (च) ।

[4] सं० पा०—सकिरिया जाव भूओवघाइया ।

[5] सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।

[6] सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।

४९. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ। पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ॥

सच्चमहव्वय-पदं

५०. अहावरं दोच्चं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वइदोसं—से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवण्णेणं मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि[1] °निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

सच्चमहव्वयस्स भावणा-पदं

५१. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी। केवली बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा[2] मोसं वयणाए। अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासित्ति पढमा भावणा ॥

५२. अहावरा दोच्चा भावणा—कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया। केवली बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए। कोहं[3] परिजाणइ से णिग्गंथे, ण य कोहणे सियत्ति दोच्चा भावणा ॥

५३. अहावरा तच्चा भावणा—लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिया। केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए। लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

५४. अहावरा चउत्था भावणा—भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो भयभीरुए सिया। केवली बूया—भयप्पत्ते भीरू समावदेज्जा मोसं वयणाए। भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

५५. अहावरा पंचमा भावणा—हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिया। केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए। हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सियत्ति पंचमा भावणा ॥

५६. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए[4] °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए° आणाए आराहिए यावि भवति। दोच्चे भंते ! महव्वए[5] °मुसावायाओ वेरमणं° ॥

---

[1] सं० पा०—पडिक्कमामि जाव वोसिरामि।

[2] °वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब)।

[3] कोवं (च, ब)।

[4] सं० पा०—फासिए जाव आणाए।

[5] सं० पा०—महव्वए···।

अतेणगमहव्वय-पदं

५७. अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं अदिण्णं गेण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गेण्हंतं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए[1] °तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पदं

५८. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, अदिण्णं गेण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई त्ति पढमा भावणा ॥

५९. अहावरा दोच्चा भावणा—अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई । केवली बूया—अणणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा[2], तम्हा अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई त्ति दोच्चा भावणा ॥

६०. अहावरा तच्चा भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि अणोग्गहियंसि एतावताव अणोग्गहणसीलो अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

६१. अहावरा चउत्था भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

६२. अहावरा पंचमा भावणा—अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा ॥

६३. एतावताव महव्वए सम्मं[3] °काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए°

---

[1] सं० पा०—जावज्जीवाए जाव वोसिरामि ।

[2] गिण्हेज्जा (घ) ।

[3] सं० पा०—सम्मं जाव आणाए ।

आणाए आराहिए यावि भवइ । तच्चे भंते महव्वए[1] •अदिण्णादाणाओ वेरमणं° ॥

बंभचेरमहव्वय-पदं

६४. अहावरं चउत्थं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा,[2] •णेवण्णेहिं मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुज्जाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

बंभचेरमहव्वयस्स भावणा-पदं

६५. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सियत्ति पढमा भावणा ॥

६६. अहावरा दोच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं[3] इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[4] •संतिकेवलीपण्णत्ताओ° धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सियत्ति दोच्चा भावणा ॥

६७. अहावरा तच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए[5] सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया[6] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

६८. अहावरा चउत्था भावणा—णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई । केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोई त्ति, संतिभेदा[7] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा ।

---

[1] सं० पा०—महव्वए···।

[2] सं० पा०—गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि ।

[3] मणोहराइं २ (क, घ); मणोहराइ रूवाइं मणोहराइं (छ) ।

[4] सं० पा०—संतिविभंगा जाव धम्माओ ।

[5] सुमरित्तए (अ, क, घ, छ, ब) ।

[6] सं० पा०—संतिभेया जाव भंसेज्जा ।

[7] सं० पा०—संतिभेदा जाव भंसेज्जा ।

णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ।।

६९. अहावरा पंचमा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया[1] °संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सियत्ति पंचमा भावणा ।।

७०. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए[2] °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए° आराहिए यावि भवइ । चउत्थे भंते ! महव्वए[3] °मेहुणाओ वेरमणं° ।।

अपरिग्गहमहव्वय-पदं

७१. अहावरं पंचमं भंते ! महव्वयं—सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि[4]—से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णंपि परिग्गहं गिण्हंतं ण समणुजाणिज्जा[5] °जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ।।

अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पदं

७२. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—सोयओ[6] जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ । मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा । केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं सज्जमाणे रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते[7] भिक्खू परिवज्जए ।।२०।।

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा भावणा ।।

७३. अहावरा दोच्चा भावणा—चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ ।

---

[1] सं० पा०—संतिभेया जाव भंसेज्जा ।
[2] सं० पा०—फासिए जाव आराहिए ।
[3] सं० पा०—महव्वए…।
[4] पच्चाइक्खामि (अ, क, घ, च) ।
[5] सं० पा०—समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि।
[6] सोतत्तेणं (अ, क, छ, ब) ।
[7] तं (अ, क, घ, ब) ।

मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[1], °णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—निग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[2] °गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[3] °संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं ।
'रागदोसा उ जे तत्थ, ते'[4] भिक्खू परिवज्जए ॥२१॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा भावणा॥

७४. अहावरा तच्चा भावणा—घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ। मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[5], °णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—निग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[6] °गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा[7] °संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का[8] ण[9] गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥२२॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति तच्चा भावणा॥

७५. अहावरा चउत्था भावणा—जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो सज्जेज्जा[10], °णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे[11] °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा[12] °संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥२३॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति चउत्था भावणा॥

---

[1] सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
[2] सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
[3] सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
[4] रागो दोसो उ जो तत्थं, तं (अ, क)।
[5] सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
[6] सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
[7] सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
[8] सक्को (छ)।
[9] × (अ, क, च, ब)।
[10] सं० पा०—सज्जेज्जा जाव णो।
[11] सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
[12] सं० पा०—संतिभेदा जाव भंसेज्जा।

७६. अहावरा पंचमा भावणा—फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे[1] °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥२४॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति त्ति पंचमा भावणा ॥

७७. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए[2] आणाए आराहिए यावि भवइ। पंचमे भंते! महव्वए[3] °परिग्गहाओ वेरमणं° ॥

७८. इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहि[4] य भावणाहिं संपण्णे अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता, पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता आणाए आराहित्ता यावि भवइ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।

२. अहिट्ठिए (अ, क, घ, च, छ, ब); प्रथममहाव्रतसूत्रे (४९) 'किट्टिए अवट्ठिए' इति पाठोस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्ठिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रस्य वृत्तेश्चानुसारेणात्रापि 'अवट्ठिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृतः।

३. सं० पा०—महव्वए···।

४. पण° (छ, ब)।

सोलसमं अज्झयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पद

१. अणिच्चमावासमुवेंति जंतुणो, पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं।
विऊसिरे[1] विण्णु अगारबंधणं, अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥

पव्वय-दिट्ठंत-पदं

२. तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं, अणेलिसं विण्णु चरंतमेसणं।
तुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा, सरेहिं संगामगयं व कुंजरं ॥
३. तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए, ससद्दफासा फरुसा उदीरिया।
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेयसा, गिरिव्व वाएण ण संपवेवए ॥

रुप्प-दिट्ठंत-पदं

४. उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे, अकंतदुक्खी तसथावरा दुही।
अलूसए सव्वसहे महामुणी, तहा हि से सुस्समणे समाहिए ॥
५. विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ ॥
६. दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा, महव्वया खेमपदा पवेदिता।
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया, तमं व तेजो तिदिसं पगासया ॥
७. सितेहिं भिक्खू असिते परिव्वए, असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं, ण मिज्जति कामगुणेहिं पंडिए ॥

---

[1] विउ° (क, च, ब); वियो° (घ); °विओ (छ)।

८. तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो, धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा[1] ।।

भुजंगतय-दिट्ठंत-पदं

९. से हु प्परिण्णा समयंमि वट्टइ, णिराससे उवरय-मेहुणे[2] चरे ।
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे[3], विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ।।

समुद्द-दिट्ठंत-पदं

१०. जमाहु ओहं सलिलं अपारगं, महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं ।
अहे य[4] णं परिजाणाहि पंडिए, से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ।।
११. जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'[5], जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ ।
अहा तहा बंधविमोक्ख जे विऊ, से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ।।
१२. इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'[6], ण विज्जइ बंधण जस्स किंचिवि ।
से हु णिरालंबणे अप्पइट्ठिए, कलंकली भावपहं विमुच्चइ ।।

—त्ति बेमि ।।

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर—९६९१०
अनुष्टुप् श्लोक—३००६, अक्षर १८

---

१. जोइणो (अ, घ, ब) ।
२. मेहुणा (क, वृ) ।
३. चए (घ) ।
४. व (अ, क, ब) ।
५. माणवेहिं (अ, क) ।
६. परलोयतेसुवि (च) ।

सूयगडो

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

समए

पढमो उद्देसो

बंध-मोक्ख-पदं

१. बुज्झेज्ज तिउट्टेज्जा बंधणं परिजाणिया ।
किमाह[1] बंधणं वीरे[2] ? किं वा जाणं तिउट्टइ ? ॥
२. चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि ।
अण्णं वा अणुजाणाइ[3] एवं[4] दुक्खा ण मुच्चई ॥
३. सयं तिवातए पाणे अदुवा अण्णेहिं घायए ।
हणंतं वाणुजाणाइ वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥
४. जस्सिं[5] कुले समुप्पण्णे जेहिं वा संवसे णरे ।
ममाती लुप्पती बाले अण्णमण्णेहिं मुच्छिए ॥
५. वित्तं सोयरिया[6] चेव सव्वमेयं ण ताणइ ।
'संधाति जीवितं चेव'[7] कम्मणा[8] उ तिउट्टइ ॥
६. एए गंथे विउक्कम्म एगे समणमाहणा ।
अयाणंता विउस्सिता[9] सत्ता कामेहिं माणवा ॥

पंचमहब्भूत-पदं

७. संति पंच महब्भूया[10] इहमेगेसिमाहिया ।
पुढवी आऊ[11] तेऊ वाऊ आगासपंचमा ॥

---

[1] किमाहु (चू) ।
[2] धीरे (चू) ।
[3] अणुजाणाए (क) ।
[4] एव (क) ।
[5] जेसिं (ख); जंसी (चू) ।
[6] सोअरिया (ख); सोदरिया (चू) ।
[7] संखाए जीवियं चेव (क, ख, वृ, चूपा) ।
[8] कम्मुणा (ख); कम्मणो (वृ); कम्मणा (वृपा) ।
[9] वियोसिया (विओसिता), विउस्सिता (चू) ।
[10] महब्भूता (चू) ।
[11] आऊ य (ख) ।

८. एए पंच महब्भूया तेब्भो[१] एगो[२] त्ति आहिया ।
अह[३] एसिं[४] 'विणासे उ'[५] विणासो होइ देहिणो[६] ॥

एगप्प-वाद-पदं

९. जहा य पुढवीथूभे एगे णाणा हि दीसइ ।
एवं भो ! कसिणे लोए विण्णू णाणा हि दीसए[७] ॥
१०. एवमेगे[८] त्ति जंपंति मंदा आरंभणिस्सिया ।
एगे[९] किच्चा सयं[१०] पावं 'तिव्वं दुक्खं'[११] णियच्छइ ॥

तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पदं

११. पत्तेयं कसिणे आया जे बाला जे य पंडिया ।
संति पेच्चा[१२] ण ते संति णत्थि सत्तोववाइया ॥
१२. णत्थि पुण्णे व पावे वा णत्थि लोए इओ परे[१३] ।
सरीरस्स विणासेणं विणासो होइ देहिणो[१४] ॥

अकारक-वाद-पदं

१३. कुव्वं च कारयं[१५] चेव सव्वं कुव्वं ण विज्जइ[१६] ।
एवं अकारओ अप्पा 'ते उ एवं'[१७] पगब्भिया ॥
१४. जे ते उ वाइणो एवं लोए तेसिं कुओ[१८] सिया ? ।
तमाओ ते तमं जंति मंदा आरंभणिस्सिया[१९] ॥

---

१. ते भो (क, चूपा) ।
२. एक्को (क) ।
३. अध (चू) ।
४. तेसिं (ख, चू) ।
५. विणासेणं (क्व); विसंयोगे (चू) ।
६. देहिणं (क, ख, चू) ।
७. वट्टइ (क, वृ) ।
८. एवमेगो (चू) ।
९. एगो (चू) ।
१०. यणं (क) ।
११. तेणं तिव्वं (क, चू); तेणं तिप्पं (चूपा) ।
१२. पच्चा (क्व) ।
१३. परं (चू); वरे (क्व) ।
१४. देहिणं (ख, चू) ।
१५. कारवं (चू) ।
१६. विज्जए (क) ।
१७. एवं एते (ख); एवमेगे (चू) ।
१८. कतो (ख) ।
१९. मोहेण पाउता (चूपा) ।

आयच्छट्ठ-वाद-पदं

१५. संति पंच महब्भूया इहमेगेसि आहिया।
आयछट्ठा[1] पुणेगाहु[2] आया लोगे य सासए॥
१६. दुहओ ते ण विणस्संति[3] णो य उप्पज्जए असं।
सव्वेवि सव्वहा[4] भावा णियतीभावमागया[5] ॥

बुद्धाणं पंचखंध-चतुधातु-वाद-पदं

१७. पंच खंधे वयंतेगे बाला उ खणजोइणो।
अण्णो अणण्णो णेवाहु[6] हेउयं व[7] अहेउयं॥
१८. पुढवी आऊ तेऊ य[8] तहा वाऊ य एगओ।
चत्तारि धाउणो रूवं एवमाहंसु जाणगा[9]॥

णिस्सारता-निदंसण-पदं

१९. अगारमावसंता[10] वि आरण्णा[11] वा वि पव्वया[12]।
इमं[13] दरिसणमावण्णा सव्वदुक्खा विमुच्चंति[14]॥
२०. 'तेणाविमं तिणच्चा णं'[15] ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते ओहंतराऽऽहिया[16]॥
२१. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते संसारपारगा॥
२२. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते गब्भस्स पारगा॥
२३. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते जम्मस्स पारगा॥

---

[1] आतच्छट्ठा (चू)।
[2] पुणो आहु (क, ख)।
[3] विण्णस्सति (क).
[4] सव्वया (क, ख)।
[5] नियत्तीभाव० (क, ख)। 'क' प्रतौ निम्न-स्थाने नियती० इत्यपि लिखितमस्ति।
[6] णेगाहु (चू)।
[7] च (क्व)।
[8] × (क, ख)।
[9] यावरे (वृ); जाणगा (वृपा)।
[10] आगार० (ख)।
[11] अरण्णा (ख)।
[12] पव्वइया (क)।
[13] एतं (चू)।
[14] विमुच्चई (क, ख)।
[15] तेणा वि संधि णच्चा ण (क, ख, वृ)। वृत्तौ प्रत्योश्चायमेव पाठो लभ्यते, किन्तु चूर्णिगत-पाठोर्थविचारणया प्रकरणपाती प्रतिभाति, तेनात्र मूले स एव स्वीकृतः।
[16] व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—ओहंतरा आहिया।

२४. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते दुक्खस्स पारगा॥
२५. तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते मारस्स पारगा॥
२६. 'णाणाविहाइं दुक्खाइं अणुहवंति पुणो पुणो।
संसारचक्कवालम्मि वाहिमच्चुजराकुले॥
२७. उच्चावयाणि गच्छंता गब्भमेस्संतणंतसो[1]।
णायपुत्ते महावीरे एवमाह[2] जिणोत्तमे'[3]॥

—त्ति बेमि॥

बीओ उद्देसो

णियति-वाद-पदं

२८. आघायं 'पुण एगेसिं'[4] उववण्णा पुढो जिया।
वेदयंति[5] सुहं दुक्खं अदुवा लुप्पंति[6] ठाणओ॥
२९. ण तं सयं कडं दुक्खं 'ण य'[7] अण्णकडं च णं।
सुहं वा जइ 'वा दुक्खं'[8] सेहियं वा असेहियं॥
३०. ण[9] सयं[10] कडं ण अण्णेहिं वेदयंति पुढो जिया।
संगइयं तं तहा तेसिं इहमेगेसिमाहियं॥
३१. एवमेयाणि जंपंता बाला पंडियमाणिणो[11]।
णिययाणिययं संतं अयाणंता[12] अबुद्धिया॥
३२. एवमेगे उ[13] पासत्था 'ते भुज्जो'[14] विप्पगब्भिया।
एवंपुवट्ठिया[15] संता णऽत्तदुक्खविमोयगा[16]॥

---

[1] व्या० वि०—एष्यन्ति अनन्तशः।
[2] °माहु (क, ख)।
[3] संसारचक्कवालम्मि, भमंता [य पुणो पुणो]। उच्चावयं णियच्छंता, गब्भमेसंतणंतसो॥ (चू)।
[4] पुणिहेगेसिं (चू)।
[5] वेदयंती (चू)।
[6] विलुप्यन्ते (वृ)।
[7] कओ (क, वृ); कत्तो (ख)।
[8] वाऽसुहं (चू)।
[9] तं (दी)।
[10] सइं (चू)।
[11] पंडितवादिणो (चू)।
[12] अयाणमाणा (चू)।
[13] य (क)।
[14] अजाणंता (चू)।
[15] °पवट्टिया (क). °उवट्ठिया (ख); व्या० वि०—एवं+अपि+उवट्ठिया।
[16] न ते दुक्खविमोक्खया (क, ख); °विमोक्खया (वृ)।

३३. जविणो मिगा जहा संता परिताणेण[१] तज्जिया[२] ।
असंकियाइं संकंति संकियाइं असंकिणो ॥
३४. परिताणियाणि[३] संकंता पासियाणि असंकिणो ।
अण्णाणभयसंविग्गा संपलिंति तहिं तहिं ॥
३५. अह तं पवेज्ज वज्झं अहे वज्झस्स वा वए ।
'मुच्चेज्ज पयपासाओ'[४] 'तं तु मंदो ण देहई'[५] ॥
३६. अहियप्पाऽहियपण्णाणे[६] विसमंतेणुवागए[७] ।
से बद्धे पयपासाइं[८] तत्थ घायं[९] णियच्छइ ॥
३७. एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[१०] अणारिया ।
असंकियाइं संकंति[११] संकियाइं असंकिणो ॥
३८. धम्मपण्णवणा जा सा[१२] 'तं तु'[१३] संकंति मूढगा ।
आरंभाइं[१४] ण संकंति अवियत्ता अकोविया ॥
३९. सव्वप्पगं विउक्कस्सं[१५] सव्वं णूमं विहूणिया[१६] ।
अप्पत्तियं अकम्मंसे एयमट्ठं मिगे चुए ॥
४०. जे एयं[१७] णाभिजाणंति मिच्छदिट्ठी[१८] अणारिया ।
मिगा वा पासबद्धा ते घायमेसंतऽणंतसो[१९] ॥

अण्णाणिय-वाद-पदं

४१. माहणा समणा एगे सव्वे णाणं सयं वए ।
'सव्वलोगे वि'[२०] जे पाणा ण ते जाणंति किंचणं[२१] ॥

---

[१] परियाणेण (क, ख) ।

[२] वज्जिया (क, ख, वृ); तज्जिया (वृपा) ।

[३] परियाणियाणि (क, ख) ।

[४] मुच्चेजा ° (क); वधेज्ज पदपासातो (चू); मुच्चेज्ज पदपासादी (चूपा, वृपा) ।

[५] तं च मंदे ण पेहती (चू); °देहते (क) ।

[६] अहिते हित पण्णाणा (चू) ।

[७] विसमं तेणुवागते (चू); विसमंतेऽणुवायए (क, वृपा) ।

[८] पयपासेहिं (चू) ।

[९] घंतं (चू) ।

[१०] मिच्छादिट्ठी (चू) ।

[११] संकिती (चू) ।

[१२] तु (चू) ।

[१३] तीसे (चू) ।

[१४] आरंभाय (चू) ।

[१५] विउक्कासं (चू) ।

[१६] विधुणिया (चू) ।

[१७] तेतं (चू) ।

[१८] मिच्छा° (चू) ।

[१९] व्या० वि—एषयन्ति अनन्तशः ।

[२०] सव्वलोगंसि (चू) ।

[२१] कंचणं (क) ।

४२. मिलक्खू अमिलक्खुस्स जहा वुत्ताणुभासए[1] ।
ण हेउं से वियाणाइ[2] भासियं तऽणुभासए[3] ॥
४३. एवमण्णाणिया णाणं वयंता वि सयं सयं ।
णिच्छयत्थं ण जाणंति मिलक्खु व्व अबोहिया[4] ॥
४४. अण्णाणियाण वीमंसा 'अण्णाणे ण णियच्छइ'[5] ।
अप्पणो य[6] परं णालं कतो[7] अण्णाणुसासिउं ? ॥
४५. वणे मूढे जहा जंतू मूढणेयाणुगामिए[8] ।
'दो वि एए अकोविया'[9] तिव्वं सोयं णियच्छई[10] ॥
४६. अंधो अंधं पहं णेंतो[11] दूरमद्धाण गच्छई ।
आवज्जे उप्पहं जंतू[12] 'अदुवा पंथाणुगामिए'[13] ॥
४७. एवमेगे णियागट्ठी धम्ममाराहगा वयं ।
अदुवा[14] अहम्ममावज्जे ण ते सव्वज्जुयं[15] वए ॥
४८. एवमेगे वियक्काहिं णो अण्णं[16] पज्जुवासिया ।
अप्पणो य वियक्काहिं अयमंजू हि दुम्मई ॥
४९. एवं तक्काए[17] साहेंता धम्माधम्मे अकोविया ।
दुक्खं ते णातिवट्टंति[18] सउणी पंजरं जहा ॥
५०. सयं सयं पसंसंता गरहंता[19] परं वयं[20] ।
जे उ तत्थ विउस्संति 'संसारं ते[21] विउस्सिया[22] ॥

---

[1] °भासती (चू) ।
[2] वियाणेति (चू) ।
[3] °भासती (चू) ।
[4] अबोधिए (क, चू) ।
[5] णाणे णेव णियच्छति (क, चू) ।
[6] वि (वृ) ।
[7] कुतो (क) ।
[8] मुढेणे° (क, ख); मुढं णेयाणुगच्छति (वृ); मूढ-मूढाणुगामिए (चू) ।
[9] दुहतो वि अकोविता (चू); उभयो विं न याणंति (चूपा) ।
[10] व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या एकवचनम्—णियच्छंति ।
[11] णंति (चू) ।
[12] जतो (चू); जंतू (चूपा) ।
[13] अहसक्खाणुगामिए (क) ।
[14] अपि (चूपा) ।
[15] सव्वुज्जुयं (ख); सव्वुज्जुगं (चू) ।
[16] परं (वृ) ।
[17] तक्काइ (ख) ।
[18] नातिउट्टंति (क); नाइतुट्टंति (ख, वृ); ण तिउट्टंति (चूपा) ।
[19] गरहंती (चू) ।
[20] वदिं (चू) ।
[21] संसारे ते (ख); संसरंते (चू) ।
[22] वि उसिया (वृपा) ।

सोगताणं कम्मोवचय-चिंता-पदं

५१. अहावरं पुरक्खायं किरियावाइदरिसणं[1] ।
कम्मचिंतापणट्ठाणं दुक्खखंधविवद्धणं[2] ॥
५२. जाणं काएणऽणाउट्टी[3] अबुहो 'जं च'[4] हिंसइ ।
पुट्ठो वेदेइ परं अवियत्तं खु सावज्जं ॥
५३. संतिमे तओ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं ।
अभिकम्मा य पेसा य मणसा[5] अणुजाणिया ॥
५४. एए उ तओ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं ।
एवं भावविसोहीए[6] णिव्वाणमभिगच्छइ[7] ॥
५५. पुत्तं 'पि ता'[8] समारंभ[9] आहारट्ठं[10] असंजए ।
भुंजमाणो वि[11] मेहावी कम्मुणा[12] णोवलिप्पते[13] ॥

सुत्तकारस्स उत्तर-पदं

५६. मणसा जे पउस्संति चित्तं तेसिं ण विज्जइ ।
अणवज्जं अतहं तेसिं ण ते संवुडचारिणो ॥
५७. इच्चेयाहिं दिट्ठीहिं सायागारवणिस्सिया ।
सरणं[14] ति मण्णमाणा[15] सेवंती पावगं[16] जणा ॥
५८. जहा आसाविणिं[17] णावं जाइअंधो दुरूहिया[18] ।
इच्छई[19] पारमागंतुं अंतराले[20] विसीयई ॥
५९. एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[21] अणारिया ।
'संसारपारकंखी ते'[22] संसारं अणुपरियट्टंति[23] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. °वाईण दरि° (ख) ।
२. संसारस्स पवड्ढणं (क, ख, वृपा) ।
३. °णाउट्टे (चू) ।
४. ज व (क); जे य (चू) ।
५. मणसा य (क) ।
६. भावणसुद्धीए (चू) ।
७. णेव्वाण° (चू) ।
८. पिया (क, ख); पिता (वृ) ।
९. समारब्भ (ख) ।
१०. आहारेज्ज (क, ख) ।
११. य (क, ख) ।
१२. कम्मणा (ख) ।
१३. °लिप्पई (क, ख) ।
१४ हियं (चू) ।
१५. °माणा तु (चू) ।
१६. अहियं (चू) ।
१७. आस्साविणिं (चू) ।
१८. दुरुभिया (चू) ।
१९. इच्छेज्जा (क); इच्छंतो (चू) ।
२०. अंतरा इ (क); अंतरा य (चू) ।
२१. मिच्छा° (चू) ।
२२. °पारमिच्छंता (चू) ।
२३. °यट्टइ (क) ।

तइओ उद्देसो

पूइकम्म-आहार-दोस-पद

६०. जं किंचि वि[१] पूइकडं 'सड्ढी[२] आगंतु[३] ईहियं'[४]।
सहस्संतरियं[५] भुंजे दुपक्खं चेव सेवई ॥
६१. तमेव अवियाणंता विसमंसि[६] अकोविया।
'मच्छा वेसालिया चेव'[७] उदगस्सऽभियागमे[८] ॥
६२. उदगस्स प्पभावेणं 'सुक्कम्मि घातमेंति'[९] उ।
ढंकेहि य कंकेहि य आमिसत्थेहिं[१०] ते दुही ॥
६३. एवं तु समणा एगे वट्टमाणसुहेसिणो ।
मच्छा वेसालिया चेव[११] घायमेसंतणंतसो[१२] ॥

कयवाद-पदं

६४. इणमण्णं तु अण्णाणं इहमेगेसिमाहियं ।
देवउत्ते अयं लोए बंभउत्ते[१३] त्ति आवरे ॥
६५. 'ईसरेण कडे'[१४] लोए पहाणाइ[१५] तहावरे।
जीवाजीवसमाउत्ते[१६] सुहदुक्खसमण्णिए ॥
६६. 'सयंभुणा कडे[१७] लोए इति वुत्तं महेसिणा।
मारेण संथुया माया तेण लोए असासए'[१८] ॥

---

१. उ (ख, चू);
२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सड्ढीहिं।
३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदं वर्णलोपश्च—आगन्तुकान् उद्दिश्य।
४. सड्ढीमागंतुमीहियं (क, ख)।
५. सहस्संतरकडं (चू)।
६. विसमंमि (क)।
७. °वेसारिया° (क); मच्छे वेतालिए चेव (चूपा)।
८. उदगस्स अभिआगमे (चू)।
९. सुक्कंसि ग्घात° (ख); सुक्कंसि घंतमेति(चू)।
१०. आमिसासीहि (चू)।
११. व्या० वि०—चेव—इव।
१२. घंतमेसंत° (चू); व्या० वि—एष्यन्ति अनन्तशः।
१३. °उत्ति (क, ख)।
१४. इस्सरेण कते (चू)।
१५. व्या वि०—पहाणाइ, अत्र 'कडे' इति वाक्यशेषः।
१६. जीवाजीवेहिं संजुत्ते (चू)।
१७. कते (चू)।
१८. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
अतिवड्ढियजीवा णं,
मही विण्णवते पभुं।
ततो से माया संजुत्ते,
करे लोगस्सभिद्दवा॥ (चू)

६७. माहणा समणा एगे[१] आह अंडकडे जगे ।
असो तत्तमकासी य अयाणंता मुसं वए ।।
६८. ‘सएहिं परियाएहिं’[२] ‘लोगं बूया कडे त्ति य’[३] ।
तत्तं ते ‘ण वियाणंति’[४] ‘णायं णाऽऽसी’[५] कयाइ वि ।।
६९. अमणुण्णसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया ।
समुप्पायमजाणंता किह[६] णाहिंति[७] संवरं ? ।।

अवतार-वाद-पदं

७०. सुद्धे अपावए आया इहमेगेसिमाहियं ।
‘पुणो कीडापदोसेणं से तत्थ अवरज्झई ।।
७१. इह संवुडे मुणी जाए पच्छा होइ अपावए ।
वियडं व जहा भुज्जो णीरयं सरयं तहा’[८] ।।

अत्त-पवाद-पसंसा-पदं

७२. एयाणुवीइ मेहावी ‘बंभचेरं ण तं वसे’[९] ।
पुढो पावाउया[१०] सव्वे अक्खायारो सयं सयं ।।
७३. ‘सए सए’[११] उवट्ठाणे सिद्धिमेव[१२] ण अण्णहा ।
‘अधो वि होति वसवत्ती’[१३] सव्वकामसमप्पिए[१४] ।।

---

१. वेगे (क, ख) ।
२. सएण परियाएण (चू) ।
३. °त्ति या (क); °कडे विधिं (चू); बूया लोए कडे विधिं, लोकं बूया कडे ति च (चूपा) ।
४. नाभिजाणंति (वृ) ।
५. न विणासी (क, ख, वृ) ।
६. कहं (ख) ।
७. नाहंति (ख) ।
८. कीलावण-प्पदोसेण, रजसा अवतारते ।
इह संवुडे भवित्ताणं, सुद्धे सिद्धीए चिट्ठती ।
पुणो कालेणऽणंतेणं, तत्थ से अवरज्झती ।।
(चू) ।
°इह संवुडे भवित्ताणं,
पेच्चा होति अपावए° । (चूपा) ।
९. बंभचेरे ण ते वसे (क, वृ) ।
१०. पावादिया (चू) ।
११. सते सते (क) ।
१२. व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः ।
१३. अधो इहत्तवसमत्ती (क); इहेव होति° (चू); अबोही होति° (चूपा); ‘ख’ प्रतौ ‘अधोधि’ इति पाठोस्ति, किन्तु लिपिदोषेण ‘वि’ स्थाने ‘धि’ जातः इति प्रतीयते ।
१४. °समप्पिओ (चू) ।

सिद्ध-वाद-पदं

७४. सिद्धा य ते अरोगा य इहमेगेसि आहियं ।
सिद्धिमेवपुरोकाउं[१] सासए[२] गढिया णरा ॥

उवसंहार-पदं

७५. असंवुडा अणादीयं भमिहिंति पुणो-पुणो ।
कप्पकालमुवज्जंति[३] ठाणा आसुरकिब्बिसिय[४] ॥
—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

जावणा-पदं

७६. एते जिया भो ! 'ण सरणं'[५] 'बाला पंडियमाणिणो'[६] ।
'हिच्चा णं'[७] पुव्वसंजोगं सितकिच्चोवएसगा[८] ॥
७७. तं च भिक्खू परिण्णाय विज्जं 'तेसु ण'[९] मुच्छए ।
अणुक्कस्से[१०] अणवलीणे[११] मज्झेण[१२] मुणि जावए ॥
७८. सपरिग्गहा य सारंभा इहमेगेसिमाहियं ।
'अपरिग्गहे अणारंभे'[१३] भिक्खू जाणं[१४] परिव्वए ॥
७९. कडेसु घासमेसेज्जा विऊ दत्तेसणं चरे ।
अगिद्धो विप्पमुक्को य ओमाणं परिवज्जए ॥

लोगवाय-पदं

८०. 'लोगवायं णिसामेज्जा'[१५] इहमेगेसिमाहियं ।
विवरीयपण्णसंभूयं[१६] 'अण्णवुत्त-तयाणुगं'[१७] ॥

---

१. ०पुरा० (क, चू); सिद्धमेव (ख) ।
२. आसएहिं (चू) ।
३. कप्पकालुववज्जंति (चू) ।
४. ०किब्बिसिया (ख) ।
५. असरणं (चूपा) ।
६. जत्थ बालेऽवसीयइ (क, वृपा) ।
७. जहित्ता (चू) ।
८. सिताकिच्चोवदेसिता (क, वृपा); सियाकिच्चोवएसगा (ख); सितकिच्चोवगा सिया (चू) ।
९. तेसि ण (क); ण तत्थ (चूपा) ।
१०. अणुकम्मे (क); अणुक्कसाए (चू); अणुक्कसे (चूपा) ।
११. अप्पलीणे (क, ख, वृ) ।
१२. मज्झिमेण (क, चू) ।
१३. अपरिग्गहो अणारंभो (ख, वृ) ।
१४. ताणं (क, ख, वृ) ।
१५. लोगावायं० (चू); लोकावादं णिसामेत्ता (चूपा) ।
१६. विपरीतपण्णसंभूया (चू) ।
१७. अणुण्णु वुतिताणुगं (क); अन्नेहिं बुइयाणुगं (ख); अण्णोण्णबुइताणुगा (चू) ।

८१. अणंते णितिए लोए सासए ण विणस्सई ।
अंतवं णितिए लोए 'इइ धीरोऽतिपासई'[1] ।
८२. 'अपरिमाणं वियाणाइ'[2] इहमेगेसि आहियं ।
सव्वत्थ सपरिमाणं 'इह धीरोऽतिपासई'[3] ॥

अहिंसा-पदं

८३. जे केइ[4] तसा पाणा चिट्ठंतदुव[5] थावरा ।
परियाए[6] अत्थि से अंजू[7] जेण[8] ते तसथावरा ॥
८४. उरालं[9] जगतो जोगं 'विवज्जासं पलेंति य'[10] ।
सव्वे अकंतदुक्खा[11] य अओ सव्वे अहिंसगा[12] ॥
८५. एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसइ कंचणं[13] ।
अहिंसा समयं चेव एयावंतं[14] वियाणिया ॥

भिक्खु-चरिया-पदं

८६. 'वुसिते विगयगिद्धी य'[15] आयाणं सारक्खए ।
चरियासणसेज्जासु भत्तपाणे य अंतसो ॥
८७. एतेहिं तिहिं ठाणेहिं 'संजए सययं'[16] मुणी ।
उक्कसं[17] जलणं णूम[18]- मज्झत्थं च विगिंचए ॥
८८. समिए तु सया साहू पंचसंवरसंवुडे ।
सितेहिं असिते भिक्खू आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

---

[1] इति धीरोतिपासति (क); इति वीरोऽधिपासति (चू) ।
[2] अमितं जाणती वीरे (चू) ।
[3] इति वीरोऽधिपासती (चू) ।
[4] केति (क, ख) ।
[5] चिट्ठंति अदुव (ख); व्या० वि०—द्विपदयो सन्धिः—चिट्ठंति+अदुव ।
[6] परिताए (क) ।
[7] जायं (चू) ।
[8] तेण (वृ) ।
[9] ओरालं (क) ।
[10] विपरीय संपलेति य (क); °पलिति य(चू) ।
[11] अक्कंत° (वृ); अकंत °(वृपा) ।
[12] अहिंसया (क), अहिंसिया (ख, वृ) ।
[13] किंचणं (ख, च) ।
[14] इत्तावय (क) ।
[15] बुसेए य विगयगेही (क); वुसिए य विगतगेही (चू); अकसायी सदाऽधिगतगेघी(चूपा) ।
[16] संजमेज्ज सया (चू) ।
[17] उक्कासं (चू) ।
[18] णूमं (क, ख, वृ) ।

बीअं अज्झयणं

वेयालिए

पढमो उद्देसो

संबोधि-पदं

१. संबुज्झह[1] किण्ण[2] बुज्झहा संबोही खलु पेच्च दुल्लहा ।
णो हूवणमंति राइओ णो सुलभं पुणरावि जीवियं ।।
२. डहरा बुड्ढा य पासहा[3] गब्भत्था वि[4] चयंति माणवा ।
सेणे जह वट्टयं हरे एवं आउखयंमि तुट्टई ।।
३. 'मायाहि पियाहि लुप्पई णो सुलहा सुगई य[5] पेच्चओ'[6] ।
'एयाइ भयाइ'[7] देहिया[8] आरंभा विरमेज्ज सुव्वए[9] ।।
४. जमिणं जगई पुढो जगा कम्मेहिं लुप्पंति[10] पाणिणो ।
सयमेव 'कडेहि गाहई'[11] णो तस्स[12] मुच्चे अपुट्ठवं[13] ।।

अणिच्च-भावणा-पदं

५. देवा गंधव्वरक्खसा असुरा भूमिचरा[14] सिरीसिवा[15] ।
राया णरसेट्ठिमाहणा[16] 'ठाणा ते वि चयंति'[17] दुक्खिया ।।

---

[1] भो ! सबुज्झह (चू) ।
[2] किण्णु (चू) ।
[3] पासह (ख) ।
[4] य (चू) ।
[5] वि (वृ) ।
[6] नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
माता पितरो य भातरो,
विलभेज्जसु केण पेच्चए (चू) ।
[7] एयाइं भयाइं (क) ।
[8] पेहिया (ख) ।
[9] सुट्ठिए (वृपा) ।
[10] विलुप्यन्ते (वृ) ।
[11] कडेहिं गाहंति (क); कडेऽवगाहए (चू) ।
[12] तस्सा (क, ख); तेणं (चू) ।
[13] पुट्ठव (क) ।
[14] भूमिगता (चू) ।
[15] सरि° (क) ।
[16] णर-अधिपमाहणा (चूपा) ।
[17] ते वि चयंति ठाणाइं (क) ।

६. ‘कामेहि य संथवेहि य’[1] कम्मसहा[2] कालेण जंतवो ।
ताले जह बंधणच्चुए एवं आउखयम्मि[3] तुट्टई ॥

कम्म-विवाग-पदं

७. जे यावि ‘बहुस्सुए[4] सिया’[5] ‘धम्मिए माहणे’[6] भिक्खुए सिया[7] ।
अभिणूमकडेहिं[8] मुच्छिए[9] तिव्वं से[10] कम्मेहिं किच्चती[11] ॥

८. अह पास विवेगमुट्ठिए[12] अवितिण्णे[13] इह भासई धुतं[14] ।
णाहिसि[15] आरं कओ परं ? वेहासे कम्मेहिं किच्चई ॥

कसाय-परिणाम-पदं

९. जइ वि य णिगिणे[16] किसे[17] चरे जइ वि य भुंजिय मासमंतसो ।
‘जे इह’[18] मायादि[19] मिज्जई आगंता गब्भादणंतसो[20] ॥

सिक्खा-पदं

१०. पुरिसोरम[21] पावकम्मुणा[22] पलियंतं मणुयाण जीवियं ।
सण्णा इह काममुच्छिया मोहं जंति ‘णरा असंवुडा’[23] ॥

---

[1] कामेहि संथवेहि गिद्धा (वृ) ।

[2] कम्मसहे (चू) ।

[3] आउखए वि (चू) ।

[4] व्या० वि०—बहुस्सुए धम्मिए माहणे भिक्खुए—सर्वत्रापि बहुवचनं युज्यते । अत्र बहुवचनान्तं क्रियापदं स्वीकृतम्, तेन वृत्तिकृता छान्दसत्वाद् बहुवचनं द्रष्टव्यम्—इति लिखितम् ।

[5] भवे बहुस्सुता (चू) ।

[6] धम्मिय माहण (ख, वृ, चू) ।

[7] सुयी (चू) ।

[8] °करेहिं (चू) ।

[9] मुच्छिया (चू) ।

[10] ते (वृ, चू) ।

[11] किच्चंति (वृ, चू) ।

[12] विवाग° (चूपा) ।

[13] अवि तिण्णे (चूपा) ।

[14] धुवं (क, ख, वृ) ।

[15] ण नेहिसि (चूपा) ।

[16] निगणे (क, ख) ।

[17] कसे (ख) ।

[18] जइ विह (चू) ।

[19] मायाति (क); मायाइ (ख); व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मायादिणा ।

[20] गब्भायणंतसो (क, ख, वृ); व्या० वि०—गर्भादिअनन्तशः ।

[21] व्या० वि०—पुरुष ! उपरम ।

[22] °कम्मणा (ख) ।

[23] अंसवुडा नरा (क) ।

११. जययं विहराहि जोगवं 'अणुपाणा पंथा'[१] दुरुत्तरा।
अणुसासणमेव पक्कमे[२] वीरेहिं सम्मं पवेइयं ।।

वीर-पदं

१२. 'विरया वीरा समुट्ठिया'[३] कोहाकायरियाइपीसणा[४] ।
पाणे ण हणंति सव्वसो पावाओ विरयाऽभिणिव्वुडा ।।

कम्म-विधूणण-पदं

१३. ण वि ता अहमेव लुप्पए[५] लुप्पंती लोगंसि[६] पाणिणो।
एवं सहिएऽहिपासए[७] अणिहे से पुट्ठेऽहियासए[८] ।।
१४. धुणिया कुलियं व लेववं कसए[९] देहमणासणादिहिं[१०]।
अविहिंसामेव पव्वए अणुधम्मो मुणिणा पवेइओ ।।
१५. सउणी जह पंसुगुंडिया[११] विहुणिय धंसयई सियं रयं।
एवं दविओवहाणवं कम्मं खवइ तवस्सि माहणे ।।

अणुलोम-परीसह-पदं

१६. उट्ठियमणगारमेसणं 'समणं ठाणठियं तवस्सिणं'[१२]।
डहरा वुड्ढा य पत्थए अवि सुस्से ण य तं लभे जणा[१३] ।।
१७. जइ कालुणियाणि कासिया[१४] जइ रोयंति[१५] य पुत्तकारणा।
दवियं भिक्खुं समुट्ठियं णो 'लब्भंति णं सण्णवेत्तए'[१६] ।।

---

१. अणुपत्थि पाणा (चूपा)।
२. प्रतिक्रामेद् (वृ); परक्कमे (चू)।
३. वीरा विरता हु पावका (चू)।
४. व्या० वि - दीर्घत्वमलाक्षणिकम्।
५. लुप्पधे (चू)।
६. लोगम्मि (क)।
७. सहिएहिं° (क)।
८. पुट्ठो अहियासए (क)।
९. किसए (ख)।
१०. व्या० वि०—दीर्घत्वमलाक्षणिकम्।
११. गंडिया (ख)।
१२. समणट्ठाणट्ठितं तवस्सियं (चू)।
१३. जणं (क); जणो (चू)।
१४. से करे (चू)।
१५. रोवंति (चू)।
१६. लब्भंति ण संठवेत्तए (क); लब्भिति न संठवित्तए (वृ)।

१८. जइ तं[1] कामेहि लाविया 'जइ आणेज्ज तं बंधिता घरं'[2]।
'तं जीवित[3] णावकंखिणं[4]'[5] 'णो लब्भंति तं सण्णवेत्तए'[6]॥
१९. सेहंति[7] य णं ममाइणो 'माय[8] पिया य सुया य भारिया'[9]।
पोसाहि णे पासओ तुमं 'लोगं परं पि जहासि पोसणे'[10]॥
२०. अण्णे अण्णेहि मुच्छिया मोहं जंति 'णरा असंवुडा'[11]।
विसमं विसमेहि गाहिया ते पावेहिं पुणो पगब्भिया॥
२१. 'तम्हा दवि[12] इक्ख पंडिए'[13] पावाओ विरएभिणिव्वुडे।
'पणए वीरे महाविहिं'[14] सिद्धिपहं णेयाउयं धुवं[15]॥
२२. वेयालियमग्गमागओ[16] मणवयसा काएण संवुडो।
चिच्चा वित्तं च णायओ आरंभं च सुसंवुडे चरे[17]॥

—त्ति बेमि॥

बीओ उद्देसो

माण-विवज्जण-पदं

२३. तय[18] सं व जहाइ से रयं इइ संखाय मुणी ण मज्जई।
गोयण्णतरेण माहणे[19] अहऽसेयकरी अण्णेसि इंखिणी॥

---

१. वि य (ख); वि (वृ); णं (चू)।
२. जति णेज्जाहि णं बंधिउं घरं (क)।
३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—जीवितस्स।
४. °कंखए (ख); णाभिकंखए (वृ)।
५. जइ जीविय नावकंखति (क)।
६. नो लब्भंति न संठवित्तए (क, ख); नो लब्भिंति न संठवित्तए (वृ)।
७. सेहिंति (चू)।
८. माया (ख)।
९. माति पिति थि पती य भायरो (चू)।
१०. परलोगं पि जहाहि उत्तमं (चू)।
११. असंवुडा नरा (क)।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दविए।
१३. दविए व समिक्ख पंडिते (चू); तम्हा दवि इक्ख पंडिए (चूपा)।
१४. पणता वीरा महाविधिं (चू); पणता वीधे तऽणुत्तरं (चूपा); पणया वीरा° (ख, वृ); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्—महावीहिं।
१५. सिवं (चू); धुवं (चूपा)।
१६. °मातओ (क)।
१७. चरेज्जासि (क,ख); परिचएज्जासि(चूपा)।
१८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—तयं।
१९. जे विदू (चू, वृपा); माहणे (चूपा)।

२४. जो परिभवई परं जणं संसारे परिवत्तई[1] महं[2] ।
अदु इंखिणिया उ पाविया[3] इह संखाय[4] मुणी ण मज्जई ॥

२५. जे यावि अणायगे[5] सिया जे वि य पेसगपेसगे[6] सिया ।
इद[7] मोणपयं उवट्ठिए णो लज्जे समयं सया चरे ॥

२६. ‘सम अण्णयरम्मि संजमे’[8] संसुद्धे समणे परिव्वए ।
जा[9] आवकहा समाहिए दविए कालमकासि पंडिए ॥

२७. दूरं अणुपस्सिया मुणी तीयं धम्ममणागयं तहा ।
पुट्ठे फरुसेहिं माहणे अवि हण्णू ‘समयंसि रीयइ’[10] ॥

समता-धम्म-पदं

२८. पण्णसमत्ते[11] सया जए समता[12] धम्ममुदाहरे[13] मुणी ।
सुहुमे[14] उ सया अलूसए ‘णो कुज्झे[15] णो माणि[16] माहणे’[17] ॥

२९. बहुजणणमणम्मि संवुडे ‘सव्वट्ठेहिं णरे’[18] अणिस्सिए ।
‘हरए व सया अणाविले’[19] धम्मं पादुरकासि[20] कासवं ॥

३०. बहवे पाणा पुढो सिया पत्तेयं ‘समयं समीहिया’[21] ।
जे मोणपयं उवट्ठिए विरइं[22] तत्थ अकासि[23] पंडिए ॥

---

[1] परियत्तती (चू) ।
[2] महे (क); चिरे (ख, चू, वृपा) ।
[3] पातिका (चूपा) ।
[4] संखाए (चू) ।
[5] अणातए (चू) ।
[6] पेस्सग° (चू) ।
[7] जे (क, ख, वृ) ।
[8] समे° (क, ख); समयन्नरम्मि° (चू); समयण्णतरम्मि वा सुते (चूपा) ।
[9] जे (क, ख) ।
[10] समयाधियासए (वृपा, चूपा) ।
[11] °समत्थे (क, ख); पण्हसमत्थे (चू, वृपा); पण्हसमत्ते (चूपा) ।
[12] समिया (क); समिता (चू); व्या० वि०—समतयाः ।
[13] °मुदाहरेज्ज (चू) ।
[14] सुहमे (क) ।
[15] कुप्पे (चू) ।
[16] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—माणी ।
[17] कधयंतो ण परं [णु] कोवये (चूपा) ।
[18] सव्वट्ठेसु सदा (चू) ।
[19] हरदे वतुमे [पतुमे ?] अणाउले (चू); °अणाउरे (चूपा); °अणाइले (क, चूपा) ।
[20] प्रादु° (चू) ।
[21] °उवेहिया (क, वृपा); समियं उवेहाए (चू); समिया उवेहिता (चूपा) ।
[22] विरयं (क) ।
[23] मकासि (चू) ।

३१. 'धम्मस्स य पारगे मुणी आरंभस्स य 'अंतए ठिए'[1] ।
सोयंति य णं ममाइणो 'णो य'[2] लभंतो णियं[3] परिग्गहं'[4] ॥

सामण्णस्स माहप्प-पदं

३२. इहलोगे दुहावहं विऊ[5] परलोगे य 'दुहं दुहावहं'[6] ।
विद्धंसणधम्ममेव तं[7] इइ विज्जं को गारमावसे ? ॥

सुहुम-सल्ल-पदं

३३. 'महया[8] पलिगोव[9] जाणिया जा वि य वंदणपूयणा इहं ।
सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे विउमंता पयहिज्ज संथवं'[10] ॥

एगचारि-पदं

३४. एगे चरे ठाणमासणे[11] सयणे एगे[12] 'समाहिए सिया'[13] ।
भिक्खू उवहाणवीरिए वइगुत्ते अज्झत्थसंवुडे[14] ॥
३५. णो पीहे 'ण यावपंगुणे'[15] दारं सुण्णघरस्स संजए ।
पुट्ठे ण उदाहरे वइं[16] ण 'समुच्छे णो संथरे तणं'[17] ॥
३६. जत्थत्थमिए अणाउले[18] समविसमाणि मुणी हियासए ।
चरगा अदुवा वि भेरवा अदुवा तत्थ सिरीसिवा सिया ॥

---

[1] अंतिए ठिए (क); अंतिए ठित (चूपा) ।
[2] न (क) ।
[3] नियमं (क); णितियं (चू) ।
[4] नागार्जुनीया विकल्पयन्ति—
सोऊण तयं उवट्ठित,
केयि गिही विग्वेण उट्ठिता ।
धम्मम्मि इधं अणुत्तरे,
तंपि जिणेज्ज इमेण पंडिते ॥ (चू) ।
नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
सोऊण तयं उवट्ठियं,
केह गिही विग्घेण उट्ठिया ।
धम्मम्मि अणुत्तरे मुणी,
तंपि जिणिज्ज इमेण पडिए ॥ (वृ) ।
[5] विदा (ख, चू) ।
[6] दुहा दुहावहा (चूपा) ।
[7] या (क, चू) ।
[8] मह्रयं (वृ); महता (वृपा) ।
[9] व्या० वि०–विभक्तिरहितपदम्—पलिगोवं ।
[10] नागार्जुनीयास्तु पठन्ति —पलिमंथ महं विजाणिया, जाविय वंदणपूयणा इहं[इधं] । (चू);
सुहुमं सल्लं दुरुद्धरं,
तंपि जिणे एएण पंडिए । (चू, वृ) ।
[11] °आसणे (चू) ।
व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः ।
[12] एग (ख, चू) ।
[13] समाहितो चरे (चू) ।
[14] अज्झप्प° (चू) ।
[15] णावपंगुणं (क, ख); °ऽवंगुणे (चू) ।
[16] वयं (ख) ।
[17] समुच्छति णो संथडे तणे (चू) ।
[18] अणाइले (क) ।

३७. तिरिया मणुया[१] य[२] दिव्वगा[३] उवसग्गा तिविहा धियासए[४] ।
लोमादीयं पि[५] ण हरिसे सुण्णागारगए महामुणी ॥
३८. णो अभिकंखेज्ज[६] जीवियं णो वि य पूयणपत्थए सिया ।
'अब्भत्थमुवेंति भेरवा'[७] सुण्णागारगयस्स भिक्खुणो ॥
३९. उवणीयतरस्स ताइणो भयमाणस्स विविक्कमासणं[८] ।
सामाइयमाहु तस्स जं[९] जो अप्पाण[१०] भए ण दंसए ॥

राय-संसग्ग-विवज्जण-पदं

४०. उसिणोदगतत्तभोइणो[११] धम्मठियस्स[१२] मुणिस्स हीमतो[१३] ।
संसग्गि[१४] असाहु[१५] राइहिं असमाही उ तहागयस्स वि ॥

अहिगरण-वज्जण-पदं

४१. अहिगरणकरस्स[१६] भिक्खुणो वयमाणस्स पसज्झ दारुणं ।
अट्ठे 'परिहायई बहू'[१७] अहिगरणं ण करेज्ज पंडिए[१८] ॥

गिहि-भायण-पदं

४२. सीओदग[१९] पडिदुगंछिणो[२०] अपडिण्णस्स लवावसक्किणो[२१] ।
सामाइयमाहु तस्स जं[२२] जो[२३] गिहिमत्तेऽसणं ण भुंजई[२४] ॥

---

१. मणुसा (चू, वृ) ।
२. व (क) ।
३. दिव्विया (चू) ।
४. हियासिया (ख, वृपा); विसेविया (चू) ।
५. × (ख) ।
६. जावऽभिकंख (चू) ।
७. अब्भत्थुमुवंति भेरवा (क); पठ्यते च—"अप्पुत्थमुवेंति भेरवा" (चू) ।
८. विवित्त° (क, चू) ।
९. तं (चू) ।
१०. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं ।
११. °भोयणो (चू) ।
१२. धम्मट्ठिस्स (चू) ।
१३. ह्रीमतो (चू) ।
१४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—°संसग्गी असाहू ।
१५. मसाहु (क) ।
१६. °कडस्स (क, ख) ।
१७. परिहायते धुवं (चू) ।
१८. संजए (चू) ।
१९. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सीओदगस्स ।
२०. °दुगुंछिणो (चू) ।
२१. °सेक्किणो (क); °संकिणो (ख); हस्तलिखितवृत्त्यादर्शे—अवसक्किणोत्ति—अवसर्पिणः ।
२२. तं (चू) ।
२३. जं (चू) ।
२४. भक्खति (चू) ।

उत्तम-धम्म-गहण-पदं

४३. ण य संखयमाहु जीवियं तह वि य बालजणो पगब्भई ।
बाले पावेहि मिज्जई[१] इइ संखाय मुणी ण मज्जई ॥
४४. छंदेण[२] पलेतिमा पया बहुमाया मोहेण पाउडा ।
वियडेण पलेंति माहणे सीउण्हं[३] वयसा हियासए ॥
४५. कुजए अपराजिए जहा अक्खेहिं कुसलेहिं दीवयं[४] ।
कडमेव गहाय णो कलिं णो तेयं[५] णो चेव दावरं ॥
४६. एवं लोगम्मि ताइणा[६] बुइए जे[७] धम्मे अणुत्तरे ।
तं गिण्ह हियं ति उत्तमं[८] कडमिव सेसऽवहाय[९] पंडिए ॥

बंभचेर-पदं

४७. उत्तर[१०] मणुयाण आहिया गामधम्म[११] इति मे अणुस्सुयं ।
जंसी[१२] विरया समुट्ठिया कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥
४८. जे 'एय चरंति'[१३] आहियं णाएण[१४] महया महेसिणा ।
ते उट्ठिय[१५] ते समुट्ठिया अण्णोण्णं सारेंति धम्मओ ॥
४९. मा पेह पुरा पणामए अभिकंखे उवहिं धुणित्तए[१६] ।
जे 'दूवण[१७]ण ते हि'[१८]णो णया ते जाणंति समाहिमाहियं ॥

मुणीणं विवेग-पदं

५०. णो काहिए[१९] होज्ज संजए पासणिए ण य संपसारए ।
णच्चा धम्मं अणुत्तरं कयकिरिए य ण यावि मामए ॥

---

[१] मज्जती (चूपा) ।
[२] छण्णेण (चू) ।
[३] सीयुण्हं (चू) ।
[४] दिव्वयं (क); दिव्ववं (चू) ।
[५] तीयं (ख); त्रेतं (चू) ।
[३] ताणिणो (क); ताइणो (चू) ।
[७] ऽयं (चू) ।
[८] उत्तिमं (क) ।
[९] व्या० वि०—विभक्तिरहितं सन्धिश्च—सेसं अवहाय ।
[१०] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तरा ।
[११] गामधम्मा (क) । व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—गामधम्मे ।
[१२] जंसि (ख) ।
[१३] एयं ° (क) °करंति (चू) ।
[१४] नायएण (चू) ।
[१५] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उट्ठिया
[१६] हणित्तए (वृ) ।
[१७] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दूवणया, ये दुरूपनताः न ते हि समाधिं जानन्ति, ये नो नताः—विषयेषु न प्रणताः—सन्ति ते समाधिं जानन्ति ।
[१८] दूमणएहिं (क, वृपा) ।
[१९] काधीए (चू) ।

५१. छण्णं च पसंस[1] णो करे ण य उक्कोस[2] पगास[3] माहणे ।
तेंसि सुविवेगमाहिए[4] पणया जेहिं[5] सुभ्रोसियं[6] धुयं[7] ॥

आयहित-पदं

५२. अणिहे[8] सहिए सुसंवुडे धम्मट्ठी उवहाणवीरिए ।
विहरेज्ज समाहितिंदिए[9] 'आतहितं दुक्खेण लब्भते'[10] ॥

सामाइय-पदं

५३. ण हि णूण पुरा अणुस्सुयं[11] अदुवा तं तह णो अणुट्ठियं'[12] ।
मुणिणा सामाइयाहियं[13] णातएण[14] जगसव्वदंसिणा ॥

५४. एवं मत्ता[15] महंतरं[16] धम्ममिणं[17] सहिया बहू जणा ।
गुरुणो छंदाणुवत्तगा विरया तिण्ण महोघमाहियं[18] ॥

—ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

कम्मावचय-पदं

५५. संवुडकम्मस्स भिक्खुणो जं दुक्खं पुट्ठं अबोहिए ।
तं संजमओऽवचिज्जई[19] मरणं हेच्च वयंति पंडिया ॥

---

[1] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पसंसं ।

[2] उक्कास (क, चू); व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उक्कोसं ।

[3] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पगासं ।

[4] च विवेग° (वृ); सुविवेग° (वृपा) ।

[5] धम्मे (चू) ।

[6] सुज्झोसियं (क, चू, वृपा) ।

[7] धूयं (ख, वृ) ।

[8] अणहे (वृपा) ।

[9] °इंदिए (ख); °तेंदिए (चू) ।

[10] आयहियं खु दुहेण लब्भइ (क, ख) ।

[11] मऽणुस्सुतं (चू) ।

[12] °समुट्ठियं (क, ख); अदुवाऽवितधं णो अधिट्ठितं (चू); अदुवाऽवितहं णो° (वृपा) ।

[13] सामाइगं पदं (चू) ।

[14] नाएणं (क) ।

[15] माता (चू) ।

[16] महत्तरं (चूपा, वृपा) ।

[17] °मिमं (चू) ।

[18] मधोघ° (चू) ।

[19] °विचिज्जती (चू) ।

काम-मुच्छा-पदं

५६. जे विण्णवणाहिऽजोसिया[1] संतिण्णेहि समं वियाहिया ।
'तम्हा उड्ढं ति पासहा'[2] अद्दक्खू कामाइं रोगवं ॥
५७. अग्गं वणिएहि आहियं[3] धारेंती रायाणया[4] इहं ।
'एवं परमा महव्वया अक्खाया उ सराइभोयणा'[5] ॥
५८. जे इह सायाणुगा णरा अज्झोववण्णा कामेहि मुच्छिया ।
किवणेण[6] समं[7] पगब्भिया ण वि जाणंति समाहिमाहियं ॥
५९. वाहेण जहा व विच्छए अबले होइ गवं पचोइए ।
'से अंतसो अप्पथामए णाईवचए अबले विसीयइ'[8] ॥
६०. एवं कामेसणाविऊ[9] अज्ज सुए पयहेज्ज[10] संथवं ।
कामी कामे ण कामए लद्धे वा वि[11] अलद्ध[12] कण्हुइं ॥
६१. मा पच्छ असाहुया भवे[13] अच्चेही[14] अणुसास[15] अप्पगं ।
अहियं च असाहु[16] सोयई से थणई परिदेवई[17] बहुं ॥
६२. इह जीवियमेव पासहा[18] 'तरुण एव वाससयस्स तुट्टई'[19] ।
'इत्तरवासं व बुज्झहा'[20] गिद्ध[21] णरा कामेसु[22] मुच्छिया[23] ॥

---

१. °वंणाहजोसिया (क); °वणाअझोसिया (ख); °ऽझोसिया (वृपा); ऽझूसिया (चू) ।
२. उड्ढं तिरियं अधे तहा (वृपा); उड्ढं तिरियं अधेतिधा (चूपा) ।
३. आणियं (चू); आहितं (चूपा) ।
४. राईणिया (क, ख) ।
५. एवं परमाणि महव्वताणि, अक्खाताणि सरातिभोयणाणि (चू) ।
६. किमणेण (चू, वृपा) ।
७. समा (वृ)
८. जेण तस्स तहिं अप्पथामता, अचयंतो खलु सेऽवसीदतो (चू); से अंतए अप्पथामए, नातिचए अवसे विसीदति (चूपा) ।
९. कामेसणं विऊ (क, ख, चूपा) ।
१०. पयहामि (चू); पजहेज्ज (क, चूपा) ।
११. × (क) ।
१२. अलद्धे (चू) ।
१३. तवे (चू) ।
१४. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१५. अणुसासे (चू) ।
१६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१७. परितप्पती (चू) ।
१८. पस्सधा (चू) ।
१९. तरुणेव० (ख); तरुणगो वाससयस्स तिउट्टति (चू); दुब्बलवाससया तिउट्टति (चूपा); °वाससयाउ तुट्टति (वृपा) ।
२०. इत्तर वासे य बुज्झह (क) ।
२१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा ।
२२. कामेहिं (क) ।
२३. चिप्पिता (चू) ।

आरंभ-परिणाम-पदं

६३. जे इह आरंभणिस्सिया आयदंड[1] एगंतलूसगा।
गंता ते पावलोगयं चिररायं[2] आसुरियं[3] दिसं॥

परलोग-संदेह-पदं

६४. ण य संखयमाहु जीवियं तह वि य बालजणो पगब्भई।
पच्चुप्पण्णेण कारियं के[4] दट्ठुं परलोगमागए ?॥

परलोग-सद्दहणा-पदं

६५. अदक्खुव[5]! दक्खुवाहियं सद्दहसू अदक्खुदंसणा!।
हंदि! हु सुणिरुद्धदंसणे मोहणिज्जेण[6] कडेण कम्मुणा॥

आयतुला-पदं

६६. दुक्खी मोहे पुणो पुणो णिव्विदेज्ज सिलोगपूयणं।
एवं सहिएऽहिपासए[7] 'आयतुलं पाणेहि संजए'[8]॥

अगारवासे धम्म-पदं

६७. गारं पि य[9] आवसे णरे अणुपुव्वं पाणेहि संजए।
समया सव्वत्थ सुव्वए देवाणं गच्छे सलोगयं॥

सच्चोवक्कम-पदं

६८. सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं[10]।
सव्वत्थ विणीयमच्छरे[11] उंछं भिक्खु[12] विसुद्धमाहरे॥

६९. सव्वं णच्चा अहिट्ठए धम्मट्ठी उवहाणवीरिए।
गुत्ते जुत्ते सया जए आयपरे परमायतट्ठिए॥

असरण-भावणा-पदं

७०. वित्तं पसवो य णाइओ[13] 'तं बाले'[14] सरणं ति मण्णई।
एए मम 'तेसि वा'[15] अहं णो ताणं सरणं ण[16] विज्जई॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—आयदंडा।
२. चिरकालं (चू)।
३. आसूरियं (चू)।
४. को (ख)।
५. अद्दक्खुव (चू)।
६. मोहणिएण (चू)।
७. ऽधिपासिया (चू)।
८. ०तुले पाणेहि भवेज्जसि (चू)।
९. × (ख)।
१०. करेहु० (क, चू); करेज्ज० (ख); करेज्जुवक्कमं (चूपा)।
११. अवणीत० (वृ)।
१२. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१३. नायतो (क); णातयो (चू)।
१४. बालजणो (चू)।
१५. तेसु वा (क); तेसु वि (ख); तेसु या (वृ); ०वी (चू)।
१६. च (चू)।

७१. अब्भागमियम्मि वा दुहे अहवोवक्कमिए[१] भवंतिए[२] ।
एगस्स गई य[३] आगई विदुमंता सरणं ण मण्णई ।।
७२. सव्वे सयकम्मकप्पिया अवियत्तेण दुहेण पाणिणो ।
हिंडंति भयाउला सढा जाइजरामरणेहिऽभिद्दुया[४] ।।

बोहि-दुल्लह-पदं

७३. इणमेव[५] खणं वियाणिया[६] णो सुलभं 'बोहिं च'[७] आहियं ।
एवं सहिएऽहिपासए[८] आह जिणे इणमेव सेसगा ।।

धम्मस्स तेकालियत्त-पदं

७४. अभविंसु पुरा वि भिक्खवो आएसा वि भविंसु[९] सुव्वया ।
एयाइं गुणाइं आहु[१०] ते कासवस्स अणुधम्मचारिणो ।।
७५. तिविहेण वि पाण[११] मा हणे आयहिए अणियाण[१२] संवुडे ।
एवं सिद्धा अणंतगा[१३] संपइ[१४] जे य अणागयावरे ।।
७६. एवं[१५] से उदाहु अणुत्तरणाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरणाणदंसणधरे ।
अरहा णायपुत्ते भगवं वेसालिए[१६] वियाहिए[१७] ।।
—त्ति बेमि ।।

---

१. अहवा उवक्कमिए (क) ।
२. भवंतए (चू); भवंतरे (वृ); भवंतिए (वृ ग) ।
३. व (क, चू) ।
४. वाधिजरामरणेहऽभिद्दुता (चू) ।
५. इणमो य (चू, वृ) ।
६. विताणिता (चू) ।
७. बोधी य (चू) ।
८. ऽहियासए (ख); ऽहिपस्सिया (चू); ऽधियासए (चूपा, वृपा) ।
९. भवंति (क, ख) ।
१०. आह (चू) ।
११. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पाणा ।
१२. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणियाणे ।
१३. अणंतसो (क, ख) ।
१४. संपत (चू) ।
१५. तुलना—उत्तरज्झयणाणि ६।१७ ।
१६. वेसालीए (चू) ।
१७. 'क' प्रतौ अस्यानन्तरमेकः श्लोकः अतिरिक्तो लभ्यते—
इतिकम्मवियालमुत्तमं,
जिणवरेण सुदेसियं सया ।
जे आचरंति आहिय,
खवितरया वइहिंति ते सिवं गतिं ।।

तइयं अज्झयणं

उवसग्गपरिण्णा

पढमो उद्देसो

ओघ-उवसग्ग-पदं

१. सूरं मण्णइ अप्पाणं जाव जेयं ण पस्सई।
जुज्झंतं दढधम्मा[न्ना ?]णं[1] सिसुपालो व महारहं ॥
२. पयाया सूरा रणसीसे संगामम्मि उवट्ठिए।
माया पुत्तं ण जाणाइ जेएण परिविच्छए[2] ॥
३. एवं सेहे वि अप्पुट्ठे भिक्खुचरिया[3] - अकोविए।
सूरं मण्णइ अप्पाणं जाव लूहं ण सेवए ॥

सीत-परीसह-पदं

४. जया हेमंतमासम्मि सीयं फुसइ सवायगं।
तत्थ मंदा विसीयंति[4] रज्जहीणा[5] व खत्तिया ॥

गिम्ह-परीसह-पदं

५. पुट्ठे गिम्हाहितावेणं विमणे सुपिवासिए[6]।
तत्थ मंदा विसीयंति मच्छा अप्पोदए जहा ॥

जायणा-परीसह-पदं

६. सया दत्तेसणा दुक्खं जायणा दुप्पणोल्लिया।
कम्मंता[7] दुब्भगा[8] चेव इच्चाहंसु पुढोजणा ॥

---

[1] कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठश्चूर्ण्यनुसारी, यथा— दृढधन्वानम्।

[2] °विच्छिए (क, ख)।

[3] भिक्खाचरिए (क); भिक्खाचरिया (ख वृ)।

[4] वसीयंति (क)।

[5] रट्ठ° (चू)।

[6] सुप्पिवासिए (क)।

[7] कम्मत्ता (क, ख, वृ)।

[8] दूहगा (ख)।

७. एए सद्दे[1] अचायंता गामेसु णगरेसु वा[2] ।
तत्थ मंदा विसीयंति संगामम्मि व भीरुणो[3] ॥

वध-परीसह-पदं

८. अप्पेगे खुज्झियं[4] भिक्खुं[5] सुणी डंसइ लूसए ।
तत्थ मंदा विसीयंति तेउपुट्ठा[6] व पाणिणो ॥

अक्कोस-परीसह-पदं

९. अप्पेगे] पडिभासंति[7] पाडिपंथियमागया[8] ।
'पडियारगया एए'[9] जे एए एव[10]-जीविणो ॥
१०. अप्पेगे वइं[11] जुंजंति णिगिणा[12] पिंडोलगाहमा ।
मुंडा कंडू-विणट्ठंगा उज्जल्ला[13] असमाहिया ॥
११. एवं विप्पडिवण्णेगे अप्पणा उ अजाणया ।
तमाओ ते तमं जंति मंदा मोहेण पाउडा'[14] ॥

फास-परीसह-पदं

१२. पुट्ठो य दंसमसगेहिं तणफासमचाइया ।
ण मे दिट्ठे परे लोए किं[15] परं मरणं सिया ? ॥

केसलोय-बंभचेर-परीसह-पदं

१३. संतत्ता केसलोएणं बंभचेरपराइया ।
तत्थ मंदा विसीयंति 'मच्छा पविट्ठा'[16] व केयणे ॥

---

१. सद्दा (ख) ।
२. य (क) ।
३. भीरुया (ख) ।
४. झुज्झियं (क, ख); खुधियं (क्व) ।
५. भिक्खू (चू) ।
३. तेज ० (क) ।
७. परि ० (क, चू) ।
८. पडिपंथिय ० (क, ख) ।
९. परियार ० (क); तद्दारवेत्तणिज्जेते (चूपा) ।
१०. एवं (क) ।
११. वति (ख) ।
१२. चरगा (चू) ।
१३. उज्जाया (चूपा)
१४. ०पाउता (चू); मतिमंदा इत्थिगाउया (चूपा) ।
१५. जइ (क, ख, वृ)
१६. मच्छाविट्ठा (ख)

वध-बंध-परीसह-पदं

१४. आयदंडसमायारा मिच्छासंठियभावणा ।
हरिसप्पओसमावण्णा केई लूसंतिऽणारिया[1] ॥

१५. अप्पेगे पलियंतंसि चारो[2] 'चोरो त्ति'[3] सुव्वयं ।
बंधंति भिक्खुयं बाला कसायवसणेहिं[4] य ॥

१६. तत्थ दंडेण संवीते मुट्ठिणा अदु फलेण वा ।
णाईणं सरई बाले इत्थी वा कुद्धगामिणी ॥

उक्खेव-पदं

१७. एए भो कसिणा[5] फासा फरुसा[6] दुरहियासया[7] ।
हत्थी वा सरसंवीता[8] कीवावसगा[9] गया गिहं ॥

—ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अनुकूल-परीसह-पदं

१८. अहिमे[10] सुहुमा संगा भिक्खूणं जे दुरुत्तरा ।
जत्थ एगे[11] विसीयंति ण चयंति[12] जवित्तए[13] ॥

१९. अप्पेगे णायओ[14] दिस्स रोयंति परिवारिया[15] ।
पोस णे तात ! पुट्ठो सि कस्स 'तात ! जहासि'[16] णे ॥

---

[1] लूसंत° (क); लूसेंति° (चू) ।
[2] चारि (क, ख) ।
[3] चोरित्ति (क) ।
[4] °वयणेहि (क, ख, वृ) ।
[5] फरुसा (चू) ।
[6] कसिणा (चू) ।
[7] दुरु° (क, ख) ।
[8] °संवीते (ख) ।
[9] कीवाऽवस (क, वृ); कीवा अवसा (ख); तिव्वसढा (वृपा); तिव्वसढगा (चूपा) ।
[10] अह इमे (ख); अथ इमे (चू) ।
[11] मंदा (चू) ।
[12] चएत्ता (चू) ।
[13] जहित्तए (क); जवइत्तए (चू) ।
[14] नातिगा (ख) ।
[15] °यारिया (क) ।
[16] तात चयासि (ख, वृ); परिच्चयासि (चू) ।

२०. पिया ते थेरओ तात ! ससा ते खुड्डिया इमा ।
भायरो ते सवा[1][2] तात ! सोयरा किं जहासि[3] णे ? ।।

२१. मायरं पियरं पोस 'एवं लोगो'[4] भविस्सइ ।
एवं 'खु लोइयं'[5] तात ! जे 'पालेंति[6] उ'[7] मायरं ।

२२. 'उत्तरा महुरुल्लावा'[8] पुत्ता ते तात ! खुड्डया ।
भारिया ते णवा तात ! मा सा अण्णं जणं गमे ।।

२३. एहि तात[9] ! घरं जामो मा तं कम्म[10] सहा वयं ।
बीयं पि ताव[11] पासामो जामु ताव सयं गिहं ।।

२४. गंतुं तात ! पुणाऽऽगच्छे[12] ण तेणाऽसमणो सिया ।
अकामगं परक्कमंतं[13] को तं[14] वारेउमरहइ ? ।।

२५. जं किंचि अणगं तात ! तं पि सव्वं समीकतं ।
हिरण्णं ववहाराइ तं पि दाहामु[15] ते वयं ।।

२६. इच्चेव[16] णं सुसेहंति[17] कालुणीयउवट्ठिया[18] ।
विबद्धो णाइसंगेहि तओऽगारं पहावइ ।।

२७. 'जहा रुक्खं वणे जायं'[19] मालुया पडिबंधइ ।
एवं[20] णं पडिबंधंति[21] णायओ असमाहिए[22] ।।

---

[1] व्या० वि०—श्रृण्वंतीति श्रवा :—
आणाउववायवयणणिद्देसे य चिट्ठंति (चू) ।

[2] सया (क); सगा (ख, वृ) ।

[3] चयासि (ख, वृ) ।

[4] एस लोए (क) ।

[5] खलु लोय (ख) ।

[6] पोसइ (क); पालयति (ख) ।

[7] पोसे पिउ (क्व) ।

[8] इतरा मधुरोल्लावा (चूपा) ।

[9] ताव (चू) ।

[10] व्या० वि०—'अकृथा:' इति क्रियाशेषः ।

[11] तात (ख, वृ) ।

[12] पुणोगच्छे (क, ख) ।

[13] परक्कमं (क); परिकम्मं (ख) ।

[14] ते (क, ख) ।

[15] दासामो (चू) ।

[16] इच्चेवं (चू) ।

[17] सुसेहित्ति (क); सुसिक्खंतं (चू); सुसेहिंति (चूपा) ।

[18] कालुणीयासमुट्ठिया (क); °समुट्ठिया (ख); कालुणतो ° (चू) ।

[19] वणे जातं जधा रुक्खं (चू) ।

[20] एव (क) ।

[21] परिवेढंति (चू) ।

[22] असमाहिणा (क्व) ।

२८. विबद्धो[1] णाइसंगेहिं[2] हत्थी वा वि णवग्गहे।
पिट्ठओ परिसप्पंति 'सूती गो व्व अदूरगा'[3]॥
२९. एए संगा मणुस्साणं पायाला व अतारिमा।
कीवा 'जत्थ य किस्संति'[4] णाइसंगेहि मुच्छिया॥
३०. तं च भिक्खू परिण्णाय सव्वे संगा महासवा।
जीवियं णावकंखेज्जा सोच्चा धम्ममणुत्तरं॥
३१. अहिमे[5] संति आवट्टा[6] कासवेण पवेइया।
बुद्धा जत्थावसप्पंति सीयंति अबुहा जहिं॥

भोग-णिमंतण-पदं

३२. रायाणो रायऽमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया।
णिमंतयंति भोगेहिं भिक्खुयं साहुजीविणं॥
३३. हत्थस्स[7]-रह-जाणेहिं विहारगमणेहि य।
'भुंज भोगे इमे सग्घे'[8] महरिसी! पूजयामु तं[9]॥
३४. वत्थगंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
भुंजाहिमाइं भोगाइं आउसो[10]! 'पूजयामु तं'[11]॥
३५. जो तुमे णियमो चिण्णो भिक्खुभावम्मि सुव्वया[12]!।
अगारमावसंतस्स सव्वो 'संविज्जए तहा'[13]॥
३६. चिरं दूइज्जमाणस्स दोसो दाणिं कुओ[14] तव?।
इच्चेव णं णिमंतेंति णीवारेण[15] व सूयरं॥
३७. चोइया भिक्खुचरियाए[16] अचयंता जवित्तए[17]।
तत्थ मंदा विसीयंति उज्जाणंसि व दुब्बला॥

---

[1] विवद्धे (चू)।
[2] नाय° (क)।
[3] °अदूरए (क); सूतिय व्व अदूरतो (चू)।
[4] °कीसंति (क); जत्थ विसण्णेसी (चू); जत्थ विसण्णासी, जत्थावकीसंति (चूपा)।
[5] अह इमे (क); अहो इमे (चू, वृपा); अध इमे (चूपा)।
[6] याऽवट्टा (चू); आवट्टा (चूपा)।
[7] व्या० वि०–सन्धिपदमिदम्—हत्थि+अस्स।
[8] °सक्खे (क); भुंजाहिमाइं भोगाइं (चू)।
[9] ते (चू)।
[10] आयसो (चू)।
[11] पूजयामि ते (चू)।
[12] उत्तमो (चू)।
[13] सो चिट्ठती तधा (चू); संविज्जते तधा (चूपा)।
[14] कओ (क)।
[15] णीयारेण (चू)।
[16] भिक्खुवज्जाए (क)।
[17] जवइत्तए (चू)।

३८. अचयंता व[1] लूहेण उवहाणेण तज्जिया ।
तत्थ मंदा विसीयंति 'पंकंसि व'[2] जरग्गवा ॥
३९. एवं[3] णिमंतणं लद्धुं मुच्छिया गिद्ध[4] इत्थिसु ।
अज्झोववण्णा कामेहिं[5] चोइज्जंता 'गिहं गय'[6] ॥

— त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-विसीदण-पदं

४०. जहा संगामकालम्मि 'पिट्ठओ भीरु[7] वेहइ'[8] ।
वलयं गहणं णूमं को जाणइ पराजयं ? ॥
४१. मुहुत्ताणं[9] मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ[10] तारिसो ।
पराजियाऽवसप्पामो इति भीरू उवेहई ॥
४२. एवं तु समणा एगे अबलं णच्चाण अप्पगं ।
अणागयं भयं दिस्स अवकप्पंति मं सुयं ॥
४३. 'को जाणइ'[11] वियोवातं[12] इत्थीओ उदगाओवा ? ।
चोइज्जंता पवक्खामो ण[13] णे अत्थि पकप्पियं ॥
४४. इच्चेवं[14] पडिलेहंति वलयाइ[15] पडिलेहिणो ।
वितिगिंछसमावण्णा[16] पंथाणं व अकोविया ॥
४५. जे उ संगामकालम्मि णाया सूरपुरंगमा ।
'ण ते पिट्ठमुवेहिंति'[17] किं परं मरणं सिया[18] ? ॥

---

[1] य (चू) ।
[2] सिरंसि व (क, वृ); उज्जाणंसि (ख); थलंसि व (क्व) ।
[3] एयं (चू) ।
[4] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा ।
[5] कामेसु (चू) ।
[6] गया गिहं (ख) ।
[7] व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—भीरू ।
[8] पिट्ठिओ० (क); पच्छतो भीरू वेहति (चू) ।
[9] मुहुत्ताण (क) ।
[10] हवति (क, चू) ।
[11] के जाणंति (चू) (निर्युक्ति गा० ४१) ।
[12] विउवायं (क) ।
[13] नो (क) ।
[14] इच्चे व णं (क, ख) ।
[15] वलय (ख) ।
[16] विनिगिच्छं° (वृ) ।
[17] नो ते पुट्ठ ° (ख); °पिट्ठतो पेहंति (चू) ।
[18] भवे (चू) ।

४६. एवं 'समुट्ठिए भिक्खू'[1] वोसिज्जा[2] गारबंधणं ।
आरंभं तिरियं[3] कट्टु अत्तत्ताए[4] परिव्वए ।।

परवादवयण-पदं

४७. तमेगे परिभासंति भिक्खुयं साहुजीविणं[5] ।
जे 'एवं परिभासंति'[6] अंतए ते समाहिए[7] ।।

४८. संबद्धसमकप्पा हु 'अण्णमण्णेसु मुच्छिया'[8] ।
पिंडवायं गिलाणस्स जं सारेह दलाह य ।।

४९. एवं तुब्भे सरागत्था अण्णमण्णमणुव्वसा ।
णट्ठ-सप्पह-सब्भावा संसारस्स अपारगा ।।

५०. अह ते पडिभासेज्जा[9] भिक्खू मोक्खविसारए ।
एवं तुब्भे पभासंता[10] दुपक्खं[11] चेव सेवहा ।।

५१. तुब्भे भुंजह पाएसु गिलाणाभिहडं[12] ति य ।
तं च बीओदगं भोच्चा तमुद्देस्सादि[13] जं कडं ।।

५२. लित्ता तिव्वाभितावेणं[14] उज्झिया[15] असमाहिया ।
णाइकंडूइयं सेयं[16] अरुयस्सावरज्झई[17] ।।

५३. तत्तेण अणुसिट्ठा[18] ते अपडिण्णेण जाणया ।
ण एस णियए[19] मग्गे असमिक्खा[20] वई किई[21] ।।

---

१. समुट्ठितं भिक्खुं (चू) ।
२. वोसिच्चा (क) ।
३. (वि) तिरियं (चू) ।
४. आतत्ताए(क); आतत्ताए, आतथाए(चूपा) ।
५. ०जीवियं (क) ।
६. तें उ० (क); ते उ एवं भासंति (चू) ।
७. ऽसमाहिते(चू); व्या० वि०—अत्र पञ्चम्येकवचने 'समाहीए' इतिरूपं भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
८. अण्णमण्णसमुच्छिता (चू); अण्णमण्णेहिं मुच्छिया (चू) (निर्युक्ति गा० ४१) ।
९. परिभासेज्जा (ख, वृ); परिभासिज्ज (क) ।
१०. पभासिंता (क); ऽवभासंता (चू) ।
११. दुवक्खं (चू) ।
१२. गिलाणाभिहडम्मि (क); गिलाणोअभिहडं ति (ख, चू)
१३. तमुद्दिस्सादि (क); तमुद्देसा य (ख) ।
१४. तिक्खा० (ख); तिव्वाभिलेवेणं (चूपा) ।
१५. उज्जया (क); उज्जुया (ख); उज्जाता (चू) ।
१६. साधु (चू) ।
१७. अरुयस्स० (क); अरुकस्सावरुज्झति (चूपा) ।
१८. अणुसट्ठा (क, चू) ।
१९. णितिए (चू) ।
२०. व्या० वि०—अकारस्य दीर्घत्वम् ।
२१. कति (क, ख) ।

५४. एरिसा जा[१] वई एसा 'अग्गे वेणु व्व करिसिया'[२]।
गिहिणं[३] अभिहडं सेयं भुंजिउं ण उ[४] भिक्खुणं[५]॥
५५. धम्मपण्णवणा 'जा सा'[६] सारम्भाण विसोहिया।
ण उ एयाहि दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं॥
५६. सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं अचयंता[७] जवित्तए।
तओ वायं णिराकिच्चा[८] ते भुज्जो वि पगब्भिया॥
५७. रागदोसाभिभूयप्पा[९] मिच्छत्तेण अभिद्दुया[१०]।
अक्कोसे[११] सरणं जंति टंकणा इव पव्वयं॥
५८. बहुगुणप्पकप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए[१२]।
जेणण्णे ण[१३] विरुज्झेज्जा तेणं तं तं समायरे॥
५९. इमं च धम्ममायाय कासवेण पवेइयं[१४]।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए[१५] समाहिए॥
६०. संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।
उवसग्गे णियामित्ता[१६] आमोक्खाए[१७] परिव्वएज्जासि॥

—त्ति बेमि॥

चउत्थो उद्देसो

अणुस्सुत-विसीदण-पदं

६१. आहंसु महापुरिसा पुव्विं तत्ततवोधणा।
'उदएण सिद्धिमावण्णा'[१८] तत्थ मंदो विसीयइ॥

---

[१] भो (ख); भे (चूपा)।
[२] अग्गवेणु° (ख); अग्गिवेल्लव्व करिसिता(चू); अग्गे वेलुव्व करिसिति (चूपा)।
[३] गिहिणो (ख, चू)।
[४] व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
[५] भिक्खुणो (ख, चू)।
[६] एसा (चू)।
[७] अचएंता (चू)।
[८] णिरे किच्चा (चू); नरे किच्चा (क)।
[९] रागदोस° (ख)।
[१०] अभिदुया (ख)।
[११] आओसे (ख)।
[१२] आतसमाहितो (चू)।
[१३] णो (ख)।
[१४] पवेदिदं (चू)।
[१५] अगिणेण (चू)।
[१६] अधियासेंतो (चू)।
[१७] अमोक्खाए (चू)।
[१८] भोज्जा सीतोदगं सिद्धा (चू); मंदेऽवसीयति (क)।

६२. अभुंजिया णमी वेदेही[1] रामउत्ते[2] य[3] भुंजिया ।
बाहुए उदगं भोच्चा तहा तारागणे[4] रिसी ॥

६३. आसिले देविले चेव दीवायण[5] महारिसी ।
पारासरे दगं भोच्चा बीयाणि[6] हरियाणि य ॥

६४. एए पुव्वं[7] महापुरिसा आहिया इह संमया ।
भोच्चा बीयोदगं[8] सिद्धा इइ[9] मेयमणुस्सुयं ॥

६५. तत्थ मंदा विसीयंति वाहच्छिण्णा व गद्दभा ।
पिट्ठओ परिसप्पंति[10] पीढसप्पीव[11] संभमे ॥

सातं सातेण विज्जई-पदं

६६. इहमेगे उ भासंति[12] सातं सातेण विज्जई ।
'जे तत्थ'[13] आरियं[14] मग्गं परमं च[15] समाहियं[16] ॥

६७. मा एयं अवमण्णंता अप्पेणं 'लुंपहा बहुं'[17] ।
एयस्स अमोक्खाए 'अयोहारि व्व'[18] जूरहा ॥

६८. 'पाणाइवाए वट्टंता'[19] 'मुसावाए असंजया'[20] ।
अदिण्णादाणे वट्टंता मेहुणे य परिग्गहे ॥

---

१. विदेहि (ख) ।
२. रामगुत्ते (क, वृ); रामाउत्ते (चू); वृत्तिकारेण 'रामगुप्त' इति व्याख्यातम्, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे नैतत्सम्यक् प्रतिभाति ।
३. व (क) ।
४. नारायणे (वृ); चूर्ण्यां (पुण्यविजयजी द्वारा संपादित, पृ० ९५) 'नारायणे' इति पाठो मुद्रितोस्ति, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे 'तारागणे' पाठो युज्यते । संभवतो लिपिदोषेण 'तकार' स्थाने 'नकारो जातः ।
५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दीवायणे ।
६. बीताणि (चू) ।
७. पुव्वि (चू) ।
८. सीतोदगं (चू) ।
९. जह (चू) ।
१०. अणुधावंति (चू) ।
११. पिट्ठ० (क्व) ।
१२. मन्नंते (चू, वृपा) ।
१३. जितत्थ (चू) ।
१४. आयरियं (चू) ।
१५. ति (चू) ।
१६. समाधिता (चू) ।
१७. बहु लुंपध (चू) ।
१८. अयहारी व (क, चू) ।
१९. पाणाइवाए व मक्खंता (क) ।
२०. ०य संजया (क); मुमावादे वऽसंजता (चू) ।

अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पदं

६९. एवमेगे[1] उ[2] पासत्था पण्णवेंति अणारिया।
'इत्थीवसं गया'[3] बाला जिणसासणपरंमुहा ॥
७०. जहा गंडं पिलागं वा परिपीलेत्ता[4] मुहुत्तगं।
एवं विण्णवणित्थीसु[5] दोसो तत्थ कओ[6] सिया ? ॥
७१. जहा 'मंधादए णाम'[7] थिमियं पियति[8] दगं।
एवं विण्णवणित्थीसु[9] दोसो तत्थ कओ[10] सिया ? ॥
७२. जहा विहंगमा पिंगा थिमियं पियति[11] दगं।
एवं विण्णवणित्थीसु[12] दोसो तत्थ कओ[13] सिया ? ॥
७३. 'एवमेगे उ पासत्था'[14] मिच्छादिट्ठी[15] अणारिया।
अज्झोववण्णा कामेहिं पूयणा इव तरुणए[16] ॥
७४. अणागयमपस्संता[17] पच्चुप्पण्णगवेसगा[18]।
ते पच्छा परितप्पंति[19] 'झीणे आउम्मि'[20] जोव्वणे ॥
७५. जेहिं काले परक्कंतं[21] 'ण पच्छा परितप्पए'[22]।
ते धीरा[23] बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवियं ॥
७६. जहा णई वेयरणी दुत्तरा[24] इह सम्मता।
एवं लोगंसि णारीओ दुत्तरा[25] अमईमया[26] ॥

---

१. एवमेते (चू)।
२. य (क)।
३. इत्थीवसगा (क), इत्थीवसगता (चू)।
४. परिपीलिज्ज (क, ख); णिपीलेत्ता (चू)।
५. °वणत्थीसु (चू)।
६. कुतो (चू)।
७. मंधायती नाम (क); मंधातइण्णाम (चू)।
८. भुंजती (क, ख)।
९. °वणत्थीसु (चू)।
१०. कुओ (चू)।
११. भुंजती (क, ख)।
१२. °वणत्थीसु (चू)।
१३. कुओ (चू)।
१४. एवं तु समणा एगे (चू)।
१५. मिच्छदिट्ठी (ख)।
१६. यद्यपि चूर्णीपाठे 'तरुणए' इत्येव पाठो मुद्रितोऽस्ति, किन्तु 'तण्णगे—छावके' इति व्याख्यांशेन प्रतीयते मौलिकः पाठः 'तण्णगे' इति आसीत्, किन्तु कठिनशब्दानां सरलीकरणपद्धत्या अत्रापि परिवर्तनं जातमिति संभाव्यते।
१७. °मपासंता (चू)।
१८. °गवेसए (क); °गवेसणा (चू)।
१९. अणुसोयंति (चू)।
२०. खीणे° (ख); झीणाउम्मि (चू)।
२१. परिक्कंतं (क, चू)।
२२. सुकडं तेसिं सामण्णं (चू)।
२३. वीरा (क)।
२४. दुरुत्तरा (ख)।
२५. दुरुत्तरा (ख); दुरुत्तराओ (चू)।
२६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।

७७. जेहिं 'णारीण संजोगा'[1] पूयणा पिट्ठओ कया ।
सव्वमेयं णिराकिच्चा[2] ते ठिया सुसमाहीए[3] ।।
७८. एए ओघं तरिस्संति समुद्दं व[4] ववहारिणो ।
जत्थ पाणा विसण्णासी[5] 'किच्चंती सयकम्मुणा'[6] ।।
७९. तं च भिक्खू परिण्णाय सुव्वए समिए चरे ।
मुसावायं विवज्जेज्जा[7] 'ऽदिण्णादाणं च'[8] वोसिरे ।।
८०. उड्ढमहे तिरियं वा जे केई तसथावरा ।
सव्वत्थ 'विरतिं कुज्जा'[9] संति णिव्वाणमाहियं ।।
८१. इमं च धम्ममायाय कासवेण पवेइयं ।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ।।
८२. संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ।
उवसग्गे णियामित्ता[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ।।
—त्ति बेमि ।।

---

१. ते णारि संजोगा (चू) ।
२. णिरेकिच्चा (क, चू) ।
३ सुसमाहिए (क, ख) ।
४. × (ख) ।
५. विसन्नासं (क); विषण्णाः सन्तः (वृ) ।
६. °सयकम्मणा (ख); कच्चंति सह कम्मणा (चू) ।
७. च वज्जिंज्जा (ख); विवज्जेज्जा (चू) ।
८. अदिण्णादि च (चू) ।
९. विज्जं विरतिं (चू) ।
१०. नियाएत्ता (क); हियासित्ता (ख); णिरेकिच्चा (चू) ।

चउत्थं अज्झयणं

इत्थिपरिण्णा

पढमो उद्देसो

इत्थीसंसग्ग-विवज्जण-पदं

१. जे मायरं च पियरं च विप्पजहाय[1] पुव्वसंजोगं ।
एगे सहिए चरिस्सामि आरतमेहुणो[2] विवित्तेसी[3] ॥
२. सुहुमेणं तं परक्कम्म छण्णपएण इत्थीओ मंदा ।
'उवायं पि ताओ जाणंति'[4] जह[5] लिस्संति भिक्खुणो एगे ॥
३. पासे भिसं णिसीयंति अभिक्खणं पोसवत्थं[6] परिहिंति ।
कायं अहे वि दंसंति 'बाहु मुद्धट्टु कक्खमणुव्वजे'[7] ॥
४. सयणासणेहिं जोग्गेहिं[8] इत्थीओ एगया णिमंतेंति ।
एयाणि चेव से जाणे पासाणि विरूवरूवाणि ॥
५. णो तासु[9] चक्खु संधेज्जा णो वि य 'साहसं समणुजाणे'[10] ।
णो सद्धियं[11] पि विहरेज्जा एवमप्पा 'सुरक्खिओ होइ'[12] ॥

---

[1] विप्पजधाय (चू) ।

[2] °मेधुणो (चू) ।

[3] विवित्तेसु (वृ); वित्रित्तेसि (वृपा); विवित्तमेसी (चूपा) ।

[4] °जाणिसु (क, ख, वृपा); जाणंति ता उवायं च (चू) ।

[5] जहा (ख); जध (चू) ।

[6] °वत्थ (क, ख) ।

[7] बाहु उद्धट्टु° (क); बाहु मुद्धत्तु° (ख); बाहु द्धट्टु कक्खं परामुसे (चू) ।

[8] जोगेहिं (क, ख) ।

[9] तासि (चू) ।

[10] साहसमभिजाणेज्जा (क); °समभिजाणे(ख)

[11] सहियं (ख) ।

[12] रक्खित्तु सेओ (चू) ।

६. आमंतिय 'ओसवियं वा'[१] भिक्खुं आयसा णिमंतेंति ।
एयाणि चेव से जाणे[२] सद्दाणि विरूवरूवाणि[३] ॥
७. मणबंधणेहि णेगेहिं कलुणविणीयमुवगसित्ताणं[४] ।
अदु मंजुलाइं भासंति आणवयंति[५] भिण्णकहाहिं ॥
८. सीहं जहा व कुणिमेणं णिब्भयमेगचरं पासेणं ।
एवित्थियाओ[६] बंधंति संवुडमेगतियमणगारं ॥
९. अह तत्थ पुणो णमयंति रहकारो व णेमिं अणुपुव्वीए[७] ।
बद्धे मिए व पासेणं फंदंते वि ण मुच्चई ताहे ॥
१०. अह सेऽणुतप्पई पच्छा भोच्चा पायसं व विसमिस्सं ।
एवं विवागमायाए[८] संवासो ण[९] कप्पई दविए ॥
११. तम्हा उ[१०] वज्जए इत्थी विसलित्तं व कंटगं णच्चा ।
ओए कुलाणि वसवत्ती आघाए[११] ण से वि[१२] णिग्गंथे ॥
१२. जे एयं 'उंछं तऽणुगिद्धा'[१३,१४] अण्णयरा हु ते कुसीलाणं ।
सुतवस्सिए[१५] वि से भिक्खू णो विहरे[१६] सहणमित्थीसु[१७] ॥
१३. अवि[१८] धूयराहिं सुण्हाहिं धाईहिं अदुवा दासीहिं ।
महतीहिं[१९] वा कुमारीहिं संथवं से ण कुज्जा अणगारे ॥
१४. अदु णाइणं व सुहिणं वा अप्पियं दट्ठुं एगया होइ ।
'गिद्धा सत्ता'[२०] कामेहिं रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि ॥
१५. समणं 'पि दट्ठूदासीणं'[२१] तत्थ वि ताव एगे कुप्पंति ।
अदु[२२] भोयणेहिं णत्थेहिं इत्थीदोससंकिणो होंति[२३] ॥

---

[१] ओसविय (ख); ओसविया णं (चूपा) ।
[२] जाणिया (क); जाणि (चू) ।
[३] णिमंतणादीणि (चू); विरूवरूवाणि (चूपा) ।
[४] °मुवागसित्ताणं (क, ख); °मुपकम्मित्ताण (चू) ।
[५] आणमेयंति (क); आणमयंति (चू) ।
[६] एवित्थिया (क); एवं इत्थियाओ (ख) ।
[७] अणुपुव्वी (ख); अणुपुव्वीए (चू) ।
[८] विवेग° (क, ख, वृपा, चूपा); विवागमण्णिसा (चू) ।
[९] न वि (ख) ।
[१०] हु (क, चू) ।
[११] आघाय (क) ।
[१२] व (क) ।
[१३] व्या० वि० सन्धिपदम्—तयणुगिद्धा ।
[१४] उच्छं अणुगिद्धा (क, ख) ।
[१५] सुतमम्सिए (चू) ।
[१६] विरहे (चू) ।
[१७] सहणं इत्थीसु (क) ।
[१८] अविए (क) ।
[१९] महल्लीहिं (चू) ।
[२०] गिद्ध मत्ता (ख) ।
[२१] पि दट्ठू° (ख); दट्ठूणुदासीणं (वृपा); पि दट्ठूदासीणा (चूपा) ।
[२२] अह (क); अदुवा (ख); अथवा (वृ) ।
[२३] भवंति (चू) ।

१६. कुव्वंति संथवं ताहिं पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं ।
तम्हा समणा ! 'ण समेंति आयहियाए'[१] सण्णिसेज्जाओ ॥
१७. बहवे गिहाइं अवहट्टु 'मिस्सीभावं पत्थुया एगे'[२]
धुवमग्गमेव[३] पवयंति[४] वायावीरियं कुसीलाणं ॥
१८. सुद्धं रवइ परिसाए अह रहस्सम्मि दुक्कडं कुणइ[५] ।
जाणंति य णं 'तथा वेदा'[६] माइल्ले महासढेऽयं ति ॥
१९. 'सयं दुक्कडं ण वयइ'[७] 'आइट्ठो वि'[८] पकत्थइ[९] बाले ।
वेयाणुवीइ[१०] मा कासी चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो ॥
२०. उसिया वि इत्थिपोसेसु[११] पुरिसा इत्थिवेयखेत्तण्णा[१२] ।
पण्णासमण्णिया वेगे[१३] णारीणं वसं उवकसंति[१४] ॥
२१. अवि[१५] हत्थपायछेयाए[१६] अदुवा वद्धमंसउक्कंते[१७] ।
अवि[१८] तेयसाभितावणाइं[१९] तच्छिय[२०] खारसिंचणाइं च ॥
२२. अदु[२१] कण्णणासियाछेज्जं[२२] कंठच्छेयणं[२३] तितिक्खंती ।
इति एत्थ पाव-संतत्ता ण य वेंति पुणो ण काहिंति[२४] ॥
२३. सुयमेयमेवमेगेसिं[२५] 'इत्थीवेदे वि'[२६] हु सुयक्खायं ।
एयं पि ता वइत्ताणं अदुवा[२७] कम्मुणा[२८] अवकरेंति ॥

---

१. न समेंति आयाहियाय (क); तु जधाहि आतहिओ (चू); उ जहाहि आअहिताओ (वृपा); ण समिति (समेंति) आतहिओ (चूपा) ।
२. मिस्सीभावं पण्णता एगे (क); मिस्सीभावपण्हया (चू); मिस्सीभावपत्थुया (वृ); मिस्सीभावं पणता (दी) ।
३. धुय° (क) ।
४. भासिसु (चू) ।
५. करेत्ति (ख) ।
६. तधावेता (चू); तथाविदः (वृ) ।
७. सयदुक्कडं च अवदते (क); सयदुक्कडं अवदते (चू) ।
८. आइट्ठे व (क); आउट्ठो वि (चू) ।
९. पकप्पई (क) ।
१०. वेयाणुवीयी (चू) ।
११. °पोसेहिं (चू) ।
१२. °खेदन्ना (ख, चू) ।
१३. एगे (चू) ।
१४. उवणमंति (चू) ।
१५. अदु (चू) ।
१६. °च्छेदातिं (क); °च्छेज्जाइं (चू) ।
१७. °उक्कंतं (क); °मंसंउक्कंते (चू) ।
१८. अदु (चू) ।
१९. °तवणाइं (क, चू) ।
२०. तच्छेतुं (चू) ।
२१. अह (क) ।
२२. °नासछेज्जं (ख); कण्णच्छेज्जं नासं वा (चू) ।
२३. कंठकिज्जणं (चू) ।
२४. करिस्सामो (चू); काहिंति (चूपा) ।
२५. सुतमेवमेतमेगेसिं (चू) ।
२६. इत्थीवेदम्मि य (क); इत्थीवेदेत्ति (ख) ।
२७. अहवा (क); अध पुण (चू) ।
२८. कम्मणा (ख) ।

२४. अण्णं मणेण चिंतेंति 'अण्णं वायाए कम्मुणा'[१] अण्णं ।
तम्हा 'ण सद्दहे भिक्खू'[२] बहुमायाओ इत्थिओ णच्चा ॥
२५. जुवती समणं बूया चित्तवत्थालंकारविभूसिया[३] ।
विरया चरिस्सहं रुक्खं[४] धम्माइक्ख णे भयंतारो ! ॥
२६. अदु सावियापवाएणं अहगं साहम्मिणी 'य तुब्भं ति'[५] ।
जउकुम्भे जहा उवज्जोई संवासे[६] विऊ विसीदेज्जा ॥
२७. जउकुम्भे जोइसुवगूढे[७] आसुभितत्ते णासमुवयाइ ।
एवित्थियाहिं[८] अणगारा 'संवासेण णासमुवयंति'[९] ॥
२८. कुव्वंति 'पावगं कम्मं'[१०] पुट्ठा वेगेवमाहंसु[११] ।
णा[१२] हं करेमि पावं ति अंकेसाइणी ममेस त्ति ॥
२९. बालस्स मंदयं बीयं[१३] जं च कडं अवजाणई भुज्जो ।
दुगुणं करेइ से पावं पूयणकामो[१४] विसण्णेसी ॥
३०. संलोकणिज्जमणगारं आयगयं णिमंतणेणाहंसु ।
वत्थं वा[१५] ताइ ! पायं वा अण्णं पाणगं पडिग्गाहे ॥
३१. णीवारमेवं[१६] बुज्झेज्जा णो 'इच्छे अगारमागंतुं'[१७] ।
'बद्धे विसयपासेहिं'[१८] मोहमावज्जइ[१९] पुणो मंदे ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१. वाया अन्नं च कम्मणा (ख) ।
२. तम्हा णो सद्दहेतव्वं (चू) ।
३. य चित्तलंकारवत्थगाणि परिहित्ता (क, ख) ।
४. लूहं (ख, चू); मोणं (वृपा) ।
५. समणाणं (क, ख) ।
६. संवासेण (चू) ।
७. °सुवगूहे (क); अवगूढे (ख); जोतिमुवगूढे (चू); व्या० वि—द्विपदयोः सन्धिः—जोइसा+उवगूढे ।
८. एवित्थिगासु (चू) ।
९. °णासमवेंति (क); संवासेणाऽसुविणस्संति (चू) ।
१०. पावकम्मं (चू, वृ) ।
११. वेगे एव माहंसु (क, ख) ।
१२. नो (ख) ।
१३. बितियं (ख, चू) ।
१४. पूयण-कामए (क, चू) ।
१५. व (ख, चू) ।
१६. णीयार° (चू); णीयारमन्तं (चूपा) ।
१७. °आगार° (ख); इच्छेज्ज अगारं गंतु (चू); इच्छेज्ज अगारमावत्तं (चूपा, वृपा) ।
१८. बद्धे य विसयदामेहिं (क); संबद्धोविसयदामेहिं (चू) ।
१९. °मागच्छति (वृ) ।

बीओ उद्देसो

इत्थी-आसत्तस्स विडंबणा-पदं

३२. ओए सया ण रज्जेज्जा भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा[1]।
भोगे[2] समणाण सुणेहा 'जह भुंजंति भिक्खुणो एगे'[3] ॥
३३. अह तं तु भेयमावण्णं मुच्छियं भिक्खुं काममइवट्टं[4]।
पलिभिंदियाण तो[5] पच्छा पादुद्धट्टु मुद्धि पहणंति[6] ॥
३४. जइ केसियाए[7] मए भिक्खु! णो विहरे सहणमित्थीए।
'केसे वि अहं लुचिस्सं'[8] णण्णत्थ मए चरेज्जासि[9] ॥
३५. अह णं से होइ उवलद्धे 'तो पेसेंति तहाभूएहिं'[10]।
अलाउच्छेयं[11] पेहेहि[12] वग्गुफलाइं आहराहि त्ति ॥
३६. दारूणि सागपागाए[13] पज्जोओ वा भविस्सई राओ।
पायाणि य मे रयावेहि एहि य ता मे 'पट्ठि उम्मद्दे'[14] ॥
३७. वत्थाणि य मे पडिलेहेहि 'अण्णं पाणमाहराहि'[15] त्ति।
'गंधं च'[16] रओहरणं च 'कासवगं च समणुजाणाहि'[17] ॥
३८. अदु अंजणिं अलंकारं कुक्कययं[18] मे पयच्छाहि।
लोद्धं च लोद्धकुसुमं च वेणुपलासियं[19] च गुलियं च ॥
३९. कोट्ठं[20] 'तगरं अगरुं च'[21] संपिट्ठं सह[22] उसीरेणं[23]।
तेल्लं 'मुहे भिलिंगाय'[24] वेणुफलाइं सण्णिहाणाए ॥

---

[1] विरज्जेज्जा (चू); विरज्जेज्ज (चूपा)।
[2] भोग (क)।
[3] एगे किल जधा भुंजंते (चू)।
[4] कामेसु अतिअट्टं (चू)।
[5] ततो (ख)।
[6] पहणंतु (क); पहणंति (क्व)।
[7] केसियाण (क, ख)।
[8] केसाणविहु लुंचिसु (क)।
[9] विचरेज्जासि (चू)।
[10] ततो णं देसेति तधारूवेहिं (चू)।
[11] लाउच्छेयं (क, ख)।
[12] पेहाहि (ख)।
[13] अण्णपागाए (चू, वृपा)।
[14] पट्ठि उम्महे (चू)।
[15] अन्नपाणं च आहराहि (क, ख); अण्णपाणं वा मे आहराहि (चू)।
[16] गंधं व (चूपा, वृपा)।
[17] कासव समणाणुजाणाहि (वृ); कासवगं मे आणयाहि (चू)।
[18] कुकुहगं (चू)।
[19] वेलुपलासीं (चू)।
[20] कुट्ठं (क)।
[21] अगरुं तगरं च (ख)।
[22] समं (चू)।
[23] हिरिवेरेणं (चू)।
[24] मुहिं भिलिंजाए (क); मुहिं भिजाए (ख), मुहं भिलिंजाए (वृ)।

४०. णंदीचुण्णगाइं पाहराहि[१] 'छत्तोवाहणं च जाणाहि'[२] ।
सत्थं च सूवच्छेयाए आणीलं च वत्थं रावेहि[३] ॥

४१. सुफणिं च सागपागाए[४] आमलगाइं[५] दगाहरणं[६] च ।
तिलगकरणिं[७] अंजणसलागं घिंसु मे विहुयणं[८] विजाणाहि[९] ॥

४२. संडासगं च फणिहं[१०] च[११] सीहलिपासगं च आणाहि ।
आयंसगं च पयच्छाहि दंतपक्खालणं[१२] पवेसेहि ॥

४३. पूयफलं[१३] तंबोलं च 'सूई-सुत्तगं च जाणाहि'[१४] ।
कोसं च मोयमेहाए 'सुप्पुक्खल-मुसल-खारगलणंच'[१५] ।

४४. वंदालगं[१६] च करगं च वच्चघरगं[१७] च आउसो ! खणाहि ।
सरपायगं[१८] च जायाए गोरहगं च सामणेराए ॥

४५. 'घडिगं सह डिंडिमएणं'[१९] चेलगोलं कुमारभूयाए ।
वासं इममभिआवण्णं[२०] आवसहं 'जाणाहि भत्ता'[२१] ! ॥

४६. आसंदियं च णवसुत्तं पाउल्लाइं[२२] संकमट्ठाए ।
'अदु पुत्तदोहलट्ठाए'[२३] 'आणप्पा हवंति दासा वा'[२४] ॥

---

१. पहराहिं (क, ख) ।
२. छत्तगं जाणाहि उवाहणा उ वा (चू) ।
३. रयावेहि (क, ख) ।
४ सूवपाताए (चू) ।
५. आमलगा (चू) ।
६. दगाहरणिं (चू) ।
७. तिलकरणिं (चूपा) ।
८. विधूणयं (वृ); विधूवणं (चू) ।
९. जाणाहि (चू) ।
१०. फणिगं (चू) ।
११. ×(क) ।
१२ °पक्खालग च (क) ।
१३. पूयप्फल (चू) ।
१४. सूचिं° (वृ); सूचिं जाणाहि सुत्तगं (चू) ।
१५. सुप्पुक्खलगं च खारंगलणाए (क); सुप्पुक्खलगं च खारगालगं च (ख); सुप्पुदुक्खलं च खारगलणं च (वृ) ।
१६. चंदालगं (क, ख, वृ) व-च वर्णयोः लिपिसादृश्यहेतुकमिदं परिवर्तनं संभाव्यते ।
१७. वच्चघरं (वृ) ।
१८. सरपायं (ख); सरपादगं (चू) ।
१९. घडियं च सडिंडिमयं च (क, ख) ।
२०. समणाहियावण्णं (क); समभिआवण्णं (ख) ।
२१. च जाण भत्तं च (क, ख, वृ) । अत्र संभाव्यते 'भत्ता' शब्दस्य अर्थानवधारणतया लिपिकारैः 'भत्तं च' इति पाठः उल्लिखितः । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठः आसीत्, तेनासावेव व्याख्यातः ।
२२. पाउल्लाइ (क); पाउल्लगाइं (चू) ।
२३. पुत्तस्स डोहलट्ठाए (क, चूपा) ।
२४. आणप्पे भवति दासमिव (चू) ।

४७. जाए फले समुप्पण्णे ‘गेण्हसु वा णं अहवा जहाहि’[1]।
अह पुत्तपोसिणो एगे ‘भारवहा हवंति उट्टा वा’[2]॥
४८. ‘राओ वि उट्ठिया संता’[3] दारगं ‘संठवेंति धाई वा’[4]।
सुहिरीमणा वि ते संता वत्थधुवा[5] हवंति हंसा[6] वा ॥
४९. एवं[7] बहुहिं कयपुव्वं भोगत्थाए जेऽभियावण्णा[8]।
दासे मिए व पेस्से[9] वा पसुभूए व से ण वा केई[10]॥
५०. ‘एवं खु तासु विण्णप्पं’[11] संथवं संवासं च चएज्जा[12]।
तज्जातिया इमे कामा वज्जकरा य एव मक्खाया ॥
५१. ‘एवं भयं ण’[13] सेयाए ‘इइ से अप्पगं’[14] णिरुंभित्ता।
णो इत्थिं णो पसुं[15] भिक्खू णो सयं पाणिणा णिलिज्जेज्जा[16]॥
५२. सुविसुद्धलेसे मेहावी परकिरियं च वज्जए णाणी।
मणसा वयसा[17] काएणं सव्वफाससहे अणगारे ॥
५३. इच्चेवमाहु से वीरे ‘धुयरए धुयमोहे से भिक्खू’[18]।
तम्हा अज्झत्थविसुद्धे सुविमुक्के[19] ‘आमोक्खाए परिव्वएज्जासि’[20]॥
—त्ति बेमि ॥

---

[1] गेण्हाहि व णं छड्डेहि व णं (चू)।
[2] भरवाहो भवति उट्टो वो लद्दितओ (चू)।
[3] एगे राओ वि उट्ठित्ता (क)।
[4] सण्णवेंति धाव इवा (चू)।
[5] वत्थधोवा (क, ख); वत्थाधुवा (चू)।
[6] हंसो (चू)।
[7] एतं (चू)।
[8] इत्थिआभिआवण्णा (चू)।
[9] पेसे (क, ख)।
[10] केति (चूपा)।
[11] एतं खु तासि वेण्णप्पं (चू)।
[12] वज्जेज्जा (ख)।
[13] एतं भयण्ण (चू)।
[14] इह सेयऽप्पगं (चू)।
[15] पसू (चू)।
[16] णिलेज्ज (चू)।
[17] वयस (क)।
[18] धूतरायमग्गे सभिक्खू (चू); धूतरायमग्गे स भिक्खू (वृपा)।
[19] ×(चू); सुमुक्के (वृ)।
[20] विहरेज्जामुक्खाए (क)।

पंचमं अज्झयणं

णरयविभत्ती

पढमो उद्देसो

णरग-वेदणा-पदं

१. पुच्छिसुहं[1] केवलियं महेसिं कहंऽभितावा णरगा पुरत्था ? ।
अजाणओ[2] मे मुणि बूहि[3] जाणं कहं णु बाला णरगं उवेंति ? ।।
२. एवं मए[4] पुट्ठे महाणुभावे[5] इणमब्बवी[6] कासवे आसुप्पण्णे ।
पवेयइस्सं दुहमट्ठदुग्गं आदीणियं[7] दुक्कडिणं[8] पुरत्था ।।
३. जे केइ बाला इह जीवियट्ठी[9] पावाइं[10] कम्माइँ करेंति रुद्दा ।
ते घोररूवे तिमिसंधयारे तिव्वाभितावे[11] णरए पडंति ।।
४. तिव्वं तसे पाणिणो थावरे य जे हिंसई आयसुहं पडुच्चा[12] ।
जे लूसए होइ अदत्तहारी ण सिक्खई सेयवियस्स किंचि ।।
५. पागब्भि पाणे बहुणं तिवाई[13] अणिव्वुडे[14] घायमुवेइ[15] बाले ।
'णिहो णिसं'[16] गच्छइ अंतकाले अहोसिरं कट्टु उवेइ दुग्गं ।।
६. हण 'छिंदह भिंदह णं दहेह'[17] सद्दे सुणेत्ता[18] परधम्मियाणं ।
ते णारगा ऊ[19] भयभिण्णसण्णा कंखंति कं णाम दिसं वयामो ? ।।

---

१. पुच्छिस्सहं (ख) ।
२. अविजाणओ (चू) ।
३. ब्रूहि (चू) ।
४. मया (चू) ।
५. °भागे (चू); °भावे (चूपा) ।
६. इणमो° (वृ) ।
७. आदाणियं (चू); आदीणियं (चूपा) ।
८. दुक्कडियं (ख, वृ); दुक्कडिणं (वृपा) ।
९. जीवियट्ठा (क) ।
१०. कूराइं (चू) ।
११. तिव्वाणुभावे (चू) ।
१२. पडुच्च (ख) ।
१३. तिवाती (क); तिवादि (चू) ।
१४. अनिव्वुए (घ) ।
१५. घातगतिं उवेंति (चू) ।
१६. णिधोणत (चू) ।
१७. °डहाह (क); छिंदध भिंदध णं दहह (चू) ।
१८. सुणंति (क) ।
१९. तू (क) ।

७. इंगालरासिं जलियं सजोइं ओवमं भूमिमणुक्कमंता[1] ।
ते डज्झमाणा कलुणं थणंति अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठिईया ॥
८. जइ ते सुया वेयरणीऽभिदुग्गा 'णिसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया'[2] ।
तरंति ते वेयरणीऽभिदुग्गं उसुचोइया[3] सत्तिसु हम्ममाणा ॥
९. कोलेहिं[4] विज्झंति असाहुकम्मा णावं उवेंते[5] सइविप्पहूणा ।
'अण्णे तु'[6] सूलाहि तिसूलियाहिं दीहाहि विद्धूण अहे करेंति ॥
१०. 'केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलेंति महालयंसि ।
कलंबुयावालुयमुम्मुरे य लोलेंति पच्चंति[7] य तत्थ अण्णे'[8] ॥
११. असूरियं णाम महाभितावं[9] अंधं तमं दुप्पतरं महंतं ।
उड्ढं अहे यं[10] तिरियं दिसासु समाहिओ[11] जत्थगणी झियाइ[12] ॥
१२. जंसी गुहाए जलणेऽतिवट्टे[13] अविजाणओ[14] डज्झइ लुत्तपण्णो[15] ।
'सया य[16] कलुणं'[17] पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं ॥
१३. चत्तारि अगणीओ समारभेत्ता जहिं कूरकम्मा भितवेंति बालं[18] ।
ते तत्थ चिट्ठंतऽभितप्पमाणा[19] मच्छा व जीवंतुवजोइपत्ता[20] ॥
१४. संतच्छणं णाम महाभितावं ते णारगा जत्थ असाहुकम्मा[21] ।
हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं फलगं व तच्छंति कुहाडहत्था ॥
१५. रुहिरे पुणो वच्च-समुस्सियंगे[22] भिण्णुत्तिमंगे[23] परिवत्तयंता ।
पयंति णं णेरइए फुरंते सजीवमच्छे[24] व अयो-कवल्ले ॥

---

१. °अणोक्कमंता (चू) ।
२. खुरो जधा णिसितो तिक्खसोता (चू) ।
३. असि° (चू) ।
४. कालेहि (क); कीलेहि (ख) ।
५. उवेंती (चू)।
६. भिन्नेत्थ (चू) ।
७. पयंति (ख) ।
८. × (चू) ।
९. महब्भियावं (क) ।
१०. या (चू) ।
११. समूसिओ (ख); समूसिते (चूपा, वृपा) ।
१२. झियायती (क) ।
१३. जलणातियट्टे (चू) ।
१४. अजाणतो (वृ) ।
१५. लूयपन्ने (क) ।
१६. × (चू) ।
१७. सया य कसिणं (वृपा) ।
१८. मदा (चू) ।
१९. चिट्ठंति अभि° (क); चिट्ठंति भित°(ख) ।
२०. जीव उवजोति° (चू); व्या० वि०— द्विपदयोः सन्धिः—जीवंता+उवजोइपत्ता ।
२१. °कम्मी (चू) ।
२२. समूसितंतो (वृ); समूसितंगा (वृपा) ।
२३. भिदुत्तमंगे (ख) ।
२४. °मच्छा (क); सज्जो व्व मच्छे (चू); सज्जोक्कमत्थे (चूपा) ।

१६. णो चेव ते तत्थ मसीभवंति[१] ण मिज्जई तिव्वभिवेयणाए[२] ।
तमाणुभागं[३] अणुवेययंता[४] दुक्खंति दुक्खी[५] इह दुक्कडेणं[६] ।।
१७. 'तहिं च'[७] ते लोलणसंपगाढे[८] गाढं सुतत्तं अगणिं वयंति ।
ण तत्थ सायं[९] लभंतीऽभिदुग्गे[१०] अरहियाभितावे[११] तह वी तवेंति ।।
१८. से सुव्वई[१२] णगरवहे[१३] व सद्दे 'दुहोवणीताण पदाण'[१४] तत्थ[१५] ।
उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा पुणो पुणो ते सरहं[१६] दुहेंति[१७] ।।
१९. पाणेहि णं पाव[१८] विओजयंति तं भे पवक्खामि जहातहेणं ।
दंडेहि तत्था सरयंति बाला सव्वेहि दंडेहि पुराकएहिं ।।
२०. ते हम्ममाणा[१९] 'णरगे पडंति'[२०] पुण्णे[२१] दुरूवस्स महाभितावे[२२] ।
ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी तुट्टंति कम्मोवगया[२३] किमीहिं ।।
२१. सया[२४] कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं ।
अंदूसु पक्खिप्प 'विहत्तु देहं'[२५] 'वेहेण सीसं सेऽभितावयंति'[२६] ।।
२२. छिंदंति बालस्स खुरेण णक्कं[२७] ओट्ठे वि छिंदंति दुवे वि कण्णे ।
जिब्भं विणिक्कस्स[२८] विहत्थिमेत्तं तिक्खाहि सूलाहि भितावयंति[२९] ।।
२३. ते तिप्पमाणा 'तलसंपुड व्व'[३०] राइंदियं तत्थ थणंति बाला[३१] ।
'गलंति ते सोणियपूयमंसं'[३२] पज्जोइया खारपदिद्धियंगा[३३] ।।

---

१. ०भवेंति (चू) ।
२. तिव्वऽतिवे० (चू) ।
३. तमाणुभावं (ख); कम्माणभागं (चू) ।
४. अणुवेदयंती (चू) ।
५. दुक्खा (क); सोयं (चू) ।
६. दुक्कडाणं (क) ।
७. तेहिं पि (चू) ।
८. लोलुअसं० (क, चू); लोलेण० (ख) ।
९. सादं (चू) ।
१०. लहईभिदुग्गे (क, ख) ।
११. अरहब्भियावा (क); ०तावा (ख) ।
१२. सुच्चई (ख) ।
१३. गामवधे (चू) ।
१४. ०याणि पयाणि (ख); उदिण्णकम्माए पयय (चू) ।
१५. तत्था (क) ।
१६. सहरिसं (चू) ।
१७. विधंति (चूपा) ।
१८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पावा ।
१९. हिंसमाणा (क); हम्ममाणे (चू) ।
२०. णरगं उवेंति (चू)।
२१. पुण्णं (चू) ।
२२. महब्भियावे (क); महब्भितावं (चू) ।
२३. कम्मोवसगा (चू) ।
२४. सया य (क) ।
२५. हणंति बालं (चू) ।
२६. वेहेण तं सेभितविंति सीसं (क); वेधेहिं विधीत सिराणि तेसिं (चू); वेढेण तावेंति सिराणि तेंसिं (चूपा) ।
२७. नासं (क) ।
२८. विणिक्किस्स (चू) ।
२९. तिवातयंति (क); निपातयंति (चू) ।
३०. तलसंपुडच्चा (चू) ।
३१. मंदा (चू) ।
३२. समीरिता सरुधिर-मंसदेहा (चू) ।
३३. खारपयच्छितंगा (चू) ।

२४. जइ[1] ते सुया लोहियपूयपाई[2] बालागणी तेयगुणा परेणं।
कुंभी महंताऽहियपोरुसीया[3] समूसिया लोहियपूयपुण्णा ॥
२५. पक्खिप्प तासुं पपचंति बाले अट्टस्सरे[4] ते कलुणं रसंते।
तण्हाइया ते तउतंबतत्तं पज्जिज्जमाणट्टयरं रसंति ॥
२६. अप्पेण[5] अप्पं इह वंचइत्ता भवाहमे 'पुव्वसए सहस्से'[6]।
चिट्ठंति तत्था[7] बहुकूरकम्मा 'जहाकडे कम्म'[8] तहा से[9] भारे ॥
२७. समज्जिणित्ता कलुसं अणज्जा इट्ठेहि कंतेहि य विप्पहूणा[10]।
ते दुब्भिगंधे कसिणे य फासे कम्मोवगा कुणिमे आवसंति ॥

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

णरग-वेदणा-पदं

२८. अहावरं सासयदुक्खधम्मं तं भे पवक्खामि जहातहेणं।
बाला जहा दुक्कडकम्मकारी वेयंति कम्माइं[11] पुरेकडाइं ॥
२९. हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं 'उदरं विकत्तंति खुरासिएहिं'[12]।
गेण्हित्तु[13] बालस्स विहत्तु[14] देहं वद्धं[15] थिरं पिट्ठउ[16] उद्धरंति ॥
३०. बाहू पकत्तंति[17] य मूलओ से थूलं[18] वियासं मुहे आडहंति।
रहंसि जुत्तं सरयंति बालं आरुस्स विज्झंति[19] तुदेण पट्ठे[20] ॥

---

१. जे (क)।
२. लोहितापागपायी (चू)।
३. °पोरिसीणा (क); °पोरसीया (ख)।
४. °स्सरं (क, चू)।
५. अप्पाण (चू)।
६. पुव्वा सतसहस्से (चू)।
७. व्या० वि०—छंदोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
८. °कडे कम्मे (क); जधकडे कम्मे (चू)।
९. सि (ख)।
१०. विप्पहीणा (चू)।
११. पावाइं (क)।
१२. उदराइं फोडेंति खुरेहिं तेसिं (चू); °खुरासितेहिं, °खुरासिगेहिं (चूपा); वृत्तौ 'क्षुरप्रासिभिः' इति व्याख्यातमस्ति अस्यानुसारेण 'खुरप्पसीहिं' इति पाठस्य परिकल्पना जायते।
१३. गिहित्तु (क)।
१४. विहत्त (क); विविधं हंतं (वृ); विहण्ण (चू)।
१५. वज्झं (क, चू)।
१६. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१७. पकप्पंति (क)।
१८. थुलं (क)।
१९. विंधंति (ख, चू)।
२०. पिट्ठे (चू)।

३१. अयं व तत्तं जलियं सजोइं तओवमं[1] भूमिमणुक्कमंता[2]।
ते डज्झमाणा कलुणं थणंति उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ।।
३२. बाला बला भूमिमणुक्कमंता[3] पविज्जलं[4] लोहपहं व तत्तं।
जंसीऽभिदुग्गंसि[5] पवज्जमाणा[6] पेसे व[7] दंडेहि पुरा करेंति ।।
३३. ते संपगाढंमि पवज्जमाणा सिलाहि हम्मंति भिपातिणीहिं[8]।
संतावणी णाम चिरद्विईया संतप्पई[9] जत्थ असाहुकम्मा[10] ।।
३४. कंदूसु[11] पक्खिप्प पयंति बालं तओ विदड्ढा पुण उप्पतंति[12]।
ते उड्ढकाएहि पखज्जमाणा[13] अवरेहि खज्जंति सणप्फएहिं ।।
३५. समूसियं णाम विधूमठाणं 'जं सोयतत्ता'[14] कलुणं थणंति।
अहोसिरं[15] कट्टु विगत्तिऊणं[16] अयं व सत्थेहि समूसवेंति ।।
३६. समूसिया तत्थ विसूणियंगा पक्खीहि खज्जंति अओमुहेहिं।
संजीवणी[17] णाम चिरद्विईया जंसी पया हम्मइ[18] पावचेया ।।
३७. तिक्खाहि सूलाहि ऽभितावयंति[19] वसोवगं सावययं[20] व लद्धं।
ते सूलविद्धा कलुणं थणंति एगंतदुक्खं दुहओ गिलाणा ।।
३८. सया जलं ठाण[21] णिहं महंतं जंसी 'जलंतो अगणी अकट्ठो'[22]।
चिट्ठंति तत्था[23] बहुकूरकम्मा अरहस्सरा[24] केइ चिरद्विईया ।।

---

[1] तत्तोवमं (क); चूर्णीकृता प्रथमोद्देशकस्य सप्तमश्लोके 'ततोवमं' पाठो व्याख्यात :—तत्रऽयसकभल्लतुल्लं, अत्रतु 'तदोवमं' पाठो व्याख्यातः, तदस्या ओपम्यं तदोपमा। वृत्तिकारस्य व्याख्यायां उभयत्रापि साम्यमस्ति।

[2] °मणोक्कमेत्ता (क); °मणोक्कमंता (चू)।

[3] भूमिअणोक्कमंता (चू)।

[4] विपज्जल (चू); पविज्जलं (चूपा)।

[5] °दुग्गा (चू)।

[6] बहुकूरकम्मा (चू)।

[7] व्व (क)।

[8] ऽभिपातिमाहिं (चू)।

[9] सतप्पते (चू)।

[10] °कम्मी (क, चू)।

[11] कंडूसु (चू)।

[12] उप्फिडंति (चू)।

[13] पक्खिज्जमाणा (ख); विलुप्पमाणा (चू)।

[14] ज सामितत्ता (क); विगिच्चमाणा (चू); जंसि विउक्कंता, जंसि ऽवियंता (चूपा)।

[15] अहे° (क)।

[16] विगंति° (चू)।

[17] संजीवणा (चू)।

[18] हम्मंति (क)।

[19] निवाययंति (क); वधेंति वाला (चू); तिवाययंति (क्व)।

[20] सोयरियं (क); सोवरिया (चू); सावरिया (चूपा)।

[21] नाम (ख, चू)।

[22] जलंती अगणी अकट्ठा (क, चू)।

[23] बद्धा (ख, वृ)।

[24] अरहितस्सरा (चू)।

३९. चिया महंतीउ[१] समारभित्ता छुब्भंति ते तं कलुणं रसंतं।
आवट्टई तत्थ असाहुकम्मा सप्पी जहा छूढं[२] जोइमज्झे ॥
४०. सया कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं।
हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं 'सत्तुं व'[३] दंडेहि समारभंति ॥
४१. भंजंति बालस्स वहेण पट्ठिं[४] सोसं पि भिंदंति[५] अयोघणेहिं।
ते भिण्णदेहा फलगा व तट्ठा तत्ताहि आराहि णियोजयंति ॥
४२. अभिजुंजिया रुद्द[६] असाहुकम्मा उसुचोइया हत्थिवहं[७] वहंति।
एगं दुरूहित्तु दुवे तओ वा 'आरुस्स विज्झंति ककाणओ से'[८]॥
४३. बाला बला भूमिमणुक्कमंता[९] पविज्जलं कंटइलं महंतं।
विवद्धतप्पेहि विसण्णचित्ते[१०] समीरिया कोट्टबलिं करेंति ॥
४४. वेयालिए णाम महाभितावे एगायए पव्वयमंतलिक्खे।
हम्मंति तत्था बहुकूरकम्मा परं सहस्साण मुहुत्तगाणं[११] ॥
४५. संबाहिया दुक्कडिणो थणंति अहो य राओ परितप्पमाणा।
एगंतकूडे णरए महंते कूडेण तत्था विसमे हया उ ॥
४६. 'भंजंति णं पुव्वमरी सरोसं समुग्गरे ते मुसले गहेउं।
ते भिण्णदेहा रुहिरं वमंता ओमुद्धगा धरणितले पडंति'[१२] ॥
४७. अणासिया णाम महासियाला पगब्भिया[१३] तत्थ सयावकोवा[१४]।
खज्जंति[१५] तत्था बहुकूरकम्मा अदूरया[१६] संकलियाहि बद्धा ॥
४८. सयाजला णाम णईऽभिदुग्गा पविज्जला[१७] लोहविलीणतत्ता।
जंसीऽभिदुग्गंसि पवज्जमाणा एगायताऽणुक्कमणं[१८] करेंति ॥
४९. एयाइँ फासाइँ फुसंति बालं णिरंतरं तत्थ चिरट्ठिईयं[१९]।
ण हम्ममाणस्स उ होइ[२०] ताणं एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ॥

---

[१] व्या० वि०—अत्र ओकारस्य ह्रस्वत्वम्।
[२] पडियं (चू)।
[३] सत्तुव्व (क्व)।
[४] पुट्ठिं (ख)।
[५] भंजंति (चू)।
[६] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—रुद्दं।
[७] हत्थितुल्लं (चू)।
[८] °ककाणुओ से (क); आरुब्भ विंधंति किंकाणतो सि (चू)।
[९] भूमिअणोक्कमंता (चू)।
[१०] त्रिवण्ण° (क, ख)।
[११] मुहुत्तगस्स (चू)।
[१२] ×(चू)।
[१३] पगब्भिणो (क); पागब्भिणो (ख)।
[१४] सताय° (क); सयाप° (ख); सदावऽकोप्पा (चू); सदावऽकोप्पं (चूपा)।
[१५] खायंति (चू)।
[१६] अदूरिया (क)।
[१७] पविज्जलं (वृ)।
[१८] एकाणिका° (चू)।
[१९] चिरट्ठिईया (चू)।
[२०] अत्थि (चू)।

५०. जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं तमेव[1] आगच्छइ संपराए ।
एगंतदुक्खं भवमज्जिणित्ता 'वेदेंति दुक्खी तमणंतदुक्खं'[2] ॥
५१. एयाणि सोच्चा णरगाणि धीरे ण हिंसए कंचण[3] सव्वलोए ।
एगंतदिट्ठी अपरिग्गहे उ[4] बुज्झेज्ज लोगस्स[5] वसं ण गच्छे ॥
५२. एवं 'तिरिक्खमणुयामरेसुं चउरंतणंतं तयणूविवागं'[6] ।
स[7] सव्वमेयं इइ[8] वेयइत्ता कंखेज्ज कालं धुयमायरंते[9] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

[1] तधेव (चू) ।
[2] वेदेति एगो तमणंतकालं (चू) ।
[3] किंचण (ख) ।
[4] य (चू) ।
[5] लोभस्स (चू) ।
[6] तिरिक्खमणुयासुरेसुं चतुरंतणं न तयणुविवागं (ख); तिरिक्खेसु वि चातुरंतं, अणंतकालं तदणुव्विवागं (चू) ।
[7] से (ख) ।
[8] इध (चू) ।
[9] °मायरेज्ज (ख); मायरंति (चू) ।

छट्ठं अज्झयणं

महावीरत्थुई

महावीर-माहप्प-वण्णग-पदं

१. पुंच्छिसु णं समणा माहणा य अगारिणो[1] या परतित्थिया य।
से के ‘इमं णितियं’[2] धम्ममाहु अणेलिसं? साहुसमिक्खयाए[3]॥
२. कहं व[4] णाणं? कह दंसणं से? सीलं कहं णायसुयस्स आसि?।
जाणासि ण्णं भिक्खु! जहातहेणं अहासुयं बूहि जहा णिसंतं॥
३. ‘खेयण्णए से कुसले मेहावी’[5]’[6] अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स जाणाहि धम्मं च धिइं च पेह[7]॥
४. ‘उड्ढं अहे यं’[8] तिरियं दिसासु ‘तसा य जे थावर[9] जे य पाणा’[10]।
‘से णिच्चणिच्चेहि’[11] समिक्ख पण्णे ‘दीवे व धम्मं समियं उदाहु’[12]॥
५. से सव्वदंसी अभिभूयणाणी णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे[13] सव्वजगंसि विज्जं ‘गंथा अतीते’[14] अभए अणाऊ॥
६. से भूइपण्णे अणिएयचारी ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तवति सूरिए[15] वा वइरोयणिंदे[16] व ‘तमं पगासे’[17]॥

---

[1] अकारिणो (चू)।
[2] इणेगंतहियं (क, चू); इमं हितगं (चूपा)।
[3] ०याते (क); साधुसमिक्ख दाए (चू)।
[4] च (क, ख)।
[5] आसुपण्णे (वृ); महेसी (वृपा)।
[6] खेतण्णे कुसले आसुपण्णे महेसी (चू)।
[7] पिहा (क); पेच्छं (चू); बेहि (वृपा)।
[8] ०य (वृ); उड्ढे अधे वा (चू)।
[9] व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—थावरा।
[10] जे थावरा जे य तसा य पाणा (चू)।
[11] स णिच्चणिच्चे य (चू)।
[12] समिया एवं दीवसमो तहा ऽऽह (चू)।
[13] अणुत्तरं (चू)।
[14] ०अदीते (क); गंथातीते (चू)।
[15] तप्पति (क, ख)।
[16] वइरोव० (क); वेरोयणेंदो (चू)।
[17] तमप्पगासे (क); ०पभासे (ख)।

७. अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं णेता मुणी कासवे[१] आसुपण्णे ।
इंदे व देवाण महाणुभावे सहस्सणेता[२] 'दिवि णं'[३] विसिट्ठे ॥
८. से पण्णया[४] अक्खयसागरे वा महोदही वा वि अणंतपारे ।
अणाइले या[५] अकसाइ[६] मुक्के[७] सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥
९. से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए 'वा वि'[८] मुदागरे से विरायए णेगगुणोववेए ॥
१०. सयं सहस्साण उ जोयणाणं तिकंडगे[९] पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणउतिं[१०] सहस्से उद्धुस्सिए[११] हेट्ठ सहस्समेगं ॥
११. पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए[१२] जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य[१३] जंसी[१४] रइं वेययई महिंदा ॥
१२. से[१५] पव्वए सद्दमहप्पगासे विरायती कंचणमट्ठवण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु[१६] य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥
१३. महीए[१७] मज्झम्मि ठिए णगिंदे पण्णायते सूरियसुद्धलेसे[१८] ।
एवं सिरीए उ स भूरिवण्णे[१९] मणोरमे 'जोयति अच्चिमाली'[२०] ॥
१४. सुदंसणस्सेस[२१] जसो गिरिस्स[२२] पवुच्चती महतो पव्वतस्स ।
एतोवमे समणे णातपुत्ते[२३] जाती-जसो-दंसण - णाण - सीले ॥
१५. गिरीवरे वा णिसढायताणं[२४] रुयगे व सेट्ठे वलयायताणं ।
ततोवमे से जगभूतिपण्णे[२५] मुणीण 'मज्झे तमुदाहु'[२६] पण्णे ॥

---

१. कासव (ख) ।
२. °णेत्ता (चू); °णेता (चूपा) ।
३. दिविण (चू) ।
४. पन्नसा (चू) ।
५. से (चू) ।
६. अकसाय (चू) ।
७. भिक्खू (क, ख, चू, वृपा) ।
८. वासि (ख, वृ) ।
९. तिकंडि से (क, चू); तिकंड से (ख) ।
१०. णवणवते (क, ख) ।
११. उड्ढुस्सिते (चू); उड्ढं थिरे (चूपा) ।
१२. भूमिते ठिते (क, चू) ।
१३. या (क) ।
१४. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१५. स (चू) ।
१६. व्या० वि०—अत्र सप्तम्याः बहुवचने 'गिरीसु इति रूपं भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१७. महीय (ख, चू) ।
१८. सूरियलेस्सभूते (चू) ।
१९. भूतिवण्णे (चू) ।
२०. अच्चीसहस्समालिणी (णो ?) (चू) ।
२१. °स्सेव (क, ख) ।
२२. गिरिस्सा (क) ।
२३. नाय° (क, ख) ।
२४. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—णिसढे+आयताणं ।
२५. °भूतपण्णे (चू) ।
२६. मावेदमुदाहु (चू) ।

१६. अणुत्तरं धम्ममुदीरइत्ता अणुत्तरं झाणवरं झियाइ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं[१] ॥
१७. अणुत्तरग्गं परमं महेसी 'असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गतिं साइमणंत[२] पत्ते णाणेण सीलेण य दंसणेण'[३] ॥
१८. 'रुक्खेसु णाते जह सामली वा'[४] जंसी रतिं वेययंती[५] सुवण्णा।
वणेसु या णंदणमाहु सेट्ठं[६] णाणेण सीलेण य[७] भूतिपण्णे ॥
१९. थणितं व सद्दाण अणुत्तरं उ चंदे व ताराण महाणुभावे[८]।
गंधेसु वा[९] चंदणमाहु सेट्ठं एवं[१०] मुणीणं अपडिण्णमाहु ॥
२०. जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे णागेसु वा 'धरणिंदमाहु सेट्ठं'[११]।
खोओदए[१२] 'वा रस'[१३]-वेजयंते तहोवहाणे[१४] मुणि[१५] वेजयंते ॥
२१. हत्थीसु एरावणमाहु[१६] णाते सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु या गरुले वेणुदेवे णिव्वाणवादीणिह[१७] णायपुत्ते ॥
२२. जोहेसु णाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा 'जह अरविंदमाहु'[१८]।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥
२३. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु या अणवज्जं वयंति।
तवेसु या[१९] उत्तम[२०] बंभचेरं लोगुत्तमे समणे[२१] णायपुत्ते ॥
२४. ठितीण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा[२२] जह सव्वधम्मा ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ॥
२५. पुढोवमे धुणती विगयगेही ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं[२३] समुद्दं व महाभवोघं अभयंकरे वीर[२४/२५] अणंतचक्खू ॥

---

१. अपेव संखेंदुवदातसुद्धं (चू);
संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं (चूपा)।
२. व्या० वि०–विभक्तिरहितपदम्–साइमणंतं।
३. णाणेण सीलेण य दंसणेण।
अमेसकम्मं स विसोधइत्ता,
सिद्धीगतिं सातियणंत पत्ते (चू)।
४. रुक्खेहि णाता जह कूडसामली (चू)।
५. वेययती (क, ख)।
६. सेट्ठे (क)।
७. उ (चू)।
८. °भागे (चू)।
९. या (ख)।
१०. सेट्ठे (चू)।
११. धरणिंदे आहु सेट्ठे (क); धरणमाहुसेट्ठं (चू)।
१२. खातोदए (क)।
१३. रसतो (चू)।
१४. तवो° (क, ख, वृ)।
१५. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मुणी।
१६. °माह (क)।
१७. णेव्वाण° (चू)।
१८. अरविंदं वदंति (चू)।
१९. वा (क)।
२०. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तमं।
२१. भगवं (चू)।
२२. णेव्वाण° (चू)।
२३. तरित्तु (ख); तरित्ता (चू)।
२४. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—वीरे।
२५. वीरे (क, चू)।

२६. कोहं च माणं च तहेव मायं लोभं चउत्थं अज्झत्तदोसा[1]।
एताणि चत्ता अरहा महेसी ण कुव्वई पाव[2] ण कारवेइ ॥
२७. किरियाकिरियं[3] वेणइयाणुवायं अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से[4] सव्ववायं इह[5] वेयइत्ता उवट्ठिए सम्म[6] स दीहरायं[7] ॥
२८. से[8] वारिया इत्थि[9] सराइभत्तं[10] उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता 'अपरं परं'[11] च सव्वं पभू वारिय सव्ववारी[12] ॥
२९. सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं[13] समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं।
तं सद्दहंताऽऽय[14] जणा अणाऊ 'इंदा व'[15] देवाहिव[16] आगमिस्सं[17] ॥
—ति बेमि ॥

---

१. °दोसं (क)।
२. पावं (क)।
३. किरियं अकिरियं (ख, चू)।
४. स (चू)।
५. इति (क, ख, वृ)।
६. व्या त्रि०—अत्र अनुस्वारलोपः।
७. संजमदीहरायं (क, ख, वृ)।
८. स (चू)।
९. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—इत्थि।
१०. सराय° (क)।
११. आरं पारं (क, ख, वृपा)।
१२. सव्ववारे (क); सव्ववारं (ख, वृ)।
१३. अरिहंत° (ख)।
१४. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः वर्णलोपश्च—सद्दहंता आदाय।
१५. इंदा वि (क); इंदे व (ख)।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—देवाहिवा।
१७. आगमिस्संति (क, ख, वृ); आगमिस्से (चू)।

सत्तमं अज्झयणं

कुसीलपरिभासितं

ओघतो कुसील-पदं

१. पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ ‘तण रुक्ख’[1] बीया य तसा य पाणा।
जे अंडया जे य जराउ[2] पाणा संसेयया जे रसयाभिहाणा॥
२. एताइं कायाइं पवेइयाइं एतेसु जाणे[3] पडिलेह[4] सायं।
‘एतेहि काएहि य’[5] आयदंडे ‘पुणो-पुणो विप्परियासुवेति’[6]॥
३. जाईपहं[7] अणुपरियट्टमाणे ‘तसथावरेहिं विणिघायमेति’[8]।
से जाति[9]-जातिं बहुकूरकम्मे जं कुव्वती मिज्जति[10] तेण बाले॥
४. अस्सिं च लोए अदुवा परत्था[11] सयग्गसो वा तह अण्णहा वा।
संसारमावण्ण[12] ‘परं परं ते’[13] बंधंति वेयंति य दुण्णियाणि[14]॥

---

[1] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम् –तणा रुक्खा।

[2] व्या० वि० –विभक्तिरहितं वर्णलोपश्च— जराउया।

[3] जाणं (वृ)।

[4] पडिलेहि (क)।

[5] एएण काएण य (ख); एतेसु काएसु तु (चू)।

[6] एतेसु या विप्परियासुविंति (क, ख, वृ); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—विप्परियास-मुवेति।

[7] जाईवहं (चू, वृपा)।

[8] °वरेसुं विणिग्घात° (चू)।

[9] जातिं (वृ)।

[10] मज्जते (चूपा)।

[11] पुरत्था (क)।

[12] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—संसार-मावण्णा।

[13] परं परेण (चू)।

[14] व्या० वि०—बंधानुलोम्यात् ‘दुण्णीयाणि’ अत्र ईकारस्य ह्रस्वत्वम्।

पासंड-कुसील-पदं

५. जे मायरं च[१] पियरं च[२] हिच्चा समणव्वए[३] अगणि[४] समारभिज्जा ।
अहाहु[५] से लोए कुसीलधम्मे[६] भूयाइ जे हिंसति आतसाते ।।
६. उज्जालओ[७] पाण[८] ऽतिवातएज्जा[९] णिव्वावओ अगणि[१०]ऽतिवातएज्जा[११]।
तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं ण पंडिते अगणि[१२] समारभिज्जा ।।
७. पुढवी वि जीवा आऊ वि जीवा पाणा य[१३] संपातिम[१४] संपयंति ।
संसेदया[१५] कट्ठसमस्सिता य एते दहे अगणि[१६] समारभंते ।।
८. हरियाणि भूयाणि विलंबगाणि आहार-देहाइं[१७] पुढो सियाइं ।
जे छिंदई आतसुहं[१८] पडुच्च[१९] 'पागब्भि-पण्णो'[२०] बहुणं[२१]तिवाती[२२] ।।
९. जाइं च वुड्ढिं च विणासयंते बीयाइ 'अस्संजय आयदंडे'[२३] ।
अहाहु से लोए अणज्जधम्मे बीयाइ[२४] से हिंसइ आयसाते ।।

कुसील-विवाग-पदं

१०. गब्भाइ मिज्जंति बुयाबुयाणा णरा परे[२५] पंचसिहा कुमारा ।
जुवाणगा[२६] मज्झिम[२७] थेरगा[२८] य चयंति ते आउखए[२९] पलीणा ।।

---

१. वा (क) ।
२. व (क) ।
३. समणव्वदे (क); समणव्वते (ख) ।
४. व्या० वि० —विभक्तिरहितपदम् — अगणिं ।
५. अथाऽऽह (चू) ।
६. अणज्जधम्मे (चू) ।
७. उज्जालिया (चू) ।
८. व्या० वि—-द्विपदयोः सन्धिः—पाणा अतिवातएज्जा ।
९. तिवातयंति (चू); तिवातएज्जा (वृपा) ।
१०. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—अगणिं अतिवातएज्जा ।
११. निव्वातएज्जा (क); निपातएज्जा (चू) ।
१२. व्या० वि० —विभक्तिरहितपदम् — अगणिं ।
१३. ति (क); इ (ख) ।
१४. व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्–संपातिमा ।
१५. संसेइया (क) ।
१६. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं ।
१७. देहाय (ख, वृ) ।
१८. आयसातं (चू) ।
१९. पडुच्चा (क) ।
२०. पागब्भिपाणे (क, ख, वृ) ।
२१. व्या० वि० —छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
२२. निवाती (चू) ।
२३. अस्संजति यायदडे (क) ।
२४. हरियादि (क) ।
२५. वरे (क) ।
२६. युवाणगा (चू) ।
२७. व्या० वि० — विभक्तिरहितपदम्–मज्झिमा ।
२८. पोरुसा (वृपा) ।
२९. आउक्खए (क, ख) ।

११. 'बुज्झाहि जंतू ! इह माणवेसु दट्ठुं भयं बालिएणं अलंभे'[१] ।
एगंतदुक्खे जरिए हु[२] लोए सकम्मुणा विप्परियासुवेति ॥

कुसील-दंसण-पदं

१२. इहेगे मूढा पवदंति मोक्खं आहारसंपज्जणवज्जणेणं[३] ।
एगे य सीतोदगसेवणेणं हुतेण एगे पवदंति मोक्खं ॥
१३. पाओसिणाणाइसु णत्थि मोक्खो खारस्स[४] लोणस्स अणासणेणं[५] ।
ते मज्जमंसं लसुणं 'चऽभोच्चा'[६] अण्णत्थ वासं परिकप्पयंति[७] ॥
१४. उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति सायं च पातं उदगं फुसंता ।
उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी सिज्झिसु[८] पाणा बहवे दगंसि ॥
१५. मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य मंगू[९] य उद्दा[१०] दगरक्खसा य ।
अट्ठाणमेयं कुसला वयंति उदगेण 'सिद्धिं जमुदाहरंति'[११] ॥
१६. उदगं जती[१२] कम्ममलं हरेज्जा एवं सुहं[१३] इच्छामित्तमेव[१४] ।
'अंधं व'[१५] णेयारमणुस्सरंता[१६] पाणाणि चेवं विणिहंति[१७] मंदा ॥
१७. पावाइं कम्माइं पकुव्वओ हि सीओदगं[१८] तू जइ तं हरेज्जा ।
सिज्झिसु एगे दगसत्तघाती मुसं वयंते जलसिद्धिमाहु[१९] ॥
१८. हुतेण जे सिद्धिमुदाहरंति[२०] सायं च पायं अगणिं फुसंता ।
एवं सिया सिद्धि हवेज्ज तेसिं[२१] अगणिं फुसंताण कुकम्मिणं पि ॥

---

१. संबुज्झहा जंतवो माणुसत्तं,
दट्ठुं भयं बालिसेणं अलंभो (क, ख, वृ) ।
२. व (ख, वृ); अस्मिन् श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च पाठभेदोर्थभेदश्चापि विद्यते । चूर्णीपाठोर्थविचारणया स्वाभाविकः प्रतिभाति, तेन स स्वीकृतः । वृत्तिकारेण प्रतिदोषेण विपर्ययं गतः पाठो लब्धस्तेन व्याख्यायां जटिलता जातेति संभाव्यते ।
३. आहारसपंचगवज्जणेणं (चूपा, वृपा);
आहारओ पंचगवज्जणेणं (वृपा) ।
४. खाणस्स (क) ।
५. अणासतेणं (क) ।
६. च भोच्चा (वृ); अत्र चूर्णौ वृत्तौ च महानऽर्थभेदो विद्यते ।
७. °गप्पयंति (क) ।
८. सिज्झंसु (क, ख) ।
९. मग्गू (क, ख, वृ) ।
१०. उट्टा (ख, वृ); अत्र लिपिसादृश्येन 'उद्दा' स्थाने 'उट्टा' पाठोस्ति जातः । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठः आसीत् किन्तु जलचरप्रकरणे 'उद्दा' पाठ एव संगतोस्ति
११. जे सिद्धिमुदाहरंति (क, ख, वृ) ।
१२. व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१३. पुण्णं (चू) ।
१४. इच्छामेत्ततो वा (क) ।
१५. अंधव्व (क) ।
१६. °मणुसरित्ता (क, ख) ।
१७. विहेढंति (चू) ।
१८. सिओ° (चू) ।
१९. दगसिद्धि° (क) ।
२०. मोक्खमुदा° (चू) ।
२१. तम्हा (क, ख, वृ) ।

कुसील-उवालंभ-पदं

१९. अपरिच्छ[१] दिट्ठिं[२] ण हु एव सिद्धी एहिंति ते घातमबुज्झमाणा[३] ।
'भूतेहिं जाण[४] पडिलेह सातं'[५] विज्जं गहाय तसथावरेहिं[६] ॥
२०. थणंति लुप्पंति तसंति कम्मी पुढो[७] जगा[८] परिसंखाय[९] भिक्खू ॥
तम्हा विऊ विरए आयगुत्ते दट्ठुं तसे य प्पडिसाहरेज्जा[१०] ॥

सलिंग-कुसील-पदं

२१. जे धम्मलद्धं विणिहाय[११] भुंजे वियडेण साहट्टु य जे सिणाइ[१२] ।
जे धावती[१३] 'लूसयई व वत्थं'[१४] अहाहु से णागणियस्स[१५] दूरे ॥

सुसील-पदं

२२. कम्मं परिण्णाय दगंसि धीरे वियडेण'जीवेज्ज य'[१६]'आदिमोक्खं ।
'से बीयकंदाइ अभुंजमाणे विरए सिणाणाइसु इत्थियासु'[१७] ॥

कुसील-पदं

२३. जे मायरं च पियरं च हिच्चा गारं तहा पुत्तपसुं धणं च ।
'कुलाइं जे धावति साउगाइं'[१८] अहाहु से सामणियस्स दूरे ॥
२४. कुलाइं जे धावति साउगाइं 'आघाइ धम्मं उदराणुगिद्धे'[१९] ।
'से आरियाणं गुणाणं'[२०] सतंसे 'जे लावएज्जा असणस्स हेउं'[२१] ॥
२५. 'णिक्खम्म दीणे'[२२] परभोयणम्मि[२३] 'मुहमंगलिओदरियं[२४] पगिद्धे'[२५] ।
णीवारगिद्धे व महावराहे 'अदूर एवेहिइ'[२६] घातमेव ॥

---

[१] अपरिक्ख (ख) ।
[२] दिट्ठं (क, ख, वृ) ।
[३] घंतम° (चू) ।
[४] जाण (क, ख) ।
[५] भूतेहिं जाण पडिलेह सातं (आयारो २।५२) ।
[६] त्तस° (क) ।
[७] पुट्ठो (क) ।
[८] जगाइं (चू) ।
[९] पडिसंखाए (चू) ।
[१०] या पडि° (चू); यं प्पडिसंह° (ख) ।
[११] व णिहाय (क); व णिघाय (चू) ।
[१२] सिणाइ (क, ख) ।
[१३] धोवति (ख) ।
[१४] लीसएज्जा वि वत्थं (चूपा) ।
[१५] णं अणियस्स (चू) ।
[१६] जे जीवति (चू) ।
[१७] ते बीज-कंदादि अभुंजमाणा, विरता सिणाणा अदु इत्थिगातो (चू) ।
[१८] आघाति धम्मं उदराणुगिद्धो (चू) ।
[१९] आघाति अक्खाइउदराओ गिद्धो (चू) ।
[२०] अहाहु से आयरियाण (क, ख) ।
[२१] जे लावए ता असणादिहेतुं (चू) ।
[२२] णिक्खंदहीणे (चू) ।
[१३] परभोयणत्थि (चू) ।
[२४] व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मुहमंग-लिओ+ओदरियं ।
[२५] मुहमंगलिउदरियाणुगिद्धे (क); मुहमंगलिए उदराणुगिद्धे (ख) ।
[२६] अदूरए एहति (ख); अदूरते वेसति (चू) ।

२६. अण्णस्स पाणस्सिहलोइयस्स अणुप्पियं भासति सेवमाणे।
पासत्थयं चेव कुसीलयं च णिस्सारए होइ जहा पुलाए।

सुसील-पदं

२७. अण्णायपिंडेणऽहियासएज्जा णो[१] पूयणं तवसा आवहेज्जा[२]।
'सद्देहि रूवेहि असज्जमाणे सव्वेहि कामेहि विणीय गेहिं'[३] ॥
२८. सव्वाइं संगाइं अइच्च धीरे[४] सव्वाइं दुक्खाइं तितिक्खमाणे।
अखिले अगिद्धे अणिएयचारी 'अभयंकरे भिक्खु[५] अणाविलप्पा'[६] ॥
२९. भारस्स जाता[७] मुणि[८] भुंजएज्जा[९] कंखेज्ज 'पावस्स विवेग'[१०] भिक्खू।
दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा संगामसीसे 'व परं दमेज्जा'[११] ॥
३०. 'अवि हम्ममाणे'[१२] फलगावतट्ठी[१३] समागमं कंखइ अंतगस्स।
णिद्धूय कम्मं ण पवंचुवेइ[१४] अक्खक्खए वा सगडं ति बेमि ॥

---

[१] ण (चू)।
[२] आवहुज्जा (चू)।
[३] अण्णे य पाणे य अणाणुगिद्धे,
सव्वेसु कामेसु णियत्तएज्जा (चू)।
[४] वीरे (क, ख)।
[५] व्या० वि०—भिक्खू।
[६] ण सिलोयकामी परिव्वएज्जा (चू)।
[७] जत्ता (क)।
[८] व्या० वि०—मुणी।
[९] भुंजमाणे (चू)।
[१०] यो पाव विवेग (चू); व्या० वि०—विवेगं।
[११] च परं० (क); अवरे दमेइ (चू)।
[१२] प्रणिहम्ममाणे (चूपा)।
[१३] ०यतट्ठी (क)।
[१४] व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—पवंचं+उवेइ।

अट्ठमं अज्झयणं

वीरियं

वीरिय-पदं

१. दुहा वेयं[1] सुयक्खायं[2] वीरियं ति पवुच्चई।
किण्णु वीरस्स वीरितं[3]? 'केण वीरो त्ति वुच्चति'[4]?॥
२. कम्ममेव[5] पवेदेंति[6] अकम्मं वा[7] वि सुव्वया[8]॥
'एतेहिं दोहिं ठाणेहिं जेहिं'[9] दीसंति मच्चिया॥
३. पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहावरं।
तब्भावादेसओ[10] वा वि बालं पंडियमेव वा॥

बाल-वीरिय-पदं

४. सत्थमेगे[11] सुसिक्खंति अतिवाताय[12] पाणिणं।
एगे[13] मंते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो॥

---

१. चेतं (क, चू)।
२. समक्खात (चू)।
३. वीरत्तं (क, ख, वृ)।
४. कहं चेयं पुवुच्चति (क, ख)।
५. कम्ममेगे (क, ख, वृ); अत्र वृत्तिकृता 'एगे' इति पाठः स्वीकृतः, किन्तु अत्र प्रवेदनं तीर्थंकराणां विद्यते, न तु मतान्तरसूचनमस्ति तेन नासौ पाठो घटते।
६. परिण्णाय (चू); पभासंति (चूपा)।
७. चा (वृ)।
८. मुच्चति (क); सुव्वया ! (वृ)।
९. 'एतेहिं दोहिं ठाणेहिं, जेहिं' अत्र तृतीया करणेनार्थस्य जटिलता जाता। चूर्णौ तृतीयान्तः पाठो नास्ति व्याख्यातः। तत्र 'एते एव द्वे स्थाने' इति पाठो व्याख्यातोस्ति तेन 'एते एव दुवे ठाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते। यद्येष पाठः स्यात् तदा व्याख्याया जटिलतापि समाप्ता स्यात्। उत्तराध्ययने (५।२) पि एतत् संवादी पाठो लभ्यते— 'संतिमेव दुवे ठाणा' पुनश्च 'जम्मि' अथवा 'जेहिं' इति पाठावपि सुसंगच्छाते; °जम्मि (चू)।
१०. तब्भाव° (चू)।
११. अत्थ° (चू)।
१२. °वादाय (क)।
१३. केइ (चू)।

५. माइणो कट्टु मायाओ 'कामभोगे समारभे'[१] ।
हंता छेत्ता पगतित्ता आय-सायाणुगामिणो ॥
६. मणसा वयसा चेव कायसा चेव अंतसो ।
आरतो परतो वा वि दुहा वि य असंजता ॥
७. वेराइं कुव्वती वेरी 'ततो वेरेहि रज्जती'[२] ।
पावोवगा य आरंभा दुक्खफासा य अंतसो ॥
८. संपरायं[३] णियच्छंति[४] अत्तदुक्कडकारिणो[५] ।
रागदोसस्सिया बाला पावं कुव्वंति ते बहुं ॥
९. एतं सकम्मविरियं[६] बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो अकम्मविरियं पंडियाणं सुणेहं मे ॥

पंडित-वीरिय-पदं

१०. दविए बंधणुम्मुक्के सव्वतो छिण्णबंधणे ।
पणोल्ल[७] पावगं कम्मं सल्लं 'कंतति अंतसो'[८] ॥
११. णेयाउयं सुयक्खातं उवादाय समीहते ।
भुज्जो भुज्जो दुहावासं असुहत्तं तहा तहा ॥
१२. ठाणी विविहठाणाणि चइस्संति ण संसओ ।
अणितिए[९] अयं[१०] वासे 'णातीहि य'[११] सुहीहि य ॥
१३. एवमायाय मेहावी अप्पणो[१२] गिद्धिमुद्धरे ।
आरियं[१३] उवसंपज्जे सव्वधम्ममकोवियं[१४] ॥
१४. सहसंमइए[१५] णच्चा धम्मसारं सुणेत्तु[१६] वा ।
'समुवट्ठिए अणगारे पच्चक्खाय पावए'[१७] ॥

---

१. °समायरे (क); °समाहरे (चू); आरंभाय तिउट्टइ (चूपा, वृपा) ।
२. जेहिं वेरेहिं कच्चति (चू) ।
३. संपराइगं (क); संपरागं (चू) ।
४. निगच्छंति (चू) ।
५. अत्ता° (चू) ।
६. °वीरियं (ख) ।
७. पणोल्लो (क, ख) ।
८. कंतइ अप्पणो (वृपा) ।
९. अणीयए (क, ख) ।
१०. इमे (चू) ।
११. नायएहि (क, ख) ।
१२. अप्पणा (चू) ।
१३. आयरियं (ख, चूपा) ।
१४. सव्वे धम्मा अकोपिता (चू); °गोवियं (ख, वृपा) ।
१५. सहसंमुइए (क); सह सम्मुत्तियाए (चू) ।
१६. सुणेत्त (चू) ।
१७. समुवट्ठिए उ° (ख); उवट्ठिते य मेधावी (चू) ।

१५. जं किंचुवक्कमं[1] जाणे 'आउक्खेमस्स अप्पणो ।
तस्सेव अंतरा खिप्पं सिक्खं सिक्खेज्ज पंडिए'[2] ॥
१६. जहा कुम्मे सअंगाइं सए देहे समाहरे ।
एवं 'पावेहिं अप्पाणं'[3] अज्झप्पेण समाहरे ॥
१७. साहरे[4] हत्थपाए य मणं[5] सव्विंदियाणि य ।
पावगं च[6] परीणामं भासादोसं च पावगं[7] ॥
१८. 'अणु माणं'[8] च मायं च तं परिण्णाय पंडिए ।
'सुतं मे इह मेगेसिं एयं वीरस्स वीरियं'[9] ॥
१९. 'उड्ढमहे तिरियं दिसासु जे पाणा तस थावरा ॥
सव्वत्थ विरतिं कुज्जा संति-णिव्वाणमाहितं'[10] ॥
२०. पाणे य णाइवाएज्जा अदिण्णं पि य णातिए[11] ।
सातियं[12] ण मुसं बूया एस धम्मे वुसीमओ ॥
२१. 'अतिक्कमंति वायाए मणसा वि ण पत्थए ।
सव्वओ संवुडे दंते आयाणं सुसमाहरे'[13] ॥
२२. कडं च कज्जमाणं[14] च आगमेस्सं[15] च पावगं ।
सव्वं तं णाणुजाणंति आयगुत्ता[16] जिइंदिया ॥

---

[1] किन्तुवक्कमं (क); किंचिउवक्कमं (चू); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—किंचि+उवक्कमं ।

[2] आउक्खेमं च अप्पणो । तस्सेव अंतरद्धा, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिते (चू) ।

[3] पावाइं मेहावी (क, ख, वृ) ।

[4] संहरे (चू) ।

[5] कायं (चू) ।

[6] तु (ख) ।

[7] तारिसं (क, ख, वृ) ।

[8] अइमाणं (चूपा, वृपा) ।

[9] आययट्ठं सुयादाय एवं वीरस्स वीरियं (क, ख); साया गारवणिहुते, उवसंते णिहे चरे (क, ख); साया गारवणिहुए, उवसंते णिहे चरे (वृ); सुयं मे इह मेगेसिं, एवं वीरस्स वीरियं (वृपा); आययट्ठं सुआदाय, एयं वीरस्स वीरियं (वृपा) ।

[10] ×(क, ख); अयं च श्लोको न सूत्रादर्शेषु दृष्टः, टीकायां तु दृष्टः इति कृत्वा लिखितः (वृ) ।

[11] नायए (क); णादिए (ख) ।

[12] साइयं (ख); सादियं (वृ) ।

[13] ०सुसमाहिए (क);
अयं भावरते निच्चं,
भवे भिक्खू सुसंवुडे ।
अतिक्कमं तिपादाए,
मणसा वि ण पत्थए ॥ (चू) ।

[14] कीर० (चू) ।

[15] ०मिस्सं (ख) ।

[16] आउगुत्ता (क) ।

अबुद्ध-परक्कंत-पदं

२३. जे याऽबुद्धा[१] महाभागा[२] वीरा ऽसम्मत्तदंसिणो[३] ।
असुद्धं तेसिं परक्कंतं सफलं होइ सव्वसो ॥

बुद्ध-परक्कंत-पदं

२४. जे उ[४] बुद्धा महाभागा[५] वीरा सम्मंत्तदंसिणो ।
सुद्धं तेसिं परक्कंतं अफलं होइ सव्वसो ॥
२५. तेसिं 'तु तवोसुद्धो'[६] णिक्खंता जे[७] महाकुला ।
'अवमाणिते परेणं तु ण सिलोगं वयंति ते'[८] ॥
२६. अप्पपिंडासि पाणासि अप्पं भासेज्ज सुव्वए ।
खंतेऽभिणिव्वुडे दंते 'वीतगेही सया जए'[९] ॥
२७. झाणजोगं[१०] समाहट्टु कायं वोसेज्ज[११] सव्वसो ।
तितिक्खं परमं णच्चा आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

---

[१] अबुद्धा (क) ।
[२] महानागा (चू) ।
[३] असमत्त ° (ख); °दरिसिणो (चू)
[४] य (ख, वृ) ।
[५] महानागा (चू) ।
[६] पि तवो ऽसुद्धो (क,वृ); तु तवो असुद्धो(ख) ।
[७] जे य (क) ।
[८] जं नेवन्ने वियाणंति, न सिलोगं पवेयए (क, ख, वृ) ।
[९] विगतगेधी ण रज्जति (चू) ।
[१०] °योगं (चू) ।
[११] विउ° (क, ख) ।

नवमं अज्झयणं

धम्मो

धम्म-पदं

१. कयरे धम्मे अक्खाए[१] माहणेण मईमता ? ।
अंजुं[२] धम्मं जहातच्चं[३] 'जिणाणं तं सुणेह मे'[४] ॥
२. माहणा खत्तिया वेस्सा[५] चंडाला अदु बोक्कसा ।
एसिया वेसिया सुद्दा 'जे य'[६] आरंभणिस्सिया ॥
३. परिग्गहे णिविट्ठाणं 'वेरं तेसिं'[७] पवड्ढई ।
आरंभसंभिया[८] कामा ण ते दुक्खविमोयगा ॥
४. आघातकिच्चमाहेउं[९] णाइओ[१०] विसएसिणो ।
अण्णे हरंति तं वित्तं 'कम्मी कम्मेहि किच्चती'[११] ॥
५. 'माता पिता ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
णालं ते मम[१२] ताणाए लुप्पंतस्स सकम्मुणा'[१३] ॥

---

१. आघाते (चू) ।
२. अजू (ख); अंजु (चू) ।
३. अहा° (क); जधातधा (चू) ।
४. जणगा० (ख); जणगा तं सुणे धम्मे (चूपा, वृपा) ।
५. वेसा (क, ख) ।
६. जेऽन्ने (क) ।
७. पावं तेसि (वृ); तेसि पावं (चू); वेरं तेसिं (वृपा) ।
८. °संवुता (चू); °सम्मुता (चूपा) ।
९. °माधाए (चू); °माधेतुं (चूपा) ।
१०. णायतो (क) ।
११. °कच्चती (क); कम्माऽय एसति (चू) ।
१२. तव (क, ख, वृ) ।
१३. तुलना—माया पिया ण्हुसा भाया,
भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाय,
लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥
—उत्तरज्झयणाणि ६।३ ।

६. एयमट्ठं सपेहाए[1] परमट्ठाणुगामियं
णिम्ममो णिरहंकारो चरे भिक्खू जिणाहियं ।।

(युग्मम्)

७. 'चिच्चा वित्तं च पुत्ते य'[2] णाइओ य परिग्गहं ।
'चिच्चाण अंतगं सोयं'[3] णिरवेक्खो परिव्वए ।।

मूलगुण-पदं

८. 'पुढवी आऊ'[4] अगणी वाऊ[5] 'तण रुक्ख'[6] सबीयगा ।
अंडया 'पोय जराऊ रस संसेय'[7] उब्भिया ।।
९. एतेहिं छहिं काएहिं तं विज्जं ! परिजाणिया ।
मणसा कायवक्केणं णारंभी ण परिग्गही ।
१०. मुसावायं[8] बहिद्धं च उग्गहं च अजाइयं[9] ।
सत्थादाणाइं लोगंसि तं विज्जं ! परिजाणिया ।।

उत्तरगुण-पदं

११. पलिउंचणं च भयणं च थंडिल्लुस्सयणाणि य ।
धुत्तादाणाणि[10] लोगंसि तं विज्जं ! परिजाणिया ।।
१२. 'धावणं रयणं चेव वमणं च विरेयणं ।
वत्थिकम्मं सिरोवेधे'[11] तं विज्जं ! परिजाणिया ।।
१३. गंधमल्लं[12] सिणाणं च दंतपक्खालणं तहा ।
परिग्गहित्थिकम्मं च तं विज्जं ! परिजाणिया ।।

---

[1] व्या० वि०—अत्र 'सं' शब्दस्य अनुस्वार-लोपः—'संपेहाए' (संप्रेक्ष्य) । सम्मंपेहाए (चू) । 'स पेहाए' स प्रेक्षापूर्वकारी (वृ) । उत्तराध्ययन (६।४) संदर्भे चूर्णिव्याख्या संगतास्ति । सपेहाए (स्वप्रेक्षया) इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

[2] °या (क); चेच्चा पुत्ते य मित्ते य (चू) ।

[3] चेच्चाण अत्तगं सोतं (चू); चेच्चा अणंतगं सोयं (चूपा); चेच्चाण अंतकं सोयं, चेच्चाण अत्तगं सोयं, चेच्चाणऽणंतगं सोयं (वृपा) ।

[4] पुढवाऽऽतु (चू) ।

[5] वायू (चू) ।

[6] व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—तणा रुक्खा ।

[7] व्या० वि०—विभक्तिरहितं वर्णलोपश्च—पोयया जराउया रसया ससेइया ।

[8] °वातं (चू) ।

[9] अजाइया (क, ख); मऽजाइयं (चू) ।

[10] धूणायाणयं (क); धूणादाणाइं (ख); वृत्तिकृता 'धूण' इति पाठो व्याख्यातः धूनयेति प्रत्येकं क्रिया योजनीया(वृ); किन्तु चूर्णीगतः पाठोर्थदृष्ट्या स्वाभाविकः प्रतिभाति ।

[11] धोयणं रयणं चेव, वत्थीकम्म विरेयणं । वमणंजणपलीमंथं (क, ख, वृ) ।

[12] °मल्ल (ख, वृ, चू) ।

१४. उद्देसियं कीयगडं[१] पामिच्चं चेव आहडं ।
'पूतिं अणेसणिज्जं'[२] च तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

१५. आसूणिमक्खिरागं[३] च गिद्धुवघायकम्मगं[४] ।
उच्छोलणं च 'कक्कं च'[५] तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

१६. संपसारी कयकिरिए[६] पसिणायतणाणि[७] य ।
सागारियं पिंडं च तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

१७. अट्ठापदं[८] ण सिक्खेज्जा वेधादीयं[९] च णो वए ।
हत्थकम्मं विवायं च तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

१८. उवाणहाओ[१०] छत्तं च णलियं[११] बालवीयणं[१२] ।
परकिरियं अण्णमण्णं च तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

१९. उच्चारं पासवणं हरितेसु ण करे मुणी ।
वियडेण वावि साहट्टु णायमेज्ज[१३] कयाइ[१४] वि ॥

२० परमत्ते[१५] अण्णपाणं ण भुंजेज्ज कयाइ वि ।
परवत्थं अचेलो वि तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

२१. आसंदी पलियंके य'[१६] णिसिज्जं च गिहंतरे ।
संपुच्छणं[१७] सरणं वा तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

२२. 'जसं कित्ती'[१८] सिलोगं च जा य वंदणपूयणा ।
सव्वलोगंसि जे कामा तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

२३. जेणेहं[१९] णिव्वहे भिक्खू अण्णपाणं तहाविहं ।
अणुप्पदाणमण्णेसिं तं विज्जं ! परिजाणिया ॥

---

१. कीतकडं (चू) ।
२. पूइयं णेस० (क); पूयं अणे० (ख) ।
३. आसूणियमक्खि० (चू) ।
४. गेहुवघाय० (चू) ।
५. कक्केणं (चू) ।
६. य कयकिरीते (क, ख) ।
७. पासणिया० (चू) ।
८. अट्ठावयं (ख) ।
९. वेहाईयं (ख); वेधातीतं (वृ); वेधादीयं (वृपा) ।
१०. पाणहाओ य (क, ख, वृ) ।
११. नालीयं (ख) ।
१२. ०वीयणी (क) ।
१३. नाच० (ख) ।
१४. कदादि (क) ।
१५. परपत्ते (चू) ।
१६. पलियंकं च (चू) ।
१७. संपुच्छणं च (क, चू) ।
१८. जस किंत्ति (ख, चू) ।
१९. जणेहि (क); जेणिहं (चू); जेणिह (चूपा) ।

['सीलमंते असीले वा तेसिं दाणं विवज्जए।
णिज्जरट्ठाए दायव्वं तं विज्जं! परिजाणिया'[1]]॥
२४. एवं उदाहु णिग्गंथे महावीरे महामुणी।
अणंतणाणदंसी से धम्मं देसितवं सुतं॥

भासा-विवेग-पदं

२५. भासमाणो ण भासेज्जा 'णो य'[2] वम्फेज्ज मम्मयं[3]।
'माइट्ठाणं विवज्जेज्जा'[4] 'अणुवीइ वियागरे'[5]॥
२६. 'संतिमा तहिया'[6] भासा जं वइत्ताणुतप्पई।
जं छण्णं[7] तं ण वत्तव्वं एसा आणा णियंठिया॥
२७. होलावायं सहीवायं गोयवायं[8] च णो वए।
तुमं तुमं ति अमणुण्णं[9] सव्वसो तं ण वत्तए॥

संसग्गि-वज्जण-पदं

२८. अकुसीले सदा भिक्खू 'णो य'[10] संसग्गियं भए।
सुहरूवा तत्थुवसग्गा पडिबुज्झेज्ज ते विदू॥

सामण्ण-चरिया-पदं

२९. 'णण्णत्थ अंतराएणं'[11] परगेहे ण णिसीयए।
गाम-कुमारियं किड्डं णाइवेलं हसे मुणी॥
३०. 'अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए'[12]।
चरियाए अप्पमत्तो 'पुट्ठो तत्थऽहियासए'[13]॥
३१. हम्ममाणो ण कुप्पेज्जा वुच्चमाणो ण संजले।
सुमणो अहियासेज्जा ण य कोलाहलं करे॥

---

[1] अयं श्लोकः केवलं चूर्णाविव व्याख्यातो लभ्यते।
[2] णेय (क); नेव (ख)।
[3] मामयं (क, वृपा)।
[4] मायाठाणं ण सेवेज्ज (चू)।
[5] अणुवीय° (क); अणुचिंतिय° (ख); °उदाहरे (वृ); अणुचिंतिय वाहरे (चू)।
[6] तत्थिमा तइया (क, ख, वृ)।
[7] छन्नं (क, ख, वृपा)।
[8] सोलवादं (चू); गोतावादं (चूपा)।
[9] अपडिण्णे (चू)।
[10] नेव (क, ख)।
[11] नन्नत्थंतरा° (क)।
[12] अणिस्सिओ उरालेहिं, अपमत्तो परिव्वए। (चू); अणिस्सिओ° (वृपा)।
[13] पुट्ठो सम्माधियासए (चू)।

३२. 'लद्धे कामे'[१] ण पत्थेज्जा विवेगे 'एव माहिए'[२] ।
आयरियाइं[३] सिक्खेज्जा 'बुद्धाणं अंतिए'[४] सया ॥
३३. सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुप्पण्णं सुतवस्सियं ।
वीरा[५] जे अत्तपण्णेसी धितिमंता जिइंदिया ॥
३४. गिहे दोवमपासंता[६] पुरिसादाणिया णरा ।
ते वीरा बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवियं ॥
३५. अगिद्धे सद्दफासेसु आरंभेसु अणिस्सिए ।
'सव्वं तं'[७] समयातीतं जमेतं[८] लवियं बहु ॥
३६. अइमाणं च मायं च तं परिण्णाय पंडिए ।
गारवाणि य सव्वाणि णिव्वाणं[९] संधए मुणि ॥
—त्ति बेमि ॥

---

[१] लद्धीकामे (चूपा, वृपा) ।
[२] एम माहिए (क); एस आहिए (ख) ।
[३] आरियाइं (वृ); आयरियाइं (वृपा) ।
[४] सुबुद्धाणंतिए (चू) ।
[५] धीरा (वृपा) ।
[६] °मपस्संता (क) ।
[७] सव्वेतं (चू) ।
[८] जमिदं (चू) ।
[९] णेव्वाणं (चू) ।

दसमं अज्झयणं

समाही

समाधि-पदं

१. आघं मइमं[1] अणुवीइ धम्मं अंजुं[2] समाहिं तमिणं[3] सुणेह ।
अपडिण्णे[4] भिक्खू[5] समाहिपत्ते 'अणिदाणभूते सुपरिव्वएज्जा'[6] ॥
२. उड्ढं अहे यं[7] तिरियं दिसासु तसा य जे थावर[8] जे य पाणा ।
हत्थेहि पादेहि य संजमित्ता[9] अदिण्णमण्णेसु य णो गहेज्जा ॥
३. सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे[10] लाढे चरे आयतुले पयासु[11] ।
आयं ण कुज्जा इह जीवियट्ठी चयं ण कुज्जा सुतवस्सि[12] भिक्खू ॥

चरित्त-समाधि-पदं

४. सव्विदियाभिणिव्वुडे[13] पयासु चरे मुणी सव्वओ विप्पमुक्के ।
पासाहि पाणे य पुढो विसण्णे[14] 'दुक्खेण अट्टे'[15] परिपच्चमाणे[16] ॥

---

[1] मईमं (ख) ।

[2] अंजू (क, ख) ।

[3] तधियं (चू) ।

[4] अपडिण्ग (क्व) ।

[5] भिक्खू उ (ख) ।

[6] °भूते परिवएज्जा (वृ); °भूतेसु परिव्वएज्जा (वृपा, चूपा); °भूते सुपरि° वृपा) ।

[7] त (क); या (चू) ।

[8] व्या० वि०—थावरा ।

[9] संजमंतो (चू) ।

[10] वितिगिंछ° (चू) ।

[11] पयासुं (चू) ।

[12] व्या० वि०—सुतवस्सी ।

[13] °दियभि° (क); °दियणिव्वुडे (चू) ।

[14] वि सत्ते (क, वृ); विसंते (चूपा) ।

[15] दुक्खट्टितऽट्टे (चूपा) ।

[16] परितप्पमाणे (ख, चू, वृपा) ।

५. एतेसु[1] बाले य[2] पकुव्वमाणे आवट्टती[3] 'कम्मसु पावएसु'[4] ।
अतिवाततो कीरति पावकम्मं णिउंजमाणे उ[5] करेइ कम्मं ।।
६. आदीणवित्ती[6] वि करेति पावं मंता हु[7] एगंतसमाहिमाहु ।
बुद्धे समाहीय[8] रए विवेगे पाणाइवाया विरते ठितप्पा[9] ।।
७. सव्वं जगं तू[10] समयाणुपेही पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा ।
उट्ठाय 'दीणे तु'[11] पुणो विसण्णे[12] संपूयणं चेव सिलोयकामी ।।
८. आहाकडं[13] चेव णिकाममीणे[14] णिकामसारी[15] य विसण्णमेसी ।
इत्थीसु[16] सत्ते य पुढो य बाले परिग्गहं चेव पकुव्वमाणे[17] ।।
९. 'वेराणुगिद्धे णिचयं करेति'[18] इतो चुते से दुहमट्ठदुग्गं[19] ।
तम्हा तु मेधावि[20] समिक्ख धम्मं चरे मुणी सव्वतो विप्पमुक्के ।।
१०. आयं[21] ण कुज्जा इह जीवितट्ठी[22] असज्जमाणो य[23] परिव्वएज्जा ।
णिसम्मभासी य विणीयगिद्धी[24] हिंसण्णितं वा ण कहं करेज्जा ।।
११. आहाकडं वा ण णिकामएज्जा णिकामयंते य ण संथवेज्जा ।
धुणे उरालं अणवेक्खमाणे[25] चेच्चाण सोयं अणुवेक्खमाणे[26] ।।
१२. एगत्तमेवं[27] अभिपत्थएज्जा 'एतं पमोक्खे'[28] ण मुसं ति पास ।
एसप्पमोक्खे अमुसेऽवरे[29] वी अकोहणे सच्चरए तवस्सी[30] ।।

---

[1] एवं तु (वृपा, चूपा) ।
[2] तु (चू) ।
[3] आउट्टती (चूपा, वृपा) ।
[4] कम्मेहिं पावएहिं (चू) ।
[5] वि (ख) ।
[6] आदीणभोई (क, चू, वृपा) ।
[7] उ (क, ख) ।
[8] समाहीइ (क) ।
[9] ठितच्चा, ठितच्ची (चूपा, वृपा) ।
[10] त (ख) ।
[11] दीणो य (क, ख) ।
[12] विसत्तो (क) ।
[13] अधाकडं (चू) ।
[14] णियायमीणे (चूपा) ।
[15] नियामचारी (क, ख, वृपा) ।
[16] इत्थीहिं (चू) ।
[17] ममायमाणे (चू) ।
[18] आरंभसत्ता णिचयं करेंति (चू); आरंभसत्तो° (वृपा) ।
[19] °दुग्गे (चू) ।
[20] व्या° वि°—मेधावी ।
[21] छंदं (चू, वृपा); आय (चूपा) ।
[22] जीवियट्ठी (वृ) ।
[23] उ (क) ।
[24] °गिद्धि (वृ); °गेधी (चू) ।
[25] अणुवेहमाणे (ख, वृ) ।
[26] अणुपेहमाणे (क, वृ) ।
[27] °मेयं (ख) ।
[28] एवं पमुक्खो (क, ख, वृ) ।
[29] वरे (वृ) ।
[30] तपस्सी (चू) ।

१३. इत्थीसु या 'आरयमेहुणे उ'[1] परिग्गहं चेव अकुव्वमाणे[2]।
'उच्चावएसुं विसएसु ताई'[3] 'ण संसयं'[4] भिक्खु[5] समाहिपत्ते ।।
१४. अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू तणादिफासं तह सीतफासं ।
'उण्हं च दंसं'[6] चऽहियासएज्जा सुब्भिं च दुब्भिं च तितिक्खएज्जा ।।
१५. गुत्ते[7] वईए य समाहिपत्ते लेसं समाहट्टु परिव्वएज्जा ।
गिहं ण छाए ण वि छादएज्जा[8] सम्मिस्सिभावं[9] पजहे पयासु ।।

असमाधि-पदं

१६. जे केइ लोगम्मि उ अकिरियाता[10] अण्णेण पुट्ठा धुतमादिसंति[11]।
आरंभसत्ता गढिया य लोए धम्मं ण जाणंति विमोक्खहेउं ।।
१७. 'तेसिं पुढो छंदा माणवाणं किरिया-अकिरियाण व पुढोवादं'[12]।
'जातस्स बालस्स पकुव्व देहं'[13] पवड्ढती[14] वेरमसंजयस्स ।।
१८. आउक्खयं[15] चेव अबुज्झमाणे ममाइ से साहसकारि[16][17] मंदे ।
अहो य राओ[18] परितप्पमाणे अट्टे सुमूढे अजरामरे[19] व्व ।।
१९. जहाय[20] वित्तं पसवो य सव्वे जे बंधवा जे य पिया य मित्ता ।
लालप्पई 'से वि उवेति मोहं'[21] अण्णे जणा तं सि[22] हरंति वित्तं ।।

---

१. °मेहुणा उ (ख, वृ); अरतमेधुणे या (चू)। व्या० वि०—आ+अरत+मैथुनः—विरत-मैथुनः इत्यर्थः ।

२. अमायमीणे (चू) ।

३. उच्चावएहिं विसएहिं ताया (चू) ।

४. णिस्संसयं (क, ख, वृ); ण संसयं (वृपा) ।

५. व्या० वि०—भिक्खू ।

६. तेउं च० (ख); तेउ च सद्दं (चू) ।

७. गुत्तो (क) ।

८. छावएज्जा (क, ख) ।

९. सम्मिस्स° (क, ख, वृ); सम्मिस्सि° (वृपां) ।

१०. अकिरियाया (क); अकिरियआया (ख) ।

११. °मादियंति (चू) ।

१२. पुढो य छंदा इह माणवाती, किरियाकिरीण च पुढो य वायं (क); पुढो य छंदा इह माणवा तु, किरियाकिरीणं च पुढो य वायं (ख); पुढो छंदा इह माणवा उ, किरिया किरियाणं च पुढोवायं (वृ) ।

१३. जाताण बालस्स पगब्भणाए (चूपा); जायाए बालस्स पगब्भणाए (वृपा) ।

१४. पवड्ढते (चू) ।

१५. आयु° (चू) ।

१६. व्या० वि०—साहसकारी ।

१७. सहस्स° (चू) ।

१८. रातो य (चू) ।

१९. °मरि (क, ख) ।

२०. जहाहि (क, ख) ।

२१. से वि य एइ मोहं (क, ख); ते वि उवेंति घंतं (चू) ।

२२. से (क) ।

मूलगुण-समाहि-पदं

२०. सीहं जहा खुद्दमिगा[1] चरंता दूरे[2] चरंती परिसंकमाणा ।
एवं तु मेहावि[3] समिक्ख धम्मं 'दूरेण पावं परिवज्जएज्जा'[4] ।।
२१. संबुज्झमाणे उ[5] णरे मतीमं पावाओ अप्पाणं[6] णिवट्टएज्जा ।
'हिंसप्पसूताणि दुहाणि'[7] मत्ता[8] 'वेराणुबंधीणि महब्भयाणि'[9] ।।
२२. मुसं ण बूया मुणि[10] अत्तगामी[11] णिव्वाणमेयं[12] कसिणं समाहिं ।
सयं ण कुज्जा ण वि[13] कारवेज्जा करंतमण्णं[14] पि य णाणुजाणे ।।

उत्तरगुण-समाहि-पदं

२३. 'सुद्धे सिया जाए ण दूसएज्जा'[15] 'अमुच्छितो अणज्झोववण्णो'[16] ।
धितिमं 'विमुक्के ण य'[17] पूयणट्ठी ण सिलोयकामी[18] य परिव्वएज्जा ।।
२४. णिक्खम्म गेहाओ णिरावकंखी कायं विओसज्ज[19] णिदाणछिण्णे ।
णो जीवितं णो मरणाभिकंखी चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के ।।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] खुड्ड° (चू) ।

[2] दूरेण (वृ) ।

[3] व्या° वि°—मेहावी ।

[4] पावाणि दूरेण विवज्जएज्जा (चू) ।

[5] य (ख, चू) ।

[6] अप्पाणं (क) ।

[7] °सूयाइं दुहाइं (क, ख) ।

[8] मंता (क, ख) ।

[9] णेव्वाणभूते व परिव्वएज्जा (चू, वृपा) ।

[10] व्या° वि°—मुणी ।

[11] °कामी (चू) ।

[12] °मेवं (चू) ।

[13] य (क, चू) ।

[14] करेंत° (चू) ।

[15] सुद्धेसिया जायण तूसएज्जा (चू) ।

[16] अमुच्छिए न य अज्झोववण्णे (क, ख) ।

[17] विप्पमुक्के ण (चू) ।

[18] °गामी (क, ख, वृ) ।

[19] विओस्सेज्ज (क) ।

एगारसमं अज्झयणं

मग्गे

मग्ग-सार-पदं

१. कयरे मग्गे अक्खाते[1] माहणेण मतीमता ? ।
जं मग्गं उज्जु[2] पावित्ता ओहं तरति दुरुत्तरं ॥
२. तं ‘मग्गं अणुत्तरं’[3] सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणं[4] ।
जाणासि[5] णं जहा भिक्खू ! तं णे बूहि[6] महामुणी ! ॥
३. जइ णे केइ पुच्छेज्जा ‘देवा अदुव माणुसा’[7] ।
तेसिं तु कयरं मग्गं आइक्खेज्ज ? कहाहि णो[8] ॥
४. जइ वो केइ पुच्छेज्जा देवा अदुव माणुसा ।
‘तेसिमं पडिसाहेज्जा मग्गसारं सुणेह मे’[9] ॥
५. अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं ।
जमादाय इओ पुव्वं समुद्दं[10] ववहारिणो ॥

---

१. आघाते (चू) ।
२. अंजु (चू); व्या० वि०—उज्जुं ।
३. मग्गमणुत्तरं (ख) ।
४. °मोक्खगं (क) ।
५. जाणेहि (चू) ।
६. बूहि (चू) ।
७. अत्र चूर्णीविवरणानुमारेण ‘देवा तिरिय माणुसा’ इति पाठस्य परिकल्पना जायते, तच्चेत्थम्—“तिरिया मणुस्सा, उत्तरगुणलद्धि वा पडुच्च तियं (तिरियं ?) अपि कश्चिद् गिरा वत्ति (वि त ?), वयसा वि पुच्छेज्ज ।”
८. णे (चू) ।
९. तेसिं तु इमं मग्गं, आइक्खेज्ज सुणेध मे (चू. वृपा); तेसिं तु° (चूपा) ।
१०. समुद्दं व (चू) ।

६. अतरिंसु तरंतेगे तरिस्संति अणागया ।
तं सोच्चा पडिवक्खामि जंतवो ! तं सुणेह मे ।।

अहिंसा-पदं

७. पुढवीजीवा पुढो सत्ता आउजीवा तहागणी ।
वाउजीवा पुढो सत्ता तण[१] रुक्खा सबीयगा ।।
८. अहावरे[२] तसा पाणा एवं छक्काय[३] आहिया ।
'इत्ताव एव'[४] जीवकाए 'णावरे विज्जती कए'[५] ।।
९. सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया ।
सव्वे अकंतदुक्खा[६] य अतो सव्वे अहिंसया[७] ।।
१०. एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसति कंचणं[८] ।
अहिंसा-समयं चेव एतावंतं विजाणिया ।।
११. 'उड्ढं अहे'[९] तिरियं च जे केइ तसथावरा ।
'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा'[१०] संति णिव्वाणमाहियं ।।
१२. पभू दोसे णिराकिच्चा[११] ण विरुज्झेज्ज केणइ ।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव अंतसो ।।

एसणा-पदं

१३. संवुडे से[१२] महापण्णे[१३] धीरे[१४] दत्तेसणं चरे ।
एसणासमिए णिच्चं वज्जयंते अणेसणं ।।
१४. भूयाइं समारंभ[१५] 'साधू उद्दिस्स'[१६] जं कडं ।
तारिसं तु ण गेण्हेज्जा[१७] अण्णपाणं[१८] सुसंजए ।।

---

[१] व्या० वि०—तणा ।
[२] °वरा (चू) ।
[३] व्या० वि—छक्काया ।
[४] इत्तावये (क, ख); एताव ता (चू) ।
[५] नावरे कोइ विज्जई (क्व) ।
[६] अक्कंत° (ख) ।
[७] न हिंसया (क, वृ); अहिंसका (चू) ।
[८] किंचणं (क, ख) ।
[९] उड्ढं अहे य (ख); उड्ढमहे (चू) ।
[१०] °विज्जा (क, वृ) । ३।४।२० श्लोके चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विज्जं विरतिं' पाठः स्वीकृतः, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठो व्याख्यातः । इह च चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठः स्वीकृतः, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं विज्जा' पाठो व्याख्यातः ।
[११] णिरे° (चू) ।
[१२] य (चू) ।
[१३] °पुण्णे (क) ।
[१४] वीरे (क) ।
[१५] च समारंभ (क); च समारब्भ (ख) ।
[१६] समुद्दिस्स य (क); समुद्दिस्सा य (ख); साहू मुद्दिस्स (वृ); तमुद्दिस्सा य (क्व) ।
[१७] भुंजिज्जा (वृ) ।
[१८] अण्णं° (वृ) ।

१५. पूतिकम्मं[1] ण सेवेज्जा[2] एस धम्मे वुसीमतो।
जं किंचि अभिसंकेज्जा[3] सव्वसो[4] तं ण कप्पते[5]॥

भासा-समिति-पदं

१६. 'ठाणाइं संति सड्ढीण गामेसु णगरेसु वा।
अत्थि वा णत्थि वा धम्मो? अत्थि धम्मो त्ति णो वते॥
१७. अत्थि वा णत्थि वा पुण्णं? अत्थि पुण्णं ति णो वए।
अधवा णत्थि पुण्णं ति एवमेयं महब्भयं'[6]॥
१८. 'दाणट्ठयाय जे पाणा'[7] हम्मंति तसथावरा।
तेसिं सारक्खणट्ठाए 'अत्थि पुण्णं ति'[8] णो वए॥
१९. जेसिं तं उवकप्पेंति 'अण्णं पाणं'[9] तहाविहं।
तेसिं लाभंतरायं ति तम्हा णत्थि त्ति णो वए॥
२०. जे य दाणं पसंसंति[10] वधमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति वित्तिच्छेदं करेंति ते॥
२१. दुहओ वि जे[11] ण भासंति अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं णिव्वाणं[12] पाउणंति ते॥

धम्म-दीव-पदं

२२. 'णिव्वाण-परमा'[13] बुद्धा णक्खत्ताण व चंदमा[14]।
तम्हा सया जए दंते णिव्वाण[15] संधए मुणी॥

---

[1] पूती° (क)।

[2] सेवेज्ज (चू)।

[3] अभिकंखेज्जा (क, ख, वृ)।

[4] सव्वतो (क)।

[5] भोत्तए (चू)।

[6] हणंतं नाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए।
ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु नगरेसु वा॥
तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णं ति नो वए।
अह वा नत्थि पुण्णं ति, एवमेयं महब्भयं॥
(क, ख, वृ); इदं गाथा-द्वयमस्माभिश्चूर्ण्यनुसारि स्वीकृतम्। अत्र वृत्त्यनुसारि गाथाद्वयं त्रुटितप्रकरणमिवाभाति। श्रद्धालोः प्रश्न-परिपाटी चूर्णौ स्वाभाविकी विद्यते। षोडशे श्लोके धर्मोस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तरं च। सप्तदशे श्लोके पुण्यमस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तरं च। वृत्तौ षोडशे श्लोके नास्ति धर्माधर्मसम्बन्धी कोपि प्रश्नः। सप्तदशे च पुण्यसम्बन्धी प्रश्नो नास्ति केवलमपृष्टस्य प्रश्नस्योत्तरमस्ति। एतेन प्रतीयते वृत्त्यनुसारी पाठो सम्बद्धोस्ति।

[7] दाणट्ठताए जे सत्ता (चू)।

[8] तम्हा अत्थि त्ति (चू)।

[9] अण्णपाणं (क, ख, वृ)।

[10] पडिसेधेंति (चू)।

[11] ते (क, ख, वृ)।

[12] णेव्वाणं (चू)।

[13] णिव्वाणं परमं (क,ख,वृपा); णेव्वाण° (चू)।

[14] चंदिमा (क)।

[15] णेव्वाणं (चू)।

२३. वुज्झमाणाण पाणाणं किच्चंताणं[1] सकम्मणा[2]।
आघाति[3] साधुतं[4] दीवं पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥
२४. आयगुत्ते सया दंते छिण्णसोए[5] णिरासवे[6]।
जे धम्मं सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं ॥

बोद्धदिट्ठि-समीक्खा-पदं

२५. तमेव अविजाणंता अबुद्धा बुद्धवादिणो[7]।
बुद्धा मो त्ति य मण्णंता अंतए ते[8] समाहिए ॥
२६. ते य बीयोदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं।
'भोच्चा झाणं'[9] झियायंति अखेतण्णा असमाहिया ॥
२७. जहा ढंका य कंका य कुलला[10] मग्गुका सिही।
मच्छेसणं झियायंति झाणं ते कलुसाधमं ॥
२८. एवं तु समणा एगे[11] मिच्छदिट्ठी[12] अणारिया।
विसएसणं झियायंति कंका वा कलुसाधमा ॥
२९. 'सुद्धं मग्गं विराहित्ता इहमेगे उ दुम्मती।
उम्मग्गगया दुक्खं घातमेसंति तं तहा'[13] ॥
३०. जहा आसाविणिं[14] णावं जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छई[15] पारमागंतुं अंतरा य विसीदति ॥
३१. एवं तु समणा एगे मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोतं कसिणमावण्णा आगंतारो महब्भयं ॥

मग्ग-संधाण-पदं

३२. 'इमं च धम्ममादाय कासवेण पवेदितं।
तरे सोयं महाघोरं अत्तत्ताए परिव्वए'[16] ॥

---

[1] कच्चं° (क)।

[2] सकम्मुणा (चू)।

[3] अक्खाति (चू)।

[4] साहुतं (क, ख); असौ शब्दः 'साधुकं' अस्ति, तकारश्रुत्या 'साधुतं' जातमिति प्रतीयते।

[5] °स्सोते (चू)।

[6] अणासवे (क, ख)।

[7] बुद्धमाणिणो (क, ख, वृ)।

[8] दूरतो (चू)।

[9] झाणं णाम (चू)।

[10] पिलजा (चू)।

[11] वेगे (क)।

[12] मिच्छा° (क)।

[13] चूर्णिकृता नासौ श्लोको व्याख्यातः।

[14] आसाविणी (चू)।

[15] इच्छेज्जा (चू)।

[16] इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥

३३. विरते गामधम्मेहिं जे केई जगई जगा ।
तेसिं अत्तुवमायाए[1] थामं कुव्वं परिव्वए ।।
३४. अतिमाणं च मायं च तं परिण्णाय पंडिए ।
सव्वमेयं णिराकिच्चा[2] णिव्वाणं[3] संधए मुणी ।।
३५. 'संधए साहुधम्मं'[4] च पावधम्मं णिराकरे[5] ।
उवधाणवीरिए भिक्खू कोहं माणं 'ण पत्थए'[6] ।।
३६. जे य बुद्धा अतिक्कंता जे य बुद्धा अणागया ।
संती तेसिं पइट्ठाणं भूयाणं[7] जगई जहा ।।
३७. 'अह णं वतमावण्णं'[8] फासा उच्चावया फुसे ।
ण तेहिं[9] विणिहण्णेज्जा वातेण व महागिरी ।।
३८. संवुडे से महापण्णे धीरे[10] 'दत्तेसणं चरे'[11] ।
णिव्वुडे कालमाकंखे एवं[12] केवलिणो मतं ।।

—ति बेमि ।।

संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ।
तरे सोतं महाघोरं, अत्तताए परिव्वएज्जासि ।।
(चू); क्वचित्पश्चार्धस्यान्यथा पाठः—'कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए' (वृ); उपरिनिर्दिष्टचूर्णिपाठस्य तुलना तृतीयाध्ययनस्य ८१,८२, श्लोकयोः षट्पदेभ्यो जायते ।

[1] अत्तुवमाणेण (चू); ता उवमाऽऽताए (चूपा) ।

[2] णिरेकिच्चा (चू) ।

[3] णेव्वाणं (चू) ।

[4] सद्दहे साघुधम्मं (चूपा, वृपा) ।

[5] णिरे करे (चू) ।

[6] च वज्जए (क, ख) ।

[7] भूयाण (क) ।

[8] अघेणं भेदमावण्णं (चूपा) ।

[9] तेसु (क, ख) ।

[10] बुद्धे, (चू); वीरे (चूपा) ।

[11] दत्तेसणचरे (वृ) ।

[12] एतं (वृ) ।

बारसमं अज्झयणं

समोसरणं

समोसरण-चउक्क-पदं

१ चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाइं पुढो वयंति।
किरियं अकिरियं 'विणयं ति'[1] तइयं अण्णाणमाहंसु चउत्थमेव ॥

अण्णाणवादि-पदं

२. अण्णाणिया ता[2] कुसला वि संता असंथुया णो वितिगिच्छ[3] तिण्णा।
अकोविया आहु अकोविएहिं[4] अणाणुवीईति[5] मुसं वदंति ॥

३. 'सच्चं असच्चं इति चिंतयंता'[6] असाहु[7] 'साहु त्ति'[8] उदाहरंता।

वणइयवादि-पदं

जेमे जणा वेणइया अणेगे पुट्ठा वि भावं विणइंसु णाम[9] ॥

४. अणोवसंखा इति ते उदाहु अट्ठे स ओभासइ[10] अम्ह एवं।

अकरियवादि-पदं

लवावसक्की[11] य अणागएहिं णो किरियमाहंसु अकिरियआया[12] ॥

---

[1] विणइत्ति (क)।

[2] ताव (चू)।

[3] व्या० वि०—वितिगिच्छं।

[4] अकोविए ते (क); अकोवियाय (ख)।

[5] °वाई य (ख); °वीय त्ति (चू)।

[6] सच्चं मोसं° (चू); °इति भासयंता। (चूपा)।

[7] व्या० वि—असाहुं।

[8] साधुं ति (चू)।

[9] णामा (चू)।

[10] नो भासइ (चूपा)।

[11] लवावसंकी (क, ख); लवं—कर्म तस्मादपशङ्कितुम्—अपसर्तुं शीलं येषां ते लवापशङ्किनः (वृ)।

[12] °वाई (ख, वृ)।

५. संमिस्सभावं सगिरा[१] गिहीते[२] से[३] मुम्मुई[४] होइ[५] अणाणुवाई।
इमं दुपक्खं इममेगपक्खं आहंसु छलायतणं च कम्मं॥
६. ते[६] एवमक्खंति अबुज्भमाणा विरूवरूवाणिह[७] अकिरियाता[८]।
जमाइइत्ता बहवे मणूसा भमंति संसारमणोवदग्गं॥
७. णाइच्चो उदेइ[९] ण अत्थमेइ ण चंदिमा वड्ढति हायती वा।
सलिला[१०] ण संदंति ण वंति[११] वाया[१२] वंझे णितिए[१३] कसिणे हु लोए॥
८ जहा हि[१४] अंधे सह जोइणा वि रूवाणि णो पस्सइ हीणणेत्ते।
संतं पि[१५] ते एवमकिरियआता[१६] किरियं ण पस्संति णिरुद्धपण्णा॥
९. संवच्छरं सुविणं[१७] लक्खणं च णिमित्तदेहं च उप्पाइयं च।
अट्ठंगमेयं बहवे अहित्ता[१८] लोगंसि जाणंति अणागताइं॥
१०. केई[१९] णिमित्ता तहिया भवंति केसिंचि 'ते विप्पडिएंति'[२०] णाणं।
ते विज्जभावं[२१] अणहिज्जमाणा 'आहंसु विज्जापलिमोक्खमेव'[२२]॥

किरियवादि-पदं

११. ते एवमक्खंति[२३] समेच्च लोगं 'तहा-तहा'[२४] समणा माहणा य।
सयंकडं णऽण्णकडं च दुक्खं आहंसु 'विज्जाचरणं पमोक्खं'[२५]॥
१२. ते चक्खु[२६] लोगस्सिह[२७] णायगा उ[२८] मग्गाणुसासंति[२९] हियं पयाणं[३०]।
तहा तहा सासयमाहु लोए जंसी पया माणव! संपगाढा॥

---

१. च गिरा (चू)।
२. गहीते (ख)।
३. ते (चू)।
४. मुम्मिया (क)।
५. होंति (चू)।
६. त (क)।
७. विरूवरूवाणि (वृ)।
८. अकिरियवाई (क, ख, वृ)।
९. उट्ठेति (चू)।
१०. सरितो (चू)।
११. वयंति (ख)।
१२. वायवो (चू)।
१३. नियते (क, ख, वृ)।
१४. य (क, चू)।
१५. तु (चू)।
१६. °किरियवाई (क, ख, वृ)।
१७. सुमिणं (चू)।
१८. अधिज्जिता (चू)।
१९. केयी (चू)।
२०. तं विप्पडिएति (क, ख, वृ)।
२१. भासं (चू); विज्जहरिसं (चूपा)।
२२. जाणामु लोगंसि वयंति मंदा (ख, वृपा)।
२३. एयमक्खते (चू)।
२४. तधागता (चू); तधा तधा (चूपा)।
२५. °चरणप्पमोक्खं (ख)।
२६. व्या० वि०—चक्खू।
२७. लोगंसिह (क, ख, वृ)।
२८. ओ (क)।
२९. व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मग्गं+अणुसासंति।
३०. पजाणं (चू)।

१३. 'जे रक्खसा जे जमलोइया वा'[1] जे आसुरा[2] गंधव्वा य काया ।
आगासगामी य पुढोसिया ते[3] पुणो पुणो विप्परियासुवेंति[4] ।।

१४. जमाहु ओहं सलिलं अपारगं जाणाहि णं भवगहणं[5] दुमोक्खं ।
जंसी विसण्णा विसयंगणाहिं[6] दुहतो वि लोयं अणुसंचरंति ।।

१५. ण कम्मुणा कम्म खवेंति बाला अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा[7] ।
मेधाविणो 'लोभमया वतीता'[8] संतोसिणो णो पकरेंति पावं ।।

१६. ते तीतउप्पंण्णमणागयाइं[9][10] लोगस्स जाणंति तहागताइं ।
णेतारो अण्णेसि[11] अणण्णणेया बुद्धा हु ते अंतकडा भवंति ।।

१७. ते णेव कुव्वंति ण कारवेंति भूताभिसंकाए[12] दुगुंछमाणा ।
सदा जता विप्पणमंति धीरा विण्णत्ति[13]-वीरा य भवंति एगे ।।

१८. डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे ते आततो पासइ सव्वलोगे ।
उवेहती[14] लोगमिणं महंतं 'बुद्धप्पमत्तेसु[15] परिव्वएज्जा[16] ।।

१९. जे आततो परतो वा[17] वि णच्चा अलमप्पणो होति अलं परेसिं ।
तं जोइभूयं च सतताऽवसेज्जा[18][19] जे पाउकुज्जा अणुवीइ धम्मं ।

२०. अत्ताण[20] जो जाणइ जो य लोगं 'जो आगतिं'[21] जाणइ ऽणागतिं च ।
जो सासयं जाण[22] असासयं च जातिं[23] मरणं च चयणोववातं[24] ।।

---

[1] जे रक्खसाया जमलोइया य (क, ख, वृ) ।
[2] या सुरा (वृ) ।
[3] जे (ख, वृ); य (चू) ।
[4] °समेंति (चू) ।
[5] °ग्गहणं (चू) ।
[6] °गणासु (चू) ।
[7] वीरा (वृ) ।
[8] लोभ-भयादतीता (वृपा) ।
[9] व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः ।
[10] तीवमुप्पण्ण° (क); तीयमुप्पण्ण° (ख) ।
[11] मण्णेसि (चू) ।
[12] °संकाति (क) ।
[13] विदित्तु (चू, वृ), विण्णत्ति (चूपा, वृपा) ।
[14] उव्वेहती (ख, वृ) ।
[15] व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—बुद्धे+अप्पमत्तेसु । बुद्धे+पमत्तेसु ।
[16] बुद्धेऽप्पमत्ते सुपरिव्वएज्जा (चूपा) ।
[17] या (ख, चू) ।
[18] व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—सततं+आवसेज्जा ।
[19] सतावसेज्जा (क, ख) ।
[20] आताण (चू); व्या० वि०—अत्ताणं ।
[21] गइं च जो (क, ख) ।
[22] जाणइ (ख); व्या०वि०—अत्र इकारलोपः—जाणइ ।
[23] जाती (क, ख) ।
[24] जणोववायं (क, ख); °पवादं (चू) ।

२१. अहो वि सत्ताण विउट्टणं च जो आसवं जाणति संवरं च।
दुक्खं च जो जाणइ णिज्जरं च[1] 'सो भासिउमरिहति'[2] किरियवादं ॥
२२. सद्देसु रूवेसु असज्जमाणे[3] 'रसेसु गंधेसु'[4] अदुस्समाणे।
णो जीवियं णो मरणाभिकंखे[5] आयाणगुत्ते 'वलया विमुक्के'[6] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

[1] वा (चू)।

[2] आइक्खितु मरिहति सो (चूपा)।

[3] अमुच्छमाणो (चू)।

[4] गंधेसु रसेसु (क, ख); रसेहिं गंधेहि (चू)।

[5] मरणाहिकंखी (क, ख); मरण विपत्थए (चू); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मरणं +अभिकंखे।

[6] माया विमुक्कि (चूपा)।

तेरसमं अज्झयणं

आहत्तहीयं

उक्खेव-पदं

१. आहत्तहीयं[1] तु पवेयइस्सं[2] णाणप्पगारं पुरिसस्स जातं :
सतो य धम्मं असतो य सीलं संति असंति करिस्सामि पाउं ।।

सिस्स-दोस-गुण-पदं

२. अहो य रातो य समुट्ठितेहिं तहागतेहिं पडिलब्भ[3] धम्मं ।
समाहिमाघातमजोसयंता[4] सत्थारमेवं[5] फरुसं वयंति ।।
३. विसोहियं ते[6] अणुकाहयंते जे या ऽऽतभावेण[7] वियागरेज्जा[8] ।
अट्ठाणिए 'होइ बहूगुणाणं'[9] जे णाणसंकाए[10] मुसं वदेज्जा[11] ।।
४. जे यावि[12] पुट्ठा पलिउंचयंति आदाणमट्ठं[13] खलु वंचयंति ।
असाहुणो ते इह साहुमाणी मायण्णिएहिंति[14] अणंतघातं ।।

---

१. °धिज्जं (चू) ।
२. पवेइयस्सं (ख) ।
३. °लंभ (चू) ।
४. °मभूसयंता (चू) ।
५. °मेव (चू) ।
६. वा (चू) ।
७. आत° (चू) ।
८. वियागरेंति (चू) ।
९. होति बहूणिवेसे (चूपा, वृपा); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१०. °संकाइ (क) ।
११. वदंति (चू) ।
१२. आवि (चू) ।
१३. आताण° (क) ।
१४. °एसिंति (क, ख); °एसंति (क्व) व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—मायण्णिआ+एहिंति ।

५. जे कोहणे होइ जगट्ठभासी[१] विओसितं 'जे य'[२] उदीरएज्जा ।
अद्धे[३] व से दंडपहं गहाय अविओसिते घासति[४] पावकम्मी ॥
६. 'जे विग्गहिए अ णायभासी'[५] ण से समे होइ अझंझपत्ते ।
ओवायकारी य हिरीमणे[६] य एगंतदिट्ठी[७] य अमाइरूवे[८] ॥
७. से पेसले सुहुमे पुरिसजाते जच्चण्णिते चेव सुउज्जुयारे[९] ।
बहुं पि अणुसासिए जे तहच्ची[१०] समे हु से होइ अझंझपत्ते ॥
८. जे यावि अप्पं वसुमं[११] ति मंता संखाय वायं अपरिच्छ[१२] कुज्जा ।
तवेण वाहं अहिए[१३] ति मंता[१४] अण्णं जणं पस्सति[१५] बिंबभूतं[१६] ॥
९. एगंतकूडेण तु[१७] से पलेइ ण विज्जई मोणपदंसि गोते[१८] ।
जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा वसुमण्णतरेण[१९] अबुज्झमाणे ॥

मद-परिहार-पदं

१०. जे माहणे 'खत्तिए जाइए'[२०] वा तहुग्गपुत्ते[२१] तह लेच्छवी[२२] वा ।
जे पव्वइए[२३] परदत्तभोई 'गोतेण जे थब्भति माणबद्धे'[२४] ॥
११. ण तस्स जाती व कुलं व ताणं णण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं ।
णिक्खम्म से सेवइऽगारिकम्मं[२५] ण से पारए[२६] होति विमोयणाए[२७] ॥

---

१. जगतट्ठ° (चू); जयट्ठ° (क, चूपा; वृपा) ।
२. वा पुणो (चू, वृ) ।
३. अंधे (क, ख, वृ) ।
४. धासति (ख); धृष्यते (वृ) ।
५. जे विग्गहीए अन्नायभासी (क, ख, वृ); जे कोहणे होति उ णायभासी (चूपा); °अन्नाणभासी (ख) । अत्र 'अ नायभासी' इत्यस्य रूपान्तरं 'अन्नायभासी' इति जातम्, संभवतो लिपिदोषेणैव विपर्ययो जातः । व्या० वि०—णातिभासी ।
६. हिरीमते (चू) ।
७. एगंतसड्ढी (वृपा) ।
८. अमायरूवी (चू) ।
९. स उज्जुकारी (चू); सुउज्जुचारे (वृपा) ।
१०. तहच्चा (क, ख, वृ) ।
११. वुसिमं (चू) ।
१२. अपरिक्ख (चू) ।
१३. सहिते त्ति (क, वृ); सहिउ त्ति (ख) ।
१४. मत्ता (ख); णच्चा (चू) ।
१५. पासइ (ख) ।
१६. चिंधभूतं (चूपा) ।
१७. य (क) ।
१८. गुत्ते (क); गोत्ते (ख) ।
१९. वसु पण्णऽण्णतरेण (चू) ।
२०. जातिए खत्तिए (क); खत्तिय जायए (ख)
२१. तह उग्गपुत्ते (क, ख) ।
२२. लेच्छए (क); लेच्छई (ख, वृ) ।
२३. पव्वईए (चू) ।
२४. गोत्तेण० (क, ख); गोत्ते ण जे थंभभिमाणबद्धे (वृ) ।
२५. °ऽगारिअंगं (वृ); °ऽगारिकम्मं (वृपा) ।
२६. पारगो (वृ); पारके (चू) ।
२७. विमोक्ख° (चू) ।

१२. णिक्किंचणे[1] 'भिक्खु[2] सुलूहजीवी'[3] जे गारवं[4] होइ सिलोगगामी[5] ।
आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो पुणो-पुणो विप्परियासुवेति ॥

१३. जे भासवं भिक्खु[6] सुसाहुवादी पडिहाणवं[7] होइ विसारए य ।
आगाढपण्णे 'सुय-भावियप्पा'[8] अण्णं जणं पण्णसा[9] परिहवेज्जा ॥

१४. एवं ण से होति समाहिपत्ते जे पण्णसा[10] भिक्खु[11] विउक्कसेज्जा[12] ।
अहवा वि जे लाभमदावलित्ते[13] अण्णं जणं खिंसति बालपण्णे ॥

१५. पण्णामदं चेव तवोमदं च णिण्णामए[14] गोयमदं च भिक्खू ।
आजीवगं चेव चउत्थमाहु से पंडिए उत्तमपोग्गले से ॥

१६. एयाइं मदाइं विगिंच 'धीरा णेताणि सेवंति'[15] सुधीरधम्मा ।
ते सव्वगोतावगता[16] महेसी उच्चं अगोतं[17] च गतिं वयंति[18] ॥

अणाणुगिद्ध-पदं

१७. भिक्खू मुतच्चे[19] तह[20] दिट्ठधम्मे 'गामं व णगरं व'[21] अणुप्पविस्सा ।
से एसणं जाणमणेसणं च 'जो अण्णपाणे य'[22] अणाणुगिद्धे ॥

धम्म-वागरण-विवेग-पदं

१८. अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू बहुजणे वा तह एगचारी ।
एगंतमोणेण वियागरेज्जा एगस्स जंतो गतिरागती य ॥

---

[1] निगिणेविया (चू) ।
[2] व्या० वि०—भिक्खू ।
[3] भिक्खू सलूह° (क) ।
[4] व्या० वि०—अत्र वर्णलोपः—गारववं ।
[5] चूर्णौ नासौ शब्दो व्याख्यातोस्ति ।
[6] व्या० वि०—भिक्खू ।
[7] पणिधाणवं (चू); पडिभाणवं (चूपा) ।
[8] सुवि० (ख, वृ) ।
[9] पण्णया (क्व) ।
[10] पण्णवं (ख) ।
[11] व्या० वि०—भिक्खू ।
[12] °सेति (चू) ।
[13] लाभमदेण मत्ते (चू); जातिमदेण मत्तो (चूपा) ।
[14] तन्नामए (क) ।
[15] धीरे ण ताणि सेवेज्ज (क, चू) ।
[16] °गोत्तावगया (क) ।
[17] अगोत्तं (क) ।
[18] उवेंति (ख) ।
[19] सुयच्चा (क); मुयच्चा (ख) ।
[20] कइ (चू) ।
[21] गामं च णगरं च (क, ख); गामे व णगरे व (चू) ।
[22] अण्णस्स पाणस्स (क, ख, वृ) ।

१९. सयं समेच्चा अदुवा वि सोच्चा भासेज्ज धम्मं हितयं पयाणं !
जे गरहिता सणिदाणप्पओगा णताणि[१] सेवंति सुधीरधम्मा ॥

२०. केसिंचि तक्काए[२] अबुज्झ भावं खुद्दं[३] पि गच्छेज्ज असद्दहाणे[४] ।
आउस्स कालातियारं वघातं[५] लद्धाणुमाणे य[६] परेसु अट्ठे ॥

२१. कम्मं च छंदं च विगिंच[७] धीरे विणएज्ज तु[८] सव्वतो[९] आतभावं[१०] ।
रूवेहिं लुप्पंति भयावहेहिं[११] विज्जं गहाय[१२] तसथावरेहिं ॥

२२. ण पूयणं चेव सिलोय[१३] कामे[१४] पियमप्पियं कस्सइ[१५] णो करेज्जा[१६] ।
सव्वे अणट्ठे परिवज्जयंते अणाइले[१७] या अकसाइ[१८,१९] भिक्खू ॥

निक्खेव-पदं

२३. 'आहत्तहीयं समुपेहमाणे'[२०] सव्वेहिं पाणेहिं णिहाय[२१] दंडं ।
णो जीवियं णो मरणाहिकंखे[२२] 'परिव्वएज्जा वलया विमुक्के'[२३] ॥

—त्ति बेमि ॥

---

[१] णेताणि (क, ख) ।

[२] तक्काइ (क) ।

[३] खुड्डं (क) ।

[४] अबुज्झमाणे (चू) ।

[५] वघाते (क) ।

[६] तु (चू) ।

[७] विविंच (क) ।

[८] ओ (क, ख) ।

[९] सुव्वते (क) ।

[१०] पाव° (वृ); आय° (वृपा) ।

[११] भयारएहिं (क) ।

[१२] गहाया (चू) ।

[१३] व्या० वि०—सिलोयं ।

[१४] गामी (क); कामी (ख) ।

[१५] कस्सति (क, चू) ।

[१६] कहेज्जा (चू) ।

[१७] अणाउले (क, ख, वृ) ।

[१८] व्या० वि०—अकसाई ।

[१९] अकसाय (क, ख) ।

[२०] आहत्तधिज्जं समुपेधमाणे (चू) ।

[२१] विहाय (क); णिखिप्प (चू); 'णिहाय' अस्य संस्कृतरूपं 'निहाय' इति युज्यते । 'निधाय' इत्यस्य 'परित्यज्य' इत्यर्थः कथं स्यात् ?

[२२] °कंखी (क, ख, वृ, चू) ।

[२३] चरेज्ज मेधावी वलय-विप्पमुक्के (वृ); चरेज्ज मेधावी वलया विमुक्के (चू) ।

चउद्दसमं अज्झयणं

गंथो

बंभचेरवासे गंथसिक्खा-पदं

१. गंथं विहाय[1] इह[2] सिक्खमाणो उट्ठाय[3] सुबंभचेरं वसेज्जा।
ओवायकारी विणयं सुसिक्खे जे छेए[4] से विप्पमादं ण कुज्जा ।।
२. जहा दिया-पोतमपत्तजात्तं सावासगा[5] पवितुं मण्णमाणं।
तमचाइयं तरुणमपत्तजायं[6] ढंकादि अव्वत्तगमं हरेज्जा ।।
३. एवं तु 'सिक्खे वि अपुट्ठधम्मे णिस्सारं वुसिमं मण्णमाणो'[7]।
दियस्स छावं व अपत्तजातं हरिंसु णं पावधम्मा अणेगे ।।
४. ओसाणमिच्छे मणुए समाहिं अणोसिते णंतकरे[8] त्ति णच्चा।
ओभासमाणे दवियस्स वित्तं ण णिक्कसे बहिया आसुपण्णो ।।
५. जे[9] ठाणओ[10] या[11] सयणासणे या[12] परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते।
समितीसु गुत्तीसु य आयपण्णे[13] वियागरेंते[14] य पुढो वएज्जा ।।

---

१. विधाय (चू)।
२. इति (चूपा)।
३. उत्थाय (चू)।
४. छेगे (चू)।
५. सवा० (चू)।
६. ०मपक्खगं वा (चू)।
७. सेहं पि अपुट्ठधम्मं, णिस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा। (क, ख, वृ); ०णिस्सारं० (वृपा)।
८. व्या० वि०—ण+अंतकरे।
९. चूर्णौ 'सद्दाणि सोच्चा' अयं पंचमः श्लोकः, 'जे ठाणओ या' असौ षष्ठः श्लोको वर्तते।
१०. ठाणए (चू)।
११. य (ख); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१२. य (ख)।
१३. आसुपण्णे (क)।
१४. ०रेति (चू)।

६. सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि अणासवे[1] तेसु परिव्वएज्जा।
णिद्दं च भिक्खू ण 'पमाय[2] कुज्जा'[3] कहं कहं वी[4] वितिगिच्छ[5] तिण्णे॥

बंभचेरवासे अणुसिट्ठि-सहण-पदं

७. डहरेण वुड्ढेण ऽणुसासिते तु[6] रातिणिएणाऽवि[7] समव्वएणं।
सम्मं तयं[8] थिरतो णाभिगच्छ णिज्जंतए वावि अपारए से॥
८. विउट्ठितेणं समयाणुसिट्ठे[9] डहरेण वुड्ढेण 'ऽणुसासिते तु'[10]।
अब्भुट्ठिताए[11] घडदासिए[12] वा अगारिणं[13] वा समयाणुसिट्ठे॥
९. ण तेसु कुज्झे[14] ण य पव्वहेज्जा ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा।
तहा करिस्सं ति पडिस्सुणेज्जा[15] सेयं खु मेयं ण पमाद[16] कुज्जा॥
१०. वणंसि मूढस्स जहा अमूढा[17] मग्गाणुसासंति[18] हितं पयाणं।
'तेणा वि'[19] मज्झं इणमेव सेयं जं मे बुधा सम्मऽणुसासयंति[20]॥
११. 'अह तेण'[21] मूढेण अमूढगस्स कायव्व[22] पूया सविसेसजुत्ता।
एतोवमं[23] तत्थ उदाहु वीरे[24] अणुगम्म 'अत्थं उवणेइ'[25] सम्मं॥

बंभचेरवास-फल-पदं

१२. णेता जहा अंधकारंसि राओ मग्गं ण जाणाति अपस्समाणे[26]।
से सुरियस्सा[27] अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाति पगासितंसि॥

---

१. अणासए (चू)।
२. व्या० वि०—पमायं।
३. पमायएज्जा (चू)।
४. वा (चू); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
५. वितिगिछं (क, ख); व्या० वि०—वितिगिच्छ।
६. ऊ (क)।
७. ०ण वा (वृ)।
८. तगं (चू)।
९. ०सट्ठे (वृ)।
१०. व चोइते उ (क); उ चोइते य (ख)।
११. अच्चुट्ठिताए (वृ)।
१२. व्या० वि० छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१३. ०रिणा (क)।
१४. कुप्पे (चू)।
१५. ०णेत्ता (चू)।
१६. व्या० वि०—पमादं।
१७. अमूढे (चू)।
१८. व्या० वि० —द्विपदयोः सन्धिः—मग्ग+अणुसासंति।
१९. तेणेव (क, चू)।
२०. समणु० (क); व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—सम्मं ; अणुसासयंति।
२१. तेणावि (चू)।
२२. व्या० वि० -कायव्वा।
२३. एवोवमं (क)।
२४. धीरे (चू)।
२५. अट्ठं उवणेंति (चू)।
२६. अपासमाणे (चू)।
२७. सूरियस्स (ख, चू); व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।

१३. एवं तु सेहे वि अपुट्ठधम्मे धम्मं ण जाणाति अबुज्झमाणे ।
से कोविए[1] जिणवयणेण पच्छा सूरोदए पासइ चक्खुणेव ।।
१४. उड्ढं अहे यं[2] तिरियं[3] दिसासु 'तसा य जे थावर[4] जे य'[5] पाणा ।
'सया जए तेसु परिव्वएज्जा'[6] मणप्पओसं अविकंपमाणे ।।
१५. कालेण पुच्छे समियं[7] पयासु आइक्खमाणो दवियस्स वित्तं ।
तं सोयकारी य[8] पुढो पवेसे संखाइमं[9] केवलियं समाहिं ।।
१६. अस्सि सुठिच्चा तिविहेण तायी एएसु या संति[10] णिरोधमाहु[11] ।
ते एवमक्खंति तिलोगदंसी ण भुज्जमेतं[12] ति पमायसंगं ।।
१७. णिसम्म से भिक्खु[13] समीहमट्ठं[14] पडिभाणवं होति 'विसारदे य'[15] ।
आदाणमट्ठी[16] वोदाण-मोणं उवेच्च 'सुद्धेण उवेइ मोक्खं'[17] ।।

बंभचेरवासे लद्धगंथस्स कायव्व-पदं

१८. संखाए[18] धम्मं च वियागरंति बुद्धा हु ते अंतकरा भवंति ।
ते पारगा दोण्ह विमोयणाए संसोधियं[19] पण्हमुदाहरंति ।।
१९. 'णो छादए णो वि य लूसएज्जा'[20] 'माणं ण सेवेज्ज 'पगासणं च'[21] ।
ण यावि पण्णे परिहास[22] कुज्जा 'ण याऽऽसिसावाद'[23] वियागरेज्जा[24] ।।
२०. भूयाभिसंकाए[25] दुगुंछमाणे ण णिव्वहे मंतपएण गोयं[26] ।
ण किंचिमिच्छे[27] मणुए पयासुं असाहुधम्माणि ण संवएज्जा[28] ।।

---

[1] कोवितो (चू) ।
[2] हस्तलिखितवृत्तौ—य ।
[3] तिरिया (चू) ।
[4] व्या० वि०—थावरा ।
[5] जे थावरा जे य तसा य (चू) ।
[6] सदा जतो तंसि परक्कमंतो (चू) ।
[7] समितं (क) ।
[8] × (क) ।
[9] सखाणिमं (चू) ।
[10] व्या० वि०—संती ।
[11] निरोह° (क, ख) ।
[12] भूय एतं (चू) ।
[13] व्या० वि०—भिक्खू ।
[14] समीहियट्ठं (ख,वृ); व्या० वि०—समीक्ष्य—मकारः अलाक्षणिकः ।
[15] विसारतेता (क) ।
[16] आयाणअट्ठी (ख); व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः ।
[17] सुद्धे ण उवेति मारं (चू, वृपा) ।
[18] संखाय (क, चूपा) ।
[19] संसोहिया (चू, वृपा) ।
[20] णो छादएज्जा ण य लूसिता वा (चू) ।
[21] पगासए वा (चू) ।
[22] व्या० वि०—परिहासं ।
[23] ण यासियावाय (ख); व्या० वि०—आसिसावादं ।
[24] वियाकरेज्जा (चू) ।
[25] °संकाइ (क, ख) ।
[26] गुत्तं (क) ।
[27] कित्ति° (चू) ।
[28] संठवेज्जा (चू); संधएज्जा (चूपा) ।

२१. हासं पि णो संधए[१] पावधम्मे[२] ओए तहियं[३] फरुसं वियाणे[४] ।
णो तुच्छए णो य[५] विकत्थएज्जा[६] अणाइले[७] या ‘अकसाइ’[८] भिक्खू[९] ॥
२२. संकेज्ज ‘या ऽसंकितभाव’[१०] भिक्खू विभज्जवायं च वियागरेज्जा[११] ।
भासादुगं धम्मसमुट्ठितेहिं[१२] वियागरेज्जा समयाऽसुपण्णे[१३] ॥
२३. अणुगच्छमाणे वितहं ऽभिजाणे[१४] तहा तहा साहु[१५] अकक्कसेणं ।
ण कत्थई[१६] भास[१७] विहिंसएज्जा णिरुद्धगं वावि ण दीहएज्जा ॥
२४. समालवेज्जा पडिपुण्णभासी णिसामिया[१८] समियाअट्ठदंसी[१९] ।
आणाए सिद्धं[२०] वयणं भिजुंजे[२१] अभिसंधए[२२] पावविवेग[२३] भिक्खू ॥
२५. अहाबुइयाइं सुसिक्खएज्जा ‘जएज्ज या’[२४] णाइवेलं वएज्जा ।
से दिट्ठिमं दिट्ठि[२५] ण लूसएज्जा से जाणइ भासिउं तं समाहिं ॥
२६. अलूसए णो पच्छण्णभासी ‘णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्णं’[२६] ।
सत्थारभत्ती अणुवीचि[२७] वायं सुयं[२८] च ‘सम्मं पडिवादएज्जा’[२९] ॥
२७. से सुद्धसुत्ते उवहाणवं च धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ[३०] ।
आएज्जवक्के कुसले वियत्ते से अरिहइ भासिउं तं समाहिं ॥

—ति बेमि ॥

---

[१] संधइ (ख) ।
[२] ०धम्मं (चू) ।
[३] तहितं (क); तहीयं (चू) ।
[४] ऽभिजाणे (चू) ।
[५] व (क) ।
[६] पकत्थएज्जा (चू); विकथएज्जा (क, ख, चूपा, वृपा); पकंथएज्जा (चूपा) ।
[७] अणाउले (ख) ।
[८] अकसाए (वृ); व्या० वि०—अकसाई ।
[९] अविरुद्धसेवी (चू) ।
[१०] वोसंकितभाव (चू); व्या० वि०—असंकितभावे ।
[११] वितागरिज्जा (क); वियाकरेज्जा (चू) ।
[१२] धम्ममुव० (ख); सम्मसमु० (चू) ।
[१३] समया सुपण्णे (वृ) ।
[१४] तिजाणे (क); विजाणे (ख) ।
[१५] व्या० वि०—साहू ।
[१६] कुव्वइ (क); कत्थई (ख) ।
[१७] व्या० वि०—भासं ।
[१८] णिसामियं (चू) ।
[१९] सम्मिया० (क) ।
[२०] सुद्धं (क, ख) ।
[२१] भिउंजे (क, ख) ।
[२२] कखेज्ज या (चू) ।
[२३] व्या० वि०—पावविवेगं ।
[२४] जएज्जसु (चू) ।
[२५] व्या० वि०—दिट्ठिं ।
[२६] ०करेज्ज ताती (क, ख); णो सुत्तमण्णं च करेज्ज ताई (वृ); णो सुत्तमत्थं० (चू, वृपा) ।
[२७] ०वीति (क) ।
[२८] सोउं (चू) ।
[२९] धम्मं पडिवाययंति (ख) ।
[३०] तत्था (क) ।

पण्णरसमं अज्झयणं

जमईए

अणेलिस-पदं

१. जमतोतं पडुप्पण्णं आगमिस्सं च णायओ[1]।
सव्वं मण्णति 'तं ताई'[2] दंसणावरणंतए ॥
२. अंतए वितिगिच्छाए[3] से जाणइ[4] अणेलिसं।
अणेलिसस्स अक्खाया ण से होइ तहिं तहिं ॥
३. तहिं तहिं सुयक्खायं से य सच्चे सुआहिए[5]।
सदा सच्चेण संपण्णे मेत्तिं भूतेसु[6] कप्पए ॥
४. भूतेसु[7] ण विरुज्झेज्जा एस धम्मे वुसीमओ।
वुसीमं[8] जगं परिण्णाय[9] अस्सिं जीवियभावणा ॥
५. भावणाजोगसुद्धप्पा जले णावा व आहिया।
णावा व तीरसंपण्णा[10] सव्वदुक्खा तिउट्टति ॥
६. तिउट्टती[11] उ मेहावी जाणं लोगंसि[12] पावगं।
तुट्टंति[13] पावकम्माणि णवं कम्ममकुव्वओ ॥

---

[1] नातओ (क); जाणति (चू)।
[2] मेधावी (चू)।
[3] °गिछाए (क)।
[4] संजाणति (चू)।
[5] अणेलिसो (चू)।
[6] भूतेहिं (क)।
[7] भूतेहिं (क)।
[8] बुसिमं (क); साहू (ख)।
[9] परिण्णाए (चू)।
[10] °संपत्ता (क्व)।
[11] अतिउट्टती (चू)।
[12] लोगस्स (चू)।
[13] खिज्जंति (चू); अतिवट्टंति (चूपा)।

७. अकुव्वओ णवं णत्थि कम्मं णाम विजाणतो[१]।
णच्चाण[२] से महावीरे जे ण जाई[३] ण मिज्जती[४] ॥
८. ण मिज्जती[५] महावीरे जस्स णत्थि पुरेकडं[६]।
'वाऊ व'[७] जालमच्चेइ[८] 'पिया लोगंसि'[९] इत्थिओ ॥
९. इत्थिओ जे ण सेवंति आदिमोक्खा हु ते जणा।
ते जणा बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवितं ॥
१०. 'जीवितं पिट्ठओ'[१०] किच्चा अंतं पावंति कम्मुणं[११]।
कम्मुणा संमुहीभूता[१२] जे मग्गमणुसासति ॥
११. 'अणुसासणं पुढो पाणी वसुमं पूयणा सते।
अणासते जते दंते'[१३] दढे आरतमेहुणे ॥
१२. 'णीवारे व ण लीएज्जा'[१४] छिण्णसोते अणाइले[१५]।
अणाइले सदा दंते संधिं पत्ते अणेलिसं ॥
१३. अणेलिसस्स खेयण्णे[१६] ण विरुज्झेज्ज केणइ[१७]।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव चक्खुमं[१८] ॥
१४. 'से हु चक्खू मणुस्साणं जे कंखाए य अंतए'[१९]।
अंतेण खुरो वहती चक्कं अंतेण लोट्टति[२०] ॥
१५. अंताणि धीरा सेवंति तेण अंतकरा इहं।
इह माणुस्सए ठाणे धम्ममाराहिउं[२१] णरा ॥

---

१. विजाणति (ख, वृ)।
२. विन्नाय (ख, वृ)।
३. व्या० वि०—जायइ=जाई।
४. मिज्जति (क); मज्जती (चू)।
५. मज्जते (चू); भिज्जति (वृपा)।
६. परेरयो (चू)।
७. वाउ व्व (ख)।
८. जालं अंचेति (चू)।
९. पियो लोगस्स (चू)।
१०. अतीतं पिच्छतो (चू)।
११. कम्मुणा (क, ख, वृपा)।
१२. संमुहब्भूतो (चू)।
१३. अणुसासति पुढो पाणे, वुसिमं पूयणाऽऽसंसति।
अणासए सदां दंते (चू); °अणासवे सदा दंते (चूपा)।
१४. णीवारे य° (क); णीयारे व ण लिज्जेजा (चूपा)।
१५. अणाविले (ख); अणाउले (चूपा, वृपा)।
१६. खेतण्णे (चू)।
१७. केणयि (चू)।
१८. अंतए (चू)।
१९. °जं कंखाउ अंतए (क); से चक्खु लोगस्सिध, जं कंखाय करेति अंतगं (चू)।
२०. लोट्ठति (क्व)।
२१. °माराहगा (चू)।

१६. णिट्ठितट्ठा व देवा व उत्तरीए त्ति ‘मे सुतं’[1] ।
सुतं च मेतमेगेसिं अमणुस्सेसु णो तहा ।।
१७. अंतं करेंति दुक्खाणं इहमेगेसि आहितं ।
आघातं पुण एगेसिं दुल्लभेऽयं समुस्सए ।।
१८. इतो विद्धंसमाणस्स पुणो ‘संबोहि[2] दुल्लभा’[3] ।
‘दुल्लभाओ तहच्चाओ जे धम्मट्ठं वियागरे’[4] ।।
१९. जे धम्मं सुद्धमक्खंति पडिपुण्णमणेलिसं ।
अणेलिसस्स जं ठाणं तस्स जम्मकहा कुतो[5] ? ।।
२०. कुतो कयाइ[6] मेहावी उप्पज्जंति तथागता[7] ? ।
तथागता[8] अपडिण्णा चक्खू लोगस्सणुत्तरा[9] ।।
२१. अणुत्तरे य ठाणे से कासवेण पवेदिते ।
जं किच्चा णिव्वुडा[10] एगे णिट्ठं पावेंति पंडिया ।।
२२. पंडिए वीरियं लद्धं णिग्घायाय पवत्तगं[11] ।
धुणे पुव्वकडं[12] कम्मं णवं चावि ण कुव्वइ ।।
२३. ण कुव्वइ महावीरे अणुपुव्वकडं रयं ।
रयसा संमुहीभूते[13] कम्मं हेच्चाण जं मतं ।।
२४. जं मतं सव्वसाहूणं तं ‘मतं सल्लगत्तणं’[14] ।
साहइत्ताण तं तिण्णा देवा वा अभविंसु ते ।।
२५. अभविंसु पुरा वीरा[15] आगमिस्सा वि सुव्वया ।
दुण्णिबोहस्स मग्गस्स अंतं पाउकरा तिण्ण[16] ।।

—त्ति बेमि ।।

---

[1] इमं सुतं (क, ख) ।
[2] व्या० वि०—संवोही ।
[3] बोही सुदुल्लहा (वृ) ।
[4] दुल्लभा य तधच्चा जे, धम्मट्ठी विदितपराऽपरा (चू) ।
[5] कओ (ख) ।
[6] कताइं (क); कदायि (चू) ।
[7] तहागया (क, ख) ।
[8] तथागता य (चू) ।
[9] °त्तरं (क); अत्तस्स° (चू) ।
[10] णिव्वुता (चू) ।
[11] पव्वत्तए (चू) ।
[12] °कतं (चू) ।
[13] °भूता (ख, चू) ।
[14] मदं सल्लकत्तणं (क); सम्मुहुब्भुता (चूपा) ।
[15] धीरा (क, ख) ।
[16] तिण्णे (ख) ।

सोलसमं अज्झयणं

गाहा

उक्खेव-पदं

१. अहाह भगवं—एवं से दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे[1]—माहणे त्ति[2] वा, समणे त्ति वा, भिक्खू त्ति वा, णिग्गंथे त्ति वा ।।

२. पडिआह[3]—भंते ! कहं[4] दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे—माहणे त्ति वा ? समणे त्ति वा ? भिक्खू त्ति वा ? णिग्गंथे त्ति वा ? तं 'णो बूहि'[5] महामुणी !

माहण-पदं

३. इतिविरतसव्वपावकम्मे[6] पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुण्ण-परपरिवाद-अरतिरति-मायामोस-'मिच्छादंसणसल्ले विरते'[7] समिए सहिए सया जए, णो कुज्झे णो माणी "माहणे" त्ति वच्चे ।।

समण-पदं

४. एत्थ वि समणे अणिस्सिए अणिदाणे आदाणं च अतिवायं च 'मुसावायं च'[8] बहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पेज्जं च दोसं च—इच्चेव 'जतो-जतो'[9] आदाणाओ[10] अप्पणो पद्दोसहेऊ[11] 'ततो-ततो'[12] आदाणाओ पुव्वं पडिविरते सिआ[13] दंते दविए वोसट्ठकाए "समणे" त्ति वच्चे ।।

---

[1] वुच्चे (क, ख) ।
[2] इ (क) सर्वत्र ।
[3] °आहु (चू) ।
[4] कहं नु (ख) ।
[5] णे० (क, ख); °ब्रूहि (चू) ।
[6] विरए सव्वपावकम्मेहिं (ख) ।
[7] °सल्लविरते (ख, वृ) ।
[8] × (चू) ।
[9] जातो जातो (चू) ।
[10] आदाणतो (क) ।
[11] °हेतुं (क) ।
[12] तातो तातो (चू) ।
[13] पाणाइवायाओ (क, ख); भवति (चू) ।

भिक्खु-पदं

५. एत्थ वि भिक्खू ‘अणुण्णते णावणते’[1] दंते दविए[2] वोसट्ठकाए संविधुणीय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा संखाए परदत्तभोई “भिक्खू” त्ति वच्चे ।।

णिग्गंथ-पदं

६. एत्थ वि णिग्गंथे एगे एगविदू[3] बुद्धे संछिण्णसोए[4] सुसंजए सुसमिए सुसामाइए आतप्पवादपत्ते[5] विऊ दुहओ वि सोयपलिछिण्णे[6] णो पूयासक्कारलाभट्ठी[7] धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे समियं[8] चरे दंते दविए वोसट्ठकाए “णिग्गंथे” त्ति वच्चे[9] । ‘से एवमेव जाणह जमहं भयंतारो’[10] ।

- त्ति बेमि ।।

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर २४३१७

अनुष्टुप् श्लोक ७५९ अक्षर २९

---

[1] अणुण्णते विणीए नामए (क, ख); अणुण्णत्ते नामए (वृ); अणुण्णए नावणए महेसी (उत्तरज्झयणं २१।२०); अणुन्नए नावणए (दसवेआलियं ५।१।१३) ।

[2] शुद्धात्मा शुद्धद्रव्यभूतः (वृ) ।

[3] एगंतिए विदू (चूपा); एगंतविदू (वृपा) ।

[4] छिन्नसोते (चू) ।

[5] आयवायपत्ते (वृ) ।

[6] सोतपलिच्छिण्णे (चू) ।

[7] पूयणट्ठी (चू) ।

[8] समयं (वृ) ।

[9] विज्जं (चू) ।

[10] सेवमायाणधभयंतारो (चू) ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

पोंडरीए

पउमवरपोंडरीय-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं[1] भगवया एवमक्खायं—इह[2] खलु पोंडरीए णामज्झयणे । तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते—से जहाणामए पोक्खरणी[3] सिया बहुउदगा[4] बहुसेया बहुपुक्खला[5] लद्धट्ठा पोंडरीकिणी[6] पासादिया[7] दरिसणीया[8] अभिरूवा पडिरूवा ।।

२. तीसे णं पोक्खरणीए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया[9] ऊसिया[10] रुइला वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता 'पासादिया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा'[11] ।।

३. तीसे णं पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए[12] बुइए—अणुपुव्वट्ठिए ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए[13] °दरिसणीए अभिरूवे° पडिरूवे ।।

४. सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणोए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया ऊसिया रुइला[14] °वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता पासादिया दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

---

१. तेण (चू) ।
२. इहं (चू) ।
३. पुक्खरिणी (क, ख) ।
४. बहूदगा (चू) ।
५. × (चू) ।
६. पोंडरिगिणी (क, ख); पोंडरीगिणी (चू) ।
७. पासादीया (ख, वृपा) ।
८. दरिसणिज्जा (चू) ।
९. °पुव्वु° (क) ।
१०. उस्सिता (चू) ।
११. जाव पडिरूवा (क) ।
१२. पउमे (चू) ।
१३. सं० पा०—पासादिए जाव पडिरूवे ।
१४. सं० पा०—रुइला जाव पडिरूवा ।

५. सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए—अणुपुव्वट्ठिए[1] •ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए दरिसणीए अभिरूवे° पडिरूवे ।।

पढम-पुरिसजात-पदं

६. अह पुरिसे पुरत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं[2], तीसे पुक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं ऊसियं[3] •रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहमंसि[4] पुरिसे 'देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू'[5]। अहमेतं पउमवरपोंडरीयं 'उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा'[6] से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरणिं। जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे—पढमे पुरिसजाते'[7] ।।

दोच्च-पुरिसजात-पदं

७. अहावरे दोच्चे पुरिसजाते[8]—अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं, तीसे पुक्खरणीएं तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[9] •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

---

[1] सं० पा०—अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे ।

[2] पुक्खरिणिं (क, ख); चूर्णिसम्मते पाठे सर्वत्रापि 'पोक्खरणी' अथवा 'पुक्खरणी' एवं रकारयुक्तः पाठो विद्यते । आदर्शयोः सर्वत्र 'पुक्खरिणी' एवं रिकारयुक्तः पाठो विद्यते । यद्यपि संस्कृतदृष्ट्यासौ पाठः समीचीनः प्रतिभाति किन्तु प्राकृतदृष्ट्या रकारयुक्तः पाठः प्राचीनोस्ति ।

[3] सं० पा०—ऊसियं जाव पडिरूवं ।

[4] °मंसी (चू) ।

[5] खेयन्ने कुसले पंडिते वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरक्कमण्णू (क, ख); कुसले पंडिते धम्मण्णू देसकालण्णू खेतण्णे वियत्ते मेधावी अबाले मग्गत्थे मग्गण्णे मग्गस्स गइपरकमण्णू (वृ) ।

[6] उण्णिक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (क, ख); उक्खेस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (वृ); उण्णेक्केस्समिति° (चू) । अत्र 'इति कट्टु' इति पदमतिरिक्तं संभाव्यते । चूर्णिकृता नैतद् व्याख्यातम् । वृत्तिकारस्य सम्मुखे उक्तपदयुक्त आदर्शः आसीत् तेन वृत्तिकृता तद् व्याख्यातम्, किन्तु व्याख्यायां काचिज्जटिलतैव प्रतीयते ।

[7] सङ्गे, अउत्तरा विसण्णे—पढमे पुरिसे (चू) सर्वत्र । °तीसे सेयंसि णि [वि ?] सण्णे (वृ) ।

[8] °ज्जाए (चू) ।

[9] सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।

तं च एत्थ[1] एगं पुरिसजायं पासइ पहीणतीरं, अपत्तपउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णं'[2] ।

तए णं से पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसे 'अदेसकालण्णे अखेत्तण्णे अकुसले अपंडिए अविअत्ते अमेधावी बाले णो मग्गण्णे णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णे णो परक्कमण्णू'[3], जण्णं एस पुरिसे[4] "अहं देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले[5] °पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेयं° पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एस पुरिसे मण्णे ।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेत पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, 'अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे'[7]—दोच्चे पुरिसजाते ।

तच्च-पुरिसजात-पदं

८. अहावरे तच्चे पुरिसजाते—अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[8] °ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

ते तत्थ दोण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए[9], °अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे[10] ।

---

[1] एत्थं (क); तत्थ (ख) ।

[2] °निसण्णं(ख);सऽग्गे, अउत्तरा विसण्णं (चू) ।

[3] अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (क, ख); अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गण्णू णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (वृ) । वृत्तौ प्रथमपुरुषजातसूत्रे 'कुसले पंडिए खेयन्ने' असौ क्रमो विद्यते । प्रस्तुत सूत्रे च 'अखेयन्ने अकुसले अपंडिए' असौ क्रमः पूर्वसूत्रात् भिन्नोस्ति ।

[4] अत्र ८,९,१० सूत्रानुसारेण 'एवं मण्णे' इति पाठो युज्यते ।

[5] सं० पा०—कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं ।

[6] वुच्चा (ख) ।

[7] अंतरा सेयंसि निसण्णे (क, ख) ।

[8] सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।

[9] सं० पा०—णो पाराए जाव सेयंसि ।

[10] निसण्णे (क, ख) ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो परक्कमण्ण, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे —"अम्हे तं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे ।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिए विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए[1] °पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे—तच्चे पुरिसजाते ।।

चउत्थ-पुरिसजात-पदं

६. अहावरे चउत्थे पुरिसजाते—अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति 'तं महं'[2] एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[3] °ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं ।

ते तत्थ तिण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते[4] °पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहो ! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[5] °अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे—"अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे ।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे[6] °कुसले पंडिए विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए[7] °पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि° विसण्णे— चउत्थे पुरिसजाते ।।

---

[1] सं० पा०—सेए जाव सेयंसि ।

[2] × (क, ख) ।

[3] सं० पा०—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।

[4] सं० पा०—अपत्ते जाव सेयंसि ।

[5] सं० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू ।

[6] सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू ।

[7] सं० पा०—सेए जाव विसण्णे ।

भिक्खु-पदं

१०. अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[1] °कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू अण्णतरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं[2] °अणुपुव्वट्ठियं ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं° पडिरूवं।

ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते[3] °पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए°, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे।

तए णं से भिक्खू एवं वयासी—अहो! णं इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[4] °अकुसला अपंडिया अविअत्ता अमेधावी बाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्णं एते पुरिसा एवं मण्णे—"अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मण्णे।

अहमंसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[5] °कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से भिक्खू णो अभिक्कमे तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरं ठिच्चा सद्दं कुज्जा—'उप्पयाहि खलु भो! पउमवरपोंडरीया! उप्पयाहि'[7]। अह से उप्पतिते पउमवरपोंडरीए॥

पुव्वुत्त-णातस्स-अट्ठ-पदं

११. किट्टिए णाए समणाउसो! अट्ठे पुण से जाणितव्वे[8] भवति।

भंतेति! 'णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य समणं भगवं महावीरं'[9] वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—किट्टिए णाए भगवया[10] अट्ठं पुण से ण जाणामो[11]।

---

[1] सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।

[2] सं० पा०—पउमवरपोंडरीयं जाव पडिरूवं।

[3] सं० पा०—अपत्ते जाव अंतरा।

[4] सं० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू।

[5] सं० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।

[6] कट्टु इति वच्चा (क); कट्टु इति वुच्चा (ख)।

[7] उप्पदाहि खलु भो पउमवर! उप्पदाहि खलु भो पउमवर! (चू); ऊर्ध्वमुत्पततोत्पतत (वृ)।

[8] आजाणि° (चू)।

[9] समणं भगवं महावीरं निग्गंथा य निग्गंथीओ य (क, ख)।

[10] समणाउसो (क, ख); प्रयुक्ताप्रयुक्तप्रतिषु 'समणाउसो' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थविचारणयासौ न सम्यक् प्रतिभाति। चूर्णौ—'से किट्टिते भगवता', वृत्तौ च—'ज्ञातं भगवता' इति लभ्यते तेनात्र मूले 'भगवया' इति पाठः स्वीकृतः।

[11] आयाणामो (चू)।

समणाउसोति ! समणे भगवं महावीरे ते[1] बहवे णिग्गंथे[2] य णिग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासो—हंता समणाउसो ! आइक्खामि विभयामि[3] किट्टेमि पवेदेमि सअट्ठं सहेउं सणिमित्तं[4] भुज्जो भुज्जो उवदंसेमि ॥

१२. से बेमि—लोयं च खलु मए अप्पाहट्टु[5] समणाउसो ! सा[6] पोक्खरणी बुइया ।
कम्म च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उदए बुइए ।
कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सेए बुइए ।
जणजाणवए[7] च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया ।
रायाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए ।
अण्णउत्थिया य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते चत्तारि पुरिसजाया बुइया।
धम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से भिक्खू बुइए ।
धम्मतित्थं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से तीरे बुइए ।
धम्मकहं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सद्दे बुइए ।
णिव्वाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उप्पाए बुइए ।
एवमेयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एवमेयं बुइयं ।

तज्जीव-तस्सरीर-वादि-पदं

१३. इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया[8] मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं[9] उववण्णा[10], तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया[11] वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[12] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत[13]-मलय-मंदर-महिंदसारे[14] जाव[15] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥

---

[1] ते य (ख) ।

[2] निग्गंथा (क) ।

[3] विभावेमि (क, ख, वृ) । अत्र वृत्तिकृता 'विभावयामि' इति व्याख्यातम्, प्रत्योरपि 'विभावेमि' पाठ उपलभ्यते, किन्तु ६७ सूत्रस्य सदर्भे 'विभयामि' इति चूर्णिगतपाठः समीचीनोस्ति ।

[4] सकारणं (चू) ।

[5] आहट्टु (वृ); अप्पाहट्टु (वृपा) ।

[6] × (क, ख) ।

[7] °वयं (क) ।

[8] संति एगतिया (क) ।

[9] लोगत्तं (क, ख) ।

[10] उवउत्ता (क) ।

[11] उच्चागोत्ता (ख) ।

[12] हुस्समंता (क); रहस्समंता (क्व) ।

[13] महयाहिमवंत-महंत (ओ० सू० १४) ।

[14] 'क' प्रतौ वृत्तौ च संक्षिप्तपाठो वर्तते । चूर्णौ राजवर्णको व्याख्यातोस्ति । 'ख' प्रतौ संक्षिप्तपाठस्य पूर्तीकृतपाठस्य च मिश्रणं जातम् । पूर्वं राजवर्णकस्यौपपातिकानुसारी पाठो लिखितोस्ति ततश्च 'रायवण्णओ जहा उववाइए जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति' ।

[15] ओ० सू० १४ ।

१४. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, ‘नागा नागपुत्ता’[1], कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता[2] ।।

१५. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । ‘तत्थ अण्णतरेणं’[3] धम्मेणं पण्णत्तारो, ‘वयं इमेणं’[4] धम्मेणं पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे[5] एस धम्मे सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवइ, तं जहा—उड्ढं पायतला, अहे केसग्गमत्थया, तिरियं तयपरियंते जीवे । एस ‘आया पज्जवे’[6] कसिणे । एस जीवे जीवति, एस मए णो जीवति । सरीरे धरमाणे धरति, विणट्ठम्मि य णो धरति । एययंतं[7] जीवियं भवति । आदहणाए परेहिं णिज्जइ । अगणिझामिए सरीरे कवोतवण्णाणि अट्ठीणि भवंति । आसंदीपंचमा पुरिसा गामं पच्चागच्छंति । एवं असंते असंविज्जमाणे ।

१६. ‘जेसिं तं’[8] सुयक्खायं भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा[9], ते ‘णो एवं’[10] विप्पडिवेदेंति - अयमाउसो ! आया दीहे ति वा हस्से[11] ति वा । परिमंडले ति वा वट्टे ति वा तंसे ति वा चउरंसे ति वा आयते ति वा ‘छलंसे ति वा’[12] । किण्हे ति वा णीले ति वा लोहिए ति वा हालिद्दे ति वा सुक्किल्ले ति वा । सुब्भिगंधे ति वा दुब्भिगंधे ति वा । तित्ते ति वा कडुए ति वा कसाए ति वा अंबिले ति वा महुरे ति वा । कक्खडे ति वा मउए ति वा गरुए[13] ति वा लहुए ति वा सोए ति वा उसिणे ति वा णिद्धे ति वा लुक्खे ति वा । एवं असंते असंविज्जमाणे ।।

---

[1] नाया नायपुत्ता (ख) ।

[2] चूर्णौ केचिदन्येपि शब्दा व्याख्याताः । द्रष्टव्यमोवाइयं सू० २३ ।

[3] तत्थन्न° (क, ख) ।

[4] वयमेतेणं (क) ।

[5] मए (ख, वृ) ।

[6] आयपज्जवे (क, ख) ।

[7] एततं (क); एयंतं (क्व) ।

[8] जेसि तं असंते असविज्जमाणे तेसिं तं (क, ख); पुरोवर्तिसूत्रत्रयस्य (१६-१८) संदर्भेसौ पाठोशुद्धः प्रतिभाति, लिपिदोषेण पाठपरिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । वृत्तौ पाठस्य स्पष्टता नोपलभ्यते किन्तु व्याख्यानुसारेण निम्नपाठः कल्पितुं शक्यते—जेसिं तं असंतो असंविज्जमाणे तेसिं तं सुयक्खाय भवति, जेसिं पुण अण्णो° । चूर्णिगतपाठो मूले स्वीकृतः ।

[9] व्या० वि०—जेसिं त सुयक्खायं भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्णं सरीरं, ते णो एव विप्पडिवेदेंति, तम्हा (तस्मादप्येवाऽसुअक्खातं—चू) इत्यन्वयः ।

[10] एवं नो (ख) ।

[11] ह्रस्से (क) ।

[12] छलंसिए ति वा अट्ठंसे ति वा (ख) ।

[13] गुरुए (ख) ।

१७. जेसिं तं सुयक्खायं भवइ—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा ते णो एवं उवलभंति—

से जहाणामए केइ[१] पुरिसे कोसीओ[२] असिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! असी, अयं कोसी । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो[३]—अयमाउसो ! आया, 'अयं सरीरे'[४] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मुंजाओ इसियं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! मुंजे '[इमा ?] इसिया'[५] । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, 'अयं सरीरे'[६] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मंसाओ अट्ठिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! मंसे, अयं अट्ठी । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे करतलाओ आमलकं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! करतले, अयं आमलए । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे दहीओ णवणीयं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! णवणीयं, अयं दही । एवमेव णत्थि केइ[७] °पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे तिलेहिंतो तेल्लं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! तेल्लं, अयं पिण्णाए । एवमेव[८] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे इक्खूओ[९] खोयरसं[१०] अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! खोयरसे, अयं छोए । एवमेव[११] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अयं° सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे अरणीओ अग्गिं अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदंसेज्जा—अयमाउसो ! अरणी, अयं अग्गी । एवमेव[१२] °णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता

---

[१] केवि (क) ।
[२] कोसओ (ख) ।
[३] उवदंसेइ (क, ख) ।
[४] इम सरीरं (ख) ।
[५] अयं असीया (क); इयं इसिया (ख) ।
[६] इदं सरीरं (ख) सर्वत्र ।
[७] स० पा०—केइ जाव सरीरे ।
[८] सं० पा०—एवमेव जाव सरीरे ।
[९] उक्खूतो (क) ।
[१०] खोत्त° (क); खोत° (ख) ।
[११,१२] सं० पा०—एवमेव जाव सरीरे ।

णं उवदंसेत्तारो —अयमाउसो ! आया, अयं० सरीरे। एवं असंते असंविज्जमाणे ।।

१८. जेसिं तं सुयक्खायं भवइ, तं जहा —अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, तम्हा, तं मिच्छा।।

१९. से हंता[1] हणह खणह छणह डहह पयह आलुंपह विलुंपह सहसक्कारेह विपरामुसह । एतावताव[2] जीवे, णत्थि परलोए ।।

२०. ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुकडे[3] इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा । एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति[4] भोयणाए ।।

२१. एवं एगे पागब्भिया णिक्खम्म मामगं धम्मं पण्णवेंति । तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा[5] साधु सुयक्खाते समणेति[6] ! वा माहणेति[7] वा ।

कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो[8], तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा 'वत्थेण वा'[9] पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा ।

तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु[10] ।।

२२. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ।

ते[11] अप्पणा अप्पडिविरया भवंति । सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति । एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा ।

ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति । पहीणा पुव्वसंजोगा[12] आरियं मग्गं असंपत्ता—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेहिं[13] विसण्णा ।

इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतस्सरीरिए[14] आहिए ।।

---

१. हंता तं (ख) ।
२. एतावता (ख) ।
३. सुक्कडे (क, ख) ।
४. समारभंति (चू) ।
५. रोयमाणा (क) ।
६,७. ०त्ति (ख) ।
८. पूययामि (ख) ।
९. गंधेण वा ४ (चू) । चतुःसंख्याङ्कः संभवतः वस्त्रगंधमाल्यालङ्करान् सूचयति द्रष्टव्यम्—रायपसेणइयं सू० ८०२ ।
१०. णिगायइंसु (क) ।
११. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम् ।
१२. ०संजोगं (क, ख) ।
१३. कामभोगेसु (ख) ।
१४. ०तच्छरीरए (क, ख) ।

पंचमहब्भूतवादि-पदं

२३. अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पंचमहब्भूइए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं[1] °लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[2] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ।।

२४. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ।।

२५. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे एस धम्मे सुयक्खाते° सुपण्णत्ते भवति—इह खलु पंचमहब्भूया जेहिं णो[3] कज्जइ किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा, 'अवि अंतसो'[4] तणमायमवि ।।

२६. तं च पदोद्देसेणं[5] पुढोभूतसमवायं[6] जाणेज्जा, तं जहा—पुढवी एगे महब्भूते, आऊ दुच्चे महब्भूते, तेऊ तच्चे[7] महब्भूते, वाऊ चउत्थे महब्भूते, आगासे पंचमे महब्भूते । इच्चेते पंच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्माविया[8] अकडा णो कित्तिमा[9] 'णो कडगा'[10] अणादिया अणिधणा अवंझा अपुरोहिता सतंता सासया ।।

२७. आयछट्ठा पुण एगे एवमाहु—सतो णत्थि विणासो, असतो णत्थि संभवो । एताव ताव जीवकाए, एताव ताव अत्थिकाए, एताव ताव सव्वलोए, एतं मुहं लोगस्स करणयाए, अवि अंतसो[11] तणमायमवि ।।

२८. से किणं किणावेमाणे, हणं घायमाणे, पयं पयावेमाणे, अवि अंतसो पुरिसमवि विक्किणित्ता घायइत्ता, 'एत्थं पि जाणाहि'[12] णत्थित्थ दोसो ।।

---

१. सं० पा०—अणुपुव्वेणं जाव सुपण्णत्ते ।

२. ओ० सू० १४ ।

३. अस्माकम् (वृ) ।

४. अवि यंतसो (क); इति० (ख) ।

५. पिहुद्देसेणं (क, ख) ।

६. समवायं (चू) ।

७. ततिए (क) ।

८. अणिमेता (क) ।

९. कत्तिमा (चू) ।

१०. × (चू) ।

११. यंतसो (क) ।

१२. इत्थं पि जाणीहि (क); एत्थ वि जाण (चू) ।

२९. ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा[1] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा। 'एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ॥

३०. एवं[2] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति[3] ?]। तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा[4] •तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति वा माहणे ति ! वा। कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ॥

३१. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए।

ते[5] अप्पणा अप्पडिविरिया भवंति। सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।

ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता°— इति ते णो हव्वाए णो पाराए, 'अंतरा कामभोगेसु विसण्णा'[6]।

दोच्चे पुरिसजाते पंचमहब्भूइए त्ति आहिए ॥

ईसरकारणिय-पदं

३२. अहावरे तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा[7] •पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति–महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[8] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥

---

[1] सं० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए।

[2] एवमेव (ख)।

[3] प्रथमपुरुषप्रकरणे २१ सूत्रे वृत्तिकारेण—सांप्रतं तत्प्रज्ञापितशिष्यव्यापारमधिकृत्याह—'तं सद्दहमाणा' इति संबन्धयोजना कृता सा अग्रिमेषु त्रिष्वपि पुरुषेषु तथैव युज्यते। यदि 'त सद्दहमाणा' इत्यादिपाठस्य कर्त्ता 'ते अणारिया विप्पडिवण्णा' स्यात् तदा 'साधुसुयक्खाते' इत्यादिपाठस्य संबन्धो न घटेत।

[4] सं० पा०—पत्तियमाणा जाव इति।

[5] व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।

[6] जाव विसण्णे (क)।

[7] सं० पा०—पाईणं वा जाव सुयक्खाते।

[8] ओ० सू० १४।

३३. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ।।

३४. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो।

से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे एस धम्मे° सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति—इह खलु धम्मा पुरिसादिया[1] पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता[2] पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति—

से जहाणामए गंडे सिया सरीरे जाए सरीरे संवुड्ढे[3] सरीरे अभिसमण्णागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[4] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता° पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ।

से जहाणामए अरई सिया सरीरे जाया सरीरे संवुड्ढा[5] सरीरे अभिसमण्णागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[6] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता° पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति ।

से जहाणामए वम्मिए[7] सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[8] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठंति ।

से जहाणामए रुक्खे सिया पुढविजाए[9] °पुढविसवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए° पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[10] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठंति ।

से जहाणामए पुक्खरिणी सिया[11] °पुढविजाया पुढविसंवुड्ढा पुढविअभिसमण्णागया° पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[12]

---

[1] व्या० वि०—पुरुषः—ईश्वरः ।

[2] 'पुरिससंभूता ··पुरिसअभिसमण्णागता' एते वाक्ये वृत्तौ न व्याख्याते ।

[3] वुड्ढे (क, वृ) ।

[4] सं० पा०—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव ।

[5] अभिसंवुड्ढा (क, ख); वुड्ढा (वृ) ।

[6] सं० पा०—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव ।

[7] विम्मिए (ख) ।

[8] सं० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।

[9] सं० पा०—पुढविजाए जाव पुढविमेव ।

[10] सं० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।

[11] सं० पा०—सिया जाव पुढविमेव ।

[12] सं० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।

°पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठंति ।

से जहाणामए उदगपुक्खले सिया[1] °उदगजाए उदगसंवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए° उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[2] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय° चिट्ठंति ।

[3]°से जहाणामए उदगबुब्बुए सिया उदगजाए उदगसंवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति° ।।

३५. जं पि य इमं समणाणं णिग्गंथाणं उद्दिट्ठं पणीयं[4] विअंजियं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा—आयारो[5] °सूयगडो, ठाणं, समवाओ, वियाहपण्णत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं°, दिट्ठिवाओ—सव्वमेयं मिच्छा, ण एतं तहियं, ण एतं आहातहियं ।

इमं सच्चं इमं तहियं इमं आहातहियं —ते एवं सण्णं कुव्वंति, ते एवं सण्णं संठवेंति, ते एवं सण्णं सोवट्ठवयंति । तमेवं ते तज्जातियं दुक्खं णातिवट्टंति[6], सउणी पंजरं जहा ।।

३६. ते णो विप्पडिवेदेंति तं जहा—किरिया इ वा[7] °अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा । एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ।।

३७. एवं[8] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति ?] । [9]°तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा । कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा । तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ।।

---

[1] सं० पा०—सिया जाव उदगमेव ।

[2] सं० पा०—पुरिसादिया जाव चिट्ठंति ।

[3] सं० पा०—एवं उदगबुब्बुए भणियव्वे ।

[4] पणियं (क, ख) ।

[5] सं०पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।

[6] ण तिउटटंति (वृपा) ।

[7] स० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए ।

[8] एवमेव (क, ख) ।

[9] सं० पा०—एवं सद्दमाणा जाव इति ।

३८. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ।

ते[1] अप्पणा अप्पडिविरया भवंति । सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति । एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा ।

ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति । पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता°—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा ।

तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिए ।।

णियतिवादि-पदं

३९. अहावरे चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा[2] °पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[3] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ।।

४०. तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ।।

४१. तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे एस धम्मे° सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति । इह खलु दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे किरियमाइक्खइ, एगे पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ ।

जे य पुरिसे किरियमाइक्खइ, जे य पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ, दो वि ते पुरिसा तुल्ला एगट्ठा कारणमावण्णा[4] ।।

४२. बाले पुण एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे । अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा 'जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा'[5], अहमेयमकासि । परो

---

१. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम् ।

२. सं० पा०—पाईणं वा जाव सुयक्खाते ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. एककारणापन्नत्वादिति (वृ) ।

५. तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा जूरामि वा (क, वृ); तप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा (चू) ।

वा जं दुक्खइ वा[1] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, परो एयमकासि। एवं से बाले सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ।।

४३. मेहावी पुण एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे। अहमंसि दुक्खामि वा[2] •सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा, णो अहं एयमकासि। परो वा जं दुक्खइ वा[3] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, णो परो एयमकासि। एवं से मेहावी सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ।।

४४. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा जे तसथावरा पाणा ते एवं संघायमागच्छंति, ते एवं विप्परियायमावज्जंति,[4] ते एवं विवेगमागच्छंति, ते एवं विहाणमागच्छंति, ते एवं संगइयंति उवेहाए ।।

४५. ते णो एयं विप्पडिवेदेंति, तं जहा—किरिया इ वा[5] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा। एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए ।।

४६. एवं ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामगं धम्मं पण्णवेंति ?]। तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा। कामं खलु आउसो ! तुमं पूययामो, तं जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइंसु ।।

४७. पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए।

ते[6] अप्पणा अप्पडिविरिया भवंति। सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।

ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा°।

चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिए ।।

---

[1] सं० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।

[2] सं० पा०—दुक्खामि वा जाव परितप्पामि।

[3] सं० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।

[4] विप्परियास° (क, ख)।

[5] सं० पा०—किरिया इ वा जाव णिरए इ वा जाव चउत्थे।

[6] व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।

४८. इच्चेते चत्तारि पुरिसजाया णाणापण्णा णाणाछंदा 'णाणासीला णाणादिट्ठी'[१] णाणारुई णाणारंभा णाणाअज्झवसाणसंजुत्ता 'पहीणा पुव्वसंजोगा'[२] आरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा ।।

भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं

४९. से बेमि--पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा[३] भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे[४], °उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे° दुरूवा वेगे। तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाणि भवंति, तं जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[५] वा। तेसिं च णं जणजाणवयाइं परिग्गहियाइं भवंति, तं जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[६] वा। तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया। सतो वा वि एगे णायओ य[७] उवगरणं च[८] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया। असतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ।।

५०. जे ते सतो वा असतो वा णायओ 'य उवगरणं च'[९] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहिं णातं भवति[१०]—इह खलु पुरिसे "अण्णमण्णं[११] ममट्ठाए" एवं विप्पडिवेदेति[१२], तं जहा—खेत्तं मे वत्थू[१३] मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे 'धणं मे'[१४] धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावतेयं मे सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे। एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसिं।

से मेहावी पुव्वमेव[१५] अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा—इह[१६] खलु मम अण्णतरे दुक्खे

---

[१] णाणादिट्ठी णाणासीला (क)।

[२] पहीणपुव्वसंजोगा (क, ख); प्रहीणः पूर्वसंयोगः यैः (वृ)।

[३] मणूसा (क)।

[४] सं० पा०—अणारिया वेगे जाव दुरूवा।

[५] अप्पयरो वा भुज्जयरो (क, ख)।

[६] अप्पयरो वा भुज्जयरो (ख)।

[७] य अणातयो य (चू)।

[८] च अणुवगरणं च (चू)।

[९] य अणायओ य उवगरणं च (क, ख); य अणायओ य उवगरणं च अणुवगरणं च (चू)।

[१०] भवति, तं जहा (ख, वृ)।

[११] अन्यद् अन्यद् वस्तु उद्दिश्य (वृ)।

[१२] विप्परियावेति (क)।

[१३] वत्थुं (क)।

[१४] धणम्मे (क)।

[१५] पुव्वा° (ख)।

[१६] तं इह (ख)।

रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।

से हंता ! भयंतारो ! कामभोगा[१] ! मम अण्णतरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयह —अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं । माऽहं[२] दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ । 'एवमेव णो लद्धपुव्वं'[३] भवति ।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति । अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमंसि । से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं[४] कामभोगे विप्पजहिस्सामो ।।

५१. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—माता मे पिता मे भाया मे 'भगिणी मे भज्जा मे'[५] पुत्ता मे 'णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे'[६] सुही मे सयणसंगंथसंथुया मे । एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसिं । से[७] मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा—इह खलु ममं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा – अणिट्ठे[८] °अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे° दुक्खे णो सुहे ।

से हंता ! भयंतारो ! णायओ ! इमं मम अण्णयरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयह[९]—अणिट्ठं[१०] °अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं° णो सुहं । माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा[११] °जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोयह[१२]—

---

१. कामभोगाइं (क, ख) ।

२. ताऽहं (क, ख); द्रष्टव्यम्—५१ सूत्रस्य 'मा मे' पदस्य पादटिप्पणम् ।

३. लद्धपुव्वे (क); एवं णो० (ख); वृत्तौ—'न चायमर्थस्तेन दुःखितेन 'एवमेवे' ति यथा प्रार्थितस्तथैव लब्धपूर्वो भवति, अग्रिमसूत्रे 'न चैतत्तेन दुःखितेन लब्धपूर्वं भवति'…एवमेव नो लब्धपूर्वं भवति' इति व्याख्यातमस्ति ।

४. वयं च (ख) ।

५. भज्जा मे भगिणी मे (क) ।

६. धूया मे पेसा मे णत्ता मे सुण्हा मे (ख) ।

७. एवं से (क, ख) ।

८. सं० पा०—अणिट्ठे जाव दुक्खे ।

९. परियादियध (क) ।

१०. सं० पा०—अणिट्ठं जाव णो सुहं ।

११. सं० पा०—सोयामि वा जाव परितप्पामि ।

१२. परिमोएह (क); पूर्वस्मिन् सूत्रे 'पडिमोयह' इति पदमस्ति ।

अणिट्ठाओ[1] •अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेवं[2] णो लद्धपुव्वं भवइ।

तेसिं वा वि भयंताराणं मम णाययाणं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे[3] •अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे° णो सुहे।

से हंता ! अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अण्णतरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयामि—अणिट्ठं[4] •अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं° णो सुहं, 'मा मे'[5] दुक्खंतु वा[6] •सोयंतु वा जूरंतु वा तिप्पंतु वा पीडंतु वा° परितप्पंतु वा। इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोएमि—अणिट्ठाओ[7] •अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेव[8] णो लद्धपुव्वं भवति।

अण्णस्स दुक्खं अण्णो णो परियाइयइ[9], अण्णेण कतं[10] अण्णो णो पडिसंवेदेइ, पत्तेयं जायइ, पत्तेयं मरइ, पत्तेयं चयइ, पत्तेयं उववज्जइ, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा,[11] •पत्तेयं विण्णू, पत्तेयं° वेदणा।

इति खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं णाइसंजोगे विप्पजहइ, णाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु णातिसंजोगा, अण्णो अहमंसि। से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं णाइसंजोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं णातिसंजोगे विप्पजहिस्सामो॥

५२. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं[12], तं जहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे सीसं मे[13] आउं मे बलं मे वण्णो मे तया मे

---

[1] सं० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

[2] एवामेव (क); एवमेयं (वृ)।

[3] सं० पा०—अणिट्ठे जाव णो सुहे।

[4] सं० पा०—अणिट्ठं जाव णो सुहं।

[5] मम ज्ञातयः (वृ) अत्र 'मा' शब्दोस्ति तथैव पूर्ववर्ती द्वयोः संदर्भयोरपि 'मा' शब्दो युज्यते। एकत्र 'मा' शब्दः प्रतिष्वपि लभ्यते, एकत्र च 'ताहं' अथवा 'नाहं' इति अस्पष्टोल्लेखः प्राप्यते। उत्तरवर्तिसंदर्भानुसारेण प्रथमे संदर्भेपि 'मा' एव शब्दो युज्यते।

[6] सं० पा०—दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु।

[7] सं० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

[8] एवामेव (ख)।

[9] पडियादियति (क); परियादियति (ख); पडियाइयइ (प्रत्यापिबति) (वृ)।

[10] कतं कम्मं (क); कडं कम्मं (वृ); कडं(चू)।

[11] सं० पा०—एवं विण्णू वेदणा।

[12] °तरागं (क)।

[13] मे सीलं मे (क, ख)। अत्र 'शील' शब्दोऽधिकः प्रतीयते। शीलस्य नात्र कश्चित् प्रसङ्गः। वृत्तिकृता लिखितमपि पुण्णातीदम्—'एतच्च हस्तपादादिकं स्पर्शनेन्द्रियपर्यवसानं शरीरावयवसंबन्धित्वेन विवक्षितम्'।

छाया मे सोयं मे चक्खुं मे घाण मे जिब्भा मे फासा[1] मे ममाति[2], वयाओ परिजूरइ[3], तं जहा—आऊओ बलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ[4] °चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ° फासाओ। सुसंधिता[5] संधी विसंधीभवति, वलितरंगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवंति[6]। जं पि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवचियं[7], एयं पि य मे[8] अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति ॥

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पदं

५३. एयं संखाए से भिक्खु भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव। तसा चेव, थावरा चेव ॥

५४. इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सयं[9] समारंभंति, अण्णेण वि समारंभावेंति, अण्णं पि समारंभंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सयं परिगिण्हंति, अण्णेण वि परिगिण्हावेंति, अण्णं पि परिगिण्हंतं समणुजाणंति।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे। जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो।

कस्स णं तं हेउं?

जहा पुव्वं तहा अवरं, जहा अवरं तहा पुव्वं।

अंजू एते[10] अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव।

जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा दुहओ पावाइं कुव्वंति, इति संखाए दोहि वि अंतेहिं अदिस्समाणो। इति भिक्खू रीएज्जा ॥

---

[1] स्पर्शनेन्द्रियम् (वृ)।

[2] ममातिज्जति (क, ख)।

[3] पडिजूरइ (ख)।

[4] सं० पा०—सोयाओ जाव फासाओ।

[5] सुसंधितो (क्व)।

[6] भवंति, तं जहा (क, ख, वृ); अत्र 'तं जहा' इति पाठो नावश्यकः प्रतिभाति, किन्तु वृत्तिकारेणादर्शे लब्धः तेन व्याख्यातः। चूर्णौ नैष लभ्यते।

[7] °वइयं (ख)।

[8] ×(ख)।

[9] सतं (क)।

[10] वेते (क)।

५५. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा एवं से परिण्णातकम्मे, एवं से ववेयकम्मे,[1] एवं से वियंतकारए भवइ त्ति मक्खायं[2]।।

अहिंसा-धम्म-पदं

५६. तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाए[3] •आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए °तसकाए।

से जहाणामए मम असायं[4] दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[5] वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स[6] वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा[7] परिताविज्जमाणस्स वा 'किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा'[8] जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा[9] •अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा° कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा बा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति। एवं णच्चा सव्वे पाणा[10] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा[11] ण उद्दवेयव्वा।।

५७. से बेमि—जे[12] अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा[13] अरहंता भगवंतो[14] सव्वे ते एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—सव्वे पाणा[15] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा।।

५८. एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोगं खेयण्णेहिं पवेइए[16]।।

भिक्खुचरिया-पदं

५९. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ[17] •विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ

---

[1] विवेय° (क); वियवेय (ख)।

[2] व्या० वि०—मकारः अलाक्षणिकः।

[3] सं० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए।

[4] अस्सायं (ख)।

[5] लेलूण (ख)।

[6] आउट्टि° (ख)।

[7] वा ताविज्जमाणस्स वा (क)।

[8] उद्दविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा (क); किलामिज्जमाणस्स वा (चू); परिक्लाम्यमानस्य° (वृ)।

[9] सं० पा०—दंडेण वा जाव कवालेण।

[10] सं० पा०—पाणा जाव सत्ता।

[11] परितापेयव्वा (क)।

[12] जे य (क)।

[13] आगमिस्सा (क, ख)।

[14] भगवंता (क, ख)।

[15] सं० पा०—पाणा जाव सत्ता।

[16] तोलनीयम्—आयारो ४।१, २।

[17] सं० पा०—पाणाइवायाओ जाव विरए।

विरए मेहुणाओ ० विरए परिग्गहाओ। णो 'दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा'[1], णो अंजणं, णो वमणं, णो विरेयणं[2], णो धूवणं, णो तं परियाविएज्जा[3]॥

६०. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिणिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा[4]—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण[5] वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बंभचेरवासेणं, इमेण वा जायामायावुत्तिएणं[6] धम्मेणं इतो चुते पेच्चा[7] देवे सिया 'कामभोगाण वसवत्ती'[8], सिद्धे वा अदुक्खमसुहे[9]। एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया॥

६१. से भिक्खू 'सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं'[10] अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

६२. से भिक्खू[11]—जे इमे तसथावरा पाणा भवंति—ते णो सयं समारंभइ, णो अण्णेहिं[12] समारंभावेइ, अण्णे समारंभंते वि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

६३. से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सयं परिगिण्हइ, 'णो अण्णेणं'[13] परिगिण्हावेइ, अण्णं परिगिण्हंतंपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

६४. से भिक्खू—जं पि य इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ—णो तं सयं करेइ, 'णो अण्णेणं'[14] कारवेइ, अण्णं पि करेंतं 'ण समणुजाणइ'[15]—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥

६५. से[16] भिक्खू जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए

---

[1] दंतवणेणं दंते धोवेज्जा (चू)।

[2] चूर्णौ वृत्तौ च 'विरेयणं' व्याख्यातमस्ति; प्रत्योः नोपलभ्यते।

[3] °दितेज्जा (क)।

[4] कुज्जा (ख)।

[5] मुएण (क, ख)।

[6] °वत्तिएणं (ख)।

[7] पिच्चा (क, ख)।

[8] कामं कमी कामवसवत्ती (चू)।

[9] °मसुभे (ख)।

[10] सद्देसु जाव फासेसु (क)।

[11] चूर्णौ वृत्तौ चास्य पाठांशस्य संबन्धः पूर्वसूत्रेण योजितः, किन्तु 'से भिक्खू' 'जे इमे' इति सूत्रस्य कर्तृपदमस्ति, तेनास्माभिः प्रस्तुतसूत्रेणैवास्य सम्बन्धयोजना कृता। अग्रिमसूत्रे चूर्णिकृतापि इत्थमेव योजना कृतास्ति।

[12] वण्णेहिं (ख); अत्र पारिपार्श्विकप्रकरणे कारितानुमोदने प्रायः एकवचनमस्ति किन्तु अत्र बहुवचनं लभ्यते।

[13] णेवण्णेणं (क)।

[14] नेवण्णेणं (क, ख)।

[15] णाणुजाणइ (क, ख)।

[16] तोलनीयम्—'आयारचूला' १।१२।

एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ[1] समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं, तं चेतियं सिया, तं णो सयं भुंजइ, णो अण्णेणं भुंजावेइ, अण्णं पि भुंजंतं ण समणुजाणइ —इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६६. से भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा—तं विज्जइ तेसिं परक्कमे। जस्सट्ठाए चेतियं सिया, तं जहा—अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं धातीणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं[2] पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसिं माणवाणं भोयणाए।
तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठितं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थातीतं सत्थपरिणामितं अविहिंसितं एसितं वेसितं सामुदाणियं पण्णमसणं[3] कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजण-वणलेवणभूयं, संजमजायामायावुत्तियं[4] बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले ।।

धम्म-देसणा-पदं

६७. से भिक्खू मायण्णे अण्णयरिं दिसं वा अणुदिसं वा पडिवण्णे धम्मं आइक्खे विभए किट्टे, उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—'संतिं विरतिं'[5] उवसमं णिव्वाणं सोयवियं[6] अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं ।।

६८. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ किट्टए धम्मं ।।

६९. से भिक्खू धम्मं किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। णो अण्णेसिं विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा। अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा। णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ।।

---

[1] समारम्भ (क)।

[2] आदेसाणं (ख)।

[3] 'व्या० वि०—प्राज्ञम्—गीतार्थेन उपात्तम्।

[4] °वत्तियं (ख)।

[5] संतिविरतिं (क, ख, वृ); वृत्तिकारेण 'संतिविरइं' इति संयुक्तपाठः स्वीकृतः, तथा च—शान्तिः—उपशमः क्रोधजयस्तत्प्रधाना प्राणातिपातादिभ्यो विरतिः शान्तिविरतिः, यदि वा शान्तिः—अशेषक्लेशोपशमरूपा तस्यै—तदर्थं विरतिः शान्तिविरतिस्तां कथयेत् (वृ), किन्तु चूर्णिकारेण 'जहा धुते' इति समर्पणं कृतम्। आचारस्य धुताध्ययने (६।१०२) 'संतिं विरतिं' इति असंयुक्तः पाठोऽस्ति। तमनुसृत्यास्माभिस्तथैव स्वीकृतः।

[6] तथा सोयवियं (ख)।

७०. इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए[1] धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया। जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, ते एवं सव्वोवगता, ते एवं सव्वोवरता, ते एवं सव्वोवसंता, ते एवं सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति बेमि ॥

भिक्खु-वयणिज्ज-पदं

७१. एवं से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे, से जहेयं बुइयं, अदुवा पत्ते पउमवरपोंडरीयं, अदुवा अपत्ते पउमवरपोंडरीयं।

७२. एवं से भिक्खू परिण्णायकम्मे परिण्णायसंगे परिण्णायगेहवासे उवसंते समिए सहिए सया जए। से एय[2]-वयणिज्जे, तं जहा—समणे ति वा माहणे ति वा खंते ति वा दंते ति वा गुत्ते ति वा मुत्ते ति वा इसी ति वा मुणी ति वा कती[3] ति वा विदू ति वा भिक्खू ति वा लूहे ति वा तीरट्ठी ति वा चरणकरणपारविउ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] अंतियं से (क)।

[2] एवं (ख)।

[3] किती (ख)।

बीअं अज्झयणं

किरियाठाणे

उक्खेव-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु किरियाठाणे णामज्झयणे[1] पण्णत्ते। तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु संजूहेणं दुवे ठाणा एवमाहिज्जंति, तं जहा—धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव ।।

अधम्मपक्खेकिरिया-पदं

२. तत्थ णं जे से पढमठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे[2], तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[3] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं इमं एयारूवं दंडसमादाणं[4] संपेहाए, तं जहा—णेरइएसु तिरिक्खजोणिएसु माणुसेसु देवेसु जे यावण्णे तहप्पगारा पाणा विण्णू वेयणं वेयंति। तेसिं पि य णं इमाइं तेरस किरियाठाणाइं भवंतीति मक्खायं[5], तं जहा—अट्ठादंडे[6], अणट्ठादंडे[7], हिंसादंडे, अकस्मादंडे[8], दिट्ठिविपरियासियादंडे[9], मोसवत्तिए,

---

[1] णाममज्झयणे (क)।

[2] विहंगे (क, ख)।

[3] हुस्स° (क)।

[4] डंड° (ख)।

[5] मक्खायाइं (क, चू)।

[6] व्या० वि० —अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।

[7] व्या० वि०—अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।

[8] अकम्हा° (क, ख); इह चाकस्मादित्ययं शब्दो मगधदेशे सर्वेणाप्यागोपालाङ्गनादिना संस्कृतएवोच्चार्यंत इति (वृ०, सू० ६)।

[9] °विप्परि° (ख)।

अदिण्णादाणवत्तिए, अज्झत्थिए, माणवत्तिए, मित्तदोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरियावहिए ॥

अट्ठादंड-पदं

३. पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिए[१] त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ[२] पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं[३] वा मित्तहेउं वा णागहेउं वा भूयहेउं वा जक्खहेउं वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति, अण्णेण वि णिसिरावेति अण्णं पि णिसिरंतं समणुजाणति। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।

पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिए[४] त्ति आहिए ॥

अणट्ठादंड-पदं

४. अहावरे दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति, ते णो अच्चाए णो[५] अजिणाए णो मंसाए णो सोणियाए णो हिययाए णो पित्ताए णो वसाए णो पिच्छाए[६] णो पुच्छाए णो बालाए णो सिंगाए णो विसाणाए 'णो दंताए णो दाढाए'[७] णो णहाए णो ण्हारुणिए णो अट्ठीए णो अट्ठिमिजाए[८],

'णो हिंसिसु मे त्ति, णो हिंसंति मे त्ति, णो हिंसिस्संति'[९] मे त्ति,

णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणाए[१०] णो अगारपरिवूहणयाए[११] णो समणमाहणवत्तणाहेउं[१२] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[१३] भवति।

से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता ओदवइत्ता[१४] उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति[१५]—अणट्ठादंडे।

से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवंति, तं जहा—इक्कडा इ वा

---

[१] अट्ठादंडे (वृ)।

[२] केति (क, ख)।

[३] परियार° (चू)।

[४] अट्ठादंडे (क, ख)।

[५] एवं हियाए पित्ताए (क, ख)।

[६] पिंछाए (क)।

[७] वृत्तौ नैतौ शब्दौ व्याख्यातौ स्तः।

[८] °मंजाए (ख)।

[९] चूर्णौ कालत्रयेपि एकवचनम्।

[१०] पसुपोसणयाए (क)।

[११] °परिवंहणताए (क)।

[१२] °वत्तियहेउं (क)।

[१३] किंचि परियादित्ता (क); किञ्चित् परित्राणं (वृ)।

[१४] उवद्दवइत्ता (क)।

[१५] भवति—से (क)।

कडिणा[१] इ वा जंतुगा इ वा परगा इ वा मोरका इ वा तणा इ वा कुसा इ वा कुच्छगा[२] इ वा पव्वगा[३] इ वा पलाला[४] इ वा—ते णो पुत्तपोसणाए[५] णो पसुपोसणाए णो अगारपरिवूहणयाए[६] णो समणमाहणवत्तणाहेउं[७] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[८] भवति ।

से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता ओदवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवइ—अणट्ठादंडे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा 'पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा'[९] तणाइं ऊसविय-ऊसविय सयमेव अगणिकायं णिसिरति, अण्णेण वि अगणिकायं णिसिरावेति, अण्णं पि अगणिकायं णिसिरंतं समणुजाणति—अणट्ठादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[१०] ति आहिज्जइ ।

दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

हिंसादंड-पदं

५. अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिज्जइ --

से जहाणामए केइ पुरिसे ममं वा ममियं[११] वा अण्णं वा अण्णियं[१२] वा 'हिंसिसु वा, हिंसंति वा, हिंसिस्संति'[१३] वा, तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरइ, अण्णेण वि णिसिरावेइ, अण्णं पि णिसिरंतं समणुजाणइ—हिंसादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[१४] ति आहिज्जइ ।

तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

---

[१] कठिणा (ख) ।

[२] कुच्चग (आयारचूला—२।६३) ।

[३] पप्पगा (क, ख); पिप्पलगं (आयारचूला—२।६३) ।

[४] पलालए (क, ख) ।

[५] °पोसणयाए (क) सर्वत्र ।

[६] अगारपोसणयाए (क, ख) ।

[७] समणमाहणपोसणयाए (क, ख) ।

[८] किंचि परियादित्ता (क); किमपि परित्राणाय (वृ) ।

[९] वृत्तौ नेमौ शब्दौ स्वीकृतौ स्तः, यथा—कच्छादिकेषु दशसु स्थानेषु वनदुर्गपर्यन्तेषु ।

[१०] सावज्जे (क, ख) ।

[११] मर्मि (ख) ।

[१२] अण्णि (ख) ।

[१३] वृत्तौ कालत्रये पि एकवचनमस्ति, किन्तु इतः पूर्वस्मिन् सूत्रे कालत्रये पि तत्र बहुवचनं व्याख्यातमस्ति ।

[१४] सावज्जे (क) ।

अकस्मादंड-पदं

६. अहावरे चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मादंडवत्तिए[1] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा[2] °दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा° पव्वयविदुग्गंसि वा मियवत्तिए[3] मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता "एते मिय" त्ति काउं अण्णयरस्स मियस्स वहाए उसुं[4] आयामेत्ता णं णिसिरेज्जा, से[5] "मियं वहिस्सामि" त्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा 'चडगं वा'[6] लावगं वा कवोयगं वा कविं वा कविजलं वा विंधित्ता भवति—इति[7] खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसइ—अकस्मादंडे[8] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा परगाणि वा रालाणि वा णिलिज्जमाणे[9] अण्णयरस्स तणस्स वहाए सत्थं णिसिरेज्जा, से "सामगं तणगं मुकुंदुगं[10] वीहीऊसियं[11] कलेसुयं तणं छिंदिस्सामि" त्ति कट्टु सालिं वा वीहिं वा कोद्दवं वा कंगुं वा परगं वा रालयं वा छिंदित्ता भवति—इति खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्णं फुसति—अकस्मादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[12] ति आहिज्जइ ।

चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मादंडवत्तिए आहिए ॥

दिट्ठिविपरियासियादंड-पदं

७. अहावरे पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिए[13] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूयाहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे मित्तं अमित्तमिति[14] मण्णमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादंडे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे गामघायंसि वा णगरघायंसि वा खेडघायंसि कव्वडघायंसि मडंबघायंसि वा दोणमुहघायंसि वा पट्टणघायंसि वा

---

[1] अकम्हा° (ख) ।
[2] सं० पा०—कच्छंसि वा जाव पव्वयविदुग्गंसि वा; कच्छंसि वा जाव वणविदुग्गंसि वा (ख); कच्छे वा यावद् वनदुर्गे वा (वृ) ।
[3] °वित्तिए (ख) ।
[4] उसुगं (क) ।
[5] स (ख) ।
[6] × (क) ।
[7] इह (क, ख) ।
[8] अकम्हा° (ख) सर्वत्र ।
[9] णितिज्जमाणे (ख) ।
[10] मुकुंदगं (ख); कुमुदगं (क्व) ।
[11] वाहिरूसितं (क) ।
[12] सावज्जे (क) ।
[13] °दंडे (क, ख) ।
[14] अमित्तमेव (ख) ।

आसमघायंसि वा सण्णिवेसघायंसि वा णिगमघायंसि वा रायहाणिघायंसि वा अतेणं तेणमिति मण्णमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादंडे।
एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[1] ति आहिज्जइ।
पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिए[2] त्ति आहिए ॥

मोसवत्तिय-पदं

८. अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं[3] वा अगारहेउं वा परिवारहेउं सयमेव मुसं वयति, अण्णेण वि मुसं वयावेइ, मुसं वयंतं पि अण्णं समणुजाणति।
एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिए ॥

अदिण्णादाणवत्तिय-पदं

९. अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा[4] °णाइहेउं वा अगारहेउं वा° परिवारहेउं वा सयमेव अदिण्णं आदियति, अण्णेण वि अदिण्णं आदियावेति, अदिण्णं आदियंतं पि अण्णं समणुजाणइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिए ॥

अज्झत्थिय-पदं

१०. अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे[5] अज्झत्थिए[6] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे—णत्थि णं केइ किंचि विसंवादेइ—सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे[7] करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाति, तस्स णं अज्झत्थिया असंसइया[8] चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जंति, तं जहा—कोहे माणे माया लोहे[9]। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थिए त्ति आहिए ॥

---

[1] सावज्जे (क)।
[2] °दंडे (क, ख)।
[3] णाय° (क, ख)।
[4] सं० पा०—आयहेउं वा जाव परिवारहेउं।
[5] किरियाठाणे (क, ख)।
[6] अज्झत्थवत्तिए (ख)।
[7] °सागरपविट्ठे (वृ)।
[8] आसंसइया (ख)।
[9] लोहे। अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे (क्व)।

माणवत्तिय-पदं

११. अहावरे णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ पुरिसे जाइमदेण वा कुलमदेण वा बलमदेण वा रूवमदेण वा तवमदेण वा सुयमदेण वा लाभमदेण वा इस्सरियमदेण वा पण्णामदेण वा, अण्णयरेण वा मदट्ठाणेणं मत्ते समाणे परं हीलेति णिंदेति खिंसति गरिहति[1] परिभवति अवमण्णति। "इत्तरिए[2] अयं, अहमंसि पुण विसिट्ठजाइ-कुलबलाइगुणोववेए"—एवं अप्पाणं समुक्कसे[3]। देहा चुए कम्मबिइए[4] अवसे पयाति, तं जहा—गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं। चंडे थद्धे चवले माणी यावि भवइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।

णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिए॥

मित्तदोसवत्तिय-पदं

१२. अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—

से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं[5] वा पिईहिं[6] वा भाईहिं वा भइणीहिं वा भज्जाहिं वा धूयाहिं वा पुत्तेहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे तेसिं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव 'गरुयं दंडं णिव्वत्तेति'[7], तं जहा—सीओदगवियडंसि वा कायं उब्बोलेत्ता[8] भवइ, उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता[9] भवइ, अगणिकायेणं कायं उड्डहित्ता[10] भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया[11] वा 'कसेण[12] वा छियाए वा'[13] लयाए वा 'अण्णयरेण वा दवरएण'[14] पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[15] वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता[16] भवति।

---

[1] गरहति (ख)।

[2] इत्तिरिए (क)।

[3] समुक्कोसे (ख)।

[4] °वितिए (क)।

[5] मादीहिं (क)।

[6] पितिहिं (ख)।

[7] गुरुयं डंडं वत्तेति (क)।

[8] उवोलेत्ता (क); उच्छोलित्ता (ख); उद्ब्रोडयिता—अत्र 'बोल' धातु प्रयोगो वर्तते। वृत्तावपि 'बोलयिता' इति व्याख्यातमस्ति। प्राचीनलिप्यां संयुक्तबकारस्य तथा संयुक्तछकारस्य, असंयुक्तबकारछकारयोरपि साद्दश्यमस्ति, ततो लिपिदोषेण 'उबो[ब्बो]लेत्ता' स्थाने 'उच्छोलेत्ता' जातमिति प्रतीयते।

[9] उस्सिंचित। (चू)।

[10] उवडहित्ता (ख); उड्डहित्ता (चू)।

[11] तयाइ (ख)।

[12] कमेण (क;) कडएण (चू)।

[13] × (वृ)।

[14] × (क, ख, चू)।

[15] लेलूण (ख)।

[16] उपताडयिता (वृ)।

तहप्पगारे पुरिसजाते संवसमाणे दुम्मणा भवंति, पवसमाणे सुमणा भवंति।
तहप्पगारे पुरिसजाते दंडपासी, दंडगरुए[1], दंडपुरक्खडे, अहिते इमंसि लोगंसि, अहिते परंसि लोगंसि, संजलणे कोहणे, पिट्ठिमंसियावि[2] भवइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जति।
दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिए॥

मायावत्तिय-पदं

१३. अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिज्जइ[3]—जे इमे भवंति गूढायारा तमोकासिया[4] उलूगपत्तलहुया[5] पव्वयगुरुया, ते आरिया वि संता अणारियाओ भासाओ पउंजंति[6], अण्णहा संतं अप्पाणं अण्णहा मण्णंति, अण्णं पुट्ठा अण्णं वागरेंति, अण्णं आइक्खियव्वं अण्णं आइक्खंति।
से जहाणामए केइ पुरिसे अंतोसल्ले तं सल्लं णो सयं[7] णीहरति, णो अण्णेण णीहरावेति[8], णो पडिविद्धंसेति, एवमेव णिण्हवेति, अविउट्टमाणे अंतो-अंतो रियाति[9], एवमेव माई मायं कट्टु णो आलोएइ, णो पडिक्कमेइ, णो णिंदइ, णो गरहइ, णो विउट्टइ, णो विसोहेइ, णो अकरणाए अब्भुट्ठेइ, णो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ।
माई अस्सिं लोए पच्चायाति, माई[10] परंसि लोए पच्चायाति[11], णिंदइ[12], पसंसति, णिच्चरति, ण[13] णियट्टति, णिसिरिया[14] दंडं छाएइ, माई[15] असमाहडसुहलेस्से[16] यावि भवइ। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।
एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिए॥

लोभवत्तिय-पदं

१४. अहावरे बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिज्जइ[17]—जे इमे भवंति[18]

---

[1] °गुरुए (क, ख)।
[2] पट्ठि° (ख)।
[3] आहिज्जइ, तं जहा—(वृ)।
[4] तमोकाइया (चू)।
[5] उलुग° (ख, चू)।
[6] विउंजंति (क, चू); विप्पउंजंति (ख)।
[7] सति (क)।
[8] णीहारा° (ख)।
[9] झियाति (ख); झोसियाति (चू)।
[10] माती (क),
[11] पुणो पुणो पच्चा (वृ)।
[12] निंदइ गहाय (क); निंदइ गरहइ (ख); निंदा गरहा (चू)।
[13] णो (चू)।
[14] निसिरिय (ख, चू)।
[15] माय़ी (क, ख)।
[16] असमाहिद° (क); असमाहडलेस्से (चू)।
[17] आहिज्जइ, तं जहा—(वृ)।
[18] भवन्ति, तं जहा (वृ)।

आरण्णिया आवसहिया गामंतिया कण्हुईरहस्सिया[1] णो बंहुसंजया, णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा[2] सच्चामोसाइं एवं विउंजंति—अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया[3] अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति। तओ[4] विप्पमुच्चमाणा भुज्जो 'एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[5] जांइमूयत्ताए'[6] पच्चायंति। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं ति आहिज्जइ।

दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिए॥

१५. इच्चेताइं दुवालस किरियट्ठाणाइं दविएणं समणेणं वा माहणेणं वा सम्मं सुपरिजाणियव्वाणि[7] भवंति॥

इरियावहिय-पदं

१६. अहावरे तेरसमे[8] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु अत्तत्ताए संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाण-भंड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमियस्स उच्चार-पासवण-खेल-'सिंघाण-जल्ल'[9]-पारिट्ठा-

---

[1] कण्हुतीराहुसिया (क)।

[2] अप्पणो (क)।

[3] गढिया गरहिया (क, ख); असौ 'गढिया' शब्दस्यैव रूपान्तरमस्ति। वृत्तिकारेण चत्वार एव शब्दा व्याख्याताः, यथा—मूर्च्छिता गृद्धा ग्रथिता अध्युपपन्नाः।

[4] तातो (क)।

[5] तम्मूय° (क); × (ख); तमोकाइयत्ताए (चू)।

[6] 'एलमूयत्ताए' इति पाठश्चतुर्षु स्थलेषु विद्यते। तत्र अग्रिमः पाठः सर्वत्र भिन्नोस्ति, यथा—
२।२।१४ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए।
२।२।१८ एलमूयत्ताए तमंधयाए।
२।२।५६ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए।
२।७।२५ एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए।
२।२।१४ स्थाने चूर्णौ 'तमोकाइयत्ताए' पाठोस्ति, २।२।१८, २।७।२५ अनयो; स्थलयोरपि 'तमोकाइयत्ताए' इत्यस्य तुल्यार्थतास्ति। तेन प्रतीयतेत्र तमोवाचकः पाठः प्रयुक्तोस्ति। 'तमूयत्ताए' इत्यपि 'तमोयत्ताए' [तमस्तया] इत्यस्य ऊकारकृतः प्रयोगो वर्तते। अस्माभिः यस्मिन् स्थले यादृशः पाठो लब्धः तादृशः एव स्वीकृतः।

[7] पडिलेहितव्वाणि (चू)।

[8] तेरसे (क)।

[9] जल्ल-सिंघाणग (क)।

वणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स[1] कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स[2] कायगुत्तस्स गुत्तिंदियस्स गुत्तबंभयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स[3] आउत्तं चिट्ठमाणस्स आउत्तं णिसीयमाणस्स आउत्तं तुयट्टमाणस्स 'आउत्तं भुंजमाणस्स आउत्तं भासमाणस्स'[4] आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा णिक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हणिवायमवि, अत्थि विमाया सुहुमा किरिया इरियावहिया णाम कज्जइ—सा पढमसमए बद्धपुट्ठा[5] बितियसमए[6] वेइया ततियसमए णिज्जिण्णा। सा बद्धपुट्ठा उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा सेयकाले अकम्मयाऽवि[7] भवइ[8]। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं[9] आहिज्जइ।

तेरसमे[10] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिए॥

१७. से बेमि—जे य अईया जे य पडुप्पण्णा जे य आगमेस्सा अरहंता भगवंता सव्वे ते एयाइं चेव तेरस किरियट्ठाणाइं भासिंसु वा भासेंति वा भासिस्संति वा, पण्णवेंसु वा पण्णवेंति वा पण्णवेस्संति वा, एवं चेव तेरसमं किरियट्ठाणं सेविंसु वा सेवंति वा सेविस्संति वा॥

पावसुयज्झयण-पदं

१८. अदुत्तरं च णं पुरिस-विजय-विभंगमाइक्खिस्सामि—इह खलु णाणापण्णाणं णाणाछंदाणं णाणासीलाणं णाणादिट्ठीणं णाणारुईणं[11] णाणारंभाणं णाणाज्झवसाणसंजुत्ताणं 'इहलोगपडिबद्धाणं परलोगणिप्पिवासाणं विसयतिसियाणं इणं'[12] णाणाविहं 'पावसुयज्झयणं भवइ'[13], तं जहा—१. भोमं २. उप्पायं ३ सुविणं

---

१. वयसमि° (ख)।

२. वयगु° (ख)।

३. आणपाणमाणस्स (चू)।

४. आउत्तं भुंजमाणस्स (ख); × (चू)।

५. बद्धा° (ख)।

६. बिईय° (क्व)।

७. अकम्मं या वि (चू)।

८. तोलनीयम्—भगवती ३।१४८।

९. तप्पत्तिं सावज्जं ति (क, ख); प्रयुक्तप्रत्योः तथान्येष्वपि प्रचुरेषु आदर्शेषु 'सावज्जं' अथवा 'सावज्जे' पाठोत्र लभ्यते, किन्तु पूर्ववर्तिद्वादशक्रियास्थानगताभ्यासेन लिपिप्रमादोसौ जात इति प्रतीयते। अर्थविचारणया नासौ पाठः संगतोस्ति। ईर्यापथिक्याः क्रियाया बन्धो न च नाम सावद्यो भवति। चूर्णौ वृत्तौ चापि नास्ति स पाठो व्याख्यातः। चूर्णिकारेण स्पष्टं कृतमस्ति विवेचनम्—हेट्ठिल्ला पुण सावज्जा चेव बारस किरियाट्ठाणाइं भवंति, एवं पव्वइओ वा उप्पव्वइओ वा, एवं सरागसंयतस्स सावज्जो चेव (चूर्णी पृ० ३५३)। वृत्तिकारेणापि 'सावज्ज' शब्दस्य नोल्लेखः कृतः। एवं तावद् वीतरागस्येर्याप्रत्ययिकं कर्म 'आधीयते'—संबध्यते। (वृत्तिपत्र ५८ पंक्ति ९)।

१०. तेरसे (क)।

११. °रुतीणं (क)।

१२. × (क, ख)।

१३. पावसुत्तपसंगं वण्णइस्सामि (चू); पावसुयज्झयणं एवं भवइ (क, ख)।

४. अंतलिक्खं ५. अंगं ६. सरं ७. लक्खणं ८. वंजणं ९. इत्थिलक्खणं १०. पुरिसलक्खणं ११. हयलक्खणं १२. गयलक्खणं १३. गोणलक्खणं १४. मेंढलक्खणं १५. कुक्कुडलक्खणं १६. तित्तिरलक्खणं १७. वट्टगलक्खणं १८. लावगलक्खणं १९. चक्कलक्खणं २०. छत्तलक्खणं २१. चम्मलक्खणं २२. दंडलक्खणं २३. असिलक्खणं २४. मणिलक्खणं २५. कागणिलक्खणं २६. सुभगाकरं २७. दुब्भगाकरं २८. गब्भाकरं २९. मोहणकरं ३०. आहव्वणिं ३१. पागसासणिं[1] ३२. दव्वहोमं ३३. खत्तियविज्जं[2] ३४. चंदचरियं ३५. सूरचरियं ३६. सुक्कचरियं ३७. बहस्सइचरियं[3] ३८. उक्कापायं ३९. दिसादाहं[4] ४०. मियचक्कं ४१. वायसपरिमंडलं ४२. पंसुवुट्ठिं[5] ४३. केसवुट्ठिं ४४. मंसवुट्ठिं ४५. रुहिरवुट्ठिं ४६. वेयालिं ४७. अद्धवेयालिं ४८. ओसोवणिं[6] ४९. तालुग्घाडणिं[7] ५०. सोवागिं ५१. सावरिं[8] ५२. दामिलिं[9] ५३. कालिंगिं ५४. गोरिं ५५. गंधारिं ५६. 'ओवतणिं ५७. उप्पतणिं'[10] ५८. जंभणिं ५९. थंभणिं ६०. लेसणिं ६१. आमयकरणिं ६२. विसल्लकरणिं ६३. पक्कमणिं[11] ६४. अंतद्धाणिं[12]। एवमाइयाओ विज्जाओ अण्णस्स हेउं पउंजंति[13], पाणस्स हेउं पउंजंति, वत्थस्स हेउं पउंजंति, लेणस्स हेउं पउंजंति, सयणस्स हेउं पउंजंति, अण्णेसिं वा विरूवरूवाणं कामभोगाण हेउं पउंजंति, तेरिच्छं[14] ते विज्जं सेवंति[15], ते अणारिया विप्पडिवण्णा कालमासे कालं किच्चा 'अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु'[16] उववत्तारो भवंति। ततो वि विप्पमुच्चमाणा[17] भुज्जो एलमूयत्ताए तमंधयाए पच्चायंति ॥

चउद्दसविह-कूरकम्मकरण-पदं

१९. से एगइओ आयहेउं वा 'णाइहेउं वा'[18] अगारहेउं वा परिवारहेउं वा णायगं वा सहवासियं वा णिस्साए—१. अदुवा अणुगामिए २. अदुवा उवचरए

---

[1] पागसासणं (ख)।

[2] खत्तीविज्जं (ख)।

[3] विहप्फति° (क)।

[4] दिसीदाहं (क)।

[5] पंसुवुट्ठी (क)।

[6] ओसोयणिं (क)।

[7] तालुग्घाडणं (ख)।

[8] सावरिं (क); शाम्बरी (वृ)।

[9] दामलिं (ख)।

[10] उप्पतणि णिवडतणिं कंपणिं (चू)।

[11] × (चू)।

[12] अंतद्धाणिं आयमणिं (ख)।

[13] विउंजंति (क) सर्वत्र।

[14] तिरिच्छं (क्व)।

[15] सेवेंति (क, ख)।

[16] अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं ठाणाइ (क, ख)।

[17] विप्पमुक्का (वृ)।

[18] णायहेउं वा (क), णायहेउं वा सयणहेउं वा (ख)।

३. अदुवा पाडिपहिए[1] ४. अदुवा संधिच्छेयए[2] ५. अदुवा गंठिच्छेयए[3] ६. अदुवा ओरब्भिए ७. अदुवा सोयरिए[4] ८. ‘अदुवा वागुरिए ९. अदुवा साउणिए’[5] १०. अदुवा मच्छिए ११. अदुवा गोवालए[6] १२. अदुवा गोघायए १३. अदुवा सोवणिए[7] १४. अदुवा सोवणियंतिए ।

से एगइओ अणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगमिय[8] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति ।

से एगइओ उवचरगभावं पडिसंधाय तमेव उवचरिय[9] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति ।

से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव[10], पडिपहे ठिच्चा हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति ।

से एगइओ संधिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[11], संधिं छेत्ता भेत्ता[12] °लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति ।

से एगइओ गंठिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[13], गंठिं छेत्ता भेत्ता[14] °लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं[15] उवक्खाइत्ता भवति ।

से एगइओ ओरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता[16] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति[17] ।

---

[1] पाडिवधिए (क) ।

[2] संधिछेदए (ख) ।

[3] गंठिभेदए (क); गंठिछेदए (ख) ।

[4] सोवरिए (क, ख); अत्र लिपिदोषेण ‘सोकरिए’ अथवा ‘सोयरिए’ स्थाने ‘सोवरिए’ इति पाठो जातः ।

[5] अदुवा साउणिए अदुवा वागुरिए (वृ) ।

[6] गोपालए (क) ।

[7] सोवणितिए (क); सोतेणिए (ख) ।

[8] अणुगमियाणुगामित (क); अणुगामियाणुगमिय (ख); उपचर्य अनुव्रज्य च (वृ); अणुगमिय-अणुगमिय (चू) ।

[9] °चरितं (ख) ।

[10] व्या० वि०—तदेव प्रातिपथिकत्वं कुर्वन् ।

[11] व्या० वि०—‘प्रतिपद्यते’ इति क्रियाशेषः ।

[12] सं० पा०—भेत्ता जाव इति ।

[13] व्या० वि०—‘अनुयाति’ इति क्रिया शेषः ।

[14] सं० पा०—भेत्ता जाव इति ।

[15] अप्पाणं (क, ख) ।

[16] सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता ।

[17] भवति । एसो अभिलावो सव्वत्थ (क, ख)।

से एगइओ सोयरियभावं[1] पडिसंधाय महिसं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[2] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ वागुरियभावं पडिसंधाय मियं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[3] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ साउणियभावं पडिसंधाय सउणिं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[4] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ मच्छियभावं पडिसंधाय मच्छं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[5] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

'से एगइओ गोवालगभावं पडिसंधाय तमेव गोणं[6] परिजविय[7] हंता[8] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ गोघायगभावं पडिसंधाय गोणं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[9] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति'[10]।

से एगइओ सोवणियभावं पडिसंधाय सुणगं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[11] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ सोवणियंतियभावं पडिसंधाय मणुस्सं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[12] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता° आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति॥

---

१. सोवरिय० (ख)। चूर्णौ क्रमप्राप्तं सौकरिकपदं व्याख्यातं नास्ति। गोघातकभावस्यानन्तरं "केइ पुण भणंति—सोयरियभावं ति महिसं, अण्णतरो तव्वत्तिरित्तो गोणादि"—(चूर्णी पृ० ३५७) इति उल्लेखः प्राप्यते। वृत्तिकारस्य सम्मुखेपि सौकरिकपदस्य पाठः स्पष्टो नासीदिति प्रतीयते—"अत्रान्तरे सौकरिकपदं, तच्च स्वबुद्ध्या व्याख्येयम् सौकरिकाः—श्वपचाश्चाण्डालाः—खट्टिका इत्यर्थः" (वृत्ति पत्र ६३ पं० २)।

२. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

३,४,५. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

६. गोणं वा (क, ख)।

७. परिजविय-परिजविय (क)।

८,९. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

१०. से एगइओ गोघायगभावं°। से एगइओ गोवालगभावं°। (क, ख)।

११. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।

१२. सं० पा०—हंता जाव आहारं।

सप्पओयणं कूरकम्मकरण-पदं

२०. से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठेत्ता अहमेयं हणामि[१] त्ति कट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा [चडगं वा[२] ?] लावगं वा कवोयगं वा [कविं वा ?][३] कविंजलं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता[४] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ॥

सद्दादि विसएहिं विरुद्धस्स कूरकम्मकरण-पदं

२१. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं सस्साइं झामेइ, अण्णेण वि अगणिकाएणं सस्साइं झामावेइ, अगणिकाएणं सस्साइं झामेंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति[५] ॥

२२. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण[६] वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, कप्पंतं वि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[७] °पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२३. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ, अण्णेण वि झामावेइ, झामंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[८] °पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२४. से एगइओ केणइ आदाणेणं विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा कुंडलं वा[९] मणिं वा मोत्तियं वा, सयमेव अवहरइ, अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[१०] °पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ।

---

१. आहणामि (क) ।

२,३. अस्याध्ययनस्य षष्ठे सूत्रे इमौ शब्दौ स्तः ।

४. सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता ।

५. चूर्णौ अस्य सूत्रस्य व्याख्याया अन्ते 'एवं फासे वि' 'आहतो भरितो वा केणइ असुइणा खेलेणं उविट्ठेण वा' इत्युल्लिखितमस्ति । अयमुल्लेखः स्वतंत्रसूत्राणां संकेतोथवा व्याख्यामात्रमिति स्पष्टं न परिज्ञायते ।

६. घोडाण (क) ।

७,८. सं० पा०—महया जाव भवति ।

९. वा गुणिं वा (क) ।

१०. सं० पा०—महया जाव भवति ।

संपदायलित्तस्स असव्ववहारकरण-पदं

२५. से एगइओ केणइ वि आदाणेणं विरुद्धे समाणे[1], समणाणं वा माहणाणं वा 'दंडगं वा छत्तगं वा'[2] भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिगं वा भिसिगं वा चेलगं[3] वा चिलिमिलिगं वा 'चम्मगं वा चम्मछेयणगं'[4] वा चम्मकोसियं वा सयमेव अवहरइ[5], °अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ—इति से महया[6] °पावकम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ।।

वीमंसरहियस्स कूरकम्मकरण-पदं

२६. से एगइओ नो वितिगिंछइ[7]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं ओसहीओ झामेइ[8], °अण्णेण वि अगणिकाएणं ओसहीओ झामावेइ, अगणिकाएणं ओसहीओ° झामेंतं पि अण्णं समणुजाणइ—इति से महया[9] °पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता° भवति ।।

२७. से एगइओ णो वितिगिंछइ[10]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, अण्णं पि कप्पंतं समणुजाणइ[11]—°इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति° ।।

२८. से एगइओ णो वितिगिंछइ[12]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा[13] °गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा° गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ[14], °अण्णेण वि झामावेइ, झामंतं पि अण्णं° समणुजाणइ ।।

---

[1] समाणे, अदुवा खलदाणेणं, अदुवा सुराथालएणं (क, ख); प्रस्तुतसूत्रं 'समणमाहणेन' संबद्धमस्ति, तेनात्र 'अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं' इति पाठो नैव युज्यते । पूर्ववर्तिषु सूत्रेषु प्रवर्तमानः पाठोसौ अत्रापि लिपिप्रमादेन पूर्वप्रचलितक्रमाभ्यासेन वा लिखितोस्तीति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च अपहरणस्य यानि कारणानि प्रदर्शितानि तेभ्योपि उक्तानुमानस्य परिपुष्टिर्जायते । चूर्णौ यथा—"इमो अण्णो पासंडत्थाण दिट्ठिरागेणं वादे वा पराइतो सयमेव तेसिं अण्णं किंचि णत्थि जं अत्थि तं अवहरति," वृत्तौ च यथा—"अथैकः कश्चित्स्वदर्शनानुरागेण वा, वादपराजितो वाऽन्येन वा केनचिन्निमित्तेन कुपितः सन्नेतत्कुर्यादित्याह ।

[2] छत्तगं वा दंडगं वा (ख), तोलनीयं—आयारचूला २।४६ ।

[3] चेलं वा (क) ।

[4] चम्मं वा चम्मछेदणं (क) ।

[5] सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ ।

[6] सं० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता ।

[7] °गिंछइ, तं जहा (ख, वृ) ।

[8] सं० पा०—झामेइ जाव झामेंतं ।

[9] सं० पा०—महया जाव भवति ।

[10] °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ) ।

[11] सं० पा०—समणुजाणइ° ।

[12] °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ) ।

[13] सं० पा०—उट्टसालाओ वा जाव गद्दभ° ।

[14] सं० पा०—झामेइ जाव समणुजाणइ ।

२९. से एगइओ णो वितिगिंछइ[1]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा[2] °कुंडलं वा मणिं वा° मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ[3], °अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ ॥

३०. से एगइओ णो वितिगिंछइ[4]—समणाण वा माहणाण वा दंडगं वा[5] °छत्तगं वा भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिगं वा भिसिगं वा चेलगं वा चिलिमिलिगं वा चम्मगं वा° चम्मछेयणगं वा सयमेव अवहरइ[6], °अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ—इति से महया[7] °पावकम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ॥

३१. से एगइओ समणं वा माहणं वा दिस्सा णाणाविहेहिं 'पावेहिं कम्मेहिं'[8] अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा णं अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा णं फरुसं वदित्ता भवइ, कालेण वि[9] से अणुपविट्ठस्स 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा'[10] णो दवावेत्ता भवति, "जे इमे[11] भवंति—वोण्णमंता भारक्कंता[12] अलसगा वसलगा 'किवणगा समणगा'[13], ते इणमेव[14] जीवितं धिज्जीवियं[15] संपडिबूहेंति"। णाइ ते 'पारलोइयस्स अट्ठस्स'[16] किंचि वि सिलिस्संति[17], ते दुक्खंति ते सोयंति ते जूरंति ते तिप्पंति ते पिट्टंति[18] ते परितप्पंति ते दुक्खण-जूरण-सोयण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण-वह-बंध[19]-परिकिलेसाओ अपडिविरता[20] भवंति। ते महता आरंभेण ते महता समारंभेण ते महता आरंभसमारंभेण विरूवरूवेहिं पावकम्म-

---

[1] °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।

[2] सं० पा०—गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं।

[3] सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।

[4] °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।

[5] सं० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं।

[6] सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।

[7] सं० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता।

[8] पावकम्मेहिं (क, ख)।

[9] वि य (क)।

[10] असणं वा पाणं वा जाव (क); असणं वा ४ जाव (ख)।

[11] अपरं च दानोद्यतं निषेधयति तत्प्रत्यनीकतया, एतच्च ब्रूते—ये इमे पाषण्डिका भवंति··· (वृ)।

[12] भारोक्कंता (क, ख)।

[13] किमणगा पव्वयंति (क); किवणगा समणगा पव्वयंति (ख); °श्रमणा भवंति—प्रव्रज्यां गृण्हन्ति (वृ)।

[14] अणमेव (क); इणामेव (ख)।

[15] धीजीवितं (क)।

[16] पारलोयस्स° (क); पारलोयस्स अट्ठाए (ख); पारलोइयं अत्थं (चू); पारलोइयस्स अट्ठस्स साहणं (वृ)।

[17] सिलीसंति (ख)।

[18] १।४२,४३,५१—निर्दिष्टाङ्केषु सूत्रेषु 'पीड' धातुप्रयोगो वर्तते, अत्र च तस्मिन्नेव प्रकरणे 'पिट्ट' धातुप्रयोगो लभ्यते। नानयोः कश्चिदर्थभेदः संभाव्यते।

[19] बंधण (ख)।

[20] अप्पडिविरया (क्व)।

किच्चेहिं उरालाइं[1] माणुस्सगाइं[2] भोगभोगाइं भुंजित्तारो भवंति, तंजहा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले[3]।

सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-'पायच्छित्ते सिरसा ण्हाए कंठेमालकडे[4] आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियमालामउली पडिवद्धसरीरे वग्घारिय-सोणिसुत्तग-मल्ल-दामकलावे अहयवत्थपरिहिए चंदणोक्खित्तगायसरीरे'[5] महइमहालियाए कूडागारसालाए महइमहालयंसि सीहासणंसि इत्थीगुम्मसंपरिवुडे 'सव्वराइएणं जोइणा झियायमाणेणं'[6] महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइय-रवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति—भण देवाणुप्पिया! किं करेमो? किं आहरेमो? किं उवणेमो? किं उवट्ठावेमो[7]? किं भे हियइच्छियं[8]? किं भे आसगस्स सयइ?

तमेव पासित्ता अणारिया एवं वयंति—देवे खलु अयं पुरिसे! देवसिणाए खलु अयं पुरिसे! 'देवजीवणिज्जे खलु अयं पुरिसे'[9]! अण्णे वि य णं उवजीवंति।

तमेव पासित्ता आरिया वयंति—अभिक्कंतकूरकम्मे खलु अयं पुरिसे, अइधूए[10], अइआयरक्खे दाहिणगामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लहबोहिए[11] यावि भविस्सइ।।

३२. इच्चेतस्स ठाणस्स उट्ठित्ता[12] वेगे अभिगिज्झंति, अणुट्ठित्ता वेगे अभिगिज्झंति, अभिझंझाउरा अभिगिज्झंति।

एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुण्णे 'अणेयाउए असंसुद्धे'[13] असल्लगत्तणे

---

[1] ओरालाइं (क)।

[2] मणुस्स° (क, ख)।

[3] यद्यपि चूर्णिकारवृत्तिकाराभ्यां 'जे इमे भवंति' इतः 'समणगा' पर्यन्तं अन्तर्वाक्यं स्वीकृतं किन्तु यत्तदोः सम्बन्धेन बहुवचनस्य सम्बन्धेन च 'सयणं सयणकाले', पर्यन्तं अन्तर्वाक्यं युज्यते।

[4] × (चू)।

[5] पायच्छित्ते कप्पियमालामउली पडिवद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे सिरसा ण्हाए कठे मालकडे—वृत्तौ चिन्हित-पाठ-स्थाने एतावानेव पाठो निर्दिष्टक्रमेण व्याख्यातोस्ति।

[6] एतावान् पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

[7] आविद्धवेमो (क), आचिट्ठामो, आविट्ठवेमो (ख)।

[8] हियं° (ख)।

[9] चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

[10] अइधुत्ते (क)।

[11] °बोहियाए (ख)।

[12] उवट्ठिते (क)।

[13] असंबुद्धे अणेयाउए (क); अणेयाऊए असंबुद्धे (ख); वृत्तौ नैष पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रतयोः 'असंबुद्धे' पाठो लभ्यते किन्तु 'आवश्यक' चतुर्थाध्ययने 'केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं' अनेन क्रमेणासौ पाठो

असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे[1] अणिज्जाणमग्गे[2] असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।

एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

धम्मपक्खे भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं

३३. अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा[3] भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे हस्समंता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवंति, [4]●तं जहा—अप्पयरा वा भुज्जयरा वा । तेसिं च णं जणजाणवयाइं परिग्गहियाइं भवंति, तं जहा—अप्पयरा वा भुज्जयरा वा । तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया । सतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया । असतो वा वि एगे णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ॥

३४. जे ते सतो वा असतो वा णायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहिं णातं भवति – इह खलु पुरिसे अण्णमण्णं ममट्ठाए एवं विप्पडिवेदेति, तं जहा—खेत्तं मे वत्थू मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे धणं मे धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावतेयं मे सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे । एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसिं ।

से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा—इह खलु मम अण्णतरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।

से हंता ! भयंतारो ! कामभोगा ! मम अण्णतरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयह—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं । माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ

विद्यते । तत् प्रतिपक्षरूपत्वेनात्र 'अणंयाउए असंसुद्धे' इति पाठो युज्यते । केषुचित् मुद्रितप्रतिषु इत्थं लभ्यमानोप्यस्ति, तेनास्माभिर्मूलेसौ स्वीकृतः ।

[1] अपरिणिव्वाणमग्गे (वृ) ।

[2] × (क, वृ) ।

[3] मणुया (ख) ।

[4] सं० पा०—एसो आलावगो तहा णेयव्वो जहा पोंडरीए जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिनिव्वुड त्ति बेमि ।

अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाआ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमंसि। से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं कामभोगे विप्पजहिस्सामो ।।

३५. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—माता मे पिता मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे सुही मे सयणसंगंथसंथुया मे। एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसिं। से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा। इह खलु मम अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता! भयंतारो! णायओ! इमं मम अण्णयरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयह—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं। माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेवं णो लद्धपुव्वं भवइ।

तेसिं वा वि भयंताराणं मम णाययाणं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हंता! अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अण्णतरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयामि—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं, मा मे दुक्खंतु वा सोयंतु वा जूरंतु वा तिप्पंतु वा पीडंतु वा परितप्पंतु वा। इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोएमि—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ। एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति।

अण्णस्स दुक्खं अण्णो णो परियाइयइ, अण्णेण कतं अण्णो णो पडिसंवेदेइ, पत्तेयं जायइ, पत्तेयं मरइ, पत्तेयं चयइ, पत्तेयं उववज्जइ, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा, पत्तेयं विण्णू, पत्तेयं वेदणा।

इति खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं णाइसंजोगे विप्पजहइ, णाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति। अण्णे खलु णातिसंजोगा, अण्णो अहमंसि।

से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं णाइसंजोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं णातिसंजोगे विप्पजहिस्सामो ।।

३६. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे सीसं मे आउं मे वलं मे वण्णो मे तया मे छाया मे सोयं मे चक्खुं मे घाणं मे जिब्भा मे फासा मे ममाति, वयाओ परिजूरइ, तं जहा—आऊओ बलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ फासाओ । सुसंधिता संधी विसंधीभवति, वलितरंगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवंति । जं पि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवचियं, एयं पि य मे अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति ।।

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पदं

३७. एयं संखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव । तसा चेव, थावरा चेव ।।

३८. इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सयं समारंभंति, अण्णेण वि समारंभावेंति, अण्णं पि समारंभंतं समणुजाणंति ।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सयं परिगिण्हंति, अण्णेण वि परिगिण्हावेंति, अण्णं पि परिगिण्हंतं समणुजाणंति ।

इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे । जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो ।

कस्स णं तं हेउं ?

जहा पुव्वं तहा अवरं, जहा अवरं तहा पुव्वं ।

अंजू एते अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव ।

जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारंभा सपरिग्गहा, दुहओ पावाइं कुव्वंति, इति संखाए दोहि वि अंतेहिं अदिस्समाणो । इति भिक्खू रीएज्जा ।।

३९. से बेमि—पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा एवं से परिण्णातकम्मे, एवं से ववेयकम्मे, एवं से वियंतकारए भवइ त्ति मक्खायं ।

अहिंसाधम्म-पदं

४०. तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

से जहाणामए मम असायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति। एवं णच्चा सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ॥

४१. से बेमि—जे अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा अरहंता भगवंतो सव्वे ते एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ॥

४२. एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोगं खेयण्णेहिं पवेइए ॥

भिक्खुचरिया-पदं

४३. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ विरए मेहुणाओ विरए परिग्गहाओ। णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं, णो वमणं, णो विरेयणं, णो धूवणे, णो तं परियाविएज्जा ॥

४४. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिणिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बंभचेरवासेणं, इमेण वा जायामायावुत्तिएणं धम्मेणं इतो चुते पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती, सिद्धे वा अदुक्खमसुहे। एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया ॥

४५. से भिक्खू सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४६. से भिक्खू—जे इमे तसथावरा पाणा भवंति—ते णो सयं समारंभइ, णो अण्णेहिं समारंभावेइ, अण्णे समारंभंते वि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४७. से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सयं

परिगिण्हइ, णो अण्णेणं परिगिण्हावेइ, अण्णं परिगिण्हंतंपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

४८. से भिक्खू—जं पि य इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ—णो तं सयं करेइ, णो अण्णेणं कारवेइ, अण्णं पि करेंतं ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

४९. से भिक्खू जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं, तं चेतियं सिया, तं णो सयं भुंजइ, णो अण्णेणं भुंजावेइ, अण्णं पि भुंजंतं ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते ।।

५०. से भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा—तं विज्जइ तेसिं परक्कमे । जस्सट्ठाए चेतियं सिया, तं जहा—अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं धातीणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसिं माणवाणं भोयणाए ।

तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठितं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थातीतं सत्थपरिणामितं अविहिंसितं एसितं वेसितं सामुदाणियं पण्णमसणं कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजण-वणलेवणभूयं, संजमजायामायावुत्तियं बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा—अण्णं अण्णकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले ।।

धम्मदेसणा-पदं

५१. से भिक्खू मायण्णे अण्णयरिं दिसं वा अणुदिसं वा पडिवण्णे धम्मं आइक्खे विभए किट्टे—उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—संतिं विरतिं उवसमं णिव्वाणं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं ।।

५२. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ किट्टए धम्मं ।।

५३. से भिक्खू धम्मं किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । णो अण्णेसिं विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा । अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा । णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ।।

५४. इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया । जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म

सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, ते एवं सव्वोवगता, ते एवं सव्वोवरता, ते एवं सव्वोवसंता, ते एवं ° सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति बेमि ॥

५५. एस ठाणे आरिए केवले[1] °पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।

दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

मीसग-पक्ख-पदं

५६. अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामंतिया[2] कण्हुईरहस्सिया[3] °णो बहुसंजया, णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति—अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा । एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति° । तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[4] पच्चायंति ॥

५७. एस ठाणे अणारिए अकेवले[5] °अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे° असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।

एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ॥

अधम्म-पक्ख-पदं

५८. अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति—महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अधम्मिया 'अधम्माणुया अधम्मिट्ठा'[6] अधम्मक्खाई

---

[1] सं० पा०—केवले जाव सव्वदुक्ख° ।

[2] गामणियंतिया (क, ख); अस्याध्ययनस्य चतुर्दशे सूत्रे 'गामंतिया' पाठोस्ति, चूर्णौ वृत्तौ च जाव शब्देन स एवात्र संगृहीतो भवति । यद्यपि प्रत्योरत्र 'गामणियंतिया' पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रमनुसृत्य पूर्ववर्ती पाठ एवास्माभिः स्वीकृतः ।

[3] कण्हुईराहस्सिया (क); सं० पा०—कण्हुईरहस्सिया जाव तओ ।

[4] मूयत्ताए (क) ।

[5] सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख° ।

[6] अधर्मिष्ठाः अधर्मानुज्ञाः (वृ) ।

अधम्मपायजीविणो[१] अधम्मपलोइणो[२] अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा[३] अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइ-संपओगबहुला दुस्सीला[४] दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[५], °सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ[६] °माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ° मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[७], सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग[८]-विलेवण-सद्द-फरिस-'रस-रूव'[९]-गंध-मल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ[१०] सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ 'हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ'[११] अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूडमाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ[१२] अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण[१३]-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए। जे यावण्णे तहप्पगारा[१४] सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा[१५] कज्जंति [ततो वि अप्पडिविरया जावज्जीवाए[१६]।]

---

[१] अहम्मजीवी (ख)।

[२] °पलोई (ख); °पविलोइणो (वृ)।

[३] °दायारा (ख)।

[४] दुस्सीला दुरणुणेया (चू)।

[५] सं० पा०—जावज्जीवाए जाव सव्वाओ।

[६] सं० पा०—कोहाओ जाव मिच्छा°।

[७] × (क, ख)।

[८] वण्णगंध (क, ख) लिपिदोषेण 'वण्णग' इत्यस्य स्थाने 'वण्णगंध' इति जातम्।

[९] रूवरस (वृ)।

[१०] औपपातिके (सू० १६१) कानिचिद् वाक्यानि न सन्ति।

[११] हिरण्णसुवण्णकोडियाओ (क)।

[१२] कारणाओ (क)।

[१३] कंडनकुट्टण (वृ)।

[१४] तहप्पगारे (क, ख)।

[१५] °वणकरा जे अणारिएहिं (क, ख, वृ); असौ पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते। ६३,७१ एतयोः सूत्रयोरपि नासौ विद्यते। औपपातिके (सू० १६१,१६३) ऽपि नासौ लभ्यते।

[१६] कोष्ठकान्तर्वर्त्ती पाठश्चूर्णौ व्याख्यातो

से जहाणामए केइ[1] पुरिसे कलम-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-पलिमंथगमादिएहिं[2] अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजति, एवमेव[3] तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिर-वट्टग-लावग-कवोय-कविंजल-मिय-महिस-वराह-गाह-गोह-कुम्म-सिरीसिवमादिएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं[4] पउंजति।

जा वि य से बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भयए इ वा भाइल्ले इ वा कम्मकरए इ वा भोगपुरिसे इ वा, तेसिं पि य णं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि[5] सयमेव 'गरुयं दंडं'[6] णिव्वत्तेइ[7], तं जहा—इमं दंडेह, इमं मुंडेह, इमं तज्जेह इमं तालेह, इमं अंदुयबंधणं[8] करेह, इमं णियलबंधणं करेह, इमं हडिबंधणं करेह, इमं चारगबंधणं करेह, इमं णियल-जुयल-संकोडिय-मोडियं करेह, इमं हत्थच्छिण्णयं करेह, इमं पायच्छिण्णयं करेह, इमं कण्णच्छिण्णयं करेह, इमं णक्कच्छिण्णयं 'करेह, इमं'[9] ओट्ठच्छिण्णयं करेह, इमं सीसच्छिण्णयं करेह, इमं मुहच्छिण्णयं करेह, 'इमं वेयवहितं करेह, इमं अंगवहितं करेह'[10], इमं फोडियपयं[11] करेह, इमं णयणुप्पाडियं करेह, इमं दसणुप्पाडियं करेह, इमं वसणुप्पाडियं करेह, इमं जिब्भुप्पाडियं करेह, इमं ओलंबियं करेह, इमं घसियं करेह, इमं घोलियं करेह, इमं सूलाइयं करेह, इमं सूलाभिण्णयं करेह, इमं खारपत्तियं करेह, इमं वज्झपत्तियं[12] करेह, इमं सीहपुच्छियगं करेह, इमं वसहपुच्छियगं करेह. इमं कडग्गिदड्ढयं[13] करेह, इमं कागणिमंसखावियगं करेह, इमं भत्तपाणणिरुद्धगं करेह, इमं जावज्जीवं वहबंधणं करेह, इमं अण्णतरेणं असुभेणं कु-मारेणं मारेह।

जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ, तं जहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा सुण्हा

नास्ति—'परेषां प्राणा परितावेंति, दृष्टान्तः क्रियते निर्दयत्वे तेषां, से जहाणामए…"। वृत्तौ स च व्याख्यातः, किन्तु तत्र अग्रिमपाठस्य दृष्टान्तरूपेण सम्बन्धयोजना नास्ति—"पुनरन्यथा बहुप्रकारमधार्मिकपदं प्रतिपिपादयिषुराह"। दृष्टान्तस्य स्पष्टबोधार्थमसौ पाठः कोष्ठकान्तर्वर्त्ती कृतः।

१. व्या० वि०—बहुवचनप्रकरणे पि यदेकवचनान्तं कर्तृपदम्, तद् उपमानोपमेययोरनुरोधात्।

२. पलिमिच्छग° (क)।

३. एवा° (ख)।

४. मिच्छं° (क)।

५. अवराहम्मि (क)।

६. गुरुय° (क)।

७. निवत्तेइ (ख)।

८. अडुयं° (ख)।

९. अतोग्रे 'इमं तथा करेह' इति पाठस्य प्रयोगः क्वचिद् क्वचिदेव विद्यते स चास्माभिः सर्वत्र पूरितः।

१०. वेगच्छहियं अंगच्छहियं (क)।

११. पक्खाफोडियं (क्व)।

१२. वज्झवत्तियं (ख)।

३. दवग्गिदड्ढयं (ख)।

इ वा, तेसिं पि य णं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं णिव्वत्तेति, तं जहा—सीओदगवियडंसि उब्बोलेत्ता[1] भवइ, [2]°उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता भवइ, अगणिकायेणं कायं उद्दहित्ता भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया वा कसेण वा छियाए वा लयाए वा अण्णयरेण वा दवरएण पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति,

तहप्पगारे पुरिसजाते संवसमाणे दुम्मणा भवंति, पवसमाणे सुमणा भवंति, तहप्पगारे पुरिसजाते दंडपासी, दंडगरुए, दंडपुरक्खडे, अहिते इमंसि लोगंसि °, अहिते परंसि लोगंसि।

ते[3] दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति। ते दुक्खण-सोयण-जूरण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण-वह-बंधण-परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति॥

५९. एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा कालं भुंजित्तु भोगभोगाइं पसवित्तु[4] वेरायतणाइं, संचिणित्ता बहूइं कूराइं[5] कम्माइं उस्सण्णाइं[6] संभारकडेण कम्मुणा—

से जहाणामए अयगोले इ वा सेलगोले इ वा उदगंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते वज्जबहुले 'धूयबहुले पंकवहुले'[7] वेरबहुले अप्पत्तियबहुले दंभबहुले णियडिबहुले[8] साइबहुले[9] अयसबहुले उस्सण्णतसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमइवइत्ता अहे णरगतलपइट्ठाणे भवति॥

६०. ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधगारतमसा[10] ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसप्पहा मेद-वसा-मंस-रुहिर-पूय-पडल-चिक्खल्ल[11]-लित्ताणुलेवणतला असुई वीसा[12] परमदुब्भिगंधा कण्ह[13]-अगणिवण्णाभा कक्खडफासा[14] दुरहियासा असुभा णरगा। असुभा णरएसु वेयणाओ। णो चेव

---

१. उब्बोलेत्ता (क); उच्छोलेत्ता (ख)।

२. सं० पा०—जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते।

३. व्या० वि०—अस्यार्थसंबन्धः 'कज्जंति' पदानन्तरं योजनीयः।

४. पविसूइत्ता (क); परिसुइत्ता (ख)।

५. पावाइं (क)।

६. ओसण्णाइं (क)।

७. पंकवहुले धुन्नवहुले (क)।

८. नियइ° (क)।

९. सादि° (ख)।

१०. णिच्चंधतमसा (वृ); णिच्चंधगारतमसा (वृपा)।

११. × (वृ)।

१२. विस्सा (ख)।

१३. कण्हा (क, ख)।

१४. कक्कड° (क)।

णं णरएसु णेरइया णिद्दायंति वा पयलायंति वा सइं[1] वा रइं वा धिइं वा मइं वा उवलभंते। ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं णेरइय-वेयणं पच्चणुभवमाणा[2] विहरंति ।।

६१. से जहाणामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए, मूले छिण्णे, अग्गे गरुए, जओ णिण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं दुक्खाओ दुक्खं[3] दाहिण-गामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवइ ।।

६२. एस ठाणे अणारिए अकेवले[4] °अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे° असव्वदुक्खप्पहीण-मग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।

पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ।।

धम्म-पक्ख-पदं

६३. अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुगा धम्मिट्ठा[5] °धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा[6]° धंम्मेणं[7] चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए[8], °सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसण-सल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-

---

[1] सुइ (ख)।

[2] पच्चणुब्भवमाणा (ख)।

[3] व्या० वि०—'याति' इति क्रियाशेषः।

[4] सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख°।

[5] सं० पा०—धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं।

[6] अधर्मपक्षवर्णने 'अधम्मसीलसमुदाचारा' इति पाठे 'शील' शब्दो विद्यते, धर्मपक्षवर्णने केवलं 'धम्मसमुदायारा' पाठोऽस्ति। अत्र शीलशब्दो न विवक्षितोऽथवा लिपिदोषेण त्यक्तोभूदिति न निश्चेतुं शक्यम्।

[7] धम्मेण (क)।

[8] सं० पा०—जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे।

मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए०, जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ।।

६४. से जहाणामए अणगारा भगवंतो 'इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वइसमिया[1] कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता[2] गुत्तिदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुडा अणासवा अग्गंथा छिण्णसोया णिरुवलेवा, कंसपाई व मुक्कतोया, संखो[3] इव णिरंजणा, जीव इव अप्पडिहयगई, गगणतलं पिव णिरालंबणा, वायुरिव[4] अप्पडिबद्धा, सारदसलिलं व सुद्धहियया, पुक्खरपत्तं व णिरुवलेवा, कुम्मो इव गुत्तिदिया, विहग इव विप्पमुक्का, खग्गविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी[5] व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायथामा, सीहो इव दुद्धरिसा, मंदरो इव अप्पकंपा, सागरो इव गंभीरा, चंदो इव सोमलेसा, सुरो इव दित्ततेया, जच्चकणगं[6] व जायरूवा, वसुंधरा इव सव्वफास-विसहा, सुहुयहुयासणो[7] विव तेयसा जलंता'[8] ।।

---

१. वय० (क) ।
२. ×(क) ।
३. संख (ख) ।
४. वाउ० (ख) ।
५. भारंडपंखी (ख) ।
६. ०कंचणग (ख) ।
७. सुट्ठुहुया० (क) ।
८. चूर्णौ 'से जहाणामए केइ पुरिसा अणगारा इरियासमिता जाव सुहुत'० एष संक्षिप्तपाठो वर्तते, वृत्तौ च 'पञ्चभिः समितिभिः समिताः' अतः परं 'धूतकेस'० पर्यन्तं सर्वोपि पाठः औपपातिकवत् समर्पितोस्ति, यथा—ते पञ्चभिः समितिभिः समिताः, एवमित्युपदर्शने औपपातिकमाचाराङ्गसंबंधि प्रथममुपाङ्गं तत्र साधु गुणाः प्रबन्धेन व्यावर्ण्यन्ते, तदिहापि तेनैव क्रमेण द्रष्टव्यमित्यतिदेशः यावद्धूतम्—अपनीतं केशश्मश्रुलोमनखादिकं यैस्ते तथा (वृत्तिः पृष्ठ ७७ पंक्ति ५) चूर्णिवृत्त्यनुसारेण सर्वोपि पाठः औपपातिकवद् युज्यते, वर्तमानादर्शेषु औपपातिकपाठाद् भिन्नो पाठो लभ्यते। औपपातिक (सूत्र २७) गतपाठः इत्थमस्ति—इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिदिया गुत्तबंभ-

६५. णत्थि णं तेसिं भगवंताणं कत्थ वि पडिबंधे भवइ। [से पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा][1] जण्णं-जण्णं दिसं इच्छंति तण्णं-तण्णं दिसं अप्पडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गंथा[2] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

६६. तेसिं णं भगवंताणं इमा एयारूवा जायामायावित्ती होत्था, तं जहा—चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउदसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए भत्ते तिमासिए भत्ते चउम्मासिए भत्ते पंचमासिए भत्ते छम्मासिए भत्ते ।

अदुत्तरं च णं उक्खित्तचरगा णिक्खित्तचरगा उक्खित्तणिक्खित्तचरगा अंतचरगा पंतचरगा लूहचरगा समुदाणचरगा संसट्ठचरगा असंसट्ठचरगा तज्जायसंसट्ठचरगा दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया पुट्ठलाभिया अपुट्ठलाभिया भिक्खलाभिया अभिक्खलाभिया अण्णातचरगा[3] उवणिहिया संखादत्तिया परिमियपिंडवाइया सुद्धेसणिया अंताहारा पंताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अंतजीवी पंतजीवी पुरिमड्ढिया आयंबिलिया णिव्विगइया अमज्जमंसासिणो णो णियामरसभोई[4] ठाणाइया[5] पडिमट्ठाइया[6] णेसज्जिया वीरासणिया दंडायतिया लगंडसाइणो अवाउडा अगत्तया अकंडुया अणिट्ठुहा धुतकेसमंसुरोमणहा सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्का चिट्ठंति ।।

६७. ते णं एतेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पण्णंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खंति,

---

यारी अममा अकिंचणा निरुवलेवा, कंसपाईव मुक्कतोया, संखो इव निरंगणा, जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो इव गुत्तिंदिया,पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंवणा, अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया, सागरो इव गंभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलं व सुद्धहियया, खग्गविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायत्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुंधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुय-हुयासणो इव तेयसा जलंता ।

सूत्रकृताङ्गवृत्तिकारनिर्दिष्टः 'धूतकेसमंसुरोमनहा' इति पाठः औपपातिकस्य वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतोस्ति ।

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
२. अणुप्पगंथा (क) ।
३. °चरगा अण्णाइलोगचरगा (क); ° चरगा अण्णायलोगचरगा (ख) ।
४. नितामº (क) ।
५. ठाणादीता (क); ठाणाईया (ख) ।
६. पडिमट्ठादी (क) ।

पच्चक्खित्ता 'बहूइं भत्ताइं[1] अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता'[2] जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणगे अदंतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धं[3] माणावमाणणाओ हीलणाओ णिंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेंति, तमट्ठं आराहेत्ता चरमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं णिव्वाघायं णिरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेंति[4], तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

६८. 'एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवंति'[5] ।।

६९. अवरे पुण पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते णं तत्थ देवा भवंति महड्ढिया[6] महज्जुइया[7] °महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा° महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा[8] विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग[9]-पवर-वत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा[10] दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति ।।

७०. एस ठाणे आरिए[11] °केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे

---

[1] १. वासाहिं (क, ख) ।

[2] २. वृत्तौ एष पाठो नास्ति व्याख्यातः ।

[3] ३. लद्धावलद्धवित्तीओ (स्थानाङ्ग ९।६२) ।

[4] ४. °पाडेंति २त्ता (ख) ।

[5] ५. अस्य सूत्रस्य रचना संक्षिप्ता वर्तते । 'पुव्वकम्मावसेसेणं' इत्यादि पदानि अग्रिमसूत्रगतानि इह ग्रहीतव्यानि । औपपातिके (सू० १६७) एतद्विषयकसूत्रस्य पूर्णा रचना लभ्यते—एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।

[6] ६. महिड्ढिया (क) ।

[7] ७. सं० पा०—महज्जुइया जाव महासोक्खा ।

[8] ८. °वत्थाभरणा (क) ।

[9] ९. 'कल्लाणगंध' (क, ख) औपपातिके (सू०४७) 'कल्लाणग' इत्येव पाठो लभ्यते । संभवतो लिपिदोषेणास्य स्थाने 'कल्लाणगंध' इति पाठो जातः ।

[10] १०. °वणमालाधरा (क) ।

[11] ११. सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।

मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू। दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ।।

मीसग-पक्ख-पदं

७१. अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[1] °धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू, एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया[2]। °एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया°। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरितावणकरा

---

[1] सं० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं।

[2] सं० पा०—अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे।

कज्जंति, तओ वि 'एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए,'[1] एगच्चाओ अप्पडिविरया ॥

७२. से जहाणामए समणोवासगा भवंति—अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-'वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण'[2]-बंधमोक्ख-कुसला असहेज्जा[3] देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा, 'इणमो णिग्गंथिए पावयणे'[4] णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा[5] लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता[6] "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा 'चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसा'[7] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पीढ[8]-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं[9] तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

७३. ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पण्णंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता[10] कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु[11] •महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते णं तत्थ देवा भवंति—महड्ढिया महज्जुइया महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुर-

---

[1] ×(क, ख); प्रत्योः मुद्रितप्रतिषु च नैष पाठो लभ्यते, किन्तु प्रकरणानुसारेणासौ युज्यते। वृत्तावसौ व्याख्यातोस्ति । औपपातिके (सूत्र १६१) ऽप्यसौ लभ्यते ।

[2] वेयणानिज्जराकिरियाहिगरण (ख) ।

[3] असहेज्ज (क); असाहेज्जं (ख) ।

[4] निग्गंथे पावयणे (ओवाइय सू० १६२) ।

[5] णिव्वितिगिंछा (क) ।

[6] अट्ठिमिजाए० (ख) ।

[7] अचियत्तंतेउरपरघरपवेसा (क, ख); अचियत्तंतेउर० (वृ) ।

[8] पाडिहारिएण य पीढ (ओवाइय सू० १६२)।

[9] अहापडि० (ख) ।

[10] समाहिं० (क) ।

[11] सं० पा०—महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव एसट्ठाणे आरिए जाव एगंतसम्मे ।

बोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति ।।

७४. एस ट्ठाणे आरिए केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे° एगतसम्मे साहू।
तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ।।

तिपद-समोयार-पदं

७५. अविरइं पडुच्च बाले आहिज्जइ। विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ। विरयाविरइं पडुच्च बालपंडिए आहिज्जइ।
तत्थ णं जा सा सव्वओ, अविरई एसट्ठाणे आरंभट्ठाणे अणारिए[1] °अकेवले अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे° असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू।
तत्थ णं जा सा[2] विरई एसट्ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए[3] °केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू।
तत्थ णं जा सा[4] विरयाविरई एसट्ठाणे आरंभाणारंभट्ठाणे, एसट्ठाणे[5] आरिए[6] °केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू।।

दुपद-समोयार-पदं

७६. एवामेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोयरंति, तं जहा—धम्मे चेव, अधम्मे चेव। उवसंते चेव, अणुवसंते चेव।
तत्थ णं जे से 'पढमट्ठाणस्स अधम्मपक्खस्स'[7] विभंगे एवमाहिए, तस्स[8] णं इमाइं तिण्णि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायाइं[9], तं जहा—किरियावाईणं

---

[1] सं० पा०—अणारिए जाव असव्वदुक्ख°।
[2] सा सव्वओ (क, ख)।
[3] सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख°।
[4] सा सव्वओ (क, ख)।
[5] अस्य पाठस्य पुनरुल्लेखः विशेषत्वसूचनार्थम्, यथा वृत्तिकार—एतदपि कथञ्चिदार्यमेव।
[6] सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख°।
[7] पढमस्स ट्ठाणस्स अधम्मस्स° (क); पढमस्स अधम्म° (चू)।
[8] तत्थ (वृ)।
[9] अक्खायाइं (क)।

अकिरियावाईणं अण्णाणियवाईणं वेणइयवाईणं। तेवि णिव्वाणमाहंसु[1], तेवि पलिमोक्खमाहंसु[2], तेवि लवंति सावगा, तेवि लवंति सावइत्तारो ॥

अहिंसा-पदं

७७. ते सव्वे पावादुया[3] आइगरा[4] धम्माणं, णाणापण्णा णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाणसंजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं[5] किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति।

पुरिसे य सागणियाणं इंगालाणं पाइं[6] बहुपडिपुण्णं अओमएणं[7] संडासएणं गहाय ते सव्वे पावादुए[8] आइगरे धम्माणं, णाणापण्णे[9] °णाणाछदे णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभे° णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावादुया[10]! आइगरा[11]! धम्माणं, णाणापण्णा[12]! °णाणाछंदा! णाणासीला! णाणादिट्ठी! णाणारुई! णाणारंभा°! णाणाज्झवसाणसंजुत्ता! इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं गहाय मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाणिणा धरेह। णो बहु संडासगं संसारियं कुज्जा, णो बहु अग्गिथंभणियं कुज्जा, णो बहु साहम्मियवेयावडियं कुज्जा, णो बहु परधम्मियवेयावडियं कुज्जा, उज्जुया णियागपडिवण्णा अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह—इति वुच्चा[13] से पुरिसे तेसिं पावादुयाण[14] तं सागणियाणं इंगालाणं[15] पाइं बहुपडिपुण्णं 'अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिंसु णिसिरति'[16]।

तए णं ते पावादुया[17] आइगरा धम्माणं, णाणापण्णा[18] °णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा° णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति[19]।

तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावादुए आइगरे धम्माणं,[20] °णाणापण्णे णाणाछंदे

---

[1] निज्जाण° (क) परिणिव्वाण° (वृ)।

[2] परि° (ख)।

[3] पावाइया (क, ख)।

[4] आइकरा (क)।

[5] मंडल° (क)।

[6] पायं (क)।

[7] अतोमतेण (क)।

[8] पावाइए (क, ख)।

[9] सं० पा०—णाणापण्णे जाव णाणाज्झवसाण°।

[10] पावाइया (क, ख)।

[11] आदियरा (क)।

[12] सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण°।

[13] वच्चा (क, ख)।

[14] पावादियाणं (क, ख)।

[15] अंगालाणं (क)।

[16] नागार्जुनीयास्तु 'अओमएण संडासएण गहाय इंगाले णिसरति (चू)।

[17] पावाइया (क); पावादिया (ख)।

[18] सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण°।

[19] पडिसाहरेंति (क)।

[20] सं० पा०—धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण°।

णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभे° णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावादुया ! आइगरा ! धम्माणं, णाणापण्णा[1] ! °णाणाछंदा ! णाणासीला ! णाणादिट्ठी ! णाणारुई ! णाणारंभा° ! णाणाज्झवसाणसंजुत्ता ! 'कम्हा णं तुब्भे पाणिं पडिसाहरह'[2] ?
'पाणी णो डज्झेज्जा'[3] ?
दड्ढे किं भविस्सइ ?
दुक्खं ।
दुक्खं ति मण्णमाणा पडिसाहरह[4] ?
एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे ।
पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ॥

७८. तत्थ णं जे ते समणमाहणा एवमाइक्खंति[5], °एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—"सव्वे पाणा[6] °सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परितावेयव्वा किलामेयव्वा[7] उद्दवेयव्वा"—ते आगंतु[8] छेयाए ते आगंतु[9] भेयाए[10] ते आगंतु[11] जाइ-जरा-मरण-जोणिजम्मण-संसार-पुणब्भव-गब्भवास-भवपवंच-कलंकलीभागिणो भविस्संति । ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणाणं बहूणं तज्जणाणं बहूणं तालणाणं बहूणं अंदुबंधणाणं[12] बहूणं घोलणाणं बहूणं माइमरणाणं बहूणं पिइमरणाणं बहूणं भाइमरणाणं बहूणं भगिणीमरणाणं बहूणं भज्जामरणाणं बहूणं पुत्तमरणाणं बहूणं धूयमरणाणं बहूणं सुण्हामरणाणं बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पिय-विप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं[13] आभागिणो भविस्संति । अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत[14]-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो

---

[1] सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण° ।
[2] °पडिसाहरेह (क); कम्हा पाणिं णो पसारेह (चू) ।
[3] पाणी डज्झेज्ज (चू) ।
[4] पाणिं ण पसारेह (चू) ।
[5] सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति ।
[6] सं० पा०—पाणा जाव सत्ता ।
[7] आयारो ४।१,२०,२२,२३;५।१०१ सूयगडो १।५६,५७;२।१४ उल्लिखितसूत्रेषु एष पाठो नास्ति ।
[8,9] आगंतुं (क); आगंतं (ख) ।
[10] भेयाए जाव (क, ख); अत्रायं शब्दोनावश्यकः प्रतिभाति । चूर्णौ 'ते आगंतु छेयाए जाव कलंकलीभावभागिणो भविस्संति' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते । प्रत्योः संक्षिप्तपाठस्य पूर्णपाठस्य च मिश्रणं जातमिति प्रतीयते ।
[11] आगंतुं (क) ।
[12] अंदुबंधणाणं जाव (क, ख) अयमपि 'जाव' शब्दो नावश्यकः प्रतिभाति ।
[13] दुम्मणसाणं (क)।
[14] चतुरंत (क) ।

अणुपरियट्टिस्संति । ते णो सिज्झिस्संति णो बुज्झिस्संति[१] °णो मुच्चिस्संति णो परिणिव्वाइस्संति° णो सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे ।
पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे ।।

७९. तत्थ णं जे ते समणमाहणा एवमाइक्खंति[२], °एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—“सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण किलामेयव्वा ण उद्दवेयव्वा”—ते णो आगंतु छेयाए ते णो आगंतु भेयाए ‘ते णो आगंतु जाइ’[३]-जरा-मरण-जोणिजम्मण-संसार-पुणब्भव-गब्भवास-भवपवंच-कलंकलीभागिणो भविस्संति । ते णो बहूणं दंडणाणं[४] °णो बहूणं मुंडणाणं णो बहूणं तज्जणाणं णो बहूणं तालणाणं णो बहूणं अंदुबंधणाणं णो बहूणं घोलणाणं णो बहूणं माइमरणाणं णो बहूणं पिइमरणाणं णो बहूणं भाइमरणाणं णो बहूणं भगिणीमरणाणं णो बहूणं भज्जामरणाणं णो बहूणं पुत्तमरणाणं णो बहूणं धूयमरणाणं णो बहूणं सुण्हामरणाणं णो बहूणं दारिद्दाणं णो बहूणं दोहग्गाणं णो बहूणं अप्पियसंवासाणं णो बहूणं पिय-विप्पओगाणं° णो बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागिणो भविस्संति । अणाइयं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो णो अणुपरियट्टिस्संति । ते सिज्झिस्संति[५] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ।।

उवसंहार-पदं

८०. इच्चेतेहिं बारसहिं किरियाठाणेहिं वट्टमाणा जीवा णो सिज्झिंसु णो बुज्झिंसु णो मुच्चिंसु णो परिणिव्वाइंसु णो सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा णो करेंति वा णो करिस्संति वा ।

एयंसि[६] चेव तेरसमे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिंसु बुज्झिंसु मुच्चिंसु परिणिव्वाइंसु सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा ।।

८१. एवं से भिक्खू आयट्ठी आयहिए आयगुत्ते आयजोगी[७] आयपरक्कमे[८] आयरक्खिए आयाणुकंपए आयणिप्फेडए[९] आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

[१] सं० पा०—बुज्झिस्संति जाव णो सव्व° ।

[२] सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति ।

[३] जाव (क) ।

[४] सं० पा०—दंडणाणं जाव नो बहूणं ।

[५] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्व° ।

[६] एतम्मि (क) ।

[७] °जोगे (ख) ।

[८] × (ख, वृ) ।

[९] °प्फोडए (ख) ।

तइयं अज्झयणं

आहारपरिण्णा

उक्खेव-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु आहारपरिण्णा णामज्झयणे । तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा सव्वओ[1] सव्वावंति च णं लोगंसि 'चत्तारि बीयकाया एवमाहिज्जंति, तं जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया'[2] ।।

थावरकाय-पगरणं

पुढविजोणियरुक्खस्स आहार-पदं

२. तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा[3], 'तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा'[4], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं[5] णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा

---

१. सव्वाओ (क,चू) ।

२. नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—"वणस्सइकाइयाण पंचविहा बीजवक्कंती एवमाहिज्जइ, तं जहा—अग्गमूलपोरुक्खंधबीयरुहा छट्ठावि एगिंदिया संमुच्छिमा बीया जायंते" (वृ, चू) ।

३. पुढविवुक्कमा (क, ख, वृ); वृत्तिकृता सर्वत्र व्युत्क्रम —पदं व्याख्यातमस्ति, किन्तु चूर्णीकारेण सर्वत्र अवक्रमपदं व्याख्यातम् आयुर्वेदग्रन्थेष्वपि अस्मिन्नर्थे अवक्रान्तिशब्दो लभ्यते ।

४ °तदुवक्कमा (क, ख); °तदुव्वुक्कमा (वृ); केसिं चि आलावगो चेव एस णत्थि, जेसिं पि अत्थि तेसिं पि उक्तार्थं एव (चू) ।

५. प्रत्योः अत्र 'तेसिं' पाठो लभ्यते । असौ अशुद्धः प्रतिभाति । चूर्णौ वृत्तौ च 'तासिं' इति पाठो विद्यते ।

आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं[१] [तसपाणसरीरं ?][२]। 'णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति'[३]। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं[४] सारूविकडं[५] संतं ['सव्वप्पणत्ताए आहारेंति'[६]]।

---

१. वणप्फइ° (क)।

२. वनस्पतेरालापकानां पद्धतिद्वयं विद्यते । प्रथमायां पद्धतौ द्विचत्वारिंशत् आलापकाः सन्ति । द्वितीयस्यां च द्वात्रिंशत् आलापकाः । द्वयोः पद्धत्योः को भेदोऽस्तीति चूर्णिव्याख्यया न ज्ञातुं शक्यते । वृत्त्या दीपिकया च तत्रैका भेदरेखा खचितास्ति । प्रथमपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं' एतावान् पाठोस्ति । द्वितीयपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं'। अत्र 'तसपाणसरीरं' इति विशिष्टमस्ति । वृत्तिकारदीपिकाकाराभ्यां द्वितीयपद्धते र्व्याख्याया अन्ते उक्तवैशिष्ट्यस्य समर्थनं कृतमस्ति, यथा—त्रसानां प्राणिनां शरीरमाहारयन्त्येतदवसाने द्रष्टव्यम् (वृ)। त्रसानां शरीरमाहारयन्तीति अंते ज्ञेयम् (दीपिका)। हस्तलिखितादर्शेषु प्रथमपद्धतेरालापकाः पूर्ववद् वर्तन्ते । द्वितीयपद्धतेरालापकेषु 'तसपाणत्ताए विउट्टंति' इति वैशिष्ट्यमस्ति । द्रष्टव्यः ४४ सूत्रस्य पादटिप्पणगतः संक्षिप्तपाठः ।

यदि वृत्त्यनुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतियोनिकानां त्रसानां निरूपणं नान्यत्रोपलभ्यते ।

यदि च आदर्शानुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतेः त्रसप्राणशरीरस्य आहारनिरूपणं नान्यत्रोपलभ्यते ।

एतामुभयमुखीं समस्यां समाधातुं अस्माभिः प्रथमपद्धतेरालापकेषु 'तसपाणसरीरं' इति पाठः कोष्ठके नियोजितः, द्वितीयपद्धतेरालापकेषु च आदर्शानुसारी पाठः स्वीकृतः । 'तसपाणसरीरं' इति पाठस्य नियोजनं निराधारं नास्ति । 'णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति' इति पाठेन स्वयमेव त्रसप्राणशरीरस्याहारः प्रतिपादितो भवति । वृत्तिकारेणाप्यस्य समर्थनं क्रियते—किं बहुनोक्तेन ?, नानाविधानां त्रसस्थावराणां प्राणिनां यच्छरीरं तत्ते समुत्पद्यमानाः 'अचित्त' मिति स्वकायेनावष्टभ्य प्रासुकीकुर्वन्ति (वृ)। यदि वनस्पतिः त्रसप्राणशरीस्याहारं न कुर्यात् तर्हि उक्तपाठस्य संगतिः कथं स्यात् ? अप्कायादिसूत्रेष्वपि इत्थमेव लभ्यते । तेन उक्तपाठनियोजनं सम्यक्प्रतिभाति ।

३. नासौ पाठश्चूर्णौ व्याख्यातः । तत्रासौ पाठान्तररूपेण उल्लिखितोस्ति, नागार्जुनीयास्तु अवरं च णं असंबद्धं पुढविसरीरं जाव णाणाविधाणं तसथावराणं पाणाणं शरीरं अचित्तं कुव्वंति जंतवो, पुव्वविउट्टं चेव जीवेणं जीवसहगतं आहारत्ताए गेण्हति, तंपि जया सरीरत्ताए परिणामेति तदा अचेतनीकरोति,कथं वा अण्णेण जीवेण परिग्गहितं ताव अण्णसरीरत्ताए परिणमेति ? जया पुण परिचत्तं भवति, जीवेण जेणेव सरीरगं णिव्वत्तितमासी तदा अण्णो जीवो आहरेति, (चू)।

४. विप्प° (क, ख)।

५. सारूवियकडं (क, ख)।

६. आदर्शयोः 'संतं' इति पदस्याग्रे क्रियापदं

‘अवरे वि य णं’[1] तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा[2], तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा[3], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[4] पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा,[5] तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा[6], कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[7] रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं[तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं[8] पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा[9] °णाणागंधा

नोपलभ्यते। चूर्णौ ‘संतं’ इदि पदं नास्ति व्याख्यातं, किन्तु ‘सव्वप्पणत्ताए आहारेंति’ इति क्रियापदं लभ्यते। वृत्तौ च सत्पदस्याग्रे तन्मयतां प्रतिपद्यते इति विवृतमस्ति।

[1] नागार्जुनीयास्तु—एवं सम्प्रतिपन्नाः-अवरे वि य णं, कतरं? संबद्धमसंबद्धं वा, जो पुढविकाइयसरीरेहिं तस्यापतितैर्भोगैः संश्लेष इत्यर्थः, तेसिं तं पुढवितप्पढमताए सिणेहमाहारयंति, असंबद्धं पुण जं पासत्तो पुढविसरीरं वा ते पुण पण्णत्ती आलावगा वि भणंति (चू)।

[2] रुक्खवुक्कमा (ख, वृ)।

[3] तदुवक्कमा (ख, वृ)।

[4] °वक्कम (क); °वुक्कमा (ख, वृ)।

[5] रुक्खवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

[6] तदुवक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

[7] तत्थवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

[8] सरीरगं (ख)।

[9] सं० पा०—णाणावण्णा जाव ते जीवा।

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया °। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं[1] •पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं[2] •पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं° बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा[3] •णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया °णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं

६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए[4] विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[6] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[7]

---

[1] सं० पा०—सरीरं जाव सारूविकडं ।

[2] सं० पा०—पवालाणं जाव बीयाणं ।

[3] सं० पा०—णाणागंधा जाव णाणाविह० ।

[4] अज्झोरुह ° (क) सर्वत्र ।

[5] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।

[6] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[7] सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं ।

°अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति । ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं[1] अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[2] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[3] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।

८. अहावरं पुरक्खायं - इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[4] °अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[6] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[7] °अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए[8] °कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए° बीयत्ताए विउट्टंति ।

---

[1] अज्झारोहजोणियाणं (ख), अशुद्धं प्रतिभाति ।

[2] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।

[3] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[4] सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं ।

[5] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।

[6] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[7] सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणियाणेणं ।

[8] सं० पा०—मूलत्ताए जाव बीयत्ताए ।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति[1]—°ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]° ॥

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं[2] °कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं° बीयाणं सरीरा णाणावण्णा[3] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

पुढविजोणियतणस्स आहार-पदं

१०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[4] °पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा° णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति[5]—°ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया°। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

११. [6]°अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ॥

---

[1] सं० पा०—सिणेहमाहारेंति जाव अवरे।

[2] सं० पा०—मूलाणं जाव बीयाणं।

[3] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[4] सं० पा०—पुढविसंभवा जाव णाणाविह°।

[5] सं० पा०—सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा।

[6] सं० पा०—एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

१२. [1]°अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ॥

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

१३. [2]°अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवकम्मा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

पुढविजोणियओसहिस्स-आहार-पदं

१४. [3]°अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा,

---

[1] सं० पा०—एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति। तणजोणियं तणसरीर च आहारेंति जाव मक्खायं।

[2] सं० पा०—एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति। ते जीवा जाव मक्खायं।

[3] सं० पा०—एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा।

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

१५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा, पुढविजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

१६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

१७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहि-

वक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

पुढविजोणियहरियस्स आहार-पदं

१८. [1]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु हरियत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

१९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं

---

[1] सं० पा०—एवं हरियाण वि चत्तारि आलावगा ।

सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंत ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया. ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

पुढविजोणियकुहणस्स आहार-पदं

२२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[1] °पुढविवक्कमा,

---

[1] १. सं० पा०—पुढविसंभवा जाव कम्म° ।

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए[१] कायत्ताए कुहणत्ताए कंदुकत्ताए[२] उव्वेहलियत्ताए णिव्वेहलियत्ताए सछ [त्त ?] त्ताए[३] छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए[४] कूरत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[५] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं आयाणं[६] °कायाणं कुहणाणं कंदुकाणं उव्वेहलियाणं णिव्वेहलियाणं सछत्ताणं छत्तगाणं वासाणियाणं° कूराणं सरीरा णाणावण्णा[७] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं। 'एक्को चेव आलावगो, सेसा तिण्णि णत्थि'[८] ॥

उदगजोणियरुक्खस्स आहार-पदं

२३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[९] °उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[१०] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा[११] °णाणागंधा

---

[१] आयत्ताए वायत्ताए (क)।

[२] कुदुकत्ताए (क); कंदुत्ताए (ख)।

[३] सछत्ताए सज्झत्ताए (क)।

[४] वासि° (क)।

[५] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[६] आयत्ताणं (ख); सं० पा०—आयाणं जाव कूराणं।

[७] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[८] कुहणेषु त्वेक एवालापको द्रष्टव्यः, तद्योनिकानामपरेषामभावादिति भावः (वृ)।

[९] सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।

[१०] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[११] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति० मक्खायं ॥

२४. •[1]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाण-

---

[1] सं० पा०—जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारोहाण वि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के।

सरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं

२७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्त। रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

२८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

२९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं

तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति। ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

३०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

उदगजोणियतणस्स आहार-पदं

३१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

३२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

३३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

३४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

उदगजोणियओसहिस्स आहार-पदं

३५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

३६. अहावर पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।

३७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तवक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं

कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

३८. अहावरं पुरक्खायं - इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

उदगजोणियहरियस्स आहार-पदं

३९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीर तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

४२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा, कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं [1]॥

उदगजोणियसेवालादिस्स आहार-पदं

४३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[1] °उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु[2] उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलंबुगत्ताए हढत्ताए[3] कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए णलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगंधियत्ताए पोंडरीयत्ताए महापोंडरीयत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए कल्हारत्ताए कोकणयत्ताए अरविंदत्ताए तामरसत्ताए भिसत्ताए भिसमुणालत्ताए पुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए[4] विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति— ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं अवगाणं पणगाणं सेवालाणं कलंबुगाणं हढाणं कसेरुगाणं कच्छभाणियाणं उप्पलाणं पउमाणं कुमुयाणं णलिणाणं सुभगाणं सोगंधियाणं पोंडरीयाणं महापोंडरीयाणं सयपत्ताणं सहस्सपत्ताणं कल्हाराणं कोकणयाणं अरविंदाणं तामरसाणं भिसाणं भिसमुणालाणं पुक्खलाणं पुक्खलच्छिभगाणं[6] सरीरा णाणावण्णा[7] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।

रुक्खजोणियतसपाणस्स आहार-पदं

४४. [8]°अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा,

---

[1] सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म° ।

[2] × (क, ख) ।

[3] हठत्ताए (क) ।

[4] पोक्खलत्थिभगत्ताए (क) ।

[5] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं ।

[6] पोक्खलत्थिभगत्ताणं (क, ख) ।

[7] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[8] सं० पा०—अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तेहिं चेव (१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं, (२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं, (३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं । (४) रुक्खजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं; (५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं, (६) अज्झोरुहजोणिएहिं जाव बीएहिं । (७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं, (८) तणजोणिएहिं तणेहिं, (९) तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं । (१०-१२) एव ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा । (१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए[1] विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

४५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।,

---

आलावगा ।

(१६) पुढविजोणिएहिं आएहिं जाव कूरेहिं ।

(१) उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं, (२) रुक्खजाणिएहिं रुक्खेहिं, (३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं ।

(४-६) एवं अज्झोरुहेहिं वि तिण्णि ।

(७-९) तणेहिं वि तिण्णि आलावगा ।

(१०-१२) ओसहीहिं वि तिण्णि ।

(१३-१५) हरिएहिं वि तिण्णि ।

(१६) उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं, उदगजोणियाणं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झोरुहाणं तणाणं ओसहीणं हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कुरवाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं ।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कुरवजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोण्यिाणं तसपाणाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[1] चूर्णौ वृत्तौ च सर्वत्रापि नासौ व्याख्यातः।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

४६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

४७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

४८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

४९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

५१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

५२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहि पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

५४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

५५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

५७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

५८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

कुहणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं आएहिं काएहिं कुहणेहिं कंदुकेहिं उव्वेहलिएहिं णिव्वेहलिएहिं सछत्तेहिं छत्तगेहिं वासाणिएहिं कूरेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं आयाणं कायाणं कुहणाणं कंदुकाणं उव्वेहलियाणं णिव्वेहलियाणं सछत्ताणं छत्तगाणं वासाणियाणं कूराणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं आयजोणियाणं कायजोणियाणं कुहणजोणियाणं कंदुकजोणियाणं उव्वेहलियजोणियाणं णिव्वेहलियजोणियाणं सछत्तजोणियाणं छत्तगजोणियाणं वासाणियजोणियाणं कूरजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं। एक्को चेव आलावगो, सेसा दो णत्थि।

रुक्खजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति - ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वकम्मा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवग्गा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

६५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीर वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तणजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं उदगजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

७०. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणियाणं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाणं ओसहीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं ओसहिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

७१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसंभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा ओसहिजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

७४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा,

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति – ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

सेवालादिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कम्मा उदगजोणिएहिं उदगेहिं अवगेहिं पणगेहिं सेवालेहिं कलंबुगेहिं हढेहिं कसेरुगेहिं कच्छभाणिएहिं उप्पलेहिं पउमेहिं कुमुएहिं णलिणेहिं सुभगेहिं सोगंधिएहिं पोंडरीएहिं महापोंडरीएहिं सयपत्तेहिं सहस्सपत्तेहिं कल्हारेहिं कोकणएहिं अरविंदेहिं तामरसेहिं भिसेहिं भिसमुणालेहिं पुक्खलेहिं पुक्खलच्छिभगेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं अवगाणं पणगाणं सेवालाणं कलंबुगाणं हढाणं कसेरुगाणं कच्छभाणियाणं उप्पलाणं पउमाणं कुमुयाणं णलिणाणं सुभगाणं सोगंधियाणं पोंडरीयाणं महापोंडरीयाणं सयपत्ताणं सहस्सपत्ताणं कल्हाराणं कोकणयाणं अरविंदाणं तामरसाणं भिसाणं भिसमुणालाणं पुक्खलाणं पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं पणगजोणियाणं सेवालजोणियाणं कलंबुगजोणियाणं हढजोणियाणं कसेरुगजोणियाणं कच्छभाणिय-

जोणियाणं उप्पलजोणियाणं पउमजोणियाणं कुमुयजोणियाणं णलिणजोणियाणं सुभगजोणियाणं सोगंधियजोणियाणं पोंडरीयजोणियाणं महापोंडरीयजोणियाणं सयपत्तजोणियाणं सहस्सपत्तजोणियाणं कल्हारजोणियाणं कोकणयजोणियाणं अरविंदजोणियाणं तामरसजोणियाणं भिसजोणियाणं भिसमुणालजोणियाणं पुक्खलजोणियाणं पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं० ॥

तसकाय-पगरणं

मणुस्सस्स आहार-पदं

७६. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं मणुस्साणं, तं जहा—कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं[१] । तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं[२] इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए[३], एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ । ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति । तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति ।

'ते जीवा माउओयं[४] पिउसुक्कं[५] तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति'[६] । तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ[७] आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति । अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[८], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा इत्थिं वेगया[९] जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति । ते जीवा डहरा समाणा 'माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा ओयणं कुम्मासं'[१०] तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[११] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं

---

[१] मिलक्खुयाणं (क) ।

[२] अहावकासेणं (क, ख) ।

[३] व्या० वि०—व्याकरणदृष्ट्या सप्तम्येकवचने दीर्घत्वं स्यात् ।

[४] माओउयं (चू) ।

[५] पिय° (ख) ।

[६] चूर्णौ असौ पाठः —माओउयं सोणियं पितुः शुक्रम्—एतावानेव व्याख्यातोस्ति, वृत्तौ च नास्ति व्याख्यातः ।

[७] रसविहीओ (क); रसविगईओ (चू) ।

[८] पलियागमणुचिण्णा (क); पलिभागमणुचिन्ना (ख) ।

[९] वेगइया (ख) सर्वत्र ।

[१०] चूर्णौ 'माउक्खीर' शब्दस्याऽनन्तरमेव 'सप्पि' शब्दः व्याख्यातः, यथा—खीरं मातुः स्तन्यं, सप्पि घृत वा णवणीतं वा । वृत्तौ 'वुड्ढा' इति शब्दस्याऽनन्तरं–नवनीतदध्योदनादिकं यावत्कुल्माषान् भुञ्जते । प्रतिषु नेत्थं लभ्यते ।

[११] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।

वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं॰ सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं मणुस्सगाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं सरीरा णाणावण्णा[1] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोवण्णगा॰ भवंति त्ति मक्खायं॥

जलचरस्स आहार-पदं

७७. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं जलचराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—मच्छाणं[2] •कच्छभाणं गाहाणं मगराणं॰ सुंसुमाराणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[3]•कडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभग्र-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति,॰ तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[4], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति, से[5] अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा आउसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[6] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं॰ संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छाणं[7] •कच्छभाणं गाहाणं मगराणं॰ सुंसुमाराणं सरीरा णाणावण्णा[8] •णाणागंधा

---

[1] सं॰ पा॰—णाणावण्णा जाव भवंति।

[2] सं॰ पा॰—मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं।

[3] सं॰ पा॰--कम्म तहेव जाव तओ।

[4] पलिभागमणुचिन्ना (क); पलितागमणुचिन्ना (ख)।

[5] जे (क)।

[6] सं॰ पा॰—पुढविसरीरं जाव संतं।

[7] सं॰ पा॰—मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं।

[8] सं॰ पा॰—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

चउप्पयथलचरस्स आहार-पदं

७८. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्फयाणं[1] । तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[2] °कडाए जोणिए, एत्थ णं° मेहुणवत्तिए णामं संजोगे समुप्पज्जइ । ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति । तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए[3] °णपुंसगत्ताए° विउट्टंति ।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं[4] °तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति । तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति । अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा° इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति । ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं चउप्पयथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एगखुराणं[6] °दुखुराणं गंडीपदाणं° सणप्फयाणं सरीरा णाणावण्णा[7] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

उरपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं

७९. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं । तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स[8] °य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं

---

[1] सणपयाणं (क) ।

[2] सं० पा०—कम्म जाव मेहुणवत्तिए ।

[3] सं० पा०—पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति ।

[4] सं० पा०—एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थिं ।

[5] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं ।

[6] सं० पा०—एगखुराणं जाव सणप्फयाणं ।

[7] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[8] सं० पा० - पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं° ।

मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेंति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा ° अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं 'वेगया जणयंति'[1], णपुंसगं 'वेगया जणयंति'[2]। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अहीणं[4] °अवगराणं आसालियाणं° महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा[5] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

भुयपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं

८०. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—गोहाणं णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं[6] विस्संभराणं मूसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं विरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य [7]°कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे

---

[1],[2]. पि (क, ख)।

[3]. स० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[4]. सं० पा०—अहीणं जाव महोरगाणं

[5]. सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[6]. घरकोल्लि° (क)।

[7]. सं० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं।

उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलचरतिरिक्खजोणियाणं गोहाणं[1] °णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं विस्संभराणं मूसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं विरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

खहचरस्स आहार-पदं

८१. अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं[2], तं जहा—चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए °[3]पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति°। ते जीवा डहरा समाणा माउगायसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेणं[4] वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

---

[1] सं० पा०—गोहाणं जाव मक्खायं।

[2] खचर° (क)।

[3] सं० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं°।

[4] °पुव्वेणं च णं (क)।

[5] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं खहचरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं चम्मपक्खीणं[1] °लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

विगलिंदियस्स आहार-पदं

८२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा[2] णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अणुसूयगाणं[4] सरीरा णाणावण्णा[5] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

८३. °[6]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं मणुस्साणं तिरिक्खजोणियाण य सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा दुरूवसंभवत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं मणुस्साणं तिरिक्खजोणियाण य सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

---

[1] सं० पा०—चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं।

[2] तत्थोवक्कमा (ख); ८२ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र उपक्रम्य' तथा ८५ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र व्युत्क्रम्य' इति व्याख्यातमस्ति। अन्यत्र सर्वत्रापि 'तत्र व्युत्क्रमा' इति व्याख्यातम्। लिपिदोषेणैकरूपस्यापि पाठस्य भिन्नता जातेति प्रतीयते। सर्वत्रापि तत्थावक्कम्म (तत्रावक्रम्य) इति पाठो युज्यते। किन्तु आदर्शेऽन्यत्रासौ पाठो नोपलब्धस्तेन प्रायः सर्वत्रापि 'तत्थवक्कमा' इति पाठः स्वीकृतः।

[3] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[4] अणुसूयाणं (क)।

[5] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[6] सं० पा०—एवं दुरूवसंभवत्ताए एवं खुरदुगत्ताए।

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मणुस्सतिरिक्खजोणियाणं दुरूवसंभवाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

८४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कम्मा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा खुरदुगत्ताए[1] विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं खुरदुगाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

आउकायस्स आहार-पदं

८५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[2] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा [उदगत्ताए विउट्टंति ?]। तं सरीरगं वायसंसिद्धं वायसंगहियं वायपरिगयं उड्ढंवाएसु उड्ढंभागी भवइ, अहेवाएसु अहेभागी भवइ, तिरियंवाएसु तिरियभागी भवइ, तं जहा—उस्सा[3] हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[4] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

---

[1] खुरुडुगत्ताए (चू)।

[2] सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

[3] ओसा (क)।

[4] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं उस्साणं[१] °हिमगाणं महिगाणं करगाणं हरतणुगाणं° सुद्धोदगाणं सरीरा णाणावण्णा[२] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

८६. अहावरं पुरक्खायं— इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[३] °उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[४] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावण्णा[५] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

८७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[६] °उदगसंभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसि उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[७] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाण सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावण्णा[८] °णाणागंधा णासारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

८८. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[९] °उदगसंभवा उदगवक्कमा,

---

[१] सं० पा०—उस्साणं जाव सुद्धोदगाणं।

[२] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[३] सं० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।

[४] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[५] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[६] सं० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°; उदगजोणियाणं (ख) अशुद्धं प्रतिभाति।

[७] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[८] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[९] सं० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°।

तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[1] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा[2] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

अगणिकायस्स आहार-पदं

८९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[3] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्ते वा अगणिकायत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[4] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा[5] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

९०. °[6]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं।

---

[1] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[2] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[3] सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

[4] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

[5] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

[6] सं० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं।

णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

९१. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

९२. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसंभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्ससंभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अगणिजोणियाणं अगणीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अगणिजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

वाउकायस्स आहार-पदं

९३. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणिया-

---

[1] सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

णेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टंति ।

[1]ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६४. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणिथाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

६५. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]

अवरे वि य णं तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

---

[1] सं० पा०—जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा ।

९६. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं वाउजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

पुढविकायस्स आहार-पदं

९७. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवित्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए जाव[2] सूरकंतत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

---

[1] सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

[2] जाव शब्दस्य पूरकपाठः—इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ—

१. पुढवी य सक्करा वालुया य,
उवले सिला य लोणूसे ।
अय तउय तम्ब सीसग,
रुप्प सुवण्णे य वइरे य ॥

२. हरियाले हिंगुलुए,
मणोसिला सासगंजणपवाले ।
अब्भपडलब्भवालुय,
बायरकाए मणिविहाणा ॥

३. गोमेज्जए य रुयए,
अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगय मसारगल्ले,
भुयमोयगइंदनीले य ॥

४. चंदणगेरुयहंसगब्भ,
पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे ।
चंदप्पभवेरुलिए,
जलकंते सूरकंते य ॥

एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ—(क, ख) । उल्लिखितसंग्रहगाथानां चूर्णौ वृत्तौ च कोपि संकेतो नोपलभ्यते ।

[3] सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं ।

परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं[1] •सक्कराणं वालुयाणं जाव° सूरकंताणं सरीरा णाणावण्णा[2] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

९८. [3]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा तसथावरजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

९९. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथादराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ।।

१००. अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु तसपाणत्ताए विउट्टंति ।

---

[1] सं० पा०—पुढवीणं जाव सूरकंताणं ।

[2] सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।

[3] सं० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं ।

ते जीवा तासिं पुढविजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

निक्खेव-पदं

१०१. अहावरं पुरक्खायं—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, सरीरजोणिया सरीरसंभवा सरीरवक्कमा, सरीराहारा कम्मोवगा कम्मणियाणा कम्मगइया कम्मठिइया कम्मणा[1] चेव विप्परियासमुवेंति ॥

१०२. सेवमायाणह[2] सेवमायाणित्ता[3] आहारगुत्ते समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] कम्मुणा (क)।

[2], [3]. से एव° (ख)।

चउत्थं अज्झयणं

पच्चक्खाणकिरिया

पइण्णा-पदं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु पच्चक्खाणकिरियाणामज्झयणे। तस्स णं अयमट्ठे—आया अपच्चक्खाणी यावि भवइ। आया अकिरियाकुसले यावि भवइ। आया मिच्छासंठिए यावि भवइ। आया एगंतदंडे यावि भवइ। आया एगंतबाले यावि भवइ। आया एगंतसुत्ते यावि भवइ। आया अवियार-मण-वयण-काय-वक्के यावि भवइ। आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय[1]-पावकम्मे यावि भवइ।

एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते। से बाले अवियार-मण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ॥

चोयगस्स अक्खेव-पदं

२. तत्थ चोयए पण्णवगं एवं वयासी—असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण[2]-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे णो कज्जइ।

कस्स णं तं हेउं ?

चोयए एवं ब्रवीति[3]—अण्णयरेणं मणेणं पावएणं मणवत्तिए[4] पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरीए वईए पावियाए वइवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरेणं

---

[1] °अपच्चक्खाय (ख)।

[2] वयस (क, ख)।

[3] बवीति (क्व)।

[4] °पत्तिए (क)।

काएणं पावएणं कायवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, हणंतस्स समणक्खस्स सवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि पासओ—एवंगुणजातीयस्स पावे कम्मे कज्जइ।

पुणरवि चोयए एवं ब्रवीति—तत्थणं जेते एवमाहंसु—असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—[तत्थ णं जे ते एवमाहंसु][1] मिच्छं ते एवमाहंसु ॥

हेउ-पदं

३. तत्थ पण्णवए चोयगं एवं वयासी—जं मए पुव्वं वुत्तं असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—तं सम्मं।

कस्स णं तं हेउं ?

आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[2] °आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तसकाइया। इच्चेतेहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे, णिच्चं पसढ-विओवात[3]-चित्त-दंडे, तं जहा—‘पाणाइवाए[4] °मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे° परिग्गहे कोहे[5] °माणे मायाए लोहे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरईए मायामोसे° मिच्छादंसणसल्ले’[6] ॥

---

[1] एतत् पुनरुक्तं वर्तते तेन कोष्ठके विन्यस्तम्।

[2] सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।

[3] विउवाय (क, ख)।

[4] सं० पा०—पाणाइवाए जाव परिग्गहे।

[5] सं० पा०—कोहे जाव मिच्छा°।

[6] प्राणातिपातादारभ्य मिथ्यादर्शनशल्यपर्यन्तं संक्षिप्तपाठो वर्तते। चूर्णिवृत्त्योरनुसारेण स एवं विस्तृतो भवति—पाणाइवाए आया अपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपाणाइवायचित्तदंडे भवइ। मुसावाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमुसावायचित्तदंडे भवइ। अदिण्णादाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढअदिण्णादाणचित्तदंडे भवइ। मेहुणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमेहुणचितदंडे भवइ। परिग्गहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपरिग्गहचित्तदंडे भवइ। कोहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढकोहचित्तदंडे भवइ। माणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावक्कमे णिच्चं पसढमाणचित्तदंडे भवइ। मायाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमायचित्तदंडे भवइ। लोहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढलोहचित्तदंडे भवइ। पेज्जे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पात्रकम्मे णिच्चं पसढपेज्जचित्तदंडे

दिट्ठंत-पदं

४. आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठंते पण्णत्ते—से जहाणामए वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूण वहिस्सामित्ति पहारेमाणे।

से किं णु हु णाम से वहए 'तस्स वा'[1] गाहावइस्स तस्स[2] वा गाहावइपुत्तस्स तस्स[3] वा रण्णो तस्स[4] वा रायपुरिसस्स[5] खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामित्ति पहारेमाणे'[6] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[7]-चित्तदंडे भवइ? एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरे?

चोयए—हंता भवइ॥

उवणय-पदं

५. आचार्य आह—जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो तस्स वा रायपुरिसस्स खणं णिदाए पविसिस्सामि खणं लद्धूण वहिस्सामित्ति[8] पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[9]-चित्तदंडे, एवामेव बाले वि सव्वेसिं पाणाणं[10] °सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा

भवइ। दोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढदोसचित्तदंडे भवइ। कलहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढकलहचित्तदंडे भवइ। अब्भक्खाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढअब्भक्खाणचित्तदंडे भवइ। पेसुण्णे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपेसुण्णचित्तदंडे भवइ। परपरिवाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढपरपरिवायचित्तदंडे भवइ। अरइरईए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढअरइरईचित्तदंडे भवइ। मायामोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमायामोसचित्तदंडे भवइ। मिच्छादंसणसल्ले आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्चं पसढमिच्छादंसणसल्लचित्तदंडे भवइ।

[1] × (ख)।

[2], [3], [4]. × (ख)।

[5] °पुरिसस्स वा (ख)।

[6] नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—'अप्पणो अक्खणयाए तस्स वा पुरिसस्स छिद्दं अलभमाणे णो वहेइ, तं जया मे खणो भविस्सइ तस्स पुरिसस्स छिद्दं लभिस्सामि तया मे स पुरिसे अवस्सं वहेयव्वे भविस्सइ, एवं मणो पहारेमाणे (चू, वृ)।

[7] विउवाय (क, ख)।

[8] °मीति (क)।

[9] वित्तिवाय (क)।

[10] सं० पा०—पाणाणं जाव सव्वेसिं।

सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय[1]-चित्तदंडे, तं जहा—पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले[3] ।

एस[4] खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते 'यावि भवइ'[5] ।

से बाले अवियारमण-वयण[6]-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ ।।

णिगमण-पदं

६. जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स[7] °तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो° तस्स वा रायपुरिसस्स 'पत्तेयं-पत्तेयं'[8] 'चित्तं समादाय'[9] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे भवइ, एवामेव बाले सव्वेसिं पाणाणं[10] °सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं पत्तेयं-पत्तेयं चित्तं समादाय दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे भवइ ।।

चोयगस्स अक्खेव-पदं

७. 'णो इणट्ठे समट्ठे'[11]—इह खलु बहवे पाणा, जे इमेणं सरीरसमुस्सएणं णो दिट्ठा वा सुया वा णाभिमया[12] वा विण्णाया वा, जेसिं णो पत्तेयं-पत्तेयं 'चित्तं समादाय'[13] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिए णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडे, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[14] मिच्छादंसण-सल्ले'[15] ।।

---

[1] विउवाय (क, ख) ।

[2] सू० २।४।३ ।

[3] णिच्चं पसढपाणाइवायचित्तदंडे णिच्चं पसढ-मुसावायचित्तदंडे, णिच्चं पसढअदिण्णादाण-चित्तदंडे एवं 'मिच्छादंसणसल्ल' पर्यन्तं पाठ-योजना कार्या । द्रष्टव्यम्—तृतीयसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम् ।

[4] एवं (ख) ।

[5] प्रथम सूत्रे एतत्तुल्यवाक्ये 'यावि भवइ' इति पाठांशो नास्ति ।

[6] वयस (क) ।

[7] सं० पा०—गाहावइस्स जाव तस्स ।

[8] पत्तेयं (क, ख) ।

[9] चित्तसमादाए (क, ख) ।

[10] सं० पा०—पाणाणं जाव सव्वेसिं ।

[11] णो इणत्थे समत्थे चोयकः (क); णो इणट्ठे चोदकः (ख) ।

[12] णाभिमुत्ता (क) ।

[13] चित्तसमादाए (क, ख) ।

[14] सू० २।४।३ ।

[15] द्रष्टव्यम्—पंचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पाद-टिप्पणम् ।

सण्णि-असण्णि-दिट्ठंत-पदं

८. आचार्य आह—तत्थ[1] खलु भगवया दुवे दिट्ठंता पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिदिट्ठंते य असण्णिदिट्ठंते य ॥

९. से किं तं सण्णिदिट्ठंते ?

सण्णिदिट्ठंते—जे इमे सण्णिपंचिंदिया पज्जत्तगा। एतेसि णं छज्जीवणिकाए पडुच्च[2], [पइण्णं कुज्जा[3] ?] ॥

१०. से एगइओ पुढविकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं पुढविकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से 'य तेणं'[4] पुढविकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ[5] पुढविकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ॥

११. [6]से एगइओ आउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं आउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं आउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ आउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ॥

१२. से एगइओ तेउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं तेउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं तेउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ तेउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ॥

१३. से एगइओ वाउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ - एवं खलु अहं वाउकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं वाउकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि।

---

[1] अत्र पूरकपाठरूपेण चूर्णिगतविवरणं लभ्यते—एवं चोदएण वुत्ते पण्णवतो भणति—जइ वि तस्स अपच्चक्खाणियस्स अणवकारेसु अणुवजुज्जमाणेसु यतः सन्निकृष्टेसु विप्रकृष्टेसु वधचित्तं ण उप्पज्जति तहा वि सो तेसु अविरति प्रत्ययादमुक्तवैरो भवति।

[2] पडुच्च, तं जहा—-पुढविकायं जाव तसकायं (क, ख); व्याख्यांशोयं प्रतीयते।

[3] एवं भूतां प्रतिज्ञां—नियमं कुर्यात्। तद्यथा—अहं षट्सु जीवनिकायेषु मध्ये पृथिवीकायेनैवैकेन वालुकाशिलोपललवणादि स्वरूपेण 'कृत्य'—कार्यं कुर्यां, स चैवं कृतप्रतिज्ञस्तेन, तस्मिन् तस्मात्तं वा करोति कारयति च (वृ)।

[4] एतेणं (ख)।

[5] ताओ (क, ख)।

[6] सं० पा०—एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्वं।

से य तओ वाउकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१४. से एगइओ वणस्सइकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वणस्सइकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं वणस्सइकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ वणस्सइकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१५. से एगइओ तसकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं तसकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेणं तसकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ तसकायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ° ॥

१६. से एगइओ छज्जीवणिकाएहिं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। तस्स णं एव भवइ—एवं खलु छज्जीवणिकाएहिं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमेहिं वा इमेहिं वा। से य तेहिं छहिं जीवणिकाएहिं[1] °किच्चं करेइ वि° कारवेइ वि। से य तेहिं छहिं जीवणिकाएहिं असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले'[3]।

एस खलु भगवया अक्खाए अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय[4]-पावकम्मे सुविणमवि 'ण पस्सइ'[5] पावे य से कम्मे कज्जइ।

—से तं सण्णिदिट्ठंते ॥

---

[1] सं० पा०—जीवणिकाएहिं जाव कारवेइ।

[2] सू० २।४।३।

[3] एवं मुसावाते वि, ण तस्स एवं भवति—इदं मया वक्तव्यमनृतं इदं नो वत्तव्वमिति, से य ततो मुसावायातो तिविहेण असंजते। अदिण्णादाणे इदं मया घेत्तव्वं अमुगस्स ण। मेथुणं इमं सेवियव्वं इमं ण। परिग्गहे इमं घेत्तव्वं इमं ण। कोहे इमस्स रूसितव्वं इमस्स ण। एवं जाव परपरिवाए इमं वा विभासा। मिच्छादंसणे इमं तत्त्वमिति शेषमतत्त्वमिति (चू)। अस्य चूर्णिविवरणस्याधारेण निम्न-निर्दिष्टा पाठपद्धतिः प्रजायते—से एगइओ मुसं वयइ वि वाएइ वि। तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं सव्वदव्वेसु मुसं वएमि वि, वाएमि वि। णो चेव णं से एवं भवइ—इमं वत्तव्वं, इमं ण वत्तव्वं। से य सव्वदव्वेसु मुसं वयइ वि, वाएइ वि। से य णं तओ मुसावायाओ असंजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे। एवं 'मिच्छादंसण-सल्ल' पर्यन्तं पाठयोजना कार्या।

[4] °अपच्चक्खाय (क, ख)।

[5] अपस्सओ (क, ख)।

१७. से किं तं असण्णिदिट्ठंते ?

असण्णिदिट्ठंते—जे इमे असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया[1] •आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया° वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा। जेसिं णो तक्का इ वा सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई इ वा सयं वा करणाए, अण्णेहिं वा कारवेत्तए, करेंतं वा समणुजाणित्तए, ते वि णं बाला सव्वेसिं पाणाणं[2] •सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं° सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ता[3] वा जागरमाणा[4] अमित्तभूया मिच्छासंठिया णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडा, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[5] मिच्छादंसणसल्ले'[6]।

इच्चेवं जाणे[7] णो चेव मणो णो चेव वई पाणाणं[8] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए, ते दुक्खण-सोयण[9] •जूरण - तिप्पण - पिट्टण°-परितप्पण-वह-बंध[10]°-परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति।

इति[11] खलु ते[12]असण्णिणो वि संता अहोणिसं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति जाव[13] अहोणिसं मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ॥

सण्णि-असण्णि-दिट्ठंतस्स परिसेस-पदं

१८. सव्वजोणिया वि खलु सत्ता—सण्णिणो हुच्चा असण्णिणो होंति, असण्णिणो हुच्चा सण्णिणो होंति, होच्चा सण्णी अदुवा असण्णी। तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता[14] असंमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असण्णिकायाओ वा सण्णिकायं संकमंति, सण्णिकायाओ वा असण्णिकायं संकमंति, सण्णिकायाओ वा सण्णिकायं संकमंति, असण्णिकायाओ वा असण्णिकायं संकमंति ॥

१९. जे एए सण्णी वा असण्णी वा सव्वे ते मिच्छायारा णिच्चं पसढ-विओवाय-चित्तदंडा, तं जहा—'पाणाइवाए जाव[15] मिच्छादंसणसल्ले'[16] ॥

---

[1] सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।

[2] सं० पा०—पाणाण जाव सव्वेसिं।

[3] सुत्ते (क, ख)।

[4] जागरमाणे (क, ख)।

[5] सू० २।४।३।

[6] द्रष्टव्यम्—पञ्चमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचनं कार्यमिति विशेषः।

[7] जाण (क); जाव (ख)।

[8] सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं।

[9] सं० पा०—सोयण जाव परितप्पण।

[10] बंधण (क, चू)।

[11] इह (क)।

[12] ये (वृ)।

[13] सू० २।४।३।

[14] अविधुणित्ता (क); अविधूणिता (ख)।

[15] सू० २।४।३।

[16] द्रष्टव्यम्—पंचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचनं कार्यमिति विशेषः।

२०. एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते।

से बाले अवियारमण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पासइ, पावे य से कम्मे कज्जइ ॥

संजय-पदं

२१. चोयगः—से किं कुव्वं ? किं कारवं ? कहं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे भवइ ?

आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकायाहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाइया[1] °आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तसकाइया। से जहाणामए मम अस्सातं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[2] वा कवालेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा[3] °हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा° उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं[4] दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा[5] °अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा° कवालेण वा आतोडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा तालिज्जमाणा वा[6] °परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा° उवद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति,—एवं णच्चा सव्वे पाणा[7] °सव्वे भूया सव्वे जीवा° सव्वे सत्ता ण हंतव्वा[8] °ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा° ण उद्दवेयव्वा। एस धम्मे धुवे णिइए सासए समेच्च लोगं खेत्तण्णेहिं पवेइए ॥

२२. एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव[9] मिच्छादंसणसल्लाओ ॥

२३. से भिक्खू णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं, णो वमणं, णो धूवणेत्तं पिआइए[10] ॥

---

[1] सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।

[2] लेलूण (क, ख)।

[3] सं० पा०—आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज°।

[4] हिंसक्कारं (क, ख)।

[5] सं० पा०—दंडेण वा जाव कवालेण।

[6] सं० पा०—तालिज्जमाणा वा जाव उवद्दविज्जमाणा।

[7] सं० पा०—पाणा जाव सव्वे।

[8] सं० पा०—हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा।

[9] सू० २।४।३।

[10] पिआदिते (क, ख)।

२४. से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे[1] °अमाणे अमाए° अलोभे उवसंते परिणिव्वुडे ॥

२५. एस खलु भगवया अक्खाए संजय - विरय - पडिहय - पच्चक्खाय-पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिए यावि भवइ ।

—त्ति बेमि ॥

---

[1] सं० पा०—अकोहे जाव अलोभे ।

पंचमं अज्झयणं

आयारसुयं

१. 'आदाय बंभचेरं च'[1] आसुपण्णे इमं वइं ।
अस्सिं धम्मे अणायारं णायरेज्ज कयाइ वि ।।

सासय-असासय-पदं

२. अणादीयं परिण्णाय[2] अणवदग्गं[3] ति वा पुणो ।
सासयमसासए वा[4] इइ दिट्ठिं ण धारए ।।
३. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए[5] ।।
४. समुच्छिज्जिहिंति[6] सत्थारो सव्वे पाणा अणेलिसा ।
गंठिगा वा[7] भविस्संति, सासयं ति व णो वए ।।
५. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं [5]विजाणए ।।

सरिस-असरिस-पदं

६. जे केइ खुड्डगा पाणा अदुवा संति महालया ।
सरिसं तेहिं वेरं ति असरिसं[8] ति य णो वए ।।
७. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ।।

---

[1] बंभचेरं आदाय (चू) ।

[2] परिण्णाते (क) ।

[3] °दग्गे (क); अणवयग्गे (ख) ।

[4] वा वि (क, ख) ।

[5] तु जाणए (क,ख); तु विजाणए (वृ) सर्वत्र ।

[6] समुच्छेहिंति (ख); वोच्छिज्जिस्संति (चू) ।

[7] व (ख) ।

[8] विसदृशम्—असदृशम् (वृ) ।

अहाकम्म-पदं

८. अहाकम्माणि[1] भुंजंति[2] 'अण्णमण्णे सकम्मुणा'[3] ।
उवलित्ते त्ति जाणिज्जा अणुवलित्ते त्ति वा पुणो ॥
९. एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ॥

सरीरवीरिय-पदं

१०. जमिदं ओरालमाहारं कम्मगं च तमेव[4] य ।
सव्वत्थ वीरियं अत्थि णत्थि सव्वत्थ वीरियं ॥
११. एएहि दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ॥

लोगादीणं अत्थित्त-सण्णा-पदं

१२. णत्थि लोए अलोए वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि लोए अलोए वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१३. णत्थि जीवा अजीवा वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि जीवा अजीवा वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१४. णत्थि धम्मे अधम्मे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि धम्मे अधम्मे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१५. णत्थि बंधे व मोक्खे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि बंधे व मोक्खे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१६. णत्थि पुण्णे व पावे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि पुण्णे व पावे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१७. णत्थि आसवे संवरे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि आसवे संवरे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१८. णत्थि वेयणा णिज्जरा वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि वेयणा णिज्जरा वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
१९. णत्थि किरिया अकिरिया वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि किरिया अकिरिया वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२०. णत्थि कोहे व माणे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि कोहे व माणे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥

---

[1] आहाकडाति (क); अहाकडाणि (ख) ।
[2] चूर्णौ 'भुंजंति' इति शब्दो नास्ति व्याख्यातः ।
[3] अन्नमन्नेसु कम्मुणा (ख); अण्णमणस्स कम्मुणा (चू) ।
[4] तहेव (ख) ।

२१. णत्थि माया व लोभे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि माया व लोभे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२२. णत्थि पेज्जे[1] व दोसे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि पेज्जे व दोसे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२३. णत्थि चाउरंते संसारे णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि चाउरंते संसारे एवं सण्णं णिवेसए ॥
२४. णत्थि देवो व देवी वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि देवो व देवी वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२५. णत्थि सिद्धी असिद्धी वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि सिद्धी असिद्धी वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२६. णत्थि सिद्धी णियं ठाणं णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि सिद्धी णियं ठाणं एवं सण्णं णिवेसए ॥
२७. णत्थि साहू असाहू वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि साहू असाहू वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२८. णत्थि कल्लाणे पावे वा णेवं सण्णं णिवेसए ।
अत्थि कल्लाणे पावे वा एवं सण्णं णिवेसए ॥
२९. कल्लाणे पावए वा वि ववहारो ण विज्जइ ।
जं वेरं तं ण जाणंति समणा बालपंडिया ॥

वइ-विवेग-पदं

३०. असेसं अक्खयं वावि सव्वं[2] दुक्खे ति वा पुणो ।
वज्झा पाणा 'अवज्झ त्ति'[3] इति वायं ण णीसिरे[4] ॥
३१. दीसंति णिहुअप्पाणो[5] भिक्खुणो साहुजीविणो ।
'एए मिच्छोवजीवित्ति'[6] इति दिट्ठिं ण धारए ॥
३२. दक्खिणाए पडिलंभो 'अत्थि वा णत्थि वा'[7] पुणो ।
ण वियागरेज्ज मेहावी, संतिमग्गं च बूहए ॥
३३. इच्चेएहिं ठाणेहिं जिणे[8] दिट्ठेहिं संजए ।
धारयंते उ[9] अप्पाणं[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. रागे (क्व) ।
२. सव्व (क, ख) ।
३. अवज्झं ति (ख) ।
४. णीसरे (ख) ।
५. समियाचारा (क, ख, वृपा) ।
६. ते य मिच्छाय जीवंति (क) ।
७. अत्थि णत्थि त्ति वा (क) ।
८. जिणु (क्व) ।
९. तु (क) ।
१०. अप्पाणो (क) ।

छट्ठं अज्झयणं

अद्दइज्जं

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१. पुराकडं[1] अद्द ! इमं सुणेह, एगंतचारी समणे पुरासो ।
से भिक्खवो[2] उवणेत्ता अणेगे आइक्खतिण्हं[3] पुढो वित्थरेणं ॥
२. साऽऽजीविया पट्ठवियाऽथिरेणं सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे ।
आइक्खमाणो बहुजण्णमत्थं ण संधयाई[4] अवरेण पुव्वं ॥
३. एगंतमेव[5] अदुवा वि इण्हि दोऽवण्णमण्णं ण समेंति जम्हा ।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

'पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च'[6] 'एगंतमेव[7] पडिसंधयाइ'[8] ॥
४. समेच्च लोगं[9] तसथावराणं खेमंकरे समणे माहणे वा ।
आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एगंतयं सारयई तहच्चे ॥
५. धम्मं कहंतस्स उ णत्थि दोसो खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स ।
भासाय[10] दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय[11] णिसेवगस्स ॥

---

[1] पुरे॰ (ख, चू) ।
[2] भिक्खुणो (ख) ।
[3] आइक्खतेण्हिं (क) ।
[4] संधियाति (क) ।
[5] ॰मेवं (ख) ।
[6] ॰अणागतं वा (क); पुव्विं व पच्छं व अणागतं व (चू) ।
[7] ॰मेवं (ख) ।
[8] 'एगंतमेवं पडिसंदधाती' ति वक्तव्ये ग्रन्थानुलोम्यात्सुखमोक्खोच्चारणाद् वृत्त-बन्धानुवृत्तेश्च पसत्थं याति (चू) ।
[9] लोगे (ख) ।
[10,11] व्या॰ वि॰—बन्धानुलोम्यात् 'भासाए' इति षष्ठ्यन्तपदस्य स्थाने 'भासाय' इति मृदूच्चारणं कृतम् ।

६. महव्वए पंच अणुव्वए य तहेव पंचासव[1] संवरे य ।
विरइं इह स्सामणियम्मि पण्णे[2] लवावसक्की समणे त्ति बेमि ।।

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

७. सीओदगं सेवउ बीयकायं आहायकम्मं[3] तह इत्थियाओ ।
एगंतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेइ पावं ।।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

८. सीओदगं वा[4] तह बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ ।
एयाइं जाणं[5] पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवंति ।।
९. सिया य बीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवंतु ।
अगारिणो वि[6] समणा भवंतु सेवंति उ[7] ते वि तहप्पगारं ।।
१०. जे यावि बीओदगभोइ[8] भिक्खू भिक्खं विहं जायइ जीवियट्ठी ।
ते 'णाइसंजोगमविप्पहाय'[9] काओवगा णंतकरा भवंति ।।

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

११. इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं पावाइणो गरहसि[10] सव्व एव ।
पावाइणो[11] पुढो किट्टयंता सयं सयं दिट्ठि[12] करेंति पाउं[13] ।।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

१२. ते अण्णमण्णस्स उ[14] गरहमाणा अक्खंति ऊ समणा माहणा य ।
सतो य अत्थी असतो य णत्थी गरहामो दिट्ठिं ण गरहामो किंचि ।।
१३. ण किंचि रुवेणऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्गं तु करेमो[15] पाउं ।
मग्गे इमे किट्टिए आरिएहिं अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अंजू ।।

---

[1] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पंचासवे ।

[2] पुण्णे (वृ); पण्णे (वृपा) ।

[3] आहाइ० (क) ।

[4] च (क, ख) ।

[5] जाणं (क) ।

[6] वी (क्व) ।

[7] जं (क्व) ।

[8] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—बीयोदगभोई ।

[9] ०संजोग य विप्पजहाय (क) ।

[10] गरिहसि (ख) ।

[11] पावाइणो उ (क) ।

[12] पदिट्ठिं (क्व); व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दिट्ठिं ।

[13] पावं (क, ख) अशुद्धमेतत् ।

[14] वि (ख) ।

[15] करेमु (क्व) ।

१४. उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु   तसा य जे थावर[1] जे य पाणा ।
भूयाभिसंकाए[2] दुगुंछमाणे   णो गरहइ बुसिमं किंचि लोए ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१५. आगंतगारे आरामगारे[3]   समणे उ भीते ण उवेइ वासं ।
दुक्खा हु संती बहवे मणुस्सा   ऊणातिरित्ता य लवालवा य ॥
१६. मेहाविणो सिक्खिय[4] बुद्धिमंता   सुत्तेहि अत्थेहि य णिच्छयण्णू[5] ।
पुच्छिंसु मा णे[6] अणगार[7] अण्णे[8]   इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

१७. णाकामकिच्चा[9] ण य बालकिच्चा   रायाभियोगेण कुओ भएणं[10] ?
वियागरेज्जा पसिणं ण वा वि   सकामकिच्चेणिह आरियाणं ॥
१८. गंता व तत्था अदुवा अगंता   वियागरेज्जा समियासुपण्णे ।
अणारिया दंसणओ परित्ता   इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१९. पण्णं जहा वणिए उदयट्ठी   आयस्स हेउं पगरेइ संगं ।
तओवमे[11] समणे णायपुत्ते   इच्चेव मे होइ मई वियक्का ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

२०. णवं ण कुज्जा विहुणे पुराणं   चिच्चा[12]ऽमइं 'ताइ[13] य साह'[14] एवं ।
एतावता[15] बंभवति त्ति वुत्ते   तस्सोदयट्ठी समणे त्ति बेमि ॥
२१. समारभंते वणिया भूयगामं   परिग्गहं चेव ममायमाणा[16] ।
ते णाइसंजोगमविप्पहाय   आयस्स हेउं पगरेंति संगं ॥

---

[1] विभक्तिरहितपदम्—थावरा ।
[2] भूयाहि० (ख) ।
[3] आरामा० (क) ।
[4] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सिक्खिया ।
[5] निच्छियण्णू (ख) निच्छियन्ना (क्व) ।
[6] णो (क) ।
[7] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणगारा ।
[8] एगे (क) ।
[9] नो काम० (क, ख); 'णाकाम'० इति पाठश्चूर्णि-वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः । क्वचित्-प्रयुक्तदीपिकादर्शेपि इत्थमेव पाठो लब्धः ।
[10] भतेणं (क) ।
[11] ततोवमे (क) ।
[12] चेच्चा (क) ।
[13] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई ।
[14] ताति हि आह (वृ) ।
[15] एत्तावता (क, ख) ।
[16] ममायमीणा (क) ।

२२. वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा ते भोयणट्ठा वणिया वयंति।
वयं तु कामेहिं अज्झोववण्णा अणारिया पेमरसेसु गिद्धा॥
२३. आरंभगं चेव परिग्गहं च अविउस्सिया णिस्सिय[1] आयदंडा।
तेसिं च से उदए जं वयासी चउरंतणंताय[2] दुहाय[3] णेह[4]॥
२४. णेगंति णच्चंति तओदए से वयंति ते दो वि गुणोदयम्मि।
से उदए साइमणंतपत्ते[5] तमुदयं साहयइ ताइ[6] णाई॥
२५. अहिंसयं[7] सव्वपयाणुकंपी[8] धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं।
तमायदंडेहि समायरंता[9] अबोहिए ते पडिरूवमेयं॥

बुद्ध-भिक्खूणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

२६. पिण्णागपिंडीमवि विद्ध[10] सूले केई पएज्जा पुरिसे इमे त्ति।
अलाउयं वा वि 'कुमारग त्ति'[11] स[12] लिप्पई पाणिवहेण अम्हं॥
२७. अहवावि विद्धूण मिलक्खु[13] सूले पिण्णागबुद्धीए णरं पएज्जा।
कुमारगं वा वि अलाउए त्ति ण लिप्पई पाणिवहेण अम्हं॥
२८. पुरिसं च विद्धूण कुमारगं[14] वा सूलंमि केइ पए जायतेए।
पिण्णागपिंडि सइमारुहेत्ता बुद्धाण तं कप्पइ पारणाए॥
२९. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं।
ते पुण्णखंधं सुमहऽज्जणित्ता[15] भवंति आरोप्प[16] महंतसत्ता[17]॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

३०. अजोगरूवं इह संजयाणं पावं तु पाणाण पसज्झ[18] काउं।
अबोहिए दोण्ह वि तं असाहु वयंति जे यावि पडिस्सुणंति[19]॥
३१. उड्ढं[20] अहे य तिरियं दिसासु विण्णाय लिंगं तसथावराणं।
भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणे वदे करेज्जा वा कुओ विहऽत्थि[21] ?

---

[1] व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—णिस्सिया।
[2] °णंताए (क)।
[3] दुहाए (क)।
[4] णे य (ख)।
[5] साय° (क)।
[6] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई।
[7] व्या० वि०—अहिंसयन्।
[8] °पदाणु° (क); °सत्ताणुकंपी (चू)।
[9] समाणयंता (चूपा)।
[10] व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—विद्धं।
[11] कुमारएत्ति (ख)।
[12] से (क)।
[13] मिलक्ख (क); मिलक्खू (ख, चू)।
[14] कुमारकं (क)।
[15] सुमहज्जिजणित्ता (क, ख)। अय पाठः क्वचित्प्रयुक्तदीपिकादर्शाधारेण स्वीकृतः। ४३ श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च सुमहऽज्जणित्ता इत्येव पाठः समुपलभ्यते।
[16] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—आरोप्पा।
[17] महत्त° (क)।
[18] पसज्ज (ख)।
[19] पडिसुणेंति (क)।
[20] उड्ढे (क)।
[21] व्या० वि०—वि+इह+अस्ति।

३२. पुरिसे त्ति विण्णत्ति[1] ण एवमत्थि[2] अणारिए से पुरिसे तहा हु ।
को संभवो पिण्णगपिंडियाए[3] वाया वि एसा बुइया असच्चा ॥

३३. वायाभिओगेण[4] जमावहेज्जा णो तारिसं वायमुदाहरेज्जा ।
अट्ठाणमेयं[5] वयणं गुणाणं णो[6] दिक्खिए बूय[7] सुरालमेयं ॥

३४. लद्धे अहट्ठे अहो एव[8] तुब्भे जीवाणुभागे सुविचिंतिते य ।
पुव्वं समुद्दं अवरं च पुट्ठे ओलोइए पाणितलट्ठिए वा ॥

३५. जीवाणुभागं सुविचिंतयंता आहारिया[9] अण्णविहीए सोहिं ।
ण वियागरे छण्णपओपजीवी[10] एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥

३६. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाणं ।
असंजए लोहियपाणि[11] से ऊ णियच्छई गरहमिहेव लोए ॥

३७. थूलं उरब्भं इह मारियाणं उद्दिट्ठभत्तं च पगप्पएत्ता ।
तं लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता सपिप्पलीयं पगरंति मंसं ॥

३८. तं भुंजमाणा पिसियं पभूयं णो उवलिप्पामो वयं रएणं ।
इच्चेवमाहंसु अणज्जधम्मा[12] अणारिया बाल[13] रसेसु गिद्धा ॥

३९. जे यावि भुंजंति तहप्पगारं सेवंति ते पावमजाणमाणा ।
'मणं ण एयं कुसला करेंति'[14] वाया वि एसा बुइया उ मिच्छा ॥

४०. 'सव्वेसि जीवाण'[15] दयट्ठयाए सावज्जदोसं परिवज्जयंता ।
तस्संकिणो इसिणो णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति ॥

४१. भूयाभिसंकाए दुगुंछमाणा सव्वेसि पाणाण णिहाय दंडं ।
तम्हा ण भुंजंति तहप्पगारं एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥

---

१. पिण्णत्ति (क, ख) । व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—विण्णत्ती ।

२. एयअत्थि (क, ख) ।

३. पिण्णाग ० (क); छंदोदृष्ट्या 'पिण्णाग' शब्दस्य ह्रस्वत्वं 'ख' प्रत्यनुसारेण स्वीकृतम् ।

४. ०जोएण (क) ।

५. ०मेवं (क) ।

६. ज़े (क); जिण (ख) ।

७. आकारस्य ह्रस्वत्वम् ।

८. एवं (क); छंदोदृष्ट्या 'एव' इति जातमस्ति ।

९. ओधारिया (चू) ।

१०. छणणपदोपजीवी (चूपा) ।

११. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—लोहियपाणी ।

१२. अणज्जबुद्धो (चू) ।

१३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—बाला ।

१४. खणं ण एवं कुसला वदंति (चू); मणं ण एयं कुसला करेंति (चूपा) ।

१५. सव्वेसिं जीवाणं (क) ।

४२. ‘णिग्गंथधम्मम्मि इमा समाही’[1] अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा।
बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए ‘इहच्चणं पाउणई सिलोगं’[2]॥

वेय-वाईणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४३. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए माहणाणं।
ते पुण्णखंधं सुमहज्जणित्ता[3] भवंति देवा इइ वेयवाओ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

४४. सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए कुलालयाणं।
से गच्छई लोलुवसंपगाढे[4] ‘तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी’[5]॥
४५. दयावरं ‘धम्म[6] दुगुंछमाणे’[7] वहावहं धम्म[8] पसंसमाणे।
एगं पि जे भोययई असीलं[9] ‘णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले’[10]॥

संख-परिवायगाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४६. दुहओ वि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सिं सुट्ठिच्चा तह एस कालं[11]।
आयारसीले बुइएह णाणे[12] ण संपरायम्मि[13] विसेसमत्थि॥
४७. अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं सणातणं अक्खयमव्वयं च।
सव्वेसु भूएसु[14] वि[15] सव्वओ से चंदो व ताराहिं[16] समत्तरूवे॥

---

१. णिग्गंथं धम्माण इमो ° (चू); ° इमं समाहिं (वृ)।

२. इच्चत्थतं ° (क, ख); अच्चत्थतं पाउणतीसिलाहं (वृ); अयं पाठश्चूर्ण्यनुसारी स्वीकृतः। चूर्णौ श्लोको नाम श्लाघा इति व्याख्यातमस्ति, वृत्तौ च श्लाघा मूलत्वेन स्वीकृतास्ति।

३. सुमहज्जिणित्ता (क, ख)।

४. लोलग ° (क), लोलुय ° (ख)।

५. तिव्वाणुतावे णरए वयंति (चू); तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी (चूपा)।

६,८. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्--धम्मं।

७. धम्मं दूसेमाणो (चू), धम्म दुगुंछमाणो (क, चूपा)।

९. कुसीलं (चू)।

१०. णिवो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (क, ख, वृ); णिधो ° (चू); णिव्वो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (क्व); अत्र लिपिदोषेण ‘णिहो’ स्थाने ‘णिवो’ इति पाठः संजातः। वृत्तिकारेण तादृश एव आदर्शं उपलब्धस्तेन स पाठस्तथैव व्याख्यातः। ‘जाइ कओऽसुरेहिं’ इति पाठस्य परिवर्तनं जातमथवा वाचनाभेदोयमिति न निश्चयेन वक्तुं शक्यते। प्रस्तुतसूत्रे (१।५।५) ‘णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले’ इति पदं विद्यते। तदेवात्रास्तीति चूर्णिव्याख्यया प्रतीयते।

११. काले (ख)।

१२. नाणा (क)।

१३. संपरागंमि (क)।

१४. पाणेसु (चू)।

१५. उ (क)।

१६. तारेहिं (क)।

अद्दगस्स उत्तर-पदं

४८. एवं ण मिज्जंति ण संसरंति[1] ण[2] माहणा[3] खत्तिय-वेस-पेसा।
कीडा य पक्खी य सरीसिवा[4] य णरा य सव्वे तह देवलोगा॥
४९. लोगं अयाणित्तिह केवलेणं कहिंति जे धम्ममजाणमाणा।
णासेंति अप्पाण[5] परं च णट्ठा संसार घोरम्मि अणोरपारे॥
५०. लोगं विजाणंतिह केवलेणं पुण्णेण णाणेण समाहिजुत्ता।
धम्मं समत्तं च कहिंति जे उ तारेंति अप्पाण[6] परं च तिण्णा॥
५१. जे गरहियं ठाणमिहावसंति जे यावि लोए चरणोववेया।
उदाहडं तं तु समं मईए अहाउसो! विप्परियासमेव॥

हत्थितावसाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

५२. संवच्छरेणावि य एगमेगं बाणेण[7] मारेउ महागयं तु।
सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वासं वयं वित्तिं[8] पकप्पयामो॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

५३, संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं हणंता अणियत्तदोसा।
सेसाण जीवाण वहेण लग्गा सिया य थोवं गिहिणो वि तम्हा॥
५४. संवच्छरेणावि य एगमेगं पाणं[9] हणंते 'समणव्वते ऊ'[10]।
आयाहिए से पुरिसे अणज्जे ण 'तारिसं केवलिणो भणंति'[11]॥
५५. बुद्धस्स आणाए इमं समाहिं अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण ताई[12]।
तरिउं[13] समुद्दं व महाभवोघं 'आयाणवं धम्ममुदाहरेज्जासि'[14]॥

—त्ति बेमि॥

---

[1] संचरंति (ख)।
[2] ते (क)।
[3] बंभणा (चू)।
[4] सिरीसवा (क); सिरीसिवा (ख)।
[5] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं।
[6] व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाणं।
[7] पाणेण (क); वाणेण (ख)।
[8] वित्ति (ख)।
[9] पाणे (क)।
[10] °व्वएसु (ख, वृ)।
[11] तारिसा केवलिणो भवंति (क); तारिसे केवलिणो भवंति (ख, वृ, चूपा)। अत्र चूर्णि-पाठोर्थसमीक्षया समीचीनः प्रतिभाति तेन स स्वीकृतः।
[12] ताती (क); तारी (ख)।
[13] तरित्ता (क, चू)।
[14] आयाणबंध समुदाहरिज्जासि (क); आयाणं बंध समुदाहरेज्जासि (ख)।

सत्तमं अज्झयणं

णालंदइज्जं

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[1] जाव[2] पडिरूवे ।।

२. तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया[3] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं णालंदा णामं बाहिरिया होत्था—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा[4] °पासादीया दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

लेव-गाहावइ-पदं

३. तत्थ णं णालंदाए बाहिरियाए लेवे[5] णामं गाहावई होत्था—अड्ढे 'दित्ते वित्ते'[6] विच्छिण्ण[7]-विपुल-भवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरजए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ।।

४. से णं लेवे णामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे[8] °उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे,

---

[1] रिद्धि° (क) ।

[2] वण्णओ जाव (क, ख); ओ० सू० १ ।

[3] बहिता (क) ।

[4] सं० पा०—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा ।

[5] लेए (क) ।

[6] दित्तचित्ते (चू) ।

[7] वित्थिण (क्व) ।

[8] सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

इणमो णिग्गंथिए पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदारप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पीढ-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

५. तस्स णं लेवस्स गाहावइस्स णालंदाए बाहिरियाए उत्तरपुरत्थिमे[1] दिसिभाए, एत्थ णं सेसदविया णाम उदगसाला होत्था—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठा पासादीया[2] °दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

६. तीसे णं सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं हत्थिजामे णामं वणसंडे होत्था—किण्हे वण्णओ वणसंडस्स[3] ।।

७. तस्सि च णं गिहपदेसंसि भगवं गोयमे विहरइ, भगवं च णं अहे आरामंसि ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्हाणुमइ-पदं

८. अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे णियंठे मेदज्जे[4] गोत्तेणं जेणेव[5] भगवं गोयमे तेणेव[6] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो ! गोयमा ! अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, तं च मे आउसो ! अहासुयं अहादरिसियमेव वियागरेहि ।।

९. सवायं[7] भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—अवियाइ आउसो ! सोच्चा णिसम्म जाणिस्सामो ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्ह-पदं

१०. सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो[8] ! गोयमा ! अत्थि खलु कम्मारपुत्तिया[9] णाम समणा णिग्गंथा तुम्हागं[10] पवयणं[11] पवयमाणा

---

[1] °पुरच्छिमे (ख) ।

[2] सं० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा ।

[3] ओ० सू० ४-७ ।

[4] मेतज्जो (क) ।

[5] जेणामेव (क, ख) ।

[6] तेणामेव (ख) ।

[7] सवादं (क) ।

[8] आउसो ! (ख) ।

[9] कुमारपुत्तिया (क, ख, वृ); अत्र लिपिदोषेण 'कम्मार' शब्दस्य स्थाने 'कुमार' इति रूपान्तरं जातं इति संभाव्यते ।

[10] तुब्भागं (क) ।

[11] पवदणं (क) ।

गाहावइं[1] समणोवासगं उवसंपण्णं[2] एवं पच्चक्खावेंति—"णण्णत्थ अभिजोगेणं[3], गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं।"

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं दुप्पच्चक्खायं भवइ। एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं दुपच्चक्खावियं भवइ। एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा अइयरंति सयं पइण्णं।

कस्स णं तं हेउं।

संसारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं।

एवं ण्हं पच्चक्खंताणं सुपच्चक्खायं भवइ।

एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं सुपच्चक्खावियं भवइ।

एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा णाइयरंति सयं पइण्णं—"णण्णत्थ अभिजोगेणं, गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दंडं।" एवं[4] सइ 'भासाए परिकम्मे'[5] विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा परं पच्चक्खावेंति। अयं पि[6] णो[7] उवएसे किं णो णेयाउए भवइ? अवियाइं आउसो! गोयमा! तुब्भं पि एयं[8] एवं रोयइ?

भगवओ गोयमस्स उत्तर-पदं

११. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो! उदगा! णो खलु अम्हं एयं एवं रोयइ। जेते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खंति[9], °एवं भासेंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गंथा वा भासं भासंति, अणुतावियं[10] खलु ते भासं भासंति, अब्भाइक्खंति खलु ते समणे[11] समणोवासए वा। जेहिं वि अण्णेहिं पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमयंति ताणि वि ते अब्भाइक्खंति।

कस्स णं तं हेउं?

---

१. गाहावइ (क, ख)।

२. × (क, ख)।

३. राआभिवाएणं (ख); अभिजोगेणं तंजहा—रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं (चू)।

४. एवामेव (क); एवमेव (ख)।

५. भासापरक्कमे (क); भासाए परक्कमे (ख, वृ)। 'परिकम्मे' इति पाठश्चूर्ण्यधारेण स्वीकृतः। अत्र सविशेषणनिर्विशेषणप्रत्याख्यानस्य चर्चा कृतास्ति तेन पराक्रमापेक्षया परिकर्मशब्दोऽधिकं समीचीनोस्ति।

६. पि भे (क, वृ)।

७. अस्माकम्।

८. × (ख)।

९. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति।

१०. अणुगाणियं (चू)।

११. समणा (क)।

संसारिया खलु पाणा—तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं॥

उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्ह-पदं

१२. सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—कयरे खलु आउसंतो! गोयमा! तुब्भे वयह तसपाणा तसा 'आउ' अण्णहा'[2]?

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१३. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—आउसंतो! उदगा! जे तुब्भे वयह[3] तसभूया[4] पाणा तसा ते 'वयं वदामो'[5] 'तसा पाणा तसा'[6]। जे वयं वयामो तसा पाणा तसा ते तुब्भे वदह तसभूया पाणा तसा। एए संति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा।

किमाउसो! इमे भे[7] सुप्पणीयतराए भवइ—तसभूया पाणा तसा? इमे भे[8] दुप्पणीयतराए भवइ—तसा पाणा तसा? तओ[9] एगमाउसो! पलिकोसह[10], एक्कं अभिणंदह। अयं पि 'भे उवएसे'[11] णो णेयाउए भवइ।

भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा[12] भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। 'वयं णं'[13] अणुपुव्वेणं गोत्तस्स[14] लिस्सिस्सामो[15]। 'ते एवं संखसावेंति'[16]—

---

१. अदु—उत।

२. आउमन्नहा (क); अह अण्णहा (ख)।

३. वतह (क)।

४. तसब्भूया (क)।

५. वदं वतामो (क)।

६. तसा पाणा २ (क); तसा पाणा (ख) सर्वत्र।

७, ८. ते (ख)।

९. तो (क)।

१०. पडिकोसह (ख)।

११. भेदो से (क, ख); भे (वृ); 'भे उवएसे' इति पाठस्य स्थाने लिपिदोषेण 'भेदो से' इति जातम्। दशमे सूत्रे 'पि णो उवएसे' इति पाठोस्ति तथा चूर्णौ 'उपदेशः' इति व्याख्यातमस्ति। तदाधारेणासौ पाठः स्वीकृतः।

१२. मणुस्सा गब्भवक्कंतिया संखेज्जवासाउया आरिया (चू)।

१३. वयण्णं (क); वय णं (ख)।

१४. गुत्तत्तस्स (क); गुत्तस्स (क्व)।

१५. लिसिस्सामी (ख)।

१६. ते एवं संखं ठवयंति ते एवं संखं सोवठवयंति (क); ते एव संखं ठवयंति ते एवं संखं सोवठावयंति (ख); ते एवं संखं ठावेंति (चू); नागार्जुनीयास्तु—एवं आपाणं संकसावेंति (चू); °संठवयंति (क्व)।

"णण्णत्थ अभिजोगेणं गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं" । तं पि तेसिं कुसलमेव भवइ ॥

१४. तसा वि वुच्चंति तसा तससंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। 'तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति'[1]। थावरा वि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेणं कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ । 'थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ,'[2] थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।
ते पाणा वि वुच्चंति[3], ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया ॥

उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा-पदं

१५. सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो ! गोयमा ! णत्थि णं से केइ परियाए[4] जंसि[5] समणोवासगस्स 'एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते'[6]। कस्स णं तं हेउं ?
संसारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं ॥

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१६. सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—णो खलु आउसो ! अस्माकं[7] वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवाएणं अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते भवइ।
कस्स णं तं हेउं ?

---

[1] जाव तसाऊ अपलिक्खीणं भवइ० (चू); नागार्जुनीयास्तु—आउयं च णं पलिक्खीणं भवति तसकायट्ठितीए वा ततो आउयं विप्पजहित्ता तिण्हं थावराणं अण्णतरेसूववज्जंति (चू)।

[2] जाव थावराऊ अपलिक्खीणं भवई (चू)।

[3] वुच्चंति भूता जाव सत्ता वि (चू)।

[4] परिताए (क)।

[5] जण्णं (क, ख, चू)।

[6] एगपाणाइवायविरए वि दंडे णिक्खित्ते(क,ख); एकप्राणातिपातविरमणेपि (वृ); अग्रिमसूत्रे 'एगपाणाए वि' इति पाठो लभ्यते, स च समीचीनः प्रतिभाति, तेनाऽत्रापि स एव स्वीकृतः। जाव सव्वपाणेहिं दंडे णिक्खित्ते (चू)।

[7] अस्माकमित्येतन्मगधदेशे आगोपालाङ्गनादिप्रसिद्धं संस्कृतमेवोच्चार्यंते तदिहापि तथैवोच्चारितमिति (वृ)।

संसारिया खलु पाणा- तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि[1] समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते"। अयं पि 'भे उवएसे'[2] णो णेयाउए भवइ॥

समणदिट्ठंत-पदं

१७. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते। जे इमे अगारमावसंति, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते।

'केई च णं समणे'[3] जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता 'अगारं वएज्जा'[4]?

हंता वएज्जा।

तस्स णं तमगारत्थं[5] वहमाणस्स[6] से पच्चक्खाणे भग्गे भवइ?

णेति[7]।

एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते। तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स[8] से पच्चक्खाणे णो भग्गे भवइ। सेवमायाणह[9] णियंठा! सेवमायाणियव्वं॥

१८. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु गाहावइणो वा गाहावइपुत्ता वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा?

हंता उवसंकमेज्जा।

---

१. जण्णं (क); जम्मि (क्व)।

२. भेदे से (क, ख)।

३. केसिं (क, ख); अशुद्धं प्रतिभाति, केचन श्रमणाः (वृ)।

४. अगारमावसेज्जा (ख, वृ)।

५. तं गारत्थं (क); गृहस्थं (वृ)।

६. ८. वहेमाणस्स (क)।

७. णोति (ख)।

९. सेएव° (ख)।

तेसिं च णं तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे ?

हंता आइक्खियव्वे ।

किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा—इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं 'णेयाउयं[1] संसुद्धं'[2] सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं 'णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं'[3] अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं । एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति[4] सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।

इमाणाए[5] तहा[6] गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो[7] तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो[8] तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता[9] पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा ?

हंता वएज्जा ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए ?

हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए ?

हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए ?

हंता कप्पंति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ?

हंता कप्पंति ।

तेसिं च णं तहप्पगाराणं सव्वपाणेहिं[10] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?

हंता णिक्खित्ते ।

ते[11] णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं[12] वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता[13] अगारं वएज्जा[14] ?

हंता वएज्जा ।

---

१. णेताउतं (क) ।
२. संसुद्धं णेयाउयं (ख) ।
३. णेज्जाणमग्गं णेव्वाण° (क) ।
४. परिणिव्वायंति (ख) ।
५. तमाणाए (ख) ।
६. तह (क) सर्वत्र ।
७. णिसियामो (क); णिस्सियामो (ख) ।
८. अब्भुट्ठामो (ख) ।
९. वट्टेति (ख) ।
१०. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं ।
११. से (क, ख); अशुद्धं प्रतिभाति ।
१२. छद्दसमाणि (क, ख) ।
१३. दूतिज्जित्ता (क, ख) ।
१४. वदेज्जा (क) ।

तस्स णं सव्वपाणेहिं[1] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते[2]? णेति[3]।

से जे से जीवे जस्स परेणं सव्वपाणेहिं[4] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स आरेणं सव्वपाणेहिं[5] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं[6] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ। परेणं अस्संजए, आरेणं संजए, इयाणिं[7] अस्संजए। अस्संजयस्स णं सव्वपाणेहिं[8] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्व°सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ। सेवमायाणह णियंठा! सेवमायाणियव्वं॥

१९. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह[9] खलु परिव्वायया[10] वा परिव्वाइयाओ वा अण्णयरेहिंतो तित्थायतणेहिंतो आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा?

हंता उवसंकमेज्जा।

'किं तेसिं'[11] तहप्पगाराणं धम्मे आइक्खियव्वे?

[12]°हंता आइक्खियव्वे।

किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा—इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेयाउयं संसुद्धं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं अवितहं असंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं। एत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। इमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामो त्ति वएज्जा?

हंता वएज्जा।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावेत्तए?

हंता कप्पंति।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावेत्तए?

हंता कप्पंति।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावेत्तए?

हंता कप्पंति।

---

१. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।

२. णो णिक्खित्ते (क)।

३. णोत्ति (क); णोति (ख)।

४,५,६. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।

७. एयाणिं (क)।

८. सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।

९. केइ इह (ख)।

१०. परिवाइया (क); परिव्वाया (ख)।

११. पूर्वसूत्रात् किंचित् शब्दभेदः।

१२. सं० पा०—तं चेव जाव उवट्ठावेत्तए।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ?

हंता कप्पंति° ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?

हंता कप्पंति ।

ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा [1]°जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता° अगारं वएज्जा ?

हंता वएज्जा ।

ते णं तहप्पगारा कप्पंति सभुंजित्तए ?

णो इणट्ठे[2] समट्ठे ।

से जे से जीवे जे परेणं णो कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे आरेणं कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे इयाणिं णो कप्पंति संभुंजित्तए । परेणं अस्समणे, आरेणं समणे, इयाणिं अस्समणे । अस्समणेणं[3] सद्धिं णो कप्पंति समणाणं णिग्गंथाणं संभुंजित्तए । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमायाणियव्वं ।।

पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं

२०. भगवं च णं उदाहु[4]—णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु° संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं[5] णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं[6] सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो । 'थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो'[7], एवं थूलगं मुसावायं थूलगं अदिण्णादाणं[8] थूलगं मेहुणं थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो दुविहं तिविहेणं । मा खलु ममट्ठाए किंचि वि करेह वा कारवेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो । ते णं अभोच्चा[9] अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढियाओ[10] पच्चोरुहित्ता[11] ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया ?

सम्मं कालगय त्ति वत्तव्वं सिया ।

---

[1] सं० पा०—तं चेव जाव अगारं वएज्जा ।

[2] तिणट्ठे (क, ख) ।

[3] तेणं (क) ।

[4] सं० पा०—उदाहु···संतेगइया ।

[5] वयं च (क) ।

[6] पोसधं (क) ।

[7] °पच्चाइक्खिस्सामो (क); नागार्जुनीयास्तु—सामाइयकडेऽहि काउं 'सव्वपाणातिवातं पच्चक्खाइस्सामो' तद्दिवसं (चू) ।

[8] अदिण्णं (क, ख) ।

[9] अभोच्चाए (क, ख) ।

[10] °पीठियाओ (क) ।

[11] पच्चोरुब्भित्ता (ख) ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से[1] महया[2] °तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते°।" अयं पि 'भे उवएसे'[3] णो णेयाउए भवइ॥

२१. भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु संतेगइया समणोवासगा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ[4] °अणगारियं° पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[5] °पडिपुण्णं पोसहं सम्मं° अणुपालेमाणा विहरित्तए। वयं णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया[6] कालं अणवकंखमाणा विहरिस्सामो। सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो[7], °एवं सव्वं मुसावायं सव्वं अदिण्णादाणं सव्वं मेहुणं° सव्वं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो 'तिविहं तिविहेणं'[8] मा खलु ममट्ठाए किंचि वि[9] °करेह वा कारवेह वा करंतं समणुजाणेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो। तेणं अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता° आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तह कालगया किं वत्तव्वं सिया?

सम्मं[10] कालगय त्ति वत्तव्वं सिया।

ते पाणा वि वुच्चंति[11], °ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से

---

[1] इति से (क, ख)।

[2] सं० पा०—से महया ... जं णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयं।

[3] भेदे से (क, ख)।

[4] सं० पा०—अगाराओ जाव पव्वइत्तए।

[5] सं० पा०—चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा।

[6] जाव (क)।

[7] सं० पा०—पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं।

[8] तिविहेणं तिविहं (क)।

[9] सं०पा०—किंचि वि जाव आसंदीपेढियाओ।

[10] समणा (क)।

[11] सं० पा०—वुच्चंति जाव अयं।

केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते° ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ॥

२२. भगवं च णं उदाहु[1]—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अहम्मिया[2] •अधम्माणुया अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपायजीविणो अधम्मपलोइणो अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइसंपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए[3] दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता भुज्जो सगमादाए दोग्गइगामिणो भवंति । ते पाणावि वुच्चंति[4], •ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

२३. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[5] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमर-

---

[1] येषु सूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो विद्यते तत्रैव 'णियंठा खलु पुच्छियव्वा' इत्यादि पाठो गृहीतः अतः परवर्तिसूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो नास्ति तेन तस्य पाठस्य नास्ति तत्रावकाशः ।

[2] सं० पा० —अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वओ परिग्गहाओ ।

[3] आमरणंतिआए (क) ।

[4] सं० पा०—वुच्चंति ते तसा ए महा ते चिर ते बहुतरगा आयाणसो इती से महता जेणं तुब्भे णो णेयाउए ।

[5] सं० पा०—धम्माणुया जाव सव्वाओ ।

णंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगामिणो भवंति।

ते पाणावि वुच्चंति[1], °ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह— "णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२४. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[2] °धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू। एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ° अप्पडिविरया। जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति।

ते पाणा वि वुच्चंति,[3] °ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह— "णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२५. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—आरण्णिया आवसहिया गामंतिया[4] कण्हुईरहस्सिया[5]—जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ—णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूय-

---

[1] सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए।

[2] सं० पा०—धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया।

[3] सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए।

[4] गामणियंतिया (क, ख, वृ); द्रष्टव्यम् २।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

[5] कण्हंतिरहस्सिया (क)।

जीवसत्तेहिं[1] अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति[2]—अहं णं हंतव्वो अण्णे हंतव्वा[3], °अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा ।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं° कालमासे कालं किच्चा अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं[4] °ठाणाइं° उववत्तारो भवंति । तओ वि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए[5] पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति[6], °ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया । ते चिरट्ठिइया, ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—''णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते'। अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ।।

२६. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा दीहाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया, ते दीहाउया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स[7] °सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—''णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।'' अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ।।

२७. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा समाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ । ते सममेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति ।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते समाउया । ते

---

[1] पाणभूय° (क, ख) ।

[2] विप्पडिवेदेंति (क, ख, वृपा) ।

[3] सं० पा०—हंतव्वा जाव कालमासे ।

[4] सं० पा०—किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो ।

[5] तमूयत्ताए (क); तमोतत्ताए (ख) ।

[6] सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए ।

[7] सं० पा०—समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए ।

बहुयरगा[1] °पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२८. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते अप्पाउया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया[2] °तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

णवभंगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं

२९. भगवं च णं उदाहु—संतेगइया समणोवासगा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता[3] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालित्तए। णो खलु वयं संचाएमो अपच्छिम[4]°मारणंतियसंलेहणा-झूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया कालं अणवकंखमाणा° विहरित्तए। वयं णं सामाइयं देसावगासियं[5]—पुरत्था पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं एतावताव सव्वपाणेहिं[6] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते पाणभूयजीवसत्तेहिं खेमंकरे अहमंसि।

१. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

---

[1] सं० पा०—बहुयरगा जाव णो णेयाउए।

[2] सं० पा०—महया जाव णो णेयाउए।

[3] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।

[4] सं० पा०—अच्छिमं जाव विहरित्तए।

[5] व्या० वि—'अणुपालेमाणा विहरिस्सामो' इति अध्याहर्तव्यम्।

[6] सं० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं।

ते पाणा वि[1] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

२. तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते।

ते पाणावि वुच्चंति, ते तसा[2] °वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

३. तत्थ 'आरेणं जे'[3] तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[4] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

४. तत्थ 'आरेणं जे'[5] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं

---

[1] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे से•••।

[2] सं० पा०—ते तसा•••ते चिर जाव अयं पि भेदे से•••।

[3] जे आरेणं (क, ख)।

[4] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे•••।

[5] जे आरेणं (क, ख)।

चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[1] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, से महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

५. तत्थ 'आरेणं जे'[2] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स 'अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते'[3]।

ते पाणावि[4] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

६. तत्थ 'परेणं जे'[5] थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ परेणं चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[6] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।"° अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

---

[1] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भे।

[2] जेते आरेणं (क, ख)।

[3] सुपच्चक्खायं भवंति (ख)।

[4] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे...।

[5] जेते परेणं (क, ख)।

[6] सं० पा०—पाणावि जाव अयं।

७. तत्थ 'परेणं जे'[१] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणावि[२] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।"° अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।

८. तत्थ 'परेणं जे'[३] तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति,विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणावि[४] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते ।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।°

९. तत्थ 'परेणं जे'[५] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ परेणं चेव जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति । तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ ।

ते पाणावि[६] °वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ । से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ

---

[१] जे परेणं (क); जेते परेणं (ख) ।

[२] सं० पा०—पाणावि जाव अयं ।

[३] जे परेणं (क); जेते परेणं (ख) ।

[४] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे··· ।

[५] जे परेणं (क, ख) ।

[६] सं० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे से··· ।

परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ॥°

तस-थावर-पाणाणं अव्वोच्छित्ति-पदं

३०. भगवं च णं उदाहु—ण एयं भूयं ण एयं भव्वं 'ण एयं भविस्सं'[1] जण्णं—तसा पाणा वोच्छिज्जिहिंति[2], थावरा पाणा भविस्संति। थावरा पाणा वोच्छिज्जिहिंति, तसा पाणा भविस्संति। अवोच्छिण्णेहिं तसथावरेहिं पाणेहिं जण्णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वदह—"णत्थि णं से केइ परियाए[3] °जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ॥

उवसंहार-पदं

३१. भगवं च णं उदाहु—आउसंतो ! उदगा ! जे खलु समणं वा माहणं वा परिभासइ मित्ति[4] मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए [उट्ठिए[5] ?], से खलु परलोगपलिमंथत्ताए चिट्ठइ।

जे खलु समणं वा माहणं वा णो परिभासइ मित्ति[6] मण्णइ आगमित्ता णाणं, आगमित्ता दंसणं, आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए [उट्ठिए ?], से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ[7] ॥

३२. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए ॥

३३. भगवं च णं उदाहु—आउसंतो ! उदगा ! जे खलु तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तरं जोगखेमपयं लंभिए समाणे सो वि ताव तं आढाइ 'परिजाणेइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ'[8] कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ ॥

---

१. भवइ (वृ); ×(चू)।

२. वोच्छिज्जिस्संति (क)।

३. सं० पा०—परियाए जाव णो णेयाउए।

४. मेत्ति (क, ख); मैत्रीं मन्यमानोऽपि (वृ); स्वीकृतपाठश्चूर्ण्यनुसारी वर्तते। व्या० वि०—मामिति।

५. प्रत्योर्नैष पाठो लभ्यते, चूर्णावपि नास्ति। वृत्तावस्ति व्याख्यातः।

६. मेत्ति (क, ख); मैत्रीं मण्यते (वृ)।

७. नागार्जुनीयास्तु—णो खलु समणं वा हीलमाणो परिभासति मणसा वायाए काएणं आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए, से खलु परलोगपडिमंथत्ताए चिट्ठति (चू)।

८. परिजाणाइ वंदति णमंसति (क); × (वृ)।

३४. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—एएसि णं भंते! पदाणं पुव्विं अण्णाणयाए अस्सवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं अमुयाणं अविण्णायाणं अणिज्जूढाणं[1] अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं अणिसिट्ठाणं अणिवूढाणं अणुवहारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहियं णो पत्तियं णो रोइयं।
एएसि णं भंते ! पदाणं एण्हिं जाणयाए सवणयाए बोहीए[2] °अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं विण्णायाणं णिज्जूढाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिसिट्ठाणं णिवूढाणं° उवधारियाणं एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि 'एवामेयं जहा णं'[3], तुब्भे वदह ।।

३५. तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं एवं वयासी—सद्दहाहि णं अज्जो ! पत्तियाहि णं अज्जो ! रोएहि णं अज्जो ! एवमेयं जहा णं अम्हे वयामो ।।

३६. तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए[4] चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।।

३७. तए णं भगवं गोयमे उदगं पेढालपुत्तं गहाय जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

३८. तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

—त्ति बेमि ।।

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ८४६२२

अनुष्टुप् श्लोक २६४४, अक्षर १४

---

१. ×(क)।

२. सं० पा०—बोहीए जाव उवधारियाणं।

३. एवमेव से जहेयं।

४. अंतियं (क)।

ठाणं

पढमं ठाणं

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवता एवमक्खायं—

अत्थिवाय-पदं

२. एगे आया ।।
३. एगे दंडे ।।
४. एगा किरिया ।।
५. एगे लोए ।।
६. एगे अलोए ।।
७. एगे धम्मे ।।
८. एगे अहम्मे ।।
९. एगे बंधे ।।
१०. एगे मोक्खे ।।
११. एगे पुण्णे ।।
१२. एगे पावे ।।
१३. एगे आसवे ।।
१४. एगे संवरे।।
१५. एगा वेयणा ।।
१६. एगा णिज्जरा ।।

पइण्णग-पदं

१७. एगे जीवे पाडिक्कएणं[1] सरीरएणं ।।
१८. एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा ।।

---

[1] पडिक्खएणं (वृपा) ।

१९. एगे मणे ॥
२०. एगा वई ॥
२१. एगे काय-वायामे ॥
२२. एगा उप्पा ॥
२३. एगा वियती ॥
२४. एगा वियच्चा ॥
२५. एगा गती ॥
२६. एगा आगती ॥
२७. एगे चयणे ॥
२८. एगे उववाए ॥
२९. एगा तक्का ॥
३०. एगा सण्णा ॥
३१. एगा मण्णा ॥
३२. एगा विण्णू ॥
३३. एगा वेयणा ॥
३४. एगे छेयणे ॥
३५. एगे भेयणे ॥
३६. एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं ॥
३७. एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते ॥
३८. 'एगे दुक्खे'[1] जीवाणं एगभूए ॥
३९. एगा अहम्मपडिमा, 'जं से'[2] आया परिकिलेसति ॥
४०. एगा धम्मपडिमा, जं से आया पज्जवजाए[3] ॥
४१. एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४२. एगा वई[4] देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४३. एगे काय-वायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४४. एगे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकार[5]-परक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४५. एगे णाणे ॥
४६. एगे दंसणे ॥

---

[1] एगदुक्खे (वृपा) ।
[2] जंसि (वृपा) ।
[3] पज्जवज्जाए (ख) ।
[4] वती (क, ख, ग) ।
[5] पुरिसक्कार (क) ।

४७. एगे चरित्ते ॥
४८. एगे समए ॥
४९. एगे पएसे ॥
५०. एगे परमाणू ॥
५१. एगा सिद्धी ॥
५२. एगे सिद्धे ॥
५३. एगे परिणिव्वाणे ॥
५४. एगे परिणिव्वुए[1] ॥

पोग्गल-पदं

५५. एगे सद्दे ॥
५६. एगे रूवे ॥
५७. एगे गंधे ॥
५८. एगे रसे ॥
५९. एगे फासे ॥
६०. एगे सुब्भिसद्दे ।
६१. एगे दुब्भिसद्दे ॥
६२. एगे सुरूवे ॥
६३. एगे दुरूवे ॥
६४. एगे दीहे ॥
६५. एगे हस्से[2] ॥
६६. एगे वट्टे ॥
६७. एगे तंसे ॥
६८. एगे चउरंसे ॥
६९. एगे पिहुले ॥
७०. एगे परिमंडले ॥
७१. एगे किण्हे ॥
७२. एगे णीले ॥
७३. एगे लोहिए ॥
७४. एगे हालिद्दे ॥
७५. एगे सुक्किल्ले[3] ॥
७६. एगे सुब्भिगंधे ॥

---

[1] °निव्वुडे (क, ग) ।
[2] रहस्से (क, ग) ।
[3] सुक्किले (क, ग) ।

७७. एगे दुब्भिगंधे ।।
७८. एगे तित्ते ।।
७९. एगे कडुए ।।
८०. एगे कसाए ।।
८१. एगे अंबिले ।।
८२. एगे महुरे ।।
८३. एगे कक्खडे[1] ।।
८४. •एगे मउए ।।
८५. एगे गरुए ।।
८६. एगे लहुए ।।
८७. एगे सीते ।।
८८. एगे उसिणे ।।
८९. एगे णिद्धे ।।
९०. एगे° लुक्खे ।।

अट्ठारसपाव-पदं

९१. एगे पाणातिवाए[2] ।।
९२. •एगे मुसावाए ।।
९३. एगे अदिण्णादाणे ।।
९४. एगे मेहुणे° ।।
९५. एगे परिग्गहे ।।
९६. एगे कोहे[3] ।।
९७. •एगे माणे ।।
९८. एगा माया° ।।
९९. एगे लोभे ।।
१००. एगे पेज्जे ।।
१०१. एगे दोसे[4] ।।
१०२. •एगे कलहे ।।
१०३. एगे अब्भक्खाणे ।।
१०४. एगे पेसुण्णे° ।।

---

१. कक्कडे (क, ग); सं० पा०—कक्खडे जाव लुक्खे ।

२. सं० पा०—पाणातिवए जाव एगे ।

६. सं० पा० —कोहे जाव एगे ।

४. सं० पा०—दोसे जाव एगे ।

१०५. एगे परपरिवाए ॥

१०६. एगा अरतिरती ॥

१०७. एगे मायामोसे ॥

१०८. एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥

अट्ठारसपाव-वेरमण-पदं

१०९. एगे पाणाइवाय-वेरमणे[1] ॥

११०. °एगे मुसावाय-वेरमणे ॥

१११. एगे अदिण्णादाण-वेरमणे ॥

११२. एगे मेहुण-वेरमणे ॥

११३. एगे° परिग्गह-वेरमणे ॥

११४. एगे कोह[2]-विवेगे[3] ॥

११५. °एगे माण-विवेगे ॥

११६. एगे माया-विवेगे ॥

११७. एगे लोभ-विवेगे ॥

११८. एगे पेज्ज-विवेगे ॥

११९. एगे दोस-विवेगे ॥

१२०. एगे कलह-विवेगे ॥

१२१. एगे अब्भक्खाण-विवेगे ॥

१२२. एगे पेसुण्ण-विवेगे ॥

१२३. एगे परपरिवाय-विवेगे ॥

१२४. एगे अरतिरति-विवेगे ॥

१२५. एगे मायामोस-विवेगे ॥

१२६. एगे° मिच्छादंसणसल्ल-विवेगे ॥

ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं

१२७. एगा ओसप्पिणी ॥

१२८. एगा सुसम-सुसमा[4] ॥

१२९. °एगा सुसमा ॥

१३०. एगा सुसम-दूसमा ॥

---

[1] सं० पा०—पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे ।

[2] कोव (क) ।

[3] सं० पा०—कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्ल° ।

[4] सं० पा०—सुसमसुसमा जाव एगा ।

१३१. एगा दूसम-सुसमा ।।
१३२. एगा दूसमा° ।।
१३३. एगा दूसम-दूसमा ।।
१३४. एगा उस्सप्पिणी ।।
१३५. एगा दुस्सम-दुस्समा[1] ।।
१३६. °एगा दुस्समा ।।
१३७. एगा दुस्सम-सुसमा ।।
१३८. एगा सुसम-दुस्समा ।।
१३९. एगा सुसमा° ।।
१४०. एगा सुसम-सुसमा ।।

चउवीसदंडग-पदं

१४१. एगा णेरइयाणं वग्गणा ।।
१४२. एगा असुरकुमाराणं वग्गणा[2] ।।
१४३. °एगा णागकुमाराणं वग्गणा ।।
१४४. एगा सुवण्णकुमाराणं वग्गणा ।।
१४५. एगा विज्जुकुमाराणं वग्गणा ।।
१४६. एगा अग्गिकुमाराणं वग्गणा ।।
१४७. एगा दीवकुमाराणं वग्गणा ।।
१४८. एगा उदहिकुमाराणं वग्गणा ।।
१४९. एगा दिसाकुमाराणं वग्गणा ।।
१५०. एगा वायुकुमाराणं वग्गणा ।।
१५१. एगा थणियकुमाराणं वग्गणा ।।
१५२. एगा पुढविकाइयाणं वग्गणा ।।
१५३. एगा आउकाइयाणं वग्गणा ।।
१५४. एगा तेउकाइयाणं वग्गणा ।।
१५५. एगा वाउकाइयाणं वग्गणा ।।
१५६. एगा वणस्सइकाइयाणं वग्गणा ।।
१५७. एगा बेइंदियाणं वग्गणा ।।
१५८. एगा तेइंदियाणं वग्गणा ।।
१५९. एगा चउरिंदियाणं वग्गणा ।।

---

[1] सं० पा०—दुस्समदुस्समा जाव एगा ।

[2] सं० पा०—असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसदंडओ जाव एगा ।

१६०. एगा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वग्गणा ॥

१६१. एगा मणुस्साणं वग्गणा ॥

१६२. एगा वाणमंतराणं वग्गणा ॥

१६३. एगा जोइसियाणं वग्गणा° ॥

१६४. एगा वेमाणियाणं वग्गणा ॥

भव-अभव-सिद्धिय-पदं

१६५. एगा भवसिद्धियाणं[1] वग्गणा ॥

१६६. एगा अभवसिद्धियाणं[2] वग्गणा ॥

१६७. एगा भवसिद्धियाणं[3] णेरइयाणं वग्गणा ॥

१६८. एगा अभवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा ॥

१६९. एवं जाव[4] एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥

दिट्ठि-पदं

१७०. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं[5] वग्गणा ॥

१७१. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं[6] वग्गणा ॥

१७२. एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं[7] वग्गणा ॥

१७३. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा ॥

१७४. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणंर णेइयाणं वग्गणा ॥

१७५. एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं[8] णेरइयाणं वग्गणा ॥

१७६. एवं जाव[9] थणियकुमाराणं वग्गणा ॥

१७७. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं पुढविक्काइयाणं वग्गणा ॥

१७८. एवं जाव[10] वणस्सइकाइयाणं ॥

१७९. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा ॥

१८०. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा ॥

१८१. [11]°एगा सम्मद्दिट्ठियाणं तेइंदियाणं वग्गणा ॥

१८२. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं तेइंदियाणं वग्गणा ॥

१८३. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं चउरिंदियाणं वग्गणा ॥

१,२,३. °सिद्धीयाणं (क, ख)।

४. ठा० १।१४२-१६३।

५,६. °दिट्ठीयाणं (क, ख, ग)।

७. सम्ममिच्छदिट्ठीयाणं (क); °दिट्ठीयाणं (ख, ग)।

८. सम्म° (क, ग)।

९. ठा० १।१४२-१५०।

१०. ठा० १।१५३-१५५।

११. सं० पा०—एवं तेइंदियाण वि चउरिंदियाणं वि।

१८४. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं चउरिंदियाणं वग्गणा° ।।
१८५. सेसा जहा[1] णरइया जाव[2] एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ।।

कण्ह-सुक्क-पक्खिय-पदं

१८६. एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा ।।
१८७. एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा ।।
१८८. एगा कण्हपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
१८९. एगा सुक्कपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
१९०. एवं—चउवीसदंडओ भाणियव्वो[3] ।।

लेसा-पदं

१९१. एगा कण्हलेस्साणं वग्गणा ।।
१९२. एगा णीललेसाणं वग्गणा ।।
१९३. [4]°एगा काउलेसाणं वग्गणा ।।
१९४. एगा तेउलेसाणं वग्गणा ।।
१९५. एगा पम्हलेसाणं वग्गणा ।।
१९६. एगा° सुक्कलेसाणं वग्गणा ।।
१९७. एगा कण्हलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
१९८. [5]°एगा णीललेसाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
१९९. एगा° काउलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
२००. एवं—जस्स जइ लेसाओ—भवणवइ-वाणमंतर-पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाणं च चत्तारि लेसाओ, तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं तिण्णि लेसाओ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेस्साओ, जोतिसियाणं एगा तेउलेसा वेमाणियाणं तिण्णि उवरिमलेसाओ ।।
२०१. एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा ।।
२०२. एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा ।।
२०३. एवं—छसुवि लेसासु[6] दो दो पयाणि भाणियव्वाणि ।।
२०४. एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।
२०५. एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा ।।

---

[1] ठा० १।१६०-१६४ ।
[2] ठा० १।१७३-१७५ ।
[3] ठा० १।१४२-१६४ ।
[4] सं० पा०—एवं जाव सुक्कलेसाणं ।
[5] सं० पा०—एवं जाव काउलेसाणं ।
[6] ठा० १।१९२-१९६ ।

२०६. एवं—जस्स जति लेसाओ[1] तस्स ततियाओ[2] भाणियव्वाओ जाव[3] वेमाणियाणं ॥
२०७. एगा कण्हलेसाणं सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥
२०८. एगा कण्हलेसाणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥
२०९. एगा कण्हलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥
२१०. एवं—छसुवि लेसासु जाव[4] वेमाणियाणं 'जेसिं जइ दिट्ठीओ'[5] ॥
२११. एगा कण्हलेसाणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा ॥
२१२. एगा कण्हलेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा ॥
२१३. जाव[6] वेमाणियाणं । जस्स जति लेसाओ[7] एए अट्ठ, चउवीसदंडया ॥

सिद्ध-पदं

२१४. एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा ॥
२१५. एगा अतित्थसिद्धाणं वग्गणा ॥
२१६. "[8]एगा तित्थगरसिद्धाणं वग्गणा ॥
२१७. एगा अतित्थगरसिद्धाणं वग्गणा ॥
२१८. एगा सयंबुद्धसिद्धाणं वग्गणा ॥
२१९. एगा पत्तेयबुद्धसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२०. एगा बुद्धबोहियसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२१. एगा इत्थीलिंगसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२२. एगा पुरिसलिंगसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२३. एगा णपुंसकलिंगसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२४. एगा सलिंगसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२५. एगा अण्णलिंगसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२६. एगा गिहिलिंगसिद्धाणं वग्गणा° ॥
२२७. एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२८. एगा अणिक्कसिद्धाणं वग्गणा ॥
२२९. एगा अपढमसमयसिद्धाणं[9] वग्गणा, एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा ॥

---

[1] ठा० १।२०० ।
[2] तत्तियाओ (क) ।
[3] ठा० १।१४२-१६३ ।
[4] ठा० १।१४१-१६३ ।
[5] जेसिं-जेसिं° (क); जेसिं जद्दिट्ठीओ (ख); पू०—ठा० १।१७३-१८५ ।
[6] ठा० १।१४१-१६३ ।
[7] ठा० १।२०० ।
[8] सं० पा०—एवं जाव एगा ।
[9] पढमसमय° (ख, वृपा) ।

पोग्गल-पदं

२३०. एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं[१] वग्गणा ।।

२३१. एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा ।।

२३२. एगा एगसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा ।।

२३३. एगा एगगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा अणंतगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा ।।

२३४. एवं—वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा जाव[२] एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ।।

२३५. एगा जहण्णपएसियाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२३६. एगा उक्कस्सपएसियाणं[३] खंधाणं वग्गणा ।।

२३७. एगा अजहण्णुक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२३८. [४]•एगा जहण्णोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२३९. एगा उक्कोसोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४०. एगा अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४१. एगा जहण्णठितियाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४२. एगा उक्कस्सठितियाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४३. एगा अजहण्णुक्कोसठितियाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४४. एगा जहण्णगुणकालगाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४५. एगा उक्कस्सगुणकालगाणं खंधाणं वग्गणा ।।

२४६. एगा अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं खंधाणं वग्गणा° ।।

२४७. एवं—वण्ण-गंध-रस-फासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव[५] एगा अजहण्णुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं [खंधाणं ?] वग्गणा ।।

जंबुद्दीव-पदं

२४८. एगे जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं[६] •सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए, वट्टे तेल्लापूय-

---

१. पोग्गालाणं (क, ख, ग) ।

२. ठा० १।७२-८९ ।

३. उक्कोस्स° (ख); उक्कोस° (ग) ।

४. सं० पा०—एवं जहण्णोगाहणगाणं…… अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं ।

५. ठा० १।७२-८९ ।

६. सं० पा०—सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं ।

संठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं° अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं ।।

महावीर-णिव्वाण-पदं

२४९. एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे[1] सिद्धे बुद्धे मुत्ते[2] °अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

देव-पदं

२५०. अणुत्तरोववाइया णं देवा[3] 'एगं रयणिं'[4] उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

णक्खत्त-पदं

२५१. अद्दाणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।
२५२. चित्ताणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।
२५३. सातिणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।

पोग्गल-पदं

२५४. एगपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।
२५५. [5]°एगसमयठितिया[6] पोग्गला अणंता पण्णत्ता° ।।
२५६. एगगुणकालगा[7] पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव[8] एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।

---

[1] चरिम° (क, ग) ।
[2] सं० पा०—मुत्ते जाव सव्वदुक्ख° ।
[3] देवा णं (क, ख, ग) ।
[4] एगा रत्तणि (ख) ।
[5] सं० पा०—एवमेगसमयठितिया ।
[6] °ठितीया (क, ख, ग) ।
[7] °कालगाणं (ख) ।
[8] ठा० १।७२-८९ ।

बीअं ठाणं

पढमो उद्देसो

दुपओआर-पदं

१. 'जदत्थि णं'[1] लोगे तं सव्वं दुपओआरं[2], तं जहा—जीवच्चेव, अजीवच्चेव। 'तसच्चेव, थावरच्चेव'[3]। सजोणियच्चेव, अजोणियच्चेव। साउयच्चेव, अणाउयच्चेव। सइंदियच्चेव, अणिंदियच्चेव[4]। सवेयगा चेव, अवेयगा चेव। सरूवी चेव, अरूवी चेव। सपोग्गला चेव, अपोग्गला चेव। संसारसमावण्णगा चेव, असंसारसमावण्णगा चेव। सासया चेव, असासया चेव। आगासे चेव, णोआगासे चेव। धम्मे चेव, अधम्मे चेव। बंधे चेव, मोक्खे चेव। पुण्णे चेव, पावे चेव। आसवे चेव, संवरे चेव। वेयणा चेव, णिज्जरा चेव॥

किरिया-पदं

२. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जीवकिरिया चेव, अजीवकिरिया चेव॥

३. जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव॥

४. अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इरियावहिया चेव, संपराइगा चेव॥

५. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया चेव, आहिगरणिया[5] चेव॥

६. काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवरयकायकिरिया चेव, दुपउत्तकायकिरिया[6] चेव॥

७. आहिगरणिया[7] किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजोयणाधिकरणिया चेव, णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव॥

---

[1] जदत्थि च णं (क,वृपा); जदत्थि णं च (ग)।

[2] दुपडोयारं (क, ख, ग, वृपा)।

[3] तसे चेव थावरे चेव (क्व)।

[4] अणिंदिएच्चेव (क, ग)।

[5] अहिग° (ग)।

[6] दुप्प° (क्व)।

[7] अहिकर° (क); आहिकर° (ग)।

८. दो किरियाओ पण्णत्ताओ तं जहा—पाओसिया चेव, पारियावणिया चेव ।।

९. पाओसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाओसिया चेव, अजीवपाओसिया चेव ।।

१०. पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपारियावणिया चेव, परहत्थपारियावणिया चेव।।

११. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पाणातिवायकिरिया चेव, अपच्चक्खाणकिरिया चेव ।।

१२. पाणातिवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपाणातिवायकिरिया चेव, परहत्थपाणातिवायकिरिया चेव ।।

१३. अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव, अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव ।।

१४. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया चेव, पारिग्गहिया चेव ।

१५. आरंभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवआरंभिया चेव, अजीवआरंभिया चेव ।।

१६. [1]°पारिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपारिग्गहिया चेव, अजीवपारिग्गहिया चेव° ।।

१७. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मायावत्तिया[2] चेव, मिच्छादंसणवत्तिया चेव ।

१८. मायावत्तिया[3] किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आयभाववंकणता चेव, परभाववंकणता चेव ।।

१९. मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—ऊणाइरियमिच्छादंसणवत्तिया[4] चेव, तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव ।।

२०. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—दिट्ठिया चेव, पुट्ठिया चेव ।।

२१. दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदिट्ठिया चेव, अजीवदिट्ठिया चेव ।।

२२. [5]°पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपुट्ठिया चेव, अजीवपुट्ठिया चेव° ।।

२३. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पाडुच्चिया चेव, सामंतोवणिवाइया चेव ।।

---

[1] सं० पा०—एवं पारिग्गहिया वि ।

[2] मायवत्तिया (क, ग) ।

[3] मायवत्तिया (क, ग) ।

[4] ऊणायरिय° (क, ग); ऊणाइरित्त° (ख) ।

[5] सं० पा०—एवं पुट्ठियावि ।

२४. पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाडुच्चिया चेव, अजीवपाडुच्चिया चेव ।।

२५. [१]°सामंतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवसामंतोवणिवाइया चेव, अजीवसामंतोवणिवाइया चेव° ।।

२६. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—साहत्थिया चेव, णेसत्थिया चेव ।।

२७. साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव ।।

२८. [२]°णेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवणेसत्थिया चेव, अजीवणेसत्थिया चेव° ।।

२९. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आणवणिया चेव, वेयारणिया[३] चेव ।।

३०. [४]°आणवणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवआणवणिया चेव, अजीवआणवणिया चेव ।।

३१. वेयारणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीववेयारणिया चेव, अजीववेयारणिया चेव° ।।

३२. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अणाभोगवत्तिया चेव, अणवकंखवत्तिया चेव ।।

३३. अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणाउत्तआइयणता[५] चेव, अणाउत्तपमज्जणता चेव ।।

३४. अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव, परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव ।।

३५. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव ।।

३६. पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायावत्तिया चेव, लोभवत्तिया चेव ।।

३७. दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे चेव, माणे चेव ।।

गरहा-पदं

३८. दुविहा गरिहा पण्णत्ता, तं जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति । अहवा—गरहा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दीहं वेगे अद्धं गरहति, रहस्सं वेगे अद्धं गरहति ।।

---

[१] सं० पा०—एवं सामंतोवणिवाइयावि ।

[२] सं० पा०—एवं णेसत्थियावि ।

[३] वेयारणीया (क, ख); अणाणुवणिता (ग) ।

[४] सं० पा०—जहेव णेसत्थियाओ ।

[५] °आयाणता (क) ।

पच्चक्खाण-पदं

३९. दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति।
अहवा—पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति ॥

विज्जाचरण-पदं

४०. दोहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसार-कंतारं वीतिवएज्जा, तं जहा—विज्जाए चेव चरणेण चेव ॥

आरंभ-परिग्गह-पदं

४१. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४२. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता[1] आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४३. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता[2] आया णो केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४४. [3]°दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४५. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४६. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४७. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४८. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

४९. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

---

१. अपरियादितित्ता (क, ग); अपरियाइत्ता (वृपा)।

२. अपरियाइत्ता (क, ग)।

३. सं० पा०—एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा···ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलणाणं।

५०. दो ठाणाइं अपरियाणत्ता आया णो केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव परिग्गहे चेव ।।

५१. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव° ।।

५२. दो ठाणाइं परियाणेत्ता[1] आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५३. [2]°दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५४. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५५. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५६. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५७. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५८. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

५९. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

६०. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

६१. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

६२. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव ।।

सोच्चा-अभिसमेच्च-पदं

६३. दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ।।

६४. [3]°दोहिं ठाणेहिं आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ।।

---

[1] परियाइत्ता (क); परियादित्ता (ग)।

[2] सं० पा०—एवं जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा।

[3] सं० पा०—जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा।

६५. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६६. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६७. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६८. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६९. दोहिं ठाणेहिं आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव अभिसमेच्चच्चेव ॥

७०. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७१. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७२. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७३. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव° ॥

कालचक्क-पदं

७४. दो समाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ओसप्पिणी समा चेव, उस्सप्पिणी समा चेव ॥

उम्माय-पदं

७५. दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे[1] चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं।
तत्थ णं जे से जक्खाएसे, से णं सुहवेयतराए चेव, सुहविमोयतराए[2] चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, से णं दुहवेयतराए[3] चेव, दुहविमोयतराए चेव ॥

---

[1] जक्खातेसे (क, ग); जक्खावेसे (ख); ६।४३ सूत्रे 'जक्खावेसेणं' पाठो विद्यते, अत्र च 'जक्खाएसे' इति प्रथमान्तः पाठोस्ति। वृत्तिकारेणाप्यसौ प्रथमान्तत्वेन व्याख्यातः। अत्र लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमथवा सूत्रकारस्य रचनाभेदः इति न निश्चेतुं शक्यते।

[2] °मोहतराए (ग)।

[3] वेवतराए (ग)।

दंड-पदं

७६. दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे चेव, अणट्ठादंडे चेव ।।

७७. णेरइयाणं दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे य, अणट्ठादंडे य ।।

७८. एवं—चउवीसादंडओ जाव[1] वेमाणियाणं ।।

दंसण-पदं

७९. दुविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणे चेव, मिच्छादंसणे चेव ।।

८०. सम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव, अभिगमसम्मद्दसणे चेव ।।

८१. णिसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव ।।

८२. अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव ।।

८३. मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव, अणभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव ।।

८४. अभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव ।।

८५. [2]°अणभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव° ।।

णाण-पदं

८६. दुविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे चेव, परोक्खे चेव ।।

८७. पच्चक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—केवलणाणे चेव, णोकेवलणाणे चेव ।।

८८. केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवत्थकेवलणाणे चेव, सिद्धकेवलणाणे चेव ।।

८९. भवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।।

९०. सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।
अहवा—चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।।

९१. °[3]अजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।

---

[1] ठा० १।१४२-१६३ ।

[2] सं०पा०—एवं अणभिग्गहितमिच्छादंसणे वि ।

[3] सं०पा०—एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि ।

अहवा—चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव° ॥

९२. सिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव, परंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९३. अणंतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९४. परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९५. णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओहिणाणे चेव, मणपज्जवणाणे चेव ॥

९६. ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवपच्चइए चेव, खओवसमिए चेव ॥

९७. दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते, तं जहा—देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव ॥

९८. दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥

९९. मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उज्जुमति चेव, विउलमति चेव ॥

१००. परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव ॥

१०१. आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुयणिस्सिए चेव, असुयणिस्सिए चेव ॥

१०२. सुयणिस्सिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे चेव, वंजणोग्गहे चेव ॥

१०३. असुयणिस्सिए[1] °दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे चेव, वंजणोग्गहे चेव° ॥

१०४. सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अंगपविट्ठे चेव, अंगबाहिरे चेव ॥

१०५. अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आवस्सए चेव, आवस्सयवतिरित्ते चेव ॥

१०६. आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालिए चेव, उक्कालिए चेव ॥

धम्म-पदं

१०७. दुविहे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव ॥

१०८. सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुत्तसुयधम्मे चेव, अत्थसुयधम्मे चेव ॥

१०९. चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अगारचरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव ॥

संजम-पदं

११०. दुविहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—सरागसंजमे चेव, वीतरागसंजमे चेव ॥

---

[1] सं० पा०—असुयणिस्सितेवि एमेव ।

१११. सरागसंजमे दुविहे पण्णत्त, त जहा—सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, वादरसंपरायसरागसंजमे चेव ।।

११२. सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव ।।

अहवा—चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव ।

अहवा—सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संकिलेसमाणए चेव, विसुज्झमाणए चेव ।।

११३. बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव, अपढमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव, अचरिमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव ।

अहवा—बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवातिए चेव, अपडिवातिए चेव ।।

११४. वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, खीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

११५. उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

११६. खीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

११७. छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव, बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव ।।

११८. सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव, अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव, अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव ।।

११९. बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव, अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

१२०. केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

१२१. सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

१२२. अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ।।

जीव-णिकाय-पदं

१२३. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२४. [1]°दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२५. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२६. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव° ।।

१२७. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२८. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१२९. [2]°दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३०. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३१. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३२. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव° ।।

१३३. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३४. [3]°दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३५. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३६. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३७. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव° ।।

---

१. सं० पा०—एवं जाव दुविहा ।

२. सं० पा०—एवं जाव वणस्सइकाइया ।

३. सं० पा०—एवं जाव वणस्सइकाइया ।

दव्व-पदं

१३८. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ॥

जीव-णिकाय-पदं

१३९. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

१४०. [1]°दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

१४१. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

१४२. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

१४३. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव °॥

दव्व-पदं

१४४. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

जीव-णिकाय-पदं

१४५. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

१४६. [2]°दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा--अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

१४७. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

१४८. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

१४९. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

दव्व-पदं

१५०. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव °॥

१५१. दुविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—ओसप्पिणीकाले चेव, उस्सप्पिणीकाले[3] चेव ॥

१५२. दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोगागासे चेव, अलोगागासे चेव ॥

---

[1] सं० पा०—एव जाव वणस्सइकाइया ।

[2] सं० पा०—जाव दव्वा ।

[3] उवस्सप्पिणी° (ख); ओस्सप्पिणी° (ग) ।

सरीर-पदं

१५३. णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए।।

१५४. [1]°देवाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए °।।

१५५. पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, बाहिरगे ओरालिए जाव[2] वणस्सइकाइयाणं।।

१५६. बेइंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए।।

१५७. [3]°तेइंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए।।

१५८. चउरिंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए °।।

१५९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे बाहिरगे ओरालिए।।

१६०. [4]°मणुस्साणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे बाहिरगे ओरालिए °।।

१६१. विग्गहगइसमावण्णगाणं णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—तेयए चेव, कम्मए चेव। णिरंतरं जाव[5] वेमाणियाणं।।

१६२. णेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव जाव[6] वेमाणियाणं।।

१६३. णेरइयाणं दुट्ठाणणिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते, तं जहा—रागणिव्वत्तिए चेव, दोसणिव्वत्तिए चेव जाव[7] वेमाणियाणं।।

काय-पदं

१६४. दो काया पण्णत्ता, तं जहा—तसकाए चेव, थावरकाए चेव।।

१६५. तसकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव।।

१६६. [8]°थावरकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव °।।

---

[1] सं० पा०—एवं देवाणं भाणियव्वं।

[2] ठा० १।१५३-१५५।

[3] सं० पा०—जाव चउरिंदियाणं।

[4] सं० पा०—मणुस्साणं वि एवं चेव।

[5] ठा० १।१४२-१६३।

[6] ठा० १।१४२-१६३।

[7] ठा० १।१४२-१६३।

[8] सं० पा०—एवं थावरकाए वि।

दिसादुगे करणिज्ज-पदं

१६७. दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पव्वावित्तए—पाईणं चेव, उदीणं चेव ।।

१६८. [1]°दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा°—मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, संभुंजित्तए, संवासित्तए, सज्झायमुद्दिसित्तए, सज्झायं समुद्दिसित्तए, सज्झायमणुजाणित्तए, आलोइत्तए, पडिक्कमित्तए, णिंदित्तए, गरहित्तए, विउट्टित्तए, विसोहित्तए, अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए—°पाईणं चेव, उदीणं चेव°।।

१६९. दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-जूसणा-जूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खिताणं पाओवगताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, तं जहा—पाईणं चेव, उदीणं चेव ।।

बीओ उद्देसो

वेदणा-पदं

१७०. जे देवा उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारट्ठितिया[2] गतिरतिया गतिसमावण्णगा, तेसि णं देवाणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति ।।

१७१. णेरइयाणं सता समियं जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति जाव[3] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ।।

१७२. मणुस्साणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति, इहगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति । मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा ।।

गति-आगति-पदं

१७३. णेरइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, तं जहा—णेरइए णेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव णं से णेरइए णेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—एवं ।

[2] ठितीया (क, ग) ।

[3] ठा० १।१४२-१५६ ।

१७४. एवं असुरकुमारावि[1], णवरं—से चेव णं से असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा। एवं—सव्वदेवा[2]॥

१७५. पुढविकाइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा णो पुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा। से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा णो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा॥

१७६. एवं जाव[3] मणुस्सा॥

दंडग-मग्गणा-पदं

१७७. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—भवसिद्धिया चेव, अभवसिद्धिया चेव जाव[4] वेमाणिया॥

१७८. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा चेव, परंपरोववण्णगा चेव जाव[5] वेमाणिया॥

१७९. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव जाव[6] वेमाणिया॥

१८०. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमओववण्णगा चेव, अपढमसमओववण्णगा चेव जाव[7] वेमाणिया॥

१८१. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—आहारगा चेव, अणाहारगा चेव। एवं जाव[8] वेमाणिया॥

१८२. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—उस्सासगा चेव, णोउस्सासगा चेव जाव[9] वेमाणिया॥

१८३. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सइंदिया चेव, अणिंदिया चेव जाव[10] वेमाणिया॥

१८४. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव जाव[11] वेमाणिया॥

१८५. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सण्णी चेव, असण्णी चेव। एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव[12] वाणमंतरा[13]॥

१८६. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—भासगा चेव, अभासगा चेव। एवमेगिंदियवज्जासव्वे[14]॥

१८७. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सम्मद्दिट्ठिया चेव, मिच्छद्दिट्ठिया चेव। एगिंदियवज्जासव्वे[15]॥

---

[1] असुरकुमारणवि (क, ग)।

[2] ठा० १।१४३-१५१, १६२-१६४।

[3] ठा० १।१५३-१६०।

[4-11] ठा० १।१४२-१६३।

[12] ठा० १।१४२-१५१, १६०, १६१।

[13] वेमाणिया (वृ); वाणवंतरिया (वृपा)।

[14,15] ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६४।

१८८. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—परित्तसंसारिता चेव, अणंतसंसारिता चेव जाव[1] वेमाणिया ॥

१८९. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जकालसमयट्ठितिया[2] चेव, असंखेज्जकालसमयट्ठितिया चेव। एवं—पंचेंदिया एगिंदियविगलिंदियवज्जा जाव[3] वाणमंतरा ॥

१९०. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सुलभबोधिया चेव, दुलभबोधिया चेव जाव[4] वेमाणिया ॥

१९१. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—कण्हपक्खिया चेव, सुक्कपक्खिया चेव जाव[5] वेमाणिया ॥

१९२. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—चरिमा चेव, अचरिमा चेव जाव[6] वेमाणिया ॥

आहोहि-णाण-दंसण-पदं

१९३. दोहिं ठाणेहिं आया अहेलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ-पासइ, असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि समोहतासमोहतेणं[7] चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ-पासइ ॥

१९४. [8]°दोहिं ठाणेहिं आया तिरियलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ-पासइ, असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ-पासइ ॥

१९५. दोहिं ठाणेहिं आया उड्ढलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ-पासइ, असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ-पासइ ॥

१९६. दोहिं ठाणेहिं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ, असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ।

---

[1] ठा० १।१४२-१६३।

[2] संखेज्जकालठितीया (वृपा)।

[3] ठा० १।१४२-१५१, १६०, १६१।

४-६. ठा० १।१४२-१६३।

[7] समोहिता° (क)।

[8] सं० पा०—एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं।

आहोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ° ॥

१९७. दोहिं ठाणेहिं आता अहेलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अहेलोगं जाणइ-पासइ, अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अहेलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि[1] विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अहेलोगं जाणइ-पासइ ॥

१९८. [2]°दोहिं ठाणेहिं आता तिरियलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता तिरियलोगं जाणइ-पासइ, अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता तिरियलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता तिरियलोगं जाणइ-पासइ ॥

१९९. दोहिं ठाणेहिं आता उड्ढलोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—विउव्वितेणं चेव आता उड्ढलोगं जाणइ-पासइ, अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता उड्ढलोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता उड्ढलोगं जाणइ-पासइ ॥

२००. दोहिं ठाणेहिं आता केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ, तं जहा—विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ, अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता केवलकप्पं लोगं जाणइ-पासइ° ॥

देसेण-सव्वेण-पदं

२०१. दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेति, तं जहा—देसेण वि आया सद्दाइं सुणेति, सव्वेणवि आया सद्दाइं सुणेति ॥

२०२. [3]°दोहिं ठाणेहिं आया रूवाइं पासइ, तं जहा—देसेण वि आया रूवाइं पासइ, सव्वेणवि आया रूवाइं पासइ ॥

२०३. दोहिं ठाणेहिं आया गंधाइं अग्घाति, तं जहा—देसेण वि आया गंधाइं अग्घाति, सव्वेणवि आया गंधाइं अग्घाति ॥

२०४. दोहिं ठाणेहिं आया रसाइं आसादेति, तं जहा—देसेण वि आया रसाइं आसादेति, सव्वेण वि आया रसाइं आसादेति ॥

---

[1] अहो (क, ग)।

[2] सं० पा०—एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं।

[3] सं० पा०—एवं रूवाइ पासइ गंधाइं अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइं पडिसंवेदेति।

२०५. दोहिं ठाणेहिं आया फासाइं पडिसंवेदेति, तं जहा—देसेण वि आया फासाइं पडिसंवेदेति, सव्वेण वि आया फासाइं पडिसंवेदेति° ।।

२०६. दोहिं ठाणेहिं आया ओभासति, तं जहा—देसेणवि आया ओभासति, सव्वेणवि आया ओभासति ।।

२०७. एवं—पभासति, विकुव्वति, परियारेति, भासं[1]भासति, आहारेति, परिणामेति, वेदेति, णिज्जरेति ।।

२०८. दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेति, तं जहा—देसेणवि देवे सद्दाइं सुणेति, सव्वेणवि देवे सद्दाइं सुणेति जाव[2] णिज्जरेति ।।

सरीर-पदं

२०९. मरुया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'एगसरीरी चेव दुसरीरी'[3] चेव ।।

२१०. एवं किण्णरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवण्णकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा ।।

२११. देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'एगसरीरी चेव, दुसरीरी'[4] चेव ।।

तइओ उद्देसो

सद्द-पदं

२१२. दुविहे सद्दे पण्णत्ते, तं जहा—भासासद्दे चेव, णोभासासद्दे चेव ।।

२१३. भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अक्खरसंबद्धे चेव, णोअक्खरसंबद्धे चेव ।।

२१४. णोभासासद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आउज्जसद्दे चेव, णोआउज्जसद्दे चेव ।।

२१५. आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तते चेव, वितते चेव ।।

२१६. तते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणे चेव, सुसिरे[5] चेव ।।

११७. [6]°वितते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणे चेव, सुसिरे चेव ।।°

२१८. णोआउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भूसणसद्दे चेव, णोभूसणसद्दे चेव ।।

२१९. णोभूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तालसद्दे चेव, लत्तियासद्दे चेव ।।

२२०. दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाते सिया, तं जहा—साहण्णंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया, भिज्जंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया ।।

---

[1] × (ख) ।

[2] ठा० २।२०२-२०७ ।

[3] एगसरीरिणो चेव दुसरीरि (क); एगसरीरे चेव बिसरीरे (ख) ।

[4] एगासरीरा चेव बिसरीरा (क); एगसरीरे चेव बिसरीरे (ख) ।

[5] सुसरे (ख); गुसिरे (क्व) ।

[6] सं० पा०—एवं विततेवि ।

पोग्गल-पदं

२२१. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला साहण्णंति, परेण वा पोग्गला साहण्णंति ॥

२२२. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला भिज्जंति, परेण वा पोग्गला भिज्जंति ॥

२२३. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिपडंति[1], तं जहा—सइं वा पोग्गला परिपडंति, परेण वा पोग्गला परिपडंति[2] ॥

२२४. °[3]दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला परिसडंति, परेण वा पोग्गला परिसडंति ॥

२२५. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला विद्धंसंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला विद्धंसंति, परेण वा पोग्गला विद्धंसंति ॥°

२२६. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भिण्णा चेव, अभिण्णा चेव ॥

२२७. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भेउरधम्मा चेव, णोभेउरधम्मा चेव ॥

२२८. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणुपोग्गला चेव, णोपरमाणुपोग्गला चेव ॥

२२९. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ॥

२३०. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—बद्धपासपुट्ठा चेव, णोबद्धपासपुट्ठा चेव ॥

२३१. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परियादितच्चेव[4], अपरियादितच्चेव[5] ॥

२३२. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता[6] चेव, अणत्ता[7] चेव ॥

२३३. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। °[8]कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

इंदिय-विसय-पदं

२३४. दुविहा सद्दा पण्णत्ता, तं जहा—'अत्ता चेव, अणत्ता च्चेव'[9]। [10]°इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

---

[1] परिवडंति (क); परिसडंति (ग)।

[2] परिवाडिज्जंति (क); परिसाडिज्जंति (ग)।

[3] सं० पा०—एवं परिसडंति विद्धंसंति।

[4] परियादिइत° (क, ग)।

[5] अपरियादिइत° (क, ग)।

[6] अत्ते (क)।

[7] अणत्ते (क)।

[8] सं० पा०—एवं कंता पिया मणुण्णा मणामा।

[9] अत्तच्चेव अणत्तच्चेव (क)।

[10] सं० पा०—एवमिट्ठा जाव मणामा।

२३५. दुविहा रूवा पण्णत्ता, तं जहा—‘अत्ता चेव, अणत्ता चेव’[1]। [2]°इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

२३६. [3]°दुविहा गंधा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव ॥

२३७. दुविहा रसा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव ॥

२३८. दुविहा फासा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

आयार-पदं

२३९. दुविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे चेव, णोणाणायारे चेव ॥

२४०. णोणाणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणायारे चेव, णोदंसणायारे चेव ॥

२४१. णोदंसणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—चरित्तायारे चेव, णोचरित्तायारे चेव ॥

२४२. णोचरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तवायारे चेव वीरियायारे चेव ॥

पडिमा-पदं

२४३. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समाहिपडिमा चेव, उवहाणपडिमा चेव ॥

२४४. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विवेगपडिमा चेव, विउसग्गपडिमा चेव ॥

२४५. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—‘भद्दा चेव, सुभद्दा चेव’[4] ॥

२४६. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—महाभद्दा[5] चेव, सव्वतोभद्दा[6] चेव ॥

२४७. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खुड्डिया चेव मोयपडिमा, महल्लिया चेव मोयपडिमा ॥

२४८. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जवमज्झा चेव चंदपडिमा, वइरमज्झा चेव चंदपडिमा ॥

सामाइय-पदं

२४९. दुविहे सामाइए पण्णत्ते, तं जहा—अगारसामाइए चेव, अणागारसामाइए चेव ॥

---

[1] अत्तच्चेव अणत्तच्चेव (क)।

[2] सं० पा०—एवमिट्ठा जाव मणामा।

[3] सं० पा०—एवं गंधा रसा फासा एवमिक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा।

[4] भद्दे चेव सुभद्दे चेव (क, ग)।

[5] °भद्दे (क, ग)।

[6] °भद्दे (क, ग)।

जम्म-मरण-पदं

२५०. दोण्हं उववाए पण्णत्ते, तं जहा—देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव ।।

२५१. दोण्हं उव्वट्टणा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइयाणं चेव, भवणवासीणं चेव ।।

२५२. दोण्हं चयणे पण्णत्ते, तं जहा—जोइसियाणं चेव, वेमाणियाणं चेव ।।

२५३. दोण्हं गब्भवक्कंती पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

गब्भत्थ-पदं

२५४. दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

२५५. दोण्हं गब्भत्थाणं वुड्ढी पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

२५६. [1]°दोण्हं गब्भत्थाणं°—णिवुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाए समुग्घाते कालसंजोगे आयाती[2] मरणे °पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव° ।।

२५७. दोण्हं छविपव्वा[3] पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

२५८. दो सुक्कसोणितसंभवा पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्सा चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चेव ।।

ठिति-पदं

२५९. दुविहा ठिती पण्णत्ता, तं जहा—कायट्ठिती चेव, भवट्ठिती चेव ।।

२६०. दोण्हं कायट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

२६१. दोण्हं भवट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव ।।

आउय-पदं

२६२. दुविहे आउए पण्णत्ते, तं जहा—अद्धाउए चेव, भवाउए चेव ।।

२६३. दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

२६४. दोण्हं भवाउए पण्णत्ते, तं जहा—देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव ।।

---

[1] सं० पा०—एवं ।

[2] आयाइं (ग) ।

[3] छविपव्वत्ति (क, ग); छवियत्त, छविपत्त (वृपा) ।

कम्म-पदं

२६५. दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पदेसकम्मे चेव, अणुभावकम्मे चेव ।।

२६६. दो अहाउयं पालेंति, तं जहा—देवच्चेव[1], णेरइयच्चेव ।।

२६७. दोण्हं आउय-संवट्टए पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ।।

खेत्त-पदं

२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता[2]—बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभ[3]-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ।।

२६९. एवमेएणमभिलावेणं[4]—हेमवते चेव, हेरण्णवए[5] चेव । हरिवासे चेव, रम्मयवासे चेव ।।

२७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं दो खेत्ता पण्णत्ता[6]—बहुसमतुल्ला अविसेस[7]°मणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभ-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा°—पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव ।।

२७१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो कुराओ पण्णत्ताओ—बहुसमतुल्लाओ जाव[8] देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव ।

तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णाइवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—कूडसामली चेव, जंबू चेव सुदंसणा ।।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया[10] °महज्जुइया महाणुभागा महायसा महाबला° महासोक्खा[11] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—गरुले चेव वेणुदेवे, अणाढिते चेव जंबुद्दीवाहिवती ।।

पव्वय-पदं

२७२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासहरपव्वया पण्णत्ता—

---

[1] देवे चेव (ख, ग) ।

[2] पण्णत्ता तं (क,ख,ग); प्रतिषु 'तंजहा' द्विवारं विद्यते, किन्तु 'पण्णत्ता' शब्दस्यानन्तरं 'तंजहा' पाठो न युज्यते, तेनास्माभिरसौ पाठान्तरे स्वीकृतः । अयं क्रमोऽनेकेषु सूत्रेषु अनुवर्तते । प्रतिषु मध्ये-मध्ये क्वचित् 'तंजहा' पाठो नास्त्यपि ।

[3] विक्खंभेणं (ख) ।

[4] °लावेणं णेयव्वं (क) ।

[5] एरन्नवते (क, ग) ।

[6] पण्णत्ता तं (क, ख, ग) ।

[7] सं० पा०—अविसेस जाव पुव्वविदेहे ।

[8] ठा० २।२६८ ।

[10] सं० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

[11] महेसक्खा (वृपा) ।

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—चुल्लहिमवंते चेव, सिहरिच्चेव ॥

२७३. एवं—महाहिमवंते चेव, रूप्पिच्चेव । एवं—णिसढे चेव, णीलवंते चेव ॥

२७४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं हेमवत-हेरण्णवतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता[1] °अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा°—सद्दावाती[2] चेव, वियडावाती[3] चेव ।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव[4] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—साती चेव, पभासे चेव ॥

२७५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं हरिवास-रम्मएसु[5] वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[6] तं जहा—गंधावाती[7] चेव, मालवंतपरियाए चेव ।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया[8] जाव[9] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—अरुणे चेव, पउमे चेव ॥

२७६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं देवकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आस-क्खंधग-सरिसा अद्धचंद[10]-संठाण-संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[11] तं जहा—सोमणसे चेव, विज्जुप्पभे चेव ॥

२७७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं उत्तरकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आस-क्खंधग-सरिसा अद्धचंद-संठाण-संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[12] तं जहा—गंधमायणे चेव, मालवंते चेव ॥

२७८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो दीहवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[13] तं जहा—भारहे चेव दीहवेयड्ढे, एरवते[14] चेव दीहवेयड्ढे ॥

गुहा-पदं

२७९. भारहए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ—बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणा-

---

[1] सं० पा०—अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती ।

[2] सद्दावती (क, ख, ग); द्रष्टव्यं ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[3] वियडावती (क, ख, ग) ।

[4] ठा० २।२७१ ।

[5] हरिवरिसरम्मतेसु (क, ग) ।

[6] ठा० २।२७२ ।

[7] गंधावती (क, ख, ग); द्रष्टव्यं ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

[8] महिड्ढिया चेव (क, ख, ग) ।

[9] ठा० २।२७१ ।

[10] अवद्धचंद (वृ); अद्धचंद (वृपा) ।

[11-13] ठा० २।२७२ ।

[14] एरावते (क, ग) ।

णत्ताओ अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्त-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा— तिमिसगुहा चेव, खंडगप्पवायगुहा चेव ।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव[1] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—कयमालए चेव, णट्टमालए चेव ।।

२८०. एरवए[2] णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ जाव[3] तं जहा—कयमालए चेव, णट्टमालए चेव ।।

कूड-पदं

२८१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[4] विक्खंभुच्चत्त-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—चुल्लहिमवंतकूडे चेव, वेसमणकूडे चेव ।।

२८२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[5] तं जहा—महाहिमवंतकूडे चेव, वेरुलियकूडे चेव ।।

२८३. एवं—णिसढे वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[6] तं जहा—णिसढकूडे चेव, रुयगप्पभे[7] चेव ।।

२८४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णीलवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[8] तं जहा—णीलवंतकूडे चेव, उवदंसणकूडे चेव ।।

२८५. एवं—रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[9] तं जहा—रुप्पिकूडे चेव, मणिकंचणकूडे चेव ।।

२८६. एवं—सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[10] तं जहा—सिहरिकूडे चेव, तिगिंछिकूडे[11] चेव ।।

महादह-पदं

२८७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं चुल्लहिमवंत-सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभ-उव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—पउमद्दहे चेव, पोंडरीयद्दहे चेव ।

---

[1] ठा० २।२७१ ।

[2] एरावते (क, ग) ।

[3] ठा० २।२७९ ।

[4] ठा० २।२६८ ।

[5],[6] ठा० २।२८१ ।

[7] रुयगकूडे (ख) ।

[8]-[10] ठा० २।२८१ ।

[11] तेगिंछ० (क); तिगिच्छि० (ख) ।

तत्थ णं दो देवयाओ महिड्ढियाओ जाव[1] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति तं जहा—सिरी चेव, लच्छी चेव ।।

२८८. एवं—महाहिमवंत-रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[2] तं जहा—महापउमद्दहे चेव, महापोंडरीयद्दहे चेव ।

तत्थ णं दो देवयाओ[3] हिरिच्चेव, बुद्धिच्चेव ।।

२८९. एवं—णिसढ-णीलवंतेसु[4] तिगिंछद्दहे चेव, केसरिद्दहे चेव ।

तत्थ णं दो देवताओ[5] धिती चेव, कित्ती चेव ।।

महाणदी-पदं

२९०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा—रोहियच्चेव, हरिकंतच्चेव[6] ।।

२९१. एवं—णिसढाओ[7] वासहरपव्वयाओ तिगिंछिद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा—हरिच्चेव, सीतोदच्चेव[8] ।।

२९२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णीलवंताओ वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा—सीता चेव, णारिकंता चेव ।।

२९३. एवं—रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा—णरकंता चेव, रुप्पकूला चेव ।।

पवायद्दह-पदं

२९४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला[9], तं जहा—गंगप्पवायद्दहे चेव, सिंधुप्पवायद्दहे चेव ।।

२९५. एवं—हेमवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला[10], तं जहा—रोहियप्पवायद्दहे चेव, रोहियंसप्पवायद्दहे चेव ।।

२९६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं हरिवासे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला[11], तं जहा—हरिपवायद्दहे चेव, हरिकंतप्पवायद्दहे चेव ।।

२९७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं महाविदेहे वासे दो पवायद्दहा

---

[1] ठा० २।२७१ ।

[2] ठा० २।२८७ ।

३-५. पू०—ठा० २।२८७ ।

[6] हरिकंता चेव (ख) ।

[7] निसिढाओ (क) ।

[8] सीतोत० (क, ख, ग) ।

९-११. पू०—ठा० २।२८७ ।

पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[1] तं जहा—सीतप्पवायद्दहे चेव, सीतोदप्पवायद्दहे चेव ॥

२९८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रम्मए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[2] तं जहा—णरकंतप्पवायद्दहे चेव, णारिकंतप्पवायद्दहे चेव ॥

२९९. एवं—हेरण्णवते वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[3] तं जहा—सुवण्णकूलप्पवायद्दहे चेव, रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव ॥

३००. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं एरवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[4] तं जहा— रत्तप्पवायद्दहे चेव, रत्तावईपवायद्दहे चेव ॥

महाणदी-पदं

३०१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे वासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ—बहुसमतुल्लाओ जाव[5] तं जहा—गंगा चेव, सिंधू चेव ॥

३०२. एवं—जहा पवातद्दहा, एवं णईओ[6] भाणियव्वाओ जाव[7] एरवए[8] वासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ—बहुसमतुल्लाओ जाव[9] तं जहा—रत्ता[10] चेव, रत्तावती चेव ॥

कालचक्क-पदं

३०३. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था ॥

३०४. [11]°जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते ॥

३०५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमिस्साए[12] उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले° भविस्सति ॥

३०६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, दोण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था ॥

३०७. एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव[13] पालइत्था ॥

३०८. एवमागमेस्साए उस्सप्पिणीए जाव[14] पालयिस्संति ॥

१-५. ठा० २।२८७ ।

६. नईओ वि (ख) ।

७. ठा० २।२९५-२९९ ।

८. एरावए (क, ग) ।

९. ठा० २।२८७ ।

१०. रत्तिवति (क, ग) ।

११. सं० पा०—एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पण्णत्ते एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति ।

१२. आगामेसाए (क) ।

१३,१४. ठा० २।३०६ ।

सलागा-पुरिस-वंस-पदं

३०९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु 'एगसमये एगजुगे'[1] दो अरहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

३१०. [2]°जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टिवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

३११. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो दसारवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा °।।

सलागा-पुरिस-पदं

३१२. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरहंता[3] उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

३१३. [4]°जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टी उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

३१४. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो बलदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

३१५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा° उप्पज्जिस्संति वा ।।

कालाणुभव-पदं

३१६. जंबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया 'सुसमसुसममुत्तमं इड्ढिं'[5] पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ।।

३१७. जंबुद्दीवे दीवे दोसु[6] वासेसु मणुया सया सुसममुत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—हरिवासे चेव, रम्मगवासे चेव ।।

३१८. जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदूसममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—हेमवए चेव, हेरण्णवए[7] चेव ।।

३१९. जंबुद्दीवे दीवे दोसु खेत्तेसु मणुया सया दूसमसुसममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा —पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव ।।

३२०. जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—भरहे चेव, एरवते चेव ।।

---

[1] एगजुगे एगसमये (वृ); एगसमये एगजुगे (वृपा) ।

[2] सं० पा०—एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा ।

[3] अरिहंत (ख) ।

[4] सं० पा०—एवं चक्कवट्टी एवं बलदेवा एव वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्संति ।

[5] °मुत्तमिड्ढिं (क); °मुत्तममिड्ढि (ग) ।

[6] दोसु तत्थ (क) ।

[7] एरण्णवए (क, ख, ग) ।

चंद-सूर-पदं

३२१. जंबुद्दीवे दीवे—दो चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा ॥

३२२. दो सूरिआ तविंसु[1] वा तवंति वा तविस्संति[2] वा ॥

णक्खत्त-पदं

३२३. दो कित्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मग्गसिराओ[3], दो अद्दाओ[4], °दो पुणव्वसू, दो पूसा, दो अस्सलेसाओ, दो महाओ, दो पुव्वाफग्गुणीओ, दो उत्तराफग्गुणीओ, दो हत्था, दो चित्ताओ, दो साईओ, दो विसाहाओ, दो अणुराहाओ, दो जेट्ठाओ, दो मूला, दो पुव्वासाढाओ, दो उत्तरासाढाओ, दो अभिईओ, दो सवणा, दो धणिट्ठाओ, दो सयभिसया, दो पुव्वाभद्दवयाओ, दो उत्तराभद्दवयाओ, दो रेवतीओ दो अस्सिणीओ°, दो भरणीओ, [जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा[5] ?] ॥

णक्खत्तदेव-पदं

३२४. [6]दो अग्गी, दो पयावती, दो सोमा, दो रुद्दा, दो अदिती[7], दो बहस्सती, दो सप्पा, दो पिती, दो भगा, दो अज्जमा, दो सविता, दो तट्ठा, दो वाऊ, दो इंदग्गी, दो मित्ता, दो इंदा, दो णिरती, दो आऊ, दो विस्सा, दो बम्हा[8], दो विण्हू, दो वसू, दो वरुणा, दो अया, दो विविद्धी, दो पुस्सा, दो अस्सा, दो यमा ॥

---

[1] तवइंसु (क, ख); तवयंसु (ग)।

[2] तवतिस्संति (क, ख, ग)।

[3] मग्गसिरा (क, ख)।

[4] सं० पा०—दो अद्दाओ एवं भाणियव्वं।

संगहणी गाहा—

कत्तिया रोहिणि मगसिर,
अद्दा य पुणव्वसू अ पूसो य।
तत्तोऽवि अस्सलेसा,
महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई,
विसाहा तह य होति अणुराहा।
जेट्ठा मूलो पुव्वाऽऽसाढा,
तह उत्तरा चेव ॥२॥
अभिई सवणे धणिट्ठा,
सयभिसया दो य होंति भद्दवया।
रेवति अस्सिणि भरणी,
णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव दो भरणीओ।

[5] असौ पाठः प्रस्तुतसूत्रे साक्षाल्लिखितो नास्ति, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति [पाहुड १९] पाठानुसारेणासौ युज्यते। पाठसंक्षेपपद्धतौ नास्य क्रियापदं लिखितमिति प्रतीयते।

[6] अत्र नक्षत्रदेवशब्दस्य साक्षादुल्लेखो नास्ति। असौ च चन्द्रप्रज्ञप्तौ [पाहुड १० पाहुडपाहुड १२], जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ [वक्षस्कार ७] च लभ्यते।

[7] अद्दिती (क, ग)।

[8] बंभ (अ० सू० ३४२)।

महग्गह-पदं

३२५. [1]दो इंगालगा, दो वियालगा, दो लोहितक्खा, दो सणिच्चरा, दो आहुणिया, दो पाहुणिया, दो कणा, दो कणगा, दो कणकणगा, दो कणगविताणगा[2], दो कणगसंताणगा, दो सोमा, दो सहिया, दो आसासणा, दो कज्जोवगा, दो कब्बडगा, दो अयकरगा[3], दो दुंदुभगा, दो संखा, दो संखवण्णा, दो संखवण्णाभा, दो कंसा, दो कंसवण्णा, दो कंसवण्णाभा, दो 'रुप्पी, दो रुप्पाभासा'[4], दो णीला, दो णीलोभासा[5], दो भासा, दो भासरासी, दो तिला, दो तिलपुप्फवण्णा, दो दगा, दो दगपंचवण्णा, दो काका, दो कक्कंधा[6], दो इंदग्गी, दो धूमकेऊ, दो हरी, दो पिंगला, दो बुद्धा, दो सुक्का, दो बहस्सती, दो राहू, दो अगत्थी, दो माणवगा, दो कासा[7], दो फासा, दो धुरा[8], दो पमुहा, दो वियडा, दो विसंधी, दो णियल्ला, दो पइल्ला, दो जडियाइलगा[9], दो अरुणा, दो अग्गिल्ला, दो काला, दो महाकालगा, दो सोत्थिया, दो सोवत्थिया, दो वद्धमाणगा[10], दो पलंबा, दो णिच्चालोगा, दो णिच्चुज्जोता, दो सयंपभा, दो ओभासा, दो सेयंकरा, दो खेमंकरा, दो आभंकरा, दो पभंकरा, दो अपराजिता, दो अरया, दो असोगा, दो विगतसोगा, दो विमला, 'दो वितता, दो वितत्था'[11], दो विसाला, दो साला, दो सुव्वता, दो अणियट्टी, दो एगजडी, दो दुजडी, दो करकरिगा, दो रायग्गला, दो पुप्फकेतू, दो भावकेऊ, [चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा[12] ?] ॥

जंबुद्दीव-वेइआ-पदं

३२६. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

---

[1] अङ्गारकादयोऽष्टाशीतिर्ग्रहाः सूत्रसिद्धाः, केवलमस्मद्दृष्टपुस्तकेषु केषुचिदेव यथोक्तसंख्या संवदतीति सूर्यप्रज्ञप्त्यनुसारेणासाविह संवादनीया (वृत्ति पत्र ७४)।

[2] स्थानांगवृत्तौ उद्धृतसूर्यप्रज्ञप्ति (पाहुड २०) पाठे किञ्चिद् भेदो दृश्यते—
कणवियाणए कणसंताणए णीले णीलोभासे रुप्पी रुप्पोभासे।

[3] अतिकरगा (क, ग); अंतकरगा (ख)।

[4] रुप्पा दो रुप्पो° (ख)।

[5] नीला° (क, ग)।

[6] क्काकंधा (ख)।

[7] कसा (क, ग)।

[8] मधुरा (ग)।

[9] जडियाइला (क, ग)।

[10] वद्धमाणगा दो पूसमाणगा दो अंकुसा (ग)।

[11] दो वितत्ता दो वितव्वा (क); दो विमुहा दो वितत्ता (ग)।

[12] असौ पाठः प्रस्तुतसूत्रे साक्षाल्लिखितो नास्ति, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति (पाहुड १९) पाठानुसारेणासौ युज्यते। पाठसंक्षेपपद्धतौ नास्य क्रियापदं लिखितमिति प्रतीयते।

लवण-समुद्द-पदं

३२७. लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

३२८. लवणस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

धायइसंड-पदं

३२९. धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[1] तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ।।

३३०. एवं—जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव[2] दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव, णवरं—कूडसामली चेव, धायईरुक्खे[3] चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, सुदंसणे चेव ।।

३३१. धायइसंडे[4] दीवे पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[5] तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ।।

३३२. एवं—जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव[6] छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव, णवरं—कूडसामली चेव, महाधायईरुक्खे[7] चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पियदंसणे चेव ।।

३३३. धायइसंडे णं दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं, दो हेमवयाइं, दो हेरण्णवयाइं, दो हरिवासाइं, दो रम्मगवासाइं, दो पुव्वविदेहाइं, दो अवरविदेहाइं, दो देवकुराओ, दो देवकुरुमहद्दुमा, दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा, दो उत्तरकुराओ, दो उत्तरकुरुमहद्दुमा, दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा ।।

३३४. दो चुल्लहिमवंता, दो महाहिमवंता, दो णिसढा, दो णीलवंता, दो रुप्पी, दो सिहरी ।।

३३५. दो सद्दावाती, दो सद्दावातिवासी साती देवा, दो वियडावाती, दो वियडावातिवासी पभासा देवा, दो गंधावाती[8], दो गंधावातिवासी अरुणा देवा, दो मालवंतपरियागा, दो मालवंतपरियागवासी पउमा देवा ।।

३३६. दो मालवंता, दो चित्तकूडा, दो पम्हकूडा, दो णलिणकूडा, दो एगसेला, दो तिकूडा, दो वेसमणकूडा, दो अंजणा, दो मातंजणा, दो सोमणसा,

---

[1] ठा० २।२६८ ।

[2] ठा० २।२६९-३२० ।

[3] धाती° (क, ख, ग) ।

[4] धातती° (क, ख, ग) ।

[5] ठा० २।२६८ ।

[6] ठा० २।२६९-३२० ।

[7] महाधायती° (क, ख, ग) ।

[8] गंधावती (क, ख, ग); द्रष्टव्यं ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

दो विज्जुप्पभा, दो अंकावती, दो पम्हावती, दो आसीविसा, दो सुहावहा, दो चंदपव्वता, दो सूरपव्वता, दो णागपव्वता, दो देवपव्वता, दो गंधमायणा, दो उसुगारपव्वया, दो चुल्लहिमवंतकूडा, दो वेसमणकूडा, दो महाहिमवंतकूडा, दो वेरुलियकूडा, दो णिसढकूडा, दो रुयगकूडा, दो णीलवंतकूडा, दो उवदंसणकूडा, दो रुप्पिकूडा, दो मणिकंचणकूडा, दो सिहरिकूडा, दो तिगिंछिकूडा ।।

३३७. दो पउमद्दहा, दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीओ देवीओ, दो महापउमद्दहा, दो महापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ देवीओ, एवं जाव[1] दो पुंडरीयद्दहा, दो पोंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ ।।

३३८. दो गंगप्पवायद्दहा जाव[2] दो रत्तावतीपवातद्दहा ।।

३३९. दो रोहियाओ[3] जाव[4] दो रुप्पकूलाओ, दो गाहवतीओ[5], दो दहवतीओ, दो पंकवतीओ[6], दो तत्तजलाओ, दो मत्तजलाओ, दो उम्मत्तजलाओ, दो खीरोयाओ[7], दो सीहसोताओ[8], दो अंतोवाहिणीओ, दो उम्मिमालिणीओ[9], 'दो फेणमालिणीओ, गंभीरमालिणीओ'[10] ।।

३४०. दो कच्छा, दो सुकच्छा, दो महाकच्छा, दो कच्छावती, दो आवत्ता, दो मंगलवत्ता, दो पुक्खला, दो पुक्खलावई, दो वच्छा, दो सुवच्छा, दो महावच्छा, दो वच्छगावती, दो रम्मा, दो रम्मगा, दो रमणिज्जा, दो मंगलावती, दो पम्हा, दो सुपम्हा, दो महपम्हा[11], दो पम्हगावती, दो संखा, दो णलिणा, दो कुमुया, दो सलिलावती, दो वप्पा, दो सुवप्पा, दो महावप्पा, दो वप्पगावती, दो वग्गू, दो सुवग्गू, दो गंधिला, दो गंधिलावती ।।

३४१. दो खेमाओ, दो खेमपुरीओ, दो रिट्ठाओ, दो रिट्ठपुरीओ, दो खग्गीओ, दो मंजूसाओ, दो ओसधीओ[12], दो पोंडरिगिणीओ[13] दो सुसीमाओ, दो कुंडलाओ, दो अपराजियाओ, दो पभंकराओ, दो अंकावईओ, दो पम्हावईओ,

---

[1] ठा० २।२८७-२८९ ।

[2] ठा० २।२९४-३०० ।

[3] रोहियंसाओ (ग); 'दो रोहियाओ' इत्यादौ नद्यधिकारे गङ्गादीनां सदपि द्वित्वं नोक्तं, जम्बूद्वीपप्रकरणोक्तस्य — "महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महानदीओ पवहंति" इत्यादिसूत्रक्रमस्याश्रयणात्, तत्र हि रोहिदादय एवाष्टौ श्रूयन्त इति(वृ) ।

[4] ठा० २।२९०-२९३ ।

[5] गंधावतीओ (क, ग) ।

[6] वेगवती (वृपा) ।

[7] खारोआओ (क, ग, वृ); खीरोदाओ (वृपा) ।

[8] सीयसोताओ (वृपा) ।

[9] उंमिणमा° (ख) ।

[10] दो गंभीरमालिणीओ, दो फेणमालिणीओ (वृपा) ।

[11] महा° (क, ग) ।

[12] उसुहीओ (ख) ।

[13] पोंडरिं° (ख) ।

दो सुभाओ, दो रयणसंचयाओ, दो आसपुराओ, दो सीहपुराओ, दो महापुराओ, दो विजयपुराओ, दो अवराजिताओ, दो अवराओ[1], दो असोयाओ, दो विगयसोगाओ, दो विजयाओ, दो वेजयंतीओ, दो जयंतीओ, दो अपराजियाओ, दो चक्कपुराओ, दो खग्गपुराओ, दो अवज्झाओ, दो अउज्झाओ ।।

३४२. दो भद्दसालवणा, दो णंदणवणा, दो सोमणसवणा, दो पंडगवणाइं[2] ।।

३४३. दो पंडुकंबलसिलाओ, दो अतिपंडुकंबलसिलाओ, दो रत्तकंबलसिलाओ, दो अइरत्तकंबलसिलाओ ।।

३४४. दो मंदरा, दो मंदरचूलिआओ ।।

३४५. धायइसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

३४६. कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

पुक्खरवर-पदं

३४७. पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[3] तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ।।

३४८. तहेव जाव[4] दो कुराओ पण्णत्ताओ—देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव । तत्थ णं दो महतिमहालया महद्दुमा पण्णत्ता, तं जहा—कूडसामली चेव, पउमरुक्खे चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पउमे चेव जाव[5] छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।।

३४९. पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता । तहेव[6] णाणत्तं—कूडसामली चेव, महापउमरुक्खे चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पुंडरीए चेव ।।

३५०. पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं जाव[7] दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ[8] ।।

वेदिका-पदं

३५१. पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

३५२. सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओ दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ताओ ।।

इंद-पदं

३५३. दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—चमरे चेव, बली चेव ।।

---

[1] अवरयाओ (क, ग); अवयाओ (ख) ।

[2] पंडुगवणाइं (ख) ।

[3] ठा० २।२६८ ।

[4] ठा० २।२६९-३७१ ।

[5] ठा० २।२७२-३२० ।

[6] पू०—ठा० २।२६८-३२० ।

[7] ठा० २।३३३-३४३ ।

[8] °चूलियाइं (क) ।

३५४. दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—धरणे चेव, भूयाणंदे चेव ॥
३५५. दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—वेणुदेवे चेव, वेणुदाली चेव ॥
३५६. दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—हरिच्चेव, हरिस्सहे चेव ॥
३५७. दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अग्गिसिहे चेव, अग्गिमाणवे चेव ॥
३५८. दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे चेव, विसिट्ठे[1] चेव ॥
३५९. दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—जलकंते चेव, जलप्पभे चेव ॥
३६०. दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अमियगती चेव, अमितवाहणे चेव ॥
३६१. दो वायुकुमारिंदा[2] पण्णत्ता, तं जहा—वेलंबे चेव, पभंजणे चेव ॥
३६२. दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—घोसे चेव, महाघोसे चेव ॥
३६३. दो पिसाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—काले चेव, महाकाले चेव ॥
३६४. दो भूइंदा पण्णत्ता, तं जहा—सुरूवे चेव, पडिरूवे चेव ॥
३६५. दो जक्खिंदा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णभद्दे चेव, माणिभद्दे चेव ॥
३६६. दो रक्खसिंदा पण्णत्ता, तं जहा—भीमे चेव, महाभीमे चेव ॥
३६७. दो किण्णरिंदा पण्णत्ता, तं जहा—किण्णरे चेव, किंपुरिसे चेव ॥
३६८. दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सप्पुरिसे चेव, महापुरिसे चेव ॥
३६९. दो महोरगिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अतिकाए चेव, महाकाए चेव ॥
३७०. दो गंधव्विंदा पण्णत्ता, तं जहा—गीतरती चेव, गीयजसे चेव ॥
३७१. दो अणपण्णिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिहिए चेव, सामण्णे[3] चेव ॥
३७२. दो पणपण्णिंदा पण्णत्ता, तं जहा—धाए चेव, विहाए चेव ॥
३७३. दो इसिवाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—इसिच्चेव, इसिवालए चेव ॥
३७४. दो भूतवाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—'इस्सरे चेव, महिस्सरे'[4] चेव ॥
३७५. दो कंदिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सुवच्छे चेव, विसाले चेव ॥
३७६. दो महाकंदिंदा पण्णत्ता, तं जहा—हस्से चेव, हस्सरती चेव ॥
३७७. दो कुंभंडिंदा[5] पण्णत्ता, तं जहा—सेए चेव, महासेए चेव ॥
३७८. दो पतइंदा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तए तेव, पतयवई[6] चेव ॥
३७९. जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—चंदे चेव, सूरे चेव ॥
३८०. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सक्के चेव, ईसाणे चेव ॥
३८१. सणंकुमार[7]-माहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सणंकुमारे चेव, माहिंदे चेव ॥

---

[1] वसिट्ठे (क, ग) ।

[2] वात ° (क, ग) ।

[3] सामाणे (क); सामणि (ख, ग) ।

[4] इस्सिरे चेव महिस्सरे (क) ।

[5] कुंभडिंदा (ख); कुंभंडिंडा (ग) ।

[6] महापयतए (क); पयगवते (ख); पयतए (ग) ।

[7] एवं सणं ° (क, ख, ग) ।

३८२. बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—बंभे चेव, लंतए चेव ।।

३८३. महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव ।।

३८४. आणत-पाणत-आरण-अच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—पाणते चेव, अच्चुते चेव ।।

विमाण-पदं

३८५. महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—'हालिद्दा चेव, सुकिल्ला'[1] चेव ।।

देव-पदं

३८६. गेविज्जगा णं देवा[2] दो रयणीओ उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

चउत्थो उद्देसो

जीवाजीव-पदं

३८७. समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या[3] अजोवाति या[4] पवुच्चति ।।

३८८. आणापाणूति वा थोवेति[5] वा जीवाति या अजोवाति या पवुच्चति ।।

३८९. खणाति वा लवाति वा जोवाति या आजीवाति या पवुच्चति । एवं—मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उडूति[6] वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वाससयाति वा वाससहस्साइ वा वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुंडियंगाति वा तुडियाति वा अडडंगाति वा अडडाति वा 'अववंगाति वा अववाति'[7] वा हूहूअंगाति वा हूहूयाति[8] वा उप्पलंगाति वा उप्पलाति वा पउमंगाति वा पउमाति वा णलिणंगाति वा णलिणाति वा अत्थणिकुरंगाति[9] वा अत्थणिकुराति[10] वा अउअंगाति वा अउआति वा 'णउअंगाति वा णउआति वा'[11] पउतंगाति वा पउताति वा

---

[1] हालिद्दे चेव सुकिल्ले (क, ग) ।

[2] देवा णं (क, ख, ग) ।

[3,4] वा (क); वृत्तिकृता 'या' व्याख्यातः—चकारौ समुच्चयार्थौ, दीर्घता च प्राकृतत्वात् ।

[5] थोवाति (क, ख, ग) ।

[6] उदूति (क, ग) ।

[7] अपयंगाति वा अपवाति (क, ग) ।

[8] हूडु° (ग) ।

[9] अच्छीणिकुरंगाति (क); अत्थिणिकुरंगा (ख) ।

[10] अत्थणिउराति (क, ग) ।

[11] × (ग) ।

चूलियंगाति वा चूलियाति वा सीसपहेलियंगाति वा सीसपहेलियाति वा पलिओवमाति वा सागरोवमाति वा 'ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा'[1]—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ।।

३९०. गामाति वा णगराति वा णिगमाति बा रायहाणीति वा खेडाति वा कब्बडाति वा मडंबाति वा दोणमुहाति वा पट्टणाति वा आगराति वा आसमाति वा संबाहाति वा सण्णिवेसाइ वा घोसाइ वा आरामाइ वा उज्जाणाति वा वणाति वा वणसंडाति वा वावीति वा पुक्खरणीति वा सराति वा सरपंतीति वा अगडाति वा तलागाति वा दहाति वा णदीति वा पुढवीति वा उदहीति वा वातखंधाति वा उवासंतराति वा वलयाति वा विग्गहाति वा दीवाति वा समुद्दाति वा वेलाति वा वेइयाति[2] वा दाराति वा तोरणाति वा णेरइयाति वा णेरइयावासाति वा जाव[3] वेमाणियाति वा वेमाणियावासाति वा कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा वासाति वा वासधरपव्वताति वा कूडाति वा कूडागाराति वा विजयाति वा रायहाणीति वा—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ।।

३९१. छायाति[4] वा आतवाति वा दोसिणाति वा अंधकाराति वा 'ओमाणाति वा'[5] उम्माणाति वा अतियाणगिहाति[6] वा उज्जाणगिहाति वा अवलिंबाति वा सणिप्पवाताति वा—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ।।

३९२. दो रासी पण्णत्ता, तं जहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ।।

कम्म-पदं

३९३. दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पेज्जबंधे चेव, दोसबंधे चेव ।।

३९४. जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं बंधंति, तं जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव ।।

३९५. जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ।।

३९६. [7]°जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं वेदेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ।।

३९७. जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं णिज्जरेंति, तं जहा°—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ।।

---

[1] उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा (क,ख)।

[2] वेतिताति (क, ख, ग)।

[3] ठा० १।१४२-१६३।

[4] छाताति (क, ख, ग)।

[5] ओमाणाति वा पमाणाति वा (क)।

[6] अतिताण° (क, ख, ग)।

[7] सं० पा०—एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति।

अत्त-णिज्जाण-पदं

३९८. दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुसित्ता णं णिज्जाति ।।

३९९. [१]°दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुरित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुरित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुरित्ता णं णिज्जाति ।।

४००. दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुडित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुडित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुडित्ता णं णिज्जाति ।।

४०१. दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति ।।

४०२. दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति° ।।

खय-उवसम-पदं

४०३. दोहिं ठाणेहिं आता केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, तं जहा—खएण[२] चेव, उवसमेण चेव ।।

४०४. [३]°दोहिं ठाणेहिं आता—केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं° मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—खएण चेव, उवसमेण चेव ।।

ओवमिय-काल-पदं

४०५. दुविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे चेव, सागरोवमे चेव ।
से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमे—

संगहणी-गाहा

जं जोयणविच्छिण्णं[४], पल्लं एगाहियप्परूढाणं ।
होज्ज णिरंतरणिचितं, भरितं वालग्गकोडीणं ।।१।।

---

१. सं० पा०—एवं फुरित्ता णं एवं फुडित्ता णं एवं संवट्टइत्ता णं एवं णिवट्टइत्ता णं ।

२. खतेण (क, ख, ग) ।

३. सं० पा०—एवं जाव मणपज्जवणाणं ।

४. ०च्छन्नं (क, ग) ।

वाससए वाससए, एक्केक्के अवहडंमि जो कालो।
सो कालो बोद्धव्वो, उवमा एगस्स पल्लस्स ॥२॥
एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दस गुणिता।
तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परीमाणं ॥३॥

पाव-पदं

४०६. दुविहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव ॥

४०७. [1]°दुविहे माणे, दुविहा माया, दुविहे लोभे, दुविहे पेज्जे, दुविहे दोसे, दुविहे कलहे, दुविहे अब्भक्खाणे, दुविहे पेसुण्णे, दुविहे परपरिवाए, दुविहा अरतिरती, दुविहे मायामोसे, दुविहे मिच्छादंसणसल्ले पण्णत्ते, तं जहा—आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव। एवं णेरइयाणं जाव[2] वेमाणियाणं° ॥

जीव-पदं

४०८. दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—तसा चेव, थावरा चेव ॥

४०९. दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धा चेव, असिद्धा चेव ॥

४१०. दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सइंदिया चेव अणिंदिया चेव,[3]°सकायच्चेव अकायच्चेव, सजोगी चेव अजोगी चेव, सवेया चेव अवेया चेव, सकसाया चेव अकसाया चेव, सलेसा चेव अलेसा चेव, णाणी चेव अणाणी चेव, सागारोवउत्ता चेव अणागारोवउत्ता चेव, आहारगा चेव अणाहारगा चेव, भासगा चेव अभासगा चेव, चरिमा चेव अचरिमा चेव, ससरीरी चेव असरीरी चेव° ॥

मरण-पदं

४११. दो मरणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं बुइयाइं[4] णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं जहा—वलयमरणे[5] चेव, वसट्टमरणे चेव ॥

४१२. एवं—णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव, गिरिपडणे चेव तरुपडणे चेव, जलपवेसे[6] चेव जलणपवेसे चेव, विसभक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव ॥

---

[1] सं० पा०—एवं णेरइयाण जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसणसल्लाणं।

[2] ठा० १।१४२-१६३।

[3] सं० पा०—एवं एसा गाहा फासेतव्वा जाव ससरीरी चेव असरीरी चेव।
संगहणी-गाहा
सिद्ध सइंदियकाए,
जोगे वेए कसाय लेसा य।
णाणुवओगाहारे,
भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥

[4] पूइयाइं (क, ख, ग, वृपा)।

[5] वलात° (क, ख, ग)।

[6] जलपडणे (ग)।

४१३. दो मरणाइं[1] °समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं बुइयाइं णो णिच्चं पसत्थाइं° णो णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति। कारणे[2] पुण अप्पडिकुट्ठाइं, तं जहा—वेहाणसे[3] चेव गिद्धपट्ठे चेव ॥

४१४. दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णियाइं[4] °णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं जहा—पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव ॥

४१५. पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं अपडिकम्मे[5] ॥

४१६. भत्तपच्चपक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं सपडिकम्मे[6] ॥

लोग-पदं

४१७. के अयं लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

४१८. के अणंता लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

४१९. के सासया लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

बोधि-पदं

४२०. दुविहा बोधी पण्णत्ता, तं जहा—णाणबोधी चेव, दंसणबोधी चेव ॥

४२१. दुविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा—णाणबुद्धा चेव, दंसणबुद्धा चेव ॥

मोह-पदं

४२२. [7]°दुविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणमोहे चेव, दंसणमोहे चेव ॥

४२३. दुविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा—णाणमूढा चेव, दंसणमूढा चेव° ॥

कम्म-पदं

४२४. णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसणाणावरणिज्जे चेव, सव्वणाणावरणिज्जे चेव ॥

---

[1] सं० पा०—मरणाइं जाव णो णिच्चं।

[2] कारणेण (क, ख, ग, वृपा)।

[3] विहायसि—नभसि भवं वैहायसं प्राकृतत्वेन तु वेहाणसमित्युक्तमिति (वृ)।

[4] सं० पा०—वण्णियाइं जाव अब्भणुण्णायाइं।

[5] °क्कमे (क, ग)।

[6] °क्कमे (क, ग)।

[7] सं० पा०—एवं मोहे मूढा।

४२५. दरिसणावरणिज्जे कम्मे[1] °दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसदरिसणावरणिज्जे चेव, सव्वदरिसणावरणिज्जे चेव° ॥

४२६. वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सातावेयणिज्जे चेव, असातावेयणिज्जे चेव ॥

४२७. मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणमोहणिज्जे चेव, चरित्तमोहणिज्जे चेव ॥

४२८. आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अद्धाउए चेव, भवाउए चेव ॥

४२९. णामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुभणामे चेव, असुभणामे चेव ॥

४३०. गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उच्चागोते चेव, णीयागोते चेव ॥

४३१. अंतराइए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडुप्पण्णविणासिए[2] चेव, पिहति[3] य आगामिपहं[4] चेव ॥

मुच्छा-पदं

४३२. दुविहा मुच्छा पण्णत्ता, तं जहा—पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव ॥

४३३. पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माया[5] चेव, लोभे चेव ॥

४३४. दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे चेव, माणे चेव ॥

आराहणा-पदं

४३५. दुविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मियाराहणा चेव, केवलिआराहणा[6] चेव ॥

४३६. धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव ॥

४३७. केवलिआराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पविमाणोववत्तिया चेव ॥

तित्थगर-वण्ण-पदं

४३८. दो तित्थगरा णीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—मुणिसुव्वए चेव, अरिट्ठणेमी चेव ॥

---

[1] सं० पा०—दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव ।

[2] °विणासी (वृपा) ।

[3] पिहित (क्व) ।

[4] क्वचिदागामिपथानिति दृश्यते, क्वचिच्च आगमपहंति (वृ) ।

[5] माते (क, ग) ।

[6] कम्मिआ° (ग) ।

४३९. दो तित्थगरा पियंगुसामा[1] वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—मल्ली चेव, पासे[2] चेव ।।

४४०. दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे[3] चेव ।।

४४१. दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभे चेव, पुप्फदंते[4] चेव ।।

पुव्ववत्थु-पदं

४४२. सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू[5] पण्णत्ता ।।

णक्खत्त-पदं

४४३. पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते[6] दुतारे पण्णत्ते ।।

४४४. 'उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते'[7] ।।

४४५. [8]°पुव्वफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।।

४४६. उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते° ।।

समुद्द-पदं

४४७. अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे चेव, कालोदे चेव ।।

चक्कवट्टि-पदं

४४८. दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णा, तं जहा—सुभूमे चेव, बंभदत्ते चेव ।।

देव-पदं

४४९. असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं[9] देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४५०. सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४५१. ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४५२. सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४५३. माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४५४. दोसु कप्पेसु कप्पित्थियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ।।

---

[1] °समा (क) ।

[2] पासो (ग) ।

[3] वासपुज्जे (क, ग) ।

[4] पुप्प° (क, ग) ।

[5] वत्थू पं सुभनामे चेव असुभनामे चेव (क) ।

[6] पुव्व° (ख) ।

[7] उत्तर° (ख); × (ग) ।

[8] सं० पा०—एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी ।

[9] पू०—ठा० १।१४३-१५१ ।

४५५. दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ॥

४५६. दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ॥

४५७. दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—सणंकुमारे चेव, माहिंदे चेव ॥

४५८. दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—बंभलोगे चेव, लंतगे चेव ॥

४५९. दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव ॥

४६०. दो इंदा मणपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—पाणए चेव, अच्चुए चेव ॥

पावकम्म-पदं

४६१. जीवाणं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव ॥

४६२. [1]°जीवा णं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए° उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, बंधिंसु वा बंधेंति वा बंधिस्संति वा, उदीरिंसु वा उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा, वेदेंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा, णिज्जरिंसु वा णिज्जरेंति वा णिज्जरिस्संति वा, °तं जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव° ॥

पोग्गल-पदं

४६३. दुपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ॥

४६४. दुपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

४६५. एवं जाव[2] दुगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

---

[1] सं० पा०—एवं ।

[2] ठा० १।२५५,२५६ ।

तइयं ठाणं

पढमो उद्देसो

इंद-पदं

१. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—णामिंदे, ठवणिंदे, दव्विंदे ।।

२. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—णाणिंदे, दंसणिंदे, चरित्तिंदे ।।

३. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—देविंदे, असुरिंदे, मणुस्सिंदे ।।

विकुव्वणा-पदं

४. तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा—बाहिरए[1] पोग्गलए परियादित्ता[2]—एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ।।

५. तिविहा विकुव्वणा[3] पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता—एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ।।

६. तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा—बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ।।

संचित-पदं

७. तिविहा णेरइया[4] पण्णत्ता, तं जहा—कतिसंचिता, अकतिसंचिता[5], अवत्तव्वगसंचिता ।।

८. एवमेगिंदियवज्जा जाव[6] वेमाणिया ।।

---

[1] बाहिरते (क, ख, ग)।

[2] परियातित्ता (क, ख, ग)।

[3] विगुव्वणा (क, ग)।

[4] नेरइया णं (क, ग)।

[5] अकिति० (क)।

[6] ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६३।

परियारणा-पदं

९. तिविहा परियारणा[1] पण्णत्ता, तं जहा—

१. एगे देवे अण्णे देवे, अण्णेसिं देवाणं देवीओ य अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति[2], अप्पणिज्जिआओ[3] देवीओ अभिजुंजिय[4]-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय[5]-विउव्विय परियारेति।

२. एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय-विउव्विय परियारेति।

३. एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, णो अप्पणिज्जिताओ देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेति ॥

मेहुण-पदं

१०. तिविहे मेहुणे पण्णत्ते, तं जहा—दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए ॥

११. तओ मेहुणं गच्छंति, तं जहा—देवा, मणुस्सा, तिरिक्खजोणिया ॥

१२. तओ मेहुणं सेवंति, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥

जोग-पदं

१३. तिविहे जोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणजोगे, वइजोगे कायजोगे। एवं—णेरइयाणं[6] विगलिंदियवज्जाणं जाव[7] वेमाणियाणं ॥

१४. तिविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—मणपओगे, वइपओगे कायपओगे। जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं जाव[8] तहा पओगोवि ॥

करण-पदं

१५. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, एवं—विगलिंदियवज्जं जाव[9] वेमाणियाणं ॥

१६. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—आरंभकरणे, संरंभकरणे, समारंभकरणे। णिरंतरं जाव[10] वेमाणियाणं ॥

---

[1] परिणावणा (ग)।

[2] ०रेंति (ग)।

[3] ०णिज्जाओ (क); अप्पणिच्चियाओ (भ० २।७९)।

[4] अभिजुंजियाओ (ख)।

[5] विकुव्विय (ग)।

[6] णेरतिताणं वि (क); णेरतिता वि (ग)।

[7] ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३।

[8] ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६४।

[9] ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३।

[10] ठा० १।१४१-१६३।

आउय-पगरण-पदं

१७. तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—पाणे अतिवातित्ता भवति, मुसं वइत्ता भवति, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवति—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति ।।

१८. तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा 'फासुएणं एसणिज्जेणं'[1] असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति ।

१९. तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—पाणे अतिवातित्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता णिंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अण्णयरेणं[2] अमणुण्णेणं अपीतिकारतेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति ।।

२०. तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुसं वदित्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता णमंसित्ता सक्कारित्ता सम्माणित्ता कल्लाणं मंगलं 'देवतं चेतितं'[3] पज्जुवासेत्ता मणुण्णेणं पीतिकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउयत्ताए[4] कम्मं पगरेंति ।।

गुत्ति-अगुत्ति-पदं

२१. तओ[5] गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती ।।

२२. संजयमणुस्साणं[6] तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती ।।

२३. तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणअगुत्ती, वइअगुत्ती, कायअगुत्ती । एवं—णेरइयाणं जाव[7] थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजतमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं ।।

दंड-पदं

२४. तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वइदंडे, कायदंडे ।।

---

[1] फासुएसणिज्जेणं (क, ग) ।
[2] × (वृपा) ।
[3] देवयं चेइयं (क, ग) ।
[4] सुभ° (ग) ।
[5] ततो (क, ग) ।
[6] संजत° (क, ग) ।
[7] ठा° १।१४२-१५० ।

२५. णेरइयाणं तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वइदंडे, कायदंडे। विगलिंदिय-वज्जं जाव[1] वेमाणियाणं ।।

गरहा-पदं

२६. तिविहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा[2] वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति—पावाणं कम्माणं अकरणयाए[3]।

अहवा—गरहा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—दीहंपेगे अद्धं गरहति, रहस्संपेगे अद्धं गरहति, कायंपेगे पडिसाहरति—पावाणं कम्माणं अकरणयाए ।।

पच्चक्खाण-पदं

२७. तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति, कायसा वेगे पच्चक्खाति—[4]°पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अहवा—पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्संपेगे अद्धं पच्चक्खाति, कायंपेगे पडिसाहरति—पावाणं कम्माणं अकरणयाए°।।

उपकार-पदं

२८. तओ रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—'पत्तोवगे, पुप्फोवगे'[5], फलोवगे।

एवामेव तओ पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवारुक्खसमाणे[6], पुप्फोवारुक्ख-समाणे, फलोवारुक्खसमाणे ।।

पुरिसजात-पदं

२९. तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, तं जहा—णामपुरिसे, ठवणपुरिसे, दव्वपुरिसे ।।

३०. तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, तं जहा—णाणपुरिसे, दंसणपुरिसे, चरित्तपुरिसे ।।

३१. तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदपुरिसे, चिंधपुरिसे, अभिलावपुरिसे ।।

३२. तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, तं जहा—उत्तमपुरिसा, मज्झिमपुरिसा, जहण्णपुरिसा ।।

३३. उत्तमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मपुरिसा, भोगपुरिसा, कम्मपुरिसा। धम्मपुरिसा अरहंता[7], भोगपुरिसा चक्कवट्टी, कम्मपुरिसा वासुदेवा ।।

३४. मज्झिमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा, भोगा, राइण्णा ।।

३५. जहण्णपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—दासा, भयगा, भाइल्लगा[8] ।।

---

[1] ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३।

[2] वइसा (क, ग)।

[3] °णताते (क, ग)।

[4] सं० पा०—एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा।

[5] पत्तोवेगे पुप्फोवेगे (ख)।

[6] 'पत्तोवग' इत्यादिवाच्ये पत्तोवा इत्यादिकं प्राकृतलक्षणवशादुक्तं, 'समाणे' इत्यत्रापि च 'सामाणे' (वृ)।

[7] अरिहंता (ख)।

[8] भातिल्लगा (क, ख, ग)।

मच्छ-पदं

३६. तिविहा मच्छा पण्णत्ता, तं जहा—अंडया, पोयया[1], संमुच्छिमा ।।

३७. अंडया[2] मच्छा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

३८. पोतया मच्छा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

पक्खि-पदं

३९. तिविहा पक्खी पण्णत्ता, तं जहा—अंडया, पोयया, संमुच्छिमा ।।

४०. अंडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा – इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

४१. पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा – इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

परिसप्प-पदं

४२. [3]°तिविहा उरपरिसप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अंडया, पोयया, संमुच्छिमा ।।

४३. अंडया उरपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

४४. पोयया उरपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

४५. तिविहा भुजपरिसप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अंडया, पोयया, संमुच्छिमा ।।

४६. अंडया भुजपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ।।

४७. पोयया भुजपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा °।।

इत्थी-पदं

४८. तिविहाओ इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तिरिक्खजोणित्थीओ[4], मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ।।

४९. 'तिरिक्खजोणीओ इत्थीओ'[5] तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जलचरीओ, थलचरीओ, खहचरीओ ।।

५०. मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अंतरदीविगाओ ।।

पुरिस-पदं

५१. तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, तं जहा—तिरिक्खजोणियपुरिसा, मणुस्सपुरिसा, देवपुरिसा ।।

५२. तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलचरा, थलचरा, खहचरा ।।

---

[1] पोतता (क, ग) ।

[2] अंडगा (क) ।

[3] सं० पा०—एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुजपरिसप्पावि भाणियव्वा एवं चैव ।

[4] °जोणियातो (क, ख, ग) ।

[5] °जोणित्थिओ (ग) ।

५३. मणुस्सपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कम्मभूमिया, अकम्मभूमिया, अंतरदीवगा ॥

णपुंसग-पदं

५४. तिविहा णपुंसगा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइयणपुंसगा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा, मणुस्सणपुंसगा ॥

५५. तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥

५६. मणुस्सणपुंसगा तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा ॥

तिरिक्खजोणिय-पदं

५७. तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥

लेसा-पदं

५८. णेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

५९. असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

६०. एवं जाव[1] थणियकुमाराणं ॥

६१. एवं—पुढविकाइयाणं आउ-वणस्सतिकाइयाणवि ॥

६२. तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदिआणवि[2] तओ लेस्सा, जहा[3] णेरइयाणं[4] ॥

६३. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

६४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ॥

६५. [5]°मणुस्साणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

६६. मणुस्साणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा° ॥

---

१. ठा० १।१४३-१५० ।

२. °दिआणं (क) ।

३. जधा (क) ।

४. ठा० ३।५८ ।

५. सं० पा०—एवं मणुस्साणवि ।

६७. वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं[1] ।।

६८. वेमाणियाणं तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ।।

ताराऊव-चलण-पदं

६९. तिहिं ठाणेहिं ताराऊवे चलेज्जा, तं जहा—विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे—ताराऊवे चलेज्जा ।।

देवविक्किया-पदं

७०. तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं[2] करेज्जा, तं जहा—विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढि जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कार[3]-परक्कमं उवदंसेमाणे—देवे विज्जुयारं करेज्जा ।।

७१. तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा, तं जहा—विकुव्वमाणे वा, [4]°परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढि जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमं उवदंसेमाणे –देवे थणियसद्दं करेज्जा° ।।

अंधयार-उज्जोयाइ-पदं

७२. तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया, तं जहा —अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ।।

७३. तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं[5] जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ।।

७४. तिहिं ठाणेहिं देवंधकारे सिया, तं जहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ।।

७५. तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ।।

७६. तिहिं ठाणेहिं देवसण्णिवाए सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ।।

७७. [6]°तिहिं ठाणेहिं देवुक्कलिया सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ।।

७८. तिहिं ठाणेहिं देवकहकहए सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु° ।।

---

[1] ठा० ३।५६ ।

[2] विज्जुतारं (क, ख, ग) ।

[3] पुरिसगार° (क, ग) ।

[4] सं० पा०—एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि ।

[5] अरहंतेसु (क) ।

[6] सं० पा०—एवं देवुक्कलिया देवकहकहए ।

७९. तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं[1] पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ॥

८०. एवं—सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई[2] देवा, आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति[3], °तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८१. तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं[4], °अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८२. [5]°तिहिं ठाणेहिं देवाणं आसणाइं चलेज्जा, तं जहा-अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ॥

८३. तिहिं ठाणेहिं देवा सीहणायं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ॥

८४. तिहिं ठाणेहिं देवा चेलुक्खेवं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८५. तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं[6] °जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८६. तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ॥

दुप्पडियार-पदं

८७. तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो ! तं जहा—अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स ।

१. संपातोवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेत्ता, सुरभिणा गंधट्टएणं[7] उव्वट्टित्ता, तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता, मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं 'भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए'[8] परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ । अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता[9] पण्णवइत्ता[10] परूवइत्ता

---

[1] अरहंतेहिं य (क) ।

[2] अणिताधिपती (क, ग) ।

[3] सं० पा०—हव्वमागच्छंति··· ।

[4] सं० पा०—जायमाणेहिं जाव तं चेव ।

[5] सं० पा०—एवमासणाइं चलेज्जा सीहणातं करेज्जा चेलुक्खेवं करेज्जा ।

[6] सं० पा०—अरहंतेहिं तं चेव ।

[7] गंधोवट्टएणं (ग) ।

[8] भोयावेज्जा तं पिट्ठिवडेंसए (ग) ।

[9] आघइत्ता (क); आघयइत्ता (ग) ।

[10] पन्नइवइत्ता (ग) ।

ठावइता[1] भवति, तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियारं[2] भवति समणाउसो !

२. केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा। तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमण्णागते यावि विहरेज्जा।

तए णं से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा।

तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि[3] दलयमाणे तेणावि[4] तस्स दुप्पडियारं भवति।

अहे णं से तं भट्टिं 'केवलिपण्णत्ते धम्मे'[5] आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइता भवति, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवति [समणाउसो ! ?]।

३. केति तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए[6] एगमवि आरियं[7] धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे।

तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंताराओ वा णिक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएणं वा रोगातंकेणं अभिभूतं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवति।

अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जोवि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता[8] °पण्णवइत्ता परूवइत्ता° ठावइता भवति, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवति [समणाउसो ! ?] ॥

संसार-वीईवयण-पदं

८८. तिहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवएज्जा, तं जहा—अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए, जोगवाहियाए ॥

कालचक्क-पदं

८९. तिविहा ओसप्पिणी[9] पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा[10], मज्झिमा, जहण्णा ॥

९०. [11]°तिविहा सुसम-सुसमा, तिविहा सुसमा, तिविहा सुसम-दूसमा, तिविहा दूसम-

---

[1] ठावइत्ता (क, ग); ठाविता (ख)।

[2] °डितारं (क)।

[3] सव्वस्सवि (क, ग)।

[4] तेणे वि (ग)।

[5] °पन्नत्तं धम्मं (क, ग)।

[6] अंतियं (क, ग)।

[7] आयरियं (क, ख)।

[8] आघवित्ता (क); सं० पा०—आघवइत्ता जाव ठावइता।

[9] उस्स° (क, ग)।

[10] उक्कस्सा (ग)।

[11] सं० पा०—एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा।

सुसमा, तिविहा दूसमा, तिविहा दूसम-दूसमा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ॥

९१. तिविहा उस्सप्पिणी[1] पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा[2], मज्झिमा, जहण्णा ॥

९२. °[3]तिविहा दुस्सम-दुस्समा, तिविहा दुस्समा, तिविहा दुस्सम-सुसमा, तिविहा सुसम-दुस्समा, तिविहा सुसमा, तिविहा सुसम-सुसमा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ॥

अच्छिण्ण-पोग्गल-चलण-पदं

९३. तिहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, तं जहा—आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, ठाणाओ वा ठाण संकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा ॥

उपधि-पदं

९४. तिविहे उवधी पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंडमत्तोवही। एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव[4] वेमाणियाणं। अहवा—तिविहे उवधी पण्णत्ते, तं जहा—सचित्ते[5], अचित्ते, मीसए। एवं—णेरइयाणं णिरंतरं जाव[6] वेमाणियाणं ॥

परिग्गह-पदं

९५. तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिर-भंडमत्तपरिग्गहे। एवं—असुरकुमाराणं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव[7] वेमाणियाणं।

अहवा—तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—सचित्ते, अचित्ते, मीसए। एवं—णेरइयाणं णिरंतरं जाव[8] वेमाणियाणं ॥

पणिहाण-पदं

९६. तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे। एवं—पंचिंदियाणं जाव[9] वेमाणियाणं ॥

---

[1] ओस्स° (क)।

[2] उक्कस्सा (ग)।

[3] सं० पा०—एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा।

[4] ठा० १।१४३-१५१, १५७-१६३।

[5] सच्चित्ते (क)।

[6] ठा० १।१४२-१६३।

[7] ठा० १।१४३-१५१, १५७-१६३।

[8] ठा० १।१४२-१६३।

[9] ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३।

९७. तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे[1], कायसुप्पणिहाणे ।।

९८. संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ।।

९९. तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे । एवं—पंचिंदियाणं जाव[2] वेमाणियाणं ।।

जोणि-पदं

१००. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीता, उसिणा, सीओसिणा । एवं—एगिंदियाणं[3] विगलिंदिग्राणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य ।।

१०१. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिया । एवं—एगिंदियाणं विगलिंदियाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य ।।

१०२. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—संवुडा, वियडा, संवुडवियडा ।।

१०३. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—कुम्मुण्णया, संखावत्ता, वंसीवत्तिया ।

१. कुम्मुण्णया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुण्णयाते णं जोणिए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ।

२. संखावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति, णो चेव णं णिप्फज्जंति[4] ।

३. वंसीवत्तिता णं जोणी पिहज्जणस्स[5] । वंसीवत्तिताए णं जोणिए बहवे पिहज्जणा गब्भं वक्कमंति ।।

तणवणस्सइ-पदं

१०४. तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जजीविका[6], असंखेज्जजीविका, अणंतजीविका ।।

तित्थ-पदं

१०५. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा—मागहे, वरदामे, पभासे ।।

१०६. एवं—एरवएवि ।।

---

[1] वति० (ख, ग) ।

[2] ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३ ।

[3] एगिंदियाणं जाव (क) ।

[4] निप्पज्जंति (क, ग) ।

[5] पिहु० (ख) ।

[6] ०जीविता (क, ख, ग) ।

१०७. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा— मागहे, वरदामे, पभासे ।।

१०८. एवं—धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धेवि ।।

कालचक्क-पदं

१०९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले[1] होत्था ।।

११०. °[2]जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते ।।

१११. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले भविस्सति° ।।

११२. एवं—धायइसंडे पुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धे वि । एवं—पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो ।।

११३. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था ।।

११४. एवं—इमीसे ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए ।।

११५. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता, तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालयंति ।।

११६. एवं जाव[3] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ।।

सलागा-पुरिस-वंस-पदं

११७. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा—अरहंतवंसे, चक्कवट्टिवंसे, दसारवंसे ।।

११८. एवं जाव[4] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ।।

सलागा-पुरिस-पदं

११९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीए तओ

---

१. कालो (क, ख, ग)। आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति।
२. सं० पा०—एवं ओसप्पिणीए णवरं पण्णत्ते ३,४. ठा० ३।१०८।

उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु[1] वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा— अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ।।

१२०. एवं जाव[2] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ।।

आउय-पदं

१२१. तओ आहाउयं पालयंति[3], तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ।।

१२२. तओ मज्झिममाउयं पालयंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ।।

१२३. बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१२४. बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ।।

जोणि-ठिइ-पदं

१२५. अह भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं—एतेसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायति । तेण परं जोणी[4] पविद्धंसति । तेण परं जोणी विद्धंसति । तेण परं बीए अबीए भवति । तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ।।

णरय-पदं

१२६. दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१२७. तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१२८. पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

१२९. तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पण्णत्ता, तं जहा—पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए ।।

१३०. तिसु णं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा— पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए ।।

सम-पदं

१३१. तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—अप्पइट्ठाणे णरए, जंबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे विमाणे ।

---

[1] उप्पज्जंसु (क) ।

[2] ठा० ३।१०८ ।

[3] पालेंति (क, ग) ।

[4] जोंणि (ग) ।

१३२. तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—सीमंतए णं[1] णरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी ।।

समुद्द-पदं

१३३. तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं[2] पण्णत्ता, तं जहा—कालोदे, पुक्खरोदे, सयंभुरमणे ।।

१३४. तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे, कालोदे, सयंभुरमणे ।।

उववाय-पदं

१३५. तओ लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति, तं जहा—रायाणो, मंडलीया, जे य महारंभा कोडुंबी ।।

१३६. तओ लोए सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—रायाणो परिचत्तकामभोगा, सेणावती, पसत्थारो ।।

विमाण-पदं

१३७. बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा, णीला, लोहिया ।।

देव-पदं

१३८. आणयपाणयारणच्चुतेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

पण्णत्ति-पदं

१३९. तओ पण्णत्तीओ कालेणं अहिज्जंति, तं जहा—चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ।।

बीओ उद्देसो

लोग-पदं

१४०. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—णामलोगे, ठवणलोगे, दव्वलोगे ।।

१४१. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—णाणलोगे, दंसणलोगे, चरित्तलोगे ।।

---

[1] × (क, ग)।

[2] उदगरसा (क, ख)।

१४२. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे ।।

परिसा-पदं

१४३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता, चंडा, जाया । अब्भिंतरिता समिता, मज्झिमिता चंडा, बाहिरिता जाया ।।

१४४. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सामाणिताणं देवाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता जहेव[1] चमरस्स ।।

१४५. एवं—तावत्तीसगाणवि[2] ।।

१४६. लोगपालाणं—तुंबा[3] तुडिया पव्वा ।।

१४७. एवं—अग्गमहिसीणवि ।।

१४८. बलिस्सवि[4] एवं चेव जाव[5] अग्गमहिसीणं ।।

१४९. धरणस्स य सामाणिय-तावत्तीसगाणं च—समिता चंडा जाता[6] ।।

१५०. 'लोगपालाणं अग्गमहिसीणं'[7]—ईसा तुडिया दढरहा[8] ।।

१५१. जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं[9] ।।

१५२. कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ईसा तुडिया दढरहा[10] ।।

१५३. एवं—सामाणिय-अग्गमहिसीणं ।।

१५४. एवं जाव[11] गीयरतिगीयजसाणं ।।

१५५. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तुंबा तुडिया पव्वा[12] ।।

१५६. एवं—सामाणिय-अग्गमहिसीणं ।।

१५७. एवं—सूरस्सवि ।।

१५८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता चंडा जाया[13] ।।

---

१. ठा० ३।१४३ ।
२. तायत्ती० (ख) ।
३. तुंपा (क); तंपा (ग) ।
४. बलस्सवि (क); वालास्सवि (ग) ।
५. ठा० ३।१४३-१४७ ।
६. पू०—ठा० ३।१४३ ।
७. लोगपालग्ग० (क, ग) ।
८. पू०—ठा० ३।१४३ ।
९. ठा० २।३५४-३६२ ।
१०. पू० ठा० ३।१४३ ।
११. ठा० २।३६३-३७० ।
१२. पू०—ठा० ३।१४३ ।
१३. पू०—ठा० ३।१४३ ।

१५९. एवं - जहा चमरस्स जाव[1] अग्गमहिसीणं ॥

१६०. एवं जाव[2] अच्चुतस्स लोगपालाणं ॥

जाम-पदं

१६१. तओ जामा पण्णत्ता, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६२. तिहिं जामेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६३. [3]°तिहिं जामेहिं आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६४. तिहिं जामेहिं आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६५. तिहिं जामेहिं आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६६. तिहिं जामेहिं आया केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६७. तिहिं जामेहिं आया केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६८. तिहिं जामेहिं आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६९. तिहिं जामेहिं आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७०. तिहिं जामेहिं आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७१. तिहिं जामेहिं आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७२. तिहिं जामेहिं आया केवलं° केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

वय-पदं

१७३. तओ वया पण्णत्ता, तं जहा—पढमे वए[4], मज्झिमे वए, पच्छिमे वए ॥

१७४. तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए ॥

---

[1] ठा० ३।१४४-१४७।

[2] ठा० २।३८०-३८४।

[3] सं० पा०—एवं जाव केवलणाणं।

[4] वते (क, ख, ग)।

१७५. [1]°तिहिं वएहिं आया—केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलमाभिणिबोहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए° ।।

बोधि-पदं

१७६. तिविधा बोधी पण्णत्ता, तं जहा—णाणबोधी, दंसणबोधी, चरित्तबोधी ।।

१७७. तिविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा—णाणबुद्धा, दंसणबुद्धा, चरित्तबुद्धा ।।

मोह-पदं

१७८. [2]°तिविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणमोहे, दंसणमोहे, चरित्तमोहे ।।

१७९. तिविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा—णाणमूढा, दंसणमूढा, चरित्तमूढा° ।।

पव्वज्जा-पदं

१८०. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहतो [लोग ?] पडिबद्धा[3] ।।

१८१. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—पुरतोपडिबद्धा, मग्गतोपडिबद्धा, दुहओ-पडिबद्धा ।।

१८२. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता ।।

१८३. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ओवातपव्वज्जा[4], अक्खातपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा ।।

णियंठ-पदं

१८४. तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा—पुलाए, णियंठे, सिणाए ।।

१८५. तओ णियंठा सण्ण[5]-णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा—बउसे, पडिसेवणाकुसीले[6], कसायकुसीले ।।

सेहभूमि-पदं

१८६. तओ सेहभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा । उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहण्णा सत्तराइंदिया ।।

---

[1] सं० पा०—एसो चेव गमो णेयव्वो जाव केवलणाणति ।

[2] सं० पा०—एवं मोहे मूढा ।

[3] द्रष्टव्यम्—ठा० ४।५७१ सूत्रम् ।

[4] अववात° (क) ।

[5] सन्नि (ख) ।

[6] कुसीले (ग) ।

थेरभूमी-पदं

१८७. तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जातिथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे। सट्ठिवासजाए समणे णिग्गंथे जातिथेरे, ठाणसमवायधरे णं समणे णिग्गंथे सुयथेरे, वीसवासपरियाए णं समणे णिग्गंथे परियायथेरे ॥

गंता-अगंता-पदं

१८८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुमणे, दुम्मणे, णोसुमणे-णोदुम्मणे ॥

१८९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंता णामेगे सुमणे भवति, गंता णामेगे दुम्मणे भवति, गंता णामेगे णोसमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

१९०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा -जामीतेगे सुमणे भवति, जामीतेगे दुम्मणे भवति, जामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

१९१. [1]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, जाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ॥

१९२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अगंता णामेगे सुमणे भवति, अगंता णामेगे दुम्मणे भवति, अगंता णामेगे णोसुमणं-णोदुम्मणे भवति ॥

१९३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जामि एगे सुमणे भवति, ण जामि एगे दुम्मणे भवति, ण जामि एगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

१९४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जाइस्सामि[2] एगे सुमणे भवति, ण जाइस्सामि एगे दुम्मणे भवति, ण जाइस्सासि एगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

आगंता-अणागंता-पदं

१९५. [3]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आगंता णामेगे सुमणे भवति, आगंता णामेगे दुम्मणे भवति, आगंता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

१९६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—एमीतेगे सुमणे भवति, एमीतेगे दुम्मणे भवति, एमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

१९७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा —एस्सामीतेगे सुमणे भवति, एस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, एस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति °॥

१९८. [4]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अणागंता णामेगे सुमणं भवति, अणागंता णामेगे दुम्मणे भवति, अणागंता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

---

[1] सं० पा०—एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति।

[2] जामिस्सामि (क, ग)।

[3] सं० पा०—एवं आगंता णामेगे सुमणे भवति ३······एगे सुमणे भवति।

[4] सं० पा०—एवं एएणं अभिलावेणं—

१९९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण एमीतेगे सुमणे भवति, ण एमीतेगे दुम्मणे भवति, ण एमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२००. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण एस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण एस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण एस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

चिट्ठत्ता-अचिट्ठत्ता-पदं

२०१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—चिट्ठित्ता णामेगे सुमणे भवति, चिट्ठित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, चिट्ठित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—चिट्ठामीतेगे सुमणे भवति, चिट्ठामीतेगे दुम्मणे भवति, चिट्ठामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—चिट्ठिस्सामीतेगे सुमणे भवति, चिट्ठिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, चिट्ठिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अचिट्ठित्ता णामेगे सुमणे भवति, अचिट्ठित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अचिट्ठित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण चिट्ठामीतेगे सुमणे भवति, ण चिट्ठामीतेगे दुम्मणे भवति, ण चिट्ठामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण चिट्ठिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण चिट्ठिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण चिट्ठिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

णिसिइत्ता-अणिसिइत्ता-पदं

२०७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिसिइत्ता णामेगे सुमणे भवति, णिसिइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, णिसिइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

संगहणी गाहा—

गंता य अगंता य,
आगंता खलु तहा अणागता ।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता,
णिसितित्ता चेव णो चेव ।।१।।
हंता य अहंता य,
छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता ।
बूतित्ता अबूतित्ता,
भासित्ता चेव णो चेव ।।२।।
दच्चा य अदच्चा य,
भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता ।
लभित्ता अलभित्ता,
पिबइत्ता चेव णो चेव ।।३।।
सुतित्ता असुतित्ता,
जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता ।
जतित्ता अजयित्ता य,
पराजिणित्ता चेव णो चेव ।।४।।
सद्दा रूवा गंधा,
रसा य फासा तहेव ठाणा य ।
णिस्सीलस्स गरहिता,
पसत्था पुण सीलवंतस्स ।।५।।

एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा ।

२०८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिसीदामीतेगे सुमणे भवति, णिसीदामीतेगे दुम्मणे भवति, णिसीदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिसीदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, णिसीदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, णिसीदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अणिसिइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अणिसिइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अणिसिइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२११. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा —ण णिसीदामीतेगे सुमणे भवति, ण णिसीदामीतेगे दुम्मणे भवति, ण णिसीदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण णिसीदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण णिसीदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण णिसीदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

हंता-अहंता-पदं

२१३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हंता णामेगे सुमणे भवति, हंता णामेगे दुम्मणे भवति, हंता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हणामीतेगे सुमणे भवति, हणामीतेगे दुम्मणे भवति, हणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, हणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, हणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अहंता णामेगे सुमणे भवति, अहंता णामेगे दुम्मणे भवति, अहंता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण हणामीतेगे सुमणे भवति, ण हणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण हणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२१८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण हणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण हणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण हणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

छिंदित्ता-अछिंदित्ता-पदं

२१९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—छिंदित्ता णामेगे सुमणे भवति, छिंदित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, छिंदित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—छिंदामीतेगे सुमणे भवति, छिंदामीतेगे दुम्मणे भवति, छिंदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—छिंदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, छिंदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, छिंदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंच्छिदित्ता णामेगे सुमणे भवति, अंछिदित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अंछिदित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण छिंदामीतेगे सुमणे भवति, ण छिंदामीतेगे दुम्मणे भवति, ण छिंदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण छिंदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण छिंदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण छिंदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

बूइत्ता-अबूइत्ता-पदं

२२५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बूइत्ता णामेगे सुमणे भवति, बूइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, बूइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बेमीतेगे सुमणे भवति, बेमीतेगे दुम्मणे भवति, बेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वोच्छामीतेगे सुमणे भवति, वोच्छामीतेगे दुम्मणे भवति, वोच्छामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अबूइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अबूइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अबूइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२२९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण बेमीतेगे सुमणे भवति, ण बेमीतेगे दुम्मणे भवति, ण बेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण वोच्छामीतेगे सुमणे भवति, ण वोच्छामीतेगे दुम्मणे भवति, ण वोच्छामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

भासित्ता-अभासित्ता-पदं

२३१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भासित्ता णामेगे सुमणे भवति, भासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, भासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भासामीतेगे सुमणे भवति, भासामीतेगे दुम्मणे भवति, भासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, भासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, भासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अभासित्ता णामेगे सुमणे भवति, अभासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अभासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण भासामीतेगे सुमणे भवति, ण भासामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण भासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण भासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

दच्चा-अदच्चा-पदं

२३७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा – दच्चा णामेगे सुमणे भवति, दच्चा णामेगे दुम्मणे भवति, दच्चा णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—देमीतेगे सुमणे भवति, देमीतेगे दुम्मणे भवति, देमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दासामीतेगे सुमणे भवति, दासामीतेगे दुम्मणे भवति, दासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अदच्चा णामेगे सुमणे भवति, अदच्चा णामेगे दुम्मणे भवति, अदच्चा णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण देमीतेगे सुमणे भवति, ण देमीतेगे दुम्मणे भवति, ण देमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण दासामीतेगे सुमणे भवति, ण दासामीतेगे दुम्मणे भवति, ण दासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

भुंजित्ता-अभुंजित्ता-पदं

२४३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भुंजित्ता णामेगे सुमणे भवति, भुंजित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, भुंजित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भुंजामीतेगे सुमणे भवति, भुंजामीतेगे दुम्मणे भवति, भुंजामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भुंजिस्सामीतेगे सुमणे भवति, भुंजिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, भुंजिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अभुंजित्ता णामेगे सुमणे भवति, अभुंजित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अभुंजित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा--ण भुंजामीतेगे सुमणे भवति, ण भुंजामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भुंजामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२४८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण भुंजिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण भुंजिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भुंजिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

लभित्ता-अलभित्ता-पदं

२४९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—लभित्ता णामेगे सुमणे भवति, लभित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, लभित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२५०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—लभामीतेगे सुमणे भवति, लभामीतेगे दुम्मणे भवति, लभामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२५१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—लभिस्सामीतेगे सुमणे भवति, लभिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, लभिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२५२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अलभित्ता णामेगे सुमणे भवति, अलभित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अलभित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण लभामीतेगे सुमणे भवति, ण लभामीतेगे दुम्मणे भवति, ण लभामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण लभिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण लभिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण लभिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

पिबित्ता-अपिबित्ता-पदं

२५५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पिबित्ता णामेगे सुमणे भवति, पिबित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, पिबित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पिबामीतेगे सुमणे भवति, पिबामीतेगे दुम्मणे भवति, पिबामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पिबिस्सामीतेगे सुमणे भवति, पिबिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति; पिबिस्सामीतेगे णोसमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अपिबित्ता णोमेगे सुमणे भवति, अपिबित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अपिबित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण पिबामीतेगे सुमणे भवति, ण पिबामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पिबामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण पिबिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण पिबिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पिबिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

सुइत्ता-असुइत्ता-पदं

२६१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुइत्ता णामेगे सुमणे भवति, सुइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सुइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुआमीतेगे सुमणे भवति, सुआमीतेगे दुम्मणे भवति, सुआमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुइस्सामीतेगे सुमणे भवति, सुइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सुइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—असुइत्ता णामेगे सुमणे भवति, असुइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, असुइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण सुआमीतेगे सुमणे भवति, ण सुआमीतेगे दुम्मणे भवति, ण सुआमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण सुइस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण सुइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण सुंइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

जुज्झित्ता-अजुज्झित्ता-पदं

२६७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुज्झित्ता णामेगे सुमणे भवति, जुज्झित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, जुज्झित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुज्झामीतेगे सुमणे भवति, जुज्झामीतेगे दुम्मणे भवति, जुज्झामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुज्झिस्सामीतेगे सुमणे भवति, जुज्झिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जुज्झिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अजुज्झित्ता णामेगे सुमणे भवति, अजुज्झित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अजुज्झित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जुज्झामीतेगे सुमणे भवति, ण जुज्झामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जुज्झामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जुज्झिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण जुज्झिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जुज्झिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

जइत्ता-अजइत्ता-पदं

२७३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जइत्ता णामेगे सुमणे भवति, जइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, जइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जिणामीतेगे सुमणे भवति, जिणामीतेगे दुम्मणे भवति, जिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, जिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अजइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अजइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अजइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जिणामीतेगे सुमणे भवति, ण जिणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२७८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण जिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण जिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

पराजिणित्ता-अपराजिणित्ता-पदं

२७९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पराजिणित्ता णामेगे सुमणे भवति, पराजिणित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, पराजिणित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पराजिणामीतेगे सुमणे भवति, पराजिणामीतेगे दुम्मणे भवति, पराजिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पराजिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, पराजिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, पराजिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अपराजिणित्ता णामेगे सुमणे भवति, अपराजिणित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अपराजिणित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण पराजिणामीतेगे सुमणे भवति, ण पराजिणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पराजिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—ण पराजिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण पराजिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पराजिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ।।

सुणेत्ता-असुणेत्ता-पदं

२८५. [1]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति, सद्दं सुणेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सद्दं सुणेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं सुणामीतेगे सुमणे भवति, सद्दं सुणामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्दं सुणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं सुणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, सद्दं सुणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्दं सुणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं असुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति, सद्दं असुणेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सद्दं असुणेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२८९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं ण सुणामीतेगे सुमणे भवति, सद्दं ण सुणामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्दं ण सुणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सद्दं ण सुणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, सद्दं ण सुणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्दं ण सुणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ।।

पासित्ता-अपासित्ता-पदं

२९१. [2]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं पासित्ता णामेगे सुमणे भवति, रूवं पासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रूवं पासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं पासामीतेगे सुमणे भवति, रूवं पासामीतेगे दुम्मणे भवति, रूवं पासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

---

[1] सं० पा०—सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवति ३ एवं सुणामीति ३ एवं सुणेस्सामीति ३ एवं असुणेत्ताणामेगे सु ३ ण सुणामीति ३ ण सुणिस्सामीति ।

[2] सं० पा०—एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइ एक्केक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा ।

२९३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं पासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रूवं पासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रूवं पासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं अपासित्ता णामेगे सुमणे भवति, रूवं अपासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रूवं अपासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं ण पासामीतेगे सुमणे भवति, रूवं ण पासामीतेगे दुम्मणे भवति, रूवं ण पासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं ण पासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रूवं ण पासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रूवं ण पासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

अग्घाइत्ता-अणग्घाइत्ता-पदं

२९७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं अग्घाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, गंधं अग्घाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, गंधं अग्घाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं अग्घामीतेगे सुमणे भवति, गंधं अग्घामीतेगे दुम्मणे भवति, गंधं अग्घामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२९९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं अग्घाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, गंधं अग्घाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, गंधं अग्घाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३००. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं अणग्घाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, गंधं अणग्घाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, गंधं अणग्घाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं ण अग्घामीतेगे सुमणे भवति, गंधं ण अग्घामीतेगे दुम्मणे भवति, गंधं ण अग्घामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गंधं ण अग्घाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, गंधं ण अग्घाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, गंधं ण अग्घाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

आसाइत्ता-अणासाइत्ता-पदं

३०३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं आसाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, रसं आसाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रसं आसाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं आसादेमीतेगे सुमणे भवति, रसं आसादेमी तेगे दुम्मणे भवति, रसं आसादेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०५. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं आसादिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रसं आसादिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रसं आसादिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०६. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं अणासाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, रसं अणासाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रसं अणासाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०७. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं ण आसादेमीतेगे सुमणे भवति, रसं ण आसादेमीतेगे दुम्मणे भवति, रसं ण आसादेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३०८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं ण आसादिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रसं ण आसादिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रसं ण आसादिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

फासेत्ता-अफासेत्ता-पदं

३०९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासेत्ता णामेगे सुमणे भवति, फासं फासेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, फासं फासेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३१०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासेमीतेगे सुमणे भवति, फासं फासेमीतेगे दुम्मणे भवति, फासं फासेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३११. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, फासं फासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, फासं फासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति।।

३१२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं अफासेत्ता णामेगे सुमणे भवति, फासं अफासेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, फासं अफासेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३१३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं ण फासेमीतेगे सुमणे भवति, फासं ण फासेमीतेगे दुम्मणे भवति, फासं ण फासेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

३१४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं ण फासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, फासं ण फासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, फासं ण फासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ।।

गरहिअ-पदं

३१५. तओ ठाणा णिसीलस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता भवंति, तं जहा—अस्सिं लोगे गरहिते भवति, उववाते[1] गरहिते भवति, आयाती गरहिता भवति ।।

---

[1] अववाते (क, ग)।

पसत्थ-पदं

३१६. तओ ठाणा 'सुसीलस्स सुव्वयस्स'[1] सगुणस्स समेरस्स[2] सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति, तं जहा—अस्सिं लोगे पसत्थे भवति, उववाए पसत्थे भवति, आजाती पसत्था भवति ॥

जीव-पदं

३१७. तिविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा --इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥

३१८. तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मद्दिट्ठी, मिच्छाद्दिट्ठी[3], सम्मामिच्छद्दिट्ठी ॥
अहवा—तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, णोपज्जत्तगा-णोऽपज्जत्तगा। [4]°परित्ता, अपरित्ता, णोपरित्ता-णोऽपरित्ता। सुहमा, बायरा, णोसुहुमा-णोबायरा। सण्णी, असण्णी, णोसण्णी-णोअसण्णी। भवी, अभवी, णोभवी-णोऽभवी° ॥

लोगठिती-पदं

३१९. तिविधा लोगठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपइट्ठिए वाते, वातपइट्ठिए उदही, उदहीपइट्ठिया पुढवी ॥

दिसा-पदं

३२०. तओ दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उड्ढा, अहा, तिरिया ॥

३२१. तिहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति—उड्ढाए, अहाए[5], तिरियाए ॥

३२२. [6]°तिहिं दिसाहिं जीवाणं°—आगती, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गतिपरियाए, समुग्घाते, कालसंजोगे, दंसणाभिगमे, जीवाभिगमे °पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए° ॥

३२३. तिहिं दिसाहिं[7] जीवाणं अजीवाभिगमे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए।

३२४. एवं—पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं[8] ॥

३२५. एवं—मणुस्साणवि[9] ॥

---

[1] ससीलस्स सव्वयस्स (ख)।

[2] सुमेरस्स (ख)।

[3] मिच्छ° (क, ग)।

[4] सं० पा०—एवं सम्मद्दिट्ठिपरित्ता पज्जत्तग-सुहुमसण्णिभविया य।

[5] अहाते (क, ख, ग)।

[6] सं० पा०—एवं।

[7] ठाणेहिं (ख)।

[8,9] पू०—ठा० ३।३२१-३२३।

तस-थावर-पदं

३२६. तिविहा तसा पण्णत्ता, तं जहा—तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा ॥

३२७. तिविहा थावरा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया वणस्सइकाइया ॥

अच्छेज्जादि-पदं

३२८. तओ अच्छेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३२९. [1]तओ अभेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३०. तओ अडज्झा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३१. तओ अगिज्झा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३२. तओ अणड्ढा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३३. तओ अमज्झा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३४. तओ अपएसा पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

३३५. तओ अविभाइमा[2] पण्णत्ता, तं जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

दुक्ख-पदं

३३६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी - किंभया पाणा ? समणाउसो !

गोतमादी[3] समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति, उवसंकमित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—णो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा। तं जदि णं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं णो गिलायंति परिकहित्तए, तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए।

अज्जोति[4] ! समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—दुक्खभया पाणा समणाउसो !

से णं भंते ! दुक्खे केण कडे ?

जीवेणं कडे पमादेणं।

से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जति ?

अप्पमाएणं ॥

३३७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवं आइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति कहण्णं समणाणं णिग्गंथाणं किरिया कज्जति ?

---

[1] सं० पा०—एवमभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्ढा अमज्झा अपएसा।

[2] अविभातिमा (क, ख, ग)।

[3] गोयमाती (क, ख, ग)।

[4] ०त्ति (ग)।

तत्थ जा सा कडा कज्जइ, णो तं पुच्छंति । तत्थ जा सा कडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति । तत्थ जा सा अकडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति । तत्थ जा सा अकडा कज्जति, णो तं पुच्छंति । से एवं वत्तव्वं सिया[1] ?

अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं[2] दुक्खं । अकट्टु-अकट्टु 'पाणा भूया जीवा सत्ता'[3] वेयणं वेदेंतित्ति वत्तव्वं ।

जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि—किच्चं दुक्खं, फुसं[4] दुक्खं, कज्जमाणकडं[5] दुक्खं । कट्टु-कट्टु 'पाणा भूया जीवा सत्ता'[6] वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वयं सिया ।।

तइओ उद्देसो

आलोयणा-पदं

३३८. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं जहा—अकरिंसु[7] वाहं, करेमि वाहं, करिस्सामि वाहं ।।

३३९. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा[8], °णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—अकित्ती वा मे सिया[9], अवण्णे वा मे सिया, अविणए[10] वा मे सिया ।।

३४०. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा[11], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—

---

[1] सिता (क, ख, ग) ।

[2] × (ग) ।

[3] जीवा सत्ता भूता पाणा (क); पाणा भूता (ग) ।

[4] फुस्सं (ख) ।

[5] किज्ज° (क) ।

[6] जीवा सत्ता भूता पाणा (क); पाणा भूता (ग) ।

[7] ठा० ८।१० सूत्रे 'करिंसु' पाठो विद्यते । प्रायः 'करिंसु' 'चिणिंसु' इत्यादि प्रयोगा एव लभ्यन्ते, क्वचिदेव 'अकरिंसु' 'अभविंसु' इत्यादि प्रयोगाः सन्ति ।

[8] सं० पा०—णो पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[9] सिता (क, ख, ग) ।

[10] अविणते (क, ख, ग) ।

[11] सं० पा०—णो आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

कित्ती वा मे परिहाइस्सति, जसे वा मे परिहाइस्सति, पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सति ।।

३४१. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा[1], °णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—माइस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवति, उववाए गरहिए भवति, आयाती गरहिया भवति ।।

३४२. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[2], °पडिक्कमेज्जा णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—अमाइस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति, उववाते पसत्थे भवति, आयाती[3] पसत्था भवति ।।

३४३. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[4], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए ।।

सुयधर-पदं

३४४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे ।।

उपधि-पदं

३४५. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा—'जंगिए, भंगिए, खोमिए'[5] ।।

३४६. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा—लाउयपादे वा, दारुपादे वा, मट्टियापादे वा ।।

३४७. तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा, तं जहा—हिरिपत्तियं, दुगुंछापत्तियं, परीसहवत्तियं ।।

आयरक्ख-पदं

३४८. तओ आयरक्खा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवति, तुसिणीए वा सिया, उट्ठित्ता वा आताए एगंतमंतमवक्कमेज्जा ।।

वियड-दत्ति-पदं

३४९. णिग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पंति तओ वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तते, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ।।

---

[1] सं०पा०—पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[2] सं० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[3] आयाय (ग) ।

[4] सं० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[5] जंगिते भंगिते खोमिते (क, ख, ग); जंगियं भंगियं खोमियं (वृ) ।

विसंभोग-पदं

३५०. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मियं संभोगियं विसंभोगियं[1] करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—सयं वा दट्ठुं, सड्ढयस्स[2] वा णिसम्म, तच्चं मोसं आउट्टति, चउत्थं णो आउट्टति ॥

अणुण्णादि-पदं

३५१. तिविधा अणुण्णा पण्णत्ता, तं जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए[3] ॥

३५२. तिविधा समणुण्णा पण्णत्ता, तं जहा - आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए ॥

३५३. [4]°तिविधा उवसंपया पण्णत्ता, तं जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए ॥

३५४. तिविधा विजहणा पण्णत्ता, तं जहा - आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए ° ॥

वयण-पदं

३५५. तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—तव्वयणे, तदण्णवयणे, णोअवयणे ॥

३५६. तिविहे अवयणे पण्णत्ते, तं जहा—णोतव्वयणे[5], णोतदण्णवयणे, अवयणे ॥

मण-पदं

३५७. तिविहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—तम्मणे, तयण्णमणे, णोअमणे ।

३५८. तिविहे अमणे पण्णत्ते, तं जहा—णोतम्मणे, णोतयण्णमणे, अमणे ॥

वुट्ठि-पदं

३५९. तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया, तं जहा—

१. तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति ।

२. देवा णागा जक्खा भूता णो सम्ममाराहिता भवंति, तत्थ[6] समुट्ठियं उदग-पोग्गलं[7] परिणतं वासितुकामं अण्णं देसं साहरंति ।

३. अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणतं वासितुकामं वाउकाए विधुणति । इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिगाए सिया ॥

---

[1] विसंभोतियं (क, ख) ।

[2] सड्ढियस्स (क, ख); सड्ढस्स (क्व) ।

[3] गणित्ताते (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—एवं उवसंपया एवं विजहणा ।

[5] तंवयणे (ख) ।

[6] अन्नत्थ (ख) ।

[7] °पोग्गलं वा (क) ।

३६०. तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया, तं जहा—

१. तस्सिं[१] च णं देसंसि वा पदेसंसि[२] वा बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति[३] विउक्कमंति चयंति उववज्जंति ।

२. देवा णागा जक्खा भूता सम्ममाराहिता भवंति, अण्णत्थ समुट्ठितं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति ।

३. अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासितुकामं णो वाउआए विधुणति ।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिआ ।।

अहुणोववण्ण-देव-पदं

३६१. तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा[४]—

१. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाति, णो परियाणाति, णो 'अट्ठं बंधति'[५], णो णियाणं पगरेति, णो ठिइपकप्पं पगरेति ।

२. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति ।

३. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते[६] °गिद्धे गढिते° अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—'इण्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं'[७], तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ।।

३६२. तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—

१. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागते, तं गच्छामि णं ते

---

[१] तंसि (ग) ।

[२] पतेसंसि (क, ख, ग) ।

[३] उक्कमंति (ग) ।

[४] × (क, ग) ।

[५] अट्टंति (ग) ।

[६] सं० पा०—मुच्छिते जाव अज्झोववण्णे ।

[७] इयण्हिं° (ख); इयण्हिं गच्छं मुहुत्तागच्छ (ग); इयण्हिं न गच्छं (वृ) ।

भगवंते वंदामि णमस्सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि[१] ।

२. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए[२] °अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—'एस णं[३] माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अतिदुक्कर-दुक्करकारगे, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसामि[४] °सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि ।

३. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु[५] °दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति - अत्थि णं मम माणुस्सए भवे माताति वा[६] °पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा° सुण्हाति[७] वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि, पासंतु ता मे इमं एतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएति हव्वमागच्छित्तए ।।

देवस्स मणट्ठिइ-पदं

३६३. तओ ठाणाइं देवे पीहेज्जा, तं जहा—माणुस्सगं भवं, आरिए खेत्ते जम्मं, सुकुलपच्चायातिं[८] ।।

३६४. तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा, तं जहा—

१. अहो ! णं मए संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कार-परक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो बहुए[९] सुते अहीते ।

२. अहो ! णं मए इहलोगपडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसितेणं णो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिते ।

३. अहो ! णं मए इड्ढि-रस-साय[१०]-गरुएणं भोगासंसगिद्धेणं[११] णो विसुद्धे चरित्ते फासिते ।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा ।।

---

[१] °सेमि (क, ख, ग) ।

[२] सं० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे ।

[३] एयंसि णं (क) ।

[४] सं० पा०—णमंसामि जाव पज्जुवासामि ।

[५] सं० पा०—देवलोगेसु जाव अणज्झोववण्णे ।

[६] सं० पा०—माताति वा जाव सुण्हाति ।

[७] सुहीति (ग) ।

[८] सुकुले° (ख) ।

[९] बहुते (क, ख, ग) ।

[१०] साया (ख) ।

[११] भोगामिसगिद्धेणं (वृपा) ।

३६५. तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ, तं जहा—विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता, कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता, अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणिं जाणित्ता—इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ ।।

३६६. तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा, तं जहा—

१. अहो ! णं मए इमाओ एतारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुतीओ दिव्वाओ देवाणुभावाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागताओ चइयव्वं[1] भविस्सति ।

२. अहो ! णं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाए आहारो आयारेयव्वो भविस्सति ।

३. अहो ! णं मए कलमल-जंबालाए असुईए उव्वेयणियाए[2] भीमाए गब्भ-वसहीए वसियव्वं भविस्सइ ।

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा ।।

विमाण-पदं

३६७. तिसंठिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—वट्टा, तंसा, चउरंसा ।

१. तत्थ णं जे ते वट्टा विमाणा, ते णं पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वओ समंता पागार-परिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता ।

२. तत्थ णं जे ते तंसा विमाणा, ते णं सिंघाडगसंठाणसंठिया दुहतोपागार-परिक्खित्ता एगतो वेइया[3]-परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता ।

३. तत्थ णं जे ते चउरंसा[4] विमाणा, ते णं अक्खाडगसंठाणसंठिया सव्वतो समंता वेइया-परिक्खित्ता चउदुवारा पण्णत्ता ।।

३६८. तिपतिट्ठिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—घणोदधिपतिट्ठिता, घणवातपइट्ठिता, ओवासंतरपइट्ठिता ।।

३६९. तिविधा विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—अवट्ठिता[5], वेउव्विता, पारिजाणिया[6] ।।

दिट्ठि-पदं

३७०. तिविधा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छा-दिट्ठी ।

३७१. एवं—विगलिंदियवज्जं जाव[7] वेमाणियाणं ।।

---

[1] चवियव्वं (क); चतियव्वं (ख, ग) ।

[2] उव्वेवणिताते (क, ख, ग) ।

[3] वेतिता (क, ख, ग) ।

[4] चउरंस (क, ग) ।

[5] उवट्ठिता (क) ।

[6] परिजाणिता (क, ख, ग) ।

[7] ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३ ।

दुग्गति-सुगति-पदं

३७२. तओ दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती[1], मणुयदुग्गती ॥

३७३. तओ सुगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सिद्धसोगती, देवसोगती, मणुस्ससोगती ॥

३७४. तओ दुग्गता पण्णत्ता, तं जहा—णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता, मणुस्सदुग्गता ॥

३७५. तओ सुगता पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धसोगता, देवसुग्गता, मणुस्ससुग्गता ।

तव-पाणग-पदं

३७६. चउत्थभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा—उस्सेइमे[2], संसेइमे[3], चाउलधोवणे ॥

३७७. छट्ठभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा—तिलोदए, तुसोदए, जवोदए ॥

३७८. अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा—आयामए[4], सोवीरए[5], सुद्धवियडे ॥

पिंडेसणा-पदं

३७९. तिविहे उवहडे पण्णत्ते, तं जहा—फलिओवहडे[6], सुद्धोवहडे, संसट्ठोवहडे ॥

३८०. तिविहे ओग्गहिते[7] पण्णत्ते, तं जहा—जं च ओगिण्हति, जं च साहरति, जं च आसगंसि[8] पक्खिवति ॥

ओमोयरिया-पदं

३८१. तिविधा ओमोयरिया पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणोमोदरिया[9], भावोमोदरिया ॥

३८२. उवगरणोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाते, चियत्तोवहि-साइज्जणया[10] ॥

णिग्गंथ-चरिया-पदं

३८३. तओ ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अहियाए[11] असुभाए अखमाए

---

[1] तिरियदु° (क); तिरियजो° (ग)।

[2] उस्सेतिमे (क, ख, ग)।

[3] संसेतिमे (क, ख, ग)।

[4] आयामते (क, ख, ग)।

[5] सोवीरते (क, ख, ग)।

[6] फल° (क)।

[7] उवगहिते (क)।

[8] आसगंसि य (क)।

[9] °मोदरिता (क, ख, ग)।

[10] सातिज्जणता (क, ख, ग)।

[11] अभियाते (क); अहियाते (ख, ग)।

अणिस्सेसाए[1] अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—कूअणता, कक्करणता, अवज्झाणता ।।

३८४. तओ ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा हिताए सुहाए खमाए णिस्सेसाए[2] आणुगामिअत्ताए भवंति, तं जहा—अकूअणता, अकक्करणता, अणवज्झाणता ।।

सल्ल-पदं

३८५. तओ सल्ला पण्णत्ता, तं जहा—मायासल्ले, णियाणसल्ले, मिच्छादंसणसल्ले ।।

तेउलेस्सा-पदं

३८६. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्त-विउलतेउलेस्से भवति, तं जहा—आयावणताए, खंतिखमाए, अपाणगेणं तवोकम्मेणं ।।

भिक्खुपडिमा-पदं

३८७. तिमासियं[3] णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति तओ दत्तीओ भोअणस्स पडिगाहेत्तए, तओ पाणगस्स ।।

३८८. एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहिताए असुभाए अखमाए[4] अणिस्सेयसाए अणाणुगमियत्ताए भवंति, तं जहा—उम्मायं वा लभिज्जा, दीहकालियं वा रोगातंकं पाउणेज्जा, केवलीपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा ।।

३८९. एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हिताए सुभाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ।।

कम्मभूमी-पदं

३९०. जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भरहे, एरवए, महाविदेहे ।।

३९१. एवं—धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे जाव[5] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ।।

दंसण-पदं

३९२. तिविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणे, मिच्छद्दंसणे, सम्मामिच्छद्दंसणे ।।

३९३. तिविहा रुई[6] पण्णत्ता, तं जहा—सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई ।।

---

[1] अणिस्सेयसाए (क्व) ।

[2] णिस्सेसाते (क, ख, ग); णिस्सेयसाए (क्व) ।

[3] तिमासितं (क, ग); °सिय (ख) ।

[4] अक्खते (ख) ।

[5] ठा० ३।१०८ ।

[6] रुती (क, ख, ग) ।

पओग-पदं

३९४. तिविधे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ।।

ववसाय-पदं

३९५. तिविहे ववसाए[1] पण्णत्ते, तं जहा—धम्मिए[2] ववसाए, अधम्मिए ववसाए, धम्मियाधम्मिए ववसाए ।

अहवा[3]—तिविधे ववसाए पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे, पच्चइए[4], आणुगामिए ।।

अहवा—तिविधे ववसाए पण्णत्ते, तं जहा—इहलोइए, परलोइए[5], 'इहलोइय-परलोइए'[6] ।।

३९६. इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—लोइए[7], वेइए[8], सामइए[9] ।।

३९७. लोइए ववसाए तिविधे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थे, धम्मे, कामे ।।

३९८. वेइए[10] ववसाए तिविधे पण्णत्ते, तं जहा—रिव्वेदे[11], जउव्वेदे, सामवेदे ।।

३९९. सामइए[12] ववसाए तिविधे पण्णत्ते, तं जहा—णाणे, दंसणे, चरित्ते ।।

अत्थजोणी-पदं

४००. तिविधा अत्थजोणी पण्णत्ता, तं जहा—सामे, दंडे[13], भेदे ।।

पोग्गल-पदं

४०१. तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—पओगपरिणता, मीसापरिणता, वीससा-परिणता ।

णरग-पदं

४०२. तिपतिट्ठिया णरगा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविपतिट्ठिया, आगासपतिट्ठिया, आयपइट्ठिया । णेगम-संगह-ववहाराणं पुढविपतिट्ठिया, उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया, तिण्हं सद्दणयाणं[14] आयपतिट्ठिया ।।

---

[1] ववसाते (क, ख, ग) ।

[2] धम्मिते (क, ख, ग) ।

[3] अथवा (क) ।

[4] पच्चतिते (क, ख, ग) ।

[5] पारलोगिते (क) ।

[6] इहलोगित-परलोगिते (क, ख, ग) ।

[7] लोगिते (क, ख, ग) ।

[8] वेतिते (क, ख, ग) ।

[9] सामतिते (क, ख, ग) ।

[10] वेतिगे (क, ख, ग) ।

[11] रिउव्वेदे (ख) ।

[12] सामातिते (क); सामइते (ख, ग) ।

[13] पयाणे (वृपा) ।

[14] °णताणं (क, ख, ग) ।

मिच्छत्त-पदं

४०३. तिविधे मिच्छत्ते पण्णत्ते, तं जहा—अकिरिया[1], अविणए[2], अण्णाणे ।।

४०४. अकिरिया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, अण्णाणकिरिया ।।

४०५. पओगकिरिया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—मणपओगकिरिया, वइपओगकिरिया, कायपओगकिरिया ।।

४०६. समुदाणकिरिया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसमुदाणकिरिया, परंपरसमुदाणकिरिया, तदुभयसमुदाणकिरिया ।।

४०७. अण्णाणकिरिया तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—मतिअण्णाणकिरिया, सुतअण्णाणकिरिया, विभंगअण्णाणकिरिया[3] ।।

४०८. अविणए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसच्चाई[4], णिरालंबणता, णाणापेज्जदोसे ।।

४०९. अण्णाणे तिविधे पण्णत्ते, तं जहा—देसण्णाणे, सव्वण्णाणे, भावण्णाणे ।।

धम्म-पदं

४१०. तिविहे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे ।।

उवक्कम-पदं

४११. तिविधे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मिए उवक्कमे, अधम्मिए उवकम्मे, धम्मियाधम्मिए उवक्कमे ।।

अहवा—तिविधे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—आओवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे ।।

४१२. [5]•तिविधे वेयावच्चे पण्णत्ते, तं जहा—आयवेयावच्चे, परवेयावच्चे, तदुभयवेयावच्चे ।।

---

[1] अकिरिता (क, ख, ग) ।

[2] अविणते (क, ख, ग) ।

[3] विभंगणाण° (क) ।

[4] देसच्चाती (क, ग); देसच्चाता (ख) ।

[5] सं० पा०—एवं वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालंभे एवमेक्केके तिण्णि-तिण्णि आलावगा जहेव उवक्कमे। अनेन संक्षिप्तपाठेनेति प्रतीयते—आत्म-पर-तदुभय-वैयावृत्त्यादिवत् धार्मिक-अधार्मिक-धार्मिकाधार्मिक-वैयावृत्त्यादि-आलापका अपि युज्यन्ते, किन्तु वृत्तिकृता केवलं आत्म-पर-तदुभय-भेदा एव स्वीकृताः। तथा च वृत्तिः—'एव' मिति उपक्रमसूत्रवत् आत्मपरोभयभेदेन वैयावृत्त्यादयो वाच्याः (वृत्ति पत्रं १४५)। 'एव' मित्यादिना पूर्वोक्तोतिदेशो व्याख्यातः, एवं चात्राक्षरघटना—यथैवोपक्रमे आत्मपरतदुभयैस्त्रय आलापका उक्ताः एवमेकैकस्मिन् वैयावृत्त्यादिसूत्रे ते त्रयस्त्रयो वाच्याः (वृत्ति पत्र १४५)।

४१३. तिविधे अणुग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—आयअणुग्गहे, परअणुग्गहे, तदुभयअणुग्गहे ।।

४१४. तिविधा अणुसट्ठी पण्णत्ता, तं जहा—आयअणुसट्ठी, परअणुसट्ठी, तदुभयअणुसट्ठी ।।

४१५. तिविधे उवालंभे पण्णत्ते, तं जहा—आओवालंभे, परोवालंभे, तदुभयोवालंभे° ।।

तिवग्ग-पदं

४१६. तिविहा कहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थकहा, धम्मकहा, कामकहा ।।

४१७. तिविहे विणिच्छए पण्णत्ते, तं जहा—अत्थविणिच्छए, धम्मविणिच्छए, कामविणिच्छए ।।

४१८. तहारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणया ?
सवणफला ।
से णं भंते ! सवणे किंफले ?
णाणफले ।
से णं भंते ! णाणे किंफले ?
विण्णाणफले ।
[१]°से णं भंते ! विण्णाणे किंफले ?
पच्चक्खाणफले ।
से णं भंते ! पच्चक्खाणे किंफले ?
संजमफले ।
से णं भंते ! संजमे किंफले !
अणण्हयफले ।
से णं भंते ! अणण्हए किंफले ?
तवफले ।
से णं भंते ! तवे किंफले ?
वोदाणफले ।
से णं भंते ! वोदाणे किंफले ?
अकिरियफले° ।
सा णं भंते ! अकिरिया किंफला ?
णिव्वाणफला ।
से णं भंते ! णिव्वाणे किंफले ?
सिद्धिगइ-गमण-पज्जवसाण-फले समणाउसो !

---

[१] सं० पा०—एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा—सवणे···णिव्वाणे जाव से णं भंते !

चउत्थो उद्देसो

पडिमा-पदं

४१९. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा ॥

४२०. [1]•पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया अणुण्णवेत्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा ॥

४२१. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया उवाइणित्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा° ॥

४२२. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पडिलेहित्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव ॥

४२३. [2]•पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा अणुण्णवेत्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव ॥

४२४. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा उवाइणित्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव° ॥

काल-पदं

४२५. तिविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—तीए, पडुप्पण्ण, अणागए ॥

४२६. तिविहे समए पण्णत्ते, तं जहा—तीए, पडुप्पण्णे, अणागए ॥

४२७. एवं—आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव[3] वाससतसहस्से[4] पुव्वंगे पुव्वे जाव[5] ओसप्पिणी[6] ॥

४२८. तिविधे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—तीते, पडुप्पण्णे, अणागए ॥

वयण-पदं

४२९. तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे ।
अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवयणे, पुंवयणे, णपुंसगवयणे ।

---

[1] सं० पा०—एवमणुण्णवेत्तते उवातिणित्तते ।

[2] सं० पा०—एवं अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए ।

[3] ठा० २।३८९ ।

[4] ठा० २।३८९ सूत्रे 'वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा पुव्वंगाति वा' इति पाठो विद्यते ।

[5] ठा० २।३८९ ।

[6] उस्स° (क, ख) ।

अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—तीतवयणे[1], पडुप्पण्णवयणे, अणागयवयणे ॥

णाणादीणं पण्णवणा-सम्म-पद

४३०. तिविहा पण्णवणा पण्णत्ता, तं जहा—णाणपण्णवणा, दंसणपण्णवणा, चरित्तपण्णवणा ॥

४३१. तिविधे सम्मे पण्णत्ते, तं जहा—णाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे ॥

उवघात-विसोहि-पदं

४३२. तिविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते ॥

४३३. [2]°तिविधा विसोही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणाविसोही° ॥

आराहणा-पदं

४३४. तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ॥

४३५. णाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४३६. [3]°दंसणाराहणा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४३७. चरित्ताराहणा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ॥

संकिलेस-असंकिलेस-पदं

४३८. तिविधे संकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—णाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे ॥

४३९. [4]°तिविधे असंकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—णाणअसंकिलेसे, दंसणअसंकिलेसे, चरित्तअसंकिलेसे ॥

अइक्कम-आदि-पदं

४४०. तिविधे अतिक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—णाणअतिक्कमे, दंसणअतिक्कमे, चरित्तअतिक्कमे ॥

४४१. तिविधे वइक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—णाणवइक्कमे, दंसणवइक्कमे, चरित्तवइक्कमे ॥

४४२. तिविधे अइयारे पण्णत्ते, तं जहा णाणअइयारे, दंसणअइयारे, चरित्तअइयारे ॥

---

१. अतीत° (क)।

२. सं० पा०—एवं विसोही।

३. सं० पा०—एवं दंसणाराहणावि चरित्ताराहणावि।

४. सं०पा०—एवं असंकिलेसेवि···अणायारेवि।

४४३. तिविधे अणायारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणअणायारे, दंसणअणायारे, चरित्तअणायारे° ।।

४४४. तिण्हमतिक्कमाणं—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा,[1] °विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणातिक्कमस्स, दंसणातिक्कमस्स, चरित्तातिक्कमस्स ।।

४४५. [2]°तिण्हं वइक्कमाणं[3]—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणवइक्कमस्स, दंसणवइक्कमस्स, चरित्तवइक्कमस्स ।।

४४६. तिण्हमतिचाराणं—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणातिचारस्स, दंसणातिचारस्स, चरित्तातिचारस्स ।।

४४७. तिण्हमणायाराणं—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तंजहा—णाण-अणायारस्स, दंसण-अणायारस्स, चरित्त-अणायारस्स° ।।

पायच्छित्त-पदं

४४८. तिविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे ।।

अकम्मभूमी-पदं

४४९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवते, हरिवासे, देवकुरा ।।

४५०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उत्तरकुरा, रम्मगवासे, हेरण्णवए[4] ।।

वास-पदं

४५१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, हेमवए, हरिवासे ।।

---

[1] सं० पा०—गरहेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[2] सं० पा०—एवं वइक्कमाणं अतिचाराणं अणायाराणं ।

[3] °माण वि (ख) ।

[4] एरण्णवए (क, ख, ग) ।

४५२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासा पण्णत्ता तं जहा—रम्मगवासे, हेरण्णवते, एरवए ॥

वासहरपव्वय-पदं

४५३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे ॥

४५४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासहरपव्वत्ता पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंते, रुप्पी, सिहरी ॥

महादह-पदं

४५५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ महादहा पण्णत्ता, तं जहा—पउमदहे, महापउमदहे, तिगिंछदहे[1]।
तत्थ णं तओ देवताओ महिड्डियाओ जाव[2] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—सिरी, हिरी, धिती ॥

४५६. एवं—उत्तरे णवि, नवरं—केसरिदहे, महापोंडरीयदहे, पोंडरीयदहे। देवताओ—कित्ती, बुद्धी, लच्छी ।

णदी-पदं

४५७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंताओ वासधरपव्वताओ पउमदहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा—गंगा, सिंधू, रोहितंसा ॥

४५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं सिहरीओ वासहरपव्वताओ पोंडरीयद्दहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा—सुवण्णकूला, रत्ता, रत्तवती ॥

४५९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गाहावती, दहवती, पंकवती ॥

४६०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तत्तजला,मत्तजला, उम्मत्तजला ॥

४६१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरोदा, सीहसोता[3], अंतोवाहिणी ॥

४६२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी ॥

---

[1] तिगिच्छ° (क); तिगिच्छि° (ख)।

[2] ठा० २।७१ ।

[3] सीतसोता (क, ग)।

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

४६३. एवं—धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धेवि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव[1] अंतरणदीओत्ति णिरवसेसं भाणियव्वं जाव[2] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं ।।

भूकंप-पदं

४६४. तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा, तं जहा—

१. अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवतेज्जा। तते णं उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देसं पुढवीए चालेज्जा[3]।

२. महोरगे[4] वा महिड्ढीए जाव[5] महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्ज-णिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चालेज्जा[6]।

३. णागसुवण्णाण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसं [देसे[7] ?] पुढवीए चलेज्जा।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा ।।

४६५. तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवो चलेज्जा, तं जहा—

१. अधे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाते गुप्पेज्जा। तए णं से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा। तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा।

२. देवे वा महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरियं[9] पुरिसक्कार-परक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा।

३. देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा ।।

देवकिब्बिसिय-पदं

४६६. तिविधा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा—तिपलिओवमट्ठितीया, तिसागरोवमट्ठितीया, तेरससागरोवमट्ठितीया।

१. कहि णं भंते ! तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

---

[1] ठा० ३।४४९-४६२।

[2] ठा० ३।१०८।

[3] चलेज्जा (क, ख, ग); वृत्तौ चलयेयुः इति व्याख्यातमस्ति, तेन चालेज्जा इति पाठः प्रतीयते।

[4] महोरते (क, ख, ग)।

[5] ठा० २।२७१।

[6] चलेज्जा (क, ख, ग)।

[7] देसंति देशश्चलेदिति (वृ)।

[8] ठा० २।२७१।

[9] वीरितं (क, ख, ग)।

उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

२. कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हेट्ठिं[2] सणंकुमार-माहिंदेसु[3] कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

३. कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हेट्ठिं[4] लंतगे कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।।

देवठिति-पदं

४६७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

४६८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

४६९. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

पायच्छित्त-पदं

४७०. तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते ।।

४७१. तओ अणुग्घातिमा[5] पण्णत्ता, तं जहा—हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं सेवेमाणे, राईभोयणं भुंजमाणे ।।

४७२. तओ पारंचिता पण्णत्ता, तं जहा—दुट्ठे पारंचिते, पमत्ते पारंचिते, अण्णमण्णं करेमाणे पारंचिते ।।

४७३. तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता, तं जहा—साहम्मियाणं तेणियं[6] करेमाणे, अण्णधम्मियाणं तेणियं करेमाणे, हत्थातालं[7] दलयमाणे[8] ।।

पव्वज्जादि-अजोग्ग-पदं

४७४. तओ णो कप्पंति पव्वावेत्तए, तं जहा—पंडए, वातिए[9], कीवे ।।

---

[1] हव्विं (क, ख) ।

[2] हव्विं (क, ख) ।

[3] माहिंदे (क) ।

[4] हव्विं (क) ।

[5] ०ग्घातिया (ठा० ५।१०१) ।

[6] तेण्णं (क); तेणं (ख) ।

[7] हत्थतालं (ख); अत्थायाणं, हत्थालंबं (वृपा)

[8] दलमाणे (वृ) ।

[9] वातिते (क, ख, ग); वाहिए (वृपा) ।

४७५. [1]°तओ णो कप्पंति°—मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावेत्तए[2], संभुंजित्तए, संवासित्तए, °तं जहा—पंडए, वातिए, कीवे° ।।

अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पदं

४७६. तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता, तं जहा—अविणीए, विगतीपडिबद्धे, अविओसवितपाहुडे[3] ।।

४७७. तओ कप्पंति वाइत्तए[4], तं जहा—विणीए, अविगतीपडिबद्धे, विओसवियपाहुडे[5] ।

दुसण्णप्प-सुसण्णप्प-पदं

४७८. तओ दुसण्णप्पा पण्णत्ता, तं जहा—दुट्ठे, मूढे, वुग्गाहिते ।।

४७९. तओ सुसण्णप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिते ।।

मंडलिय-पव्वय-पदं

४८०. तओ मंडलिया पव्वता पण्णत्ता, तं जहा—माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुयगवरे[6] ।।

महतिमहालय-पदं

४८१. तओ महतिमहालया पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवए मंदरे मंदरेसु, सयंभूरमणे समुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु ।।

कप्पठिति-पदं

४८२. तिविधा कप्पठिती पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयकप्पठिती, छेदोवट्ठावणियकप्पठिती, णिव्विसमाणकप्पठिती ।।

अहवा—तिविहा कप्पट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्पट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती ।।

सरीर-पदं

४८३. णेरइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ।।

४८४. असुरकुमाराणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, [7]°तं जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए° ।।

४८५. एवं—सव्वेसिं देवाणं[8] ।।

---

[1] सं० पा०—एवं ।

[2] उट्ठावेत्तए (क, ख) ।

[3] अविओसित° (क्व) ।

[4] वातित्तते (क, ख, ग) ।

[5] विउसिय° (क्व) ।

[6] रुतगवरे (क, ख, ग) ।

[7] सं० पा०—एवं चेव ।

[8] ठा० १।१४३-१५१, १६२-१६४ ।

४८६. पुढविकाइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए ।।

४८७. एवं—वाउकाइयवज्जाणं जाव[1] चउरिंदियाणं ।।

पडिणीय-पदं

४८८. गुरुं पडुच्च तओ पडिणीया[2] पण्णत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए ।।

४८९. गतिं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए ।।

४९०. समूहं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए ।।

४९१. अणुकंपं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ।।

४९२. भावं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—णाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ।।

४९३. सुयं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ।।

अंग-पदं

४९४. तओ पितियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमणहे ।

४९५. तओ माउयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिते, मत्थुलिंगे ।।

मणोरह-पदं

४९६. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—

१. कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिज्जिस्सामि ?

२. कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि ?

३. कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ?

एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे[3] समणे[4] निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।।

४९७. तिहिं ठाणेहिं समणोवासए[5] महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—

१. कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि ?

---

[1] ठा० १।१५३, १५४, १५६-१५९ ।

[2] पडिणीता (क, ख, ग) ।

[3] पहारेमाणे (वृ); पागडेमाणे (वृपा) ।

[4] × (क) ।

[5] समणोवासते (क, ख, ग) ।

२. कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइस्सामि ?

३. कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ?

एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।।

पोग्गलपडिघात-पदं

४९८. तिविहे पोग्गलपडिघाते पण्णत्ते, तं जहा—परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहण्णिज्जा, लुक्खत्ताए वा पडिहण्णिज्जा[1], लोगंते वा पडिहण्णिज्जा ।।

चक्खु-पदं

४९९. तिविहे चक्खू पण्णत्ते, तं जहा—एगचक्खू, बिचक्खू, तिचक्खू ।
छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू, देवे बिचक्खू, तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पण्णणाणदंसणधरे[2] तिचक्खुत्ति वत्तव्वं सिया ।।

अभिसमागम-पदं

५००. तिविधे अभिसमागमे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढं, अहं, तिरियं ।
जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जति, से णं तप्पढमताए उड्ढमभिसमेति, ततो तिरियं, ततो पच्छा अहे । अहोलोगे णं दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

इड्ढि-पदं

५०१. तिविधा इड्ढी पण्णत्ता, तं जहा— देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी ।।

५०२. देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी[3], परियारणिड्ढी ।
अहवा—देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ।।

५०३. राइड्ढी तिविधा पण्णत्ता, तं जहा—रण्णो अतियाणिड्ढी, रण्णो णिज्जाणिड्ढी, रण्णो बल-वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी ।
अहवा—राइड्ढी[4] तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ।।

५०४. गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—णाणिड्ढी, दंसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी ।
अहवा—गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ।।

गारव-पदं

५०५. तओ गारवा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढीगारवे, रसगारवे, सातागारवे ।।

---

[1] पडिहणेज्जा (ख) ।

[2] ०धरे से णं (क, ख) ।

[3] विगुव्वि० (क, ग) ।

[4] रातिड्ढी (क, ख, ग) ।

करण-पदं

५०६. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मिए करणे, अधम्मिए करणे, धम्मियाधम्मिए करणे ॥

सुयक्खायधम्म-पदं

५०७. तिविहे भगवता धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुअधिज्झिते, सुज्झाइते[1], सुतवस्सिते। जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झाइतं भवति, जया सुज्झाइतं भवति तदा सुतवस्सितं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झाइते सुतवस्सिते सुयक्खाते[2] णं भगवता धम्मे पण्णत्ते ॥

जाणु-अजाणु-पदं

५०८. तिविधा वावत्ती पण्णत्ता, तं जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा ॥

५०९. [3]°तिविधा अज्झोववज्जणा[4] पण्णत्ता, तं जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा ॥

५१०. तिविधा परियावज्जणा पण्णत्ता, तं जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा° ॥

अंत-पदं

५११. तिविधे अंते पण्णत्ते, तं जहा—लोगंते, वेयंते, समयंते ॥

जिण-पदं

५१२. तओ जिणा पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणजिणे, मणपज्जवणाणजिणे, केवलणाणजिणे ॥

५१३. तओ केवली पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणकेवली, मणपज्जवणाणकेवली, केवलणाणकेवली ॥

५१४. तओ अरहा पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणअरहा, मणपज्जवणाणअरहा, केवलणाणअरहा ॥

लेसा-पदं

५१५. तओ लेसाओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

५१६. तओ लेसाओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ॥

५१७. [5]°तओ लेसाओ—दोग्गतिगामिणीओ, संकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ, अविसुद्धाओ,

---

[1] सुज्झातिते (क, ख, ग)।

[2] सुतक्खाते (क, ख, ग)।

[3] सं० पा०—एवमज्झोवज्जणा परियावज्जणा।

[4] मज्झोवज्जणा (क, ख, ग)।

[5] सं० पा०—एवं दोग्गतिगामिणीओ सोगतिगामिणीओ, संकिलिट्ठाओ असंकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ मणुण्णाओ, अविसुद्धाओ विसुद्धाओ, अप्पसत्थाओ पसत्थाओ, सीतलुक्खाओ णिद्धुण्हाओ।

अप्पसत्थाओ, सीत-लुक्खाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।

५१८. तओ लेसाओ—सोगतिगामिणीओ, असंकिलिट्ठाओ, मणुण्णाओ, विसुद्धाओ, पसत्थाओ, णिद्धुण्हाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा° ।।

मरण-पदं

५१९. तिविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे, पंडियमरणे, बालपंडियमरणे ।।

५२०. बालमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठितलेस्से, संकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से।।

५२१. पंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठितलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से पज्जवजातलेस्से ।।

५२२. बालपंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठितलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से, अपज्जवजातलेस्से ।।

असद्दहंतस्स पराभव-पदं

५२३. तओ ठाणा अव्ववसितस्स अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—

१. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[1] णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति, तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवइ ।

२. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइए पंचहिं महव्वएहिं संकिते[2] °कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे पंच महव्वताइं णो सद्दहति[3] °णो पत्तियति णो रोएति, तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति°, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवति ।

३. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं[4] °संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे छ जीवणिकाए णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति, तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय° अभिभवति ।।

---

[1] पव्वतिते (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—संकिते जाव कलुससमावण्णे ।

[3] सं० पा०—सद्दहति जाव णो से ।

[4] सं० पा०—जीवणिकाएहिं जाव अभिभवइ ।

सद्दहंतस्स विजय-पदं

५२४. तओ ठाणा ववसियस्स हिताए[1] •सुभाए खमाए णिस्सेसाए° आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—

१. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते[2] •णिक्कंखिते णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे° णो कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोएति[3], से परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवति, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति।

२. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए णिक्कंखिए[4] •णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे पंच महव्वताइं सद्दहति पत्तियति रोएति, से° परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवइ, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति।

३. से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं णिस्संकिते[5] •णिक्कंखिते णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे छ जीवणिकाए सद्दहति पत्तियति रोएति, से° परिस्सहे अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवति, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय-अभिजुंजिय अभिभवंति॥

पुढवी-वलय-पदं

५२५. एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, तं जहा—घणोदधिवलएणं, घणवातवलएणं, तणुवायवलएणं॥

विग्गह-गइ-पदं

५२६. णेरइया णं उक्कोसेणं तिसमइएणं[6] विग्गहेणं उववज्जंति। एगिंदियवज्जं जाव[7] वेमाणियाणं॥

खीणमोह-पदं

५२७. खीणमोहस्स णं अरहओ तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, अंतराइयं[8]॥

णक्खत्त-पदं

५२८. अभिईणक्खत्ते[9] तितारे पण्णत्ते॥

५२९. एवं—सवणे, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा।

---

[1] सं० पा०—हिताते जाव अणुगामितत्ताते।

[2] सं० पा०—णिस्संकिते जाव णो कलुस-समावण्णे।

[3] रोतेति (क, ख, ग)।

[4] सं० पा०—णिक्कंखिए जाव परिस्सहे।

[5] सं० पा०—णिस्संकिते जाव परिस्सहे।

[6] तिसमतितेणं (क, ख, ग)।

[7] ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६३।

[8] अंतरातियं (क, ख, ग)।

[9] अभिती° (क, ख, ग)।

तित्थकर-पदं

५३०. धम्माओ णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवम-ऊणएहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे ।।

५३१. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी ।।

५३२. मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइए ।।

५३३. [2]°पासे णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए °।।

५३४. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तिण्णि सया चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवातीणं जिणा[3] [ज़िणाणं ?] इव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था ।।

५३५. तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, तं जहा—संती, कुंथू, अरो ।।

गेविज्ज-विमाण-पदं

५३६. तओ गेविज्ज-विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

५३७. हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

५३८. मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

५३९. उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

पावकम्म-पदं

५४०. जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति[4] वा

---

[1] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते ।

[2] सं० पा०—एवं पासे वि ।

[3] जिणो (ख) ।

[4] चिणिंति (क) ।

चिणिस्संति वा, तं जहा — इत्थिणिव्वत्तिते, पुरिसणिव्वत्तिते, णपुंसगणिव्वत्तिते। एवं—चिण-उवचिण-बंध उदीर-वेद[1] तह[2] णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पदं

५४१. तिपदेसिया[3] खंधा अणंता पण्णत्ता ॥

५४२. एवं जाव[4] तिगुणलुक्खा[5] पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

---

[1] वेदा (ख)।

[2] तहा (क)।

[3] तिपतेसिता (क, ख, ग)।

[4] ठा० १।२५४-२५६।

[5] तिगुणा० (क, ग)।

चउत्थं ठाणं

पढमो उद्देसो

अंतकिरिया-पदं

१. चत्तारि अंतकिरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. तत्थ खलु इमा पढमा अंतकिरिया—अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसज्जाते दीहेणं परियाएणं[1] सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा—से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी—पढमा अंतकिरिया।

२. अहावरा दोच्चा अंतकिरिया—महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले संवरबहुले[2] °समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी° उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति, तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते णिरुद्धेणं[3] परियाएणं सिज्झति[4] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाण°मंतं करेति, जहा—से गयसूमाले[5] अणगारे—दोच्चा अंतकिरिया।

३. अहावरा तच्चा अंतकिरिया—महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए [6]°संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति,

---

[1] परितातेणं (क, ग)।

[2] सं० पा०—संवरबहुले जाव उवहाणवं।

[3] विरुद्धेणं (क)।

[4] सं० पा०—सिज्झति जाव मंतं।

[5] गतसुकुमाले (ख)।

[6] सं० पा०—जहा दोच्चा णवरं दीहेणं परितातेणं।

तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते° दीहेणं परियाएणं सिज्झति[१] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति° सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा—से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी—तच्चा अंतकिरिया।

४. अहावरा चउत्था अंतकिरिया—अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता[२] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइए संजमबहुले[३] °संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी° तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते णिरुद्धेणं परियाएणं सिज्झति[४] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति° सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा—सा मरुदेवा भगवती—चउत्था अंतकिरिया॥

उण्णत-पणत-पदं

२. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णते, उण्णते णामेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते, पणते णाममेगे पणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णामेगे उण्णते, [५]°उण्णते नाममेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते°, पणते णाममेगे पणते॥

३. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, [६]°उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते°॥

४. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तंजहा—उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, [७]°उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणते णाममेगे उण्णतरूवे, पणतो णामणेगे पणतरूवे°।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, [८]°उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणतो णाममेगे उण्णतरूवे, पणते णाममेगे पणतरूवे°॥

५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतमणे, उण्णते णाममेगे पणतमणे, पणते णाममेगे उण्णतमणे, पणते णाममेगे पणतमणे॥

६. [९]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतसंकप्पे,

---

१. सं० पा०—सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण°।
२. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते।
३. सं० पा०—संजमबहुले जाव तस्स णं।
४. सं० पा०—सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण°।
५. सं० पा०—तहेव जाव पणते।
६. सं० पा०—चउभंगो…।
७. सं० पा०—तहेव चउभंगो।
८. सं० पा०—उण्णए णामं…।
९. सं० पा०—एवं संकप्पे पण्णे… पुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि।

उण्णते णाममेगे पणतसंकप्पे, पणते णाममेगे उण्णतसंकप्पे, पणते णाममेगे पणतसंकप्पे ।।

७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उण्णते णाममेगे उण्णतपण्णे, उण्णते णाममेगे पणतपण्णे, पणते णाममेगे उण्णतपण्णे, पणते णाममेगे पणतपण्णे ।।

८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उण्णते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, उण्णते णाममेगे पणतदिट्ठी, पणते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, पणते णाममेगे पणतदिट्ठी ।।

९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उण्णते णाममेगे उण्णतसीलाचारे[1], उण्णते णाममेगे पणतसीलाचारे, पणते णाममेगे उण्णतसीलाचारे, पणते णाममेगे पणतसीलाचारे ।।

१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उण्णते णाममेगे उण्णतववहारे, उण्णते णाममेगे पणतववहारे, पणते णाममेगे उण्णतववहारे, पणते णाममेगे पणतववहारे ।।

११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उण्णते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, उण्णते णाममेगे पणतपरक्कमे, पणते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, पणते णाममेगे पणतपरक्कमे° ।।

उज्जु-वंक-पदं

१२. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा––उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, [2]°वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके° ।।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––उज्जू णाममेगे उज्जू, [3]°उज्ज णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ।।

१३. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जू णाममेगे वंकपरिणते, वंके णाममेगे उज्जुपरिणते, वंके णाममेगे वंकपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जू णाममेगे वंकपरिणते, वंके णाममेगे उज्जुपरिणते, वंके णाममेगे वंकपरिणते ।।

१४. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुरूवे, उज्जू णाममेगे वंकरूवे, वंके णाममेगे उज्जुरूवे, वंके णाममेगे वंकरूवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुरूवे, उज्जू णाममेगे वंकरूवे, वंके णाममेगे उज्जुरूवे, वंके णाममेगे वंकरूवे ।।

१५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुमणे, उज्जू णाममेगे वंकमणे, वंके णाममेगे उज्जुमणे, वंके णाममेगे वंकमणे ।।

---

१. °सीले आयारे (वृपा) ।

२. सं० पा०—चउभंगो···।

३. सं० पा०—एवं जहा उण्णत······विभाणियव्वो जाव परक्कमे ।

१६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसंकप्पे, उज्जू णाममेगे वंकसंकप्पे, वंके णाममेगे उज्जुसंकप्पे, वंके णाममेगे वंकसंकप्पे ॥

१७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपण्णे, उज्जू णाममेगे वंकपण्णे, वंके णाममेगे उज्जुपण्णे, वंके णाममेगे वंकपण्णे ॥

१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुदिट्ठी, उज्जू णाममेगे वंकदिट्ठी, वंके णाममेगे उज्जुदिट्ठी, वंके णाममेगे वंकदिट्ठी ॥

१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसीलाचारे, उज्जू णाममेगे वंकसीलाचारे, वंके णाममेगे उज्जुसीलाचारे, वंके णाममेगे वंकसीलाचारे ॥

२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुववहारे, उज्जू णाममेगे वंकववहारे, वंके णाममेगे उज्जुववहारे, वंके णाममेगे वंकववहारे ॥

२१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरक्कमे, उज्जू णाममेगे वंकपरक्कमे, वंके णाममेगे उज्जुपरक्कमे, वंके णाममेगे वंकपरक्कमे॰ ॥

भासा-पदं

२२. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए, तं जहा—जायणी, पुच्छणी, अणुण्णवणी, पुट्ठस्स वागरणी ॥

२३. चत्तारि भासाजाता पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमेगं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं ॥

सुद्ध-असुद्ध-पदं

२४. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धे, सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धे, [1]॰सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे ॥

२५. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए ॥

२६. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे ।

---

[1] सं० पा०—चउभंगो एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे ° ।।

२७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धमणे, [1]°सुद्धे णामं एगे असुद्धमणे, असुद्धे णामं एगे सुद्धमणे, असुद्धे णामं एगे असुद्धमणे ।।

२८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धसंकप्पे, सुद्धे णामं एगे असुद्धसंकप्पे, असुद्धे णामं एगे सुद्धसंकप्पे, असुद्धे णामं एगे असुद्धसंकप्पे ।।

२९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपण्णे, सुद्धे णामं एगे असुद्धपण्णे, असुद्धे णामं एगे सुद्धपण्णे, असुद्धे णामं एगे असुद्धपण्णे ।।

३०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धदिट्ठी, सुद्धे णामं एगे असुद्धदिट्ठी, असुद्धे णामं एगे सुद्धदिट्ठी, असुद्धे णामं एगे असुद्धदिट्ठी ।।

३१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धसीलाचारे, सुद्धे णामं एगे असुद्धसीलाचारे, असुद्धे णामं एगे सुद्धसीलाचारे, असुद्धे णामं एगे असुद्धसीलाचारे ।।

३२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धववहारे, सुद्धे णामं एगे असुद्धववहारे, असुद्धे णामं एगे सुद्धववहारे, असुद्धे णामं एगे असुद्धववहारे ।।

३३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपरक्कमे, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरक्कमे, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरक्कमे, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरक्कमे° ।।

सुत-पदं

३४. चत्तारि सुता पण्णत्ता, तं जहा—अतिजाते, अणुजाते, अवजाते, कुलिंगाले ।।

सच्च-असच्च-पदं

३५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चे, सच्चे णामं एगे असच्चे, असच्चे णामं एगे सच्चे, असच्चे णामं एगे असच्चे ।।

३६. [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चपरिणते, सच्चे णामं एगे असच्चपरिणते, असच्चे णामं एगे सच्चपरिणते, असच्चे णामं एगे असच्चपरिणते ।।

३७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चरूवे, सच्चे णामं एगे असच्चरूवे, असच्चे णामं एगे सच्चरूवे, असच्चे णामं एगे असच्चरूवे ।।

---

[1] सं० पा०—चउभंगो एवं संकप्पे जाव परक्कमे ।

[2] सं० पा०—एवं परिणते जाव परक्कमे ।

३८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चमणे, सच्चे णामं एगे असच्चमणे, असच्चे णामं एगे सच्चमणे, असच्चे णामं एगे असच्चमणे ।।

३९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चसंकप्पे, सच्चे णामं एगे असच्चसंकप्पे, असच्चे णामं एगे सच्चसंकप्पे, असच्चे णामं एगे असच्चसंकप्पे ।।

४०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चपण्णे, सच्चे णामं एगे असच्चपण्णे, असच्चे णामं एगे सच्चपण्णे, असच्चे णामं एगे असच्चपण्णे ।।

४१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चदिट्ठी, सच्चे णामं एगे असच्चदिट्ठी, असच्चे णामं एगे सच्चदिट्ठी, असच्चे णामं एगे असच्चदिट्ठी ।।

४२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चसीलाचारे, सच्चे णामं एगे असच्चसीलाचारे, असच्चे णामं एगे सच्चसीलाचारे, असच्चे णामं एगे असच्चसीलाचारे ।।

४३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चववहारे, सच्चे णामं एगे असच्चववहारे, असच्चे णामं एगे सच्चववहारे, असच्चे णामं एगे असच्चववहारे ।।

४४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चपरक्कमे, सच्चे णामं एगे असच्चपरक्कमे, असच्चे णामं एगे सच्चपरक्कमे, असच्चे णामं एगे असच्चपरक्कमे° ।।

सुचि-असुचि-पदं

४५. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई[1] णामं एगे सुई, सुई णामं एगे असुई, [2]°असुई णामं एगे सुई, असुई णामं एगे असुई° ।।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुई, [3]°सुई णामं एगे असुई, असुई णामं एगे सुई, असुई णामं एगे असुई ।।

४६. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपरिणते, सुई णामं एगे असुइपरिणते, असुई णामं एगे सुइपरिणते, असुई णामं एगे असुइपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपरिणते, सुई णामं एगे असुइपरिणते, असुई णामं एगे सुइपरिणते, असुई णामं एगे असुइपरिणते ।।

४७. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइरूवे, सुई णामं एगे असुइरूवे, असुई णामं एगे सुइरूवे, असुई णामं एगे असुइरूवे ।

---

[1] सुती (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—चउभंगो ।

[3] सं० पा०—चउभंगो एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणावि जाव परक्कमे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइरूवे, सुई णामं एगे असुइरूवे, असुई णामं एगे सुइरूवे, असुई णामं एगे असुइरूवे ।।

४८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइमणे, सुई णामं एगे असुइमणे, असुई णामं एगे सुइमणे, असुई णामं एगे असुइमणे ।।

४९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइसंकप्पे, सुई णामं एगे असुइसंकप्पे, असुई णामं एगे सुइसंकप्पे, असुई णामं एगे असुइसंकप्पे ।।

५०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपण्णे, सुई णामं एगे असुइपण्णे, असुई णामं एगे सुइपण्णे, असुई णामं एगे असुइपण्णे ।।

५१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइदिट्ठी, सुई णामं एगे असुइदिट्ठी, असुई णामं एगे सुइदिट्ठी, असुई णामं एगे असुइदिट्ठी ।।

५१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइसीलाचारे, सुई णामं एगे असुइसीलाचारे, असुई णामं एगे सुइसीलाचारे, असुई णामं एगे असुइसीलाचारे ।।

५३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइववहारे, सुई णामं एगे असुइववहारे, असुई णामं एगे सुइववहारे, असुई णामं एगे असुइववहारे ।।

५४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपरक्कमे, सुई णामं एगे असुइपरक्कमे, असुई णामं एगे सुइपरक्कमे, असुई णामं एगे असुइपरक्कमे° ।।

कोरव-पदं

५५. चत्तारि कोरवा पण्णत्ता, तं जहा—अंबपलंबकोरवे, तालपलंबकोरवे, वल्लिपलंबकोरवे, मेंढविसाणकोरवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंबपलंबकोरवसमाणे, तालपलंबकोरवसमाणे, वल्लिपलंबकोरवसमाणे, मेंढविसाणकोरवसमाणे ।।

भिक्खाग-पदं

५६. चत्तारि घुणा पण्णत्ता, तं जहा—तयक्खाए[1], छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए ।

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—तयक्खायसमाणे[2], °छल्लिक्खायसमाणे, कट्ठक्खायसमाणे°, सारक्खायसमाणे ।

१. तयक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।

२. सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।

---

[1] °क्खाते (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे ।

३. छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते।

४. कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते॥

तणवणस्सइ-पदं

५७. चउव्विहा तणवणस्सतिकाइया[1] पण्णत्ता, तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया॥

अहुणोववण्ण-णेरइय-पदं

५८. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए—

१. अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि समुब्भूयं[2] वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

२. अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो-भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

३. अहुणोववण्णे णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि[3] अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

४. °[4]अहुणोववण्णे णेरइए णिरयाउअंसि[5] कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए°, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए[6] °णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए°, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए॥

संघाडी-पदं

५९. कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा—एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थारा, एगं चउहत्थवित्थारं॥

झाण-पदं

६०. चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे॥

---

[1] °कातिता (क, ख, ग)।

[2] सम्मुहभूयां, समहब्भूयं (वृपा)।

[3] अवेतितंसि (क, ख, ग)।

[4] सं० पा०—एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव।

[5] णिरतिताउ° (क, ग)।

[6] सं० पा०—णेरतिते जाव णो चेव।

६१. अट्ट झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—
१. अमणुण्ण[1]-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति ।
२. मणुण्ण-संपओग-संपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति ।
३. आतंक-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति ।
४. परिजुसित[2]-काम-'भोग-संपओग-संपउत्ते'[3] तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति ।।

६२. अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणता, सोयणता[4], तिप्पणता, परिदेवणता ।।

६३. रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधि, मोसाणुबंधि, तेणाणुबंधि, सारक्खणाणुबंधि ।।

६४. रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे[5], आमरणंतदोसे ।।

६५. धम्मे झाणे चउविहे चउप्पडोयारे[6] पण्णत्ते, तं जहा - आणाविजए[7], अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए ।।

६६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुई, णिसग्गरुई सुत्तरुई, ओगाढरुई ।।

६७. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा ।।

६८. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा ।।

६९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोआरे[8] पण्णत्ते, तं जहा - पुहत्तवितक्के[9] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए[10] अणियट्टी, समुच्छिण्णकिरिए अप्पडिवाती ।।

७०. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे ।।

---

[1] असमणुन्न° (क, ग, वृपा) ।
[2] परिभुसिय (क, ग, वृपा) ।
[3] भोगसपउत्ते (वृ) ; भोगसंपओगसंपउत्ते (वृपा) ।
[4] सोतणता (क, ख, ग) ।
[5] नाणाविहदोसे (वृपा) ।
[6] चउप्पयावयारं (वृ); चउप्पडोयारं (वृपा) ।
[7] °विजते (क, ख, ग) ।
[8] चउप्पओआरे (ग) ।
[9] पुहुत्त° (ख) ।
[10] °किरिते (क, ख, ग) ।

७१. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा--खंती, मुत्ती, ‘अज्जवे, मद्दवे’[1] ॥

७२. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा ॥

देवाणं पदमेरा-पदं

७३. चउव्विहा देवाण ठिती पण्णत्ता, तं जहा—देवे णाममेगे, देवसिणाते णाममेगे, देवपुरोहिते णाममेगे, देवपज्जलणे णाममेगे ॥

संवास-पदं

७४. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, देवे णाममेगे छवीए[2] सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा ॥

कसाय-पदं

७५. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। एवं—णेरइयाणं जाव[3] वेमाणियाणं ॥

७६. चउपतिट्ठिते कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभयपतिट्ठिते, अपतिट्ठिते। एवं णेरइयाणं जाव[4] वेमाणियाणं ॥

७७. [5]°चउपतिट्ठिते माणे पण्णत्ते, तं जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभयपतिट्ठिते, अपतिट्ठिते। एवं—णेरयाणं जाव[6] वेमाणियाणं ॥

७८. चउपतिट्ठिता माया पण्णत्ता, तं जहा—आतपतिट्ठिता, परपतिट्ठिता, तदुभयपतिट्ठिता, अपतिट्ठिता। एवं—णेरइयाणं जाव[7] वेमाणियाणं ॥

७९. चउपतिट्ठिते लोभे पण्णत्ते, तं जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभयपतिट्ठिते, अपतिट्ठिते। एवं—णेरइयाणं जाव[8] वेमाणियाणं° ॥

८०. चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा[9], सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा। एवं—णेरइयाणं जाव[10] वेमाणियाणं ॥

---

[1] मद्दवे अज्जवे (क, ख, ग); औपपातिके (सूत्र ४३) ‘अज्जवे मद्दवे’ एवं पाठो विद्यते। अत्रापि इत्थमेव युज्यते। लिपिदोषेण शब्दविपर्ययो जात इति प्रतीयते।

[2] छव्वीते (क, ख, ग)।

[3],[4] ठा० १।१४२-१६३।

[5] सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं।

[6],[7] ठा० १।१४२-१६३।

[8] ठा० १।१४२-१६३।

[9] पडुच्च (क, ख, ग)।

[10] ठा० १।१४२-१६३।

८१. [१]°चउहिं ठाणेहिं माणुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा । एवं—णेरइयाणं जाव[२] वेमाणियाणं ।।

८२. चउहिं ठाणेहिं मायुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा । एवं—णेरइयाणं जाव[३] वेमाणियाणं ।।

८३. चउहिं ठाणेहिं लोभुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा । एवं—णेरइयाणं जाव[४] वेमाणियाणं° ।।

८४. चउव्विधे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी कोहे, अपच्चक्खाणकसाए[५] कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे । एवं—णेरइयाणं जाव[६] वेमाणियाणं ।।

८५. [७]°चउव्विधे माणे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी माणे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, पच्चक्खाणावरणे माणे, संजलणे माणे । एवं—णेरइयाणं जाव[८] वेमाणियाणं ।।

८६. चउव्विधा माया पण्णत्ता, तं जहा—अणंताणुबंधी माया, अपच्चक्खाणकसाया माया, पच्चक्खाणावरणा माया, संजलणा माया । एवं—णेरइयाणं जाव[९] वेमाणियाणं ।।

८७. चउव्विधे लोभे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे लोभे, संजलणे लोभे । एवं—णेरइयाणं जाव[१०] वेमाणियाणं°।।

८८. चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते । एवं—णेरइयाणं जाव[११] वेमाणियाणं ।

८९. [१२]°चउव्विहे माणे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते । एवं—णेरइयाणं जाव[१३] वेमाणियाणं ।।

९०. चउव्विहा माया पण्णत्ता, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिता, अणाभोगणिव्वत्तिता, उवसंता, अणुवसंता । एवं—णेरइयाणं जाव[१४] वेमाणियाणं ।

९१. चउव्विहे लोभे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते । एवं—णेरइयाणं जाव[१५] वेमाणियाणं°।।

कम्मपगडि-पदं

९२. जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु, तं जहा—कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं जाव[१६] वेमाणियाणं ।।

---

[१] सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं ।

[२,३,४] ठा० १।१४२-१५३ ।

[५] अपच्चक्खाण (ख) ।

[६] ठा० १।१४२-१६३ ।

[७] सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं ।

[८] ठा० १।१४२-१६३ ।

[९,१०,११] ठा० १।१४२-१६३ ।

[१२] सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं ।

[१३,१४,१५] ठा० १।१४२-१६३ ।

[१६] ठा० १।१४१-१६३ ।

९३. [1]°जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणंति, तं जहा—कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ।।

९४. जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिस्संति, तं जहा—कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं जाव[3] वेमाणियाणं °।।

९५. एवं—उवचिणिंसु उवचिणंति उवचिणिस्संति, बंधिंसु बंधंति बंधिस्संति, उदीरिंसु उदीरिंति उदीरिस्संति, वेदेंसु वेदेंति वेदिस्संति, णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्संति जाव[4] वेमाणियाणं[5] ।।

पडिमा-पदं

९६. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडिमा ।।

९७. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वतोभद्दा ।।

९८. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खुड्डिया मोयपडिमा, महल्लिया मोयपडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा ।।

अत्थिकाय-पदं

९९. चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१००. चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए ।।

आम-पक्क-पदं

१०१. चत्तारि फला पण्णत्ता, तं जहा—आमे णाममेगे आममहुरे, आमे णाममेगे पक्कमहुरे, पक्के णाममेगे आममहुरे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आमे णाममेगे आममहुरफलसमाणे, आमे णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे आममहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे ।।

सच्च-मोस-पदं

१०२. चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—काउज्जुयया, भासुज्जुयया, भावुज्जुयया, अविसंवायणाजोगे ।।

---

[1] सं० पा०—एवं चिणंति एस दंडओ एवं··· एवमेतेणं तिण्णि दंडगा ।

[2] ठा० १।१४१-१६३ ।

[3,4] ठा० १।१४१-१६३ ।

[5] वेमाणियाणं एवमेक्केक्के पदे तिण्णि दंडगा भाणियव्वा जाव णिज्जरिस्संति (क,ख,ग) ।

१०३. चउव्विहे मोसे पण्णत्ते, तं जहा—कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया, भावअणुज्जुयया, विसंवादणाजोगे ।।

पणिधाण-पदं

१०४. चउव्विहे पणिधाणे,पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिधाणे, वइपणिधाणे, कायपणिधाणे, उवकरणपणिधाणे । एवं—णेरइयाणं पंचिंदियाणं जाव[1] वेमाणियाणं ।।

१०५. चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे[2], °वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे°, उवगरणसुप्पणिहाणे । एवं—संजयमणुस्साणवि[3] ।।

१०६. चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणदुप्पणिहाणे[4], °वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे°, उवकरणदुप्पणिहाणे । एवं—पंचिंदियाणं जाव[5] वेमाणियाणं ।।

आवात-संवास-पदं

१०७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आवातभद्दए[6] णाममेगे णो संवासभद्दए, संवासभद्दए णाममेगे णो आवातभद्दए, एगे आवातभद्दएवि संवासभद्दएवि, एगे णो आवातभद्दए णो संवासभद्दए ।।

वज्ज-पदं

१०८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे वज्जं पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्जं पासति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्जं पासति परस्सवि, एगो णो अप्पणो वज्जं पासति णो परस्स ।।

१०९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे वज्जं उदीरेइ णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्जं उदीरेइ णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्जं उदीरेइ परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्जं उदीरेइ णो परस्स ।।

११०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे वज्जं उवसामेति णो परस्स, परस्स णामेगे वज्जं उवसामेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्जं उवसामेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्जं उवसामेति णो परस्स ।।

लोगोपचार-विणय-पदं

१११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अब्भुट्ठेति णाममेगे णो अब्भुट्ठावेति,

---

[1] ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३ ।

[2] सं० पा०—मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरण° ।

[3] 'एवं' शब्दस्य स्थाने यदि 'एयं' तथा 'अवि' शब्दस्य स्थाने 'एव' स्यात्, यथा—'एयं संजयमणुस्साणमेव' तदा अर्थदृष्ट्या रचनादृष्ट्या च अधिकं संगच्छते ।

[4] सं० पा०—मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरण° ।

[5] ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३ ।

[6] °भद्दते (क, ख, ग) ।

अब्भुट्ठावेति णाममेगे णो अब्भुट्ठेति, एगे अब्भुट्ठेति वि अब्भुट्ठावेति वि, एगे णो अब्भुट्ठेति णो अब्भुट्ठावेति ॥

११२. [१]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वंदति णाममेगे णो वंदावेति, वंदावेति णाममेगे णो वंदति, एगे वंदति वि वंदावेति वि, एगे णो वंदति णो वंदावेति° ॥

११३. [२]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सक्कारेइ णाममेगे णो सक्कारावेइ, सक्कारावेइ णाममेगे णो सक्कारेइ, एगे सक्कारेइ वि सक्कारावेइ वि, एगे णो सक्कारेइ णो सक्कारावेइ ॥

११४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सम्माणेति णाममेगे णो सम्माणावेति, सम्माणावेति णाममेगे णो सम्माणेति, एगे सम्माणेति वि सम्माणावेति वि, एगे णो सम्माणेति णो सम्माणावेति ॥

११५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पूएइ णाममेगे णो पूयावेति, पूयावेति णाममेगे णो पूएइ, एगे पूएइ वि पूयावेति वि, एगे णो पूएइ णो पूयावेति ॥

सज्झाय-पदं

११६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वाएइ णाममेगे णो वायावेइ, वायावेइ णाममेगे णो वाएइ, एगे वाएइ वि वायावेइ वि, एगे णो वाएइ णो वायावेइ ॥

११७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पडिच्छति णाममेगे णो पडिच्छावेति, पडिच्छावेति णाममेगे णो पडिच्छति, एगे पडिच्छति वि पडिच्छावेति वि, एगे णो पडिच्छति णो पडिच्छावेति ॥

११८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुच्छइ णाममेगे णो पुच्छावेइ पुच्छावेइ णाममेगे णो पुच्छइ, एगे पुच्छइ वि पुच्छावेइ वि, एगे णो पुच्छइ णो पुच्छावेइ ॥

११९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वागरेति णाममेगे णो वागरावेति, वागरावेति णाममेगे णो वागरेति, एगे वागरेति वि वागरावेति वि, एगे णो वागरेति णो वागरावेति° ॥

१२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे, अत्थधरे णाममेगे णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि, एगे णो सुत्तधरे णो अत्थधरे ॥

लोगपाल-पदं

१२१. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥

---

१. सं० पा०—एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ। वाएइ पडिच्छति पुच्छइ वागरेति।

२. सं० पा०—एवं सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ

१२२. एवं —बलिस्सवि—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। धरणस्स—कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, संखपाले। भूयाणंदस्स—कालपाले, कोलपाले, संखपाले, सेलपाले। वेणुदेवस्स—चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे। वेणुदालिस्स[1]—चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे। हरिकंतस्स—पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते। हरिस्सहस्स—पभे, सुप्पभे, सुप्पभकंते, पभकंते। अग्गिसिहस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउकंते, तेउप्पभे। अग्गिमाणवस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउप्पभे, तेउकंते। पुण्णस्स—'रूवे, रूवंसे'[2], 'रूवकंते, रूवप्पभे'[3]। विसिट्ठस्स[4]—रूवे, रूवंसे, रूवप्पभे, रूवकंते। जलकंतस्स—जले, जलरते, जलकंते, जलप्पभे। जलप्पहस्स—जले, जलरते, जलप्पहे, जलकंते। अमितगतिस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहगती, सीहविक्कमगती। अमितवाहणस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहविक्कमगती, सीहगती। वेलंबस्स—काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे। पभंजणस्स—काले, महाकाले, रिट्ठे, अंजणे। घोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, णंदियावत्ते, महाणंदियावत्ते। महाघोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियावत्ते, णंदियावत्ते। सक्कस्स—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणस्स—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। एवं—एगंतरिता जाव[5] अच्चुतस्स ।।

देव-पदं

१२३. चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे ।।

१२४. चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, विमाणवासी ।।

पमाण-पदं

१२५. चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे ।।

महत्तरिया-पदं

१२६. चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूया, रूयंसा, सुरूवा, रूयावती ।।

१२७. चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चित्ता, चित्तकणगा, सतेरा, सोतामणी ।।

---

[1] °दालस्स (ख)।

[2] रूप्पे रूप्पंसे (क, ग); रूते रूतंसे (ख)।

[3] रूतकंते रूतप्पभे (क, ख, ग); रूदकंते रूदप्पभे (क्व)।

[4] विसट्ठस्स (ख)।

[5] ठा० २।३८१-३८४।

देव-ठिति-पदं

१२८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो मज्भिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२९. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो मज्भिमपरिसाए देवीणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

संसार-पदं

१३०. चउव्विहे ससारे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वसंसारे, खेत्तसंसारे, कालसंसारे, भावसंसारे ॥

दिट्ठिवाय-पदं

१३१. चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं[1], सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुजोगे ॥

पायच्छित्त-पदं

१३२. चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते, वियत्तकिच्चपायच्छित्ते[2] ॥

१३३. चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—पडिसेवणापायच्छित्ते, संजोयणापायच्छित्ते, आरोवणापायच्छित्ते, पलिउंचणापायच्छित्ते ॥

काल-पदं

१३४. चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा—पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ॥

पोग्गल-परिणाम-पदं

१३५. चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे ॥

चाउज्जाम-पदं

१३६. भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिम-पच्छिम-वज्जा मज्भिमगा बावीसं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तं जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं ॥

१३७. सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तं जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं[3], °सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं°, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं ॥

---

[1] परिक्कमं (क, ग)।

[2] चियत्त° (वृपा)।

[3] सं० पा०—वेरमणं जाव सव्वातो।

दुग्गति-सुगति-पदं

१३८. चत्तारि दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती, मणुस्सदुग्गती, देवदुग्गती ।।

१३९. चत्तारि सोग्गईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सिद्धसोग्गती, देवसोग्गती, मणुयसोग्गती, सुकुलपच्चायाती ।।

१४०. चत्तारि दुग्गता पण्णत्ता, तं जहा—णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता[1], मणुयदुग्गता[2], देवदुग्गता ।।

१४१. चत्तारि सुग्गता पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धसुग्गता[3], °देवसुग्गता, मणुयसुग्गता°, सुकुलपच्चायाया ।।

कम्मंस-पदं

१४२. पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, मोहणिज्जं, अंतराइयं[4] ।।

१४३. उप्पण्णणाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेति, तं जहा—वेदणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं ।।

१४४. पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा—वेयणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं ।।

हासुप्पत्ति-पदं

१४५. चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिया, तं जहा—पासेत्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता ।।

अंतर-पदं

१४६. चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा—कट्ठंतरे, पम्हंतरे, लोहंतरे, पत्थरंतरे ।

एवामेव इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा—कट्ठंतरसमाणे, पम्हंतरसमाणे, लोहंतरसमाणे, पत्थरंतरसमाणे ।।

भयग-पदं

१४७. चत्तारि भयगा पण्णत्ता, तं जहा—दिवसभयए[5], जत्ताभयए, उच्चत्तभयए, कव्वालभयए[6] ।।

---

[1] तिरियदुग्गता (क) ।

[2] मणुस्स° (ख) ।

[3] सं० पा०—सिद्धसुग्गता जाव सुकुल° ।

[4] अंतरातितं (क, ख, ग) ।

[5] °भयते (क, ख, ग) ।

[6] कव्वाडभयते (ख) ।

पडिसेवि-पदं

१४८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—संपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छण्णपडिसेवी, पच्छण्णपडिसेवी णामेगे णो संपागडपडिसेवी, एगे संपागडपडिसेवी वि पच्छण्णपडिसेवी वि, एगे णो संपागडपडिसेवी[1] णो पच्छण्णपडिसेवी[2] ।।

अग्गमहिसी-पदं

१४९. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा ।।

१५०. एवं—जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स ।।

१५१. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मितगा, सुभद्दा, विज्जुता, असणी ।।

१५२. एवं—जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स ।।

१५३. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा ।।

१५४. एवं जाव[3] संखवालस्स ।।

१५५. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाता, सुमणा ।।

१५६. एवं जाव[4] सेलवालस्स ।।

१५७. जहा धरणस्स एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं जाव[5] घोसस्स ।।

१५८. जहा भूताणंदस्स एवं जाव[6] महाघोसस्स लोगपालाणं ।।

१५९. कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा - कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा ।।

१६०. एवं - महाकालस्सवि ।।

१६१. सुरूवस्स णं भूतिंदस्स भूतरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा -- रूववती, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा ।।

१६२. एवं—पडिरूवस्सवि ।।

१६३. पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुण्णा, बहुपुण्णिता[7], उत्तमा, तारगा ।।

१६४. एवं—माणिभद्दस्सवि ।।

---

१. °पडिसेवीवि (क, ग) ।

२. °पडिसेवीवि (क, ग) ।

३,४,५,६. ठा० ४।१२२ ।

७. °पुत्तिता (ख) ।

१६५. भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती, कणगा, रतणप्पभा ।।

१६६. एवं—महाभीमसस्सवि ।।

१६७. किण्णरस्स णं किण्णरिंदस्स [किण्णररण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वडेंसा, केतुमती, रतिसेणा, रतिप्पभा ।।

१६८. एवं—किंपुरिसस्सवि ।।

१६९. सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स [किंपुरिसरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, णवमिता, हिरी, पुप्फवती ।।

१७०. एवं—महापुरिसस्सवि ।।

१७१. अतिकायस्स णं महोरगिंदस्स [महोरगरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा, भुयगावती, महाकच्छा, फुडा ।।

१७२. एवं—महाकायस्सवि ।।

१७३. गीतरतिस्स णं गंधव्विंदस्स [गंधव्वरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सती ।।

१७४. एवं—गीयजसस्सवि ।।

१७५. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ।।

१७६. एवं—सूरस्सवि, णवरं—सूरप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ।।

१७७. इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया ।।

१७८. एवं—सव्वेसिं महग्गहाणं जाव[1] भावकेउस्स ।।

१७९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, मयणा, चित्ता, सामा[2] ।।

१८०. एवं जाव[3] वेसमणस्स ।।

१८१. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुढवी, राती, रयणी, विज्जू ।।

१८२. एवं जाव[4] वरुणस्स ।।

विगति-पदं

१८३. चत्तारि गोरसविगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरं, दहिं, सप्पिं, णवणीतं ।।

१८४. चत्तारि सिणेहविगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेल्लं, घयं, वसा, णवणीतं ।।

१८५. चत्तारि महाविगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—महुं, मंसं, मज्जं, णवणीतं ।।

---

[1] ठा० २।३२५ ।

[2] सोमा (क्व) ।

[3] ठा० ४।१२२ ।

[4] ठा० ४।१२२ ।

गुत्त-अगुत्त-पदं

१८६. चत्तारि कूडागारा पण्णत्ता, तं जहा—गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते ॥

१८७. चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, गुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा ॥

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया ॥

ओगाहणा-पदं

१८८. चउव्विहा ओगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा, कालोगाहणा, भावोगाहणा ॥

पण्णत्ति-पदं

१८९. चत्तारि पण्णत्तीओ अंगबाहिरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, जंबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ॥

बीओ उद्देसो

पडिसंलीण-अपडिसंलीण-पदं

१९०. चत्तारि पडिसंलीणा पण्णत्ता, त जहा—कोहपडिसंलीणे[1], माणपडिसंलीणे, मायापडिसंलीणे, लोभपडिसंलीणे।

१९१. चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—कोहअपडिसंलीणे[2], •माणअपडिसंलीणे, मायाअपडिसंलीणे°, लोभअपडिसंलीणे ॥

१९२. चत्तारि पडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—मणपडिसंलीणे, वतिपडिसंलीणे, कायपडिसंलीणे, इंदियपडिसंलीणे ॥

१९३. चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—मणअपडिसंलीणे[3], •वतिअपडिसंलीणे, कायअपडिसंलीणे°, इंदियअपडिसंलीणे ॥

---

[1] कोव° (क)।

[2] सं° पा°—कोहअपडिसंलीणे जाव लोभ°।

[3] सं° पा°—मणअपडिसंलीणे जाव इंदिय°।

दीण-अदीण-पदं

१९४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे दीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे ।।

१९५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा दीणे णाममेगे दीणपरिणते, दीणे णाममेगे अदीणपरिणते, अदीणे णाममेगे दीणपरिणते, अदीणे णाममेगे अदीणपरिणते ।।

१९६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––दीणे णाममेगे दीणरूवे, दीणे णाममेगे अदीणरूवे, अदीणे णाममेगे दीणरूवे, अदीणे णाममेगे अदीणरूवे ।।

१९७. [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा––दीणे णाममेगे दीणमणे, दीणे णाममेगे अदीणमणे, अदीणे णाममेगे दीणमणे, अदीणे णाममेगे अदीणमणे ।।

१९८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणसंकप्पे, दीणे णाममेगे अदीणसंकप्पे, अदीणे णाममेगे दीणसंकप्पे, अदीणे णाममेगे अदीणसंकप्पे ।।

१९९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणपण्णे, दीणे णाममेगे अदीणपण्णे, अदीणे णाममेगे दीणपण्णे, अदीणे णाममेगे अदीणपण्णे ।।

२००. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणदिट्ठी, दीणे णाममेगे अदीणदिट्ठी, अदीणे णाममेगे दीणदिट्ठी, अदीणे णाममेगे अदीणदिट्ठी ।।

२०१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणसीलाचारे, दीणे णाममेगे अदीणसीलाचारे, अदीणे णाममेगे दीणसीलाचारे, अदीणे णाममेगे अदीणसीलाचारे ।।

२०२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा –दीणे णाममेगे दीणववहारे, दीणे णाममेगे अदीणववहारे, अदीणे णाममेगे दीणववहारे, अदीणे णाममेगे अदीणववहारे° ।।

२०३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीणपरक्कमे, [2]°अदीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, अदीणे णाममेगे अदीणपरक्कमे° ।।

२०४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणवित्ती, दीणे णाममेगे अदीणवित्ती, अदीणे णाममेगे दीणवित्ती, अदीणे णाममेगे अदीणवित्ती ।।

२०५. [3]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणजाती, दीणे णाममेगे अदीणजाती, अदीणे णाममेगे दीणजाती, अदीणे णाममेगे अदीणजाती ।।

---

[1] सं० पा०—एवं दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलाचारे दीणववहारे ।

[2] सं० पा०–एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो ।

[3] सं० पा०—एवं दीणजाती दीणभासी दीणोभासी ।

२०६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणभासी, दीणे णाममेगे अदीणभासी, अदीणे णाममेगे दीणभासी, अदीणे णाममेगे अदीणभासी ॥

२०७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणोभासी, दीणे णाममेगे अदीणोभासी, अदीणे णाममेगे दीणोभासी, अदीणे णाममेगे अदीणोभासी° ॥

२०८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणसेवी, दीणे णाममेगे अदीणसेवी, अदीणे णाममेगे दीणसेवी, अदीणे णाममेगे अदीणसेवी ॥

२०९. [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणपरियाए, दीणे णाममेगे अदीणपरियाए, अदीणे णाममेगे दोणपरियाए, अदीणे णाममेगे अदीणपरियाए ॥

२१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दीणे णाममेगे दीणपरियाले, दीणे णाममेगे अदीणपरियाले, अदीणे णाममेगे दीणपरियाले, अदीणे णाममेगे अदीणपरियाले° ॥

अज्ज-अणज्ज-पदं

२११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जे, अज्जे णाममेगे अणज्जे, अणज्जे णाममेगे अज्जे, अणज्जे णाममेगे अणज्जे ॥

२१२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए ॥

२१३. [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अज्जे णाममेगे अणज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अणज्जरूवे ॥

२१४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जमणे, अज्जे णाममेगे अणज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अणज्जमणे ॥

२१५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसंकप्पे, अज्जे णाममेगे अणज्जसंकप्पे, अणज्जे णाममेगे अज्जसंकप्पे, अणज्जे णाममेगे अणज्जसंकप्पे ॥

२१६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे ॥

---

१. सं० पा०—एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाले सव्वत्थ चउभंगो ।

२. सं० पा०—एवं अज्जरूवे······अज्जेण वि भाणियव्वा ।

२१७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अज्जे णाममेगे अणज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अणज्जदिट्ठी ॥

२१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अज्जे णाममेगे अणज्जसीलाचारे, अणज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अणज्जे णाममेगे अणज्जसीलाचारे ॥

२१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अज्जे णाममेगे अणज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अणज्जववहारे ॥

२२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे ॥

२२१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती ॥

२२२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जजाती, अज्जे णाममेगे अणज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अणज्जजाती ॥

२२३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्जभासी ॥

२२४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्जओभासी ॥

२२५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अज्जे णाममेगे अणज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अणज्जसेवी ॥

२२६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए ॥

२२७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले° ॥

२२८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभावे, अज्जे णाममेगे अणज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अणज्जभावे ।।

जाति-पदं

२२९. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, बलसंपण्णे, रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे[1], •कुलसंपण्णे, बलसंपण्णे° रूवसंपण्णे ।।

२३०. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ।।

२३१. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।।

२३२. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।।

कुल-पदं

१३३. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो

---

[1] सं० पा०—जातिसंपण्णे जाव रूवसंपण्णे ।

बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ॥

२३४. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णें णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ॥

बल-पदं

२३५. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ॥

हत्थि-पदं

२३६. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा—भद्दे, मंदे, मिए[1], संकिण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भद्दे, मंदे, मिए, संकिण्णे ॥

२३७. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा—भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिण्णमणे ॥

२३८. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा—मंदे णाममेगे भद्दमणे, मंदे णाभमेगे मंदमणे, मंदे णाममेगे मियमणे, मंदे णाममेगे संकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मंदे णाममेगे भद्दमणे, [2]°मंदे णाममेगे मंदमणे, मंदे णाममेगे मियमणे, मंदे णाममेगे संकिण्णमणे° ॥

२३९. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे, मिए णाममेगे मंदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे संकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे, [3]°मिए णाममेगे मंदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे संकिण्णमणे° ॥

---

[1] मिते (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—तं चेव ।

[3] सं० पा०—तं चेव ।

२४०. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा—संकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, संकिण्णे णाममेगे मंदमणे, संकिण्णे णाममेगे मियमणे, संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—संकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, [1]°संकिण्णे णाममेगे मंदमणे, संकिण्णे णाममेगे मियमणे°, संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे ।

संगहणी-गाहा

मधुगुलिय-पिंगलक्खो, अणुपुव्व-सुजाय-दीहणंगूलो ।
पुरओ उदग्गधीरो, सव्वंगसमाधितो भद्दो ॥१॥
चल-बहल-विसम-चम्मो, थूलसिरो[2] थूलएण पेएण ।
थूलणह-दंत-वालो, हरिपिंगल-लोयणो मंदो ॥२॥
तणुओ तणुयग्गीवो[3], तणुयतओ[4] तणुयदंत-णह-वालो ।
भीरू तत्थुव्विग्गो, तासी य भवे मिए णामं ॥३॥
एतेसिं हत्थीणं 'थोवा थोवं',[5] तु जो अणुहरति हत्थी ।
रूवेण व सीलेण व, सो संकिण्णोत्ति णायव्वो ॥४॥
भद्दो मज्जइ सरए, मंदो उण मज्जते वसंतंमि ।
मिउ मज्जति हेमंते, संकिण्णो सव्वकालंमि ॥५॥

विकहा-पदं

२४१. चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा ॥

२४२. इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थीणं जाइकहा, इत्थीणं कुलकहा, इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं णेवत्थकहा ॥

२४३. भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भत्तस्स आवावकहा[6], भत्तस्स णिव्वावकहा[7], भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स णिट्ठाणकहा[8] ॥

२४४. देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—देसविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छंदकहा. देसणेवत्थकहा ॥

२४५. रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—रण्णो अतियाणकहा[9], रण्णो णिज्जाणकहा, रण्णो बलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा ॥

---

[1] सं० पा०—तं चेव जाव संकिण्णे ।

[2] थुल्लसिरो (क, ग) ।

[3] तणुतग्गीवो (क, ख, ग) ।

[4] तणुयततो (क, ख, ग) ।

[5] थोवं थोवं (क्व) ।

[6] आवाहकहा (क, ग); अवोहकहा (ख) ।

[7] णिव्वाहकहा (क, ग); णिच्चावकहा(ख) ।

[8] णिट्ठावणकहा (क, ग) ।

[9] अतिताण° (क, ख, ग) ।

कहा-पदं

२४६. चउव्विहा कहा[1] पण्णत्ता, तं जहा—अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी[2], णिव्वेदणी[3] ।।

२४७. अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—आयारअक्खेवणी, ववहारअक्खेवणी, पण्णत्तिअक्खेवणी[4], दिट्ठिवातअक्खेवणी ।।

२४८. विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—ससमयं कहेइ ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ, परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावइता[5] भवति, सम्मावायं[6] कहेइ सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ, मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावायं ठावइता[7] भवति ।।

२४९. संवेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगसंवेयणी, परलोगसंवेयणी, आतसरीरसंवेयणी, परसरीरसंवेयणी ।।

२५०. णिव्वेदणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—

१. इहलोगे[8] दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
२. इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
३. परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
४. परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
१. इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
२. इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
३. [9]°परलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ।
४. परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति° ।।

किस-दढ-पदं

२५१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किसे णाममेगे किसे, किसे णाममेगे दढे, दढे णाममेगे किसे, दढे णाममेगे दढे ।।

२५२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किसे णाममेगे किससरीरे, किसे णाममेगे दढसरीरे, दढे णाममेगे किससरीरे, दढे णाममेगे दढसरीरे ।।

२५३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किससरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे

---

[1] धम्मकहा (क्व) ।
[2] सवेगणी (क, ख, ग) सर्वत्र ।
[3] निव्वेगणी (ख, ग) ।
[4] पन्नत्तिक्खेवणी (क, ग) ।
[5] ठावतित्ता (क, ख); ठवइत्ता (ग) ।
[6] °वातं (क, ख, ग) ।
[7] ठावतित्ता (क, ख); ठवेत्ता (ग) ।
[8] °लोग (क) ।
[9] सं० पा०—एवं चउभंगो तहेव ।

समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स, दढसरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स, एगस्स किससरीरस्सवि णाणदंसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्सवि, एगस्स णो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स ।।

अतिसेस-णाण-दंसण-पदं

२५४. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि ण समुप्पज्जेज्जा, तं जहा—

१. अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं कहेत्ता भवति ।

२. विवेगेण विउस्सग्गेणं णो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवति ।

३. पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णो धम्मजागरियं जागरइत्ता भवति ।

४. फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवेसित्ता भवति ।

इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा[1] •अस्सिं समयंसि अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि॰ णो समुप्पज्जेज्जा ।।

२५५. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा [अस्सिं समयंसि ?] अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा, तं जहा—

१. इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं णो कहेत्ता भवति ।

२. विवेगेण विउस्सगेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवति ।

३. पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरइत्ता भवति ।

४. फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसित्ता भवति ।

इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा[2] •[अस्सिं समयंसि ?] अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे॰ समुप्पज्जेज्जा ।।

सज्झाय-पदं

२५६. णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए, कत्तियपाडिवए, सुगिम्हगपाडिवए ।।

२५७. णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पढमाए[3], पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते ।।

२५८. कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउक्ककालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे ।।

लोगट्ठिति-पदं

२५९. चउव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपतिट्ठिए वाते, वातपतिट्ठिए उदधी, उदधिपतिट्ठिया पुढवी, पुढविपतिट्ठिया तसा थावरा पाणा ।।

---

[1] सं॰ पा॰—णिग्गंथीण वा जाव णो समुप्प॰।

[2] सं॰ पा॰—णिग्गंथीण वा जाव समुप्प॰ ।

[3] पढमाते (क, ख, ग) ।

पुरिस-भेद-पदं

२६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तहे णाममेगे, णोतहे णाममेगे, सोवत्थी णाममेगे, पधाणे णाममेगे ॥

आय-पर-पदं

२६१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंतकरे णाममेगे णो परंतकरे, परंतकरे णाममेगे णो आयंतकरे, एगे आयंतकरेवि परंतकरेवि, एगे णो आयंतकरे णो परंतकरे ॥

२६२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंतमे णाममेगे णो परंतमे, परंतमे णाममेगे णो आयंतमे, एगे आयंतमेवि परंतमेवि, एगे णो आयंतमे णो परंतमे ॥

२६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंदमे णाममेगे णो परंदमे, परंदमे णाममेगे णो आयंदमे, एगे आयंदमेवि परंदमेवि, एगे णो आयंदमे णो परंदमे ॥

गरहा-पदं

२६४. चउव्विहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा—उवसंपज्जामित्तेगा गरहा, वितिगिच्छामित्तेगा गरहा, जंकिंचिमिच्छामित्तेगा गरहा, एवंपि पण्णत्तेगा[1] गरहा ॥

अलमंथु-पदं

२६५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स, परस्स णाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवति परस्सवि, एगे णो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स ॥

उज्जु-वंक-पदं

२६६. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ॥

खेम-अखेम-पदं

२६७. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे ॥

२६८. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे ।

---

[1] पण्णत्ते एगा (वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे ।।

वाम-दाहिण-पदं

२६९. चत्तारि संवुक्का पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।।

२७०. चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।।

२७१. चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।।

२७२. चत्तारि वायमंडलिया पण्णत्ता, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।।

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।।

२७३. चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।।

णिग्गंथ-णिग्गंथी-पदं

२७४. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति, तं जहा—१. पंथं पुच्छमाणे वा, २. पंथं देसमाणे वा, ३. असणं वा पाणं वा

खाइमं वा साइमं वा दलेमाणे[1] वा, ४. 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा'[2] दलावेमाणे[3] वा ॥

तमुक्काय-पदं

२७५. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तमेति वा, तमुक्कातेति वा, अंधकारेति वा, महंधकारेति वा ॥

२७६. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—लोगंधगारेति वा, लोगतमसेति वा, देवंधगारेति वा, देवतमसेति वा ॥

२७७. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—वातफलिहेति[4] वा, वातफलिहखोभेति[5] वा, देवरण्णेति वा, देववूहेति वा ॥

२७८. तमुक्काते णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठति, तं जहा—सोधम्मीसाणं सणंकुमार-माहिंदं ॥

दोस-पदं

२७९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—संपागडपडिसेवी णाममेगे, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे, पडुप्पण्णणंदी[6] णाममेगे, णिस्सरणणंदी णाममेगे ॥

जय-पराजय-पदं

२८०. चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जइत्ता[7] णाममेगा णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जइत्ता णाममेगे णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगे णो जइत्ता, एगे जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगे णो जइत्ता णो पराजिणित्ता ॥

२८१. चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जइत्ता णाममेगा जयइ, जइत्ता णाममेगा पराजिणति, पराजिणित्ता णाममेगा जयइ, पराजिणित्ता णाममेगा पराजिणति ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जइत्ता णाममेगे जयइ, जइत्ता णाममेगे पराजिणति, पराजिणित्ता णाममेगे जयइ, पराजिणित्ता णाममेगे पराजिणति ॥

---

[1] दलतमाणे (क, ग); दलमाणे (ख) ।

[2] × (क, ख, ग) ।

[3] दवावेमाणे (क, ग) ।

[4] देवफलिहेति (वृपा) ।

[5] वातपरिखोभेति, देवपरिखोभेति (वृपा) ।

[6] पडुप्पन्नसेवी (वृपा) ।

[7] जतित्ता (क, ख, ग) ।

माया-पदं

२८२. चत्तारि केतणा पण्णत्ता, तं जहा—वंसीमूलकेतणए, मेंढविसाणकेतणए, गोमुत्तिकेतणए, अवलेहणियकेतणए ।

[1]एवामेव चउविधा माया पण्णत्ता, तं जहा—वंसीमूलकेतणासमाणा[2], •मेंढविसाणकेतणासमाणा, गोमुत्तिकेतणासमाणा°, अवलेहणियकेतणासमाणा ।

१. वंसीमूलकेतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति ।

२. मेंढविसाणकेतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३. गोमुत्ति[3]•केतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे° कालं करेति, मणुस्सेसु उववज्जति ।

४. अवलेहणिय[4]•केतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति°, देवेसु उववज्जति ॥

माण-पदं

२८३. चत्तारि थंभा पण्णत्ता, तं जहा—सेलथंभे, अट्ठिथंभे, दारुथंभे, तिणिसलताथंभे ।
एवामेव चउव्विधे माणे पण्णत्ते, तं जहा—सेलथंभसमाणे[5], •अट्ठिथंभसमाणे, दारुथंभसमाणे°, तिणिसलताथंभसमाणे ।

१. सेयथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति ।

२. •[6]अट्ठिथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३. दारुथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, मणुस्सेसु उववज्जति° ।

४. तिणिसलताथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, देवेसु उववज्जति ॥

लोभ-पदं

२८४. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते, खंजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते[7] ।
एवामेव चउव्विधे लोभे पण्णत्ते, तं जहा—किमिरागरत्तवत्थसमाणे, कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे, खंजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे ।

---

१. पूर्वं क्रोधमानसूत्राणि ततो मायासूत्राणि (वृपा) ।

२. सं० पा०—वंसीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेह° ।

३. सं० पा०—गोमुत्ति जाव कालं ।

४. सं० पा०—अवलेहणित जाव देवेसु ।

५. सं० पा०–सेलथंभसमाणे जाव तिणिस° ।

६. सं० पा०—एवं जाव तिणिस° ।

७. हलिद्दा° (क) ।

१. किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जइ ।

२. [1]°कद्दमरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणितेसु उववज्जइ ।

३. खंजणरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जइ° ।

४. हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जइ ।।

संसार-पदं

२८५. चउव्विहे संसारे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयसंसारे[2], °तिरिक्खजोणियसंसारे, मणुस्ससंसारे°, देवसंसारे ।।

२८६. चउव्विहे आउए[3] पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयआउए,[4] °तिरिक्खजोणियआउए, मणुस्साउए°, देवाउए ।।

२८७. चउव्विहे भवे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयभवे[5], °तिरिक्खजोणियभवे, मणुस्सभवे°, देवभवे ।।

आहार-पदं

२८८. चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे ।।

२८९. चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—उवक्खरसंपण्णे, उवक्खडसंपण्णे[6], सभावसंपण्णे, परिजुसियसंपण्णे ।।

कम्मावत्था-पदं

२९०. चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिबंधे, ठितिबंधे, अणुभावबंधे, पदेसबंधे ।।

२९१. चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे, उवसमणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे ।।

२९२. बंधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिबंधणोवक्कमे, ठितिबंधणोवक्कमे, अणुभावबंधणोवक्कमे, पदेसबंधणोवक्कमे ।।

२९३. उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिउदीरणोवक्कमे, ठितिउदीरणोवक्कमे, अणुभावउदीरणोवक्कमे, पदेसउदीरणोवक्कमे ।।

२९४. उवसामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिउवसामणोवक्कमे, ठितिउवसामणोवक्कमे, अणुभावउवसामणोवक्कमे, पदेसउवसामणोवक्कमे ।।

---

[1] सं० पा०—तहेव जाव हलिद्द° ।

[2] सं० पा०—णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे ।

[3] आउते (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—णेरतिआउते जाव देवाउते ।

[5] सं० पा० —णेरतियभवे जाव देवभवे ।

[6] नो उवक्खरसंपन्ने (वृपा) ।

२९५. विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिविप्परिणामणोवक्कमे, ठितिविप्परिणामणोवक्कमे, अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे, पएसविप्परिणामणोवक्कमे[1] ।।

२९६. चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते, तं जहा—पगतिअप्पाबहुए, ठितिअप्पाबहुए, अणुभावअप्पाबहुए, पएसअप्पाबहुए ।।

२९७. चउव्विहे संकमे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिसंकमे, ठितिसंकमे, अणभावसंकमे, पएससंकमे ।।

२९८. चउव्विहे णिधत्ते पण्णत्ते, तं जहा—पगतिणिधत्ते, ठितिणिधत्ते, अणुभावणिधत्ते, पएसणिधत्ते ।।

२९९. चउव्विहे णिगायिते पण्णत्ते, तं जहा—पगतिणिगायिते, ठितिणिगायिते, अणुभावणिगायिते, पएसणिगाथिते ।।

संखा-पदं

३००. चत्तारि एक्का पण्णत्ता, तं जहा—दविएक्कए[2], माउएक्कए[3], पज्जवेक्कए[4], संगहेक्कए[5] ।।

३०१. चत्तारि कती पण्णत्ता, तं जहा—दवितकती, माउयकती, पज्जवकती, संगहकती ।

३०२. चत्तारि सव्वा पण्णत्ता, तं जहा—णामसव्वए, ठवणसव्वए, आएससव्वए, णिरवसेससव्वए ।।

कूड-पदं

३०३. माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूडा पण्णत्ता, तं जहा—रयणे, रतणुच्चए, सव्वरयणे, रतणसंचए[6] ।।

कालचक्क-पदं

३०४. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था ।।

३०५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो[7] ।।

३०६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ ।।

---

[1] पतेस ° (क, ख, ग) ।

[2] दविए एक्कए (ग, वृपा) ।

[3] माउयएक्कते (ख) ।

[4] पज्जवेक्कगे (क); पज्जवे एक्कए (ख, ग) ।

[5] संगहे एक्कते (ख, ग) ।

[6] रतणसंचये (क, ख, ग) ।

[7] हुत्था (ख, ग) ।

अकम्मभूमी-पदं

३०७. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा – हेमवते, हेरण्णवते, हरिवरिसे[1], रम्मगवरिसे[2] ।
चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—सद्दावाती[3], वियडावाती, गंधावाती, मालवंतपरिताते ।
तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[4] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—साती, पभासे, अरुणे, पउमे ।।

महाविदेह-पदं

३०८. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा ।।

पव्वय-पदं

३०९. सव्वे वि णं णिसढणीलवंतवासहरपव्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

३१०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चित्तकूडे, पम्हकूडे[5], णलिणकूडे, एगसेले ।।

३११. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मातंजणे ।।

३१२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए

---

[1] °वस्से (ग) ।

[2] °वासे (ख); °वस्से (ग) ।

[3] ठा० २।२७४, २७५ सूत्रयोः 'सद्दावाती वियडावाती गंधावाती' पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । ठा० २।३३५ सूत्रे प्रतिषु 'सद्दावाती' तथा 'सद्दावतिवासी'—इत्थं रूपद्वयं लभ्यते । प्रस्तुतसूत्रे प्रतिषु 'सद्दावई वियडावई गंधावई' इति पाठोस्ति । 'रायपसेणइय' सूत्रे तथा 'जंबुद्दीवपण्णत्ती' सूत्रेपि प्राप्तादर्शेषु 'सद्दावई वियडावई गंधावई' पाठो लभ्यते । स्थानाङ्गवृत्तौ तथा जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ च 'शब्दापाती विकटापाती गंधापाती' इति संस्कृतरूपं कृतमस्ति । वृत्त्याधारेण 'सद्दावाती' प्रभृतिपाठस्य कल्पना जायते । 'सद्दावई' इत्यादि पाठः मृदूच्चारणार्थं कृतमथवा लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति न निश्चेतुं शक्यते, तेनास्माभिः सर्वत्रापि 'सद्दावाती' प्रभृतिपाठः स्वीकृतः ।

[4] ठा० २।२७१ ।

[5] बंभकूडे (क) ।

दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे ।।

३१३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए[1] उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चंदपव्वते, सूरपव्वते, देवपव्वते, णागपव्वते ।।

३१४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—सोमणसे, विज्जुप्पभे, गंधमायणे, मालवंते ।।

सलागा-पुरिस-पदं

३१५. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए[2] चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।।

मदर-पव्वय-पदं

३१६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा—भद्दसालवणे, णंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे ।।

३१७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंडुकंबलसिला, अइपंडुकंबलसिला, रत्तकंबलसिला, अतिरत्तकंबलसिला ।।

३१८. मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

३१९. एवं—धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धेवि कालं आदिं करेत्ता जाव[3] मंदरचूलियत्ति । एवं जाव[4] पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति ।

संगहणी-गाहा

जंबुद्दीवगआवस्सगं[5] तु कालाओ चूलिया जाव ।
धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे ।।१।।

दार-पदं

३२०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजये, वेजयंते,

---

[1] महाणतीते (क, ख, ग) ।

[2] जहण्णपते (क, ख, ग) ।

[3] ठा० ४।३०४-३१८ ।

[4] ठा० ३।१०८ ।

[5] जंबुद्दीवे० (वृपा) ।

जयंते, अपराजिते । ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावइयं[1] चेव पवेसेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[2] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—विजये, वेजयंते, जयंते, अपराजिते ॥

अंतरदीव-पदं

३२१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगूरुयदीवे[3], आभासियदीवे, वेसाणियदीवे, णंगोलियदीवे ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—एगूरुया[4], आभासिया, वेसाणिया, णंगोलिया ॥

३२२. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे, गोकण्णदीवे, सक्कुलिकण्णदीवे[5] ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विधा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा ॥

३२३. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच-पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—आयंसमुहदीवे, मेंढमुहदीवे, अओमुहदीवे, गोमुहदीवे ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणस्सा[6] °परिवसंति, तं जहा—आयंसमुहा, मेंढमुहा, अओमुहा. गोमुहा° ॥

३२४. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ-छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा— आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे, सीहमुहदीवे, वग्घमुहदोवे ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[7] °परिवसंति, तं जहा—आसमुहा, हत्थिमुहा, सीहमुहा, वग्घमुहा° ॥

३२५. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्त-सत्त जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा, पण्णत्ता, तं जहा—आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे अकण्णदीवे, कण्णपाउरणदीवे[8] ॥

---

[1] तावतितं (क, ख, ग) ।

[2] ठा० २।२७१ ।

[3] एगरूअदीवे (क, ख, ग) ।

[4] एगरूता (क, ग); एगुरूता (ख) ।

[5] संकुलि° (क्व) ।

[6] सं० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।

[7] सं० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।

[8] कन्नापाउ° (क, ग) ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[1] °परिवसंति, तं जहा—आसकण्णा, हत्थिकण्णा, अकण्णा, कण्णपाउरणा° ॥

३२६. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठट्ठ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे, विज्जुमुहदीवे, विज्जुदंतदीवे ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[2] °परिवसंति, तं जहा—उक्कामुहा, मेहमुहा, विज्जुमुहा, विज्जुदंता° ॥

३२७. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव-णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—घणदंतदीवे, लट्ठदंतदीवे, गूढदंतदीवे, सुद्धदंतदीवे ।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—घणदंता, लट्ठदंता गूढदंता, सुद्धदंता ॥

३२८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगूरुयदीवे[3], सेसं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव[4] सुद्धदंता ॥

महापायाल-पदं

३२९. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ[5] चउदिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं महतिमहालता महालंजरसंठाणसंठिता[6] चत्तारि महापायाला पण्णत्ता, तं जहा—वलयामुहे[7], केउए[8], जूवए, ईसरे ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[9] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे ॥

आवास-पव्वय-पदं

३३०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं-बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चउण्हं वेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—गोथूभे, उदओभासे[10], संखे, दगसीमे ।

---

१. सं० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।

२. सं० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।

३. एगरूय° (क, ख, ग) ।

४. ठा० ४।३२१-३२७ ।

५. वेतितंताओ (क, ख, ग) ।

६. महालिंजर° (क, ग) ।

७. वलतामुहे (क, ख, ग) ।

८. केउते (क, ख, ग) ।

९. ठा० २।२७१ ।

१०. दउयभासे (ख); उदयभासे (क्व) ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[१] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—गोथूभे, सिवए, संखे, मणोसिलाए ।।

३३१. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं-बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं[२] चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—कक्कोडए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[३] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—कक्कोडए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे ।।

जोइस-पदं

३३२. लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा । चत्तारि सूरिया[४] तविंसु[५] वा तवंति वा तविस्संति वा । चत्तारि कित्तियाओ जाव[६] चत्तारि भरणीओ ।।

३३३. चत्तारि अग्गी जाव[७] चत्तारि जमा ।।

३३४. चत्तारि अंगारा[८] जाव[९] चत्तारि भावकेऊ ।।

दार-पदं

३३५. लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजए, वेजयंते, जयंते अपराजिते । ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[१०] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, त जहा—विजए[११], वेजयंते, जयंते, अपराजिए ।।

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

३३६. धायइसंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

३३७. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं, चत्तारि एरवयाइं । एवं जहा

---

[१] ठा० २।२७१ ।

[२] °रातीणं (क, ख, ग) ।

[३] ठा० २।२७१ ।

[४] सूरिता (क, ख, ग) ।

[५] तवइंसु (वृ) ।

[६] ठा० २।३२३ ।

[७] ठा० २।३२४ ।

[८] अंगारया (क, ग) ।

[९] ठा० २।३२५ ।

[१०] ठा० २।२७१ ।

[११] विजते (क, ख, ग) ।

सद्दुद्देसए[1] तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव[2] चत्तारि मंदरा चत्तारि मंदरचूलियाओ ॥

णंदीसरवरदीव-पदं

३३८. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाल-विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते। ते णं अंजणगपव्वता चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, तदणंतरं च णं मायाए-मायाए परिहायमाणा-परिहायमाणा उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णत्ता। मूले इक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, उवरिं तिण्णि-तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसतं परिक्खेवेणं। मूले विच्छिण्णा मज्झे संखेत्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छ-संठाणसंठिता सव्वअंजणमया[3] अच्छा 'सण्हा लण्हा'[4] घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकड-च्छाया सप्पभा समिरीया[5] सउज्जोया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ॥

३३९. तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता।

तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धायतणा पण्णत्ता। ते णं सिद्धायतणा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं।

तेसि णं सिद्धायतणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—देवदारे, असुरदारे, णागदारे, सुवण्णदारे।

तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति, तं जहा—देवा, असुरा, णागा, सुवण्णा।

तेसि णं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमंडवा पण्णत्ता।

तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता।

तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता।

---

[1] शब्दोपलक्षित उद्देशकः शब्दोद्देशको द्विस्थानकस्य तृतीय इत्यर्थः (वृ)।

[2] ठा० २।३३३-३४३, ३५०।

[3] सव्वंजण ० (वृ)।

[4] 'सण्हा लण्हा' एतौ एकस्यैव शब्दस्य रूपभेदौ स्तः। श्लक्ष्णशब्दस्य 'ल्' लोपे कृते 'सण्हा' तथा 'स्' लोपे कृते 'लण्हा' इतिरूपं जायते। वृत्तिकारेणानयोः किञ्चिदर्थभेदोऽपि सूचितः,यथा—सण्हा—श्लक्ष्णपरमाणुस्कन्धनिष्पन्नाः, श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत्, लण्हा—श्लक्ष्णा मसृणा इत्यर्थः (वृ)।

[5] सस्सिरीया (क)।

तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पण्णत्ताओ ।

तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता ।

तेसि णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता ।

तेसि णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया[1] अंकुसा पण्णत्ता ।

तेसु णं वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पण्णत्ता । ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं-पत्तेयं अण्णेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिक्केहिं[2] मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता ।

तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ[3] पण्णत्ताओ ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि-चत्तारि चेइयथूभा[4] पण्णत्ता ।

तेसि णं चेइयथूभाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईओ संपलियंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहाओ चिट्ठंति, तं जहा—रिसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा ।

तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता ।

तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया[5] पण्णत्ता ।

तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ ।

तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमे णं, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं ।

संगहणी-गाहा

पुव्वे णं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं ।
अवरे णं चंपगवणं, चूतवणं उत्तरे पासे ।।१।।

३४०. तत्थ णं जे से पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स[6] णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, आणंदा, णंदिवद्धणा । ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, दसजोयणसताइं उव्वेहेणं ।

---

[1] वइरामता (क, ख, ग) ।

[2] °कुंभिकेहिं (ख, वृ) ।

[3] °पेढिताओ (क, ख, ग) ।

[4] चेतितथूभा (क, ख, ग) ।

[5] महेन्द्रा इति—अतिमहान्तः समयभाषया ते च ते ध्वजाश्चेति, अथवा महेन्द्रस्येव—शक्रादेर्ध्वजाः महेन्द्रध्वजाः (वृ) ।

[6] तत्थ (क) सर्वत्र ।

तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता।

तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमे णं, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं।

तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरतो, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं॥

संगहणी-गाहा

पुव्वे णं असोगवणं[1], °दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं।
अवरे णं चंपगवणं°, चूयवणं उत्तरे पासे॥१॥

तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दधिमुहगपव्वया पण्णत्ता। ते णं दधिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं; सव्वरयणामया अच्छा जाव[2] पडिरूवा।

तेसि णं दधिमुहगपव्वताणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता। सेसं जहेव अंजणगपव्वताणं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव[3] चूतवणं उत्तरे पासे॥

३४१. तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोंडरीगिणी[4]। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं, सेसं तं चेव जाव[5] दधिमुहगपव्वता जाव[6] वणसंडा॥

३४२. तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदिसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदंसणा। सेसं तं चेव, तहेव दधिमुहगपव्वता, तहेव सिद्धाययणा जाव[7] वणसंडा॥

३४३. तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिता। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं, सेसं तं चेव पमाणं, तहेव दधिमुहगपव्वत्ता, तहेव सिद्धाययणा जाव[8] वणसंडा॥

३४४. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाल-विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउसु

---

[1] सं० पा०—असोगवणं जाव चूयवणं।

[2] ठा० ४।३३८।

[3] ठा० ४।३३९।

[4] पोंडरगिणी (क, ग); पोंडरिगिणी (ख)।

[5,6] ठा० ४।३४०।

[7] ठा० ४।३४०।

[8] ठा० ४।३४०।

विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए। ते णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिता; दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं; सव्वरयणामया अच्छा जाव[1] पडिरूवा ॥

३४५. तत्थ णं जे से उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा। कण्हाए, कण्हराईए[2], रामाए, रामरक्खियाए ॥

३४६. तत्थ णं जे से दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स ण चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा। पउमाए, सिवाए, सतीए[3], अंजूए ॥

३४७. तत्थ णं जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ[4] चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदंसणा। अमलाए, अच्छराए, णवमियाए[5], रोहिणीए ॥

३४८. तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणा, रतणुच्चया, सव्वरतणा, रतणसंचया। वसूए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुंधराए ॥

सच्च-पदं

३४९. चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—णामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे ॥

आजीविय-तव-पदं

३५०. आजीवियाणं चउव्विहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—उग्गतवे[6], घोरतवे, रसणिज्जूहणता, जिब्भिंदियपडिसंलीणता।

---

[1] ठा० ४।३३८।

[2] कण्हरातीते (क, ख, ग)।

[3] सुतीते (क, ख, ग)।

[4] प्राग्वर्तिनोः द्वयोः सूत्रयोः केवलं 'पमाणाओ' पाठोस्ति। अत्र उत्तरवर्तिनि सूत्रे च 'पमाणमेत्ताओ' पाठोस्ति। आदर्शेषु इत्थमेव लभ्यते, तेन तथैव स्वीकृतः।

[5] णवमिताते (क, ख, ग)।

[6] उदारतवे (वृपा)।

३५१. चउव्विहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—मणसंजमे, वइसंजमे[1], कायसंजमे, उवगरणसंजमे ॥

३५२. चउव्विधे चियाए[2] पण्णत्ते, तं जहा—मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए ॥

३५३. चउव्विहा अकिंचणता पण्णत्ता, तं जहा—मणअकिंचणता, वइअकिंचणता, कायअकिंचणता, उवगरणअकिंचणता ॥

तइओ उद्देसो

कोह-पदं

३५४. चत्तारि राईओ[3] पण्णत्ताओ, तं जहा—पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई।

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे, वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे।

१. पव्वयराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जति।

२. पुढविराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति।

३. वालुयराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति।

४. उदगराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जति ॥

भाव-पदं

३५५. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—कद्दमोदए, खंजणोदए, वालुओदए, सेलोदए।

एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा—कद्दमोदगसमाणे, खंजणोदगसमाणे, वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे।

१. कद्दमोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जति।

२. [4]°खंजणोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति।

३. वालुओदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति °।

४. सेलोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जति ॥

रुत-रूव-पदं

३५६. चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, तं जहा—रुतसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे

---

[1] वति° (क, ख, ग)।

[2] चिताते (क, ख, ग)।

[3] रातीओ (क, ख, ग)।

[4] सं० पा०—एवं जाव सेलोदग°।

णाममेगे णो रुतसंपण्णे, एगे रुतसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो रुतसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रुतसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो रुतसंपण्णे, एगे रुतसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो रुतसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ॥

पत्तिय-अप्पत्तिय-पदं

३५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेति, पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तियं करेति, अप्पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेति, अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तियं करेति ॥

३५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे पत्तियं करेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तियं करेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तियं करेति णो परस्स ॥

३५९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेति, पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेति, अप्पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेति, अप्पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेति ॥

३६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे पत्तियं पवेसेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तियं पवेसेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तियं पवेसेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तियं पवेसेति णो परस्स ॥

उपकार-पदं

३६१. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवारुक्खसमाणे, पुप्फोवारुक्खसमाणे, फलोवारुक्खसमाणे, छायोवारुक्खसमाणे ॥

आसास-पदं

३६२. भारण्णं[1] वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, तं जहा—

१. जत्थ णं अंसाओ अंसं साहरइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

२. जत्थवि य णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

३. जत्थवि य णं णागकुमारावासंसि वा सुवण्णकुमारावासंसि वा वासं उवेति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

---

[1] भारूण्णं (क); भारूप्प (ग)।

४. जत्थवि य णं आवकहाए चिट्ठति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, तं जहा—
१. 'जत्थवि य णं'[1] सीलव्वत-गुणव्वत-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं पडिवज्जति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
२. जत्थवि य णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
३. जत्थवि य णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
४. जत्थवि य णं अपच्छिम-मारणंतित-संलेहणा-'झूसणा-झूसिते'[2] भत्तपाण-पडियाइक्खिते[3] पाओवगते कालमणवकंखमाणे विहरति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते॥

उदित-अत्थमित-पदं

३६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उदितोदिते णाममेगे, उदितत्थमिते णाममेगे, अत्थमितोदिते णाममेगे, अत्थमितत्थमिते णाममेगे।
भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदितोदिते, बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदितत्थमिते, हरिएसबले[4] णं अणगारे अत्थमितोदिते, काले णं सोयरिये अत्थमितत्थमिते॥

जुम्म-पदं

३६४. चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलिओए॥

३६५. णेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए॥

३६६. एवं—असुरकुमाराणं जाव[5] थणियकुमाराणं। एवं—पुढविकाइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सतिकाइयाणं बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतर-जोइसियाणं वेमाणियाणं—सव्वेसिं जहा णेरइयाणं॥

सूर-पदं

३६७. चत्तारि सूरा पण्णत्ता, तं जहा—तवसूरे, खंतिसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे।
खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे॥

---

[1] जत्थ णं से (ख)।
[2] जूसणाजूसिते (वृ)।
[3] °पडितातिक्खिते (क, ख, ग)।
[4] हरितेसबले (क, ख, ग)।
[5] ठा० १।१४३-१५०।

उच्चणीय-पदं

३६८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे, उच्चे णाममेगे णीयच्छंदे, णीए[1] णाममेगे उच्चच्छंदे, णीए णाममेगे णीयच्छंदे ॥

लेसा-पदं

३६९. असुरकुमारा चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा ॥

३७०. एवं जाव[2] थणियकुमाराणं। एवं—पुढविकाइयाणं आउ-वणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं—सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं ॥

जुत्त-अजुत्त-पदं

३७१. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते गाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्तें णाममेगे अजुत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

३७२. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णामंमेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

३७३. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३७४. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभें, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ॥

३७५. चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

---

[1] नीते (क, ख, ग)।

[2] ठा० १।१४३-१५०।

३७६. [१]°चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

३७७. चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३७८. चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ॥

सारहि-पदं

३७९. चत्तारि सारही पण्णत्ता, तं जहा—जोयावइत्ता णामं एगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जोयावइत्ता णामं एगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णामं एगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता ॥

जुत्त-अजुत्त-पदं

३८०. चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

३८१. [२]°चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा जाणेण…पुरिसजाया जाव सोभेत्ति।

२. सं० पा०—एवं जुत्तपरिणते…पुरिसजाता।

३८२. चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ।।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ।।

३८३. चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ।।

३८४. चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ।।

३८५. [1]°चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ।।

३८६. चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ।।

३८७. चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ।

एवामेवा चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ।।

पंथ-उप्पह-पदं

३८८. चत्तारि जुग्गारिता[2] पण्णत्ता, तं जहा—पंथजाई[3] णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई, एगे पंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई ।

---

[1] सं० पा०—एवं जहा हयाणं……तहेंव पुरिसजाया ।

[2] जुगारिता (ख); जुग्गायरिया (वृपा) ।

[3] °जाती (क, ख, ग) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पंथजाई णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई, एगे पंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई ।।

रूव-सील-पदं

३८९. चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो गंधसंपण्णे, गंधसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि गंधसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो गंधसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ।।

जाति-पदं

३९०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ।।

३९१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।।

३९२. [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।।

३९३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ।।

३९४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ।।

३९५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे° ।।

---

[1] सं० पा०—एवं जातीते य······जातीते य चरित्तेण य ।

कुल-पदं

३९६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।।

३९७. [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।।

३९८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ।।

३९९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि सीलसंपण्णैवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ।।

४००. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे° ।।

बल-पदं

४०१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।।

४०२. [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ।।

४०३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ।।

४०४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे° ।।

रूव-पदं

४०५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे

---

[1] सं० पा०—एवं कुलेण य…चरित्तेण य ।

[2] सं० पा०—एवं बलेण य…चरित्तेण य ।

सुयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ॥

४०६. [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ॥

४०७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे° ॥

सुय-पदं

४०८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुयसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, एगे सुयसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो सुयसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ॥

४०९. [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुयसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, एगे सुयसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो सुयसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे° ॥

सील-पदं

४१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सीलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, एगे सीलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो सीलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ॥

आयरिय-पदं

४११. चत्तारि फला पण्णत्ता, तं जहा—आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे ।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—आमलगमहुरफलसमाणे[3], °मुद्दियामहुरफलसमाणे, खीरमहुरफलसमाणे°, खंडमहुरफलसमाणे ॥

वेयावच्च-पदं

४१२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आतवेयावच्चकरे[4] णाममेगे णो परवेयावच्चकरे, परवेयावच्चकरे णाममेगे णो आतवेयावच्चकरे, एगे आतवेयावच्चकरेवि परवेयावच्चकरेवि, एगे णो आतवेयावच्चकरे णो परवेयावच्चकरे ॥

---

[1] सं० पा०—एवं रूवेण य···चरित्तेण य ।

[2] सं० पा०—एवं सुतेण य चरित्तेण य ।

[3] सं० पा०—आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुर° ।

[4] वेतावच्चकरे (क, ख, ग) ।

४१३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—करेति णाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ, पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्चं णो करेति, एगे करेतिवि वेयावच्चं पडिच्छइवि, एगे णो करेति वेयावच्चं णो पडिच्छइ ।।

अट्ठ-माण-पदं

४१४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे ।।

४१५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणट्ठकरे, एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणट्ठकरे णो माणकरे ।।

४१६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणसंगहकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसंगहकरे, एगे गणसंगहकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसंगहकरे णो माणकरे ।।

४१७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणसोभकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोभकरे, एगे गणसोभकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोभकरे णो माणकरे ।।

४१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोहिकरे, एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे ।।

धम्म-पदं

४१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं णाममेगे जहति णो धम्मं, धम्मं णाममेगे जहति णो रूवं, एगे रूवंपि जहति धम्मंपि, एगे णो रूवं जहति णो धम्मं ।

४२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मं णाममेगे जहति णो गणसंठितिं, गणसंठितिं णाममेगे जहति णो धम्मं, एगे धम्मंवि जहति गणसंठितिंवि, एगे णो धम्मं जहति णो गणसंठितिं ।।

४२१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पियधम्मे णाममेगे णो दढधम्मे, दढधम्मे णाममेगे णो पियधम्मे, एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ।।

आयरिय-पदं

४२२. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—पव्वावणारिए[1] णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणायरिए, एगे

---

[1] पव्वायणा० (क्व)।

पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिए वि, एगे णो पव्वावणायरिए णो उवट्ठावणायरिए—धम्मायरिए ॥

४२३. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णाममेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि, एगे णो उद्देसणायरिए णो वायणायरिए—धम्मायरिए ॥

अंतेवासि-पदं

४२४. चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता, तं जहा—पव्वावणंतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावणंतेवासी, उवट्ठावणंतेवासी णाममेगे णो पव्वावणंतेवासी, एगे पव्वावणंतेवासीवि उवट्ठावणंतेवासीवि, एगे णो पव्वावणंतेवासी णो उवट्ठावणंतेवासी—धम्मंतेवासी ॥

४२५. चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता, तं जहा—उद्देसणंतेवासी णाममेगे णो वायणंतेवासी, वायणंतेवासी णाममेगे णो उद्देसणंतेवासी, एगे उद्देसणंतेवासीवि वायणंतेवासीवि, एगे णो उद्देसणंतेवासी णो वायणंतेवासी—धम्मंतेवासी ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-णिग्गंथ-पदं

४२६. चत्तारि णिग्गंथा पण्णत्ता, तं जहा—

१. रातिणिए[1] समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधए[2] भवति ।

२. रातिणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए[3] आतावी समिए धम्मस्स आराहए भवति ।

३. ओमरातिणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति ।

४. ओमरातिणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिते धम्मस्स आराहए भवति ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-णिग्गंथी-पदं

४२७. चत्तारि णिग्गंथीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. रातिणिया समणी णिग्गंथी [4]°महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

२. रातिणिया समणी णिग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति ।

---

[1] रातिणिते (क, ख, ग) ।

[2] अणाराधते (क, ख, ग) ।

[3] °किरिते (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—एवं चेव ।

३. ओमरातिणिया समणी णिग्गंथो महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

४. ओमरातिणिया समणी णिग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति° ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासग-पदं

४२८. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा—

१. राइणिए समणोवासए महाकम्मे [1]°महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधए भवति ।

२. राइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिए धम्मस्स आराहए भवति ।

३. ओमराइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति ।

४. ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिते धम्मस्स आराहए भवति° ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासिया-पदं

४२९. चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. राइणिया[2] समणोवासिता महाकम्मा [3]°महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

२. राइणिया समणोवासिता अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति।

३. ओमराइणिया समणोवासिता महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

४. ओमराइणिया समणोवासिता अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति° ॥

समणोवासग-पदं

४३०. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा—अम्मापितिसमाणे, भातिसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे ॥

४३१. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा—अद्दागसमाणे, पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकंटयसमाणे[4] ॥

---

[1] सं० पा०—तहेव ।

[2] रायणिता (क) ।

[3] सं० पा०—तहेव चत्तारि गमा ।

[4] खरण्टसमाणे (वृपा) ।

४३२. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स समणोवासगाणं सोधम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

अहुणोववण्ण-देव-पदं

४३३. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज[1] माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा—

१. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ, णो परियाणाति, णो अट्ठं बंधइ, णो णियाणं[2] पगरेति, णो ठितिपगप्पं पगरेति ।

२. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति ।

३. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—इण्हिं[3] गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ।

४. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि[4] भवति, उड्ढंपि य णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसताइं हव्वमागच्छति ।

इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ।।

४३४. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा—

१. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते[5] °अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती [दिव्वे देवाणुभावे ?] लद्धे पत्ते अभिसमण्णागते, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि[6] °णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि ।

२. अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु[7] °दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते°

---

[1] इच्छेज्जा (क, ख, ग) ।

[2] णिताणं (क, ख, ग) ।

[3] इयण्हिं (ख) ।

[4] तावि (क, ख, ग) ।

[5] सं० पा०—अमुच्छिते जाव अणज्झोववण्णे ।

[6] सं० पा०—वंदामि जाव पज्जुवासामि ।

[7] सं० पा०—देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे ।

अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइदुक्कर-दुक्करकारगे, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि[1] •णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामि।

३. अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु[2] •दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ° अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मातातिवा[3] •पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा ° सुण्हाति वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं[4] पाउब्भवामि, पासंतु ता मे[5] इममेतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं [दिव्वं देवाणुभावं ?] लद्धं पत्तं अभिसमण्णागतं।

४. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु[6] •दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ° अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा सहाति[7] वा सुहीति वा सहाएति[8] वा संगइएति वा, तेसिं च णं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुते भवति—जो[9] मे पुव्विं चयति से संबोहेतव्वे। इच्चेतेहिं[10] •चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए ° संचाएति हव्वमागच्छित्तए॥

अंधयार-उज्जोयाइ-पदं

४३५. चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे[11] सिया, तं जहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे[12] वोच्छिज्जमाणे॥

४३६. चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं[13], अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु॥

४३७. [14]•चउहिं ठाणेहिं देवंधगारे सिया, तं जहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे वोच्छिज्जमाणे॥

---

[1] सं० पा०—वंदामि जाव पज्जुवासामि।

[2] सं० पा०—देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे।

[3] सं० पा०—मातातिवा जाव सुण्हाति।

[4] तेसिमंतितं (क, ख, ग)।

[5] इमे (ख, वृपा)।

[6] सं० पा०—देवलोगेसु जाव अणज्झोववण्णे।

[7] सहीति (ख, ग)।

[8] सहीएति (ख)।

[9] जं (क)।

[10] सं० पा० —इच्चेतेहिं जाव संचातेति।

[11] लोगंधारे (क)।

[12] जायतेते (ख)।

[13] पव्वतमाणेहिं (क)।

[14] सं० पा०—एवं देवंधगारे…देवकहकहते।

४३८. चउहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४३९. चउहिं ठाणेहिं देवसण्णिवाते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४०. चउहिं ठाणेहिं देवुक्कलिया[1] सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४१. चउहिं ठाणेहिं देवकहकहए सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु° ।।

४४२. चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति[2], °तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४३. एवं—सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई देवा, आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४४. चउहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४५. चउहिं ठाणेहिं देवाणं आसणाइं चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४६. चउहिं ठाणेहिं देवा सीहणायं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४७. चउहिं ठाणेहिं देवा चेलुक्खेवं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

४४८. चउहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

---

[1] देवुक्कलिताते (क)।

[2] सं० पा०—एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिता ···जायमाणेहिं जाव अरहंताणं···महिमासु।

४४९. चउहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु°, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ।।

दुहसेज्जा-पदं

४५०. चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. तत्थ[1] खलु इमा पढमा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ, णिग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[3] अरोएमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति—पढमा दुहसेज्जा ।

२. अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ[4] °अणगारियं° पव्वइए सएणं लाभेणं णो तुस्सति, परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति, परस्स लाभमासाएमाणे[5] °पीहेमाणे पत्थेमाणे° अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छइ, विणिघातमावज्जति—दोच्चा दुहसेज्जा ।

३. अहावरा तच्चा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता[6] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ[7] °पीहेति पत्थेति° अभिलसति, दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे[8] °पीहेमाणे पत्थेमाणे° अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति—तच्चा दुहसेज्जा ।

४. अहावरा चउत्था दुहसेज्जा—से णं मुंडे[9] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, तस्स णं एवं भवति—जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहण-परिमद्दण-गातब्भंग-गातुच्छोलणाइं लभामि, जप्पभिइं च णं अहं मुंडे[10] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए तप्पभिइं च णं अहं संवाहण[11] °परिमद्दण-गातब्भंग° गातुच्छोलणाइं णो लभामि । से णं संवाहण[12] °परिमद्दण-गातब्भंग° गातुच्छोलणाइं आसाएति[13] °पीहेति पत्थेति° अभिलसति,

---

[1] तं तत्थ (क, ख, ग) ।

[2] आगारातो (क, ग) ।

[3] अपतिएमाणे (ख) ।

[4] सं० पा०—अगारातो जाव पव्वतिते ।

[5] सं० पा०—आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे ।

[6] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए ।

[7] सं० पा०—आसाएइ जाव अभिलसति ।

[8] सं० पा० आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे ।

[9] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए (तिते) ।

[10] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए (तिते) ।

[11] सं० पा०—संवाहण जाव गातु° ।

[12] सं० पा०—संवाहण जाव गातु° ।

[13] सं० पा०—आसएति जाव अभिलसति ।

से णं संवाहण[1]-°परिमद्दण-गात°भंग° गातुच्छोलाणाइं आसाएमाणे[2] °पीहेमाणे पत्थेमाणे अभिलसमाणे° मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति—चउत्था दुहसेज्जा ॥

सुहसेज्जा-पदं

४५१. चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते णिव्वितिगिच्छिए णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ[3] रोएति, णिग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—पढमा सुहसेज्जा ।

२. अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा—से णं मुंडे[4] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए सएणं[5] लाभेणं तुस्सति परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेति णो अभिलसति, परस्स लाभमणासाएमाणे[6] °अपीहेमाणे अपत्थेमाणे° अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—दोच्चा सुहसेज्जा ।

३. अहावरा तच्चा सुहसेज्जा—से णं मुंडे[7] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएति[8] °णो पीहेति णो पत्थेति° णो अभिलसति, दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे[9] °अपीहेमाणे अपत्थेमाणे° अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—तच्चा सुहसेज्जा ।

४. अहावरा चउत्था सुहसेज्जा—से णं मुंडे[10] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, तस्स णं एवं भवति—जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्ठा अरोगा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पयताइं पग्गहिताइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति, किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं णो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि ?

---

[1] सं० पा०—संवाहण जाव गातु° ।

[2] सं० पा०—आसाएमाणे जाव मणं ।

[3] पतीइ (ख) ।

[4] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वतिते ।

[5] सतेणं (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे ।

[7] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए ।

[8] सं० पा०—णो आसाएति जाव णो अभिलसति ।

[9] सं० पा०—अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे ।

[10] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वतिते ।

ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं [वेयणं ?] सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?

एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति।

ममं च णं अब्भोवगमिओ[1] °वक्कमियं [वेयणं ?]° सम्मं सहमाणस्स[2] °खममाणस्स तितिक्खेमाणस्स° अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?

एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति -चउत्था सुहसेज्जा ॥

अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पदं

४५२. चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता, तं जहा—अविणीए, विगइपडिबद्धे[3], अविओसवितपाहुडे, माई ॥

४५३. चत्तारि वायणिज्जा[4] पण्णत्ता, तं जहा—विणीते, अविगतिपडिबद्धे[5], विओसवितपाहुडे[6], अमाई[7] ॥

आय-पर-पदं

४५४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आतंभरे णाममेगे णो परंभरे, परंभरे णाममेगे णो आतंभरे, एगे आतंभरेवि परंभरेवि, एगे णो आतंभरे णो परंभरे ॥

दुग्गत-सुग्गत-पदं

४५५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए ॥

४५६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णाममेगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णाममेगे सुव्वए ॥

४५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुप्पडिताणंदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडिताणंदे, सुग्गए णाममेगे दुप्पडिताणंदे, सुग्गए णाममेगे सुप्पडिताणंदे ॥

४५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी, सुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी ॥

४५९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते, सुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते ॥

---

[1] सं० पा०—अब्भोवगमिओ जाव सम्मं।

[2] सं० पा०—सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स।

[3] वीए° (क); वीई° (ख, ग)।

[4] वातणिज्जा (क)।

[5] अविती° (क, ख, ग)।

[6] वितोसवित° (क)।

[7] अमाती (क, ख, ग)।

तम-जोति-पदं

४६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमे, तमे णाममेगे जोती, जोती णाममेगे तमे, जोती णाममेगे जोती ।।

४६१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमबले, तमे णाममेगे जोतिबले, जोती णाममेगे तमबले, जोती णाममेगे जोतिबले ।।

४६२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमबलपलज्जणे[1], तमे णाममेगे जोतिबलपलज्जणे, जोती णाममेगे तमबलपलज्जणे, जोती णाममेगे जोतिबलपलज्जणे ।।

परिण्णात-अपरिण्णात-पदं

४६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातसण्णे, परिण्णातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, एगे परिण्णातकम्मेवि परिण्णातसण्णेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातसण्णे ।।

४६४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, एगे परिण्णातकम्मेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातगिहावासे ।।

४६५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता', तं जहा—परिणातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे णो परिण्णातसण्णे, एगे परिण्णातसण्णेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातसण्णे णो परिण्णातगिहावासे ।।

इहत्थ-परत्थ-पदं

४६६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—इहत्थे णाममेगे णो परत्थे, परत्थे णाममेगे णो इहत्थे, एगे इहत्थेवि परत्थेवि, एगे णो इहत्थे णो परत्थे ।।

हाणि-वुड्ढि-पदं

४६७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—एगेणं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति, एगेणं णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति ।।

आइण्ण-खलुंक-पदं

४६८. चत्तारि पकंथगा[2] पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे, आइण्णे णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइण्णे, खलुंके णाममेगे खलुंके ।

---

[1] °पज्जलणे (क, ख, ग, वृपा) ।

[2] पकंथका (क); कंथका (वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे, [१]°आइण्णे णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइण्णे, खलुंके णाममेगे खलुंके° ।।

४६९. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति[२], आइण्णे णाममेगे खलुंकताए[३] वहति, खलुंके णाममेगे आइण्णताए वहति, खलुंके णाममेगे खलुंकताए वहति ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति, आइण्णे णाममेगे खलुंकताए वहति, खलुंके णाममेगे आइण्णताए वहति, खलुंके णाममेगे खलुंकताए वहति ।।

जाति-पदं

४७०. चत्तारि पकंथगा[४] पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेग णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ।।

४७१. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।।

४७२. चत्तारि[प ?]कंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णे वि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।।

४७३. चत्तारि[प ?]कंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो जयसंपण्णे ।

---

[१] सं० पा०—चउभंगो ।

[२] विहरति (क, ख, ग, वृपा) ।

[३] खलुंकत्ताए (क, ग) ।

[४] कंथका (ख, वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो जयसंपण्णे ॥

कुल-पदं

४७४. [1]°चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ॥

४७५. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ॥

४७६. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो जयसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो जयसंपण्णे° ॥

बल-पदं

४७७. [2]°चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो, बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ॥

---

[1] सं० पा०—एवं कुलसंपण्णेण य······जयसंपण्णेण य ।

[2] सं० पा०—एवं बलसंपण्णेण य······पुरिसजाया पडिवक्खो ।

४७८. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो जयसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो जयसंपण्णे ° ।।

रूव-पदं

४७९. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो जयसंपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो जयसंपण्णे ।।

सीह-सियाल-पदं

४८०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सीहत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीयालत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीयालत्ताए विहरइ ।।

सम-पदं

४८१. चत्तारि लोगे समा पण्णत्ता, तं जहा—अपइट्ठाणे णरए, जंबुद्दीवे दीवे, पालए जाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे ।।

४८२. चत्तारि लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—सीमंतए णरए, समयक्खेत्ते, उडुविमाणे, इसीपब्भारा पुढवी ।।

बिसरीर-पदं

४८३. उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा ।।

४८४. अहोलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा—[1]°पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा ।।

४८५. तिरियलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा °।।

---

[1] सं० पा०—एवं चेव एवं तिरियलोए वि ।

सत्त-पदं

४८६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते ॥

पडिमा-पदं

४८७. चत्तारि सेज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

४८८. चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

४८९. चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

४९०. चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

सरीर-पदं

४९१. चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता, तं जहा वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ॥

४९२. चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा[1] पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए[2], तेयए[3] ॥

फुड-पदं

४९३. चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकाएणं, अधम्मत्थिकाएणं, जीवत्थिकाएणं, पुग्गलत्थिकाएणं ॥

४९४. चउहिं बादरकाएहिं[4] उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइएहिं, आउकाइएहिं, वाउकाइएहिं, वणस्सइकाइएहिं ॥

तुल्ल-पदं

४९५. चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे ॥

णो सुपस्स-पदं

४९६. चउण्हमेगं सरीरं णो सुपस्सं[5] भवइ, तं जहा—पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं, तेउकाइयाणं, वणस्सइकाइयाणं ॥

इंदियत्थ-पदं

४९७. चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति, तं जहा—सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिदियत्थे, फासिंदियत्थे ॥

---

[1] कम्ममीसगा (ख) ।

[2] आहारते (क, ख, ग) ।

[3] तेतते (क, ख, ग) ।

[4] °कातेहिं (क, ख, ग) ।

[5] पस्सं (वृ); सुपस्सं (वृपा) ।

अलोग-अगमण-पदं

४९८. चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचाएंति बहिया लोगंता गमणयाए, तं जहा—गतिअभावेणं, णिरुवग्गहयाए, लुक्खताए, लोगाणुभावेणं ।।

णात-पदं

४९९. चउव्विहे णाते पण्णत्ते, तं जहा—आहरणे, आहरणतद्देसे, आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए ।।

५००. आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुप्पण्णविणासी ।।

५०१. आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणुसिट्ठी[1], उवालंभे, पुच्छा, णिस्सावयणे ।।

५०२. आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीते, दुरुवणीते ।।

५०३. उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—तव्वत्थुते, तदण्णवत्थुते, पडिणिभे, हेतू ।।

हेउ-पदं

५०४. हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—जावए, थावए, वंसए, लूसए ।
अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे ।
अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, अत्थित्तं णत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं णत्थि सो हेऊ ।।

संखाण-पदं

५०५. चउव्विहे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं[2], ववहारे, रज्जू, रासी ।।

अंधगार-उज्जोय-पदं

५०६. अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तं जहा—णरगा, णेरइया, 'पावाइं कम्माइं'[3], असुभा पोग्गला ।।

५०७. तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं जहा—चंदा, सूरा, मणी, जोती ।।

५०८. उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं जहा—देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ।।

---

[1] अणुसट्ठे (क, ग) ।

[2] पडिकम्मं (क, ख, ग) ।

[3] पाव-कम्माइं (क, ग) ।

चउत्थो उद्देसो

पसप्पग-पदं

५०९. चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता, तं जहा—अणुप्पण्णाणं भोगाणं उप्पाएत्ता[1] एगे पसप्पए, पुव्वुप्पण्णाणं भोगाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए, अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए, पुव्वुप्पण्णाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए ।।

आहार-पदं

५१०. णेरइयाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—इंगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीतले, हिमसीतले ।।

५११. तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—कंकोवमे, बिलोवमे, पाणमंसोवमे, पुत्तमंसोवमे ।

५१२. मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे ।।

५१३. देवाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा —वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते ।।

आसीविस-पदं

५१४. चत्तारि जातिआसीविसा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे[2], मंडुक्कजातिआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे ।

विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं[3] विसट्टमाणिं करित्तए । विसए से विसट्ठताए, णो चेव णं संपत्तीए करेंसु[4] वा करेंति वा करिस्संति वा ।

मंडुक्कजातिआसीविसस्स[5] °णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?

पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं [6]°करित्तए । विसए से विसट्ठताए, णो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा° करिस्संति वा ।

उरगजाति[7] °आसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?

पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं [8]°विसपरिणयं

---

[1] उप्पायत्ता (क, ग) ।

[2] °जातीयासीविसे (क, ख, ग) सर्वत्र ।

[3] विसपरिगयं (वृपा) ।

[4] इह चैकवचनप्रक्रमेऽपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।

[5] सं० पा०—मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा ।

[6] सं० पा०—सेसं तं चेव जाव करिस्संति ।

[7] सं० पा०—उरगजाति पुच्छा ।

[8] सं० पा०—सेसं तं चेव जाव करिस्संति ।

विसट्टमाणिं करित्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा° करिस्संति वा।
मणुस्सजाति[1]°आसीविस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?
पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणतं विसट्टमाणिं करेत्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं[2] °संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा° करिस्संति वा ।।

वाहि-तिगिच्छा-पदं

५१५. चउव्विहे वाही पण्णत्ते, तं जहा—वातिए, पित्तिए, सिंभिए, सण्णिवातिए ।।

५१६. चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता, तं जहा—विज्जो, ओसधाइं, आउरे, परियारए ।।

५१७. चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता, तं जहा—आततिगिच्छए णाममेगे णो परतिगिच्छए, परतिगिच्छए णाममेगे णो आततिगिच्छए, एगे आततिगिच्छएवि परतिगिच्छएवि, एगे णो आततिगिच्छए णो परतिगिच्छए ।।

वणकर-पदं

५१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वणकरे णाममेगे णो वणपरिमासी, वणपरिमासी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणपरिमासीवि, एगे णो वणकरे णो वणपरिमासी ।।

५१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी, वणसारक्खी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसारक्खीवि, एगे णो वणकरे णो वणसारक्खी ।।

५२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वणकरे णाममेगे णो वणसंरोही[3] वणसंरोही णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसंरोहीवि, एगे णो वणकरे णो वणसंरोही।

अंतोबाहिं-पदं

५२१. चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा—अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले, बाहिंसल्ले णाममेगे णो अंतोसल्ले, एगे अंतोसल्लेवि बाहिंसल्लेवि, एगे णो अंतोसल्ले णो बाहिंसल्ले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंतोसल्ले णाममेगे णो

---

[1] सं० पा०—मणुस्सजाति पुच्छा।

[2] सं० पा०—णो चेव णं जाव करिस्संति।

[3] °सारोठी (ग)।

बाहिंसल्ले, बाहिंसल्ले णाममेगे णो अंतोसल्ले, एगे अंतोसल्लेवि बाहिंसल्लेवि, एगे णो अंतोसल्ले णो बाहिंसल्ले ।।

५२२. चत्तारि वणा पण्णता, तं जहा—अंतोदुट्ठे णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे, बाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अंतोदुट्ठे, एगे अंतोदुट्ठेवि बाहिंदुट्ठेवि, एगे णो अंतोदुट्ठे णो बाहिंदुट्ठे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंतोदुट्ठे णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे, बाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अंतोदुट्ठे, एगे अंतोदुट्ठेवि बाहिंदुट्ठेवि, एगे णो अंतोदुट्ठे णो बाहिंदुट्ठे ।।

सेयंस-पावंस-पदं

५२३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसे, सेयंसे णाममेगे पावंसे, पावंसे णाममेगे सेयंसे, पावंसे णाममेगे पावंसे ।।

५२४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए, पावंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए ।।

५२५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति मण्णति, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्ति मण्णति, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्ति मण्णति, पावंसे णाममेगे पावंसेत्ति मण्णति ।।

५२६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए मण्णति, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए मण्णति, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए मण्णति, पावंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए मण्णति ।।

आघवण-पदं

५२७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो पविभावइत्ता[1], पविभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि पविभावइत्तावि, एगे णो आघवइत्ता णो पविभावइत्ता ।।

५२८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो उंछजीविसंपण्णे, उंछजीविसंपण्णे णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि उंछजीविसंपण्णेवि, एगे णो आघवइत्ता णो उंछजीविसंपण्णे ।।

रुक्खविगुव्वणा-पदं

५२९. चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा—पवालत्ताए, पत्तत्ताए[2], पुप्फत्ताए, फलत्ताए ।।

---

[1] परि० (ग) ।

[2] पण्णत्ताए (क, ख, ग) ।

वादिसमोसरण-पदं

५३०. चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियावादी, वेणइयावादी ।।

५३१. णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी[1], °अकिरियावादी, अण्णाणियावादी° वेणइयावादी ।।

५३२. एवमसुरकुमाराणवि जाव[2] थणियकुमाराणं । एवं—विगलिंदियवज्जं जाव[3] वेमाणियाणं ।।

मेह-पदं

५३३. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता ।।

५३४. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।।

५३५. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।।

५३६. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो

---

[1] सं० पा०—किरियावादी जाव वेणइयावादी।

[3] ठा० १।१६०-१६३ ।

[2] ठा० १।१४३-१५० ।

अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी ।।

५३७. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—खेत्तवासी[1] णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी ।।

अम्म-पियर-पदं

५३८. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्ता णो णिम्मवइत्ता ।

एवामेव चत्तारि अम्मपियरो पण्णत्ता, तं जहा—जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्ता णो णिम्मवइत्ता ।।

राय-पद

५३९. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी, सव्ववासी णाममेगे णो देसवासी, एगे देसवासीवि सव्ववासीवि, एगे णो देसवासी णो सव्ववासी ।

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता, तं जहा—देसाधिवती णाममेगे णो सव्वाधिवती, सव्वाधिवती णाममेगे णो देसाधिवती, एगे देसाधिवतीवि सव्वाधिवतीवि, एगे णो देसाधिवती णो सव्वाधिवती ।।

मेह-पदं

५४०. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—पुक्खलसंवट्टते, पज्जुण्णे[2], जीमूते, जिम्मे[3] । पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेति । पज्जुण्णे णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेति । जीमूते णं महामेहे एगेणं वासेणं

---

१. खेत्तावासी (ख) ।

२. प्राप्तादर्शेषु सर्वत्रापि 'पज्जुण्णे' इति पाठो लभ्यते । भगवत्यां (१४।२१) सामान्यमेघाथ 'पज्जणणे' इति पाठो विद्यते । तमनुसृत्यात्रापि संदेहो जायते, क्वचित् लिपिदोषेण 'पज्जण्ण' शब्दस्य 'पज्जुण्ण' इति न जातम् ? किन्तु अत्र मेघस्य विशिष्टप्रकारा निर्दिष्टाः सन्ति, तेन 'पज्जुण्ण' इति पाठो पि नासंभवी ।

३. जिम्हे (क्व) ।

दसवासाइं भावेति। जिम्मे णं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेति वा ण वा भावेति ।।

आयरिय-पदं

५४१. चत्तारि करंडगा पण्णत्ता, तं जहा—सोवागकरंडए, वेसियाकरंडए, गाहावतिकरंडए, रायकरंडए।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—सोवागकरंडगसमाणे, वेसियाकरंडगसमाणे, गाहावतिकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे ।।

५४२. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरंडपरियाए, एरंडे णाममेगे सालपरियाए, एरंडे णाममेगे एरंडपरियाए।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरंडपरियाए, एरंडे णाममेगे सालपरियाए, एरंडे णाममेगे एरंडपरियाए ।।

५४३. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरंडपरिवारे, एरंडे णाममेगे सालपरिवारे, एरंडे णाममेगे एरंडपरिवारे।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरंडपरिवारे, एरंडे णाममेगे सालपरिवारे, एरंडे णाममेगे एरंडपरिवारे।

संगहणी-गाहा

सालदुममज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया।
इय सुंदरआयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे ।।१।।

एरंडमज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया।
इय सुंदरआयरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे ।।२।।

सालदुममज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया।
इय मंगुलआयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे ।।३।।

एरंडमज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया।
इय मंगुलआयरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे ।।४।।

भिक्खाग-पदं

५४४. चत्तारि मच्छा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी।

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी ।।

गोल-पदं

५४५. चत्तारि गोला पण्णत्ता, तं जहा—मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मधुसित्थगोलसमाणे, जउगोलसमाणे, दारुगोलसमाणे, मट्टियागोलसमाणे ।।

५४६. चत्तारि गोला पण्णत्ता, तं जहा—अयगोले, तउगोले, तंबगोले, सीसगोले ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अयगोलसमाणे[1], •तउगोलसमाणे, तंबगोलसमाणे°, सीसगोलसमाणे ।।

५४७. चत्तारि गोला पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णगोले, सुवण्णगोले, रयणगोले, वयरगोले ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णगोलसमाणे[2], •सुवण्णगोलसमाणे, रयणगोलसमाणे°, वयरगोलसमाणे ।।

पत्त-पदं

५४८. चत्तारि पत्ता पण्णत्ता, तं जहा—असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलंबचीरियापत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—असिपत्तसमाणे[3], •करपत्तसमाणे, खुरपत्तसमाणे°, कलंबचीरियापत्तसमाणे ।।

कड-पदं

५४९. चत्तारि कडा पण्णत्ता, तं जहा—सुंबकडे,[4] विदलकडे, चम्मकडे, कंबलकडे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुंबकडसमाणे[5], •विदलकडसमाणे, चम्मकडसमाणे,° कंबलकडसमाणे ।।

तिरिय-पदं

५५०. चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता, तं जहा—एगखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सणप्फया[6] ।।

५५१. चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता, तं जहा—चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी ।।

५५२. चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता, तं जहा—बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

---

[1] सं० पा०—अयगोलसमाणे जाव सीसगोल° ।

[2] सं० पा०—हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोल° ।

[3] सं० पा०—असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरिता° ।

[4] सुंठकडे (क, ख, ग) ।

[5] सं० पा०—सुंबकडसमाणे जाव कंबलकड° ।

[6] सणप्पदा (क); सणपदा (ग) ।

भिक्खाग-पदं

५५३. चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, तं जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता ।।

णिक्कट्ठ-अणिक्कट्ठ-पदं

५५४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे, णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठे, अणिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे, अणिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठे ।।

५५५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा, अणिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, अणिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ।।

बुध-अबुध-पदं

५५६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बुहे णाममेगे बुहे, बुहे णाममेगे अबुहे, अबुहे णाममेगे बुहे, अबुहे णाममेगे अबुहे ।।

५५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बुधे णाममेगे बुधहियए[१], बुधे णाममेगे अबुधहियए, अबुधे णाममेगे बुधहियए, अबुधे णाममेगे अबुधहियए ।।

अणुकंपग-पदं

५५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयाणुकंपए णाममेगे णो पराणुकंपए, पराणुकपए णाममेगे णो आयाणुकंपए, एगे आयाणुकंपएवि पराणुकंपएवि, एगे णो आयाणुकंपए णो पराणुकंपए ।।

संवास-पदं

५५९. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे ।।

५६०. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, देवे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

५६१. चउव्विधे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति,

---

[१] बुहवोहिए (ख)।

देवे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

५६२. चउव्विधे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, देवे णाममेगे मणुस्सीए[1] सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

५६३. चउव्विधे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

५६४. चउव्विधे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

५६५. चउव्विधे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति ।।

अवद्धंस-पदं

५६६. चउव्विहे अवद्धंसे पण्णत्ते, तं जहा—आसुरे, आभिओगे[2], संमोहे, देवकिब्बिसे ।।

५६७. चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—कोवसीलताए[3], पाहुडसीलताए, संसत्ततवोकम्मेणं णिमित्ताजीवयाए[4] ।।

५६८. चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—अत्तुक्कोसेणं, परपरिवाएणं, भूतिकम्मेणं, कोउयकरणेणं ।।

५६९. चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—उम्मग्गदेसणाए, मग्गंतराएणं, कामासंसपओगेणं, भिज्जाणियाणकरणेणं ।।

५७०. चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिब्बिसियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे ।।

---

[1] मणुस्सीहिं देवीहिं मणुस्सीहिं—एषु बहुवचनं लिपिदोषेण जातमिति संभाव्यते । एकस्मिन् आदर्शे 'मणुस्सीइ' इति लभ्यते । एकारस्य स्थाने इकारो जातः, तत् स्थाने च 'हिं' इति जातम् । पूर्वापरसूत्रेषु सर्वत्र एकवचनमेव दृश्यते ।

[2] अभिओगे (क, ख, घ) ।

[3] क्रोध° (ख); क्रोधन° (वृ) ।

[4] °जीवाते (ग) ।

पव्वज्जा-पदं

५७१. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहतोलोगपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा ।।

५७२. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहतोपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा ।।

५७३. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ओवायपव्वज्जा, अक्खातपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा[1] ।।

५७४. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तुयावइत्ता[2], पुयावइत्ता, बुआवइत्ता[3], परिपुयावइत्ता[4] ।।

५७५. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—णडखइया, भडखइया, सीहखइया, सियालखइया ।।

५७६. चउव्विहा किसी पण्णत्ता, तं जहा—वाविया, परिवाविया, णिंदिता परिणिंदिता ।

एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—वाविता, परिवाविता, णिंदिता, परिणिंदिता ।।

५७७. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धण्णपुंजितसमाणा धण्णविरल्लितसमाणा, धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टितसमाणा ।।

सण्णा-पदं

५७८. चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ।।

५७९. चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—ओमकोट्ठताए, छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं ।।

५८०. चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—हीणसत्तताए, भयवेयणिज्जस्स[5] कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं ।।

५८१. चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—चितमंससोणियथाए, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं ।।

५८२. चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—अविमुत्तयाए, लोभवेयणिज्जस्स[6] कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं ।।

---

[1] विहगपव्वज्जा (क, ख, ग, वृपा) ।

[2] उयावइत्ता (वृपा) ।

[3] मोयावइत्ता (क, ख, ग, वृपा) ।

[4] परिपूयावइत्ता (क, ग); परिवुयावइत्ता (ख, वृ) ।

[5] भयमोहणिज्जस्स (क) ।

[6] लोभमोहणिज्जस्स (क) ।

काम-पदं

५८३. चउव्विहा कामा पण्णत्ता, तं जहा—सिंगारा, कलुणा, बीभच्छा, रोद्दा। सिंगारा कामा देवाणं, कलुणा कामा मणुयाणं, बीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाणं, रोद्दा कामा णेरइयाणं ॥

उत्ताण-गंभीर-पदं

५८४. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए, गंभीरे णाममेगें उत्ताणोदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहिदए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहिदए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणहिदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरहिदए ॥

५८५. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासो, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी ॥

५८६. चत्तारि उदही पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदही, गंभीरे णाममेगे गंभीरोदही।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहियए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणहियए, गंभीरे णाममेगे गंभीरहियए ॥

५८७. चत्तारि उदही पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी ॥

तरग-पदं

५८८. चत्तारि तरगा पण्णत्ता, तं जहा—समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरति, समुद्दं तरामीतेगे गोप्पयं[१] तरति, गोप्पयं तरामीतेगे समुद्दं तरति, गोप्पयं तरामीतेगे गोप्पयं तरति ॥

---

[१] गोप्पतं (क, ख, ग) सर्वत्र।

५८९. चत्तारि तरगा पण्णत्ता, तं जहा—समुद्दं 'तरेत्ता णाममेगे'[1] समुद्दे विसीयति[2], समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति, गोप्पयं तरेत्ता णाममेगे समुद्दे विसीयति, गोप्पयं तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति ॥

पुण्ण-तुच्छ-पदं

५९०. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे ॥

५९१. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी ॥

५९२. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा -पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छे णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छे णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे ॥

५९३. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णेवि एगे पियट्ठे[3], पुण्णेवि एगे अवदले[4], तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेवि एगे अवदले ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णेवि एगे पियट्ठे, [5]°पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेवि एगे अवदले° ॥

५९४. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णेवि एगे विस्संदति, पुण्णेवि एगे णो विस्संदति, तुच्छेवि एगे विस्संदति, तुच्छेवि एगे णो विस्संदति ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णेवि एगे विस्संदति, °[6]पुण्णेवि एगे णो विस्संदति, तुच्छेवि एगे विस्संदति, तुच्छेवि एगे णो विस्संदति° ॥

चरित्त-पदं

५९५. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—भिण्णे, जज्जरिए, परिस्साई, अपरिस्साई ।

---

[1] तरामीतेगे (क) ।

[2] सीतति (क); विसीतति (ख, ग) ।

[3] पितट्ठे (क, ख, ग) ।

[4] अवद्दले (क, ख, ग) ।

[5] सं० पा०—तहेव ।

[6] सं० पा०—तहेव ।

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते, तं जहा—भिण्णे[1], °जज्जरिए, परिस्साई°, अपरिस्साई ।।

महु-विस-पदं

५९६. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—महुकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—महुकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे ।

संगहणी-गाहा

हिययमपावकलुसं, जीहाऽवि य महुरभासिणी णिच्चं ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुंभे मधुपिहाणे ।।१।।
हिययमपावकलुसं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्चं ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुंभे विसपिहाणे ।।२।।
जं हिययं कलुसमयं, जीहाऽवि य मधुरभासिणी णिच्चं ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुंभे महुपिहाणे ।।३।।
जं हिययं कलुसमयं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्चं ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुंभे विसपिहाणे ।।४।।

उवसग्ग-पदं

५९७. चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता, तं जहा—दिव्वा, माणुसा, तिरिक्खजोणिया, आयसंचेयणिज्जा[2] ।।

५९८. दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—'हासा, पाओसा,'[3] वीमंसा, पुढोवेमाता ।।

५९९. माणुसा[4] उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—हासा, पाओसा, वीमंसा, कुसीलपडिसेवणया ।।

६००. तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भया[5], पदोसा, आहारहेउं, अवच्चलेण-सारक्खणया ।।

६०१. आयसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—घट्टणता, पवडणता, थंभणता, लेसणता ।।

---

[1] सं० पा०—भिण्णे जाव अपरिस्साई ।

[2] आयसंवेय° (क) ।

[3] हास पउस (ख) ।

[4] माणुस्सा (ग) ।

[5] भता (क, ख, ग) ।

कम्म-पदं

६०२. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुभे णाममेगे सुभे, सुभे णाममेगे असुभे, असुभे णाममेगे सुभे, असुभे णाममेगे असुभे ॥

६०३. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुभे णाममेगे सुभविवागे, सुभे णाममेगे असुभविवागे, असुभे णाममेगे सुभविवागे, असुभे णाममेगे असुभविवागे ॥

६०४. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पगडीकम्मे, ठितीकम्मे, अणुभावकम्मे, पदेसकम्मे ॥

संघ-पदं

६०५. चउव्विहे संघे पण्णत्ते, तं जहा—समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ ॥

बुद्धि-पदं

६०६. चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता, तं जहा—उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया ॥

मइ-पदं

६०७. चउव्विहा मई पण्णत्ता, तं जहा—उग्गहमती, ईहामती, अवायमती, धारणामती ।

अहवा—चउव्विहा मती पण्णत्ता, तं जहा—अरंजरोदगसमाणा, वियरोदगसमाणा, सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ॥

जीव-पदं

६०८. चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा ॥

६०९. चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी, अजोगी ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसकवेयगा, अवेयगा ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी, केवलदंसणी ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—संजया, असंजया, संजयासंजया, णोसंजया णोअसंजया ॥

मित्त-अमित्त-पदं

६१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मित्ते णाममेगे मित्ते, मित्ते णाममेगे अमित्ते. अमित्ते णाममेगे मित्ते, अमित्ते णाममेगे अमित्ते ॥

६११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मित्ते णाममेगे मित्तरूवे, [1]°मित्ते णाममेगे अमित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे मित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे अमित्तरूवे°।।

मुत्त-अमुत्त-पदं

६१२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मुत्ते णाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमुत्ते, अमुत्ते णाममेगे मुत्ते, अमुत्ते णाममेगे अमुत्ते ।।

६१३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, मुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे ।।

गति-आगति-पदं

६१४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया पण्णत्ता, तं जहा—पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणे[2] णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा[3], °तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा°, देवत्ताए वा गच्छेज्जा[4] ।।

६१५. मणुस्सा चउगइआ चउआगइआ [5]°पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्से मणुस्सेसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव णं से मणुस्से मणुस्सत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा, तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा, देवत्ताए वा गच्छेज्जा° ।।

संजम-असंजम-पदं

६१६. बेइंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स चउव्विहे संजमे कज्जति, तं जहा—जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, फासामएणं दुक्खेणं असंजोगित्ता भवति ।।

६१७. बेइंदिया णं जीवा समारभमाणस्स चउविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—जिब्भामयातो सोक्खातो ववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, [6]°फासामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति° ।।

---

[1] सं० पा०—चउभंगो ।

[2] उववज्जमाणा (क्व) ।

[3] सं० पा०—णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए ।

[4] उवागच्छेज्जा (क्व) ।

[5] सं० पा०—एवं चेव मणुस्सावि ।

[6] सं० पा०—एवं चेव ।

किरिया-पदं

६१८. सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया[1], अपच्चक्खाणकिरिया ॥

६१९. सम्मद्दिट्ठियाणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—[2]॰आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया॰ ॥

६२०. एवं—विगलिंदियवज्जं जाव[3] वेमाणियाणं ॥

गुण-पदं

६२१. चउहिं ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा, तं जहा—कोहेणं, पडिणिवेसेणं, अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिणिवेसेणं ॥

६२२. चउहिं ठाणेहिं असंते[4] गुणे दीवेज्जा, तं जहा—अब्भासवत्तियं, परच्छंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं, कतपडिकतेति वा ॥

सरीर-पदं

६२३. णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं जहा—कोहेणं[5], माणेणं, मायाए, लोभेणं ॥

६२४. एवं जाव[6] वेमाणियाणं ॥

६२५. णेरइयाणं चउट्ठाणणिव्वत्तिते सरीरे[7] पण्णत्ते, तं जहा—कोहणिव्वत्तिए[8], ॰माणणिव्वत्तिए, मायाणिव्वत्तिए॰, लोभणिव्वत्तिए ॥

६२६. एवं जाव[9] वेमाणियाणं ॥

धम्म-दार-पदं

६२७. चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ॥

आउ-बंध-पदं

६२८. चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयाउयत्ताए[10] कम्मं पकरेंति, तं जहा - महारंभताए, महापरिग्गहयाए[11], पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं ॥

६२९. चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणिय[आउय ?]त्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—माइल्लताए, णियडिल्लताए, अलियवयणेणं, कूडतुलकूडमाणेणं ॥

---

१. मातावत्तिया (क, ख, ग) ।

२. सं॰ पा॰—एवं चेव ।

३. ठा॰ १।१४३-१५१, १६०-१६३ ।

४. संते (क, ख, ग, वृपा) ।

५. कोवेणं (क, ग) ।

६. ठा॰ १।१४२-१६३ ।

७. सरीरए (क) ।

८. सं॰ पा॰—कोहणिव्वत्तिए जाव लोभ॰ ।

९. ठा॰ १।१४२-१६३ ।

१०. णेरतियत्ताए (क, ख, ग, वृ); णेरइयाउयत्ताए (वृपा) ।

११. ॰परिग्गहाते (क) ।

६३०. चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्साउयत्ताए[1] कम्मं पगरेंति, तं जहा—पगतिभद्दताए, पगतिविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरिताए ॥

६३१. चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए ॥

वज्ज-णट्टआइ-पदं

६३२. चउव्विहे वज्जे पण्णत्ते, तं जहा—तते, वितते, घणे, झुसिरे ॥

६३३. चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते, तं जहा—अंचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले[2] ॥

६३४. चउव्विहे गेए पण्णत्ते, तं जहा—'उक्खित्तए, पत्तए, मंदए[3], रोविंदए'[4] ॥

६३५. चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते, तं जहा—गंथिमे, वेढिमे, पूरिमे[5], संघातिमे ॥

६३६. चउव्विहे अलंकारे पण्णत्ते, तं जहा—केसालंकारे, वत्थालंकारे, मल्लालंकारे, आभरणालंकारे ॥

६३७. चउव्विहे अभिणए पण्णत्ते, तं जहा—'दिट्ठंतिए, पाडिसुते[6], सामण्णओविणिवाइयं[7], लोगमज्झावसिते[8]'[9] ॥

---

[1] मणुस्सत्ताते (ख)।

[2] भिसोले (क, ग)।

[3] मेदए (क)।

[4] रायपसेणइयसुत्ते (११५, २८१ सूत्रयोः) क्रमशः—'उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं' 'उक्खित्तायं पायंतायं मंदायं रोइयावसाणं' पाठः प्राप्यते। तत्रापि २८१ सूत्रे प्रतिषु 'रोइंदावसाणं' पाठोऽस्ति, किन्तु वृत्तिकारेण 'रोइयावसाणं' पाठोऽस्ति व्याख्यातः। स्थानाङ्गवृत्तौ तु नास्ति व्याख्यातोसौ पाठः। स्वयं वृत्तिकारेणालेखि—नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावान्न विवृतानि।

—वृत्ति पत्र २७२।

[5] पूतिमे (क)।

[6] पाडंसुते (क, ग); पाडुंसुत्ते (क्व)।

[7] सामंतोवातणिते (क, ख, ग)।

[8] °मज्झो° (ख)।

९. रायपसेणइय (सूत्र ११७, २८१)	स्थानाङ्ग (४।६३७)	जीवाभिगम (३।२)
दिट्ठंतिय पाडंतियं सामन्नओविणिवाइयं लोगमज्झावसाणियं	दिट्ठंतिए पाडिसुते सामन्नओविणिवाइयं लोगमज्झावसिते	दिट्ठंतियं पाडिसुयं सामन्नओविणिवाइयं लोगमज्झावसाणियं

स्थानाङ्गवृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ पाठः। जीवाभिगमस्य पाठो वृत्तिमनुसृत्यास्माभिरुट्टङ्कितः। रायपसेणइयसूत्रे प्रथमवारमसौ व्याख्यातोस्ति—'दार्ष्टान्तिकम् प्रात्यन्तिकम् सामान्यतोविनिपातम् लोकमध्यावसानिकम्।'

—वृत्ति पत्र १४५।

विमाण-पदं

६३८. सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला ॥

देव-पदं

६३९. महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

गब्भ-पदं

६४०. चत्तारि दगगब्भा[1] पण्णत्ता, तं जहा—उस्सा, महिया, सीता, उसिणा ।

६४१. चत्तारि दगगब्भा[2] पण्णत्ता, तं जहा—हेमगा, अब्भसंथडा, सीतोसिणा, पंचरूविया ।

संगहणी-गाहा

माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथडा ।
सीतोसिणा उ चित्ते, वइसाहे[3] पंचरूविया ॥१॥

६४२. चत्तारि मणुस्सीगब्भा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुंसगत्ताते, बिंबत्ताए ।

संगहणी-गाहा

अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थी तत्थ पजायति ।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ जायति ॥१॥
दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे णपुंसओ ।
इत्थी-ओय[4]-समायोगे[5], बिंबं तत्थ पजायति ॥२॥

पुव्ववत्थु-पदं

६४३. उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि चलवत्थू पण्णत्ता ॥

वृत्त्यनुसारेणात्र 'सामन्नओविणिवातं' पाठो युज्यते । जीवाभिगमवृत्तावपि 'सामान्यतोविनिपातिकम्' इति व्याख्यातमस्ति । आदर्शेषु 'सामंतोवणिवाइयं' जातम् । सम्भवतः 'सामन्नओ' स्थाने 'सामन्नो' जातः, अस्यैव 'सामन्तो' रूपे परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । स्थानाङ्गे 'पाडिसुते' पाठस्तथा जीवाभिगमवृत्तौ 'प्रतिश्रुतिकम्' इति व्याख्यातोऽस्ति पाठः । एतौ द्वावपि 'रायपसेणइय' सूत्रस्य 'पाडंतिय' शब्दाद् वाचनाभेद गच्छतः ।

[1] उदग° (क) ।

[2] उदग° (क, ग) ।

[3] वतिसाहे (क, ख, ग) ।

[4] तोत (क, ख, ग) ।

[5] समातोगे (क, ख, ग) ।

कव्व-पदं

६४४. चउव्विहे कव्वे पण्णत्ते, तं जहा—गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए ॥

समुग्घात-पदं

६४५. णेरइयाणं चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाते, कसायसमुग्घाते, मारणंतियसमुग्घाते, वेउव्वियसमुग्घाते ।

६४६. एवं—वाउक्काइयाणवि ॥

चोदसपुव्वि-पदं

६४७. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवाईणं जिणो[1] [जिणाणं ?] इव अवितथं[2] वागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था ॥

वादि-पदं

६४८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिता वादिसंपया हुत्था ॥

कप्प-पदं

६४९. हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे, ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे ॥

६५०. मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे ॥

६५१. उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—आणते, पाणते, आरणे, अच्चुते ॥

समुद्द-पदं

६५२. चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता, तं जहा—लवणोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घतोदे ॥

कसाय-पदं

६५३. चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता, तं जहा—खरावत्ते, उण्णतावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते ।

---

[1] तृतीयस्थानस्य ५३४ सूत्रे 'जिणा इव' पाठो लभ्यते तथा 'ख' प्रतौ 'जिणो इव' । अत्र तु सर्वासु प्रतिषु 'जिणो इव' पाठो लभ्यते । व्याकरणदृष्ट्या उभयत्रापि 'जिणाणं इव' युज्यते ।

[2] अवितह (ख, ग) ।

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—खरावत्तसमाणे कोहे[1], उण्णतावत्तसमाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माया, आमिसावत्तसमाणे लोभे।

१. खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति।

२. [2]°उण्णतावत्तसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति।

३. गूढावत्तसमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति°।

४. आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति॥

णक्खत्त-पदं

६५४. अणुराहाणक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते॥

६५५. पुव्वासाढा[3]°णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते°॥

६५६. उत्तरासाढा[4]°णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते°॥

पावकम्म-पदं

६५७. जीवाणं चउट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा—णेरइयणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, देवणिव्वत्तिते॥

६५८. एवं[5]—उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा।
एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव॥

पोग्गल-पदं

६५९. चउपदेसिया खंधा अणंता पण्णत्ता॥

६६०. चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

६६१. चउसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

६६२. चउगुणकालगा पोग्गला अणंता जाव[6] चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

---

[1] कोवे (क, ग)।

[2] सं० पा०—उण्णत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मातमेवं चेव।

[3] पुव्वासाढे (क, ग); सं० पा०—पुव्वासाढा एवं चेव।

[4] उत्तरासाढे (क, ग); सं० पा०—उत्तरासाढा एवं चेव।

[5] ठा० ४।६५७।

[6] ठा० १।२५६।

पंचमं ठाणं

पढमो उद्देसो

महव्वय-अणुव्वय-पदं

१. पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ[1] °वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।।

२. पंचाणुव्वया पण्णत्ता, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छा-परिमाणे ।।

इंदिय-विसय-पदं

३. पंच वण्णा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा, णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला ।।

४. पंच रसा पण्णत्ता, तं जहा—तित्ता[2], °कडुया, कसाया, अंबिला°, मधुरा ।।

५. पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा ।।

६. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति, तं जहा—सद्देहिं[3], °रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं°, फासेहिं ।।

७. [4]°पंचहिं ठाणेहिं जीवा रज्जंति, तं जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं ।।

८. पंचहिं ठाणेहिं जीवा मुच्छंति, तं जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं ।।

---

[1] सं० पा०—पाणातिवायाओ जाव सव्वातो ।

[2] सं० पा०—तित्ता जाव मधुरा ।

[3] सं० पा०—सद्देहिं जाव फासेहिं ।

[4] सं० पा०—एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झोववज्जंति ।

९. पंचहिं ठाणेहिं जीवा गिज्झंति, तं जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं ।।

१०. पंचहिं ठाणेहिं जीवा अज्झोववज्जंति, तं जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं° ।।

११. पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति, तं जहा—सद्देहिं[1], °रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं°, फासेहिं ।।

१२. पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेस्साए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—सद्दा[2], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

१३. पंच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाणं हिताए सुभाए[3], °खमाए णिस्सेस्साए° आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—सद्दा[4], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

१४. पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं दुग्गतिगमणाए भवंति, तं जहा—सद्दा[5], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

१५. पंच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाणं सुग्गतिगमणाए भवंति, तं जहा—सद्दा[6], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

आसव-संवर-पदं

१६. पंचहिं ठाणेहिं जीवा दोग्गतिं गच्छंति, तं जहा—पाणातिवातेणं[7], °मुसावाएणं, अदिण्णादाणेणं, मेहुणेणं°, परिग्गहेणं ।।

१७. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोगतिं गच्छंति, तं जहा—पाणातिवातवेरमणेणं[8], °मुसावायवेरमणेणं, अदिण्णादाणवेरमणेणं, मेहुणवेरमणेणं°, परिग्गहवेरमणेणं ।।

पडिमा-पदं

१८. पंच पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वतोभद्दा, भद्दुत्तरपडिमा ।।

थावरकाय-पदं

१९. पंच थावरकाया पण्णत्ता, तं जहा—इंदे थावरकाए, बंभे थावरकाए, सिप्पे थावरकाए, सम्मती[9] थावरकाए, पायावच्चे[10] थावरकाए ।।

---

१. सं० पा०—सद्देहिं जाव फासेहिं ।

२. सं० पा०—सद्दा जाव फासा ।

३. सं० पा०–सुभाते जाव आणुगामियत्ताते ।

४,५,६. सं० पा०—सद्दा जाव फासा ।

७. सं० पा०—पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं ।

८. सं० पा०—पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गह° ।

९. सुमति (क); समुति (ग) ।

१०. पातावच्चे (क, ख, ग) ।

२०. पंच थावरकायाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—इंदे थावरकायाधिपती[१], •बंभे थावरकायाधिपती, सिप्पे थावरकायाधिपती, सम्मती थावरकायाधिपती°, पायावच्चे थावरकायाधिपती ॥

अइसेस-णाण-दंसण-पदं

२१. पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खंभाएज्जा[२], तं जहा—

१. अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा ।

२. कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा ।

३. महतिमहालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा ।

४. देवं वा महिड्ढियं[३] •महज्जुइयं महाणुभागं महायसं महाबलं° महासोक्खं[४] पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा ।

५. पुरेसु वा 'पोराणाइं उरालाइं'[५] महतिमहालयाइं महाणिहाणाइं पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं[६] पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु सिंघाडग - तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु णगर-णिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरिकंदर-संति-सेलोवट्ठावण-भवण-गिहेसु संणिक्खित्ताइ चिट्ठंति, ताइं वा पासित्ता तप्पढमताए खंभाएज्जा ।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खंभाएज्जा ॥

२२. पंचहिं ठाणेहिं केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा, तं जहा—

१. अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा ।

२. [७]•कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा ।

३. महतिमहालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा ।

४. देवं वा महिड्ढियं महज्जुइयं महाणुभागं महायसं महाबलं महासोक्खं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा ।

५. पुरेसु वा पोराणाइं उरालाइं महतिमहालयाइं महाणिहाणाइं पहीणसामियाइं

---

[१] सं० पा०—इंदे थावरकाताधिपती जाव पातावच्चे ।

[२] खभातेज्जा (क, ख, ग) सर्वत्र ।

[३] सं० पा०—महिड्ढियं जाव महासोक्खं ।

[४] महेसक्कं (क, ग); महेसक्खं (वृपा) ।

[५] पोराणाइं महंति (ख); पोराणाइं (वृ); पोराणाइं ओरालाइं (वृपा) ।

[६] पहीणसेक्काराइं (वृ); पहीणसेउयाइं(वृपा) ।

[७] सं० पा०—सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु ।

पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु णगर-णिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरिकंदर-संति-सेलोवट्ठावण° भवण-गिहेसु सण्णिक्खित्ताइं चिट्ठंति, ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा। इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं[1] °केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए° णो खंभाएज्जा॥

सरीर-पदं

२३. णेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा[2] °णीला, लोहिता, हालिद्दा°, सुक्किल्ला। तित्ता[3], °कडुया, कसाया, अंबिला°, मधुरा॥

२४. एवं—णिरंतरं जाव[4] वेमाणियाणं॥

२५. पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए[5]॥

२६. ओरालियसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा—किण्हे[6], °णीले, लोहिते, हालिद्दे°, सुक्किल्ले। तित्ते[7], °कडुए, कसाए, अंबिले°, महुरे॥

२७. "°वेउव्वियसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे॥

२८. आहारयसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे॥

२९. तेययसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे॥

३०. कम्मगसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे° ॥

३१. सव्वेवि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा॥

तित्थभेद-पदं

३२. पंचहिं ठाणेहिं पुरिम-पच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवति, तं जहा—दुआइक्खं, दुव्विभज्जं[9], दुपस्सं, दुतितिक्खं, दुरणुचरं॥

---

[1] सं० पा०—ठाणेहिं जाव णो खंभातेज्जा।

[2] सं० पा०—किण्हा जाव सुक्किल्ला।

[3] सं० पा०—तित्ता जाव मधुरा।

[4] ठा० १।१४२-१६३।

[5] कम्मते (क, ग)।

[6] सं० पा०—किण्हे जाव सुक्किल्ले।

[7] सं० पा०—तित्ते जाव महुरे।

[8] सं० पा०—एवं जाव कम्मगसरीरे।

[9] दुव्विभवं (वृपा)।

३३. पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुग्गमं भवति, तं जहा—सुआइक्खं, सुविभज्जं, सुपस्सं, सुतितिक्खं, सुरणुचरं[1] ॥

अब्भणुण्णात-पदं

३४. पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं[2] णिच्चं पसत्थाइं णिच्चमब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे ॥

३५. पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं[3] •समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे ॥

३६. पंच ठाणाइं समणेणं[4] •भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा -उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, अंतचरए, पंतचरए, लूहचरए ॥

३७. पंच ठाणाइं[5] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—अण्णातचरए, अण्णइलायचरए[6], मोणचरए, संसट्ठकप्पिए, तज्जातसंसट्ठकप्पिए ॥

३८. पंच ठाणाइं[7] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—उवणिहिए, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए, दिट्ठलाभिए, पुट्ठलाभिए ॥

३९. पंच ठाणाइं[8] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—आयंबिलिए, णिव्विइए[9], पुरिमड्ढिए[10], परिमितपिंडवातिए[11], भिण्णपिंडवातिए ॥

४०. पंच ठाणाइं[12] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं

---

[1] 'सुरनुचर' न्ति रेफप्राकृतत्वादिति (वृ) ।

[2] पूतिताइं (ग) ।

[3] सं० पा०—महावीरेणं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

[4] सं० पा०—समणेणं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

[5] सं० पा०—ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

[6] अन्नवेलचरए (वृपा) ।

७,८. सं० पा०—ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

[9] निव्विते (क, ग) ।

[10] पुरमड्ढिते (क) ।

[11] परिमितपिंडवातिते (क) ।

[12] सं० पा०—ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे ।।

४१. पंच ठाणाइं[1] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा—अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी, लूहजीवी ।।

४२. पंच ठाणाइं[2] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं अब्भणुण्णाताइं° भवंति, तं जहा—ठाणातिए, उक्कुडुआसणिए, पडिमट्ठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए ।।

४३. पंच ठाणाइं[3] •समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं अब्भणुण्णाताइं° भवंति, तं जहा—दंडायतिए, लगंडसाई, आतावए, अवाउडए[4], अकंडूयए ।।

महाणिज्जर-पदं

४४. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—अगिलाए आयरियवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए उवज्झायवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए थेरवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए तवस्सिवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए गिलाणवेयावच्चं करेमाणे ।।

४५. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—अगिलाए सेहवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए साहम्मियवेयावच्चं करेमाणे ।।

विसंभोग-पदं

४६. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मियं संभोइयं[5] विसंभोइयं[6] करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—१. सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति । २. पडिसेवित्ता णो आलोएइ । ३. आलोइत्ता णो पट्ठवेति । ४ पट्ठवेत्ता णो णिव्विसति ।

---

१. सं० पा०—ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं ।

२,३: सं० पा०—ठाणाइं जाव भवंति ।

४. अवाअडत्ते (क) ।

५. संभोतितं (क, ख, ग) ।

६. विसंभोतितं (क, ख, ग) ।

५. जाइं इमाइं थेराणं ठितिपकप्पाइं भवंति ताइं अतियंचिय-अतियंचिय पडिसेवेति, से हंदहं पडिसेवामि किं मं थेरा करेस्संति ?

पारंचित-पदं

४७. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मियं पारंचितं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—१. कुले[1] वसति कुलस्स भेदाए अब्भुट्ठिता भवति। २. गणे वसति गणस्स भेदाए अब्भुट्ठेत्ता भवति। ३. हिंसप्पेही। ४. छिद्दप्पेही। ५. अभिक्खणं-अभिक्खणं पसिणायतणाइं पउंजित्ता भवति।।

वुग्गहट्ठाण-पदं

४८. आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पउंजित्ता भवति।

२. आयरियउवज्झाए णं गणंसि आधारातिणियाए कितिकम्मं णो सम्मं पउंजित्ता भवति।

३. आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते[2] काले-काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४. आयरियउवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति।

५. आयरियउवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी[3] यावि हवइ, णो आपुच्छियचारी।।

अवुग्गहट्ठाण-पदं

४९. आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंचावुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति।

२. [4]°आयरियउवज्झाए णं गणंसि° आधारातिणिताए सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवति।

३. आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्मं अणुपवाइत्ता भवति।

४. आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवति।

५. आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणापुच्छियचारी।।

---

[1] सकुले (क, ग)।

[2] ताइं (ख)।

[3] आणाउच्छितचारी (क, ग)।

[4] सं० पा०—एवमाधारातिणिताते।

णिसिज्जा-पदं

५०. पंच णिसिज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उक्कुडुया[1], गोदोहिया, समपायपुता, पलियंका[2], अद्धपलियंका[3] ॥

अज्जवट्ठाण-पदं

५१. पंच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—साधुअज्जवं, साधुमद्दवं, साधुलाघवं, साधुखंति, साधुमुत्ती ॥

जोइसिय-पदं

५२. पंचविहा जोइसिया पण्णत्ता, तं जहा—चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, ताराओ ॥

देव-पदं

५३. पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा[4], णरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा, भावदेवा ॥

परिचारणा-पदं

५४. पंचविहा परियारणा[5] पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा[6], फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा ॥

अग्गमहिसी-पदं

५५. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काली, राती, रयणी[7], विज्जू, मेहा ॥

५६. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स[8] वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा, णिसुंभा, रंभा, णिरंभा, मदणा[9] ॥

अणिय-अणियाहिवइ-पदं

५७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए ।

---

[1] उक्कडती (क); उक्कडुती (ग) ।

[2] पुलितंका (क, ग); पलितंका (ख) ।

[3] अद्धपलितंका (क, ख, ग) ।

[4] भवित° (क, ख, ग) ।

[5] परितारणा (क, ख, ग) ।

[6] कात° (क, ख, ग) ।

[7] रतणी (क, ख, ग) ।

[8] वतिरोत° (क, ख, ग) ।

[9] मतणा (क, ख, ग) ।

दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, कुंथू[1] हत्थिराया कुंजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती, किण्णरे रधाणियाधिवती ॥

५८. बलिस्स णं वइरोणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच संगामियाणिया, पंच संगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[2], °पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए°, रधाणिए।

महद्दुमे पायत्ताणियाधिवती, महासोदामे[3] आसराया[4] पीढाणियाधिवती, मालंकारे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, महालोहिअक्खे महिसाणियाधिपती, किंपुरिसे रधाणियाधिपती ॥

५९. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[5] जाव[6] रहाणिए।

भद्दसेणे पायत्ताणियाधिपती, जसोधरे आसराया पीढाणियाधिपती, सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, णीलकंठे महिसाणियाधिपती, आणंदे रहाणियाहिवई ॥

६०. भूयाणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो पंच संगामियाणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[7] जाव[8] रहाणिए।

दक्खे पायत्ताणियाहिवई, सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई, सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, सेयकंठे महिसाणियाहिवई, णंदुत्तरे रहाणियाहिवई ॥

६१. वेणुदेवस्स णं सुवण्णिंदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पंच संगामियाणिया, पंच संगामियाणियाहिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[9]। एवं जधा धरणस्स[10] तधा वेणुदेवस्सवि। वेणुदालियस्स जहा भूताणंदस्स[11] ॥

६२. जधा धरणस्स[12] तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[13] घोसस्स ॥

६३. जधा भूताणंदस्स[14] तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[15] महाघोसस्स ॥

---

[1] वेकुंथू (क, ग)।

[2] सं० पा०—पायत्ताणिते जाव रधाणिते।

[3] °सोतासे (क, ग)।

[4] आसराता (क, ख, ग)।

[5] पत्ताणीएते (क)।

[6] ठा० ५।५७।

[7] पत्ताणीएते (क)।

[8] ठा० ५।५७।

[9] पत्ताणीएते (क)।

[10] ठा० ५।५९।

[11] ठा० ५।६०।

[12] ठा० ५।५९।

[13] ठा० २।३५६-३६१।

[14] ठा० ५।६०।

[15] ठा० २।३५६-३६१।

६४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[1], •पीढाणिए, कुंजराणिए,॰ उसभाणिए, रधाणिए।

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिवती, वाऊ आसराया पीढाणियाधिवती, एरावणे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, दामड्ढी उसभाणियाधिपती, माढरे रधाणियाधिपती ॥

६५. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया जाव[2] पायत्ताणिए[3], पीढाणिए, कुंजराणिए, उसभाणिए, रधाणिए।

लहुपरक्कमे पायत्ताणियाधिवती, महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवती, पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवती, महादामड्ढी उसभाणियाहिवती, महामाढरे रधाणियाहिवती ॥

६६. जधा सक्कस्स[4] तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[5] आरणस्स ॥

६७. जधा ईसाणस्स[6] तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[7] अच्चुतस्स ॥

देवठिति-पदं

६८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

६९. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

पडिहा-पदं

७०. पंचविहा पडिहा[8] पण्णत्ता, तं जहा—गतिपडिहा, ठितिपडिहा, बंधणपडिहा, भोगपडिहा, बल-वीरिय-पुरिसयार-परक्कमपडिहा ॥

आजीव-पदं

७१. पंचविधे आजीवे पण्णत्ते, तं जहा—जातिआजीवे, कुलाजीवे, कम्माजीवे, सिप्पाजीवे, लिंगाजीवे[9] ॥

---

[1] पत्ताणीएते (क); सं० पा०—पायत्ताणिते जाव उसभाणिते।

[2] ठा० ५।५७।

[3] पत्ताणीएते (क)।

[4] ठा० ५।६४।

[5] ठा० २।३८१-३८४।

[6] ठा० ५।६५।

[7] ठा० २।३८१-३८४।

[8] 'पडिह' त्ति प्राकृतत्वात् 'उप्पा' इत्यादिवत्-प्रतिघातः (वृ)।

[9] गणाजीवे (वृपा)।

राय-चिंध-पदं

७२. पंच[1] रायककुधा[2] पण्णत्ता, तं जहा—खग्गं, छत्तं, उप्फेसं[3], पाणहाओ[4], वालवीअणी[5] ।।

उदिण्ण-परिस्सहोवसग्ग-पदं

७३. पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिण्णे[6] परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, तं जहा—

१. उदिण्णकम्मे[7] खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूते । तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ[8] वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा अवहरति वा ।

२. जक्खाइट्ठे[9] खलु अयं पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [10]°अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

३. ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे[11] भवति । तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [12]°अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

४. ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणधियासमाणस्स[13] किं मण्णे कज्जति ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति ।

---

[1] अनन्तरं साधूनां रजोहरणादिकं लिङ्गमुक्तम्, अधुना खड्गादिरूपं राज्ञां तदेवाह—'पंच रायककुभा' इत्यादि (वृ० प० २८९) अनेन वृत्त्युल्लेखेन ज्ञायते प्रस्तुतसूत्रात् पूर्वं वृत्तिकारस्य सम्मुखीनेष्वादर्शेषु निर्दिष्टं सूत्रमासीत् सांप्रतिकेष्वादर्शेषु तन्नोपलभ्यते । वस्त्र-रजोहरणसूत्रे अतोग्रे (१९०-१९१) लभ्येते ।

[2] रात° (क, ख, ग) ।

[3] उप्फेसि (क, ग) ।

[4] उपाणहाओ (ख) ।

[5] बालवीयणि (क, ग); बालवीयणे (ख) ।

[6] अदिन्ने (क) ।

[7] ओयन्नकम्मे (क) ।

[8] उवद्दवेइ (वृ) ।

[9] जक्खातिट्ठे (क, ख, ग) ।

[10] सं० पा०—तहेव जाव अवहरति ।

[11] उतिन्ने (क, ग) ।

[12] सं० पा०—तहेव जाव अवहरति ।

[13] अणधितास° (क, ख, ग) ।

५. ममं च णं सम्मं सहमाणस्स[1] °खममाणस्स तितिक्खमाणस्स° अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ? एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति ।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा[2] °खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा ।।

७४. पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा[3] °खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा, तं जहा—

१. खित्तचित्ते खलु अयं[4] पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [5]°अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

२. दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे[6] °अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

३. जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे[7] °अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

४. ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवति । तेण मे एस पुरिसे[8] °अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिंदति वा° अवहरति वा ।

५. ममं च णं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं[9] अहियासेमाणं पासेत्ता बहवे अण्णे छउमत्था समणा णिग्गंथा उदिण्णे-उदिण्णे परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति[10] °खमिस्संति तितिक्खिस्संति° अहियासिस्संति ।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा[11] °खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा ।।

---

[1] सं० पा०—सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स ।

[2,3] सं० पा०—सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ।

[4] अतं (क, ख, ग) ।

[5] सं० पा०—तहेव जाव अवहरति ।

[6,7,8] सं० पा०—पुरिसे जाव अवहरति ।

[9] तितिक्खेमाणं (क, ग) ।

[10] सं० पा०—सहिस्संति जाव अहियासिस्संति ।

[11] सं० पा०—सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ।

हेउ-पदं

७५. पंच[1] हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं ण जाणति, हेउं ण पासति, हेउं ण बुज्झति, हेउं णाभिगच्छति, हेउं अण्णाणमरणं मरति ॥

७६. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउणा ण जाणति[2], °हेउणा ण पासति, हेउणा ण बुज्झति, हेउणा णाभिगच्छति°, हेउणा अण्णाणमरणं मरति ॥

७७. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं जाणइ[3], °हेउं पासइ, हेउं बुज्झइ, हेउं अभिगच्छइ°, हेउं छउमत्थमरणं मरति ॥

७८. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउणा जाणइ[4]°, हेउणा पासइ, हेउणा बुज्झइ, हेउणा अभिगच्छइ°, हेउणा छउमत्थमरणं मरइ ॥

अहेउ-पदं

७९. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउं ण जाणति[5], °अहेउं ण पासति, अहेउं ण बुज्झति, अहेउं णाभिगच्छति°, अहेउं छउमत्थमरणं मरति ॥

८०. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउणा ण जाणति[6], °अहेउणा ण पासति, अहेउणा ण बुज्झति, अहेउणा णाभिगच्छति°, अहेउणा छउमत्थमरणं मरति ॥

८१. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउं जाणति[7], °अहेउं पासति, अहेउं बुज्झति, अहेउं अभिगच्छति°, अहेउं केवलिमरणं मरति ॥

८२. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउणा जाणति[8], °अहेउणा पासति, अहेउणा बुज्झति, अहेउणा अभिगच्छति,° अहेउणा केवलिमरणं मरति ॥

अणुत्तर-पदं

८३. केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा—अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए ॥

पंच-कल्लाण-पदं

८४. पउमप्पहे णं अरहा पंचचित्ते[9] हुत्था, तं जहा—१. चित्ताहिं[10] चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते । २. चित्ताहिं जाते । ३. चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं

---

[1] भगवती पंचमशतकस्य सप्तमोद्देशे एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।

[2] सं० पा०—जाणति जाव हेउणा ।

[3] सं० पा०—जाणइ जाव हेउं ।

[4] सं० पा०—जाणइ जाव हेउणा ।

[5] सं० पा०—जाणति जाव अहेउं ।

[6] सं० पा०—जाणति जाव अहेउणा ।

[7] सं० पा०—जाणति जाव अहेउं ।

[8] सं० पा०—जाणति जाव अहेउणा ।

[9] °चित्ता (क, ग) ।

[10] चित्राभिरिति रूढ्या बहुवचनम् (वृ) ।

पव्वइए। ४. चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे। ५. चित्ताहिं परिणिव्वुते ॥

८५. पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, तं जहा—मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[1] ॥

८६. [2]°सीयले णं अरहा पंचपुव्वासाढे हुत्था, तं जहा—पुव्वासाढाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[3] ॥

८७. विमले णं अरहा पंचउत्तराभद्दवए हुत्था, तं जहा—उत्तराभद्दवयाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[4] ॥

८८. अणंते णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[5] ॥

८९. धम्मे णं अरहा पंचपूसे हुत्था, तं जहा—पूसेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[6] ॥

९०. संती णं अरहा पंचभरणीए हुत्था, तं जहा—भरणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[7] ॥

९१. कुंथू णं अरहा पंचकत्तिए हुत्था, तं जहा—कत्तियाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[8] ॥

९२. अरे णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[9] ॥

९३. मुणिसुव्वए णं अरहा पंचसवणे हुत्था, तं जहा—सवणेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[10] ॥

९४. णमी णं अरहा पंचआसिणीए[11] हुत्था, तं जहा—आसिणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[12] ॥

९५. णेमी णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा—चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[13] ॥

९६. पासे णं अरहा पंचविसाहे हुत्था, तं जहा—विसाहाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[14]° ॥

९७. समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था, तं जहा—१. हत्थुत्तराहिं चुते चइत्ता

---

१. पू०—ठा० ५।८४।

२. सं० पा०—एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो—

पउमप्पभस्स चित्ता,
मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स।
पुव्वाइं आसाढा,
सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ॥१॥
रेवतित अणंतजिणो,
पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी।
कुंथुस्स कत्तियाओ,
अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो,
आसिणि णमिणो य णेमिणो चित्ता।
पासस्स विसाहाओ,
पंच य हत्थुत्तरे वीरो ॥३॥

३. पू०—ठा० ५।८४।

४-१०. पू०—ठा० ५।८४।

११. °असिणिए (क, ग)।

१२-१४. पू०—ठा० ५।८४।

गब्भं वक्कंते। २. हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिते। ३. हत्थुत्तराहिं जाते। ४. हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता[१] °अगाराओ अणगारितं° पव्वइए। ५. हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे[२] °णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे।।

बीओ उद्देसो

महाणदी-उत्तरण-पदं

९८. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ[३] वियंजियाओ[४] पंच महण्णवाओ महाणदीओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए[५] वा संतरित्तए वा, तं जहा—गंगा, जउणा, सरऊ, एरावती, मही।

पंचहिं ठाणेहिं कप्पति, तं जहा—१. भयंसि[६] वा, २. दुब्भिक्खंसि वा, ३. पव्वहेज्ज वा णं कोई, ४. दओघंसि[७] वा एज्जमाणंसि महता वा, ५. अणारिएसु।।

पढमपाउस-पदं

९९. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए[८]। पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं जहा—१. भयंसि वा, २. दुब्भिक्खंसि वा[९], ३. °पव्वहेज्ज वा णं कोई, ४. दओघंसि वा एज्जमाणंसि° महता वा, ५. अणारिएहिं।।

वासावास-पदं

१००. वासावासं पज्जोसविताणं णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा गामाणुगामं दूइज्जित्तए।

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं जहा—१. णाणट्ठयाए, २. दंसणट्ठयाए, ३. चरित्तट्ठयाए, ४. आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा, ५. आयरिय-उवज्झायाण वा बहिता वेआवच्चकरणयाए।।

अणुग्घातिय-पदं

१०१. पंच अणुग्घातिया[१०] पण्णत्ता, तं जहा—हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं पडिसेवेमाणे, रातीभोयणं भुंजेमाणे, सागारियपिंडं भुंजेमाणे, रायपिंडं भुंजेमाणे।।

---

१. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए।

२. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवलवर°।

३. × (क, ग)।

४. वितंजितातो (क, ख, ग)।

५. उत्तरित्ते (क, ग)।

६. भतंसि (क)।

७. उदओघंसि (ख)।

८. दूतिज्जते (क, ग)।

९. सं० पा०—दुब्भिक्खंसि वा जाव महता।

१०. °ग्घातिमा (३।४७१)।

रायंतेउर-पवेस-पदं

१०२. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे रायंतेउरमणुपविसमाणे णाइक्कमति, तं जहा—

१. णगरे सिया सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, बहवे समणमाहणा णो संचाएंति भत्ताए वा पाणाए वा णिक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तेसिं विण्णवणट्ठयाए रायंतेउरमणुपविसेज्जा।

२. पाडिहारियं वा पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपविसेज्जा।

३. हयस्स[1] वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपविसेज्जा।

४. परो व णं सहसा वा बलसा वा बाहाए गहाय रायंतेउरमणुपवेसेज्जा।

५. बहिता व णं आरामगयं वा उज्जाणगयं वा रायंतेउरजणो सव्वतो समंता संपरिक्खिवित्ता णं सण्णिवेसिज्जा[2]।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे[3] °रायंतेउरमणुपविसमाणे° णातिक्कमइ॥

गब्भधरण-पदं

१०३. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं धरेज्जा, तं जहा—

१. इत्थी दुव्वियडा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अधिट्ठिज्जा। २. सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अंतो जोणीए अणुपवेसेज्जा। ३. सइं वा से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा। ४. परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा। ५. सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा—इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं[4] °इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं° धरेज्जा॥

१०४. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा, तं जहा—

१. अप्पत्तजोव्वणा। २. अतिकंतजोव्वणा। ३. जातिवंझा। ४. गेलण्णपुट्ठा। ५. दोमणंसिया—इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं[5] °इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं° णो धरेज्जा॥

१०५. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि णो गब्भं धरेज्जा, तं जहा—

१. णिच्चोउया, २. अणोउया। ३. वावण्णसोया। ४. वाविद्धसोया। ५. अणंगपडिसेवणी—इच्चेतेहिं[6] °पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं° णो धरेज्जा॥

---

[1] हतस्स (क, ख, ग)।

[2] निवेसिज्जा (ख, ग)।

[3] सं० पा०—णिग्गंथे जाव णातिक्कमइ।

[4] सं० पा०—ठाणेहिं जाव धरेज्जा।

[5] सं० पा०—ठाणेहिं जाव णो धरेज्जा।

[6] सं० पा०—इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा।

१०६. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा, तं जहा—
१. उउंमि[1] णो णिगामपडिसेविणी यावि[2] भवति । २. समागता वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसंति । ३. उदिण्णे वा से पित्तसोणिते । ४. पुरा वा देवकम्मणा । ५. पुत्तफले वा णो णिव्विट्ठे[3] भवति—इच्चेतेहिं[4] °पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं° णो धरेज्जा ।।

णिग्गंथ-णिग्गंथी-एगओवास-पदं

१०७. पंचहिं ठाणेहिं णिग्गंथा णिग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति, तं जहा—

१. अत्थेगइया णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य एगं महं अगामियं छिण्णावायं दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा, तत्थेगयतो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति ।

२. अत्थेगइया णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य गामंसि वा णगरंसि वा[5] °खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा णिगमंसि वा आसमंसि वा सण्णिवेसंसि वा° रायहाणिंसि वा वासं उवागता, एगतिया जत्थ उवस्सयं लभंति, एगतिया णो लभंति, तत्थेगतो[6] ठाणं वा[7] °सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा° णातिक्कमंति ।

३. अत्थेगइया णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य णागकुमारावासंसि वा 'सुवण्णकुमारावासंसि वा'[8] वासं उवागता, तत्थेगओ[9] °ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा° णातिक्कमंति ।

४. आमोसगा दीसंति, ते इच्छंति णिग्गंथीओ चीवरपडियाए पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाणं वा[10] °सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा° णातिक्कमंति ।

५. जुवाणा दीसंति, ते इच्छंति णिग्गंथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाणं वा[11] °सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा° णातिक्कमंति ।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं[12] °णिग्गंथा णिग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणा° णातिक्कमंति ।।

---

१. अउंमि (क) ।
२. तावि (क, ख, ग) ।
३. निविट्ठे (ख) ।
४. सं० पा०—इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा ।
५. सं० पा०—णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि ।
६. तत्थेगतिता (क); तत्थगतिता (ग) ।
७. सं० पा०—ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ।
८. × (ख, ग) ।
९. °गतिओ (क, ग); °गयाओ (ख); सं० पा०—तत्थेगओ जाव णातिक्कमंति ।
१०,११. सं०पा०—ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ।
१२. सं० पा०—ठाणेहिं जाव णातिक्कमंति ।

१०८. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति, तं जहा—

१. खित्तचित्ते[1] समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति।

२. [2]°दित्तचित्ते[3] समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति।

३. जक्खाइट्ठे समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति।

४. उम्मायपत्ते समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति °।

५. णिग्गंथीपव्वाइयए समणे णिग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति॥

आसव-संवर-पदं

१०९. पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा—मिच्छत्तं, अविरती, पमादो, कसाया[4], जोगा॥

११०. पंच संवरदारा पण्णत्ता, तं जहा—संमत्तं, विरती, अपमादो, अकसाइत्तं अजोगित्तं॥

दंड-पदं

१११. पंच दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकस्मादंडे[5], दिट्ठीविप्परियासियादंडे॥

किरिया-पदं

११२. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया[6], अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया॥

११३. मिच्छादिट्ठियाणं णेरइयाणं पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा[7]—°आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादंसणवत्तिया॥

---

[1] खेत्तइत्ते (क, ख, ग)।

[2] सं० पा०—एवमेतेणं गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते।

[3] दित्ततित्ते (क, ख, ग)।

[4] कसाता (क, ख, ग)।

[5] अकम्हा° (ख)।

[6] मातावत्तिता (क, ख, ग)।

[7] सं० पा०—तंजहा जाव मिच्छादंसणवत्तिया।

११४. एव—सव्वेसिं णिरंतरं जाव[1] मिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं, णवरं—विगलिंदिया मिच्छद्दिट्ठी ण भण्णंति। सेसं तहेव॥

११५. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया[2], आहिगरणिया, पाओसिया[3], पारितावणिया, पाणातिवातकिरिया॥

११६. णेरइयाणं पंच एवं चेव। एवं—णिरंतरं जाव[4] वेमाणियाणं॥

११७. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया[5], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादंसणवत्तिया॥

११८. णेरइयाणं पंच किरिया णिरंतरं जाव[6] वेमाणियाणं॥

११९. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—दिट्ठिया, पुट्ठिया, पाडुच्चिया[7], सामंतोवणिवाइया, साहत्थिया[8]॥

१२०. एवं णेरइयाणं जाव[9] वेमाणियाणं॥

१२१. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णेसत्थिया, आणवणिया, वेयारणिया, अणाभोगवत्तिया, अणवकंखवत्तिया। एवं जाव[10] वेमाणियाणं॥

१२२. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पेज्जवत्तिया, दोसवत्तिया, पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, ईरियावहिया। एवं—मणुस्साणवि। सेसाणं णत्थि॥

परिण्णा-पदं

१२३. पंचविहा परिण्णा पण्णत्ता, तं जहा—उवहिपरिण्णा, उवस्सयपरिण्णा, कसायपरिण्णा, जोगपरिण्णा, भत्तपाणपरिण्णा॥

ववहार-पदं

१२४. पंचविहे[11] ववहारे पण्णत्ते, तं जहा—आगमे, सुते, आणा, धारणा, जीते।
जहा से तत्थ आगमे सिया, आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुते सिया, सुतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो से तत्थ सुते सिया [12]°जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

---

[1] ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३।
[2] कातिता (क, ख, ग)।
[3] पातोसिता (क, ख, ग)।
[4] ठा० १।१४२-१६३।
[5] सं० पा०—आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता।
[6] ठा० १।१४२-१६३।
[7] पाडोच्चिता (क, ख, ग)।
[8] सोहत्थिता (ग)।
[9,10] ठा० १।१४२-१६३।
[11] तुलना—भगवती ८।३०१; व्यवहार १०।
[12] सं० पा०—एवं जाव जहा से।

णो से तत्थ धारणा सिया° जहा से तत्थ जीते सिया, जीतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।

इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा—आगमेणं[1] °सुतेणं आणाए धारणाए° जीतेणं ।

जधा-जधा से तत्थ आगमे[2] °सुते आणा धारणा° जीते तधा-तधा ववहारं पट्ठवेज्जा ।

से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा णिग्गंथा ?

इच्चेतं पंचविधं ववहारं जया[3]-जया जहिं-जहिं तया[4]-तया तहिं-तहिं अणिस्सितोवस्सितं[5] सम्मं ववहरमाणे समणे णिग्गंथे आणाए आराधए भवति ।।

सुत्त-जागर-पदं

१२५. संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा[6], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

१२६. संजतमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पण्णत्ता, तं जहा- सद्दा[7], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

१२७. असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा जागराणं वा पंच जागरा पण्णत्ता, तं जहा— सद्दा[8], °रूवा, गंधा, रसा°, फासा ।।

रयादाण-वमण-पदं

१२८. पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आदिज्जंति, तं जहा—पाणातिवातेणं[9], °मुसावाएणं, अदिण्णादाणेणं, मेहुणेणं°, परिग्गहेणं ।।

१२९. पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंति, तं जहा - पाणातिवातवेरमणेणं[10], मुसावायवेरमणेणं, अदिण्णादाणवेरमणेणं, मेहुणवेरमणेणं°, परिग्गहवेरमणेणं ।।

दत्ति-पदं

१३०. पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए, पंच पाणगस्स ।।

उवघात-विसोहि-पदं

१३१. पंचविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते, परिहरणोवघाते ।।

---

१. सं० पा०—आगमेणं जाव जीतेणं ।

२. सं० पा०—आगमे जाव जीते ।

३. जता (क, ख, ग) ।

४. तता (क, ख, ग) ।

५. अणिस्सातो° (क, ग) ।

६,७,८. सं० पा०—सद्दा जाव फासा ।

९. सं० पा०—पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं ।

१०. सं० पा०—पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गह° ।

१३२. पंचविहा विसोही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही ।।

दुल्लभ-सुलभबोहि-पदं

१३३. पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणं अवण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे, विवक्क[1]-तव-बंभचेराणं देवाणं अवण्णं वदमाणे ।।

१३४. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा—अरहंताणं वण्णं वदमाणे[2], °अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स वण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणं वण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स वण्णं वदमाणे°, विवक्क[3]-तव-बंभचेराणं देवाणं वण्णं वदमाणे ।।

पडिसंलीण-अपडिसंलीण-पदं

१३५. पंच पडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियपडिसंलीणे[4], °चक्खिंदियपडिसंलीणे, घाणिंदियपडिसंलीणे, जिब्भिंदियपडिसंलीणे°, फासिंदियपडिसंलीणे ।।

१३६. पंच अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियअपडिसंलीणे[5], °चक्खिंदियअपडिसंलीणे, घाणिंदियअपडिसंलीणे, जिब्भिंदियअपडिसंलीणे°, फासिंदियअपडिसंलीणे ।।

संवर-असंवर-पदं

१३७. पंचविधे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियसंवरे[6], °चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे°, फासिंदियसंवरे ।।

१३८. पंचविधे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे[7], °चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे°, फासिंदियअसंवरे ।।

संजम-असंजम-पदं

१३९. पंचविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइयसंजमे[8], छेदोवट्ठावणियसंजमे, परिहारविसुद्धियसंजमे[9], सुहुमसंपरागसंजमे, अहक्खायचरित्तसंजमे ।।

---

[1] विविक्क (ख) ।

[2] सं० पा०—वदमाणे जाव विवक्कतव° ।

[3] विविक्क (ख) ।

[4] सं० पा०—सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदिय° ।

[5] सं० पा०—सोतिंदियअपडिसंलीणे जाव फासिंदिय° ।

[6] सं० पा०—सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय° ।

[7] सं० पा०—सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदिय° ।

[8] सामातिते (क, ख, ग) ।

[9] °विसुद्धित° (क, ख, ग) ।

१४०. एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे[1], °आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे°, वणस्सतिकाइयसंजमे ॥

१४१. एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे[2], °आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे°, वणस्सतिकाइयअसंजमे ॥

१४२. पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियसंजमे[3], °चक्खिदियसंजमे, घाणिंदियसंजमे, जिब्भिदियसंजमे°, फासिंदियसंजमे ॥

१४३. पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियअसंजमे[4], °चक्खिदियअसंजमे, घाणिंदियअसंजमे, जिब्भिदियअसंजमे°, फासिंदियअसंजमे ॥

१४४. सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियसंजमे[5], °बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे°, पंचिंदियसंजमे ॥

१४५. सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियअसंजमे[6], °बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे°, पंचिंदियअसंजमे ॥

तणवणस्सइ-पदं

१४६. पंचविहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा ॥

आयार-पदं

१४७. पंचविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे ॥

आयारपकप्प-पदं

१४८. पंचविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, तं जहा—मासिए उग्घातिए, मासिए अणुग्घातिए, चउमासिए उग्घातिए, चउमासिए अणुग्घातिए, आरोवणा ॥

---

१. सं० पा०—पुढविकातियसंजमे जाव वणस्सति° ।

२. सं० पा०—पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सति° ।

३. सं० पा०—सोतिंदियसंजमे जाव फासिंदिय° ।

४. सं० पा०—सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदिय° ।

५. सं० पा०—एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदिय° ।

६. सं० पा०—एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदिय° ।

आरोवणा-पदं

१४९. आरोवणा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा[1], हाडहडा ॥

वक्खारपव्वय--पदं

१५०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महाणदीए उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—मालवंते, चित्तकूडे, 'पम्हकूडे, णलिणकूडे'[2], एगसेले ॥

१५१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महाणदीए दाहिणे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे, सोमणसे ॥

१५२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए दाहिणे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—विज्जुप्पभे, अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे ॥

१५३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए[3] महाणदीए उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते, गंधमादणे ॥

महादह-पदं

१५४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा—णिसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे ॥

१५५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं उत्तरकुराए कुराए पंच महादहा पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंतदहे, उत्तरकुरुदहे, चंददहे, एरावणदहे, मालवंतदहे ॥

वक्खारपव्वय-पदं

१५६. सव्वेवि णं वक्खारपव्वया सीया-सीओयाओ महाणईओ 'मंदरं वा पव्वतं'[4] पंच जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंचगाउसताइं उव्वेहेणं ॥

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

१५७. धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महाणदीए

---

[1] अकसिणा जाव (क, ग)।

[2] बंभकूडे पम्हकूडे (क, ग)।

[3] सीतोताते (क, ख, ग)।

[4] मंदरं वा पव्वतंतेणं (क, ख, ग); समवायाङ्गस्य 'पइण्णग' समवायस्य २३ सूत्रानुसारेण 'मंदरं वा पव्वयं' इति पाठो युज्यते। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि मंदरं वा—'मेरुं वा पर्वतं प्रति' इति व्याख्यातमस्ति। तदनुसारेणापि 'मंदरं वा पव्वतं' इति पाठो युज्यते। तेनैष एव पाठः स्वीकृतः।

उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—मालवंते, एवं जहा जंबुद्दीवे[1] तहा जाव[2] पुक्खरवरदीवड्ढं पच्चत्थिमद्धे ‘वक्खारपव्वया दहा य’[3] उच्चत्तं भाणियव्वं ॥

समयक्खेत्त-पदं

१५८. समयक्खंत्ते णं पंच भरहाइं, पंच एरवताइं, एवं जहा चउट्ठाणे बितीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव[4] पंच मंदरा पंच मंदरचूलियाओ, णवरं—उसुयारा णत्थि ॥

ओगाहणा-पदं

१५९. उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

१६०. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसताइं उडढं उच्चत्तेणं होत्था ।

१६१. बाहुबली णं अणगारे [5]°पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था° ।

१६२. बंभी णं अज्जा [6]°पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था° ॥

१६३. [7]°सुंदरी णं अज्जा पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था° ॥

विबोध-पदं

१६४. पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा, तं जहा—सद्देणं, फासेणं, भोयणपरिणामेणं, णिद्दक्खएणं, सुविणदंसणेणं ॥

णिग्गंथी-अवलंबण-पदं

१६५. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति, तं जहा—

१. णिग्गंथिं च णं अण्णयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा ओहातेज्जा, तत्थ णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ।

२. णिग्गंथे णिग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ।

३. णिग्गंथे णिग्गंथिं सेयंसि[8] वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणिं वा उबुज्जमाणिं[9] वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ।

---

[1] ठा० ५।१५०-१५६ ।

[2] ठा० ३।१०८ ।

[3] वक्खार दहा य वक्खार-पव्वयाण (ख); वक्खारदहा त (ग) ।

[4] ठा० ४।३३७ ।

[5,6] सं० पा०—एवं चेव ।

[7] सं० पा०—एवं सुंदरी वि ।

[8] सेतंसि (क, ख, ग) ।

[9] उवज्झमाणी (क); उवुज्झमाणी (ग) ।

४. णिग्गंथे णिग्गंथिं णावं आरुभमाणे वा ओरोहमाणे वा णातिक्कमति ।

५. खित्तचित्तं[1] दित्तचित्तं[2] जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं जाव भत्तपाणपडियाइक्खियं अट्ठजायं वा णिग्गंथे णिग्गंथिं गेण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ।।

आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पदं

१६६. आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच अतिसेसा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स[3] पाए 'णिगज्झिय-णिगज्झिय'[4] पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति ।

२. आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति ।

३. आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा, इच्छा णो करेज्जा ।

४. आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा एगगो[5] वसमाणे णातिक्कमति ।

५. आयरिय-उवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा [एगओ ?] वसमाणे णातिक्कमति ।।

आयरिय-उवज्झाय-गणावक्कमण-पदं

१६७. पंचहिं ठाणेहिं आयरिय-उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा—

१. आयरिय-उवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पउंजित्ता भवति ।

२. आयरिय-उवज्झाए गणंसि आधारायणियाए कितिकम्मं वेणइयं णो सम्मं पउंजित्ता भवति ।

३. आयरिय-उवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाते धारेति, ते 'काले-काले'[6] णो सम्ममणुपवादेत्ता भवति ।

४. आयरिय-उवज्झाए गणंसि सगणियाए[7] वा परगणियाए वा णिग्गंथीए बहिल्लेसे भवति ।

५. मित्ते णातिगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा, तेसिं संगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते ।।

---

[1] खेत्तइत्तं (क, ख, ग) ।

[2] दित्तइत्तं (क, ख, ग) ।

[3] उवस्सगस्स (ख) सर्वत्र ।

[4] निगिज्झिय (क्व) ।

[5] × (क, ख, ग) ।

[6] काले (ख, ग) ।

[7] सगणिताते (क, ख, ग) ।

इड्डिमंत-पदं

१६८. पंचविहा इड्डिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, भावियप्पाणो अणगारा ।।

तइओ उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१६९. पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१७०. धम्मत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति[1]—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए[2] अवट्ठिते णिच्चे ।

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ।

गुणओ गमणगुणे ।।

१७१. अधम्मत्थिकाए अवण्णे[3]अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगं दव्वं ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।

---

[1] भविस्सइ (ख) ।

[2] अव्वते (क, ख, ग) ।

[3] सं० पा०—एवं चेव णवरं गुणतो ठाणगुणे ।

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ।

१७२. आगासत्थिकाए अवण्णे [1]°अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगालोगदव्वे ।

से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगं दव्वं ।

खेत्तओ लोगालोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ।
गुणओ अवगाहणागुणे° ।।

१७३. जीवत्थिकाए णं अवण्णे [2]°अगंधे अरसे अफासे अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ णं जीवत्थिकाए[3] अणंताइं दव्वाइं ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे° ।।

१७४. पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते अवट्ठिते[4] °लोगदव्वे ।

से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ° ।

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं ।

---

[1] सं० पा०—एवं चेव णवरं खेत्तओ…… अवगाहणागुणे सेसं तं चेव ।

[2] सं० पा०—एवं चेव णवरं दव्वओणं…… उवओगगुणे सेसं तं चेव ।

[3] जीवत्थिगाते (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—अवट्ठिते जाव दव्वओ ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।
कालओ ण कयाइ णासि[1], °ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते° णिच्चे ।
भावओ वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते ।
गुणओ गहणगुणे ॥

गइ-पदं

१७५. पंच गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णिरयगती, तिरियगती, मणुयगती, देवगती, सिद्धिगती ॥

इंदियत्थ-पदं

१७६. पंच इंदियत्था पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियत्थे[2], °चक्खिंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे°, फासिंदियत्थे ॥

मुंड-पदं

१७७. पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियमुंडे[3], °चक्खिंदियमुंडे घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे,° फासिंदियमुंडे ।
अहवा—पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—कोहमुंडे माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥

बायर-पदं

१७८, अहेलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा ॥

१७९. उड्ढलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—[4]°पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा° ॥

१८०. तिरियलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया[5], °बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया° पंचिंदिया ॥

१८१. पंचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—इंगाले, जाले, मुम्मुरे, अच्ची, अलाते ॥

---

[1] सं० पा०—णासि जाव णिच्चे ।

[2] सं० पा०—सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे ।

[3] सं० पा०—सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदिय° ।

[4] सं० पा०—एवं चेव ।

[5] सं० पा०—एगिंदिया जाव पंचिंदिया ।

१८२. पंचविधा बादरवाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पाईणवाते, पडीणवाते, दाहिणवाते, उदीणवाते, विदिसवाते ।।

अचित्त-वाउकाय-पदं

१८३. पचविधा अचित्ता वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अक्कंते, धंते[1], पीलिए, सरीराणुगते, संमुच्छिमे ।।

णियंठ-पदं

१८४. पंच णियंठा पण्णत्ता, तं जहा—पुलाए[2], बउसे, कुसीले, णियंठे, सिणाते ।।

१८५. पुलाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणपुलाए, दंसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए णामं पंचमे ।।

१८६. बउसे पंचविधे पण्णत्ते, णं जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे णामं पंचमे ।।

१८७. कुसीले पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—णाणकुसीले, दंसणकुसीले, चरित्तकुसीले, लिंगकुसीले[3], अहासुहुमकुसीले णामं पंचमे ।।

१८८. णियंठे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयणियंठे, अपढमसमयणियंठे, चरिमसमयणियंठे, अचरिमसमयणियंठे, अहासुहुमणियंठे णामं पंचमे ।।

१८९. सिणाते पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—अच्छवी, असबले, अकम्मंसे, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, अपरिस्साई[4] ।।

उपधि-पदं

१९०. कप्पति[5] णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा—जंगिए[6], भंगिए[7], साणए[8], पोत्तिए[9], तिरीडपट्टए[10] णामं पंचमए ।

१९१. कप्पति[11] णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं[12] धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा—उण्णिए[13], उट्टिए[14], साणए, पच्चापिच्चिए[15], मुंजापिच्चिए णामं पंचमए ।।

---

[1] धम्मते (ख) ।

[2] पुलाते (क, ख, ग) ।

[3] तवकुसीले (वृपा) ।

[4] अपरिस्साती (क, ख, ग); अरहा (वृपा) ।

[5] कप्पंति (वृ); तृतीयस्थानस्य (३।३४५) वृत्तौ 'कल्पते' इति व्याख्यातमस्ति, अत्र तु 'कल्पन्ते' इति व्याख्यातम् ।

[6] जंगिते (क, ख, ग) ।

[7] भंगिते (क, ख, ग) ।

[8] साणते (क, ख, ग) ।

[9] पोत्तिते (क, ख, ग) ।

[10] तिरीडपट्टते (क, ख, ग) ।

[11] कप्पंति (वृ) ।

[12] रतहरणाइं (क, ख, ग) ।

[13] उण्णीते (क, ख, ग) ।

[14] उट्टिते (क, ख, ग) ।

[15] पच्चापिच्चियए (ग) ।

णिस्साट्ठाण-पदं

१९२. धम्मण्णं चरमाणस्स पंच णिस्साट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—छक्काया, गणे, राया[1], गाहावती, सरीरं ।।

णिहि-पदं

१९३. पंच णिहि पण्णत्ता, तं जहा—पुत्तणिही, मित्तणिही, सिप्पणिही, धणणिही, धण्णणिही ।।

सोच-पदं

१९४. पंचविहे सोए[2] पण्णत्ते, तं जहा—पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभसोए ।।

छउमत्थ-केवलि-पदं

१९५. पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं ।
एयाणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं[3], °अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं°, परमाणुपोग्गलं ।।

महाणिरय-पदं

१९६. अधेलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पतिट्ठाणे ।।

महाविमाण-पदं

१९७. उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—विजये, वेजयंते, जयंते, अपराजिते, सव्वट्ठसिद्धे ।।

सत्त-पदं

१९८. पंच पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते ।।

भिक्खाग-पदं

१९९. पंच मच्छा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोतचारी, पडिसोतचारी, अंतचारी, मज्झचारी, सव्वचारी ।

---

[1] राता (क, ख, ग) ।

[2] सोते (क, ख, ग) ।

[3] सं० पा०—धम्मत्थिकातं जाव परमाणुपोग्गलं ।

एवामेव पंच भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोतचारी[1], •पडिसोतचारी, अंतचारी, मज्झचारी°, सव्वचारी ।।

वणीमग-पदं

२००. पंच वणीमगा पण्णत्ता, तं जहा—अतिहिवणीमगे[2], किवणवणीमगे, माहणवणीमगे, साणवणीमगे, समणवणीमगे ।।

अचेल-पदं

२०१. पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति, तं जहा—अप्पापडिलेहा[3], लाघविए पसत्थे, रूवे वेसासिए, तवे अणुण्णाते, विउले इंदियणिग्गहे ।।

उक्कल-पदं

२०२. पंच उक्कला पण्णत्ता, तं जहा—दंडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले ।।

समिती-पदं

२०३. पंच समितीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इरियासमिती, भासासमिती[4], •एसणासमिती, आयाणभंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल°-पारिठावणियासमिती ।।

जीव-पदं

२०४. पंचविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया[5], •बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया°, पंचिंदिया ।।

गति-आगति-पदं

२०५. एगिंदिया पंचगतिया पंचागतिया पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिए एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा[6], •बेइंदिएहिंतो वा, तेइंदिएहिंतो वा, चउरिंदिएहिंतो वा°, पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा ।

'से चेव णं से'[7] एगिंदिए एगिंदियत्तं विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए[8] वा[9], •बेइंदियत्ताए वा, तेइंदियत्ताए वा, चउरिंदियत्ताए वा°,पंचिंदियत्ताए[10] वा गच्छेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—अणुसोतचारी जाव सव्वचारी ।

२. °वणीमते (क, ख, ग) ।

३. अप्पपडिलेही (ख) ।

४. सं० पा०—भासासमिती जाव पारिठावणियासमिती ।

५. सं० पा०—एगिंदिया जाव पंचिंदिया ।

६. सं० पा०—एगिंदितेहिंतो वा जाव पंचिंदिय° ।

७. × (क, ग) ।

८. एगिंदित्ताते (क, ग) ।

९. सं० पा०—एगिंदियत्ताते वा जाव पंचिंदियत्ताते ।

१०. पंचिंदित्ताते (क, ग) ।

२०६. बेंदिया पंचगतिया पंचागतिया एवं चेव[1] ॥

२०७. एवं जाव[2] पंचिंदिया पंचगतिया पंचागतिया पण्णत्ता, तं जहा—पंचिंदिए जाव[3] गच्छेज्जा ॥

जीव-पदं

२०८. पंचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाई[4], °माणकसाई, मायाकसाई°, लोभकसाई, अकसाई ।

अहवा—पंचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया[5], °तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा°, देवा, सिद्धा ॥

जोणि-ठिइ-पदं

२०९. अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण-पलिमंथगाणं[6]—एतेसि णं धण्णाणं कुट्ठाउत्ताणं [7]°पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं° केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पंच संवच्छराइं । तेण परं जोणी पमिलायति[8], °तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति°, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ॥

संवच्छर-पदं

२१०. पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा—णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खणसंवच्छरे, सणिचरसंवच्छरे ॥

२११. जुगसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—चंदे, चांदे, अभिवड्ढिते, चंदे, अभिवड्ढिते चेव ॥

२१२. पमाणसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णक्खत्ते, चंदे, उऊ, आदिच्चे, अभिवड्ढिते ॥

२१३. लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

समगं णक्खत्ताजोगं जोयंति[9] समगं उदू परिणमंति ।
णच्चुण्हं[10] णातिसीतो, बहूदओ[11] होति णक्खत्तो ॥१॥

---

१. पू०—ठा० ५।२०५ ।
२. ठा० ५।२०४ ।
३. ठा० ५।२०५ ।
४. सं० पा०—कोहकसाई जाव लोभकसाई ।
५. सं० पा०—णेरइया जाव देवा ।
६. पमिलिंथगाणं (क); पलिमंथगाणी (ख); पमिलिंथमाणे (ग) ।
७. सं० पा०—जधा सालीणं जाव केवतितं ।
८. सं० पा०—पमिलायति जाव तेण परं ।
९. जयंति (क, ग) ।
१०. णउण्हं (क, ग) ।
११. बहूदतो (क, ख, ग) ।

ससिसगलपुण्णमासीं, जोएइ विसमचारिणक्खत्ते[1] ।
कडुओ[2] बहूदओ वा, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥
विसमं पवालिणो परिणमंति अणुदूसु देंति पुप्फफलं ।
वासं ण सम्म वासति, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥
पुढविदगाणं तु रसं, पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो ।
अप्पेणवि वासेणं, सम्मं णिप्फज्जए सासं ॥४॥
आदिच्चतेयतविता, खणलवदिवसा उऊ परिणमंति ।
'पुरिंति रेणु थलयाइं'[3], तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥५॥

जीवस्स णिज्जाणमग्ग-पदं

२१४. पंचविधे जीवस्स णिज्जाणमग्गे पण्णत्ते, तं जहा—पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं, सव्वंगेहिं ।

पाएहिं णिज्जायमाणे णिरयगामी भवति, ऊरूहिं णिज्जायमाणे तिरियगामी भवति, उरेणं णिज्जायमाणे मणुयगामी भवति, सिरेणं णिज्जायमाणे देवगामी भवति, सव्वंगेहिं णिज्जायमाणे सिद्धिगति-पज्जवसाणे पण्णत्ते ॥

छेयण-पदं

२१५. पंचविहे छेयणे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पाछेयणे[4], वियच्छेयणे, बंधच्छेयणे, पएसच्छेयणे[5], दोधारच्छेयणे ॥

आणंतरिय-पदं

२१६. पंचविहे आणंतरिए पण्णत्ते, तं जहा—उप्पायाणंतरिए[6], वियाणंतरिए[7], पएसाणंतरिए[8], समयाणंतरिए[9], सामण्णाणंतरिए ॥

अणंत-पदं

२१७. पंचविधे अणंतए[10] पण्णत्ते, तं जहा—णामाणंतए[11], ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंतए पदेसाणंतए ।

अहवा—पंचविहे अणंतए पण्णत्ते, तं जहा—एगंतोऽणंतए, दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए ॥

---

[1] विसमचारण° (क, ग); विसमाचारिण° (ख) ।
[2] कडुतो (क, ख, ग) ।
[3] पूरेति त थलताइं (क, ख) ।
[4] उप्पाय° (क, ग) ।
[5] पंथच्छेयणं (वृपा) ।
[6] उप्पातयणंतरिते (क, ख, ग) ।
[7] वितणंतरिते (क, ख, ग) ।
[8] पतेसाणंतरिते (क, ख, ग) ।
[9] समताणंतरिते (क, ख, ग) ।
[10] अणंते (क, ख, ग) ।
[11] णामणंतते (क, ग) ।

णाण-पदं

२१८. पंचविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवणाणे, केवलणाणे ।।

२१९. पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा--आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे[1], ॰सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे ॰, केवलणाणावरणिज्जे ।।

२२०. पंचविहे सज्झाए पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा ।।

पच्चक्खाण-पदं

२२१. पंचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—सद्दहणसुद्धे, विणयसुद्धे, अणुभासणासुद्धे, अणुपालणासुद्धे, भावसुद्धे ।।

पडिक्कमण-पदं

२२२. पंचविहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा—आसवदारपडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसायपडिक्कमणे, जोगपडिक्कमणे, भावपडिक्कमणे ।।

सुत्त-पदं

२२३. पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा, तं जहा—संगहट्ठयाए, उवग्गहट्ठयाए[2], णिज्जरट्ठयाए, सुत्ते वा मे पज्जवयाते भविस्सति, सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए ।।

२२४. पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा, तं जहा—णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए, वुग्गहविमोयणट्ठयाए[3], अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीतिकट्टु ।।

कप्प-पदं

२२५. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवण्णा[4] पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा[5], ॰णीला, लोहिता, हालिद्दा ॰, सुक्किल्ला ।।

२२६. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

२२७. बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

बंध-पदं

२२८. णेरइया णं पंचवण्णे पंचरसे पोग्गले बंधेंसु वा बंधंति वा बंधिस्संति वा,

---

[1] सं॰ पा॰—आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल॰ ।

[2] उवग्गहणट्ठयाए (ख) ।

[3] ॰बिमोतणट्ठयाते (क, ख, ग) ।

[4] पंचविधा (क, ग) ।

[5] सं॰ पा॰—किण्हा जाव सुक्किल्ला ।

तं जहा—किण्हे[1], °णीले, लोहिते, हालिद्दे °, सुक्किल्ले । तित्ते[2], °कडुए, कसाए, अंबिले °, मधुरे ॥

२२९. एवं जाव[3] वेमाणिया ॥

महाणदी-पदं

२३०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं गंगं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—जउणा, सरऊ, आवी[4], कोसी, मही ॥

२३१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं सिंधुं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—'स[त ?]द्दू, वितत्था, विभासा'[5], एरावती, चंदभागा ॥

२३२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्तं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा ॥

२३३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्तावतिं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोगा ॥

तित्थगर-पदं

२३४. पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे[6] वसित्ता मुंडा[7] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइया, तं जहा—वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठणेमी, पासे, वीरे ॥

सभा-पदं

२३५. चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पण्णत्ता, तं जहा—सभासुधम्मा, उववातसभा, अभिसेयसभा, अलंकारियसभा[8], ववसायसभा[9] ॥

२३६. एगमेगे णं इंदट्ठाणे पंच सभाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सभासुहम्मा[10], °उववातसभा, अभिसेयसभा, अलंकारियसभा,° ववसायसभा ॥

णक्खत्त-पदं

२३७. पंच णक्खत्ता पंचतारा पण्णत्ता, तं जहा—धणिट्ठा, रोहिणी, पुणव्वसू, हत्थो, विसाहा ॥

पावकम्म-पदं

२३८. जीवा णं पंचट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा

---

[1] सं० पा०—किण्हे जाव सुक्किल्ले ।

[2] सं० पा०—तित्ते जाव मधुरे ।

[3] ठा० १।१४२-१६३ ।

[4] आदी (क, ख, ग) ।

[5] सतद्दू विभासा वितत्था (क्व) ।

[6] °मज्झा (क, ग) ।

[7] सं० पा०—मुंडा जाव पव्वतिता ।

[8] अलंकारित° (क, ख, ग) ।

[9] ववसात° (क, ख, ग) ।

[10] सं० पा०—सभासुहम्मा जाव ववसातसभा ।

चिणिस्संति वा, तं जहा—एगिंदियणिव्वत्तिए[1], °बेइंदियणिव्वत्तिए, तेइंदियणिव्वत्तिए, चउरिंदियणिव्वत्तिए,° पंचिंदियणिव्वत्तिए ॥
एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेद तह णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पदं

२३९. पंचपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ॥

२४०. पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव[2] पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

---

[1] सं० पा०—एगिंदियणिव्वित्तिते जाव पंचिदित° ।

[2] ठा० १।२५५, २५६ ।

छट्ठं ठाणं

गण-धारण-पदं

१. छहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति गणं धारित्तए, तं जहा—सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं अप्पाधिकरणे ।।

णिग्गंथी-अवलंबण-पदं

२. छहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ, तं जहा—खित्तचित्तं, दित्तचित्तं, जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं[1], उवसग्गपत्तं, साहिकरणं[2] ।।

साहम्मियस्स अंतकम्म-पदं

३. छहिं ठाणेहिं णिग्गंथा णिग्गंथीओ य साहम्मियं कालगतं समायरमाणा णाइक्कमंति, तं जहा—अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा, बाहीहिंतो वा णिब्बाहिं णीणेमाणा, उवेहेमाणा वा, उवासमाणा[3] वा, अणुण्णवेमाणा वा, तुसिणीए वा संपव्वयमाणा ।।

छउमत्थ-केवलि-पदं

४. छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आयासं, जीवमसरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं ।
एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे[4] °केवली° सव्वभावेणं जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं[5], °अधम्मत्थिकायं, आयासं, जीवमसरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं°, सद्दं ।।

---

[1] उम्मातपत्तं (क, ख, ग) ।

[2] साहीकरणी (ख) ।

[3] भयमाण', उवसामेमाणा (वृपा) ।

[4] सं० पा०—जिणे जाव सव्वभावेणं ।

[5] सं० पा०—धम्मत्थिकातं जाव सद्दं ।

असंभव-पदं

५. छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीति वा जुतीति वा जसेति वा बलेति वा वोरिएति वा पुरिसक्कार-परक्कमेति वा, तं जहा—१. जीवं वा अजीवं करणताए। २. अजोवं वा जीवं करणताए। ३. एगसमए णं वा दो भासाओ भासित्तए। ४. सयं कडं वा कम्मं वेदेमि वा मा वा वेदेमि। ५. परमाणु-पोग्गलं[1] वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाएणं वा समोदहित्तए[2]। ६. बहिता वा लोगंता[3] गमणताए ।।

जीव-पदं

६. छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[4], •आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया° तसकाइया ।।

७. छ तारग्गहा पण्णत्ता, तं जहा—सुक्के, बुहे, बहस्सती, अंगारए, सणिच्छरे, केतू ।।

८. छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[5], •आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया,° तसकाइया ।।

गति-आगति-पदं

९. पुढविकाइया छगतिया छआगतिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा[6], •आउकाइएहिंतो वा, तेउकाइएहिंतो वा, वाउकाइएहिंतो वा, वणस्सइकाइएहिंतो वा,° तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा ।।

से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा[7], •आउकाइयत्ताए वा, तेउकाइयत्ताए वा, वाउकाइयत्ताए वा, वणस्सइकाइयत्ताए वा° तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा ।।

१०. आउकाइया छगतिया छआगतिया एवं[8] चेव जाव[9] तसकाइया ।।

जीव-पदं

११. छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियणाणी[10], •सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी,° केवलणाणी, अण्णाणी।

---

[1] सुहुमपोग्गले (क, ग)।
[2] सम्मोदहित्तते (क)।
[3] लोगे वा (क, ग)।
[4] सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
[5] सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
[6] सं० पा०—पुढविकाइएहिंतो वा जाव तस°।
[7] सं० पा०—पुढविकातितत्ताते वा जाव तस°।
[8] ठा० ६।९।
[9] ठा० ६।६।
[10] सं० पा०—आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी।

अहवा—छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया[1], •बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया,° पंचिंदिया, अणिंदिया ।

अहवा—छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरी, वेउव्वियसरीरी, आहारगसरीरी, तेअगसरीरी, कम्मगसरीरी, असरीरी ।।

तणवणस्सइ-पदं

१२. छव्विहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, संमुच्छिमा ।।

णो-सुलभ-पदं

१३. छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति, तं जहा—माणुस्सए भवे । आरिए खेत्ते जम्मं । सुकुले पच्चायाती । केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स सवणता । सुतस्स वा सद्दहणता । सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्मं काएणं फासणता ।।

इंदियत्थ-पदं

१४. छ इंदियत्था पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियत्थे,[2] •चक्खिंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे,° फासिंदियत्थे, णोइंदियत्थे ।।

संवर-असंवर-पदं

१५. छव्विहे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियसंवरे,[3] •चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे,° फासिंदियसंवरे, णोइंदियसंवरे ।।

१६. छव्विहे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे[4], •चक्खिंदियअसंवरे घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे°, फासिंदियअसंवरे, णोइंदियअसंवरे ।।

सात-असात-पदं

१७. छव्विहे साते पण्णत्ते, तं जहा - सोतिंदियसाते[5], •चक्खिंदियसाते, घाणिंदियसाते, जिब्भिंदियसाते, फासिंदियसाते°, णोइंदियसाते ।।

१८. छव्विहे असाते पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसाते[6], •चक्खिंदियअसाते, घाणिंदियअसाते, जिब्भिंदियअसाते, फासिंदियअसाते°, णोइंदियअसाते ।।

पायच्छित्त-पदं

१९. छव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे; तवारिहे ।।

---

[1] सं० पा०—एगिंदिया जाव पंचिंदिया ।

[2] सं० पा०—सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे ।

[3] सं० पा०—सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय° ।

[4] सं० पा०—सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदिय° ।

[5] सं० पा०—सोतिंदियसाते जाव नोइंदियसाते ।

[6] सं० पा०—सोतिंदियअसाते जाव नोइंदियअसाते ।

मणुस्स-पदं

२०. छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—जंबूदीवगा, धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धगा, धायइसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा, अंतरदीवगा।
अहवा—छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्सा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा; गब्भवक्कंतिअमणुस्सा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा ॥

२१. छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा ॥

२२. छव्विहा अणिड्ढिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—हेमवतगा, हेरण्णवतगा, हरिवासगा[1], रम्मगवासगा[2], कुरुवासिणो, अंतरदीवगा ॥

कालचक्क-पदं

२३. छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा—सुसम-सुसमा[3], °सुसमा, सुसम-दूसमा, दूसम-सुसमा, दूसमा°, दूसम-दूसमा ॥

२४. छव्विहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा—दुस्सम-दुस्समा[4], °दुस्समा, दुस्सम-सुसमा, सुसम-दुस्समा, सुसमा°, सुसम-सुसमा ॥

२५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था ॥

२६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए [5]°मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था °॥

२७. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए [6]°मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं भविस्संति°, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालइस्संति ॥

२८. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरुकुरासु[7] मणुया छ धणुस्सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालेंति ॥

[1,2] °वंसगा (क, ग); °वसगा (ख); २।२६६ सूत्रानुसारेण 'वास' पाठः स्वीकृतः।

[3] सं० पा०—सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा।

[4] सं० पा०—दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा।

[5] सं० पा०—एवं चेव।

[6] सं० पा०—एवं चेव जाव छच्च।

[7] उत्तरकुराकुराए (ख)।

२९. एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा[1] जाव[2] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा[3] ।

संघयण-पदं

३०. छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तं जहा—वइरोसभ[4]-णाराय[5]-संघयणे, उसभ-णाराय-संघयणे, णाराय-संघयणे, अद्धणाराय-संघयणे, खीलिया-संघयणे, छेवट्ट-संघयणे ।।

संठाण-पदं

३१. छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे, णग्गोहपरिमंडले, साई[6], खुज्जे, वामणे, हुंडे ।।

अणत्तव-अत्तव-पदं

३२. छट्ठाणा अणत्तवओ अहिताए असुभाए अखमाए अणीसेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—परियाए[7], परियाले[8], सुते, तवे, लाभे, पूयासक्कारे ।।

३३. छट्ठाणा अत्तावतो हिताए[9] °सुभाए खमाए णीसेसाए° आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—परियाए, परियाले[10], °सुते, तवे, लाभे°, पूयासक्कारे ।।

आरिय-पदं

३४. छव्विहा जाइ-आरिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगादिया[11] ।
हरिता चुंचुणा[12] चेव, छप्पेता इब्भजातिओ ।।१।।

३५. छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाता, कोरव्वा ।।

लोगट्ठिति-पदं

३६. छव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपतिट्ठिते वाए, वातपतिट्ठिते

---

[1] ठा० ६।२५-२८ ।

[2] ठा० ३।१०८ ।

[3] ठा० ६।२५-२८ ।

[4] वति० (क, ख, ग) ।

[5] णारात (क, ख, ग) ।

[6] साती (क, ख, ग) ।

[7] परिताते (क, ख, ग) ।

[8] परिताले (क, ख, ग) ।

[9] सं० पा०—हिताते जाव आणुगामियत्ताते ।

[10] सं० पा०—परिताले जाव पूतासक्कारे ।

[11] वेदिगातिता (क, ख, ग) ।

[12] चुंबणा (क); चुबुणा (ग) ।

उदही, उदधिपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपतिट्ठिता, जीवा कम्मपतिट्ठिता ॥

दिसा-पदं

३७. छद्दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पाईणा[1], पडीणा, दाहिणा, उदीणा[2], उड्ढा, अधा ॥

३८. छहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति, तं जहा—पाईणाए[3], •पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए°, अधाए ॥

३९. [5]•छहिं दिसाहिं जीवाणं°—आगई वक्कंती आहारे वुड्ढी णिवुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाए समुग्घाते कालसंजोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे अजीवाभिगमे •पण्णत्ते, तं जहा—पाईणाए, पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए, अधाए °॥

४०. एवं[4] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि, मणुस्साणवि ॥

आहार-पदं

४१. छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे आहारमाहारेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

वेयण[6]-वेयावच्चे, ईरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥१॥

४२. छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे आहारं वोच्छिदमाणे णातिक्कमति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

आतंके उवसग्गे, तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए ।
पाणिदया-तवहेउं, सरीरवुच्छेयणट्ठाए[7] ॥१॥

उम्माय-पदं

४३. छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं[8] पाउणेज्जा, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरिय-उवज्झायाणं अवण्णं

---

[1] पातीणा (क, ख, ग) ।

[2] उतीणा (क, ग) ।

[3] सं० पा०—पातीणाते जाव अधाते ।

[4] सं० पा०—एवं ।

[5] ठा० ६।३८,३९ ।

[6] वेतण (क, ख, ग) ।

[7] °ट्ठयाए (क) ।

[8] उम्मायपमायं (वृपा) ।

वदमाणे, चाउव्वण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे, जक्खावेसेण[1] चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं ।।

पमाय-पदं

४४. छव्विहे पमाए[2] पण्णत्ते, तं जहा—मज्जपमाए, णिद्दपमाए, विसयपमाए, कसायपमाए, जूतपमाए, पडिलेहणापमाए ।।

पडिलेहणा-पदं

४५. छव्विहा पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

आरभडा संमद्दा, वज्जेयव्वा य 'मोसली ततिया'[3] ।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता[4] वेइया[5] छट्ठी ।।१।।

४६. छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अणच्चावितं अवलितं[6], अणाणुबंधि अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा णव खोडा, पाणीपाणविसोहणी ।।१।।

लेसा-पदं

४७. छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा,[7] °णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा°, सुक्कलेसा ।।

४८. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा[8], °णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा°, सुक्कलेसा ।।

४९. एवं मणुस्स-देवाण वि ।

अग्गमहिसी-पदं

५०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

५१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

---

[1] जक्खादेसेण (क, ख, ग) ।
[2] पमाते (क, ख, ग) ।
[3] अट्ठाणठवणयाए (वृपा) ।
[4] वक्खित्ता (क, ख, ग) ।
[5] वेतिया (क, ख, ग) ।
[6] अचलितं (ख) ।
[7],[8] सं० पा०—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ।

देवठिति-पदं

५२. ईसाणस्स णं देविंदस्स [देवरण्णो[1] ?] मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

महत्तरिया-पदं

५३. छ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ[2] पण्णत्ताओ, तं जहा—रूवा[3], रूवंसा[4], सुरूवा, रूववती, रूवकंता[5], रूवप्पभा[6] ।।

५४. छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अला, सक्का, सतेरा, सोतामणी, इंदा, घणविज्जुया ।।

अग्गमहिसी-पदं

५५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— अला[7], सक्का, सतेरा, सोतामणी, इंदा, घणविज्जुया ।।

५६. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'रूवा, रूवंसा'[8], सुरूवा, रूववती, रूवकंता, रूवप्पभा ।।

५७. जहा[9] धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[10] घोसस्स ।।

५८. जहा[11] भूताणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[12] महाघोसस्स ।।

सामाणिय-पदं

५९. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छस्सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

६०. एवं भूताणंदस्सवि जाव[13] महाघोसस्स ।।

मइ-पदं

६१. छव्विहा ओगहमती[14] पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमोगिण्हति[15], बहुमोगिण्हति, बहुविधमोगिण्हति, धुवमोगिण्हति, अणिस्सियमोगिण्हति, असंदिद्धमोगिण्हति ।।

---

१. सर्वत्रापि एवं दृश्यते ।
२. °महत्तरितातो (क, ख, ग) ।
३. रूता (क, ख, ग) ।
४. रूतसा (क, ख, ग) ।
५. रूयकंता (क, ख, ग) ।
६. रूतप्पभा (क, ख, ग) ।
७. आला (ख) ।
८. रूता रूतंसा (क); रूता रूवंसा (ग) ।
९. ठा० ६।५५ ।
१०. ठा० २।३५५-३६१ ।
११. ठा० ६।५६ ।
१२. ठा० २।३५५-२६१ ।
१३. ठा० २।३५५-३६२ ।
१४. उग्गह° (क) ।
१५. खिप्पा° (क, ग) ।

६२. छव्विहा ईहामती पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमीहति, बहुमीहति[1], •बहुविधमीहति, धुवमीहति, अणिस्सियमीहति°, असंदिद्धमीहति ।।

६३. छव्विधा अवायमती पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमवेति[2], •बहुमवेति, बहुविधमवेति, धुवमवेति, अणिस्सियमवेति°, असंदिद्धमवेति ।।

६४. छव्विहा धारणा [मती ?] पण्णत्ता, तं जहा—बहुं धरेति, बहुविहं धरेति, पोराणं धरेति, दुद्धरं धरेति, अणिस्सितं धरेति, असंदिद्धं धरेति ।।

तव-पदं

६५. छव्विहे बाहिरए तवे पण्णत्ते, तं जहा—अणसणं, ओमोदरिया, भिक्खायरिया[3], रसपरिच्चाए[4], कायकिलेसो, पडिसंलीणता ।।

६६. छव्विहे अब्भंतरिए तवे पण्णत्ता, तं जहा—पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ[5], झाणं, विउस्सग्गो ।।

विवाद-पदं

६७. छव्विहे विवादे पण्णत्ते, तं जहा—ओसक्कइत्ता[6], उस्सक्कइत्ता[7], अणुलोमइत्ता[8], पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भेलइत्ता[9] ।।

खुड्डपाण-पदं

६८. छव्विहा खुड्डा[10] पाणा पण्णत्ता, तं जहा—'बेंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, तेउकाइया, वाउकाइया'[11] ।।

गोयरचरिया-पदं

६९. छव्विहा गोयरचरिया[12] पण्णत्ता, तं जहा—पेडा, अद्धपेडा, गोमुत्तिया[13], पतंगवीहिया[14], संबुक्कावट्टा[15], गंतुंपच्चागता ।।

महाणिरय-पदं

७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ

---

१. सं० पा०—बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति ।

२. सं० पा०—खिप्पमवेति जाव असंदिद्ध° ।

३. भिक्खातरिता (क, ख, ग) ।

४. रसपरिच्चाते (क, ख, ग) ।

५. अहेव सज्झाओ (ख) ।

६. ओक्कस्सतित्ता (क, ग); ओसक्कावइत्ता (वृपा) ।

७. उक्कस्सइत्ता (क, ग); ओसक्कइत्ता (वृ); उस्सक्कावइत्ता (वृपा) ।

८. संकामइत्ता (क, ग) ।

९. भेलतित्ता (क, ख, ग); भेयइत्ता (वृपा) ।

१०. खुड्ड (क) ।

११. वाचनान्तरे तु सिंहाः व्याघ्रा वृका दीपिका ऋक्षास्तरक्षाः (वृ) ।

१२. °चरिता (ख, ग) ।

१३. गोमुत्तिता (क, ख, ग) ।

१४. °विहिया (क, ख, ग) ।

१५. संबुक्कवट्टा (ख, ग) ।

अवक्कंतमहाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—लोले, लोलुए, उद्दड्ढे, णिद्दड्ढे, जरए[१], पज्जरए ।।

७१. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंतमहाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाडखडे ।।

विमाण-पत्थड-पदं

७२. बंभलोगे णं कप्पे छ विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा—अरए[२], विरए[३], णीरए[४], णिम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे ।।

णक्खत्त-पदं

७३. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा, पुव्वफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा[५] ।।

७४. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—सयभिसया, भरणी, भद्दा, अस्सेसा, साती, जेट्ठा ।।

७५. चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा, उत्तराभद्दवया ।।

इतिहास-पदं

७६. अभिचंदे णं कुलकरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ।।

७७. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइं महाराया हुत्था ।।

७८. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सता वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्था ।।

७९. वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससतेहिं सद्धिं मुंडे[६] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए ।।

८०. चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे[७] छउमत्थे हुत्था ।।

संजम-असंजम-पदं

८१. तेइंदिया[८] णं जीवा असमारभमाणस्स[९] छव्विहे संजमे कज्जति, तं जहा—

---

[१] जरते (क, ख, ग) ।

[२] अरते (क, ख, ग) ।

[३] विरते (क, ख, ग) ।

[४] णीरते (क, ख, ग) ।

[५] पुव्वा आसाढा (ग) ।

[६] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइते ।

[७] छम्मासा (ख) ।

[८] तेंतिंदिया (क, ख, ग) ।

[९] असमारंभ° (ख) ।

घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। जिब्भामातो[1] सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, [2]°जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति° ॥

८२. तेइंदिया णं जीवा समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जति, तं जहा—घाणामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति[3]। °जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति° फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति ॥

खेत्त-पव्वय-पदं

८३. जंबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवते, हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा ॥

८४. जंबुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे ॥

८५. जंबुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे, णीलवंते, रुप्पी, सिहरी ॥

८६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं छ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंतकूडे, वेसमणकूडे, महाहिमवंतकूडे, वेरुलियकूडे, णिसढकूडे[4], रुयगकूडे ॥

८७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं छ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंतकूडे[5], उवदंसणकूडे, रुप्पिकूडे, मणिकंचणकूडे, सिहरिकूडे, तिगिंछिकूडे[6] ॥

महादह-पदं

८८. जंबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा—पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिंछिद्दहे[7], केसरिद्दहे, महापोंडरीयद्दहे, पुंडरीयद्दहे।

तत्थ णं छ देवयाओ महिड्ढियाओ जाव[8] पलिओवमट्ठितियाओ परिवसंति, तं जहा—सिरी, हिरी, धिती, कित्ती, बुद्धी, लच्छी ॥

णदी-पदं

८९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं छ महाणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहितंसा, हरी, हरिकंता ॥

---

[1] जिब्भमतो फासमतो (ग)।

[2] सं० पा०—एवं चेव एवं फासामातो वि।

[3] सं० पा०—भवति जाव फासामतेणं।

[4] णिसभकूडे (क, ग)।

[5] णेल° (क)।

[6] तिगिच्छकूडे (क, ख, ग)।

[7] तिगिच्छ° (क); तिगिंछ° (ख)।

[8] ठा० २।२७१।

९०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं छ महाणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती ।।

९१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गाहावती, दहवती, पंकवती, तत्तयला, मत्तयला, उम्मत्तयला ।।

९२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरोदा, सीहसोता, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी ।।

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

९३. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवए[1], °हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा° ।।

९४. एवं जहा जंबुद्दीवे दीवे जाव[2] अंतरणदीओ जाव[3] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणितव्वं ।।

उउ-पदं

९५. छ उदू[4] पण्णत्ता, तं जहा—पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, वसंते, गिम्हे ।।

ओमरत्त-पदं

९६. छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—ततिए पव्वे, सत्तमे पव्वे, एक्कारसमे पव्वे, पण्णरसमे पव्वे, एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे ।।

अतिरत्त-पदं

९७. छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे, दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे, वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे ।।

अत्थोग्गह-पदं

९८. आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियत्थोग्गहे[5], °चक्खिदियत्थोग्गहे, घाणिंदियत्थोग्गहे, जिब्भिदियत्थोग्गहे, फासिंदियत्थोग्गहे°, णोइंदियत्थोग्गहे ।।

ओहिणाण-पदं

९९. छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते, तं जहा—आणुगामिए, अणाणुगामिए, वड्ढमाणए, हायमाणए, पडिवाती, अपडिवाती ।।

---

[1] सं० पा०—हेमवए……।

[2] ठा० ६।८४-९२।

[3] ठा० ३।१०८।

[4] उड्ढू (ग)।

[5] सं० पा०—सोइंदियत्थोग्गहे जाव णोइंदिय °।

अवयण-पदं

१००. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं[1] वदित्तए, तं जहा—अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसितवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए ॥

कप्पस्स पत्थार-पदं

१०१. छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवायस्स वायं वयमाणे, मुसावायस्स वायं[2] वयमाणे, अदिण्णादाणस्स वायं वयमाणे, अविरतिवायं[3] वयमाणे, अपुरिसवायं वयमाणे, दासवायं वयमाणे—इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थारेत्ता सम्ममपडिपूरेमाणे[4] तट्ठाणपत्ते ॥

पलिमंथु-पदं

१०२. छ कप्पस्स पलिमंथू[5] पण्णत्ता, तं जहा—कोकुइते[6] संजमस्स पलिमंथू, मोहरिए[7] सच्चवयणस्स पलिमंथू, चक्खुलोलुए[8] ईरियावहियाए[9] पलिमंथू, तितिणिए एसणागोयरस्स[10] पलिमंथू, इच्छालोभिते मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू, भिज्जाणिदाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवता अणिदाणता[11] पसत्था ॥

कप्पट्ठिति-पदं

१०३. छव्विहा कप्पट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयकप्पट्ठिती[12], छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिती[13], णिव्विसमाणकप्पट्ठिती, णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्पट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती ॥

महावीरस्स छट्ठभत्त-पदं

१०४. समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे[14] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए ॥

१०५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे[15] °णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे ॥

---

१. अवतणाइं (क, ख, ग)।

२. वादं (क)।

३. °वातं (क, ख, ग)।

४. सम्मा° (ख)।

५. पाठान्तरेण परिमन्था वाच्याः (वृ)।

६. कोकुतिते (क, ख, ग)।

७. मोहरिते (क, ख, ग)।

८. चक्खुलोलुते (क, ख, ग)।

९. ईरितावहिताते (क, ख, ग)।

१०. एसणागोतरस्स (क, ख, ग)।

११. अणिताणता (क, ख, ग)।

१२. सामातित° (क, ख, ग)।

१३. छेतोवट्ठावणित° (क, ख, ग)।

१४. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए।

१५. सं० पा०—अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे।

१०६. समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

विमाण-पदं

१०७. सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

देव-पदं

१०८. सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

भोयण-परिणाम-पदं

१०९. छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे, 'बिंहणिज्जे, मयणिज्जे[2], दप्पणिज्जे'[3] ॥

विसपरिणाम-पदं

११०. छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—डक्के, भुत्ते, णिवतिते, मंसाणुसारी सोणिताणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी ॥

पट्ठ-पदं

१११. छव्विहे पट्ठे[4] पण्णत्ते, तं जहा—संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी, अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे ॥

विरहिय-पदं

११२. चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववातेणं ॥

११३. एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासे विरहिते उववातेणं ॥

११४. अधेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ॥

११५. सिद्धिगती णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ॥

आउयबंध-पदं

११६. छव्विधे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिणामणिधत्ताउए, गतिणामणिधत्ताउए, ठितिणामणिधत्ताउए, ओगाहणाणामणिधत्ताउए, पएसणामणिधत्ताउए, अणुभागणामणिहत्ताउए[5] ॥

११७. णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिणामणिहत्ताउए[6],

---

१. सं० पा०—सिद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।

२. दीवणिज्जे (वृ); मयणिज्जे (वृपा) ।

३. दप्पणिज्जे विंहणिज्जे मयणिज्जे (क, ग) ।

४. अट्ठे (वृपा) ।

५. अणुभाव° (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—जातिणामाणिहत्ताउते जाव अणुभाग° ।

°गतिणामणिहत्ताउए, ठितिणामणिहत्ताउए, ओगाहणाणामणिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए,° अणुभागणामणिहत्ताउए[1] ।।

११८. एवं जाव[2] वेमाणियाणं ।।

परभवियाउय-पदं

११९. णेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ।।

१२०. एवं असुरकुमारावि जाव[3] थणियकुमारा ।।

१२१. असंखेज्जवासाउया सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ।।

१२२. असंखेज्जवासाउया सण्णिमणुस्सा णियमं[4] °छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ।।

१२३. वाणमंतरा जोतिसवासिया वेमाणिया जहा णेरइया[5] ।।

भाव-पदं

१२४. छव्विधे भावे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए[6], उवसमिए, खइए[7] खओवसमिए,[8] पारिणामिए, सण्णिवातिए ।।

पडिक्कमण-पदं

१२५. छव्विहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा—उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे, इत्तरिए,[9] आवकहिए, जंकिंचिमिच्छा, सोमणंतिए ।।

णक्खत्त-पदं

१२६. कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते ।।

१२७. असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते ।।

पावकम्म-पदं

१२८. जीवा णं छट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयणिव्वत्तिए,[10] °आउकाइयणिव्वत्तिए,

---

१. अणुभाव° (क, ख, ग) ।

२. ठा० १।१४२-१६३ ।

३. ठा० १।१४३-१५० ।

४. सं० पा०—णियमं जाव पगरेंति ।

५. ठा० ६।११९ ।

६. ओदतिते (क, ख, ग) ।

७. खतिते (क, ख, ग) ।

८. खतोवसमिते (क, ख, ग) ।

९. इत्तिरिते (क, ख, ग) ।

१०. सं०पा०—पुढविकाइयणिव्वत्तिते जाव तस° ।

तेउकाइयणिव्वत्तिए, वाउकाइयणिव्वत्तिए, वणस्सइकाइयणिव्वत्तिए,० तसकायणिव्वत्तिए ।

एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पदं

१२९. छप्पएसिया णं खंधा अणंता पण्णत्ता ॥

१३०. छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

१३१. छसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

१३२. छगुणकालगा पोग्गला जाव[1] छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥

---

[1] ठा० १।२५६ ।

सत्तमं ठाणं

गणावक्कमण-पदं

१. सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा—'सव्वधम्मा रोएमि'[1]। एगइया रोएमि एगइया णो रोएमि। सव्वधम्मा वितिगिच्छामि। एगइया वितिगिच्छामि एगइया णो वितिगिच्छामि। सव्वधम्मा जुहुणामि। एगइया जुहुणामि एगइया णो जुहुणामि। इच्छामि णं भंते! एगल्लविहारपडिमं उवसंपिज्जत्ता णं विहरित्तए॥

विभंगणाण-पदं

२. सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते, तं जहा—एगदिसिं लोगाभिगमे, पंचदिसिं लोगाभिगमे, किरियावरणे जीवे, मुदग्गे जीवे, अमुदग्गे जीवे, रूवी जीवे, सव्वमिणं जीवा।

तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—एगदिसिं[2] लोगाभिगमे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—पंचदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—पढमे विभंगणाणे॥

अहावरे दोच्चे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा[3] पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—पंचदिसिं

---

[1] सव्वधम्मं जाणामि एवं पि एगे अवक्कमे (वृपा)।

[2] एगदिसि (क, ग); एगदिसं (वृ)।

[3] क्वचिद्वाशब्दा न दृश्यन्ते (वृ)।

लोगाभिगमे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—एगदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—दोच्चे विभंगणाणे।

अहावरे तच्चे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाणे अतिवातेमाणे, मुसं वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, परिग्गहं परिगिण्हमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—किरियावरणे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—णो किरियावरणे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—तच्चे विभंगणाणे।

अहावरे चउत्थे विभंगणाणे—जया णं तधारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा[1] °विभंगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता[2] पुढेगत्तं[3] णाणत्तं फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता[4] विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—मुदग्गे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—अमुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—चउत्थे विभंगणाणे।

अहावरे पंचमे विभंगणाणे—जया[5] णं तधारूवस्स समणस्स[6] °वा माहणस्स वा विभंगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता[7] पुढेगत्तं णाणत्तं[8] °फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता° विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि[9] °णं मम अतिसेसे णाणदंसणे° समुप्पण्णे—अमुदग्गे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—मुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—पंचमे विभंगणाणे।

अहावरे छट्ठे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा[10] °विभंगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वा अपरियाइत्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं

---

[1] सं० पा०—माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति।

[2] परितावितित्ता (क, ग)।

[3] पुढविगत्तं (ख)।

[4] फुडित्ता (क, ख); फुट्टित्ता संवट्टित्ता निव्वट्टित्ता (वृपा)।

[5] जधा (क, ग)।

[6] सं० पा०—समणस्स जाव समुप्पज्जति।

[7] अपरितादितित्ता (क, ख)।

[8] सं० पा०—णाणत्तं जाव विउव्वित्ता।

[9] सं० पा०—अत्थि जाव समुप्पण्णे।

[10] सं० पा०—माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति।

फुसित्ता[1] °फुरित्ता फुट्टित्ता° विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—रूवी जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—अरूवी जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—छट्ठे विभंगणाणे।

अहावरे सत्तमे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासई सुहुमेणं वायुकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं[2] वेयंतं[3] चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणमंतं। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—सव्वमिणं जीवा। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—जीवा चेव, अजीवा चेव। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु। तस्स णं इमे चत्तारि जीवणिकाया णो सम्ममुवगता[4] भवंति, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया। इच्चेतेहिं चउहिं जीवणिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ—सत्तमे विभंगणाणे॥

जोणिसंगह-पदं

३. सत्तविधे जोणिसंगहे[5] पण्णत्ते, तं जहा—अंडजा, पोतजा, जराउजा, रसजा, संसेयगा[6], संमुच्छिमा, उब्भिगा॥

गति-आगति-पदं

४. अंडगा सत्तगतिया सत्तागतिया पण्णत्ता, तं जहा—अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडगेहिंतो वा, पोतजेहिंतो वा[7], °जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, संसेयगेहिंतो वा, संमुच्छिमेहिंतो वा°, उब्भिगेहिंतो वा उववज्जेज्जा।

सच्चेव[8] णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा[9], °जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, संसेयगत्ताए वा, संमुच्छिमत्ताए वा°, उब्भिगत्ताए वा गच्छेज्जा॥

५. पोतगा[10] सत्तगतिया सत्तागतिया एवं चेव। सत्तण्हवि गतिरागती भाणियव्वा जाव[11] उब्भियत्ति॥

---

१. सं० पा०—फुसित्ता जाव विकुव्वित्ता।

२. एतंतं (क, ख, ग)।

३. वेतंतं (क, ख, ग)।

४. °मुवागता (क, ख, ग)।

५. °संगधे (क)।

६. संसेत्तगा (क, ग)।

७. सं० पा०—पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिगेहिंतो।

८. सेच्चेव (ख)।

९. सं० पा०—पोतगत्ताते वा जाव उब्भिगत्ताते।

१०. पोत्तगा (क, ग)।

११. ठा० ७।३।

संगहट्ठाण-पदं

६. आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति।

२. [1]°आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आधारातिणियाए कितिकम्मं सम्मं पउंजित्ता भवति।

३. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति°।

५. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणापुच्छियचारी[2]।

६. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणुप्पण्णाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवति।

७. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि पुव्वुप्पण्णाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति, णो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति।।

असंगहट्ठाण-पदं

७. आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पउंजित्ता भवति।

२. [3]°आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आधारातिणियाए कितिकम्मं णो सम्मं पउंजित्ता भवति।

३. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति।

५. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी यावि हवइ, णो आपुच्छियचारी।

६. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणुप्पण्णाइं उवगरणाइं णो सम्मं उप्पाइत्ता भवति।

---

[1] सं० पा०—एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरिय।

[2] °चारी यावि भवति (क, ख, ग)।

[3] सं० पा०—एवं जाव पच्चुप्पण्णाणं।

७. आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि॰ पच्चुप्पण्णाणं उवगरणाणं णो सम्मं सारक्खेत्ता संगोवेत्ता भवति ॥

पडिमा-पदं

८. सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ ॥

९. सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ ॥

१०. सत्त उग्गहपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

आयारचूला-पदं

११. सत्तसत्तिक्कया पण्णत्ता ॥

१२. सत्त महज्झयणा पण्णत्ता ॥

पडिमा-पदं

१३. सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एकूणपण्णत्ताए राइंदिएहिं एगेण य छण्णउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्तं[1] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया[2] यावि भवति ॥

अहेलोगट्ठिति-पदं

१४. अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ ॥

१५. सत्त घणोदधीओ पण्णत्ताओ ॥

१६. सत्त घणवाता पण्णत्ता ॥

१७. सत्त तणुवाता पण्णत्ता ॥

१८. सत्त ओवासंतरा पण्णत्ता ॥

१९. एतेसु णं सत्तसु ओवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया ॥

२०. एतेसु णं सत्तसु तणुवातेसु सत्त घणवाता पइट्ठिया ॥

२१. एतेसु णं सत्तसु घणवातेसु सत्त घणोदधी पतिट्ठिया ॥

२२. एतेसु णं सत्तसु घणोदधीसु 'पिंडलग-पिहुल-संठाण-संठियाओ'[3] सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा जाव सत्तमा ॥

२३. एतासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—घम्मा, वंसा, सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवती ॥

---

[1] अहासुत्ता (क, ख, ग); सं॰ पा॰—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

[2] समवायाङ्गे (४९।१) 'आणाए आराहिया' पाठोऽस्ति ।

[3] छत्तातिछत्तसंठाणसंठियाओ (वृ); पिंडलग-पिहुलसंठाणसंठिआओ, पिहुलपिहुलसंठाण-संठियाओ (वृपा) ।

२४. एतासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, 'तमा, तमतमा'[1] ॥

बायरवाउकाइय-पद

२५. सत्तविहा बायरवाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पाईणवाते, पडीणवाते[2], दाहिणवाते, उदीणवाते, उड्ढवाते, अहेवाते, विदिसिवाते ॥

संठाण-पदं

२६. सत्त संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—दीहे, रहस्से, वट्टे, तंसे, चउरंसे, पिहुले, परिमंडले ॥

भयट्ठाण-पदं

२७. सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगभए[3], परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए ॥

छउमत्थ-पदं

२८. सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तं जहा—पाणे अइवाएत्ता भवति । मुसं वइत्ता भवति । 'अदिण्णं आदित्ता'[4] भवति । सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति । पूयासक्कारं[5] अणुवूहेत्ता भवति । इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति । णो जहावादी[6] तहाकारी[7] यावि भवति ॥

केवलि-पदं

२९. सत्तहिं ठाणेहिं केवलीं जाणेज्जा, तं जहा—णो पाणे अइवाइत्ता भवति[8] । °णो मुसं वइत्ता भवति । णो अदिण्णं आदित्ता भवति । णो सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति । णो पूयासक्कारं अणुवूहेत्ता भवति । इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता णो पडिसेवेत्ता भवति° । जहावादी तहाकारी यावि भवति ॥

गोत्त-पदं

३०. सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता, तं जहा—कासवा, गोतमा, वच्छा, कोच्छा, कोसिआ, मंडवा, वासिट्ठा ॥

३१. जे कासवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते कासवा, ते संडिल्ला, ते गोला, ते वाला, ते मुंजइणो, ते पव्वतिणो[9], ते वरिसकण्हा ॥

---

[1] तमप्पभा तमतमप्पभा (क) ।

[2] पाडी° (क) ।

[3] °भते (क, ख, ग) ।

[4] अदिन्नमदितित्ता (क, ग) ।

[5] पूता° (क, ख, ग) ।

[6] जधा° (क, ख, ग) ।

[7] तधा° (क, ख, ग) ।

[8] सं० पा०–अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती ।

[9] पव्वपेच्छतिणो (क्व) ।

३२. जे गोतमा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते गोतमा, ते गग्गा, ते भारद्दा, ते अंगिरसा, ते सक्कराभा, ते भक्खराभा, ते उदत्ताभा[1] ।।

३३. जे वच्छा ते सत्तविधा, पण्णत्ता, तं जहा—ते वच्छा, ते अग्गेया, ते मित्तेया[2], ते सामलिणो, ते सेलयया[3], ते अट्ठिसेणा, ते वीयकण्हा ।।

३४. जे कोच्छा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते कोच्छा, ते मोग्गलायणा, ते पिंगलायणा[4], ते कोडिणो [ण्णा ?], ते मडलिणो, ते हारिता, ते सोमया[5] ।।

३५. जे कोसिआ ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते कोसिआ, ते कच्चायणा, ते सालंकायणा, ते गोलिकायणा, ते पक्खिकायणा, ते अग्गिच्चा, ते लोहिच्चा ।।

३६. जे मंडवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते मंडवा, ते आरिट्ठा, ते संमुता,[6] ते तेला, ते एलावच्चा, ते कंडिल्ला,[7] ते खारायणा[8] ।।

३७. जे वसिट्ठा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते वासिट्ठा, ते उंजायणा, ते जारुकण्हा,[9] ते वग्घावच्चा, ते कोंडिण्णा, ते सण्णी, ते पारासरा ।।

णय-पदं

३८. सत्त मूलणया पण्णत्ता, तं जहा—णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसुते, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूते ।।

सरमंडल-पदं

३९. सत्त सरा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सज्जे रिसभे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे ।
धेवते[10] चेव णेसादे,[11] सरा सत्त वियाहिता ।।१।।

४०. एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

सज्जं तु अग्गजिब्भाए, उरेण रिसभं सरं ।
कंठुग्गतेण गंधारं, मज्झजिब्भाए मज्झिमं ।।१।।
णासाए पंचमं बूया, दंतोट्ठेण य धेवतं[12] ।
'मुद्धाणेण य'[13] णेसादं, सरट्ठाणा वियाहिता ।।२।।

---

[1] उद्दंसणाभा (क. टिप्पण); उदगत्ताभा (क्व) ।

[2] मित्ता (क, ग); मित्तेत्ता (ख); मित्तिया (क्व) ।

[3] सेलतता (क, ख, ग) ।

[4] पिंगातणा (क, ख, ग) ।

[5] सोमभी (क, ख, ग) ।

[6] समुता (ग) ।

[7] कंतेल्ला (ख) ।

[8] खारातिणा (क); खातणा (ख); खारातेणा (ग) ।

[9] जारेकण्हा (क्व) ।

[10] रेवते (ग, वृपा) ।

[11] णेसाते (क, ख) ।

[12] रेवतं (क, ग) ।

[13] भमुहक्खेवेण (अ० सू० २९९) ।

४१. सत्त सरा जीवणिस्सिता पण्णत्ता, तं जहा—

सज्जं रवति मयूरो, कुक्कुडो रिसभं सरं।
हंसो णदति[1] गंधारं, मज्झिमं तु गवेलगा ॥१॥
अह कुसुमसंभवे काले, कोइला पंचमं सरं।
छट्ठं च सारसा कोंचा, णेसायं सत्तमं गजो[2] ॥२॥

४२. सत्त सरा अजीवणिस्सिता पण्णत्ता, तं जहा—

सज्जं रवति मुइंगो, गोमुही रिसभं सरं।
संखो णदति[3] गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥१॥
चउचलणपतिट्ठाणा, गोहिया पंचमं सरं।
आडंबरो धेवतियं[4], महाभेरी य सत्तमं ॥२॥

४३. एतेसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—

सज्जेण लभति वित्तिं, कतं च ण विणस्सति।
गावो 'मित्ता य पुत्ता य'[5], णारीणं चेव[6] वल्लभो ॥१॥
रिसभेण उ एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य।
वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥

गंधारे गीतजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती[7] कलाहिया[8]।
भवंति कइणो[9] पण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥
मज्झिमसरसंपण्णा[10], भवंति सुहजीविणो।
खायती पियती[11] देती, मज्झिमसरमस्सितो ॥४॥
पंचमसरसंपण्णा[12], भवंति पुढवीपती।
सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणणायगा ॥५॥

---

१. रवइ (अ० सू० ३००)।
२. गओ (अ० सू० ३००)।
३. रवइ (अ० सू० ३०१)।
४. रेवतियं (क, ख, ग)।
५. पुत्ता य मित्ता य (अ० सू० ३०२)।
६. होई (अ० सू० ३०२)।
७. विज्जवित्ती (अ०सू० ३०२); स्थानाङ्गवृत्तौ अनुयोगद्वारस्य मलधारिहेमचन्द्रीयवृत्तौ च 'वर्यवृत्तयः–प्रधानजीविकाः' इति व्याख्यातमस्ति, किन्तु अस्मिन् श्लोके कलाप्रधानानां शास्त्रप्रधानानां च निर्देशो वर्तते, तस्मिन् प्रसङ्गेऽत्र 'विज्जवित्ती' (वैद्यवृत्तयः) इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति। अनुयोगद्वारस्य आदर्शद्वये असौ लब्ध एव। वृत्तिकारयोः सम्मुखे 'वज्जवित्ती' इति पाठः आसीत्, तेन ताभ्यां 'वर्यवृत्तयः' इति व्याख्या कृता।
८. कलाहिता (क, ख, ग)।
९. कतिणो (क, ख, ग)।
१०. मज्झिमसरमंता उ (अ० सू० ३०२)।
११. पितती (क, ख, ग)।
१२. पंचमसरमंता उ (अ० सू० ३०२)।

धेवतसरसंपण्णा[1], भवंति कलहप्पिया[2] ।
'साउणिया वग्गुरिया, सोयरिया मच्छबंधा य'[3] ॥६॥
'चंडाला मुट्ठिया मेया, जे अण्णे पावकम्मिणो ।
गोघातगा य जे चोरा, णेसायं[4] सरमस्सिता'[5] ॥७॥

४४. एतेसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता, तं जहा—सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे ॥

४५. सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

मंगी कोरव्वीया, हरी य रयणी य सारकंता य ।
छट्ठी य सारसी णाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥१॥

४६. मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरायता[6] ।
अस्सोकंता[7] य सोवीरा, 'अभिरू हवति'[8] सत्तमा ॥१॥

४७. गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

णंदी य खुद्दिमा[9] पूरिमा, य चउत्थी य सुद्धगंधारा ।
उत्तरगंधारावि य, पंचमिया हवति मुच्छा उ ॥१॥
सुट्ठुत्तरमायामा, सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा ।
अह उत्तरायता, कोडिमा य[10] सा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

४८. सत्त सरा कतो संभवंति ? गीतस्स[11] का भवति जोणी ?
कतिसमया[12] उस्साया ? कति वा गीतस्स[13] आगारा ? ॥१॥
सत्त सरा णाभीतो, भवंति गीतं च रुण्णजोणीयं[14] ।
पदसमया[15] ऊसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥२॥

---

[1] रेवत० (क, ख, ग); धेवयसरमंता उ (अ० सू० ३०२) ।

[2] दुहजीविणो (अ० सू० ३०२) ।

[3] साउणिया वाउरिया, सोयरिया य मुट्ठिया (अ० सू० ३०२) ।

[4] णेसातं (क, ख, ग) ।

[5] नेसायसरमंता उ, हवंति हिंसगा नरा ।
जंघाचरा लेहवाहा, हिंडगा भारवाहगा ॥
(अ० सू० ३०२) ।

[6] उत्तरासमा (क, ख, ग); अत्र आदर्शेषु 'उत्तरासमा' इति पाठो विद्यते, किन्तु वस्तुतः अनुयोगद्वारस्वीकृतः 'उत्तरायता' पाठः समीचीनोस्ति, संगीतरत्नाकरेपि एतद् नाम लभ्यते, तेन असौ पाठः अत्रापि स्वीकृतः ।

[7] आसोकंता (ख, ग); आसकंता (अ० सू० ३०५) ।

[8] अभिरूवेति (क) ।

[9] खुड्डिया (अ० सू० ३०६) ।

[10] त (क, ग) ।

[11] गेयस्स (क, ख, ग) ।

[12] कतिसमता (क, ख, ग) ।

[13] गेयस्स (क, ख, ग) ।

[14] रुय० (ख) ।

[15] पादसमता (ख); पायसमा (अ०सू० ३०७) ।

आइमिउ आरभंता, समुव्वहंता य मज्झगारंमि।
अवसाणे ‘य झवेंता’[1], तिण्णि य गेयस्स आगारा ॥३॥

छद्दोसे अट्ठगुणे, तिण्णि य वित्ताइं ‘दो य’[2] भणितीओ।
‘जो णाहिति’[3]सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥४॥

भीतं ‘दूतं रहस्सं’[4], ‘गायंतो मा य गाहि उत्तालं’[5]।
काकस्सरमणुणासं, च होंति गेयस्स छद्दोसा ॥५॥

पुण्णं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहा अविघुट्ठं।
मधुरं समं सुललियं[6], अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥६॥

उर-कंठ-सिर-विसुद्धं[7], च गिज्जते[8] मउय-रिभिअ-पदबद्धं।
समतालपदुक्खेवं[9], सत्तसरसीहरं गेयं[10] ॥७॥

णिद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं।
उवणीतं सोवयारं च, मितं मधुरमेव य ॥८॥

---

[1] त ज्जवेता (ख, ग)।

[2] दोण्णि (अ० सू० ३०७)।

[3] जा णाहिति (ग)।

[4] दुतं उप्पिच्छं (वृपा); दुयमप्पिच्छं (अ० सू० ३०७)।

[5] उत्तालं च कमसो मुणेयव्वं (अ०सू० ३०७)।

[6] सुकुमारं (क, ख, ग); वृत्तिकृता ‘सुकुमारं—ललितं’ इति व्याख्यातम्।

[7] पसत्थं (क, ख, ग)।

[8] गिज्जंते (ख)।

[9] °पडुक्खेवं (क, ख, ग, वृ); आदर्शेषु ‘पडुक्खेवं’ इति पाठो लिखितो लभ्यते, वृत्तावपि मुख्यत्वेनासौ व्याख्यातोस्ति, यथा—तथा समः प्रत्युत्क्षेपः प्रतिक्षेपो वा—मुरजकंशिकाद्यातोद्यानां यो ध्वनिस्तल्लक्षणः नृत्यत्पादक्षेपलक्षणो वा यस्मिंस्तत्समप्रत्युत्क्षेपं समप्रतिक्षेपं वेति (वृत्ति पत्र ३७६)। वृत्तिकारेण ‘पडुक्खेवं’ इति पाठो लब्धस्ततः प्रत्युत्क्षेपः इतिशब्दानुसारी अर्थः कृतः, विकल्परूपेण नृत्यत्पादक्षेपलक्षणः इत्यर्थोपि कृतः। अनुयोगद्वारस्य हारीभद्रीयवृत्तौ ‘पदुक्खेवं’ इति पाठः प्राप्यते। अर्थ संगत्यासौ समीचीनोस्ति। दु-डु वर्णयोः प्राचीनलिप्यां सादृश्येन ‘पदुक्खेवं इति स्थाने ‘पडुक्खेवं’ इति परिवर्तनं जातं सम्भाव्यते।

[10] अनुयोगद्वारे अस्याः गाथायाः अनन्तरं निम्नलिखिता गाथा वर्तते—

अक्खरसमं पदसमं,
तालसमं लयसमं गहसमं च।
निस्ससिउस्ससियसमं,
संचारसमं सरा सत्त ॥
(अ० सू० ३०७)।

अत्र वृत्तिकृता अनुयोगद्वारटीकामाश्रित्य व्याख्या कृतास्ति—इयं च गाथा स्वरप्रकरणोपान्ते ‘तंतिसम’ मित्यादिरधीतापि इहाक्षरसममित्यादि व्याख्यायते, अनुयोगद्वारटीकायामेवमेवदर्शनादिति (वृ)।

सममद्धसमं चेव, सव्वत्थ विसमं च जं ।
तिण्णि वित्तप्पयाराइं[1], चउत्थं णोपलब्भती ॥९॥
सक्कता पागता चेव, 'दोण्णि य'[2] भणिति आहिया ।
सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता ॥१०॥
केसी गायति[3] मधुरं ? केसि गायति खरं च रुक्खं च ?
केसी गायति चउरं ? 'केसि विलंबं'[4] ? दुतं केसी ?
विस्सरं पुण केरिसी ? ॥११॥
सामा गायइ मधुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च ।
गोरी गायति चउरं, काण विलंबं दुतं अंधा ॥
विस्सरं पुण पिंगला ॥१२॥
तंतिसमं तालसमं, पादसमं लयसमं गहसमं च ।
णीससिऊससियसमं, संचारसमा सरा सत्त ॥१३॥
सत्त सरा तओ गामा, मुच्छणा एक्कविंसती[5] ।
ताणा एगूणपण्णासा, समत्तं सरमंडलं ॥१४॥

कायकिलेस-पदं

४९. सत्तविधे कायकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणातिए[6], उक्कुडुयासणिए, पडिमठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए, दंडायतिए[7], लगंडसाई ॥

खेत्त-पव्वय-णदी-पदं

५०. जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे[8], रम्मगवासे, महाविदेहे ॥

५१. जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे[9], णीलवंते, रुप्पी, सिहरी, मंदरे ॥

५२. जंबुद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति[10], तं जहा—गंगा, रोहिता, हरी, सीता, णरकंता, सुवण्णकूला रत्ता ॥

५३. जंबुद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—सिंधू, रोहितंसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता[11], रुप्पकूला, रत्तावती[12]॥

---

[1] वित्तप्पयायाइं (ख) ।
[2] दुव्विधा (क, ग) ।
[3] गातति (क, ख, ग) ।
[4] केसी य विलंबियं (अ० सू० ३०७) ।
[5] ०वीसती (ख) ।
[6] ठाणातिते (क, ख, ग) ।
[7] दंडाततिते (क, ग); दंडातिए (ख) ।
[8] हरिवंसे (क, ग); अशुद्धं प्रतिभाति ।
[9] निसभे (क, ग) ।
[10] समुप्पेंति (क, ख, ग) ।
[11] नारीकंता (ख, ग) ।
[12] रत्तवती (क) ।

५४. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे[1], °एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे°, महाविदेहे ॥

५५. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते[2], °महाहिमवंते, णिसढे, णीलवंते, रुप्पी, सिहरी°, मंदरे ॥

५६. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—गंगा[3], °रोहिता, हरी, सीता, णरकंता, सुवण्णकूला°, रत्ता ॥

५७. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—सिंधू[4], °रोहितंसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता, रुप्पकूला°, रत्तावती ॥

५८. धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं[5] चेव, णवरं—पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं । सेसं तं चेव ॥

५९. पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा तहेव[6], नवरं—पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति । सेसं तं चेव ॥

६०. एवं पच्चत्थिमद्धेवि नवरं—पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समप्पेंति । सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णदीओ[7] य भाणितव्वाणि ॥

कुलगर-पदं

६१. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥

६२. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था—

पढमित्थ विमलवाहण, चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे ।
तत्तो य पसेणइए[8], मरुदेवे चेव णाभी य ॥१॥

---

[1] सं० पा०—भरहे जाव महाविदेहे ।

[2] सं० पा०—चुल्लहिमवंते जाव मंदरे ।

[3] सं० पा०—गंगा जाव रत्ता ।

[4] सं० पा०—सिंधू जाव रत्तावती ।

[5] ठा० ७।५४-५७ ।

[6] ठा० ७।५४-५७ ।

[7] णतीतो (क, ख, ग) ।

[8] पसेणइ पुण (ख) ।

६३. एएसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ हुत्था, तं जहा—

चंदजस चंदकंता, सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य।
सिरिकंता मरुदेवी, कुलकरइत्थीण णामाइं ॥१॥

६४. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति—

मित्तवाहण[1] सुभोमे य, सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमिस्सेण होक्खती ॥१॥

६५. विमलवाहणे णं कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिंसु, तं जहा—

मतंगया[2] य भिंगा, चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा।
मणियंगा य अणियणा, सत्तमगा कप्परुक्खा य ॥१॥

६६. सत्तविधा दंडनीति पण्णत्ता, तं जहा—हक्कारे, मक्कारे, धिक्कारे, परिभासे, मंडलबंधे, चारए, छविच्छेदे[3] ॥

चक्कवट्टिरयण-पदं

६७. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त एगिंदियरतणा पण्णत्ता, तं जहा—चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे, दंडरयणे, असिरयणे, मणिरयणे, काकणिरयणे[4] ॥

६८. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदियरतणा पण्णत्ता, तं जहा—सेणावतिरयणे, गाहावतिरयणे, वड्ढइरयणे, पुरोहितरयणे, इत्थिरयणे, आसरयणे, हत्थिरयणे ॥

दुस्समा-लक्खण-पदं

६९. सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाधू पुज्जंति, साधू ण पुज्जंति, गुरूहिं जणो मिच्छं पडिवण्णो, मणोदुहता, वइदुहता ॥

सुसमा-लक्खण-पदं

७०. सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले ण वरिसइ, काले

---

[1] मित्तप्पभे (क, ग)।

[2] मत्तंगता (क, ख, ग); यद्यपि आदर्शेषु वृत्तावपि चात्र 'मत्तंगता' पाठो लभ्यते, तथापि अर्थसमीक्षया 'मतंगया' पाठः समीचीनः प्रतिभाति। 'मदंगया' इत्यस्य स्थाने 'त' श्रुत्या 'मतंगया' इति पाठो जातः, तस्यैव 'मत्तंगता' इत्याकारे परिवर्तनं जातमिति संभाव्यते। तेनैव वृत्तिकृता 'मत्तांग' शब्दो व्याख्यातः—मत्तं–मदस्तस्य कारणत्वान्मद्यमिह मत्तशब्देनोच्यते तस्याङ्गभूताः–कारणभूतास्तदेव वाऽङ्गं—अवयवो येषां ते मत्ताङ्गकाः (वृ)।

[3] छविच्छेदे (ख)।

[4] कागिणि° (ग)।

वरिसइ, असाधू ण पुज्जंति, साधू पुज्जंति, गुरूहिं जणो सम्मं पडिवण्णो, मणोसुहता, वइसुहता ।

जीव-पदं

७१. सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ।

आउभेद-पदं

७२. सत्तविधे आउभेदे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अज्झवसाण-णिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाते ।
फासे आणापाणू 'सत्तविधं भिज्जए'[1] आउं ॥१॥

जीव -पदं

७३. सत्तविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सतिकाइया, तसकाइया, अकाइया ।

अहवा—सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेसा[2], °णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा °, सुक्कलेसा, अलेसा ।।

बंभदत्त-पदं

७४. बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अधेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णे ।।

मल्ली-पव्वज्जा-पदं

७५. मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं जहा—मल्ली विदेहरायवरकण्णगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाये अंगराया, रुप्पी कुणालाधिपती, संखे कासीराया, अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचालराया ।।

दंसण-पदं

७६. सत्तविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणे, मिच्छद्दंसणे, सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे[3] ।।

---

[1] सत्तविधि भिज्जए (क, ग) ।

[2] सं० पा०—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ।

[3] केवलि° (क, ग) ।

छउमत्थ-केवलि-पदं

७७. छउमत्थ-वीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेदेति, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं[1], वेयणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं, अंतराइयं ।।

७८. सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं ।

एयाणि चेव उप्पण्णणाण[2]°दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं° जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं[3], °अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं°, गंधं ।।

महावीर-पदं

७९. समणे भगवं महावीरे वइरोसभणारायसंघयणे समचउरंस-संठाण-संठिते सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ।।

विकहा-पदं

८०. सत्त विकहाओ[4] पण्णत्ताओ, तं जहा—इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालुणिया[5], दंसणभेयणी, चरित्तभेयणी ।।

आयरिय-उवज्भाय-अइसेस-पदं

८१. आयरिय-उवज्भायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आयरिय-उवज्भाए अंतो उवस्सयस्स[6] पाए[7] णिगिज्भिय-णिगिज्भिय पप्फोडेमाणे वा पमज्जमाणे वा णातिक्कमति ।

२. [8]°आयरिय-उवज्भाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति ।

३. आयरिय-उवज्भाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा, इच्छा णो करेज्जा ।

४. आयरिय-उवज्भाए अंतो उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा एगगो वसमाणे णातिक्कमति ।

५. आयरिय-उवज्भाए° बाहिं उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा [एगओ ?] वसमाणे णातिक्कमति ।

---

[1] दरिसणा° (क, ग) ।

[2] सं० पा०—उप्पण्णणाण जाव जाणति ।

[3] सं० पा०—धम्मत्थिकायं जाव गंधं ।

[4] विकधातो (क, ग) ।

[5] मिउकालणिता (क,ग);मिउकोलुणिता (ख) ।

[6] उवस्सगस्स (क, ख, ग) ।

[7] पाते (क, ख, ग) ।

[8] सं० पा०—एवं जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं ।

६. उवकरणातिसेसे ।
७. भत्तपाणातिसेसे ।।

संजम-असंजम-पदं

८२. सत्तविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे[1], °आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे, वणस्सइकाइयसंजमे°, तसकाइयसंजमे, अजीवकाइयसंजमे ।।

८३. सत्तविधे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे[2], °आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे, वणस्सइकाइयअसंजमे°, तसकाइयअसंजमे, अजीवकाइयअसंजमे[3] ।।

आरंभ-पदं

८४. सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयआरंभे[4], आउकाइयआरंभे, तेउकाइयआरंभे, वाउकाइयआरंभे, वणस्सइकाइयआरंभे, तसकाइयआरंभे°, अजीवकाइयआरंभे ।।

८५. [5]°सत्तविहे अणारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअणारंभे[6] ।।
८६. सत्तविहे सारंभे[7] पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसारंभे[8] ।।
८७. सत्तविहे असारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसारंभे[9] ।।
८८. सत्तविहे समारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसमारंभे[10] ।।
८९. सत्तविहे असमारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसमारंभे[11]° ।।

जोणि-ठिइ-पदं

९०. अध भंते ! अदसि-कुसुम्भ-कोद्दव-कंगु-रालग-'वरट्ट-कोद्दूसग'[12]-सण-सरिसव-मूलगबीयाणं—एतेसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं[13] °मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं° पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं[14] सत्त संवच्छराइं । तेण पर जोणी

---

[1] सं० पा०—पुढविकातितसंजमे जाव तस°।
[2] सं० पा०—पुढविकातितअसंजमे जाव तस° ।
[3] अजीवकाय° (ख, ग) ।
[4] सं० पा०—पुढविकातितआरंभे जाव अजीव°।
[5] सं० पा०—एवमणारंभेवि जाव अजीवकाय-असमारंभे ।
[6] पू०—ठा० ७।८४ ।
[7] संरंभे (क) ।
[8]-[11] पू०—ठा० ७।८४ ।
[12] वराकोद्दूसगा (ख, ग); भगवत्यां (६।१३१) 'वरग' इति पाठोस्ति ।
[13] सं० पा०—पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं ।
[14] उक्कोसं (क, ग) ।

पमिलायति[1], °तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं° जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ।।

ठिति-पदं

९१. बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ।।

९२. तच्चाए णं वालुयप्पभाए[2] पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

९३. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

अग्गमहिसी-पदं

९४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

९५. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

९६. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

देव-पदं

९७. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

९८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

९९. सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१००. 'सारस्सयमाइच्चाणं [देवाणं ?] सत्त देवा सत्तदेवसता पण्णत्ता ।।

१०१. गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता'[3] ।।

१०२. सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१०३. माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सातिरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१०४. बंभलोगे कप्पे जहण्णेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

१०५. बंभलोय-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

१०६. भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

---

[1] सं० पा०—पमिलायति जाव जोणी० ।

[2] वालुप्पभाते (ख, ग) ।

[3] तुलना—भ० ६।११४ ।

१०७. [1]°वाणमंतराणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

१०८. जोइसियाणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

१०९. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं 'भवधारणिज्जा सरीरगा'[2] उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

णंदीसरवर-पदं

११०. णंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवे, धायइसंडे, पोक्खरवरे, वरुणवरे, खीरवरे, घयवरे, खोयवरे ।।

१११. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे, कालोदे[3], पुक्खरोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घओदे, खोओदे[4] ।।

सेढि-पदं

११२. सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगतोवंका, दुहतोवंका, एगतोखहा[5], दुहतोखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ।।

अणिय-अणियाहिवइ-पदं

११३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती[6] पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए, णट्टाणिए, गंधव्वाणिए ।

[7]°दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती°, किण्णरे रधाणियाधिवती, रिट्ठे णट्टाणियाधिवती, गीतरती गंधव्वाणियाधिवती ।।

११४. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[8] जाव[9] गंधव्वाणिए ।

महद्दुमे पायत्ताणियाधिपती जाव[10] किंपुरिसे रधाणियाधिपती, महारिट्ठे[11] णट्टाणियाधिपती, गीतजसे गंधव्वाणियाधिपती ।।

---

[1] सं० पा०—एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं ।

[2] भवधारणिज्जगा सरीरा (क, ख, ग) ।

[3] कालोते (क, ख, ग) ।

[4] खोतोदे (क, ख, ग) ।

[5] °खुहा (ख) ।

[6] अणित्ता° (ख) ।

[7] सं० पा०—एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किण्णरे ।

[8] पत्ताणिते (क, ग) ।

[9] ठा० ७।११३ ।

[10] ठा० ५।५८ ।

[11] महारिहे (क, ख, ग) ।

११५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव[1] गंधव्वाणिए।
भद्दसेणे[2] पायत्ताणियाधिपतो जाव[3] आणंदे रधाणियाधिपती, णंदणे णट्टाणियाधिपती, तेतली गंधव्वाणियाधिपती ॥

११६. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा —पायत्ताणिए जाव[4] गंधव्वाणिए।
दक्खे पायत्ताणियाहिवती जाव[5] णंदुत्तरे रहाणियाहिवई, रती णट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणियाहिवई ॥

११७. [6]°जधा धरणस्स तधा[7] सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[8] घोसस्स ॥

११८. जधा भूताणंदस्स तधा[9] सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[10] महाघोसस्स° ॥

११९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव[11] रहाणिए, णट्टाणिए, गंधव्वाणिए।
हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिपती जाव[12] माढरे रधाणियाधिपती, सेते णट्टाणियाहिवती, तुंबुरु[13] गंधव्वाणियाधिपती ॥

१२०. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव[14] गंधव्वाणिए।
लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवती जाव[15] महासेते णट्टाणियाहिवती, रते गंधव्वाणिताधिपती ॥

१२१. [16]°जधा सक्कस्स तहा[17] सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[18] आरणस्स ॥

---

[1] ठा० ७।११३।

[2] रुद्दसेणे (क, ख, ग)। पंचमस्थाने (सू० ५९) पादातानीकाधिपतेर्नाम 'भद्दसेणे' विद्यते, तस्यानुसारेणात्रापि 'भद्दसेणे' पाठो युज्यते। संभवतो लिपिदोषेण 'भ' स्थाने 'रु' वर्णो जातः अथवा कश्चिद् वाचनाभेदः स्यात्। आवश्यकचूर्णौ 'रुद्दसेण' इति नाम लभ्यते—दाहिणिल्लाणं पादत्ताणियाधिवती रुद्दसेणो (पृ० १४६) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ५) 'भद्दसेणे' पाठो लभ्यते।

[3] ठा० ५।५९।

[4] ठा० ७।११३।

[5] ठा० ५।६०।

[6] सं० पा०—एवं जाव घोसमहाघोसाणं णेयव्वं।

[7] ठा० ७।११५।

[8] ठा० २।३५५-३६१।

[9] ठा० ७।११६।

[10] ठा० २।३५५-३६१।

[11] ठा० ५।६४।

[12] ठा० ५।६४।

[13] तंबुरू (क); तंबुरु (ख); तंपुरू (ग)।

[14] ठा० ७।११९।

[15] ठा० ५।६५।

[16] सं० पा०—सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुतस्सवि णेतव्वं।

[17] पू०—ठा० ७।११९।

[18] ठा० २।३८१- ३८४।

१२२. जधा ईसाणस्स तहा[1] सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[2] अच्चुतस्स° ॥

१२३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा ॥

१२४. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता। जावतिया पढमा कच्छा तव्विगुणा दोच्चा कच्छा। जावतिया दोच्चा कच्छा तव्विगुणा तच्चा कच्छा। एवं जाव जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा ॥

१२५. एवं[3] बलिस्सवि, णवरं—महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ। सेसं तं चेव[4] ॥

१२६. धरणस्स एवं[5] चेव, णवरं—अट्ठावीसं देवसहस्सा। सेसं तं चेव[6] ॥

१२७. जधा धरणस्स एवं जाव[7] महाघोसस्स, णवरं—पायत्ताणियाधिपती अण्णे, ते पुव्वभणिता ॥

१२८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा[8] जाव[9] अच्चुतस्स। णाणत्तं पायत्ताणियाधिपतीणं। ते पुव्वभणिता। देवपरिमाणं इमं—सक्कस्स चउरासीतिं देवसहस्सा, ईसाणस्स असीतिं[10] देवसहस्साइं जाव[11] अच्चुतस्स लहुपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जाव[12] जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा। देवा इमाए गाथाए अणुगंतव्वा -

चउरासीति असीति, बावत्तरी सत्तरी य सट्ठी य।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा य दससहस्सा ॥१॥

वयणविकप्प-पदं

१२९. सत्तविहे वयणविकप्पे[13] पण्णत्ते, तं जहा—आलावे, अणालावे, उल्लावे, अणुल्लावे[14], संलावे, पलावे, विप्पलावे ॥

विणय-पदं

१३०. सत्तविहे विणए पण्णत्ते, तं जहा—णाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

---

१. ठा० ७।१२०।
२. ठा० २।३८१-३८४।
३. ठा० ७।१२३।
४. ठा० ७।१२४।
५. ठा० ७।१२३।
६. ठा० ७।१२४।
७. ठा० २।३५४-३६२।
८. ठा० ७।१२३, १२४।
९. ठा० २।३८०-३८४।
१०. असीति (क, ग)।
११. ठा० २।३८१-३८४।
१२. ठा० ७।१२४।
१३. वतणविकप्पे (क, ख, ग)।
१४. अणुलावे (वृपा)।

१३१. पसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे, अभूताभिसंकणे[1] ।

१३२. अपसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे[2], छविकरे, भूताभिसंकणे ।।

१३३. पसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे[3], °अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे°, अभूताभिसंकणे ।।

१३४. अपसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—पावए[4], °सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे, छविकरे°, भूताभिसंकणे ।।

१३५. पसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं णिसीयणं, आउत्तं तुअट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणता[5] ।।

१३६. अपसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणं[6], °अणाउत्तं ठाणं, अणाउत्तं णिसीयणं, अणाउत्तं तुअट्टणं, अणाउत्तं उल्लंघणं, अणाउत्तं पल्लंघणं°, अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणता ।।

१३७. लोगोवयारविणए[7] सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भासवत्तितं[8], परच्छंदाणुवत्तितं, कज्जहेउं, कतपडिकतिता, अत्तगवेसणता, देसकालण्णता, सव्वत्थेसु अपडिलोमता ।।

समुग्घात-पदं

१३८. सत्त समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेजससमुग्घाए[9], आहारगसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाए[10] ।।

१३९. मणुस्साणं सत्त समुग्घाता पण्णत्ता एवं चेव ।।

पवयणणिण्हग-पदं

१४०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणणिण्हगा[11] पण्णत्ता,

---

१. अभिभूता° (क, ग) ।

२. अण्हकरे (क, ख, ग) ।

३. सं० पा०—असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे ।

४. सं० पा०—पावते जाव भूताभिसंकणे ।

५. सव्विंदित° (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—गमणं जाव अणाउत्तं ।

७. लोगोवतारविणते (क, ख, ग) ।

८. आभा° (क, ग) ।

९. तेयग° (ख) ।

१०. केवल° (ख) ।

११. पवतण° (क, ख, ग) ।

तं जहा—बहुरता, जीवपएसिया[1], अवत्तिया[2], सामुच्छेइया[3], दोकिरिया[4], तेरासिया[5], अबद्धिया[6] ।।

१४१. एएसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्त धम्मायरिया[7] हुत्था, तं जहा—जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छलुए, गोट्ठामाहिले ।।

१४२. एतेसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्तउप्पत्तिणगरा हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सावत्थी उसभपुरं, सेयविया मिहिलउल्लगातीरं[8] ।
पुरिमंतरंजि दसपुरं, णिण्हगउप्पत्तिणगराइं ।।१।।

अणुभाव-पदं

१४३. सातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा[9], °मणुण्णा गंधा, मणुण्णा रसा°, मणुण्णा फासा, मणोसुहता, वइसुहता ।।

१४४. असातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—अमणुण्णा सद्दा[10], °अमणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गंधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा फासा, मणोदुहता°, वइदुहता ।।

णक्खत्त-पदं

१४५. महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ।।

१४६. अभिईयादिया[11] णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया[12] पण्णत्ता, तं जहा—अभिई[13], सवणो, धणिट्ठा, सतभिसया[14], पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया, रेवती ।।

---

१. जीवपतेसिता (क, ख, ग) ।
२. अवत्तिता (क, ख, ग) ।
३. सामुच्छेइता (क, ख, ग) ।
४. दोकिरिता (क, ख, ग) ।
५. तेरासिता (क, ख, ग) ।
६. अवट्ठिता (क); अवद्धिता (ख, ग) ।
७. धम्मातरिता (क, ख, ग) ।
८. मिहला उल्लग° (ख) ।
९. सं० पा०—रूवा जाव मणुण्णा ।
१०. सं० पा०—सद्दा जाव वतिदुहता ।
११. अभितीयादिता (क, ख, ग); इह चार्थे पञ्च मतानि सन्ति, यत आह चंद्रप्रज्ञप्त्याम्—“तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—कत्तिआइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता” एवमन्ये मघादीन्यपरे धनिष्ठादीनि इतरेऽश्विन्यादीनि अपरे भरण्यादीनि, दक्षिणापरोत्तरद्वाराणि च सप्त सप्त यथामतं क्रमेणैव समवसेयानीति, ‘वयं पुण एवं वयामो—अभियाइया णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एवं दक्षिणद्वारिकादीन्यपि क्रमेणैवेति, तदिह षष्ठं मतमाश्रित्य सूत्राणि प्रवृत्तानि, लोके तु प्रथमं मतमाश्रित्यैतदभिधीयते’ (वृ) ।
१२. पुव्वदारिता (क, ख, ग) ।
१३. अभिती (क, ख, ग) ।
१४. सतभिसता (क, ख, ग) ।

१४७. अस्सिणियादिया[1] णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—अस्सिणी, भरणी, कित्तिया[2], रोहिणी, मिगसिरे[3], अद्दा, पुणव्वसू ।।

१४८. पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—पुस्सो, असिलेसा[4], मघा, पुव्वाफग्गुणी[5], उत्तराफग्गुणी, हत्थो, चित्ता ।।

१४९. सातियाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—साती, विसाहा, अणुराहा, जेट्ठा, मूलो, पुव्वासाढा, उत्तरासाढा ।।

कूड-पदं

१५०. जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सिद्धे सोमणसे या[6], बोद्धव्वे[7] मंगलावतीकूडे ।
देवकुरु विमल कंचण, विसिट्ठकूडे य[8] बोद्धव्वे ।।१।।

१५१. जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे य[9] गंधमायण, बोद्धव्वे गंधिलावतीकूडे ।
उत्तरकुरु फलिहे, लोहितक्खे आणंदणे चेव ।।१।।

कुलकोडी-पदं

१५२. बिइंदियाणं[10] सत्त जाति[11]-कुलकोडि-जोणीपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

पावकम्म-पदं

१५३. जीवा णं सत्तट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—णेरइयनिव्वत्तिते[12], °तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणिणीणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, मणुस्सीणिव्वत्तिते,° देवणिव्वत्तिते देवीणिव्वत्तिते ।

एवं—चिण-[13]°उवचिण-बंध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ।।

पोग्गल-पदं

१५४. सत्तपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ।।

१५५. सत्तपएसोगाढा पोग्गला जाव[14] सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।

———

---

१. अस्सणितादिता (क, ख, ग) ।

२. कित्तिता (क, ख, ग) ।

३. मिगसिरं (ख) ।

४. अस्सिलेसा (क, ग) ।

५. पुव्व° (क, ग) ।

६. ता (क, ख, ग); तह (क्व) ।

७. बोधव्वे (क, ख, ग) ।

८. त (क, ख, ग) ।

९. त (क, ख, ग) ।

१०. बितिदिताणं (क, ख, ग) ।

११. जाती (क, ख, ग) ।

१२. स° पा°—णेरतियणिव्वत्तिते जाव देवणिव्वत्तिते ।

१३. स° पा°—चिण जाव णिज्जरा ।

१४. ठा° १।२५४-२५६ ।

अट्ठमं ठाणं

एगल्लविहार-पडिमा-पदं

१. अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तं जहा—सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं, अप्पाधिगरणे, धितिमं, वीरियसंपण्णे ।।

जोणिसंगह-पदं

२. अट्ठविधे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडगा, पोतगा[1], °जराउजा, रसजा, संसेयगा संमुच्छिमा,° उब्भिगा, उववातिया[2] ।।

गति-आगति-पदं

३. अंडगा अट्ठगतिया अट्ठागतिया पण्णत्ता, तं जहा—अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोतएहिंतो वा[3], °जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, संसेयगेहिंतो वा, संमुच्छिमेहिंतो वा, उब्भिएहिंतो वा°, उववातिएहिंतो वा उववज्जेज्जा ।

से चेव णं से[4] अंडए[5] अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा[6], °जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, संसेयगत्ताए वा, संमुच्छिमत्ताए वा, उब्भियत्ताए वा,° उववातियत्ताए वा गच्छेज्जा ।।

४. एवं पोतगावि जराउजावि सेसाणं गतिरागती[7] णत्थि ।।

कम्म-बंध-पदं

५. जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—

---

[1] सं० पा०—पोतगा जाव उब्भिगा ।

[2] उववातिता (क, ख, ग) ।

[3] सं० पा०—पोततेहिंतोवा जाव उववातितेहिंतो ।

[4] × (क, ख, ग) ।

[5] अंडते (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—पोतगत्ताते वा जाव उववातिततात्ते ।

[7] गतिरागतिश्च नास्तीत्यष्टप्रकारा इति शेषः (वृ) ।

णाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं[1], णामं गोत्तं, अंतराइयं[2] ।।

६. णेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा एवं चेव ।।

७. एवं णिरंतरं जाव[3] वेमाणियाणं ।।

८. जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा एवं चेव ।

एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव ।

'एते छ चउवीसा दंडगा'[4] भाणियव्वा ।।

आलोयणा-पदं

९. अट्ठहिं ठाणेहिं मायी[5] मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा[6] •णो णिंदेज्जा णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं॰ पडिवज्जेज्जा, तं जहा—करिंसु[7] वाहं, करेमि वाहं, करिस्सामि वाहं, अकित्ती वा मे सिया, अवण्णे वा मे सिया, अविणए[8] वा मे सिया, कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ ।।

१०. अट्ठहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[9], •पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं॰ पडिवज्जेज्जा, तं जहा—

---

[1] आउतं (क, ख ग) ।

[2] अंतरातितं (क, ख, ग) ।

[3] ठा० १।१४२-१६३ ।

[4] अस्य पाठस्य वृत्तिर्निम्नप्रकारा वर्तते—यतश्चयनादिपदानि षड् अतः सामान्यसूत्रपूर्वकाः षडेव दण्डकाः (वृ) । इयं वृत्तिः उपलब्धपाठानुसारिणी नास्ति । अस्या अनुसारेण पाठः इत्थं प्रतीयते—'एए छ, दंडगा भाणियव्वा' ।

[5] माती (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा ।

[7] ठा० ३।३३८ सूत्रे 'अकरिंसु' पाठो विद्यते ।

[8] अवणए (ख, ग); ३।३३९ सूत्रे 'अविणए' पाठोस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य तुल्यमस्ति प्रकरणम् । अत्र 'अवणए' पाठोस्ति । वृत्तिकृता प्रथमे स्थाने 'अविनयः साधुकृतो मे स्यात्' द्वितीयस्मिन् स्थाने 'अपनयो वा पूजा सत्कारादेरपनयनं मे स्यादिति' लिखितम् । इतिदर्शनेन प्रतीयते वृत्तिकारेण यादृशः पाठो लब्धस्तादृश एवार्थः कृतः । 'क' आदर्शे 'अविणए' पाठो लिखित आसीत् । ततः 'वि' वर्णगतेकारमात्रां हरितालेनाच्छिद्य वकारः कृतोस्ति । पूर्वपाठस्य संगतिदृष्ट्यात्रापि 'अविणए' पाठो युज्यते ।

[9] सं० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा।

१. मायिस्स णं अस्सिं लोए गरहिते भवति ।

२. उववाए गरहिते भवति ।

३. आयाती[1] गरहिता भवति ।

४. एगमवि मायी मायं[2] कट्टु णो आलोएज्जा[3], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा ।

५. एगमवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[4], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, अत्थि तस्स आराहणा ।

६. बहुओवि मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा[5], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा ।

७. बहुओवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[6], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा°, अत्थि तस्स आराहणा ।

८. आयरिय-उवज्झायस्स वा मे अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, से यं[7] मममालोएज्जा मायी णं एसे ।

मायी णं मायं कट्टु से जहाणामए अयागरेति[8] वा तंबागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवण्णागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा बुसागणीति वा णलागणीति वा दलागणीति वा सोंडियालिंछाणि[9] वा भंडियालिंछाणि वा गोलियालिंछाणि वा कुंभारावाएति वा कवेल्लुआवाएति वा इट्टावाएति वा जंतवाडचुल्लीति[10] वा लोहारंबरिसाणि वा ।

तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं-विणिम्मुयमाणाइं, जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं-पमुंचमाणाइं इंगाल-

---

[1] आताती (क, ख, ग) ।

[2] मातं (क, ख, ग) ।

[3] सं० पा०—णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा ।

[4] सं० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

[5] सं० पा०—णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा ।

[6] सं० पा०—आलोएज्जा जाव अत्थि ।

[7] तं (क, ख, ग) ।

[8] आया° (क, ख, ग) ।

[9] °लिच्छाणि (क) ।

[10] °चुल्लिं (क, ग) ।

सहस्साइं[1] पविक्खिरमाणाइं-पविक्खिरमाणाइं,[2] अंतो-अंतो झियायंति, एवामेव मायी मायं कट्टु अंतो-अंतो झियाइ[3]।

जंवि[4] य णं अण्णे केइ वदंति तंपि य णं मायी जाणति अहमेसे 'अभिसंकिज्जामि-अभिसंकिज्जामि'[5]।

'मायी णं मायं कट्टु'[6] अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए 'उववत्तारो भवंति'[7], तं जहा—णो महिड्ढिएसु[8] °णो महज्जुइएसु णो महाणुभागेसु णो महायसेसु णो महाबलेसु णो महासोक्खेसु° णो दूरंगतिएसु णो चिरट्ठितिएसु। से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्ढिए[9] °णो महज्जुइए णो महाणुभागे णो महायसे णो महाबले णो महासोक्खे णो दूरंगतिए° णो चिरट्ठितिए।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति णो महरिहेणं[10] आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता[11] चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुं देवे! भासउ-भासउ।

से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तं जहा—अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से णं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दुवण्णे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अपियस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति[12] णो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अणुत्ता[13] चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुं अज्जउत्तो[14]! भासउ-भासउ।

---

१. अंगाल° (क, ख, ग)।

२. परिक्खिर° (क, ग); परिकिर° (क्व)।

३. झियायइ (क्व)।

४. जंतवि (क); जतवि (ख, ग)।

५. अभिसिक्खिज्जामि (क, ग)।

६. से णं तस्स (वृ); मायी णं मायं कट्टु(वृपा)।

७. 'उववत्तारो' त्ति वचनव्यत्ययादुपपत्ता भवतीति (वृ)।

८. सं० पा०—णो महिड्ढिएसु जाव णो दूरंगतितेसु।

९. सं० पा०–णो महिड्ढिए जाव णो चिरट्ठितिते।

१०. महा° (क)।

११. अवुत्ता (ख)।

१२. परिताणाति (ख, ग)।

१३. अवुत्ता (ग)।

१४. अज्जपुत्ते (ख)।

मायी णं मायं कट्टु आलोचित-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महिड्ढिएसु[1] °महज्जुइएसु महाणुभागेसु महायसेसु महाबलेसु महासोक्खेसु दूरगंतिएसु° चिरट्ठितिएसु[2]। से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए[3] °महज्जुइए महाणुभागे महायसे महाबले महासोक्खे दूरंगतिए° चिरट्ठितिए हार-विराइय[4]-वच्छे कडक-तुडित-थंभित-भुए[5] अंगद-कुंडल-मट्ठ-गंडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिते कल्लाणग-'पवर-गंध-मल्लाणुलेवणधरे'[6] भासुरबोंदी पलंब-वणमालधरे दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे महयाहत-णट्ट-गीत-वादित-तंती-तल-ताल-तुडित-घण-मुइंग-पडुप्पवादित-रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं आढाइ परिजाणाति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठंति—बहुं देवे! भासउ-भासउ।

से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[7] °भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं° चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति—अड्ढाइं[8] °दित्ताइं[9] विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं[10] 'बहुधण-बहुजायरूव-रययाइं'[11] आओगपओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलय-प्पभूयाइं° बहुजणस्स अपरिभूताइं, तहप्पगारेसु[12] कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से णं तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवण्णे सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते[13] °पिए मणुण्णे° मणामे अहीणस्सरे[14] °अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कंतस्सरे पियस्सरे मणुण्णस्सरे° मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं आढाति[15] °परि-

---

[1] सं० पा०—महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितिएसु।

[2] °ट्ठितीसु (क, ग)।

[3] सं० पा०—महिड्ढिए जाव चिरट्ठितिते।

[4] विरातित (क, ख, ग)।

[5] भुते (क, ख, ग)।

[6] पवर-मल्लाण° (वृ); पवर-गंधमल्लाणं° (वृपा)।

[7] सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता।

[8] सं० पा०—अड्ढाइं जाव बहुजणस्स।

[9] औपपातिके (सूत्र १४१)—दित्ताइं वित्ताइं।

[10] क्वचिद्—वाहणाइन्नाइं (वृ)।

[11] औपपातिके (सूत्र १४१) बहुधण-जाय°।

[12] तहाप्प° (क, ग)।

[13] सं० पा०—कंते जाव मणामे।

[14] सं० पा०—अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे।

[15] सं० पा०—आढाति जाव बहुं।

जाणाति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठंति°—बहुं अज्जउत्ते ! भासउ-भासउ ॥

संवर-असंवर-पदं

११. अट्ठविहे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियसंवरे[1], °चक्खिदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिदियसंवरे°, फासिंदियसंवरे, मणसंवरे, वइसंवरे, कायसंवरे ॥

१२. अट्ठविहे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा-सोतिंदियअसंवरे[2], °चक्खिदियअसंवरे, घाणिंदियअसवरे, जिब्भिदियअसंवरे, फासिंदियअसंवरे, मणअसंवरे, वइअसंवरे° कायअसंवरे ॥

फास-पदं

१३. अट्ठ फासा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडे[3], मउए, गरुए, लहुए, सीते, उसिणे णिद्धे, लुक्खे ॥

लोगट्ठिति-पदं

१४. अट्ठविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपतिट्ठिते वाते, वातपतिट्ठिते उदही, [4]°उदधिपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपतिट्ठिता° जीवा कम्मपतिट्ठिता, अजीवाजीवसंगहीता[5], जीवा कम्मसंगहीता ॥

गणिसंपया-पदं

१५. अट्ठविहा गणिसंपया पण्णत्ता, तं जहा—आचारसंपया, सुयसंपया, सरीरसंपया, वयणसंपया[6], वायणासंपया[7], मतिसंपया, पओगसंपया, संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा ॥

महाणिहि-पदं

१६. एगमेगे णं महाणिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

समिति-पदं

१७. अट्ठ समितीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इरियासमिती, भासासमिती, एसणा-

---

[1] सं० पा०—सोइंदियसंवरे जाव फासिंदिय°।

[2] सं० पा०—सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे।

[3] कक्कडे (क, ख, ग)।

[4] स० पा०—एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा।

[5] °संगहिता (क, ग)।

[6] वणसंपता (ख)।

[7] वातणासंपता (क, ख, ग)।

समिती, आयाणभंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-परिठावणियासमिती, मणसमिती, वइसमिती, कायसमिती ।

आलोयणा-पदं

१८. अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं[1] पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं[2], आधारवं, ववहारवं, ओवीलए, पकुव्वए, अपरिस्साई, णिज्जावए, अवायदंसी ।।

१९. अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोइत्तए[3], तं जहा—जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे, खंते, दंते ।।

पायच्छित्त-पदं

२०. अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे ।।

मदट्ठाण-पदं

२१. अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुतमए, लाभमए, इस्सरियमए ।।

अकिरियावादि-पदं

२२. अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता, तं जहा—एगावाई, अणेगावाई, मितवाई, णिम्मितवाई[4], सायवाई, समुच्छेदवाई, णितावाई, णसंतपरलोगवाई[5] ।।

महाणिमित्त-पदं

२३. अट्ठविहे महाणिमित्ते पण्णत्ते, तं जहा—भोमे, उप्पाते, सुविणे, अंतलिक्खे, अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे ।।

वयणविभत्ति-पदं

२४. अट्ठविधा वयणविभत्ती पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] आलोतणा (ख)।

[2] आतारवं (क, ख, ग)।

[3] °मालोतेत्तते (क, ग); °मालोयत्तते (ख)।

[4] अमितवाती (क)।

[5] ण संति परलोकवाती (ख, ग, वृ); वृत्तिकारेण 'ण संति' इति पाठो व्याख्यातः 'न विद्यते शान्तिश्च मोक्षः।' किन्तु 'णसंते' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति 'असत्परलोकवादी' इति स्वाभाविकोर्थोस्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

संगहणी-गाहा

णिद्देसे पढमा होती[1], बितिया उवएसणे ।
ततिया करणम्मि कता, चउत्थी संपदावणे ॥१॥

पंचमी य अवादाणे[2], छट्ठी सस्सामिवादणे[3] ।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे[4], अट्ठमी आमंतणी[5] भवे ॥२॥

तत्थ पढमा विभत्ती, णिद्देसे—सो इमो अहं वत्ति ।
बितिया[6] उण उवएसे— भण 'कुण व'[7] इमं व तं वत्ति ॥३॥

ततिया करणम्मि कया— णीतं[8] व कतं व तेण व मए वा ।
हंदि णमो साहाए, हवति चउत्थी पदाणंमि ॥४॥

अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति वा पंचमी अवादाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गतस्स वा सामि-संबंधे ॥५॥

हवइ पुण सत्तमी तमिमम्मि आहारकालभावे य ।
आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाण ! त्ति ॥६॥

छउमत्थ-केवलि-पदं

२५. अट्ठ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं[9], °अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं°, गंधं, वातं ।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली[10] °सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं°, गंधं, वातं ॥

आउवेद-पदं

२६. अट्ठविधे आउवेदे पण्णत्ते, तं जहा—कुमारभिच्चे, कायतिगिच्छा, सालाई[11], सल्लहत्ता[12], जंगोली, भूतवेज्जा, खारतंते, रसायणे[13] ॥

---

[1] होंति (क, ग) ।

[2] अवाताणे (क, ख, ग) ।

[3] इह प्राकृतत्वाद् दीर्घत्वम् ।

[4] सन्नियाणत्थे (क, ग) ।

[5] आमंतणा (क, ख, ग) ।

[6] बितीता (ग) ।

[7] कुणसु (अ० सू० ३०८) ।

[8] भणियं (अ० सू० ३०८) ।

[9] धम्मत्थिगातं (क, ख, ग); सं० पा—धम्मत्थिकायं जाव गंधं ।

[10] सं० पा०—केवली जाणइ पासइ जाव गंधं ।

[11] सालभते (क); सालाती (ख, ग) ।

[12] सेल्लहता (ख) ।

[13] रसातणे (क, ख, ग) ।

अग्गमहिसी-पदं

२७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, सिवा, सची[1], अंजू, अमला, अच्छरा, णवमिया, रोहिणी ॥

२८. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हा, कण्हराई[2], रामा, रामरक्खिता, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा ॥

२९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥

३०. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥

महग्गह-पदं

३१. अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता, तं जहा—चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सती, अंगारे, सणिचरे, केऊ ॥

तणवणस्सइ-पदं

३२. अट्ठविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—मूले, कंदे, खंधे, तया, साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे ॥

संजम-असंजम-पदं

३३. चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविधे संजमे कज्जति, तं जहा—चक्खुमातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। [3]°घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। जिब्भामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति°। फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति ॥

३४. चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—चक्खुमातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। [4]°घाणामातो सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति°। फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति ॥

---

[1] सूती (ख, ग); सती (क्व)।

[2] कण्हराती (क, ख, ग)।

[3] सं० पा०—एवं जाव फासामातो।

[4] सं० पा०—एवं जाव फासामातो।

सुहुम-पदं

३५. अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता, तं जहा—पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे, लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे ।।

भरहचक्कवट्टि-पदं

३६. भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं[1] सिद्धाइं[2] °बुद्धाइं मुत्ताइं अंतगडाइं परिणिव्वुडाइ° सव्वदुक्खप्पहीणाइं, तं जहा—आदिच्चजसे, महाजसे, अतिबले महाबले, तेयवीरिए[3] कत्तवीरिए[4] दंडवीरिए, जलवीरिए ।।

पास-गण-पदं

३७. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा—सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी, सोमे, सिरिधरे, ‘वीरभद्दे, जसोभद्दे’[5] ।।

दंसण-पदं

३८. अट्ठविधे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे[6], °अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे°, केवलदंसणे, सुविणदंसणे ।।

ओवमिय-काल-पदं

३९. अट्ठविधे अद्धोवमिए पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी, उस्सप्पिणी, पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा ।।

अरिट्ठणेमि-पदं

४०. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगंतकरभूमी । दुवासपरियाए अंतमकासी ।।

महावीर-पदं

४१. समणेणं भगवता महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता[7] अगाराओ अणगारितं पव्वाइया[8], तं जहा—

---

[1] अणुहव (क, ग) ।

[2] सं० पा०—सिद्धाइं जाव सव्वदुक्ख° ।

[3] तेतवीरिते (क, ख, ग) ।

[4] कण्णवीरिते (क, ग) ।

[5] वीरिते भद्दजसे (ख, ग) ।

[6] सं० पा०—चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे ।

[7] ‘भवित्त’ त्ति अन्तर्भूतकारितार्थत्वात् मुण्डान् भावयित्वेति दृश्यम् (वृ) ।

[8] पव्वाविता (क, ख, ग) ।

संगहणी-गाहा

वीरंगए वीरजसे, संजय एणिज्जए य रायरिसी।
सेये सिवे उद्दायणे[1], तह[2] संखे कासिवद्धणे ॥१॥

आहार-पदं

४२. अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णे—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे। अमणुण्णे[3]—°असणे, पाणे, खाइमे°, साइमे ॥

कण्हराइ-पदं

४३. उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं[4] बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाण[5]-पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंस-संठाण-संठिताओ अट्ठ कण्हराईओ[6] पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमे णं दो कण्हराईओ, दाहिणे णं दो कण्हराईओ, पच्चत्थिमे णं दो कण्हराईओ, उत्तरे णं दो कण्हराईओ। पुरत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। दाहिणा अब्भंतरा कण्हराई पच्चत्थिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। पच्चत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। उत्तरा अब्भंतरा कण्हराई पुरत्थिमं बाहिरं कण्हराइं[7] पुट्ठा। पुरत्थिमपच्चत्थिमिल्लाओ[8] बाहिराओ दो कण्हराईओ छलंसाओ। उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ तंसाओ। सव्वाओ वि णं अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ ॥

४४. एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराईति वा, मेहराईति वा, मघाति वा, माघवतीति वा, वातफलिहेति[9] वा, वातपलिक्खोभेति[10] वा, देवफलिहेति वा, देवपलिक्खोभेति वा ॥

४५. एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—अच्ची, अच्चिमाली, वइरोअणे, पभंकरे[11], चंदाभे, सूराभे, 'सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे'[12] ॥

---

१. उदायणे (क, ख, ग)।
२. × (क)।
३. सं० पा०—अमणुण्णे जाव साइमे।
४. हव्विं (क); हट्ठिं (ख)।
५. रिट्ठे° (क)।
६. कण्हरातीतो (क, ख, ग)।
७. कण्हरातीयं (क)।
८. °मल्लाओ (क, ख, ग)।
९. °फलहितेति (क)।
१०. °फलक्खो° (क)।
११. सुभंकरे (वृ)।
१२. अंकाभे सुपइट्ठाभे (वृ); सुक्काभे सुपइट्ठाभे (भ० ६।१०६); लोकान्तिकविमानानां नाम्नां तिस्रः परंपराः प्राप्यन्ते। एका भगवतीसूत्रस्य। तत्र षड् नामानि तुल्यानि सप्तमाष्टमयोरन्तरमस्ति। द्वितीया च स्थानांगसमवाययोः (समवाय ८।१५)। तृतीया च वृत्तिगता। तत्रापि पंच नामानि तुल्यानि, चतुर्थसप्तमाष्टमानि च भिन्नानि सन्ति।

४६. एतेसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविधा लोगंतिया देवा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सतमाइच्चा, वण्ही वरुणा[1] य गद्दतोया य ।
तुसिता अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा[2] ॥१॥

४७. एतेसि णं अट्ठण्हं लोगंतियदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिंती पण्णत्ता ॥

मज्झपदेस-पदं

४८. अट्ठ धम्मत्थिकाय[3]-मज्झपएसा पण्णत्ता ॥

४९. अट्ठ अधम्मत्थिकाय-[4]°मज्झपएसा पण्णत्ता° ॥

५०. अट्ठ आगासत्थिकाय-[5]°मज्झपएसा पण्णत्ता° ॥

५१. अट्ठ जीव-मज्झपएसा पण्णत्ता ॥

महापउम-पदं

५२. अरहा णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वावेस्सति, तं जहा—पउमं, पउमगुम्मं, णलिणं, णलिणगुम्मं, पउमद्धयं[6], धणुद्धयं, कणगरहं, भरहं ।

कण्ह-अग्गमहिसी-पदं

५३. कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अंतिते मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइया सिद्धाओ[7] °बुद्धाओ मुत्ताओ अंतगडाओ परिणिव्वुडाओ° सव्वदुक्खप्पहीणाओ, तं जहा—

संगहणी-गाहा

पउमावती य गोरी, गंधारी लक्खणा सुसीमा य ।
जंबवती सच्चभामा, रुप्पिणी अग्गमहिसीओ ॥१॥

पुव्ववत्थु-पदं

५४. वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू[8] अट्ठ चूलवत्थू पण्णत्ता ॥

---

[1] लोकान्तिकदेवानां नामसु चतुर्थाष्टमे नाम्नी तत्त्वार्थसूत्रे भिन्ने स्तः—सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोरिष्टाश्च (४।२६) दिगम्बरपरंपरासम्मते 'मरुत्' नाम न विद्यते—सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधरिष्टाश्च ।

[2] बोधव्वा (क, ख, ग) ।

[3] °गात (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—एवं चेव।

[5] सं० पा०—एवं चेव ।

[6] पउमद्धतं (क, ख, ग) ।

[7] सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख° ।

[8] मूलवत्थू (क) ।

गति-पदं

५५. अट्ठ गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णिरयगती, तिरियगती[1], °मणुयगती, देवगती°, सिद्धिगती, गुरुगती, पणोल्लणगती, पब्भारगती ॥

दीवसमुद्द-पदं

५६. गंगा-सिंधु-रत्त-रत्तवतिदेवीणं दीवा 'अट्ठ-अट्ठ'[2] जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

५७. उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह-विज्जुदंतदीवा णं दीवा अट्ठ-अट्ठ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

५८. कालोदे[3] णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

५९. अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

६०. एवं बाहिरपुक्खरद्धेवि ॥

काकणिरयण-पदं

६१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसंठिते ॥

मागध-जोयण-पदं

६२. मागधस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं णिधत्ते[4] पण्णत्ते ॥

जंबूदीव-पदं

६३. जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

६४. कूडसामली णं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव ॥

६५. तिमिसगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥

६६. खंडप्पवातगुहा णं अट्ठ[5] °जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं° ।

६७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उभतो कूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चित्तकूडे, पम्हकूडे[6], णलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे ॥

६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीतोयाए महाणदीए उभतो कूले

---

[1] सं० पा०—तिरियगती जाव सिद्धगती ।

[2] अट्ठट्ठ (क) ।

[3] कालोते (क, ख, ग) ।

[4] निहारे (वृ); निहत्ते (वृपा) ।

[5] सं० पा०—अट्ठ एवं चेव ।

[6] बम्भकूडे (क) ।

अट्ठ वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, ‘णागपव्वते, देवपव्वते’[1] ।।

६९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावती, आवत्ते[2], °मंगलावत्ते, पुक्खले°, पुक्खलावती ।।

७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—वच्छे, सुवच्छे[3], °महावच्छे, वच्छगावती[4], रम्मे, रम्मगे, रमणिज्जे°, मंगलावती ।।

७१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—पम्हे[5], °सुपम्हे, महपम्हे, पम्हगावती, संखे, णलिणे, कुमुए°, सलिलावती ।।

७२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—वप्पे, सुवप्पे[6], °महावप्पे, वप्पगावती, वग्गू, सुवग्गू, गंधिल्ले°, गंधिलावती[7] ।।

७३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खेमा, खेमपुरी[8], °रिट्ठा, रिट्ठपुरी, खग्गी, मंजूसा, ओसधी°, पुंडरीगिणी ।।

७४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुसीमा, कुंडला[9], °अपराजिया, पभंकरा, अंकावई, पम्हावई, सुभा°, रयणसंचया ।।

७५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आसपुरा[10], °सीहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अवराजिता, अवरा, असोया°, वीतसोगा[11] ।।

७६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणईए उत्तरे णं

---

[1] ठा० ४।३१३ सूत्रे ‘देवपव्वते णागपव्वते’ एवं पाठो विद्यते ।

[2] सं० पा०—आवत्ते जाव पुक्खलावती ।

[3] सं० पा०—सुवच्छे जाव मंगलावती ।

[4] ठा० २।३४० सूत्रे ‘कच्छावती’ पाठो विद्यते ।

[5] सं० पा०—पम्हे जाव सलिलावती ।

[6] सं० पा०—सुवप्पे जाव गंधिलावती ।

[7] गंधला° (ख) ।

[8] खेमपुरा (क, ख, ग); सं० पा०—खेमपुरी जाव पुंडरीगिणी ।

[9] सं० पा०—कुंडला चेव जाव रयणसंचया ।

[10] सं० पा०—आसपुरा जाव वीतसोगा ।

[11] वीतिसोगा (क,ग); विगयसोगा (२।३४१) ।

अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती[1], °जयंती, अपराजिया, चक्कपुरा, खग्गपुरा, अवज्झा °, अउज्झा ॥

७७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ बलदेवा, अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ॥

७८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए [महाणदीए ?] दाहिणे णं उक्कोसपए एवं चेव ॥

७९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए दाहिणे णं उक्कोसपए एवं चेव ॥

८०. एवं उत्तरेणवि ॥

८१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए उत्तरे णं अट्ठ दीहवेयड्ढा, अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडगप्पवातगुहाओ, अट्ठ कयमालगा देवा, अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ॥

८२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ दीहवेअड्ढा एवं चेव जाव[2] अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता, णवरमेत्थ रत्त-रत्तावती, तासिं चेव कुंडा ॥

८३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव[3] अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ॥

८४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव[4] अट्ठ णट्टमालगा देवा पण्णत्ता[5]। अट्ठ रत्ताकुंडा, अट्ठ रत्तावतिकुंडा, अट्ठ रत्ताओ[6], °अट्ठ रत्तावतीओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वत्ता°, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ॥

८५. मंदरचूलिया णं बहुमज्झदेसभाए[7] अट्ठ जोइणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

धायइसंड-पदं

८६. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं धायइरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ॥

---

१. सं० पा०—वेजयंती जाव अउज्झा ।

२. ठा० ८।८१ ।

३,४. ठा० ८।८१ ।

५. पण्णत्ता नवरमेत्थ (क, ग) ।

६. सं० पा०—रत्ताओ जाव अट्ठ उसभकूडा ।

७. °भाते (क, ग) ।

८७. एवं धायइरुक्खाओ आढवेत्ता सच्चेव जंबूदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव[1] मंदरचूलियत्ति ॥

८८. एवं पच्चत्थिमद्धेवि महाधातइरुक्खातो आढवेत्ता जाव[2] मंदरचूलियत्ति ॥

पुक्खरवर-पदं

८९. एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धेवि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता जाव[3] मंदरचूलियत्ति ॥

९०. एवं पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धेवि महापउमरुक्खातो जाव[4] मंदरचूलियत्ति ॥

कूड-पदं

९१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

पउमुत्तर णीलवंते, सुहत्थि अंजणागिरी ।
कुमुदे[5] य पलासे य, वडेंसे रोयणागिरी[6] ॥१॥

जगती-पदं

९२. जंबूदीवस्स णं दीवस्स जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

कूड-पदं

९३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सिद्ध महाहिमवंते, हिमवंते रोहिता हिरीकूडे[7] ।
हरिकंता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूडा उ ॥१॥

९४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रुप्पिम्मि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] ठा० ८।६४-८५ ।

[2] ठा० ८।६३-८५ ।

[3,4] ठा० ८।६३-८५ ।

[5] कुमुते (क, ख, ग) ।

[6] रोतणागिरी (क, ख, ग) ।

[7] हरी० (क, ख, ग) ।

सिद्धे य रुप्पि रम्मग, णरकंता बुद्धि[1] रुप्पकूडे य ।
हिरण्णवते मणिकंचणे, य रुप्पिम्मि कूडा उ ॥१॥

९५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

रिट्ठे तवणिज्ज कंचण, रयत दिसासोत्थिते पलंबे य ।
अंजणे अंजणपुलए, रुयगस्स पुरत्थिमे कूडा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्डियाओ जाव[2] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—

णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥२॥

९६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

कणए कंचणे पउमे, णलिणे ससि दिवायरे चेव ।
वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—

समाहारा सुप्पतिण्णा, सुप्पबुद्धा[3] जसोहरा ।
लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥२॥

९७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सोत्थिते य अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा ।
रुअगे रुयगुत्तमे[4] चंदे, अट्ठमे य सुदंसणे ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—

इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावती ।
एगणासा[5] णवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा ॥२॥

९८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रुअगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

रयण-रयणुच्चए या[6], सव्वरयण रयणसंचए चेव ।
विजये य वेजयंते, जयंते अपराजिते ॥१॥

---

[1] मुट्ठि (क, ग) ।
[2] ठा० २।२७१ ।
[3] सुपबुद्धा (क, ग); सुपवई (ख) ।
[4] रुतगुत्तमे (क, ख, ग) ।
[5] एगानासा (क, ख) ।
[6] ता (क, ख, ग) ।

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—

अलंबुसा मिस्सकेसी[1], पोंडरिगी य वारुणी ।
आसा सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरतो ।।२।।

महत्तरिया-पदं

९९. अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

संगहणी-गाहा

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी ।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ।।१।।

१००. अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ[2] दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिणी ।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता ।।१।।

कप्प-पदं

१०१. अट्ठ कप्पा तिरिय-मिस्सोववण्णगा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे[3], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोगे, लंतए, महासुक्के°, सहस्सारे ।।

१०२. एतेसु णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सक्के[4], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के°, सहस्सारे ।।

१०३. एतेसि णं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते[5], कामकमे, पीतिमणे, मणोरमे[6] ।।

पडिमा-पदं

१०४. अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा[7] चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं[8] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° अणुपालितावि भवति ।।

---

[1] मितकेसी (क्व) ।

[2] °वच्छव्वाओ (क, ग) ।

[3] सं० पा०—सोहम्मे जाव सहस्सारे ।

[4] सं० पा०—सक्के जाव सहस्सारे ।

[5] णंदावत्ते (क्व) ।

[6] विमले (क, ख, ग); यद्यपि सर्वेषु आदर्शेषु 'विमले' इति पाठो विद्यते, किन्तु दशमस्थानस्य १५० सूत्रे जाव 'विमलवरे सव्वतोभद्दे' पाठोस्ति । तत्र वृत्तिकृता अष्टमः शब्दः 'मणोरमे' । इति व्याख्यात । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि इत्थमेव पाठोस्ति । तेनात्र 'मणोरमे' इति पाठः स्वीकृतः ।

[7] भिक्खुपडिमा णं (क, ख, ग) ।

[8] सं० पा०—अहासुत्तं जाव अणुपालितावि ।

जीव-पदं

१०५. अट्ठविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया,[1] °पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा ।।

१०६. अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा मणुस्सीओ, देवा, देवीओ, सिद्धा ।

अहवा—अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियणाणी[2], °सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी°, केवलणाणी, मतिअण्णाणी, सुतअण्णाणी, विभंगणाणी ।।

संजम-पदं

१०७. अट्ठविधे संजमे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे, अपढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे, पढमसमयबादरसंपरागसरागसंजमे, अपढमसमयबादरसंपरागसरागसंजमे, पढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे, अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे, पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे, अपढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे ।।

पुढवि-पदं

१०८. अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा[3], °सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमा°, अहेसत्तमा, ईसिपब्भारा ।।

१०९. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागे अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

११०. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसिति वा, ईसिपब्भाराति वा, तणूति वा, तणुतणूइ वा, सिद्धीति वा, सिद्धालएति[4] वा, मुत्तीति वा, मुत्तालएति वा ।।

अब्भुट्ठेतव्व-पदं

१११. अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं घडितव्वं जतितव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं भवति—

१. असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।

२. सुताणं धम्माणं ओगिण्हणयाए उवधारणयाए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।

---

[1] सं० पा०—अपढमसमयनेरतिता एवं जाव अपढम० ।

[2] सं० पा०—आभिणिबोहितणाणी जाव केवल० ।

[3] सं० पा०—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ।

[4] सिद्धालतेति (क, ख, ग) ।

३. णवाणं[1] कम्माणं संजमेणमकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
४. पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणताए विसोहणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।
५. असंगिहीतपरिजणस्स[2] संगिण्हणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
६. सेहं आयारगोयरं गाहणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
७. गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
८. साहम्मियाणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूते कह णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा ? उवसामणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ॥

विमाण-पदं

११२. महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

वादि-पदं

११३. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था ॥

केवलिसमुग्घात-पदं

११४. अट्ठसमइए[3] केवलिसमुग्घाते पण्णत्ते, तं जहा—पढमे समए दंडं करेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं[4] करेति, चउत्थे समए लोगं पूरेति, पंचमे समए लोगं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं[5] पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति ॥

अणुत्तरोववाइय-पदं

११५. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गतिकल्लाणाणं[6] °ठितिकल्लाणाणं° आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया हुत्था ॥

वाणमंतर-पदं

११६. अट्ठविधा वाणमंतरा देवा पण्णत्ता, तं जहा—पिसाया, भूता, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा ॥

११७. एतेसि णं अट्ठविहाणं वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] पावाणं (क्व) ।
[2] °परितणस्स (क, ग); °परियणतस्स (ख) ।
[3] °समतिते (क, ख, ग) ।
[4] मथानं (ख) ।
[5] मंथु (क, ग) ।
[6] सं० पा०—गतिकल्लाणाणं जाव आगमे° ।

संगहणी-गाहा

कलंबो उ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेइयं ।
तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ ।।१।।
असोओ किण्णराणं च, 'किंपुरिसाणं तु'[1] चंपओ ।
णागरुक्खो भुयंगाणं, गंधव्वाण य तेंदुओ ।।२।।

जोइस-पदं

११८. इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसते उड्ढमबाहाए सूरविमाणे चारं चरति ।।

११९. अट्ठ णक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा—कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराधा, जेट्ठा ।।

दार-पदं

१२०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

१२१. सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

बंधठिति-पदं

१२२. पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिती पण्णत्ता ।।

१२३. जसोकित्तीणामस्स णं[2] कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पण्णत्ता ।।

१२४. उच्चागोतस्स णं कम्मस्स [3]°जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पण्णत्ता° ।।

कुलकोडी-पदं

१२५. तेइंदियाणं अट्ठ जाति-कुलकोडी-जोणीपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता ।।

पावकम्म-पदं

१२६. जीवा णं अट्ठठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते[4], °अपढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते, पढमसमयतिरियणिव्वत्तिते, अपढमसमयतिरियणिव्वत्तिते पढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, अपढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, पढमसमयदेवणिव्वत्तिते°, अपढमसमयदेवणिव्वत्तिते ।

एवं—चिण-उवचिण[5]-°बंध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ।।

पोग्गल-पदं

१२७. अट्ठपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ।।

१२८. अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव[6] अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।

---

[1] °साण य (ख) ।
[2] °नामए (क) ।
[3] सं० पा०—एवं चेव ।
[4] सं० पा०—पढमसमयणेरतितणिव्वत्तिते जाव अपढम° ।
[5] सं० पा०—उवचिण जाव णिज्जरा ।
[6] ठा० १।२५५,२५६ ।

णवमं ठाणं

विसंभोग-पदं

१. णवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—आयरियपडिणीयं, उवज्झायपडिणीयं, थेरपडिणीयं, कुलपडिणीयं, गणपडिणीयं, संघपडिणीयं, णाणपडिणीयं, दंसणपडिणीयं, चरित्तपडिणीयं ॥

बंभचेरअज्झयण-पदं

२. णव बंभचेरा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिण्णा, लोगविजओ[1], •सीओसणिज्जं, सम्मत्तं, आवंती, धूतं, विमोहो°, उवहाणसुयं, महापरिण्णा ॥

बंभचेरगुत्ति-पदं

३. णव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति—णो इत्थिसंसत्ताइं णो पसुसंसत्ताइं णो पंडगसंसत्ताइं। २. णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति। ३. 'णो इत्थिठाणाइं'[2] सेवित्ता भवति। ४. णो इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता णिज्झाइता भवति। ५. णो पणीतरसभोई [भवति ?]। ६. णो पाणभोयणस्स अतिमातमाहारए सया[3] भवति। ७. णो पुव्वरतं पुव्वकीलियं सरेत्ता भवति। ८. णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती [भवति ?]। ९. णो सातसोक्खपडिबद्धे यावि भवति ॥

---

[1] सं० पा०—लोगविजओ जाव उवहाणसुयं।

[2] 'नो इत्थिगणाइं' तीह सूत्रं दृश्यते केवलं 'नो इत्थिगणाइं' ति सम्भाव्यते उत्तराध्ययनेषु तथाधीतत्वात् प्रक्रमानुसारित्वाच्चास्येतीदमेव व्याख्यायते ·····दृश्यमानपाठाभ्युगमे त्वेवं व्याख्या—नो स्त्रीगणानां पर्युपासको भवेदिति (वृ)।

[3] सता (क, ख, ग)।

बंभचेरअगुत्ति-पदं

४. णव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. णो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति—इत्थीसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं। २. इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति। ३. इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति। ४. इत्थीणं इंदियाइं[1] °मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता° णिज्झाइत्ता भवति। ५. पणीयरसभोई [भवति ?]। ६. पाणभोयणस्स अइमायमाहारए सया भवति। ७. पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवति। ८. सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई [भवति ?]। ९. सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवति॥

तित्थगर-पदं

५. अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा णवहिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं[2] वीइक्कंतेहिं समुप्पण्णे॥

सब्भावपयत्थ-पदं

६. णव सब्भावपयत्था पण्णत्ता, तं जहा—जीवा, अजीवा, पुण्णं, पावं, आसवो, संवरो, णिज्जरा, बंधो, मोक्खो॥

जीव-पदं

७. णवविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[3], °आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया°, वणस्सइकाइया, बेइंदिया[4], °तेइंदिया, चउरिंदिया°, पंचिंदिया[5]॥

गति-आगति-पदं

८. पुढविकाइया णवगतिया णवआगतिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा[6], °आउकाइएहिंतो वा, तेउकाइएहिंतो वा, वाउकाइएहिंतो वा, वणस्सइकाइएहिंतो वा, बेइंदिएहिंतो वा, तेइंदिएहिंतो वा, चउरिंदिएहिंतो वा°, पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा[7], °आउकाइयत्ताए वा, तेउकाइयत्ताए वा, वाउकाइयत्ताए वा, वणस्सइकाइयत्ताए वा, बेइंदियत्ताए वा, तेइंदियत्ताए वा, चउरिंदियत्ताए वा°, पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा॥

९. एवमाउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति॥

---

[1] सं० पा०—इंदियाइं जाव णिज्झाइत्ता।

[2] °कोडाकोडी° (ग)।

[3] सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।

[4] सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया।

[5] पंचिंदितत्ति (क, ग)।

[6] सं० पा०—पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो।

[7] सं० पा०—पुढविकाइयत्ताए वा जाव पंचिंदियत्ताते।

जीव-पदं

१०. णवविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, णेरइया, पंचेंदियतिरिक्खजोणिया, मणुया, देवा, सिद्धा ।
अहवा—णवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया[1], °पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा, सिद्धा ।।

ओगाहणा-पदं

११. णवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइओगाहणा[2], आउकाइओगाहणा[3], °तेउकाइओगाहणा, वाउकाइओगाहणा°, वणस्सइकाइओगाहणा, बेइंदियओगाहणा[4], तेइंदियओगाहणा[5], चउरिंदियओगाहणा, पंचिंदियओगाहणा ।।

संसार-पदं

११. जीवा णं णवहिं ठाणेहिं संसारं[6] वत्तिसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयत्ताए[7], °आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए, तेइंदियत्ताए, चउरिंदियत्ताए°, पंचिंदियत्ताए[8] ।।

रोगुप्पत्ति-पदं

१३. णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया, तं जहा—अच्चासणयाए[9], अहितासणयाए, अतिणिद्दाए[10], अतिजागरितेणं, उच्चारणिरोहेणं, पासवणणिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं, भोयणपडिकूलताए, इंदियत्थविकोवणयाए ।।

दरिसणावरणिज्ज-पदं

१४. णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—णिद्दा, णिद्दाणिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणगिद्धी, चक्खुदंसणावरणे[11], अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे[12], केवलदंसणावरणे ।।

---

[1] सं० पा०—अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा ।

[2] °काइया° (ख) ।

[3] सं० पा०—आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा ।

[4] बेंदिओ° (क) ।

[5] तेंदिओ° (क) ।

[6] सासारं (ख) ।

[7] सं० पा०—पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए ।

[8] पंचिंदियकाइयत्ताए (ग) ।

[9] °सणाते (ख, ग) ।

[10] °णिंद्दितेणं (क); णिंदिते (ग) ।

[11] चक्खुदरिसणा° (क, ग) ।

[12] अवधि° (क, ग) ।

जोइस-पदं

१५. अभिई णं णक्खत्ते सातिरेगे णवमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएति ।।

१६. अभिइआइया णं णव णक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा—अभिई, सवणो[1] धणिट्ठा[2], °सयभिसया, पुव्वाभद्दवया, उत्तरापोट्ठवया, रेवई, अस्सिणी°, भरणी ।।

१७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमीभागाओ णव जोअणसताइं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ।।

मच्छ-पदं

१८. जंबुद्दीवे णं दीवे णवजोयणिआ मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा ।।

बलदेव-वासुदेव-पदं

१९. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपियरो हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

'पयावती य बंभे'[3] रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसीहे अग्गिसीहे, दसरहे णवमे य वसुदेवे ।।१।।

इत्तो आढत्तं[4] जधा समवाये णिरवसेसं जाव[5]—
एगा से गब्भवसही, सिज्झिहिति आगमेसेणं ।।

२०. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपितरो भविस्संति, णव बलदेव-वासुदेवमायरो भविस्संति । एवं जधा समवाए णिरवसेसं जाव[6] महाभीमसेणे, सुग्गीवे य अपच्छिमे ।

एए खलु पडिसत्तू, कित्तिपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि[7] चक्कजोही, हम्मेहिंती[8] सचक्केहिं ।।१।।

---

[1] समणो (ग) ।

[2] सं० पा०—धणिट्ठा जाव भरणी; चन्द्रप्रज्ञप्तौ (१०-११) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ७) च चन्द्रस्योत्तरेणं योगं युञ्जानानां द्वादशनक्षत्राणामुल्लेखोस्ति । अत्र तु नवमस्थानकानुरोधेन नवैव गृहीतानि ।

[3] जतावती त पम्हे (ग) ।

[4] मलिनोभय-शुक्ति-छुप्तारब्ध -पदातेर्मइलावहसिप्पि-छिक्काढत्त-पाइक्कं (हेमशब्दानुशासन ८।२।१३८) ।

[5] पइण्णगसमवाय सू० २३९-२४७ ।

[6] पइण्णगसमवाय सू० २५६, २५७ ।

[7] य (क, ग) ।

[8] हम्मेहंति (ख, ग) ।

महाणिहि-पदं

२१. एगमेगे णं महाणिधी णव-णव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

२२. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महाणिहिओ [णो ?] पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

णेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले, माणवग महाणिही संखे ॥१॥
णेसप्पंमि णिवेसा, गामागर-णगर-पट्टणाणं च ।
दोणमुह-मडंबाणं, खंधाराणं गिहाणं च ॥२॥
गणियस्स य बीयाणं, माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धण्णस्स य बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही, पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य, पिंगलगणिहिम्मि सा भणिया ॥४॥
रयणाइं सव्वरयणे, चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स ।
उपज्जंति एगिंदियाइं, पंचिंदियाइं च ॥५॥
वत्थाण य उप्पत्ती, णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं ।
रंगाण य धोयाण[1] य[2], सव्वा एसा महापउमे ॥६॥
काले कालण्णाणं, भव्व पुराणं च तीसु वासेसु ।
सिप्पसतं कम्माणि य, तिण्णि पयाए हियकराइं ॥७॥
लोहस्स य उप्पत्ती, होइ महाकाले आगराणं च ।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य, मणि-मोत्ति-सिल-प्पवालाणं ॥८॥
जोधाण य उप्पत्ती, आवरणाणं च पहरणाणं च ।
सव्वा य जुद्धनीती, माणवए दंडणीती य ॥९॥
णट्टविही णाडगविही, कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती ।
संखे महाणिहिम्मी, तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥
चक्कट्ठपइट्ठाणा, अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभे ।
बारसदीहा मंजूस- संठिया जह्लवीए[3] मुहे ॥११॥
वेरुलियमणि-कवाडा, कणगमया विविध-रयण-पडिपुण्णा ।
ससि-सूर-चक्क-लक्खण-अणुसम-जुग-बाहु-वयणा य ॥१२॥

---

१. धोयाणं (क); धोवाण (ख) ।
२. × (क) ।
३. जह्लवीइ (क, ग) ।

पलिओवमट्ठितीया, णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा ।
जेसिं ते आवासा, अक्किज्जा[1] आहिवच्चा वा ॥१३॥
एए ते णवणिहिणो,[2] पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा ।
जे वसमुवगच्छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥१४॥

विगति-पदं

२३. णव विगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरं, दधिं, णवणीतं, सप्पिं, तेलं, गुलो, महुं, मज्जं, मंसं ॥

बोंदी-पदं

२४. णव-सोत-परिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा—दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसए, पाऊ ॥

पुण्ण-पदं

२५. णवविधे पुण्णे, पण्णत्ते, तं जहा—अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे, लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे, वइपुण्णे, कायपुण्णे, णमोक्कारपुण्णे ॥

पावायतण-पदं

२६. णव पावस्सायतणा पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवाते, मुसावाए[3], °अदिण्णादाणे, मेहुणे°, परिग्गहे, कोहे, माणे, माया, लोभे ॥

पावसुयपसंग-पदं

२७. णवविधे पावसुयपसंगे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उप्पाते णिमित्ते मंते, आइक्खिए[4] तिगिच्छिए ।
कला आवरणे अण्णाणे मिच्छापवयणे[5] ति य ॥१॥

णेउणिय-पदं

२८. णव णेउणिया वत्थू पण्णत्ता, तं जहा—

संखाणे णिमित्ते काइए पोराणे पारिहत्थिए ।
परपंडिते[6] 'वाई य'[7], भूतिकम्मे तिगिच्छिए ॥१॥

गण-पदं

२९. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं जहा—गोदासगणे, उत्तर-

---

[1] अग्गिच्चा (क, ग) ।

[2] निहओ (ख, ग) ।

[3] सं० पा०—मुसावाते जाव परिग्गहे ।

[4] आतिक्खते (क, ख, ग) ।

[5] °पवतणे (क, ग); °पावतणे (ख) ।

[6] परिपंडितते (क, ग) ।

[7] वातित (क, ग); वाती (ख); वातिते (क्व) ।

बलिस्सहगणे[1], उद्देहगणे, चारणगणे, 'उद्दवाइयगणे, विस्सवाइयगणे'[2], कामड्डियगणे[3], माणवगणे, कोडियगणे ।।

भिक्खा-पदं

३०. समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते, तं जहा—ण हणइ, ण हणावइ, हणंतं णाणुजाणइ, ण पयइ[4], ण पयावेति, पयंतं[5] णाणुजाणति, ण किणति, ण किणावेति, किणंतं णाणुजाणति ।।

देव-पदं

३१. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो णव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

३२. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं णव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

३३. ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

३४. णव देवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ।।१।।

३५. अव्वाबाहाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता ।।

३६. [6]अग्गिच्चाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता ।।

३७. रिट्ठाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता° ।।

३८. णव गेवेज्ज-विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम - उवरिम - गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

---

[1] °पलितस्सतगणे (क, ग); बलितस्सतगणे (ख) ।

[2] उद्दवातितगणे विस्सवाइतगणे (क, ख, ग); कल्पसूत्रे (सूत्र २१३, २१४) पंचमषष्ठयोर्गणयोर्नाम्नी किञ्चिद् भेदेन विद्येते, यथा—उडुवाडियगणे वेसववाडिययगणे' ।

[3] कामिड्ढितिगणे (क, ख, ग) ।

[4] पतति (क, ख, ग) ।

[5] पतंतं (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—एवं अग्गिच्चावि एवं रिट्ठावि ।

३९. एतेसि णं णवण्हं गेविज्ज-विमाण-पत्थडाणं णव णामधिज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पियदरिसणे ।
सुदंसणे अमोहे य, सुप्पबुद्धे जसोधरे[1] ॥१॥

आउपरिणाम-पदं

४०. णवविहे आउपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—गतिपरिणामे, गतिबंधणपरिणामे, ठितीपरिणामे, ठितिबंधणपरिणामे, उड्ढंगारवपरिणामे, अहेगारवपरिणामे, तिरियंगारवपरिणामे, दीहंगारवपरिणामे, रहस्संगारवपरिणामे ॥

पडिमा-पदं

४१. णवणवमिया णं भिक्खुपडिमा एगासीतीए[2] रातिंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं[3] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया यावि भवति ॥

पायच्छित्त-पदं

४२. णवविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे[4], °पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे°, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे ॥

कूड-पदं

४३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सिद्धे भरहे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
भरहे वेसमणे या, भरहे कूडाण णामाइं[5] ॥१॥

४४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं णिसहे[6] वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. जसेवरे (क) ।
२. एगासीताते (ख, ग) ।
३. सं० पा०—अहासुत्तं जाव आहारिया ।
४. सं० पा०—आलोयणारिहे जाव मूलारिहे ।
५. अत्र पद्यत्वात् नाम्नां संक्षेपो विद्यते, पूर्णनामानि इत्थं सन्ति—खंडग—खंडप्रपातः, माणी—माणिभद्रः, पुण्ण—पूर्णभद्रः ।
६. निसुभे (क, ग) ।

सिद्धे णिसहे हरिवस, विदेह हरि[1] धिति असीतोया ।
अवरविदेहे रुयगे, णिसहे कूडाण णामाणि ।।१।।

४५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वते णंदणवणे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

णंदणे मंदरे चेव, णिसहे हेमवते रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे, बलकूडे चेव बोद्धव्वे ।।१।।

४६. जंबुद्दीवे दीवे मालवंतवक्खारपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे य मालवंते, उत्तरकुरु[2] कच्छ सागरे रयते ।
सीता य पुण्णणामे, हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ।।१।।

४७. जंबुद्दीवे दीवे कच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे कच्छे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या, कच्छे कूडाण णामाइं ।।१।।

४८. जंबुद्दीवे दीवे सुकच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे सुकच्छे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे या, सुकच्छे कूडाण णामाइं ।।१।।

४९. एवं जाव[3] पोक्खलावइम्मि दीहवेयड्ढे ।।

५०. एवं वच्छे दीहवेयड्ढे ।।

५१. एवं जाव[4] मंगलावतिम्मि दीहवेयड्ढे ।।

५२. जंबुद्दीवे दीवे विज्जुप्पभे वक्खारपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे अ विज्जुणामे, देवकुरा पम्ह कणग सोवत्थी ।
सीओदा य सयजले, हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ।।१।।

५३. जंबुद्दीवे दीवे पम्हे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे पम्हे खंडग, माणी वेयड्ढ[5] •पुण्ण तिमिसगुहा ।
पम्हे वेसमणे या, पम्हे कूडाण णामाइं° ।।१।।

५४. एवं चेव जाव[6] सलिलावतिम्मि दीहवेयड्ढे ।।

५५. एवं वप्पे दीहवेयड्ढे ।।

---

[1] आदर्शेषु 'हरि' पाठो विद्यते । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष० ४) चापि 'हरि' पाठोस्ति । अस्या वृत्तिकारेणापि 'हरिसलिलानदीसुरीकूटं' उल्लिखितमस्ति । किन्तु अभयदेवसूरिणा अत्र वृत्तौ 'ह्रीकूटं' इति उल्लिखितम्—'ह्रीदेवीनिवासो ह्रीकूटं' सम्भवतः 'हिरि' पाठः तत् सम्मुखीनः आसीत्, तेन तथा व्याख्यातः ।

[2] उत्तरकुरा (क, ग) ।

[3] ठा० ८।६९ ।

[4] ठा० ८।७० ।

[5] सं० पा०—वेयड्ढ··· ।

[6] ठा० ८।७१ ।

५६. एवं जाव[१] गंधिलावतिम्मि दोहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे गंधिल खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
गंधिलावति वेसमणे, कूडाणं होंति णामाइं ॥१॥

एवं—सव्वेसु दोहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा, सेसा ते चेव[२] ॥

५७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णेलवंते वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे णेलवंते विदेहे, सीता कित्ती य णारिकंता य ।
अवरविदेहे रम्मगकूडे, उवदंसणे चेव ॥१॥

५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं एरवते दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धेरवए खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
एरवते वेसमणे, एरवते कूडणामाइं ॥१॥

पास-पदं

५९. पासे णं अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसंघयणे समचउरंस-संठाण-संठिते णव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥

तित्थगरणामणिव्वत्तण-पदं

६०. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तित्थंसि णवहिं जोवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिते, तं जहा—सेणिएणं, सुपासेणं, उदाइणा, पोट्टिलेणं अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं, सतएणं[३], सुलसाए सावियाए[४], रेवतीए ॥

भावितित्थगर-पदं

६१. एस णं अज्जो ! कण्हे वासुदेवे, रामे बलदेवे, उदए पेढालपुत्ते, पुट्टिले, सतए गाहावती, दारुए[५] णियंठे[६], सच्चई[७] णियंठीपुत्ते[८], सावियबुद्धे[९] अंब [म्म ?] डे परिव्वायए, अज्जावि णं सुपासा पासावच्चिज्जा । आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवइत्ता सिज्झिहिंति[१०] °बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाइहिंति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिंति ॥

महापउम-पदं

६२. एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे

---

[१] ठा० ८।७२ ।
[२] ठा० ९।४३ ।
[३] सततेण (क, ख, ग) ।
[४] सावितात (क, ख, ग) ।
[५] दारुते (क, ख, ग) ।
[६] नितंठे (क, ख, ग) ।
[७] सच्चती (क, ख, ग) ।
[८] नितंठी° (क, ख, ग) ।
[९] सावित° (क, ख, ग) ।
[१०] सं० पा०—सिज्झिहिंति जाव अंतं ।

रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए णरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयंसि[1] णिरयंसि[2] णेरइयत्ताए उववज्जिहिति। से णं तत्थ णेरइए भविस्सति—काले कालोभासे[3] °गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए° परमकिण्हे वण्णेणं। से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं[4] °तिउलं[5] पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं दिव्वं° दुरहियासं।

से णं ततो णरयाओ[6] उव्वट्टेत्ता आगमेसाए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं सा भद्दा भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं[7] अहीण - पडिपुण्ण - पंचिंदिय-सरीरं लक्खण-वंजण[8]-°गुणोववेयं माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं° सुरूवं दारगं पयाहिती। जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती, तं रयणिं च णं सतदुवारे णगरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति।

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[9] °णिवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते° बारसाहे[10] अयमेयारूवं गोण्णं गुणणिप्फणं णामधिज्जं काहिंति, जम्हा णं अम्हमिमंसि दारगंसि जातंसि समाणंसि सयदुवारे णगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होउ णमम्हमिमस्स दारगस्स णामधिज्जं महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधिज्जं काहिंति महापउमेत्ति।

तए णं महापउमं दारगं अम्मापितरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महतामहता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे रायवण्णओ जाव[11] रज्जं पसासेमाणे विहरिस्सति।

---

[1] °स्थितिषु (वृ)।

[2] निरयंसि णेरइएसु (क, ग); नरकेषु (वृ)।

[3] सं० पा०—कालोभासे जाव परमकिण्हे।

[4] सं० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं।

[5] विउलं (वृपा)।

[6] णरतातो (क, ख, ग)।

[7] °पातं (क, ख, ग)।

[8] सं० पा०—वंजण जाव सुरूवं।

[9] सं० पा०—वीइक्कते जाव बारसाहे।

[10] वारसाहे दिवसे (क, ख, ग); बारसाहदिवसे त्ति द्वादशानां पूरणो द्वादशः स एवाख्या यस्य स द्वादशाख्यः स चासौ दिवसश्चेति विग्रहः, अथवा द्वादशं च तदहश्च द्वादशाहस्तन्नामको दिवसो द्वादशाहदिवस इति (वृ); द्रष्टव्यं औपपातिक सूत्र १४४ 'बारसाहे' पाठस्य पादटिप्पणम्।

[11] ओ० सू० १४।

तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कयाइ दो देवा महिड्ढिया[1] •महज्जुइया महाणुभागा महायसा महाबला° महासोक्खा[2] सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ।

तए णं सतदुवारे णगरे बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावति-सत्थवाह-प्पभितयो अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, एवं वइस्संति—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया[3] •महज्जुइया महाणुभागा महायसा महाबला° महासोक्खा सेणाकम्मं करेंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य । तं होउ णमम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे । तते णं तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति ।

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाई[4] सेय-संखतल-विमल-सण्णिकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति । तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतल-विमल-सण्णिकासं चउदंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं णगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं 'अतिज्जाहिति य णिज्जाहिति'[5] य ।

तए णं सतदुवारे णगरे बहवे राईसर-तलवर[6]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावति-सत्थवाह-प्पभितयो° अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, एवं वइस्संति—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सण्णिकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पण्णे, तं होउ णमम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स तच्चेवि णामधेज्जे विमलवाहणे-[विमलवाहणे ?] । तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चेवि णामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणेति ।

तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापितीहिं देवत्तं गतेहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाते समाणे, उदुंमि सरए, संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि[7] लोगंतिएहिं[8] जीयकप्पिएहिं देवेहिं, ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं

---

[1] सं० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

[2] महेसक्खा (क, ख, ग); २।२७१ सूत्रे 'महासोक्खा' इति पाठोस्ति । वृत्तिकृता 'महेसक्खा' इति पाठान्तरत्वेन उल्लिखितम् । अत्रापि मूलपाठे स एव उपयुज्यते ।

[3] सं० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

[4] कताती (क, ख, ग) ।

[5] आदर्शेषु अप्राप्तः 'ति' वर्णः भगवती (१५।१७२) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः । वृत्तिकृता एष पाठो न लब्धः तेन व्याख्यातमिदम्—क्वचिद्वर्त्तमाननिर्द्देशो दृश्यते स च तत्कालापेक्षः (वृ) ।

[6] सं० पा०—तलवर जाव अण्णमण्णं ।

[7] पुणो त (क, ग) ।

[8] लोगंतितेहिं (क, ख, ग) ।

मंगलाहिं सस्सिरिआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुव्वमाणे य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिति । से णं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहिति तं चेव दिवसं सयमेयमेतारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिहिति[2]—जे केइ

---

१. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयाहिति ।

२. 'क' प्रतौ स्वीकृतपाठस्य वाचनान्तरस्य च सम्मिश्रणं लभ्यते । वृत्तिकारेणापि वाचनान्तरस्य व्याख्या कृतास्ति, यथा—इतो वाचनान्तरमनुश्रित्य लिख्यते । तस्स ण भगवतस्स [अत्र 'से णं भगवं' युज्यते] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ; तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे (वृपा—किन्नगंथे) निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते ।

कंसे संखे जीवे,
गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे,
विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे,
नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे,
वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भविस्सइ, सेय पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंत्तीए मुत्तीए गुत्तीए सच्च संजम तव गुण सुचरिय सोय विय [चिय ?] फलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पजिहिति ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुराइं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइं स भावणाइं छ जीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति ।

उवसग्गा उप्पज्जिहिंति,[1] तं जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते सव्वे सम्मं 'सहिस्सइ खमिस्सइ'[2] तितिक्खिस्सइ अहियास्सिसइ ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सति—इरियासमिते भासासमिते एवं जहा वद्धमाणसामी तं चेव णिरवसेसं जाव[3] अव्वावारविउसजोगजुत्ते ।

तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वीतिक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स[4] णं संवच्छरस्स अंतरा[5] वट्टमाणस्स[6] अणुत्तरेणं णाणेणं जहा भावणाते[7] केवलवरणाणदंसणे समुप्पजिहिति । जिणे भविस्सति केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइय जाव[8] पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति ।

से जहाणामए अज्जो ! मए[9] समणाणं णिग्गंथाणं ऐगे आरंभठाणे पण्णत्ते । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभठाणं पण्णवेहिति ।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तं जहा—पेज्जबंधणे य, दोसबंधणे य । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पण्णवेहिति, तं जहा—पेज्जबंधणं च, दोसबंधणं च ।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वयदंडे, कायदंडे । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिति, तं जहा—मणोदंडं, वयदंडं, कायदंडं ।

---

[1] उप्पज्जंति (ख) ।

[2] सहेज्जा खमेज्जा (क, ख, ग) .

[3] अस्य पूर्तिस्थलं अद्यावधिनोपलब्धम् ।

[4] तेरसगस्स (क, ग); तेरसम्मस्स (ख) ।

[5] अंतो (क, ग) ।

[6] वद्धमाणस्स (ग) ।

[7] अस्यपूर्तिर्भावनाध्ययनस्य चूर्णिविवृतपाठस्याधारेण इत्थं जायते—अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाण-मग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे । अंगसुत्ताणि भाग १, परिशिष्ट २, आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर ।

[8] अस्यपूतिर्भावनाध्ययनस्य चूर्णिविवृतपाठस्याधारेण इत्थं जायते—तिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणिस्सइ पासिस्सइ, तं जहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ । तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं । अंगसुत्ताणि भाग १, परिशिष्ट २, आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर ।

[9] मते (क, ख, ग) ।

से जहाणामए [1]°अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाए पण्णवेहिति, तं जहा—कोहकसायं, माणकसायं, मायाकसायं, लोभकसायं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दे, रूवे, गंधे, रसे, फासे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणे पण्णवेहिति, तं जहा—सद्दं, रूवं, गंधं, रसं, फासं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, तसकाइया। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाए पण्णवेहिति, तं जहा—पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए°, तसकाइए।

से जहाणामए[2] °अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं° सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा[3]—°इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए°। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणे पण्णवेहिति[4], °तं जहा—इहलोगभयं परलोगभयं आदाणभयं अकम्हाभयं वेयणभयं मरणभयं असिलोगभयं°।

एवं अट्ठ मयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ, दसविधे समणधम्मे, एवं जाव[5] तेत्तीसमासातणाउत्ति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावे[6] मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ[7] पण्णत्ताओ। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावं[8] °मुंडभावं अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणुवाहणयं भूमिसेज्जं फलगसेज्जं कट्ठसेज्जं केसलोयं बंभचेरवासं परघरपवेसं° लद्धावलद्धवित्तीं[9] पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मिएति वा उद्देसिएति वा मीसज्जाएति वा अज्झोयरएति वा पूतिए कीते पामिच्चे अच्छेज्जे

---

[1] सं० पा०—एवमेतेणमभिलावेणं·····एवामेव जाव तसकाइया।

[2] सं० पा०—से जहाणामते °·······।

[3] सं० पा०—सत्त भयट्ठाणा पं० तं०··· ''।

[4] सं० पा०—पण्णवेहिति·····।

[5] आवस्सय ४।

[6] निग्गभावे (ख)।

[7] लद्धावलद्धवित्ती जाव (क, ग)।

[8] सं० पा०—णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती।

[9] लद्धावलद्धवित्ती जाव (क)।

अणिसट्ठे अभिहडेति वा कंतारभत्तेति वा दुब्भिक्खभत्तेति वा गिलाणभत्तेति वा वद्दलियाभत्तेति वा पाहुणभत्तेति वा मूलभोयणेति वा कंदभोयणेति वा फलभोयणेति वा बीयभोयणेति वा हरियभोयणेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मियं वा[1] °उद्देसियं वा मीसज्जायं वा अज्झोयरयं वा पूतियं कीतं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं वा कंतारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणभत्तं वा मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा° हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतिए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतियं[2] °सपडिक्कमणं° अचेलगं धम्मं पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणोवासगाणं पंचाणुव्वतिए सत्तसिक्खावतिए—दुवालसविधे सावगधम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणोवासगाणं पंचाणुव्वतियं[3] °सत्तसिक्खावतियं—दुवालसविधं° सावगधम्मं पण्णवेस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडं वा रायपिंडं वा पडिसेहिस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मम णव गणा एगारस गणधरा। एवामेव महापउमस्सवि अरहतो णव गणा एगारस गणधरा भविस्संति।

से जहाणामए अज्जो! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता[4] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं[5] °बुज्झिस्सं मुच्चिस्सं परिणिव्वाइस्सं° सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं। एवामेव महापउमेवि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[6] °मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वाहिती, दुवालस संवच्छराइं[7] °तेरसपक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरि-

---

[1] सं० पा०—आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं।

[2] सं० पा०—पंचमहव्वतितं जाव अचेलगं।

[3] सं० पा०—पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं।

[4] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते।

[5] सं० पा०—सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाण°।

[6] सं० पा०—वसित्ता जाव पव्वाहिती।

[7] सं० पा०—संवच्छराइं जाव वावत्तरिवासाइं।

यागं पाउणित्ता°, वावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती[1] •बुज्झिहिती मुच्चिहिती परिणिव्वाइहिती° सव्वदुक्खाणमंतं काहिती—

संगहणी-गाहा

जस्सील-समायारो, अरहा तित्थंकरो महावीरो।
तस्सील-समायारो, होति उ अरहा महापउमो ॥१॥

णक्खत्त-पदं

६३. णव णक्खत्ता 'चंदस्स पच्छंभागा'[2] पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अभिई समणो धणिट्ठा, रेवति अस्सिणि[3] मग्गसिर[4] पूसो।
हत्थो चित्ता य तहा, पच्छंभागा णव हवंति ॥१॥

विमाण-पदं

६४. आणत-पाणत-आरणच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

कुलगर-पदं

६५. विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥

तित्थगर-पदं

६६. उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वोइक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते ॥

दीव-पदं

६७. घणदंत-लट्ठदंत-गूढदंत-सुद्धदंतदीवा णं दीवा णव-णव जोयणसताइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

महग्गह-पदं

६८. सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पण्णओ, तं जहा—हयवीही[5], गयवीही[6], णागवीही, वसहवीही, गोवीही, उरगवीही[7], अयवीही, मियवीही[8], वेसाणरवीही ॥

---

[1] सं० पा०—सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण°।

[2] पच्छभागा (क); पच्छं भागा (ख, ग)।

[3] अस्सेति (ख)।

[4] मिगसिरा (ग)।

[5] हत° (क, ख, ग)।

[6] गत° (क, ख, ग)।

[7] जरगवीही (क, ख); जरग्गविही (ग)।

[8] मित° (क, ख, ग)।

कम्म-पदं

६९. णवविधे णोकसायवेयणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेए[1], पुरिसवेए, णपुंसकवेए, हासे, रती, अरती, भये, सोगे, दुगुंछा ।।

कुलकोडि-पदं

७०. चउरिंदियाणं णव जाइ-कुलकोडि-जोणिपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७१. भुयगपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं णव जाइ-कुलकोडि-जोणिपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

पावकम्म-पदं

७२. जीवा णं णवट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयणिव्वत्तिते[2], °आउकाइयनिव्वत्तिते, तेउकाइयणिव्वत्तिते, वाउकाइयणिव्वत्तिते, वणस्सइकाइयणिव्वत्तिते, बेइंदियणिव्वत्तिते, तेइंदियणिव्वत्तिते, चउरिंदियणिव्वत्तिते° पंचिंदियणिव्वत्तिते ।

एवं—चिण-उवचिण[3] °बंध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ।।

पोग्गल-पदं

७३. णवपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता जाव[4] णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।

---

[1] °वेते (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—पुढविकाइयणिव्वित्तिते जाव पंचिंदियणिव्वत्तिते ।

[3] सं० पा०—उवचिण जाव णिज्जरा ।

[4] ठा० १।२५४-२५६ ।

दसमं ठाणं

लोगट्ठिति-पदं

१. दसविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—

१. जण्णं जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायंति—एवंप्पेगा[1] लोगट्ठिती पण्णत्ता।

२. जण्णं जीवाणं सया समितं पावे कम्मे कज्जति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

३. जण्णं जीवाणं सया समितं[2] मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

४. ण एवं[3] भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीवा भविस्संति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

५. ण एवं[4] भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति 'थावरा पाणा भविस्संति'[5], थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

६. ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं लोगे अलोगे भविस्सति, अलोगे वा लोगे भविस्सति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

७. ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं लोए अलोए पविस्सति, अलोए वा लोए पविस्सति—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

८. जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा, 'जाव ताव'[6] जीवा ताव ताव लोए—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

---

[1] एवं एगा (क, ख, ग, वृपा)।

[2] समिते (क, ग)।

[3,4] एतं (क, ख, ग)।

[5] × (क्व)।

[6] इह यावज्जीवास्तावत्तावल्लोको, यावति क्षेत्रे जीवास्तावत्क्षेत्रं लोक इति भावार्थः, 'जाव तावे' त्यादिवाक्यरचना तु भाषामात्रम् (वृ)।

९. जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए[1] ताव ताव लोए, जाव ताव लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता ।

१०. सव्वेसुवि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जंति, जेणं जीवा य पोग्गला य णो संचायंति बहिया लोगंता गमणयाए—एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता ।।

इंदियत्थ-पदं

२. दसविहे सद्दे पण्णत्ते, तं जहा—

संगह-सिलोगो

णीहारि[2] पिंडिमे लुक्खे, भिण्णे जज्जरिते इ[3] य ।
दीहे रहस्से पुहत्ते य, काकणी खिंखिणिस्सरे ।।१।।

३. दस इंदियत्था तीता पण्णत्ता, तं जहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु । सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु । देसेणवि एगे रूवाइं पासिंसु । सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिंसु । [4]•देसेणवि एगे गंधाइं जिंघिंसु । सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघिंसु । देसेणवि एगे रसाइं आसादेंसु । सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेंसु । देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु° । सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु ।।

४. दस इंदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता, तं जहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति । सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति । [5]•देसेणवि एगे रूवाइं पासंति । सव्वेणवि एगे रूवाइं पासंति । देसेणवि एगे गंधाइं जिंघंति । सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघंति । देसेणवि एगे रसाइं आसादेंति । सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेंति । देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति । सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति° ।।

५. दस इंदियत्था अणागता पण्णत्ता, तं जहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति । सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति । [6]•देसेणवि एगे रूवाइं पासिस्संति । सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिस्संति । देसेणवि एगे गंधाइ जिंघिस्संति । सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघिस्संति । देसेणवि एगे रसाइं आसादेस्संति । सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेस्संति । देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति° । सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति ।।

---

[1] गतिपरिताते (क, ख, ग) ।

[2] नीहारिए (क, ग) ।

[3] × (क, ग) ।

[4] सं० पा०—एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि ।

[5] सं० पा०—एवं जाव फासाइं ।

[6] सं० पा०—एवं जाव सव्वेणवि ।

अच्छिण्ण-पोग्गल-चलण-पदं

६. दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, तं जहा—आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा। परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा। उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। णिस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा। णिज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा। विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा। परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा। जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा। वातपरिगए[1] वा चलेज्जा।।

कोधुप्पत्ति-पदं

७. दसहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिया, तं जहा–मणुण्णाइं मे सद्द फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहंरिसु। अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहंरिसु[2]। मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरइ। अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस[3]-°रस-रूव°-गंधाइं उवहरति। मणुण्णाइं मे सद्द[4]-°फरिस-रस-रूव-गंधाइं° अवहरिस्सति। अमणुण्णाइं मे सद्द[5]-फरिस-रस-रूव-गंधाइं° उवहरिस्सति। मणुण्णाइं मे सद्द[6]-°फरिस-रस-रूव°-गंधाइं अवहंरिसु वा अवहरइ वा अवहरिस्सति वा। अमणुण्णाइं मे सद्द[7]-°फरिस-रस-रूव-गंधाइं° उवहंरिसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा। मणुण्णामणुण्णाइं मे सद्द[8]-°फरिस-रस-रूव-गंधाइं° अवहंरिसु वा अवहरति वा अवहरिस्सति वा, उवहंरिसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा। अहं च णं आयरिय-उवज्झायाणं सम्मं वट्टामि, ममं च णं आयरिय-उवज्झाया मिच्छं विप्पडिवण्णा[9]।।

संजम-असंजम-पदं

८. दसविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे[10]°, °आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे°, वणस्सतिकाइयसंजमे, बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे, पंचिंदियसंजमे, अजीवकायसंजमे।।

---

[1] प्रतिषु 'वातपरिग्गहे' पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ समीक्षया स संगतिं नैति। वृत्तिव्याख्यातः पाठोत्र समीचीनो विभाति, तेनात्र स एव मूले स्वीकृतः। वृत्तौ व्याख्या इत्थमस्ति—"वातपरिगतो—देहगतवायुप्रेरितः वातपरिगते वा देहे सति बाह्यवातेन वोत्क्षिप्तं इति।" (वृत्तिपत्र ४४८)।

[2] इह चैकवचनबहुवचनयोर्न विशेषः प्राकृतत्वात् (वृ)।

[3] सं० पा०—फरिस जाव गंधाइं।

[4] सं० पा०—सद्द जाव अवहरिस्सति।

[5] स० पा०—सद्द जाव उवहरिस्सति।

[6] सं० पा०—सद्द जाव गंधाइं।

[7] सं० पा०—सद्द जाव उवहंरिसु।

[8] सं० पा०—सद्द जाव अवहंरिसु।

[9] पडिवन्ना (क्व)।

[10] सं० पा०—पुढविकातितसंजमे जाव वणस्सति°।

९. दसविधे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे, आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे, वणस्सतिकाइयअसंजमे[1], °बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे, पंचिंदियअसंजमे°, अजीवकायअसंजमे ।।

संवर-असंवर-पदं

१०. दसविधे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियसंवरे[2], °चक्खिदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिदियसंवरे°, फासिंदियसंवरे, मणसंवरे वयसंवरे कायसंवरे, उवकरणसंवरे, सूचीकुसग्गसंवरे ।।

११. दसविधे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे[3], °चक्खिदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिदियअसंवरे, फासिंदियअसंवरे, मणअसंवरे, वयअसंवरे, कायअसंवरे, उवकरणअसंवरे°, सूचीकुसग्गअसंवरे ।।

अहमंत-पदं

१२. दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा, तं जहा—जातिमएण वा, कुलमएण वा[4], °बलमएण वा, रूवमएण वा, तवमएण वा, सुतमएण वा, लाभमएण वा°, इस्सरियमएण वा, णागसुवण्णा वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति, पुरिसधम्मातो वा मे उत्तरिए आहोधिए[5] णाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

समाधि-असमाधि-पदं

१३. दसविधा समाधी पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, इरियासमिती[6], भासासमिती, एसणासमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणिया समिती ।।

१४. दसविधा असमाधी पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवाते,[7] °मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे°, परिग्गहे, इरियाऽसमिती[8], °भासाऽसमिती, एसणाऽसमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणाऽसमिती°, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणियाऽसमिती ।।

पव्वज्जा-पदं

१५. दसविधा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] सं० पा०—वणस्सतिकातितअसंजमे जाव अजीवकाय° ।

[2] सं० पा०—सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय°।

[3] सं० पा०—सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्ग° ।

[4] सं० पा०—कुलमतेण वा जाव इस्सरिय°।

[5] अबोधित (ग); अहो° (वृ) ।

[6] रितासमिती (क); इरिता° (ख, ग) ।

[7] सं० पा०—पाणातिवाते जाव परिग्गहे ।

[8] सं० पा०—इरिताऽसमिती जाव उच्चार°।

संगहणी-गाहा

छंदा रोसा परिजुण्णा, सुविणा पडिस्सुता चेव ।
सारणिया रोगिणिया, अणाढिता देवसण्णत्ती ।।१।।
वच्छाणुबंधिया ।।

समणधम्म-पदं

१६. दसविधे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे ।।

वेयावच्च-पदं

१७. दसविधे वेयावच्चे पण्णत्ते, तं जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे ।।

परिणाम-पदं

१८. दसविधे जीवपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—गतिपरिणामे, इंदियपरिणामे[1], कसायपरिणामे, लेसापरिणामे, जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे, णाणपरिणामे, दंसणपरिणामे, चरित्तपरिणामे, वेयपरिणामे[2] ।।

१९. दसविधे अजीवपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—बंधणपरिणामे, गतिपरिणामे, संठाणपरिणामे, भेदपरिणामे, वण्णपरिणामे, रसपरिणामे, गंधपरिणामे, फासपरिणामे, अगुरुलहुपरिणामे, सद्दपरिणामे ।।

असज्झाइय-पदं

२०. दसविधे अंतलिक्खए[3] असज्झाइए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, णिग्घाते, जुवए[4], जक्खालित्ते[5], धूमिया, महिया, रयुग्घाते[6] ।।

२१. दसविधे ओरालिए असज्झाइए पण्णत्ते, तं जहा—अट्ठि, मंसे, सोणिते[7], असुइसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराए[8], सूरोवराए[9], पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे ।।

---

[1] इंदित° (क, ख, ग) ।
[2] वेत° (क, ख, ग) ।
[3] अंतलिक्खिते (क, ख, ग) ।
[4] जूयते (ख) ।
[5] जक्खलित्तते (क); जक्खालित्तते (ख); जक्खलितिते (ग) ।
[6] रतुग्घाते (क, ख) ।
[7] ग्रन्थान्तरे चर्माप्यधीयते, यदाह—"सोणिय मंसं चम्मं, अट्ठीवि य होंति चत्तारि" (वृ) ।
[8] चंदोवराते (क, ख, ग) ।
[9] सूरोवराते (क, ख, ग) ।

संजम-असंजम-पदं

२२. पंचिंदिया णं जोवा असमारभमाणस्स दसविधे संजमे कज्जति, तं जहा—सोतामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। सोतामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। [1]•चक्खुमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति°। फासामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति ॥

२३. [2]•पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स दसविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—सोतामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। सोतामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। चक्खुमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति °॥

सुहुम-पदं

२४. दस सुहुमा पण्णत्ता, तं जहा—पाणसुहुमे, पणगसुहुमे[3], •बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे, लेणसुहुमे°, सिणेहसुहुमे, गणियसुहुमे, भंगसुहुमे ॥

महाणदी-पदं

२५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा-सिंधु-महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—जउणा, सरऊ, आवी, कोसी, मही, सतद्दू, वितत्था[4], विभासा, एरावती, चंदभागा ॥

२६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्ता-रत्तवतीओ महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा, इंदा[5], •इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा°, महाभोगा[6] ॥

---

[1] सं० पा०—एवं जाव फासामतंणं।

[2] सं० पा०—एवं असंयमो वि भाणितव्वो।

[3] सं० पा०—पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे।

[4] विवच्छा (क); विवत्था (ग)।

[5] सं० पा०—इंदा जाव महाभोगा।

[6] सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु निम्नप्रकारः पाठो लभ्यते—"किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला तीरा महातीरा इदा जाव महाभोगा।" वृत्तौ च—"एवं रक्तासूत्रमपि नवर यावत्करणात् 'इन्दसेणा वारिसेण' ति द्रष्टव्यमिति" (वृत्तिपत्र ४५४)। किन्तु पंचमस्थानसमागतपाठस्य (सू० २३२, २३३) संदर्भे नैष पाठः समीचीनो भाति, तेनास्माभिर्मूले पंचमस्थानसमागतः पाठः स्वीकृतः।

रायहाणी-पदं

२७. जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

संगहणी-गाहा

चंपा[1] महुरा वाणारसी य सावत्थि 'तह य'[2] साकेतं[3] ।
हत्थिणउर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं ।।१।।

राय-पदं

२८. एयासु णं दससु रायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता[4] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइया, तं जहा – भरहे, सगरे[5], मघवं, सणंकुमारे, संती, कुंथू, अरे, महापउमे, हरिसेणे, जयणामे ।।

मंदर-पदं

२९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं, दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ।।

दिसा-पदं

३०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम-हेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, एत्थ णं अट्ठपएसिए[6] रुयगे पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तं जहा—पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा, पच्चत्थिमा, पच्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा, उत्तरपुरत्थिमा, उड्ढा, अहा ।

३१. एतासि णं दसण्हं दिसाणं दस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

इंदा अग्गेइ[7] जम्मा य, णेरती वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी य, विमला य तमा य बोद्धव्वा ।।१।।

लवणसमुद्द-पदं

३२. लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविहरिते खेत्ते पण्णत्ते ।।

३३. लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते ।।

---

[1] चंपं (ग) ।

[2] चंद त (ग) ।

[3] सातेतं (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा० –भवेत्ता जाव पव्वतिता ।

[5] सागरो (ख) ।

[6] °पतेसिते (क, ख, ग) ।

[7] अग्गीयी (ख) ।

पायाल-पदं

३४. सव्वेवि णं महापाताला दसदसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पण्णत्ता, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। तेसि णं महापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

३५. सव्वेवि णं खुड्डा पाताला दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता, मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। तेसि णं खुड्डापातालाणं[1] कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

पव्वय-पदं

३६. धायइसंडगा णं मंदरा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं, धरणीतले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

३७. पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, एवं चेव ॥

३८. सव्वेवि णं वट्टवेयड्ढपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठिता,[2] दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

खेत्त-पदं

३९. जंबुद्दीवे दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवस्से, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा ॥

पव्वय-पदं

४०. माणुसुत्तरे णं पव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४१. सव्वेवि णं अंजण-पव्वता दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

४२. सव्वेवि णं दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठिता,[3] दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

४३. सव्वेवि णं रतिकरपव्वता दस जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दसगाउयसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठिता, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

---

१. खुड्डापोताला (ग)।

२, ३. संठाणसठिता (क्व)।

४४. रुयगवरे णं पव्वते दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४५. एवं कुंडलवरेवि ॥

दवियाणुओग-पदं

४६. दसविहे दवियाणुओगे पण्णत्ते, तं जहा—दवियाणुओगे, माउयाणुओगे, एगट्ठियाणुओगे, करणाणुओगे, अप्पितणप्पिते[1], भाविताभाविते, बाहिरावाहिरे, सासतासासते, तहणाणे, अतहणाणे ॥

उप्पातपव्वय-पदं

४७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिंछिकूडे[2] उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४८. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं[3], मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४९. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पातपव्वते एवं चेव ॥

५०. एवं वरुणस्सवि ॥

५१. एवं वेसमणस्सवि ॥

५२. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

५३. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स एवं चेव, जधा चमरस्स लोगपालाणं[4] तं चेव बलिस्सवि[5] ॥

५४. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो धरणप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसताइं विक्खंभेणं ॥

५५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो कालवालप्पभे[6] उप्पातपव्वते जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं चेव ॥

---

[1] अप्पिणप्पिते (क)।

[2] तेगिच्छि० (क)।

[3] ओव्वे० (क)।

[4] द्रष्टव्यम्—ठा० ४।१२२।

[5] ठा० १०।८४-५१।

[6] महाकालप्पभे (क, ख, ग); आदर्शेषु 'महाकालप्पभ' पाठो लभ्यते, किन्तु 'सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिनामगा'

५६. एवं जाव[१] संखवालस्स ॥

५७. एवं भूताणंदस्सवि[२] ॥

५८. एवं लोगपालाणवि[३] से, जहा धरणस्स ॥

५९. एवं जाव[४] थणितकुमाराणं सलोगपालाणं[५] भाणियव्वं, सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिणामगा[६] ॥

६०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

६१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो। जधा सक्कस्स तधा सव्वेसिं लोगपालाणं,[७] सव्वेसिं च इंदाणं जाव[८] अच्चुयत्ति। सव्वेसिं पमाणमेगं ॥

ओगाहणा-पदं

६२. बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥

६३. जलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयणसताइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥

६४. उरपरिसप्प-थलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं [९]°दस जोयणसताइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता° ॥

तित्थगर-पदं

६५. संभवाओ णं अरहातो अभिणंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे ॥

अणंत-पदं

६६. दसविहे अणंतए[१०] पण्णत्ते, तं जहा—णामाणंतए ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंतए, पएसाणंतए, एगतोणंतए, दुहतोणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए सासताणंतए ॥

पुव्ववत्थु-पदं

६७. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पण्णत्ता ॥

६८. अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वस्स[११] णं दस चूलवत्थू पण्णत्ता ॥

इति नियामकपाठेन 'कालवालप्पभ' इति पाठो युज्यते। वृत्तौ कालवालस्य कालवालप्रभः' इत्युल्लिखितमस्ति। एतत् समीक्षयास्माभिः 'कालवालप्पभ' पाठः स्वीकृतः।

[१] ठा० ४।१२२।

[२] ठा० १०।५४।

[३] लोगपालाणंपि (क, ख, ग)।

[४] ठा० १।१४४-१५०।

[५] द्रष्टव्यम्—ठा० ४।१२२।

[६] सरिसणामगा (क्व)।

[७] द्रष्टव्यम् ठा० ४।१२२।

[८] ठा० २।३८०-३८४।

[९] सं० पा०—एवं चेव।

[१०] अणंतते (क, ख, ग)।

[११] °प्पवात° (क, ख, ग)।

पडिसेवणा-पदं

६९. दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

दप्प पमायऽणाभोगे, आउरे आवतीसु य।
संकिते सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ॥१॥

आलोयणा-पदं

७०. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, तं जहा—

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा।
छण्णं सद्दाउलगं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

७१. दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोएत्तए, तं जहा—जाइसंपण्णे, कुलसंपण्णे, [1]°विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे,° खंते, दंते, अमायी[2], अपच्छाणुतावी ॥

७२. दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं, आहारवं[3], ववहारवं, ओवीलए, पकुव्वए, अपरिस्साई, णिज्जावए,° अवायदंसी, पियधम्मे[4] दढधम्मे ॥

पायच्छित्त-पदं

७३. दसविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे[5], °पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे°, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ॥

मिच्छत्त-पदं

७४. दसविधे मिच्छत्ते पण्णत्ते, तं जहा—अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा, उमग्गे[6] मग्गसणा, मग्गे उम्मग्गसण्णा[7], अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,

---

[1] सं० पा०—एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते।

[2] अमाती (क, ख, ग)।

[3] अवहारवं (ख, ग, वृ); ८।१८ सूत्रे 'आधारवं' पाठो विद्यते। भगवत्या (२५।५५४) मपि 'आहारवं' पाठो लभ्यते। अष्टमस्थानेपि वृत्तिकारेणास्यार्थः 'अवधारणावान्' कृतः अत्रापि स एवार्थः कृतोस्ति। भगवतीवृत्तावपि एष एवार्थोस्ति। अत्र 'आधारवान्' इत्यर्थोभिप्रेतोस्ति, तेन 'आधा [हा] रवं' इत्येव पाठः समीचीनः प्रतिभाति। सं० पा०—आहारवं जाव अवातदंसी।

[4] वित° (क); पित° (ख, ग)।

[5] सं० पा०—आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे।

[6] अमग्गे (ख)।

[7] अमग्गसण्णा (वृ)।

असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा, अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा ॥

तित्थगर-पदं

७५. चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

७६. धम्मे णं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[2] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

७७. णमी णं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[3] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

वासुदेव-पदं

७८. पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं[4] सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे ॥

तित्थगर-पदं

७९. णेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[5] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

वासुदेव-पदं

८०. कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे ॥

भवणवासि-पदं

८१. दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारा जाव[6] थणियकुमारा ॥

८२. एएसि णं दसविधाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अस्सत्थ[7] सत्तिवण्णे, सामलि उंबर सिरीस दहिवण्णे ।
वंजुल-पलास-वग्घा[8], तते य कणियाररुक्खे[9] ॥१॥

१,२,३. सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

४. वाससहस्साइं (क; ख, ग) ।

५. सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

६. ठा० १.१४३-१५० ।

७. असत्थ (ख); अस्सत्त (ग) ।

८. द्वयोरादर्शयोः मुद्रितपुस्तकेषु च 'वप्पा, वप्पो, वप्पे' इति पाठा लभ्यन्ते । किन्तु 'वप्र' शब्दस्य वृक्षवाचित्वं नोपलभ्यते । 'वग्घ' शब्दोत्र उपयुक्तोस्ति । पाइयसद्दमहण्णवे 'व्याघ्र' शब्दस्य वृक्षवाचि अर्थद्वयं विद्यते—रक्तएरण्ड का पेड़, करंज का पेड़ । आप्टेमहोदयस्य संस्कृतइंगलिशशब्दकोषे 'व्याघ्र' शब्दस्यार्थः रक्तएरण्डवृक्षः कृतोस्ति—'The red variety of the castor. Oil plant.

९. कणितार° (क,ख, ग) ।

सोक्ख-पदं

८३. दसविधे सोक्खे पण्णत्ते, तं जहा—

आरोग्ग दीहमाउं, अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे।
अत्थि सुहभोग णिक्खम्ममेव तत्तो अणावाहे ॥१॥

उवघात-विसोहि-पदं

८४. दसविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, °[1]एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते°, परिहरणोवघाते, णाणोवघाते, दंसणोवघाते, चरित्तोवघाते, अचियत्तोवघाते, सारक्खणोवघाते ॥

८५. दसविधा विसोही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही[2], °एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही, णाणविसोही, दंसणविसोही, चरित्तविसोही, अचियत्तविसोही°, सारक्खणविसोही ॥

संकिलेस-असंकिलेस-पदं

८६. दसविधे संकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—उवहिसंकिलेसे, उवस्सयसंकिलेसे, कसायसंकिलेसे, भत्तपाणसंकिलेसे, मणसंकिलेसे, वइसंकिलेसे, कायसंकिलेसे, णाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे ॥

८७. दसविहे असंकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—उवहिअसंकिलेसे[3], °उवस्सयअसंकिलेसे, कसायअसंकिलेसे, भत्तपाणअसंकिलेसे, मणअसंकिलेसे, वइअसंकिलेसे, कायअसंकिलेसे, णाणअसंकिलेसे, दंसणअसंकिलेसे°, चरित्तअसंकिलेसे ॥

बल-पदं

८८. दसविधे बले पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियबले[4], °चक्खिंदियबले, घाणिंदियबले, जिब्भिंदियबले°, फासिंदियबले, णाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले ॥

भासा-पदं

८९. दसविहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

जणवय सम्मय ठवणा, णामे रूवे पडुच्चसच्चे य।
ववहार भाव जोगे, दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

---

[1] सं० पा०—जह पंचट्ठाणे जाव परिहरणोवघाते।

[2] सं० पा०—उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही।

[3] सं० पा०—उवहिअसकिलेसे जाव चरित्त°।

[4] सं० पा०—सोतिंदितबले जाव फासिंदित बले।

९०. दसविधे मोसे पण्णत्ते, तं जहा—

कोधे माणे माया, लोभे पिज्जे तहेव दोसे य।
हास भए अक्खाइय, उवघात णिस्सिते दसमे ॥१॥

९१. दसविधे सच्चामोसे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पण्णमीसए, विगतमीसए, उप्पण्णविगतमीसए, जीवमीसए, अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए, अणंतमीसए, परित्तमीसए, अद्धामीसए, अद्धद्धामोसए ॥

दिट्ठिवाय-पदं

९२. दिट्ठिवायस्स णं दस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—दिट्ठिवाएति वा, हेउवाएति वा, भूयवाएति वा, तच्चावाएति वा, सम्मावाएति वा, धम्मावाएति वा, भासाविजएति वा, पुव्वगतेति वा, अणुजोगगतेति वा, सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहेति वा ॥

सत्थपदं

९३. दसविधे सत्थे पण्णत्ते, तं जहा—

संगह-सिलोगो

सत्थमग्गी विसं लोणं, सिणेहो खारमंबिलं।
दुप्पउत्तो मणो वाया, काओ[1] भावो य अविरती ॥१॥

दोस-पदं

९४. दसविहे दोसे पण्णत्ते, तं जहा—

तज्जातदोसे मतिभंगदोसे, पसत्थारदोसे परिहरणदोसे ॥
सलक्खण-क्कारण-हेउदोसे, संकामणं णिग्गह-वत्थुदोसे ॥१॥

विसेस-पदं

९५. दसविधे विसेसे पण्णत्ते, तं जहा—

वत्थु तज्जातदोसे य, दोसे एगट्ठिएति य।
कारणे य पडुप्पण्णे, दोसे णिच्चेहिय अट्ठमे ॥
अत्तणा[2] उवणीते[3] य, विसेसेति य ते दस ॥१॥

सुद्धवायाणुओग-पदं

९६. दसविधे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते, तं जहा—'चंकारे, मंकारे, पिंकारे'[4], सेयंकारे, एगत्ते, पुधत्ते[5], संजूहे, संकामिते, भिण्णे ॥

---

[1] कातो (क, ग); काया (ख)।

[2] 'अत्तण' त्ति आत्मना कृतमिति शेषः (वृ)।

[3] उपनीतं—प्रापितं परेणेति शेषः (वृ)।

[4] चकारे मिकारे पिकारे (ख, ग)।

[5] सुद्धन्ने (क); सुधन्ने (ग)।

दाण-पदं

९७. दसविहे दाणे पण्णत्ते, तं जहा—

संगह-सिलोगो

अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणिएति य।
लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे उण सत्तमे ॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीति य कतंति य ॥१॥

गति-पदं

९८. दसविधा गती पण्णत्ता, तं जहा—णिरयगती, णिरयविग्गहगती, तिरियगती, तिरियविग्गहगती, [1]°मणुयगती, मणुयविग्गहगती, देवगती, देवविग्गहगती°, सिद्धिगती, सिद्धिविग्गहगती ॥

मुंड-पदं

९९. दस मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियमुंडे[2], °चक्खिंदियमुंडे, घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे°, फासिंदियमुंडे, कोहमुंडे[3], °माणमुंडे मायामुंडे° लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥

संखाण-पदं

१००. दसविधे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

परिकम्मं ववहारो, रज्जू रासी कला-सवण्णे य।
जावंतावति वग्गो, घण्णो य तह वग्गवग्गोवि ॥१॥

कप्पो य० ॥

१०१. दसविधे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—

अणागयमतिक्कंतं, कोडीसहियं णियंटितं चेव।
सागारमणागारं, परिमाणकडं णिरवसेसं ॥
संकेयगं चेव अद्धाए, पच्चक्खाणं दसविहं तु ॥१॥

सामायारी-पदं

१०२. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] सं० पा०—एवं जाव सिद्धिगती।

[2] सोतिंदित° (क, ख, ग); सं० पा०—सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदित°।

[3] सं० पा०—कोहमुंडे जाव लोभमुंडे।

संगह-सिलोगो

इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया[1] य णिसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य णिमंतणा ।।
उवसंपया य काले, सामायारी[2] दसविहा उ ।।१।।

महावीर-सुमिण-पदं

१०३. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसी इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—

१. एगं च णं 'महं घोररूवदित्तधरं'[3] तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

२. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

३. एगं च णं महं चित्तविंचित्तपक्खगं पुंसकोइलं[4] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

५. एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

७. एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीची-सहस्सकलितं[5] भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

९. एगं[6] च णं महं हरि-वेरुलिय-वण्णाभेणं णियएणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१०. एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलओ उग्घाइते ।

२. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं[7] °पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ।

---

[1] आवस्सिती (क) ।
[2] सामायारी भवे (क, ग) ।
[3] महाघोररूवदित्तधरं (क, ख, ग, वृ) ।
[4] पूस० (क, ख, ग) ।
[5] उम्मीसहस्स० (वृपा) ।
[6] एगेण (वृ); एगं (वृपा) ।
[7] सं० पा०—सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे ।

३. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[1] °पुंसकोइलं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे ससमय-परसमयियं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति णिदंसेति उवदंसेति, तं जहा—आयारं[2], °सूयगडं, ठाणं, समवायं, विवा[आ ?]हपण्णत्ती, णायधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं° दिट्ठिवायं।

४. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणा[3] °मयं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेति, तं जहा—अगारधम्मं च, अणगारधम्मं च।

५. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे[4] °पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ।

६. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं पउमसरं[5] °सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए।

७. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीची[6]-°सहस्स-कलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणादिए[7] अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंते संसारकंतारे तिण्णे।

८. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दिणयरं[8] °तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे[9] °णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे।

९. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं हरि-वेरुलिय[10] °वण्णाभेणं णियएणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवतो महावीरस्स सदेवमणुयासुर लोगे उराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा परिगुव्वंति[11]—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे।

---

[1] सं० पा०—चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे।

[2] सं० पा०—आयारं जाव दिट्ठिवायं।

[3] सं० पा०—सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे।

[4] सं० पा०—सुमिणे जाव पडिबुद्धे।

[5] सं० पा०—पउमसरं जाव पडिबुद्धे।

[6] सं० पा०—उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे।

[7] अणातीते (क, ख, ग)।

[8] सं० पा०—दिणयरं जाव पडिबुद्धे।

[9] सं० पा०—अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे।

[10] सं० पा०—हरिवेरुलित जाव परिबुद्धे।

[11] परिब्भमंति(वृपा);परिब्भमंति(भ० १६।९१); 'परिगुव्वंति' परिगुप्यन्ति व्याकुलीभवन्ति सतत भ्रमन्तीत्यर्थः, अथवा परिगूयन्ते—गूङ्धातोः शब्दार्थत्वात् संशब्द्यंते (वृ)।

१०. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए उवरिं[1] °सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगते केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेति पण्णवेत्ति[2] °परूवेति दंसेति णिदंसेति° उवदंसेति ।।

रुचि-पदं

१०४. दसविधे सरागसम्मद्दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

णिसग्गुवएसरुई[3], आणारुई सुत्तबीयरुइ मेव ।
अभिगम वित्थाररुई, किरिया-संखेव-धम्मरुई ।।१।।

सण्णा-पदं

१०५. दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा[4], °भयसण्णा, मेहुणसण्णा°, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा[5], °माणसण्णा, मायासण्णा°, लोभसण्णा, 'लोगसण्णा, ओहसण्णा'[6] ।।

१०६. णेरइयाणं दस सण्णाओ एवं चेव ।।

१०७. एवं णिरंतरं जाव[7] वेमाणियाणं ।।

वेयणा-पदं

१०८. णेरइया णं दसविधं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—सीतं, उसिणं, खुधं, पिवास, कंडुं, परज्झं, भयं, सोगं, जरं, वाहिं ।।

छउमत्थ-केवलि-पदं

१०९. दस ठाणाइं छउमत्थे[8] सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं[9], °अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं°, वातं, 'अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति'[10], अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति ।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा[11] °जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं, जीवं असरीर-

---

[1] सं० पा०—उवरिं जाव पडिबुद्धे ।

[2] सं० पा०—पण्णवेति जाव उवदंसेति ।

[3] °वतेसरुती (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा ।

[5] कोव° (ग); सं० पा०—कोहसण्णा जाव लोभसण्णा ।

[6] ओघसण्णा लोगसण्णा (वृ); लोगसण्णा ओघसण्णा (वृपा) ।

[7] ठा० १।१४२-१६३ ।

[8] छउमत्थे ण (क, ख, ग) ।

[9] सं० पा०—धम्मत्थिगातं जाव वातं ।

[10] अजिणा भविस्संति वा ण भविस्सति (ग) ।

[11] सं० पा०—अरहा जाव अयं ।

पडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वातं, अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति °, अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति ॥

दसा-पदं

११०. दस दसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ, बंधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ, दीहदसाओ, संखेवियदसाओ ॥

१११. कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगह-सिलोगो

मियापुत्ते य गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे ।
माहणे णंदिसेणे, सोरिए[1] य उदुंबरे ॥
सहसुद्दाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति ॥१॥

११२. उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

आणंदे कामदेवे आ, गाहावतिचूलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए, णंदिणीपिया लेइयापिता[2] ॥१॥

११३. अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

णमि मातंगे सोमिले, रामगुत्ते[3] सुदंसणे चेव ।
जमाली य भगाली य, किंकसे[4] चिल्लए[5] ति य ॥
फाले[6] अंबडपुत्ते य एमेते दस आहिता[7] ॥१॥

---

[1] सूरिते (क, ख, ग) ।

[2] सालितियापिता (क, ग); सालेतितापिता (ख); हस्तलिखितवृत्तौ 'लेइकापितृ॰' इत्यपिलभ्यते—लेइयापियत्ति लेयिकापितृनाम्नः श्रावस्तीनिवासिनो गृहमेधिनो भगवतो बोधिलाभिनोऽनंतरं तथैव सौधर्म्मगामिनो वक्तव्यतानिबद्धं लेयिकापितृनामकं दसममिति । तदाधारेणसौ पाठः स्वीकृतोस्ति । 'उवासगदसाओ' सूत्रेपि 'लेइयापिता' पाठः स्वीकृतोस्ति, यथा—एवं खलु जम्बू । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

आणंदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावतिकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए,
नंदिणीपिया लेइयापिता ।
(उवासगदसाओ १।६) ।

[3] समणगुत्ते (क) ।

[4] किंकम्मे (क्व) ।

[5] पिल्लते (ख) ।

[6] फले (क, ग); काले (ख) ।

[7] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—एतानि च नमीत्यादिकान्यन्तकृतसाधुनामानि अन्तकृद्दशाङ्गप्रथमवर्गेध्ययनसंग्रहे नोपलभ्यते, यतस्तत्राभिधीयते—

११४. अणुत्तरोववातियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

इसिदासे य धण्णे य, सुणक्खत्ते कातिए ति य।
संठाणे[1] सालिभद्दे य, आणंदे तेतली ति य॥
दसण्णभद्दे अतिमुत्ते, एमेते दस आहिया[2]॥१॥

११५. आयारदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—वीसं असमाहिट्ठाणा, एगवीसं सबला, तेत्तीसं आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसंपया, दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपडिमाओ, बारस भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पो, तीसं मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाणं[3]।

११६. पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उवमा, संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासिआइं, खोमगपसिणाइं[4], 'कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं'[5], अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं[6]।

"गोयम समुद्द सागर,
गंभीरे चेव होइ थिमिए य।
अयले कंपिल्ले खलु,
अक्खोभ पसेणई विण्हू॥"

ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति संभावयामः, न जन्मान्तरनामापेक्षयैतानि भविष्यन्तीति वाच्यं, जन्मान्तराणां तत्रानभिधीयमानत्वादिति (वृत्ति पत्र ४८३); तत्त्वार्थराजवार्तिके अन्तकृतदशाया अध्ययनानां नामानि इत्थं सन्ति—'संसारस्यान्तः कृतो यैस्तेन्तकृतः नमिमतंगसोमिलरामपुत्रसुदर्शनयमलीकवलीकनिष्कंबलपालांबष्ठपुत्रा इत्येते दस वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे" (तत्त्वार्थराजवार्तिक १।२०)। एषु कानिचिद् नामानि सदृशानि कानिचिच्च भिन्नानि। अत्र भेदो लिपिकारणेन स्यादथवा वाचनान्तरापेक्षया। स्थानाङ्गवृत्तिकारेण 'वाचनान्तरापेक्षाणि इमानि'—इति लिखितम्। तत्त्वार्थराजवार्तिके इमानि लभ्यन्ते। दिगम्बरपरंपरैव वाचनान्तरमत्र विवक्षितम्?

[1] संठाण (क, ग)।

[2] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—इह च त्रयो वर्गास्तत्र तृतीयवर्गे दृश्यमानाध्ययनैः कैश्चित् सह साम्यमस्ति न सर्वैः, यत इहोक्तम्—'इसिदासे' त्यादि, तत्र तु दृश्यते—

धन्ने य सुनक्खत्ते, इसिदासे य आहिए।
पेल्लए रामपुत्ते य, चंदिमा पोट्टिके इय॥१॥
पेढालपुत्ते अणगारे, अणगारे पोट्टिले इय।
विहल्ले दसमे वुत्ते, एमे ए दस आहिया॥२॥

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति (वृत्ति पत्र ४८३); तत्त्वार्थराजवार्तिके अनुत्तरोपपातिकदशाया अध्ययनानां नामानि इत्थं सन्ति—"अनुत्तरेष्वौपपादिका अनुत्तरौपपादिकाः ऋषिदासधन्यसुनक्षत्रकार्तिकनन्दनन्दनशालिभद्रअभयवारिषेणचिलातपुत्रा इत्येते दस वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे (तत्त्वार्थराजवार्तिक १।२०); °कार्तिकेयानन्दनन्दन° (षट्खण्डागमधवलावृति १।१।२)।

[3] अजाइ° (क, ग)। अज्जाइ° (ख)।

[4] खोमाग° (ख)।

[5] अद्दागपसिणाइं कोमलपसिणाइं (क)।

[6] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—प्रश्नव्याकरणदशा इहोक्तरूपा न दृश्यन्ते दृश्यमानस्तु पञ्चाश्रवपञ्चसंवरात्मिका इति इहोक्तानां तूपमादीनामध्ययनानामक्षरार्थः प्रतीयमान एवेति (वृत्ति पत्र ४८५)।

११७. बंधदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

बंधे य मोक्खे य देवड्ढि, दसारमंडलेवि[1] य।
आयरियविप्पडिवत्ती, उवज्झायविप्पडिवत्ती, भावणा, विमुत्ती, सातो[2], कम्मे[3] ॥

११८. दोगेद्धिदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—वाए, विवाए, उववाते, सुखेत्ते, कसिणे, बायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा, बावत्तरिं सव्वसुमिणा,

हारे रामगुत्ते य, एमेते दस आहिता[4] ॥

११९. दीहदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा —

चंदे सूरे य सुक्के य, सिरिदेवी पभावती।
दीवसमुद्दोववत्ती, बहूपुत्ती मंदरेति य॥
थेरे संभूतिविजए य, थेरे पम्ह ऊसासणीसासे[5] ॥१॥

१२०. संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—खुड्डिया विमाणपविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया[6], वग्गचूलिया[7], विवाहचूलिया, अरुणोववाते, 'वरुणोववाते, गरुलोववाते'[8], वेलंधरोववाते, वेसमणोववाते[9] ॥

कालचक्क-पदं

१२१. दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीए ॥

१२२. दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीए ॥

अणंतर-परंपर-उववण्णादि-पदं

१२३. दसविधा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णा, परंपरोववण्णा, अणंतरावगाढा, परंपरावगाढा, अणंतराहारगा, परंपराहारगा, अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता, चरिमा, अचरिमा।

एवं—णिरंतरं जाव[10] वेमाणिया ॥

---

[1] ०मंडलेति (ग)।

[2] सासते (ख)।

[3] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—बन्धदशानामपि बन्धाद्यध्ययनानि श्रौतेनार्थेन व्याख्यातव्यानि (वृत्ति पत्र ४८५)।

[4] वृत्तिकारेण संसूचिमत्र—द्विगृद्धिदशाश्च स्वरूपतोप्यनवसिताः (वृत्ति पत्र ४८५)।

[5] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—दीर्घदशाः स्वरूपतोऽनवगता एव, तदध्ययनानि तु कानिचिन्नरकावलिकाश्रुतस्कन्धे उपलभ्यन्ते (वृत्ति पत्र ४८५)।

[6] आयारचूलिता (क); अंगारचूलिया (ग)।

[7] वंग० (क, ग)।

[8] गरुलोववाते वरुणोववाए (क, ख, ग)।

[9] वृत्तिकारेण संसूचितमत्र—संक्षेपिकदशा अप्यनवगतस्वरूपा एव (वृत्ति पत्र ४८६)।

[10] ठा० १।१४२-१६३।

णरय-पदं

१२४. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस णिरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता ॥

ठिति-पदं

१२५. रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२६. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२७. पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२८. असुरकुमाराणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता । एवं जाव[1] थणियकुमाराणं ॥

१२९. बायरवणस्सतिकाइयाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

१३०. वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

१३१. बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१३२. लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

भाविभद्दत्त-पदं

१३३. दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए[2] कम्मं पगरेंति, तं जहा—अणिदाणताए, दिट्ठिसंपण्णताए, जोगवाहिताए[3], खंतिखमणताए, जितिंदियताए, अमाइल्लताए, अपासत्थताए, सुसामण्णताए, पवयणवच्छल्लताए, पवयणउब्भावणताए ॥

आसंसप्पओग-पदं

१३४. दसविहे आसंसप्पओगे पण्णत्ते, तं जहा—इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्पओगे, भोगासंसप्पओगे, लाभासंसप्पओगे, पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे ॥

धम्म-पदं

१३५. दसविधे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—गामधम्मे, णगरधम्मे, रट्ठधम्मे, पासंडधम्मे, कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे, सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे[4] ॥

थेर-पदं

१३६. दस थेरा पण्णत्ता, तं जहा—गामथेरा, णगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, संघथेरा, जातिथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा[5] ॥

---

[1] ठा० १।१४३-१५० ।

[2] °भद्दगताए (क, ग) ।

[3] जोगवाहियत्ताते (क, ग); जोगवाहित्ताते (ख) ।

[4] अत्थिगातधम्मे (क, ख, ग) ।

[5] पत्थारथेरा (क); पासत्थेरा थेरथेरा (ग); पसत्थारथेरा (क्व) ।

[6] परिताग° (क, ख, ग) ।

पुत्त-पदं

१३७. दस पुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—अत्तए, खेत्तए, दिण्णए, विण्णए, उरसे, मोहरे, सोंडीरे[1], संवुड्ढे, उवयाइते[2], धम्मंतेवासी ।।

अणुत्तर-पदं

१३८. केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा—अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए, अणुत्तरा खंती, अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे, अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे ।।

कुरा-पदं

१३९. समयखेत्ते णं दस कुराओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंच देवकुराओ पंच उत्तरकुराओ ।

तत्थ णं दस महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता, तं जहा—जम्बू सुदंसणा, धायइरुक्खे, महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे, महापउमरुक्खे, पंच कूडसामलीओ ।

तत्थ णं दस देवा महिड्ढिया जाव[3] परिवसंति, तं जहा—अणाढिते जंबुद्दीवाधिपती, सुदंसणे, पियदंसणे, पोंडरीए, महापोंडरीए, पंच गरुला वेणुदेवा ।।

दुस्समा-लक्खण-पदं

१४०. दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाहू पूइज्जंति, साहू[4] ण पूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छं पडिवण्णो, अमणुण्णा सद्दा[5], °अमणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गंधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा° फासा ।।

सुसमा-लक्खण-पदं

१४१. दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले ण वरिसति, [6]°काले वरिसति, असाहू ण पूइज्जंति, साहू पूइज्जंति, गुरुसु जणो सम्मं पडिवण्णो, मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा, मणुण्णा गंधा, मणुण्णा रसा,° मणुण्णा फासा ।।

रुक्ख-पदं

१४२. सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, तं जहा—

---

[1] सोडीरे (क, ख, ग) ।

[2] उववातिते (ग) ।

[3] ठा० २।२७१ ।

[4] साहु (ग) ।

[5] सं० पा०—अमणुण्णा सद्दा जाव फासा ।

[6] सं० पा०—तं चेव विवरीतं जाव मणुण्णा फासा ।

संगहणी-गाहा

मतंगया[1] य भिंगा[2], तुडितंगा दीव जोति चित्तंगा[3] ।
प णियंगा, गेहागारा अणियणा य ।।१।।

कुलगर-पदं

१४३. जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सयंजले[4] सयाऊ य, अणंतसेणे य अजितसेणे[5] य ।
कक्कसेणे[6] भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ।।१।।
दढरहे दसरहे, सयरहे[7] ।।

१४४. जंबुद्दीवे दोवे भारहे वासे आगमीसाए[8] उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा—सीमंकरे, सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमुती, पडिसुते, दढधणू, दसधणू, सतधणू[9] ।।

---

१. मत्तंगता (क, ग); द्रष्टव्यम्—७।६५ पाद-टिप्पणम् ।

२. सिंगा (क) ।

३. चितंगा (ख) ।

४. सयज्जले (क, ग) ।

५. अतितसेणे (क, ग); स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ (आगमोदयसमिति पत्र ५१८ सूत्रांक ७३७) चतुर्थकुलकरस्य नाम 'अमितसेणे' विद्यते । किन्तु पाठशोधनप्रयुक्तयोः 'क' 'ग' प्रत्योः 'ख' प्रतौ च क्रमश; 'अतितसेणे' 'अजितसेणे' पाठो विद्यते । समवायाङ्गे (श्रेष्ठि माणेकलाल चुन्नीलाल श्रेष्ठि कान्तिलाल चुन्नीलाल द्वारा प्रकाशित पत्र १३९ सूत्रांक १५७) तृतीयकुलकरस्य नाम 'अजितसेणे' विद्यते । पाठशोधनप्रयुक्तयोः 'क' 'ख' प्रत्योरपि एष एव पाठोस्ति । स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ पञ्चमकुलकरस्य नाम 'तक्कसेणे' विद्यते । 'क' 'ग' प्रत्योरपि एष एव पाठो लभ्यते । समवायाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ 'कज्जसेणे' तथा हस्तलिखितादर्शेषु 'कक्कसेणे' पाठोस्ति । प्रतीयते स्थानाङ्गे समवायाङ्गे 'च' 'अजियसेणे' 'कक्कसेणे' पाठ आसीत् किन्तु लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः ।

६. तक्कसेणे (क, ग) ।

७. समवायाङ्गे (पइण्णगसमवाय सू० २१७) नाम्नां क्रमो भिन्नोस्ति—
सयंजले सयाऊ य, अजियसेणे अणंतसेणे य ।
कक्कसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ।।
दढरहे दसरहे सतरहे ।

८. अगामी° (ग) ।

९. समवायाङ्गे (पइण्णगसमवाय सू० २५०) नाम्नां क्रमो भिन्नोस्ति—
विमलवाहणे सीमंकरे,
सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे ।
दढधणू दसधणू,
सयधणू पडिसूई संमुइ त्ति ।।

वक्खारपव्वय-पदं

१४५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—मालवंते, चित्तकूडे, पम्हकूडे[1], °णलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे,° सोमणसे ।।

१४६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—विज्जुप्पभे[2], °अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते°, गंधमायणे ।।

१४७. एवं धायइसंडपुरत्थिमद्धेवि[3] वक्खारा भाणियव्वा जाव[4] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ।।

कप्प-पदं

१४८. दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे[5], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोए, लंतए, महासुक्के,° सहस्सारे, पाणते, अच्चुते ।।

१४९. एतेसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सक्के, ईसाणे[6], °सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे, पाणते°, अच्चुते ।।

१५०. एतेसि णं दसण्हं इंदाणं दस परिजाणिया विमाणा[7] पण्णत्ता, तं जहा—पालए, पुप्फए[8], °सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीतिमणे, मणोरमे° विमलवरे, सव्वतोभद्दे ।।

पडिमा-पदं

१५१. दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेण रातिंदियसतेणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासतेहिं[9] अहासुत्तं[10] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया यावि भवति ।।

जीव-पदं

१५२. दसविधा संसारसमवण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयएगिंदिया, अपढमसमयएगिंदिया, [11]°पढमसमयबेइंदिया, अपढमसमयबेइंदिया, पढमसमयतेइंदिया, अपढमसमयतेइंदिया, पढमसमयचउरिंदिया, अपढमसमयचउरिंदिया, पढमसमयपंचिंदिया,° अपढमसमयपंचिंदिया ।।

---

[1] बंभकूडे (क, ख, ग); सं० पा०—पम्हकूडे जाव सोमणसे ।

[2] सं० पा०—विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे ।

[3] ठा० १०।१४५,१४६ ।

[4] ठा० ३.१०८ ।

[5] सं० पा०—सोहम्मे जाव सहस्सारे ।

[6] सं० पा०—ईसाणे जाव अच्चुते ।

[7] जाणविमाणा (वृ); विमाणा (वृपा) ।

[8] सं० पा०—पुप्फए जाव विमलवरे ।

[9] भिक्खायतेहिं (ख) ।

[10] सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

[11] सं० पा०—एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता ।

१५३. दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[1], •आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया,° वणस्सइकाइया, बेंदिया[2], •तेइंदिया, चउरिंदिया°, पंचेंदिया, अणिंदिया ।

अहवा—दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया[3], •पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा, पढमसमयसिद्धा, अपढमसमयसिद्धा ।।

सताउय-दसा-पदं

१५४. वाससताउयस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

संगह-सिलोगो

बाला किड्डा मंदा, बला पण्णा हायणी ।
पवंचा पब्भारा[4], मुम्मुही सायणी तधा[5] ।।१।।

तणवणस्सइ-पदं

१५५. दसविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—मूले, कंदे[6], •खंधे, तया, साले, पवाले, पत्ते°, पुप्फे, फले, बीये ।।

सेढि-पदं

१५६. सव्वाओवि णं विज्जाहरसेढीओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

१५७. सव्वाओवि णं आभिओगसेढीओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

गेविज्जग-पदं

१५८. गेविज्जगविमाणा णं दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

तेयसा भासकरण-पदं

१५९. दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा[7] भासं कुज्जा, तं जहा—

१. केइ[8] तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते

---

[1] सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया ।

[2] सं० पा०—बेंदिता जाव पंचेंदिता ।

[3] सं० पा०—अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा ।

[4] बंभारा (ग) ।

[5] द्रष्टव्यम्—दशवैकालिकनिर्युक्ति १० :

बाला किड्डा मंदा बला
य पन्ना य हायणि पवंचा
पब्भार मम्मुही सायणी
य दसमा उ कालदसा ।।१०।।

[6] सं० पा०—कंदे जाव पुप्फे ।

[7] तेतसा (क, ख, ग) ।

[8] कति (ग) ।

समाणे परिकुविते तस्स तेयं[1] णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता तामेव[2] सह तेयसा भासं कुज्जा।

२. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे देवे परिकुविए[3] तस्स तेयं णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

३. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते देवेवि य परिकुविते ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। ते तं परितावेंति, ते तं[4] परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

४. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा[5], से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति[6], ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

५. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

६. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, [7]°ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा° भासं कुज्जा।

७. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

८. [8]°केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

९. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं

---

[1] तेतं (क, ख, ग)।

[2] 'तामेव' त्ति तमेव ·····दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् (वृ)।

[3] परिकुव्विते (क, ग)।

[4] त्तं (क, ख)।

[5] अच्चासाएज्जा (क, ख, ग)।

[6] समुप्पज्जंति (वृ)।

[7] सं० पा०--सेसं तहेव जाव भासं।

[8] सं० पा०—एते तिण्णि आलावगा भाणितव्वा।

णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा ०।

१०. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेमाणे तेयं णिसिरेज्जा, से य तत्थ णो कम्मति, णो पकम्मति, अंचिअंचियं[1] करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पतति, उप्पतेत्ता से णं ततो पडिहते पडिणियत्तति, पडिणियत्तित्ता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे-अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा—जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेतेए॥

अच्छेरग-पदं

१६०. दस अच्छेरगा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका, उत्तरणं चंदसूराणं॥१॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती, चमरुप्पातो य अट्ठसयसिद्धा।
अस्संजतेसु पूआ, दसवि अणंतेण कालेण॥२॥

कंड-पदं

१६१. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कंडे[2] दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते॥

१६२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरे[3] कंडे[4] दस जोयणसताइं बाहल्लेणं पण्णत्ते॥

१६३. एवं वेरुलिए, लोहितक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलए, रतयं, जातरूवे, अंके, फलिहे, रिट्ठे। जहा रयणे तहा सोलसविधा भाणितव्वा॥

उव्वेह-पदं

१६४. सव्वेवि णं दीव-समुद्दा दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६५. सव्वेवि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६६. सव्वेवि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६७. सीता-सीतोया णं महाणईओ मुहमूले दस-दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ॥

णक्खत्त-पदं

१६८. कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति॥

१६९. अणुराधाणक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति॥

णाणविद्धिकर-पदं

१७०. दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] अंच्चि अंच्चि (क); अंचि अंचि (ग)।
[2] कंदे (क, ग)।
[3] वतिरे (क, ख, ग)।
[4] कंदे (क, ग)।

संगहणी-गाहा

मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्ता य तहा, दस विद्धिकराइं[1] णाणस्स ॥१॥

कुलकोडि-पदं

१७१. चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जाति-कुलकोडि-जोणिपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता॥

१७२. उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जाति-कुलकोडि-जोणिपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता॥

पावकम्म-पदं

१७३. जीवा णं दसठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए[2], °अपढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयबेइंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयबेइंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयतेइंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयतेइंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयचउरिंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयचउरिंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयपंचिंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमय°पंचिंदियणिव्वत्तिए।

एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव॥

पोग्गल-पदं

१७४. दसपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता॥

१७५. दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

१७६. दससमयठितीया[3] पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

१७७. दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

१७८. एवं वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं दसगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर १६५४४८

अनुष्टुप् श्लोक ५१७०, अक्षर ८

---

[1] वुद्धिकराइं (क, ग); विड्ढिकराइं (ख)।

[2] सं० पा०—पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए जाव पंचिंदियणिव्वत्तिए; पाठसंशोधनप्रयुक्तादर्शेषु 'जाव फासिंदितनिव्वत्तिते' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ नैष व्याख्यातोस्ति, नास्यार्थोप्यत्र घटते। तेन प्रतीयते लिपिप्रमादोसौ जातः। अस्य स्थाने 'जाव पंचिंदियणिव्वत्तिए'।

[3] °समतठितीता (क, ख, ग)।

समवाओ

पढमो समवाओ

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

२. 'इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपोंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावएणं[1] तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवा[आ ?]हपन्नत्ती नायधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।।

३. तत्थ णं जे से चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते, तस्स णं अयमट्ठे, तं जहा'[2]—

४. एगे आया ।।

५. एगे अणाया ।।

६. एगे दंडे ।।

७. एगे अदंडे ।।

८. एगा किरिआ ।।

९. एगा अकिरिआ ।।

१०. एगे लोए ।।

---

[1] जाणएणं (क)।

[2] कस्याञ्चिद् वाचनायामपरमपि सम्बन्धसूत्रमुपलभ्यते 'इह खलु समणेणं भगवया··· अयमट्ठे, तंजहा' (वृ)।

११. एगे अलोए ॥

१२. एगे धम्मे ॥

१३. एगे अधम्मे ॥

१४. एगे पुण्णे ॥

१५. एगे पावे[1] ॥

१६. एगे बंधे ॥

१७. एगे मोक्खे ॥

१८. एगे आसवे ॥

१९. एगे संवरे ॥

२०. एगा वेयणा ॥

२१. एगा णिज्जरा ॥

२२. जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं[2] पण्णत्ते ॥

२३. अप्पइट्ठाणे नरए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

२४. पालए जाणविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

२५. सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

२६. अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥

२७. चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥

२८. सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥

२९. 'इमीसे णं'[3] रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३०. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३१. दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३२. असुरकुमाराणं 'देवाणं अत्थेगइयाणं'[4] एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३३. असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३४. असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३५. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

---

[1] अपुण्णे (क)।

[2] चक्कवालविक्खंभेणं (क, ग, वृपा)।

[3] इमीसे (क, ग); हस्तलिखितवृत्तौ 'इमीसेणं' पाठोस्ति मुद्रितवृत्तौ 'इमीसे' इति विद्यते।

[4] अत्थेगइयाणं देवाणं (क, ख, ग)।

३६. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसण्णिमणयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३७. वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

३८. जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता ॥

३९. सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

४०. सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

४१. ईसाणे कप्पे 'देवाणं जहण्णेणं'[1] साइरेगं एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

४२. ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

४३. जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंतं भवं[2] मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ॥

४४. ते णं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

४५. तेसि णं देवाणं एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुपज्जइ ॥

४६. संतेगइया भवसिद्धिया 'जीवा, जे एगेणं'[3] भवग्गहणेणं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

बीओ समवाओ

१. दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे चेव, अणट्ठादंडे चेव ॥

२. दुवे रासी पण्णत्ता, तं जहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ॥

३. दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तं जहा—रागबंधणे चेव, दोसबंधणे[4] चेव ॥

४. पुव्वाफग्गुणीनक्खत्ते[5] दुतारे[6] पण्णत्ते ॥

५. उत्तराफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ॥

६. पुव्वाभद्दवयानक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ॥

७. उत्तराभद्दवयानक्खत्ते[7] दुतारे पण्णत्ते ॥

८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. दुच्चाए पुढवीए[8] अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

[1] जहण्णेणं देवाणं (क, ख, ग) ।

[2] भुवं (ग) ।

[3] ते जीवा जे एगेणं (क) ।

[4] रोसबंधणे (क) ।

[5] पुव्व° (क) ।

[6] दुत्तारे (ख, ग) ।

[7] उत्तर° (ग) ।

[8] पुढवीए णं (क) ।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. असुरिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचेंदियतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसण्णिमणुस्साणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१७. ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१८. सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१९. माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२०. जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२१. ते णं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नोससंति वा ।।

२२. तेसि णं देवाणं दोहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ ।।

२३. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

तइओ समवाओ

१. तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे वइदंडे कायदंडे ।।

२. तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ।।

३. तओ सल्ला पण्णत्ता, तं जहा—मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं ।।

४. तओ गारवा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे ।।

५. तओ विराहणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा ।।

मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

७. पुस्सनक्खत्ते[1] तितारे पण्णत्ते ।।

८. जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

९. अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

१०. सवणनक्खत्ते[2] तितारे पण्णत्ते ।।

११. असिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

१२. भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

१३. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१७. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१८. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसण्णिमणुस्साणं[3] उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२०. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२१. जे देवा आभंकरं पभंकरं आभंकरपभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२२. ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

२३. तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[4] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

---

१. पुस्से (क); पुक्ख° (ग)।

२. समण° (क, ग); सवणे° (ख)।

३. अत्र सर्वासु प्रतिषु 'सण्णि' शब्दः 'गब्भवक्कंतिय' पाठात् पूर्वं लभ्यते, किन्तु (१।३६) सूत्रानुसारेण, 'गब्भवक्कंतिय' पाठात् परतो युज्यते। तेनात्र तथा स्वीकृतः।

४. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

चउत्थो समवाओ

१. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए ।।

२. चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे ।।

३. चत्तारि विगहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा ।।

४. चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तं जहा—आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा ।।

५. चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा— पगडिबंधे ठिइबंधे 'अणुभावबंधे[1] पएसबंधे'[2] ।।

६. चउगाउए जोयणे पण्णत्ते ।।

७. अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ।।

८. पुव्वासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ।।

९. उत्तरासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ।।

१०. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्तं किट्ठिप्पभं किट्ठिकंतं[3] किट्ठिवण्णं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. ते णं देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसिं देवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउहिं भवग्गणेहिं सिज्झिस्संति[4] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

---

[1] अणुभाग० (क, ख)।

[2] पएसबंधे अणुभागबंधे (ग)।

[3] °जुत्तं (क, ख, ग); कृष्टिसुकृष्ट्यादीनि द्वादशविमानानि पूर्वोक्तविमाननामानुसारवन्तीति (वृत्ति पत्र ९) वृत्तिगतोल्लेखेन 'कंतं' इति पाठः स्वीकृतः।

[4] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

पंचमो समवाओ

१. पंच किरिया पण्णत्ता, तं जहा—काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारियावणिआ पाणाइवायकिरिया ।।

२. पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ[1] °वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं°, सव्वाओ परिग्गहाओ[2] वेरमणं ।।

३. पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा रूवा रसा गंधा फासा ।।

४. पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा—मिच्छत्तं अविरई 'पमाया कसाया'[3] जोगा ।।

५. पंच संवरदारा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मत्तं विरई अप्पमाया[4] अकसाया[5] अजोगा[6] ।।

६. पंच निज्जरट्ठाणा[7] पण्णत्ता, तं जहा—पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमणं, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं ।।

७. पंच समिईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई ।।

८. पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ।।

९. रोहिणीनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।।

१० पुणव्वसुनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।।

११. हत्थनक्खत्ते[8] पंचतारे पण्णत्ते ।।

१२. विसाहानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।।

१३. धणिट्ठानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।।

१४. इमीसे णं[9] रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइया नेरइयाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] सं० पा०—मुसावायाओ जाव सव्वाओ ।

[2] पडि० (ग) ।

[3] पमाए कसाए (क, ग) ।

[4] अप्पमाए (क); अप्पमादो (ग) ।

[5] अकसाए (क); अकसायया (ख, ग) ।

[6] अजोगया (ग) ।

[7] निज्जराट्ठाणा (ग) ।

[8] हत्थे° (ग) ।

[9] × (क, ख, ग) ।

१७. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१८. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१९. जे देवा वायं सुवायं वातावत्तं वातप्पभं वातकंतं वातवण्णं वातलेसं वातज्झयं वातसिंगं वातसिट्ठं वातकूडं वाउत्तरवडेंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२०. ते णं देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

२१. तेसि णं देवाणं पंचहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२२. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पंचहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण°मंतं करिस्संति ।।

छट्ठो समवाओ

१. छल्लेसा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।।

२. छज्जीवनिकाया पण्णत्ता, तं जहा—पुढवीकाए[2] आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।।

३. छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा—अणसणे ओमोदरिया[3] वित्तिसंखेवो[4] रसपरिच्चाओ कायकिलेसो[5] संलीणया ।।

४. छव्विहे अब्भिंतरे[6] तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं उस्सग्गो ।।

५. छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए[7] आहारसमुग्घाए ।।

६. छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खिदियअत्थुग्गहे घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे नोइंदियअत्थुग्गहे ।।

७. कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।।

८. असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।।

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

[2] °काइया (ग) ।

[3] उनोदरिया (ग) ।

[4] वित्ती° (ख, ग) ।

[5] कायकिलेसं (क) ।

[6] ब्भंतरए (क) ।

[7] तेया° (क, ख) ।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. जे देवा सयंभुं सयंभुरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्टिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरावत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवण्णं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५. ते णं देवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१६. तेसि णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ॥

१७. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

सत्तमो समवाओ

१. सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, जहा—इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए ॥

२. सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए[2] आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए ॥

३. समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

४. सत्त[3] वासहरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे ॥

५. सत्त[4] वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए हेरण्णवते[5] एरवए[6] ॥

६. खीणमोहे णं भगवं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वेएई ॥

७. महानक्खते सत्ततारे पण्णत्ते ॥

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[2] तेया° (क, ख)।

[3,4] इहेव जम्बुद्दीवे दीवे सत्त (क्व)।

[5] एरण्णवए (क्व)।

[6] एरावते (क, ग)।

८. 'कत्तिआइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता'[१] ।।

९. महाइया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पण्णत्ता ।।

१०. अणुराहाइया सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता ।।

११. धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता ।।

१२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१७. सणंकुमारे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१८. माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१९. बंभलोए कप्पे देवाणं जहण्णेणं[२] सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२०. जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भासुरं[३] विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२१. ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

२२. तेसि णं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२३. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे[४] सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[५] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण° मंतं करिस्संति ।।

---

[१] ख, ग प्रत्योः पाठान्तरेण 'अभियाइया[अभिईया] सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता' मूलपाठेप्यसौ पाठभेदो लभ्यते । अभिजिदादीनि सप्त नक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि—पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभं भवति, एवमश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्यपरद्वारिकाणि स्वात्यादीन्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धान्तमतमिह तु मतान्तरमाश्रित्य कृतिकादीनि सप्त सप्त पूर्वद्वारिकादीनि भणितानि, चन्द्रप्रज्ञप्तौ तु बहुतराणि मतानि दर्शितानीहार्थं इति (वृ) ।

[२] जहन्नेणं साहियं (ग); प्रज्ञापनायाञ्चतुर्थपदे सप्तसागरोपमाणामेव स्थितिः प्रतिपादितास्ति तेन 'साहियं' अशुद्धं प्रतिभाति ।

[३] भासर (क, ग) ।

[४] जे णं (क, ख, ग) ।

[५] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

अट्ठमो समवाओ

१. अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए ॥

२. अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ॥

३. वाणमंतराणं देवाणं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

४. जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

५. कूडसामली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

६. 'जंबुद्दीवस्स णं'[1] जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

७. अट्ठसामइए[2] केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते, तं जहा—पढमे समए दंडं करेइ, बीए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेइ, पंचमे समए मंथंतराइं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, तत्तो पच्छा सरीरत्थे भवइ ॥

८. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा—

सुंभे य सुंभघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य ।
सोमे सिरिधरे[3] चेव, वीरभद्दे जसे इ य ॥१॥

९. अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ॥

१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५. जे देवा अच्चिं अच्चिमालिं वइरोयणं पभंकरं चंदाभं सूराभं सुपइट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अरुणुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

[1] जम्बुद्दीवियाणं (क) ।

[2] °समतिए (क, ख) ।

[3] अ सुरवरे (क); सिरिवरे(ख); सिरिदरे (ग) ।

१६. ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण°मंतं करिस्संति ।।

नवमो समवाओ

१. नव बंभचेरगुत्तीओ, तं जहा—
नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।
नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ ।
नो इत्थीणं ठाणाइं[2] सेवित्ता भवइ ।
नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।
नो पणीयरसभोई भवइ[3] ।
नो पाणभोयणस्स अतिमायं[4] आहारइत्ता भवइ[5] ।
नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरइत्ता भवइ ।
नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गंधाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई ।
नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ।।

२. नव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता[6] °भवइ ।
इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ ।
इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ ।
इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।
पणीयरसभोई भवइ ।
पाणभोयणस्स अतिमायं आहारइत्ता भवइ ।
इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरइत्ता भवइ ।
सद्दाणुवाई रूवाणुवाई गंधाणुवाई रसाणुवाई फासाणुवाई सिलोगाणुवाई° ।
सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ।।

३. नव बंभचेरा पण्णत्ता, तं जहा—

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

[2] गणान् (वृ) ।

[3] ×(क, ख, ग) ।

[4] अतिमायं आहारं (क) ।

[5] × (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—सेवणया [सेवित्ता] जाव सायासोक्ख° ।

संगहणी-गाहा

सत्थपरिण्णा लोगविजओ, सीओसणिज्जं[1] सम्मत्तं ।
आवंती धुतं विमोहायणं, उवहाणसुयं महपरिण्णा ।।१।।

४. पासे णं अरहा[2] नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

५. अभीजिनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएइ ।।

६. अभीजियाइया नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा—अभीजि सवणो[3] °धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी° भरणी[4] ।।

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ ।।

८. जंबुद्दीवे णं दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा ।।

९. विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए नव-नव भोमा पण्णत्ता ।।

१०. वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुधम्माओ नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ ।।

११. दंसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी[5] चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ।।

१२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१७. जे देवा पम्हं[6] सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पहं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं[7] °पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं° पम्हुत्तरवडेंसगं सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं[8] °सुज्जवण्णं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं

---

[1] सीओसिणिज्ज (क) ।

[2] अरहा पुरिसादाणीए (ख) ।

[3] सं० पा०—सवणो जाव भरणी ।

[4] चन्द्रप्रज्ञप्तौ (१०।११) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ७) च चन्द्रस्योत्तरेणं योगं युञ्जानानां द्वादशनक्षत्राणामुल्लेखोस्ति। अत्र तु नवमसमवायानुरोधेन नवैव गृहीतानि ।

[5] थीणद्धी (ख) ।

[6] 'क' प्रतौ अस्मिन् सूत्रान्तर्गत 'पम्ह' शब्दस्य स्थाने सर्वत्र 'वम्ह' शब्दस्तथा 'रुइल्ल' शब्दस्य स्थाने सर्वत्र 'रुयल' इति पाठो विद्यते ।

[7] सं० पा०—पम्हलेसं जाव पम्हुत्तरवडेंसगं ।

[8] सं० पा०—सुज्जकंतं जाव सुज्जुत्तरवडेंसगं ।

सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं° सुज्जुत्तरवडेंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं[1] °रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं° रुइल्लुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं[2] ?] नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१९. तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२०. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[3] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

दसमो समवाओ

१. दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे ।।

२. दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा, सव्वं धम्मं जाणित्तए ।

सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अहातच्चं सुमिणं[4] पासित्तए ।

सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, पुव्वभवे सुमरित्तए ।

देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ।

ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं जाणित्तए[5] ।

ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं पासित्तए ।

मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, मणोगए[6] भावे जाणित्तए ।

केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोगं जाणित्तए ।

केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोयं पासित्तए ।

केवलिमरणं वा मरिज्जा, सव्वदुक्खप्पहीणाए ।।

---

[1] सं० पा०—रुइल्लप्पभं जाव रुइल्लुत्तरवडेंसगं ।

[2] एतत् तुल्येषु सूत्रेषु सर्वत्रापि 'उक्कोसेणं' पाठो विद्यते । नायं पाठोत्र प्रतिषु लभ्यते, किन्तु तथा विधान्यसूत्रपद्धत्यनुसारेण युज्यते ।

[3] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

[4] सुजाणं (वृपा) ।

[5] जाणेज्जा (क) ।

[6] जाव मणोगए (क, ख, ग); वृत्तौ 'जाव' शब्दो नास्ति व्याख्यातः । नावश्यकोपि प्रतिभाति तेन न स्वीकृतः ।

३. मंदरे णं पव्वए मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

४. अरहा णं अरिट्ठनेमी दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

५. कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

६. रामे णं बलदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

७. दस नक्खत्ता नाणविद्धिकरा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि अ पुव्वा य मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ता य तहा, दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ।।१।।

८. अकम्मभूमियाणं मणुआणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, तं जहा—

मत्तंगया य भिंगा, तुडिअंगा दीव जोइ चित्तंगा ।
चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अणिगणा[1] य ।।१।।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं[2] जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा[3] पण्णत्ता ।।

१२. चउत्थीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. पंचमाए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. असुरकुमाराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. असुरिंदवज्जाणं भोमेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१७. बायरवणप्फतिकाइयाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

१८. वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

१९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२०. बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२१. लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] अणियणा (ग); अणिगिणा (क्व) ।

[2] अत्थेगइयाणं नेरइयाणं (क, ख, ग) ।

[3] °सहस्साइं (क्व) ।

२२. जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

२३. ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

२४. तेसि णं देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२५. संतेगइया[1] भवसिद्धिया जीवा, जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण°मंतं करिस्संति ।।

एक्कारसमो समवाओ

१. एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. दंसणसावए २. कयव्वयकम्मे ३. सामाइअकडे ४. पोसहोववास-निरए ५. दिया बंभयारी रत्तिं[3] परिमाणकडे ६. दिआवि राओवि बंभयारी असिणाई[4] वियडभोई मोलिकडे ७. सचित्तपरिण्णाए ८. आरंभपरिण्णाए ९. पेसपरिण्णाए १०. उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए ११. समणभूए'[5] यावि भवइ समणाउसो !

२. ‘लोगंताओ णं ‘एक्कारस एक्कारे जोयणसए’[6] अबाहाए जोइसंते पण्णत्ते ।।

३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स ‘एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए’[7] अबाहाए[8] जोइसे चारं चरइ’[9] ।

---

[1] अत्थेगइया (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्सति जाव अंतं ।

[3] राति (क) ।

[4] अनिसाई (वृपा) ।

[5] पुस्तकान्तरेत्वेवं वाचना—१. दंसणसावए २. कयवयकम्मे ३. कयसामाइए ४. पोसहोववासनिरए ५. राइभत्तपरिण्णाए ६. सचित्तपरिण्णाए ७. दियाबंभयारी राओ परिमाणकडे ८. दियावि राओवि बंभयारी असिणाणए यावि भवति वोसट्ठकेसरोमनहे ९. आरंभपरिण्णाए पेसणपरिण्णाए १०. उद्दिट्ठभत्तवज्जए ११. समणभूए । क्वचित्तु आरंभपरिज्ञात इति नवमी, प्रेष्यारम्भपरिज्ञात इति दशमी, उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति (वृ) ।

[6] एक्कारसहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं (क, ख, ग) ।

[7] एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं (क, ख, ग); २, ३ सूत्रयोरादर्शेषु सप्तम्यन्तः पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तावसौ पाठः द्वितीयान्तत्वेन व्याख्यातोस्ति—जम्बूद्वीपे द्वीपे मदरस्य पर्वतस्य एकादश ‘एगवीस’ त्ति एकविंशतियोजनाधिकानि एकादशयोजनशतानि ‘अबाहाए’ त्ति अबाधया व्यवधानेन कृत्वेति शेषः ज्योतिषं—जोतिश्चक्रं चारं—परिभ्रमणं चरति—आचरति, तथा लोकान्तात् णभित्यलङ्कारे एकादश ‘एकारे’ त्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधया—व्यवहिततया कृत्वेति शेषः ‘ज्योतिसंते’ ति ज्योतिश्चक्रपर्यन्तः प्रज्ञप्तः (वृ) ।

[8] असौ शब्दः आदर्शेषु नोपलभ्यते, केवलं वृत्तावेव सुरक्षितोस्ति ‘चंदपण्णत्ति’ सूत्रे (पाहुड १८) ऽप्येष शब्दो लभ्यते—‘एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चारं चरइ’ ।

[9] जंबुद्दीवे···चरइ । लोगंताओ·· पण्णत्ते । इदं

४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, तं जहा—इंदभूती अग्गिभूती वायुभूती विअत्ते सुहम्मे मंडिए मोरियपुत्ते अकंपिए अयलभाया मेतज्जे पभासे ॥

५. मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते ॥

६. हेट्ठिमगेविज्जयाणं देवाणं एक्कारसुत्तरं गेविज्जविमाणसतं भवइत्ति मक्खायं ॥

७. मंदरे णं पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

८. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. जे देवा 'बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं'[1] बंभज्झयं[2] बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं[3] ?] एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. ते णं देवा एक्कारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१५. तेसि णं देवाणं एक्कारसण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१६. संतेगइया[4] भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

बारसमो समवाओ

१. बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मासिआ भिक्खुपडिमा, दोमासिआ भिक्खुपडिमा, तेमासिआ भिक्खुपडिमा, चाउमासिआ भिक्खुपडिमा, पंचमासिआ भिक्खुपडिमा, छम्मासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खु-

---

च वाचनान्तरं व्याख्यातम्, अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनन्तरं व्याख्यातमालापकद्वयं व्यत्ययेनापि दृश्यते (वृ) ।

[1] पम्हं···पम्हलेसं (ग) ।

[2] पम्हज्जुयं (ग) ।

[3] द्रष्टव्यं ९।१७ टिप्पणम् ।

[4] अत्थे° (क, ख, ग) ।

[5] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण० ।

पडिमा, पढमा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, अहोराइया भिक्खुपडिमा, एगराइया भिक्खुपडिमा ।।

२. दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उवही सुअ भत्तपाणे, अंजलीपग्गहेत्ति य ।
दायणे[1] य निकाए अ, अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे ।।१।।
कितिकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इ अ ।
समोसरणं संनिसेज्जा य, कहाए अ पबंधणे ।।२।।

३. दुवालसावत्ते[2] कितिकम्मे पण्णत्ते, [तं जहा —

दुओणयं जहाजायं, कितिकम्मं बारसावयं ।
चउसिरं तिगुत्तं च, दुपवेसं एगनिक्खमणं[3] ।।१।।]

४. विजया णं रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

५. रामे णं बलदेवे दुवालस वाससयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्तं[4] गए ।।

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

७. जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

८. सव्वजहण्णिआ राई दुवालसमुहुत्तिआ पण्णत्ता ।।

९. [5]°सव्वजहण्णिओ दिवसो दुवालसमुहुत्तिओ पण्णत्तो° ।।

१०. सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पतिता ईसिपब्भारा नामं पुढवी पण्णत्ता ।।

११. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसित्ति वा ईसिपब्भारत्ति वा तणूइ वा तणुयतरित्ति[6] वा सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तीति वा मुत्तालएत्ति वा बंभेत्ति वा बंभवडेंसएत्ति वा लोकपडिपूरणेत्ति वा लोगग्गचूलिआइ वा ।।

१२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] दायणा (क, ख) ।

[2] °साइए (क) ।

[3] एषा आवश्यकनिर्युक्ति (१२१६) गता गाथा कृतिकर्मव्याख्यानपरा वर्तते, न तु द्वादशावर्तव्याख्यानपरा । इयं प्रासङ्गिकरूपेण लिखिता सम्भाव्यते, तेन नास्माभिर्मूले स्वीकृता ।

[4] देवत्ति (क); देवत्ति (ख); देवत्तिए (ग) ।

[5] सं० पा०—एवं दिवसोवि नायव्वो ।

[6] तणूयतरिति (क); तणुयरुत्ति (ग) ।

१३. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१७. जे देवा महिंदं महिंदज्झयं कंबुं कंबुग्गीवं पुंखं सुपुंखं महापुंखं पुंडं सुपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१८. ते णं देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१९. तेसि णं देवाणं बारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

२०. संतेगइआ[1] भवसिद्धिया जीवा, जे बारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

तेरसमो समवाओ

१. तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दिट्ठिविप्परिआसिआदंडे मुसावायवत्तिए अदिण्णादाणवत्तिए अज्झत्थिए माणवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मायावत्तिए लोभवत्तिए ईरियावहिए नामं तेरसमे ॥

२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता ॥

३. सोहम्मवडेंसगे णं विमाणे णं अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४. एवं ईसाणवडेंसगे वि ॥

५. जलयरपंचिंदिअतिरिक्खजोणिआणं अद्धतेरस जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा[3] पण्णत्ता ॥

६. पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ॥

७. गब्भवक्कंतिअपंचेंदिअतिरिक्खजोणिआणं तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे कम्मसरीरकायपओगे ॥

---

[1] अत्थेगइया (क, ख, ग)।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[3] सहस्साइं (क्व)।

८. सूरमंडले जोयणेणं तेरसहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणे पण्णत्ते ।।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जज्झयं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडेंसगं वइरं वइरावत्तं[1] °वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइरज्झयं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं° वइरुत्तरवडेंसगं लोगं लोगावत्तं लोगप्पभं[2] °लोगकंतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगज्झयं लोगसिंगं लोगसिट्ठं लोगकूडं° लोगुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. ते णं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१६. तेसि णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१७. संतेगइया[3] भवसिद्धिया जीवा, जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[4] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण°मंतं करिस्संति ।।

चउद्दसमो समवाओ

१. चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया, बेइंदिया अपज्जत्तया, बेइंदिया पज्जत्तया, तेइंदिया अपज्जत्तया, तेइंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिया अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिपज्जत्तया ।।

२. चउदस पुव्वा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं ।
अत्थीनत्थिपवायं, तत्तो नाणप्पवायं च ।।१।।

---

[1] सं० पा०—वइरावत्तं जाव वइरुत्तरवडेंसग ।

[2] सं० पा०—लोगप्पभं जाव लोगुत्तरवडेंसगं ।

[3] अत्थेगइया (क, ख) ।

[4] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

सच्चप्पवायपुव्वं, तत्तो आयप्पवायपुव्वं च ।
कम्मप्पवायपुव्वं, पच्चक्खाणं भवे नवमं ।।२।।
विज्जाअणुप्पवायं, अबंझपाणाउ बारसं पुव्वं ।
तत्तो किरियविसालं, पुव्वं तह बिंदुसारं च ।।३।।

३. अग्गेणीअस्स णं पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता ।।

४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था ।।

५. कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—मिच्छदिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, अविरयसम्मदिट्ठी, विरयाविरए[1], पमत्तसंजए, अप्पमत्तसंजए, नियट्टिबायरे, अनियट्टिबायरे, सुहुमसंपराए—उवसमए[2] वा खवए[3] वा, उवसंतमोहे, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी केवली ।।

६. भरहेरवयाओ णं जीवाओ चउद्दस-चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि य एगुत्तरे जोयणसए छच्च एकूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ ।।

७. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थीरयणे सेणावइरयणे गाहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दंडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे ।।

८. जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेणं लवणसमुद्दं समप्पेंति[4], तं जहा—गंगा सिंधू रोहिआ रोहिअंसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ।।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. जे देवा सिरिकंतं सिरिमहियं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदोकंतं[5] महिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] विरयाविरयसम्मदिट्ठी (क, ख, ग) ।

[2] उवसामए (क) ।

[3] खमए (ग) ।

[4] समुप्पेंति (ग) ।

[5] महिंदकंतं (ख) ।

१६. ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसि णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

पण्णरसमो समवाओ

१. पण्णरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबे अंबरिसी चेव, सामे सबलेत्ति यावरे[2] ।
रुद्दोवरुद्दकाले य, महाकालेत्ति यावरे ।।१।।
असिपत्ते धणु कुम्भे, वालुए वेयरणीति य ।
खरस्सरे महाघोसे, एमेते[3] पण्णरसाहिआ ।।२।।

२. णमी णं अरहा पण्णरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३. धुवराहू[4] णं बहुलपक्खस्स पाडिवयं[5] पण्णरसइ[6] भागं पण्णरसइ भागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं[7] °बीआए बीयं भागं तइआए तइयं भागं चउत्थीए चउत्थं भागं पंचमीए पंचमं भागं छट्ठीए छट्ठं भागं सत्तमीए सत्तमं भागं अट्ठमीए अट्ठमं भागं नवमीए नवमं भागं दसमीए दसमं भागं एक्कारसीए एक्कारसमं भागं बारसीए बारसमं भागं तेरसीए तेरसमं भागं चउद्दसीए चउद्दसमं भागं° पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं । तं चेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं ।

४. छ णक्खता पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सतभिसय भरणि अद्दा, असलेसा साइ 'तह य'[8] जेट्ठा य ।
एते छण्णक्खत्ता, पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता ।।१।।

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं ।

[2] वावरे (क) ।

[3] एते (क, ग) ।

[4] निच्चराहू (ग) ।

[5] पडिवाते (ग) ।

[6] पन्नरस (क्व) ।

[7] सं० पा०—भागं जाव पण्णरसेसु ।

[8] तधव (क) ।

५. चेत्तासोएसु मासेसु सइं[1] पण्णरसमुहुत्तो दिवसो भवति, सइ[2] पण्णरस मुहुत्ता राई भवति ॥

६. विज्जाअणुप्पवायस्स[3] णं पुव्वस्स पण्णरस वत्थू पण्णत्ता ॥

७. मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे आहारयसरीरकायपओगे आहारयमीससरीरकायपओगे कम्मयसरीरकायपओगे ॥

८. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं[4] °णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं° णंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेण पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१५. तेसि णं देवाणं पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पण्णरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं° मंतं करिस्संति ॥

---

१. × (क, ग)।

२. सईय (ग); एवं चेत्तमासेसु (चेत्तासोएसु मासेसु) (क्व); अष्टादशे समवाए (८) वृत्तिकृता 'सइं' शब्दो व्याख्यातः। अत्र तु नास्ति व्याख्यातः। नासौ पाठः उपलब्ध इति प्रतीयते।

३. अणुप्प° (क, ख, ग); नंदी (सू० ११३) 'विज्जाणुप्पवाय' इति विद्यते।

४. सं० पा०—कंतं वण्णं लेसं जाव णंदुत्तरवडेंसगं।

५. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं।

सोलसमो समवाओ

१. सोलस य गाहा-सोलसगा पण्णत्ता, तं जहा—समए वेयालिए उवसग्गपरिण्णा इत्थिपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए[1] गंथे जमईए गाहा[2] ।।

२. सोलस कसाया पण्णत्ता, तं जहा—अणंताणुबंधो कोहे, [3]°अणंताणुबंधी माणे, अणंताणुबंधी माया, अणंताणुबंधी लोभे°, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, [4]°अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे°, पच्चक्खाणावरणे कोहे, [5]°पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे°, संजलणे कोहे [6]°संजलणे माणे, संजलणे माया संजलणे लोभे° ।।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

'मंदर-मेरु-मणोरम'[7], सुदंसण सयंपभे य गिरिराया ।
रयणुच्च पियदंसण, मज्झे लोगस्स नाभी य ।।१।।
अत्थे अ सूरियावत्ते, सूरियावरणेत्ति य ।
उत्तरे य दिसाई य, वडेंसे इअ सोलसे[8] ।।२।।

४. पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था ।।

५. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।।

६. चमरबलीणं ओवारियालेणे[9] सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७. लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए[10] पण्णत्ते ।।

८. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] अहातहिए (ग, वृ) ।

[2] गाहा सोलसमे (ख); गाहा सोलसए (ग); गाहा सोलसमे सोलसगे (क्व) ।

३,४,५,६. सं० पा०—एवं माणे माया लोभे ।

[7] मंदरे मेरु मनोरमे (क) ।

[8] सोलस (ख) ।

[9] उवातिया लेणा (क); उवारिया लेणे (ग,वृ) ।

[10] उच्छेह° (ग) ।

९. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. जे देवा आवत्तं वियावत्तं नंदियावत्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं अंकुसपलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. ते णं देवा सोलसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नोससंति वा ।।

१५. तेसि णं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१६. संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा, जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] •बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण° मंतं करिस्संति ।।

सत्तरसमो समवाओ

१. सत्तरसविहे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढवीकायअसंजमे आउकायअसंजमे तेउकायअसंजमे, वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे बेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे चउरिंदियअसंजमे पंचिंदियअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टुअसंजमे अप्पमज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वइअसंजमे कायअसंजमे ।।

२. सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढवीकायसंजमे[2] •आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे वेइंदियसंजमे तेइंदियसंजमे चउरिंदियसंजमे पंचिंदियसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहट्टुसंजमे पमज्जणासंजमे मणसंजमे वइसंजमे° कायसंजमे ।।

३. माणुसुत्तरे[3] णं पव्वए सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।।

४. सव्वेसिपि णं वेलंधर-अणुवेलंधर-णागराईणं आवासपव्वया सत्तरस-एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

५. लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ।।

६. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सातिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाणं तिरियं गति पवत्तति ।।

---

१. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

२. सं० पा०—पुढवीकायसंजमे एवं जाव कायसंजमे ।

३. माणसुत्तरे (क); माणुसत्तरे (ग) ।

७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुर [कुमार ?] रण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

८. बलिस्स णं[1] °वतिरोयणिंदस्स वतिरोयणरण्णो° रुयगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं[2] उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

९. सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीईमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे[3] वलायमरणे[4] वसट्टमरणे[5] अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडितमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपट्ठमरणे[6] भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगिणीमरणे पाओवगमणमरणे ॥

१०. सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति, तं जहा—आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहीदंसणावरणे केवलदंसणावरणे सायावेयणिज्जं जसोकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं ॥

११. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. पंचमाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६. महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१७. सहस्सारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१८. जे देवा सामाणं सुसामाणं महासामाणं पउमं महापउमं कुमुदं महाकुमुदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहोकंतं[7] सीहवीअं भाविअं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१९. ते णं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

---

१. सं० पा०—बलिस्स णं…।

२. °सयाइं साइरेगेणं (क); °सयाइं साइरेगाइं (ख, ग)।

३. अंतित° (क)।

४. वलय° (भ० २।४९); वलात° (स्थानांग २।३९९)।

५. वसह° (क); वसट्ठ° (ग)।

६. गद्धपट्ठ° (क); गिद्धिपट्ठ° (ग); गिद्धपिट्ठ (क्व)।

७. सीहकंतं (क्व)।

२०. तेसि णं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२१. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

अट्ठारसमो समवाओ

१. अट्ठारसविहे बंभे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालिए कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ[2], नोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ, मणेणं 'सेवंतं पि'[3] अण्णं न समणुजाणाइ[4]।
ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, नोवि अण्णं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।
ओरालिए कामभोगे णेव सयं कायेणं सेवइ, नोवि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, नोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, नोवि अण्णं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ, नोवि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।।

२. अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।।

३. समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं सखुड्डयविअत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं।
पलियंक निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं ।।१।।

४. आयारस्स णं भगवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं ।।

५. 'बंभीए णं लिवीए'[5] अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तं जहा—१. बंभी २. जवणालिया[6] ३. दोसऊरिया[7] ४. खरोट्ठिया ५. खरसाहिया[8] ६. पहाराइया

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[2] सेवेइ (क, ख)।

[3] सेवंते पि (ख); सेवंते वि (ग)।

[4] °जाणइ (ख, ग)।

[5] भाएणं विबीए (क); बंभए णं लिविए (ग)।

[6] जवणाभिलिया (ख)।

[7] दासऊरिया (क); दसाऊरिया (ग)।

[8] पुक्करसाविया (क)।

७. उच्चत्तरिया[1] ८. अक्खरपुट्ठिया ९. भोगवइया[2] १०. वेणइया[3] ११. निण्हइया १२. अंकलिवी १३. 'गणियलिवी १४. गंधव्वलिवी'[4] १५. आयंसलिवी[5] १६. माहेसरी[6] १७. दामिली[7] १८. पोलिंदी[8]।

६. अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता ।।

७. धूमप्पभा णं पुढवी अट्ठारसुत्तरं जोयणसयहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।।

८. पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ ।।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं[9]?] अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. ते णं देवाणं अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसि णं देवाणं अट्ठारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[10] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

---

[1] चुच्चत्तरिया (क)।

[2] भोगवयता (क, ख, ग)।

[3] वेणणिया (ग)।

[4] गणियलिवी गंधव्वलिवी भूयलिवी (ख); गंधव्वलिवी गणियलिवी भूयलिवी (ग)।

[5] आदंसलिवी (ग)।

[6] माहेसरलिवी (क, ख, ग)।

[7] दामिलिवी (क, ख, ग)।

[8] वोलिंदिलिवी (क, ख, ग)।

[9] द्रष्टव्य (९।१७) टिप्पणम्।

[10] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

एगूणवीसमो समवाओ

१. एगूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उक्खित्तणाए संघाडे, अंडे कुम्मे य सेलए ।
तुंबे य रोहिणी मल्ली[1], मागंदी चंदिमाति य ॥१॥
दावद्दवे उदगणाए, मंडुक्के तेतलीइ य ।
नंदीफले अवरकंका, आइण्णे 'सुंसुमाइ य'[2] ॥२॥
अवरे य पोंडरीए, णाए एगूणवीसइमे[3] ॥

२. जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एकूणवीसं जोयणसयाइं उड्ढमहो तवंति[4] ॥

३. सुक्केणं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एकूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ ॥

४. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एकूणवीसं छेयणाओ पण्णत्ताओ ॥

५. एगूणवीसं तित्थयरा अगारमज्झा[5] वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ ॥

६. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. पाणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१४. तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

---

[1] मल्ले (क) ।
[2] सुंसुसमातिय (ग) ।
[3] एकूणविंसतेमे (ग) ।
[4] तवयम्मि (ग) ।
[5] °मज्झे (क्व) ।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] •बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

वीसइमो समवाओ

१. वीसं असमाहिठाणा पण्णत्ता, तं जहा—१. दवदवचारि यावि भवइ २. अपमज्जियचारि यावि भवइ ३. दुप्पमज्जियचारि यावि भवइ ४. अतिरित्तसेज्जासणिए ५. रातिणियपरिभासी[2] ६. थेरोवघातिए ७. भूओवघातिए ८. संजलणे ९. कोहणे[3] १०. पिट्ठिमंसिए[4] ११. अभिक्खणं-अभिक्खणं ओहारइत्ता भवइ १२. णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ १३. पोराणाणं अधिकरणाणं खामिय-विओसवियाणं[5] पुणोदीरेत्ता भवइ १४. ससरक्खपाणिपाए १५. अकालसज्झायकारए यावि भवइ १६. कलहकरे १७. सद्दकरे १८. झंझकरे १९. सूरप्पमाणभोई २०. एसणाऽसमिते आवि भवइ ॥

२. मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३. सव्वेवि णं घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

४. पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणिअसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

५. णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पण्णत्ता ॥

६. पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

७. 'ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि'[6]-मंडले वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो ॥

८. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४. जे देवा सातं विसातं सुविसातं सिद्धत्थं उप्पलं 'रुइलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियवद्धमाणयं पलंबं'[7] पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं

---

[1] स० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[2] °पारिभासी (क)।

[3] कोवणे (क)।

[4] पिट्ठिमंसए (ग)।

[5] विउसमियाणं (ग)।

[6] उस°ओस° (क); उस° उस° (ग)।

[7] भित्तिलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियं पलंबं रूइलं (क्व)।

पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फकूडं[1] पुप्फुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१६. तेसि णं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१७. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

एक्कवीसइमो समवाओ

१. एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तं जहा—१. हत्थकम्मं करेमाणे सबले। २. मेहुणं[3] पडिसेवमाणे सबले। ३. राइभोयणं भुंजमाणे सबले। ४. आहाकम्मं भुंजमाणे सबले। ५. सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले। ६. उद्देसियं, कीयं, आहट्टु[4] °दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले। ७. अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ता णं भुंजमाणे सबले। ८. अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले। ९. अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले। १०. अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले। ११. रायपिंडं भुंजमाणे सबले। १२. आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले। १३. आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले। १४. आउट्टिआए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले। १५. आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १६. आउट्टियाए ससणिद्धाए पुढवीए ससरक्खाए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १७. आउट्टिआए चित्तमंताए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलूए, कोलावासंसि वा दारुए [अण्णयरे वा तहप्पगारे[5] ?] जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिंगे पणग-दगमट्टी-मक्कडासंताणए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १८. आउट्टिआए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा खंधभोयणं वा तयाभोयणं वा पवालभोयणं वा पत्तभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे सबले। १९. अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले। २०. अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं सेवमाणे

---

१. × (क्व)।

२. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

३. मेहुणे (क)।

४. अत्र पाठपूर्तिदशाश्रुतस्कन्धतः कृता किन्तु क्रमो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः। सं० पा०—कीयं आहट्टु जाव अभिक्खणं।

५. वृत्त्यनुसारेणासौ पाठो युज्यते।

सबले °। २१. 'अभिक्खणं-अभिक्खणं सीतोदय-वियड-वग्घारिय-पाणिणा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले'[1] ॥

२. णिअट्टिबादरस्स णं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा—अपच्चक्खाणकसाए कोहे [2]°अपच्चक्खाणकसाए माणे अपच्चक्खाणकसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे° पच्चक्खाणावरणे[3] कोहे [4]°पच्चक्खाणावरणे माणे पच्चक्खाणावरणा माया पच्चक्खाणावरणे लोभे° संजलणे कोहे [5]°संजलणे माणे संजलणे माया संजलणे लोभे° इत्थिवेदे पुंवेदे नपुंसयवेदे हासे अरति रति भय सोग दुगुंछा ॥

३. एकमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचमछट्ठाओ समाओ एक्कवीसं-एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा—दूसमा दूसमदूसमा य ॥

४. एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढमबितियाओ समाओ एक्कवीसं-एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा—दूसमदूसमा दूसमा य ॥

५. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. अच्चुते कप्पे देवाणं जहण्णेणं एकवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामगंडं मल्लं किट्ठिं[6] चावोण्णतं आरण्णवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. ते णं देवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१३. तेसि णं देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१४. संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[7] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

---

[1] असौ पाठांशो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः दशाश्रुत-स्कन्धेसौ किञ्चिद्भेदेन लभ्यते, यथा—'आउट्टियाए सीतोदगवग्घारिएण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विए भायणेण वा असणं वा°"।

[2] सं० पा०—एवं माणे माया लोभे।

[3] पचक्खाणकसाए (ग)।

[4,5] सं० पा०—एवं माणे माया लोभे।

[6] किट्ठं (ग)।

[7] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

बावीसइमो समवाओ

१. बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे[1] अचेलपरीसहे अरइपरीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे[2] जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे 'नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे'[3] ॥

२. दिट्ठिवायस्स णं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
बावीसं सुत्ताइं अछिण्णछेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।
बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासिअसुत्तपरिवाडीए ।
बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए[4] ॥

३. बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे[5] नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किल्लवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरिणामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे [6]°कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुररसपरिणामे° कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे 'गरुलहुफासपरिणामे अगरुलहुफासपरिणामे'[7] ॥

४. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता

५. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६. अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया णं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिओमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. अच्चुते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाणं[8] देवाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

[1] दंसमसगफासप° (क)।

[2] तणपरीसहे (क, ग)।

[3] अण्णाण° दंसण° पण्णा° (क, ख, वृपा); अन्नाणादंसण° पण्णा° (ग); पन्ना° अन्नाण° दंसण° (उत्तरा° २ सू° ३)।

[4] समय° (ग)।

[5] कालय° (क, ग)।

[6] सं° पा°—एवं पंचवि रसा।

[7] गरुयलहुय° अगरुलहुय° (क); गरुलहु° अगरुयलहुय° (ख); गरुलहुय° अगरुलहु° (ग)।

[8] गेवेज्जाणं (क, ग)।

११. जे देवा महितं विसुतं[१] विमलं पभासं[२] वणमालं अच्चुतवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. ते णं देवा बावीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१३. तेसि णं देवाणं बावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[३] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

तेवीसइमो समवाओ

१. तेवीसं सूयगडज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा -समए वेतालिए उवसग्गपरिण्णा थीपरिण्णा नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे[४] आहत्तहिए[५] गंथे जमईए गाहा पुंडरीए किरियठाणा आहारपरिण्णा अपच्चक्खाणकिरिया अणगारसुयं अद्दइज्जं णालंदइज्जं ।।

२. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसाए[६] जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

३. जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तं जहा—अजिए संभवे अभिणंदणे[७] °सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी° पासे[८] वद्धमाणे य[९] । उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ।।

४. जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थगरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तं जहा—अजिए संभवे अभिणंदणे[१०] °सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी° पासे[११] वद्धमाणे य[१२] । उसभे णं अरहा कोसलिए चक्कवट्टी[१३] होत्था ।।

---

१. विस्सुतं (क, ख); विसूहियं (वृ) ।

२. पभातं (क) ।

३. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

४. समोसरिणे (क); समोसरिए (ग) ।

५. अधत्तधेए (क) ।

६. तेवीसं (क, ग) ।

७. सं० पा०—अभिणंदण जाव पास ।

८. पासो (क, ख, ग) ।

९. त्ति (ख) ।

१०. सं० पा०—अभिणंदण जाव पास ।

११. पासो (क, ख, ग) ।

१२. त्ति (ख) ।

१३. पुव्वभवे चक्कवट्टी (वृ) ।

५. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

६. अहेसत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जाणं[1] देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. जे देवा हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१२. तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१३. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

चउव्वीसइमो समवाओ

१. चउव्वीसं देवाहिदेवा पण्णत्ता, तं जहा—उसभे अजिते[3] °संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे° वद्धमाणे ।।

२. चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं-चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णवबत्तीसे जोयणसए एगं च अट्ठत्तीसइं भागं[4] जोयणस्स किंचिविसेसाहिआओ आयामेणं पण्णत्ताओ ।।

३. चउवीसं देवट्ठाणा सइंदया पण्णत्ता, सेसा अहमिंदा अनिंदा अपुरोहिआ ।।

४. उत्तरायणगते णं सूरिए चउवीसंगुलियं पोरिसियच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं णिअट्टति ।।

५. गंगासिंधूओ णं महाणईओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ ।।

---

[1] गेवेज्जगाणं (ख)।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[3] सं० पा०—अजित जाव वद्धमाणे ।

[4] अट्ठतीस (क, ग) ।

६. रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ ।।

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. जे देवा हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. ते णं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१४. तेसि णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं[1] आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

पणवीसइमो समवाओ

१. पुरिमपच्छिमताणं[3] तित्थगराणं पंचजामस्स पणवीसं[4] भावणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. इरियासमिई २. मणगुत्ती ३. वयगुत्ती ४. आलोय[5]-भायण-भोयणं ५. आदाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई ।

१. अणुवीति-भासणया २. कोहविवेगे ३. लोभविवेगे ४. भयविवेगे ५. हास-विवेगे ।

१. उग्गह[6]-अणुण्णवणता २. उग्गह-सीमजाणणता ३. सयमेव उग्गहअणुगेण्हणता ४. साहम्मियउग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणता ५. साधारणभत्तपाणं अणुण्णविय परिभुंजणता[7] ।

---

[1] वाससहस्साणं (क, ख, ग) ।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

[3] प°च्छिमंताणं (ग); °पच्छिमगाणं (क्व) ।

[4] पणुवीसं (क, ख) प्रायः सर्वत्रापि ।

[5] आलोयण (क, ख) ।

[6] उग्गहाणं (वृ) ।

[7] पडि° (क, ख, ग) ।

१. इत्थी-पसु-पंडग-संसत्तसयणासणवज्जणया २. इत्थी-कहविवज्जणया ३. इत्थीए इंदियाण आलोयण-वज्जणया ४. पुव्वरय-पुव्वकोलिआणं अणणुसरणया ५. पणीताहारविवज्जणया ।

१. सोइंदियरागोवरई २. [1]°चक्खिदियरागोवरई ३. घाणिंदियरागोवरई ४. जिब्भिदियरागोवरई ५. फासिंदियरागोवरई[2]° ॥

२. मल्ली णं अरहा पणवीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३. सव्वेवि णं दीहवेयड्ढपव्वया पणवोसं-पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं-पणवीसं गाउयाणि उव्वेहेणं पण्णत्ता ॥

४. दोच्चाए णं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

५. आयारस्स णं भगवओ सचूलियायस्स पणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता[3] ॥

६. मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्जत्तए[4] संकिलिट्ठपरिणामे नामस्स कम्मस्स पणवीसं उत्तरपयडीओ णिबंधति, तं जहा—तिरियगतिनामं विगलिंदियजातिनामं ओरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मगसरीरनामं हुंडसंठाणनामं

---

[1] सं० पा०—एवं पंचवि इंदिया ।

[2] वाचनान्तरे आवश्यकानुसारेण दृश्यन्ते (वृ) । आवश्यकनिर्युक्तेरवचूर्णौ पंचविशंति भावनानां विवरणमित्थं लभ्यते—

इरियासमिए सया जए,
उवेह भुंजेज्ज व पाणभोयणं ।
आयाणनिक्खेवदुगुंछ संजए,
समाहिए संजमए मणोवई ॥१॥
अहस्ससच्चे अणुवीइ भासए,
जे कोहलोहभयमेव वज्जए ।
स दीहरायं समुपेहिया सिया,
मुणी हु मोसं परिवज्जए सया ॥२॥
सयमेव उ उग्गहजायणे घडे,
मतिमं निसम्म सह भिक्खु उग्गहं ।
अणुण्णविय भुंजिज्ज पाणभोयणं,
जाइत्ता साहंमियाण उग्गहं ॥३॥
आहारगुत्ते अविभूसियप्पा,
इत्थिं निज्झाइ न संथवेज्जा ।
बुद्धो मुणी खुड्डकहं न कुज्जा,
धम्माणुपेही संधए बंभचेरं ॥४॥
जे सद्दरूवरसगंधमागए,
फासे य संपप्प मणुण्णपावए ।
गिहीपदोसं न करेज्ज पंडिए,
स होइ दंते विरए अकिंचणे ॥५॥

—आवश्यकनिर्युक्तेरवचूर्णि : पृ० १३४

[3] सत्थपरिण्णा लोग-
विजओ सीओसणीअ सम्मत्तं ।
आवंतिधुयविमोह,
उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥१॥
पिंडेसण सिज्जिरिआ,
भासज्झयणा य वत्थ पाएसा ।
उग्गहपडिमा सत्तिक्क,
सत्तया भावण विमुत्ती ॥२॥
निसीहज्झयणं पणवीसइमं ।

प्रयुक्तप्रतिषु गाथे इमे नोपलभ्येते । वृत्तावपि न स्त इमे व्याख्याते । मुद्रितप्रतिषु च लभ्येते । तथाऽनयोः पुरतः 'निसीहज्झयणं पणवीसइमं' इत्यपि पाठो विद्यते । अयमनावश्यकोस्ति । पंचविंशतिरध्ययनानि द्वयोराचाराङ्गयोरेव सन्ति ।

[4] अपज्जत्तए णं (ख) ।

ओरालियसरीरंगोवंगनामं सेवट्टसंघयणनामं[1] वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं[2] उवघायनामं तसनामं बादरनामं अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनामं दुभगनामं अणादेज्जनामं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं ।।

७. गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं[3] दुहओ घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेणं पवडंति ।।

८. रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं[4] दुहओ मकरमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेणं पवडंति ।।

९. लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वयस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता ।।

१०. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. जे देवा हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसि णं देवाणं पणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

छव्वीसइमो समवाओ

१. छव्वीसं दस-कप्प-ववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तं जहा—दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स ।।

२. अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा

---

१. छेवट्ठ° (क्व) ।

२. अगरुयलहु° (ख, ग); अगुरुलहु (क्व) ।

३,४. पुहत्तेणं (क, ख, ग) ।

५. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

पण्णत्ता, तं जहा—मिच्छत्तमोहणिज्जं[1] सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगो[2] दुगुंछा[3] ।।

३. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

४. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

५. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

६. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७. मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. जे देवा मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. ते णं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१०. तेसि णं देवाणं छव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

११. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छव्वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[4] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

सत्तावीसइमो समवाओ

१. सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवायवेरमणे[5] [6]°मुसावायवेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे° सोइंदियनिग्गहे[7] °चक्खिदियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिदियनिग्गहे° फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे[8] °माणविवेगे मायाविवेगे° लोभविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमा विरागता मणसमाहरणता[9] वतिसमाहरणता कायसमाहरणता णाणसंपण्णया दंसणसंपण्णया चरित्तसंपण्णया वेयणअहियासणया[10] मारणंतियअहियासणया ।।

---

[1] मिच्छमो° (क)।

[2] सोगं (क)।

[3] दुगुंछं (क)।

[4] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

[5] वेरमणा (क)।

[6] सं० पा०—एवं पंचवि।

[7] सं० पा०—सोइंदियनिग्गहे जाव फासिंदिय°।

[8] सं० पा०—कोहेविवेगे जाव लोभ°।

[9] °समन्नाहरणया (वृपा)।

[10] °अधेया° (क)।

२. जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति ।।

३. एगमेगे णं णक्खत्तमासे 'सत्तावीसं राइंदियाइं'[1] राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।।

४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।।

५. वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं[2] मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं 'कम्मंसा संतकम्मा'[3] पण्णत्ता ।।

६. सावण-सुद्ध-सत्तमीए णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं निवड्ढेमाणे[4] रयणिखेत्तं अभिणिवड्ढेमाणे चारं चरइ ।।

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. जे देवा मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जयमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१४. तेसि णं देवाणं सत्तावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

---

[1] सत्तवीस रातिंदिग्राइं (ख); सत्तावीसं राइंदियं (ग) ।

[2] × (क, ग) ।

[3] उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा (क, ख, ग, वृ); एकविंशतितमे समवाये 'कम्मंसा संतकम्मा' एवं पाठो विद्यते । षड्विंशतितमे अष्टाविंशतितमे समवाये चापि एवमेव । एकत्रिंशतितमे समवाये वृत्तिकृता 'कम्मंस' शब्दस्यार्थ उत्तरप्रकृतिस्तथा 'संतकम्म' शब्दार्थः सत्तावस्थं कर्म कृतोस्ति । अत्र 'उत्तरप्रकृतिः' शब्दो मूलपाठे समागतस्तथा 'संतकम्म' शब्दस्य स्थाने 'सतकम्मंसा' इति पाठो जातः । एतत् परिवर्तनं किमर्थंजातमितिकारणं न ज्ञायते । प्रतीयते व्याख्यांश एव मूले स्थानं प्राप्तोस्ति । तेनास्माभिर्मूलपाठः पूर्वपाठानुसारी स्वीकृतः ।

[4] णिव्वड्ढे° (ग) ।

[5] सं° पा°—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

अट्ठावीसइमो समवाओ

१. अट्ठावीसविहे[1] आयारपकप्पे[2] पण्णत्ते, तं जहा—
मासिया आरोवणा, सपंचरायमासिया आरोवणा, सदसरायमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायमासिया आरोवणा, सवीसइरायमासिया आरोवणा, सपंचवीसरायमासिया आरोवणा।
•[3]दोमासिया आरोवणा, सपंचरायदोमासिया आरोवणा, सदसरायदोमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायदोमासिया आरोवणा, सवीसइरायदोमासिया आरोवणा, सपंचवीसरायदोमासिया आरोवणा।
तेमासिया आरोवणा, सपंचरायतेमासिया आरोवणा, सदसरायतेमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायतेमासिया आरोवणा, सवीसइरायतेमासिया आरोवणा, सपंचवीसरायतेमासिया आरोवणा।
चउमासिया आरोवणा, सपंचरायचउमासिया आरोवणा, सदसरायचउमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायचउमासिया आरोवणा, सवीसइरायचउमासिया आरोवणा, सपंचवीसरायचउमासिया आरोवणा° ।
उग्घातिया[4] आरोवणा, अणुग्घातिया[5] आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा।
एत्ताव[6] ताव आयारपकप्पे[7] एत्ताव[8] ताव आयरियव्वे[9] ॥

२. भवसिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा[10] पण्णत्ता, तं जहा—सम्मत्तवेअणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं[11] सोलस कसाया णव णोकसाया ॥

३. आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—
सोइंदियत्थोग्गहे[12] चक्खिदियत्थोग्गहे[13] घाणिंदियत्थोग्गहे जिब्भिदियत्थोग्गहे फासिंदियत्थोग्गहे णोइंदियत्थोग्गहे।
सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदियवंजणोग्गहे जिब्भिदियवंजणोग्गहे फासिंदियवंजणोग्गहे।

---

[1] अट्ठावीसइविहे (ख, ग)।

[2] आयारकप्पे (क)।

[3] सं० पा०—एवं चेव दोमासिया आरोवणा संपंचरायदोमासिया आरोवणा एवं तेमासिया आरोवणा एवं चउमासिया आरोवणा।

[4] उवघातिया (ग)।

[5] अणुवघातिया (ग)।

[6] इत्ताव (क, ग)।

[7] आयारकप्पे (क)।

[8] इत्ताव (क, ग)।

[9] आया° (क, ख)।

[10] सतकम्मं (क); संतकम्मं (ग)।

[11] सम्मा° (ख); सम्मत्त° (ग)।

[12] सोतिंदियत्थोवग्गहे (ग)।

[13] चक्खुंदियत्थोग्गहे (ख); चक्खुंदियत्थावग्गहे (ग)।

सोतिंदियईहा[1] °चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा° फासिंदियईहा णोइंदियईहा ।

सोतिंदियावाते[2] °चक्खिंदियावाते घाणिंदियावाते जिब्भिंदियावाते फासिंदियावाते° णोइंदियावाते ।

सोइंदियधारणा[3] °चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा° णोइंदियधारणा ।।

४. ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

५. जीवे णं देवगतिं णिबंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तं जहा—देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेययसरीरनामं कम्मगसरीरनामं समचउरंससंठाणनामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं उवघायनामं पराघायनामं ऊसासनामं पसत्थविहायगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणं[4] दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभासुभाणं दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभगनामं सुस्सरनामं, आएज्ज-अणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, जसोकित्तिनामं निम्माणनामं ।।

६. एवं चेव नेरइयेवि[5], नाणत्तं अप्पसत्थविहायगइनामं हुंडसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादेज्जनामं अजसोकित्तीनामं[6] ।।

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] सं० पा०—सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा ।

[2] सं०पा०—सोतिंदियावाते जाव णोइंदियावाते ।

[3] सं० पा०—सोइंदियधारणा जाव णोइंदिधारणा ।

[4] थिरमथिराणं (क) ।

[5] णेरइयावि (ख, ग) ।

[6] अजसोकित्तीनामं निम्माणनामं (क, ख, ग); एष पाठोऽनावश्यको भाति । वृत्तावपि एतत् संवादी उल्लेखः प्राप्यते—'नारकसूत्रे विंशतिस्ता एव प्रकृतयोऽष्टानां तु स्थाने अष्टावन्या बध्नाति' (वृत्ति, पत्र ४७) ।

१३. ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१४. तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

एगूणतीसइमो समवाओ

१. एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पण्णत्ते, तं जहा—भोमे उप्पाए सुमिणे अंतलिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे ।
भोमे[2] तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुत्ते वित्ती वत्तिए, एवं एक्केक्कं तिविहं । विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे[3] ।।

२. आसाढे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते[4] ।।

३. °भद्दवए णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।।

४. कत्तिए णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।।

५. पोसे[5] णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।।

६. फग्गुणे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।।

७. वइसाहे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते° ।।

८. चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं[6] पण्णत्ते ।।

९. जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी 'तित्थकरनामसहियाओ नामस्स कम्मस्स'[7] णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

१०. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

[2] भोमे उप्फए (क) ।

[3] °पवत्तणाणुयोगे (क) ।

[4] सं० पा०—भद्दवए णं मासे कित्तिए णं पोसे णं फग्गुणे णं वइसाहे णं मासे ।

[5] पोसिए (ग) ।

[6] मुहुत्तेणं (ग) ।

[7] तित्थकरसहिताओ नामस्स (क); तित्थकरनामस्स य (ग) ।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५. जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१६. ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१७. तेसि णं देवाणं एगूणतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

तीसइमो समवाओ

१. तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया ।
उदएण क्कम्म मारेइ, महामोहं पकुव्वइ ।।१।।

सीसावेढेण[2] जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं ।
तिव्वासुभसमायारे[3], महामोहं पकुव्वइ[4] ।।२।।

पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं ।
अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ।।३।।

जायतेयं समारब्भ, बहुं ओरुंभिया जणं ।
अंतोधूमेण मारेई, महामोहं पकुव्वइ ।।४।।

सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमंगम्मि चेयसा ।
विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ।।५।।

---

[1] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

[2] सीसो० (ग) ।

[3] तिव्वे असुभ° (क, ग) ।

[4] यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः, केषुचित् दृश्यन्त एवेति ते व्याख्यायन्ते (वृ) ।

पुणो पुणो पणिहिए, हणित्ता उवहसे जणं[1]।
फलेणं अदुव दंडेणं, महामोहं पकुव्वइ ॥६॥
गूढायारी निगूहेज्जा, मायं मायाए छायए।
असच्चवाई णिण्हाई[2], महामोहं पकुव्वइ ॥७॥
धंसेइ जो अभूएणं, 'अकम्मं अत्तकम्मुणा'[3]।
अदुवा[4] तुम कासित्ति, महामोहं पकुव्वइ ॥८॥
जाणमाणो[5] परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ।
अज्झीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ ॥९॥
अणायगस्स नयवं, दारे[6] तस्सेव धंसिया।
विउलं विक्खोभइत्ताणं, किच्चा णं पडिबाहिरं ॥१०॥
उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे[7] वियारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥११॥ (युग्मम्)
अकुमारभूए जे केई, कुमारभूएत्तहं[8] वए।
इत्थीहिं गिद्धे वसए, महामोहं पकुव्वइ ॥१२॥
अबंभयारी जे केई, बंभयारीत्तहं[9] वए।
गद्दभेव्व गवां मज्झे, विस्सरं नयई नदं ॥१३॥
अप्पणो 'अहिए बाले'[10], मायामोसं बहुं भसे।
इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुव्वइ ॥१४॥ (युग्मम्)
जं निस्सिए उव्वहइ, जससाअहिगमेण वा।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि, महामोहं पकुव्वइ ॥१५॥
ईसरेण अदुवा गामेणं, अणिस्सरे ईसरीकए[11]।
तस्स संपग्गहीयस्स, सिरी अतुलमागया ॥१६॥
ईसादोसेण आइट्ठे, कलुसाविलचेयसे[12]।
जे 'अंतरायं चेएइ'[13], महामोहं पकुव्वइ ॥१७॥ (युग्मम्)
'सप्पी जहा अंडउडं'[14], भत्तारं जो विहिंसइ।
सेणावइं पसत्थारं, महामोहं पकुव्वइ ॥१८॥

---

१. जणा (क)।
२. णिगिण्हाई (ग)।
३. कम्मं असत्त° (ग)।
४. अहवा (क)।
५. °माणओ (क)।
६. दारं (क, ख, ग)।
७. °भोगं (क):
८. °त्तिहं (क, ग)।
९. बंभयारिहं (क)।
१०. अहियाले (क); अहियं बाले (ग)।
११. इस्सरे° (क)।
१२. °उलचेवसा (ग)।
१३. अंतराइं चेति (ग)।
१४. सप्पेजहाअंडपुडं (ग)।

जे नायगं व रट्ठस्स, नयारं निगमस्स वा ।
सेट्ठिं बहुरवं हंता,[१] महामोहं पकुव्वइ ।।१९।।
बहुजणस्स णेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं ।
एयारिसं नरं हंता, महामोहं पकुव्वइ ।।२०।।
उवट्ठियं पडिविरयं, 'संजयं सुतवस्सियं'[२] ।
वोकम्म धम्माओ भंसे[३], महामोहं पकुव्वइ ।।२१।।
तहेवाणंतणाणीणं, जिणाणं वरदंसिणं ।
तेसिं अवण्णवं[४] बाले, महामोहं पकुव्वइ ।
नेयाउअस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवयरई[५] बहुं ।।२२।।
तं तिप्पयंतो[६] भावेइ, महामोहं पकुव्वइ ।।२३।।
आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिंसई बाले, महामोहं पकुव्वइ ।।२४।।
आयरियउवज्झायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, महामोहं पकुव्वइ ।।२५।।
अबहुस्सुए य जे केई, सुएण पविकत्थइ[७] ।
सज्झायवायं [सब्भाववायं?[८]] वयइ, महामोहं पकुव्वइ ।।२६।।
अतवस्सीए य[९] जे केई, तवेण पविकत्थइ[१०] ।
सव्वलोयपरे तेणे, महामोहं पकुव्वइ ।।२७।।
साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए ।
पभू ण कुणई किच्चं, मज्झंपि से न कुव्वइ ।।२८।।
सढे नियडीपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे[११] ।
अप्पणो य अबोहीए, महामोहं पकुव्वइ ।।२९।। (युग्मम्)

---

१. हत्ता (क) ।
२. संजयं सुतवस्सिणं (क); जे भिक्खुं जगजीवनं (ग, वृपा) ।
३. भंस (क); भंसेइ (ख) ।
४. अवण्णिमं (क); अवण्ण (ग) ।
५. अवग्गरई (क); अवहरई (वृपा) ।
६. पिप्प० (ग) ।
७. परिकंथई (ग) ।
८. समवायाङ्गेसु आदर्शेषु 'सज्झायवायं' इति पाठो लभ्यते । वृत्तावपि अभयदेवसूरिणा 'स्वाध्यायवादं' इति व्याख्यातम् । किन्तु अर्थमीमांसया मीमांसनीयोसौ पाठः प्रतिभाति । दशाश्रुतस्कन्धस्य (सू० २६) वृत्तौ 'सद्भाववाद' इति व्याख्यातमस्ति । तेन प्रतीयते 'सब्भाववायं' इति पाठः आसीत् । प्राचीनलिप्यां संयुक्त 'भकारस्य' तथा संयुक्त 'झकारस्य' प्रायः सादृश्यमेव । तेन 'सब्भाव' इत्यस्य स्थाने 'सज्झाय' इति परिवर्तनं जातम् । अर्थसमीक्षया 'सब्भाववायं' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।
९. उ (ग) ।
१०. परिकंथई (ग) ।
११. °चेयसा (ग) ।

जे कहाहिगरणाइं, संपउंजे[1] पुणो पुणो ।
सव्वतित्थाण भेयाय[2], महामोहं पकुव्वइ ॥३०॥
जे य आहम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो ।
सहाहेउं सहीहेउं, महामोहं पकुव्वइ ॥३१॥
जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए ।
तेऽतिप्पयंतो[3] आसयइ, महामोहं पकुव्वइ ॥३२॥
इड्ढी जुई जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं ।
तेसिं अवण्णवं[4] बाले, महामोहं पकुव्वइ ॥३३॥
अपस्समाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे ।
अण्णाणि जिणपूयट्ठी, महामोहं पकुव्वइ ॥३४॥

२. थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[5] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

३. एगमेगे णं अहोरत्ते 'तीसं मुहुत्ता'[6] मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ता 'एएसि णं'[7] तीसाए मुहुत्ताणं तीसं[8] नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—रोद्दे सेते मित्ते वाऊ सुपीए[9] अभियंदे[10] माहिंदे पलंबे[11] बंभे सच्चे आणंदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे[12] भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवं आवधं[13] तट्ठवे[14] भूमहे रिसभे[15] सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ॥

४. अरे णं अरहा तीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

५. सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

६. पासे णं अरहा तीसं वासाइं अगारमज्झे[16] वसित्ता [मुंडे भवित्ता ?] अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

७. समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारमज्झे[17] वसित्ता [मुंडे भवित्ता ?] अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

---

[1] संपउंजिय (ग) ।
[2] भेयाणं (ग) ।
[3] °तप्पि° (ग) ।
[4] अवण्णियं (ग) ।
[5] सं० पा०—बुद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।
[6] तीसमुहुत्ते (क्व) ।
[7] तेसिणं (ख) ।
[8] तीसे (ख) ।
[9] सुविए (ग) ।
[10] अभिइंदे (ग); अभिचंदे (क्व) ।
[11] पलंबं (ख, ग) ।
[12] तट्ठे (क्व) ।
[13] आवत्ते (क्व) ।
[14] तट्ठवं (ख, ग) ।
[15] रिसवे (ग) ।
[16] °मज्झा (क, ख); आगारमज्झा (ग); अगारवासमज्झे (क्व) ।
[17] अगारमज्झा (क, ख, ग) ।

८. रयणप्पभाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

९. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।
[सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता[1] ?] ।।

१२. उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३. जे देवा उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१४. ते णं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१५. तेसि णं देवाणं तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

एक्कतीसइमो समवाओ

१. एक्कतीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, तं जहा—खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे[3], खीणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे, खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे अचक्खुदंसणावरणे, खीणे ओहिदंसणावरणे, खीणे केवलदंसणावरणे, 'खीणा निद्दा, खीणा णिद्दाणिद्दा, खीणा पयला, खीणा पयलापयला, खीणा थीणगिद्धी'[4], खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे, खीणे दंसणमोहणिज्जे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे, खीणे नेरइयाउए, खीणे तिरियाउए, खीणे मणुस्साउए, खीणे देवाउए, खीणे उच्चागोए, खीणे नियागोए, खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे, खीणे दाणंतराए, खीणे लाभंतराए, खीणे भोगंतराए, खीणे उवभोगंतराए, खीणे वीरियंतराए ।।

२. मंदरे णं पव्वए धरणितले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च[5] तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणे[6] परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।।

---

[1] पूर्वक्रमानुसारेणैष पाठोत्रयुज्यते ।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।

[3] °णाणावरणिज्जे (ख) ।

[4] निद्दा पयला निद्दा २ पयला २ खीणे थीणगद्धी (ग); °थीणद्धी (क्व) ।

[5] छच्चेव (क्व) ।

[6] देसूणं (क) ।

३. जया णं[1] सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।।

४. अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाणि राइंदियाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ताइ ।।

५. आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइंदियाणि किंचि विसेसूणाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ताइं ।।

६. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं देवाणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११. जे देवा उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२. ते णं देवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१३. तेसि णं देवाणं एक्कतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

बत्तीसइमो समवाओ

१. बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता, तं जहा—

आलोयणा निरवलावे, आवईसु दढधम्मया ।
अणिस्सिओवहाणे य, सिक्खा निप्पडिकम्मया ।।१।।
अण्णातता अलोभे य, तितिक्खा अज्जवे सुती ।
सम्मदिट्ठी समाही य, आयारे विणओवए ।।२।।

---

[1] × (क, ग)।

[2] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

धिईमई य संवेगे, पणिही सुविहि संवरे।
अत्तदोसोवसंहारे, सव्वकामविरत्तया ॥३॥
पच्चक्खाणे विउस्सग्गे, अप्पमादे लवालवे।
झाणसंवरजोगे य, उदए मारणंतिए ॥४॥
संगाणं च परिण्णा[1], पायच्छित्तकरणेत्ति य।
आराहणा य मरणंते, बत्तीसं जोगसंगहा ॥५॥

२. बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता, तं जहा—चमरे बली धरणे भूयाणंदे[2] °वेणुदेवे वेणुदाली हरि[3] हरिस्सहे अग्गिसहे अग्गिमाणवे पुन्ने विसिट्ठे[4] जलकंते जलप्पभे अमियगती अमितवाहणे वेलंबे पभंजणे° घोसे महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे[5] °माहिंदे बंभे लंतए महासुक्के[6] सहस्सारे° पाणए अच्चुए ॥

३. कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया[7] बत्तीसं जिणसया होत्था ॥

४. सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

५. रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पण्णत्ते ॥

६. बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते ॥

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. जे देवा विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१३. तेसि णं देवाणं बत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[8] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

---

[1] परिण्णाया (ख); परिण्णाए (ग)।

[2] सं० पा०—भूयाणंदे जाव घोसे।

[3] समवायाङ्गवृत्तौ 'हरि' स्थाने 'हरिकंते' पाठोस्ति। स्थानाङ्गेपि लोकपाल-प्रकरणे (४।१२२) 'हरिकंतस्स' पाठो विद्यते। 'हरि' अस्यैव संक्षेपः प्रतीयते।

[4] समवायाङ्गवृत्तौ 'वसिट्ठे' पाठोस्ति।

[5] सं० पा०—सणंकुमारे जाव पाणए।

[6] समवायाङ्गवृत्तौ 'सुक्के' पाठोस्ति।

[7] बत्तीसं जिणा (क, ख); × (ग)।

[8] सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

तेत्तीसइमो समवाओ

१. तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. सेहे राइणियस्स आसन्नं गंता भवइ—'आसायणा सेहस्स'[1]।

२. सेहे राइणियस्स पुरओ गंता भवइ—आसायणा सेहस्स।

३. सेहे राइणियस्स सपक्खं गंता भवइ—आसायणा सेहस्स।

४. सेहे राइणियस्स आसन्नं ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स[2]।

५. सेहे राइणियस्स पुरओ ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

६. सेहे राइणियस्स सपक्खं ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

७. सेहे राइणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

८. सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

९. सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

१०. सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे पुव्वामेव सेहतराए आयामेइ पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

११. सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१२. सेहे राइणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो के सुत्ते ? के जागरे ? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

१३. केइ राइणियस्स पुव्वं संलवित्तए सिया, तं सेहे पुव्वतरागं आलवेति पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१४. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा राइणियस्स—आसायणा सेहस्स।

१५. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स उवदंसेति, पच्छा राइणियस्स—आसायणा सेहस्स।

---

[1] × (क, ख, ग)।

[2] सं० पा०—सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स। अस्मिन् सूत्रे पच आशातनाः प्रत्यक्षमुल्लिखिताः सन्ति, शेषाश्च जाव शब्देन सूचिताः। वृत्तिकृता समर्पणस्य पूर्तिकृते दशाश्रुतस्कन्धस्य निर्देशः कृतः, यथा—"यावत्करणाद्दशाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्या इह। द्रष्टव्याः" तथा अर्थरूपेण सर्वासामप्याशातनानामुल्लेखो वृत्तिकृता कृतः। वृत्तिकृतः क्रमो दशाश्रुतस्कन्धप्राप्तक्रमाद् भिन्नोस्ति। संभाव्यते वृत्तिकर्तुः समक्षे दशाश्रुतस्कन्धस्य काचिदन्या वाचनाऽसीत्। अस्माभिः पाठपूर्तिर्दशाश्रुतस्कन्धमनुसृत्य कृता, क्रमश्च वृत्त्यानुसारी स्वीकृतः।

१६. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागं उवणिमंतेइ, पच्छा राइणियं—आसायणा सेहस्स।

१७. सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलयइ—आसायणा सेहस्स।

१८. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता राइणिएण सद्धिं आहरेमाणे तत्थ सेहे खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसितं-रसितं मणुण्णं-मणुण्णं मणामं-मणामं निद्धं-निद्धं लुक्खं-लुक्खं आहरेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

१९. सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

२०. सेहे राइणियस्स खद्धं-खद्धं वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

२१. सेहे राइणियस्स 'किं' ति वइत्ता भवति - आसायणा सेहस्स।

२२. सेहे राइणियं 'तुम'ति वत्ता भवति --आसायणा सेहस्स।

२३. सेहे राइणियं तज्जाएण-तज्जाएण पडिभणित्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

२४. सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स 'इति एवं' ति वत्ता न भवति—आसायणा सेहस्स।

२५. सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स 'नो सुमरसो'ति वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

२६. सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अच्छिंदित्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

२७. सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

२८. सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवुच्छिन्नाए अव्वोगडाए दोच्चं पि तमेव कहं कहित्ता भवति —आसायणा सेहस्स।

२९. सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारगं पाएणं संघट्टित्ता, हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छति—आसायणा सेहस्स।

३०. सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ—आसायणा सेहस्स।

३१. सेहे राइणियस्स उच्चासणे चिट्ठित्ता वा निसीदत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स।

३२. सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स°।

३३. सेहे राइणियस्स आलवमाणस्स तत्थगते चिय पडिसुणित्ता 'भवइ—आसायणा सेहस्स'[1] ॥

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्के[2]वारे तेत्तीसं-तेत्तीसं भोमा पण्णत्ता ॥

३. महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

४. जया णं सूरिए 'बाहिराणं अंतरं'[3] तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ, तया णं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ॥

५. इमीसे णं रयण्प्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६. अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महाकाल-रोरुय-महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७. अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८. असुरकुमाराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११. जे देवा सव्वट्ठसिद्धं महाविमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२. ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१३. तेसि णं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[4] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

चोत्तीसइमो समवाओ

१. चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, तं जहा—१. अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे। २. निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी। ३. गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए।

---

[1] इति खलु एतातो तेत्तीसं आसायणाओ (क, ख, ग)।

[2] °मेक्क (ग)।

[3] बाहिराणं (क); वाहिराणंतरं (क्व)।

[4] सं० पा०—मिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं° ।

४. पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे। ५. पच्छन्ने आहारनीहारे, अद्दिस्से मंसचक्खुणा। ६. ‘आगासगयं चक्कं’[1]। ७. आगासगयं[2] छत्तं। ८. आगासियाओ[3] सेयवरचामराओ। ९. आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं। १०. आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ। ११. जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थवि य णं तक्खणादेव[4] संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ। १२. ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेयमंडलं ‘अभिसंजायइ[5], अंधकारेवि य णं दस दिसाओ पभासेइ’[6]। १३. बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे। १४. अहोसिरा कंटया भवंति। १५. उडुविवरीया सुहफासा[7] भवंति। १६. सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जति। १७. ‘जुत्तफुसिएण य मेहेण’[8] निहय-रय-रेणुयं कज्जइ। १८. जल-थलय-भासुर-पभूतेणं बिंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे कज्जइ[9]। १९. अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ। २०. मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ। २१. पच्चाहरओवि य णं हिययगमणीओ[10] ‘जोयणनीहारी सरो’[11] २२. भगवं च णं अद्धमागहीए[12] भासाए धम्ममाइक्खइ। २३. सावि य णं अद्धमागही[13] भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं अप्पणो ‘हिय-सिव-सुहदाभासत्ताए’[14] परिणमइ। २४. पुव्वबद्धवेरावि य णं देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले

---

१. आगासत चक्खुं (क); आगासत्थं चक्कं (ग); आगासगं चक्कं (वृपा)।

२. आगासगं (क, वृ)।

३. आगासगयाओ (ग)।

४. तक्खणे° (क)।

५. समजायति (ग)।

६. ‘अभि……पभासेइ’ एनावान् पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

७. सुहु° (क)।

८. जुत्तफासएण य मेहेण (क); जुत्तिफुसिएण य मेहेण य (ग)।

९. ‘कालागुरुपवरकुंदुरुक्कधूवमघमघंतगधुद्धुयाभिरामे भवइ’ ‘उभयो पासिं च णं अरहंताणं भगवंताणं दुवे जक्खा कडयतुडियथंभियभुया चामरुक्खेवणं करंति’ बृहद्वाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वयं नाधीयते (वृ)।

१०. हियणंतय° (क)।

११. °णीहारो भरो (क)।

१२. अद्धमागधाए (क, ख, ग)।

१३. अद्धमागहा (ख); अद्धमागधा (ग)।

१४. °सुहदाय° (ग)।

पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति। २५. 'अण्णउत्थिय-पावयणियावि'[1] य ण मागया वंदंति। २६. आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति'[2]। २७. जओ जओवि य णं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओवि य णं जोयणपणवीसाएणं ईती न भवइ। २८. मारी न भवइ। २९. सचक्कं न भवइ। ३०. परचक्कं न भवइ। ३१. अइवुट्ठी न भवइ। ३२. अणावुट्ठी न भवइ ३३. दुब्भिक्खं न भवइ। ३४. पुव्वुप्पण्णावि य णं[3] उप्पाइया वाही खिप्पमिव उवसमंति॥

२. जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—बत्तीसं महाविदेहे, दो[4] भरहेरवए॥

३. जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं दीहवेयड्ढा पण्णत्ता॥

४. जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए चोत्तीस तित्थंकरा समुप्पज्जंति॥

५. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

६. पढमपंचमछट्ठीसत्तमासु—चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

पणतीसइमो समवाओ

१. पणतीसं सच्चवयणाइसेसा[5] पण्णत्ता॥

२. कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था॥

३. दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था॥

४. नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था॥

---

[1] पावयणीवि (ख, ग)।

[2] × (वृ) बृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते, यदुत—अण्ण······वंदंति। आगया ······हवंति। (वृ)।

[3] णं न भवइ (ग)।

[4] × (ख, ग)।

[5] सत्यवचनातिशया आगमे न दृष्टाः, एते तु ग्रन्थान्तरदृष्टाः सम्भाविताः, वचनं हि गुणवद्वक्तव्यं, तद्यथा—संस्कारवत् १. उदात्तं २. उपचारोपेतं ३. गम्भीरशब्दं ४. अनुनादि ५. दक्षिणं ६. उपनीतरागं ७. महार्थं ८. अव्याहतपौर्वापर्यं ९. शिष्टं १०. असंदिग्धं ११. अपहृतान्योत्तरं १२. हृदयग्राहि १३. देशकालाव्यतीतं १४. तत्त्वानुरूपं १५. अप्रकीर्णप्रसृतं १६. अन्योऽन्यप्रगृहीतं १७. अभिजातं १८. अतिस्निग्धमधुरं १९. अपरमर्मविद्धं २०. अर्थधर्माभ्यासानपेतं २१. उदारं २२. परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्तं २३. उपगतश्लाघं २४. अनपनीतं २५. उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलं २६. अद्भुतं २७. अनतिविलम्बितं २८. विभ्रमविक्षेपकिलिकिञ्चितादिविमुक्तं २९. अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रं ३०. आहितविशेषं ३१. साकारं ३२. सत्त्वपरिग्रहं ३३. अपरिखेदितं ३४. अव्युच्छेदं ३५. चेति वचनं महानुभावैर्वक्तव्यमिति(वृ)।

५. सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस-अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस[1] जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्ट-समुग्गएसु जिण-सकहाओ पण्णत्ताओ ।।

६. बितियचउत्थीसु—दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

छत्तीसइमो समवाओ

१. छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—विणयसुयं परीसहो[2] चाउरंगिज्जं असंखयं अकाममरणिज्जं पुरिसविज्जा उरब्भिज्जं काविलिज्जं[3] नमिपव्वज्जा दुमपत्तयं बहुसुयपूया[4] हरिएसिज्जं चित्तसंभूयं उसुकारिज्जं सभिक्खुगं समाहिठाणाइं पावसमणिज्जं संजइज्जं मिगचारिया अणाहपव्वज्जा समुद्दपालिज्जं रहनेमिज्जं गोयमकेसिज्जं समितीओ जण्णइज्जं सामायारी खलुंकिज्जं मोक्खमग्गगई अप्पमाओ तवोमग्गो चरणविही पमायठाणाइं कम्मपगडी लेसज्झयणं अणगारमग्गे जीवाजीवविभत्ती य ।।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था[5] ।।

३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था ।।

४. चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ ।।

सत्ततीसइमो समवाओ

१. कुंथुस्स णं अरहओ 'सत्ततीसं गणा'[6], सत्ततीसं गणहरा होत्था ।।

२. हेमवयहेरण्णवइयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चोवत्तरे[7] जोयणसए सोलसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ताओ ।।

३. सव्वासु णं विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

४. खुड्डियाए णं विमाणप्पविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

---

[1] पणतीसाए (क) ।

[2] परीसहा (क, ख); परीसह (ग) ।

[3] काविलियं (ख) ।

[4] °पुज्जा (क, ख, ग) ।

[5] पण्णत्ता (क, ग) ।

[6] × (क) ।

[7] बोहत्तरे (ख); बावत्तरे (ग); चउसत्तरे (ख) ।

५. कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ॥

अट्ठतीसइमो समवाओ

१. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥

२. हेमवतेरण्णवतियाणं जीवाणं धणुपट्ठे अट्ठतीसं[1] जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

३. अत्थस्स णं पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

४. खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१. नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था ॥

२. समयखेत्ते णं एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—तीसं वासहरा, पंचमंदरा, चत्तारि उसुकारा ॥

३. दोच्चचउत्थपंचमछट्ठसत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

४. नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउस्स—एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

चत्तालीसइमो समवाओ

१. अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ॥

२. मंदरचूलिया[2] णं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

३. संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

४. भूयाणंदस्स णं नागरण्णो[3] चत्तालीसं भवणावाससयसहस्स पण्णत्ता ॥

५. खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए[4] तइए[5] वग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

६. फग्गुणपुण्णिमासिणीए[6] णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वट्टइत्ता णं चारं चरइ ॥

---

१. अट्ठतीसं अट्ठतीसं (क) ।

२. मंदरस्स° (ख) ।

३. नागकुमारस्स नागरन्नो (क्व) ।

४. विमाणविभत्तीए (क) ।

५. ततिय (ग) ।

६. °पुण्णमासिणीए (ख); °पुन्निमासीए (ग); 'वइसाहपुण्णिमासिणीए' त्ति यत्केषुचित् पुस्तकेषु दृश्यते सोऽपपाठः (वृ) ।

७. एवं कत्तियाएवि पुण्णिमाए ।।

८. महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।।

एक्कचत्तालीसइमो समवाओ

१. नमिस्स णं अरहओ एक्कचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।।

२. चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए ।।

३. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

बायालीसइमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्त सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

२. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाते[2] अंतरे[3] पण्णत्ते ।।

३. एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे य ।।

४. कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा, बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ।।

५. संमुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

६. नामे णं[4] कम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा—गइनामे जातिनामे सरीरनामे सरीरंगोवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे अगरुयलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आतवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साधारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दूभगनामे सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे ।।

७. लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धारेंति ।।

---

[1] सं० पा०—सिद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।

[2] आबाहते (ख); आबाहाते (ग), आबाधाते आबाहाए—अग्रे पि प्राय एवमेव लभ्यते ।

[3] अंतकरे (क) ।

[4] ×(क) ।

८. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए[1] बितिए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

९. एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचमछट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ॥

१०. एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढमबीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ॥

तेयालीसइमो समवाओ

१. तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ॥

२. पढमचउत्थपंचमासु—तीसु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

३. जंबुद्दीवस्स णं दोवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथूभस्स णं आवास-पव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४. एवं चउद्दिसिंपि दओभासे संखे दयसीमे [य ?] ॥

५. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए[2] ततिये वग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

चोयालीसइमो समवाओ

१. 'चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता'[3] ॥

२. विमलस्स णं अरहतो चोयालीसं पुरिसजुगाइं अणुपट्ठिं[4] सिद्धाइं[5] °बुद्धाइं मुत्ताइं अंतगडाइं परिणिव्वुयाइं सव्वदुक्ख°प्पहीणाइं ॥

३. धरणस्स णं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

४. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए[6] चउत्थे वग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

पणयालीसइमो समवाओ

२. समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

२. सीमंतए णं नरए[7] पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

---

[1] विमाणवि° (क)।

[2] विमाणवि° (क)।

[3] देवलोयचुयाणं इसीणं चोयालीसं इसिभासियज्झयणा प° (वृपा)।

[4] अणुपुट्ठिं (ग); अणुपिट्ठिं (क्व); अणुबंधेण (वृपा)।

[5] सं° पा°—सिद्धाइं जाव प्पहीणाइं।

[6] विमाणवि° (क)।

[7] नरएण (ख)।

३. एवं उडुविमाणे पण्णत्ते ।।

४. ईसिपब्भारा णं पुढवी पण्णत्ता एवं चेव ।।

५. धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते ।।

७. सव्वेवि णं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा—

संगहणी-गाहा

तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसंजोगा ।।१।।

८. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

छायालीसइमो समवाओ

१. दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया पण्णत्ता ।।

२. बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पण्णत्ता ।।

३. पभंजणस्स णं वातकुमारिंदस्स[1] छायालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

सत्तचालीसइमो समवाओ

१. जया णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ।।

२. थेरे णं अग्गिभूई सत्तालीसं[2] वासाइं अगारमज्झा[3] वसित्ता मुंडे भवित्ता[4] अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।

अडयालीसइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पण्णत्ता ।।

२. धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था ।।

३. सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

---

[1] वातस्स° (ग); वाउ० (क्व) ।

[2] सत्तयालीसं (क, ख) ।

[3] °मज्झे (क्व) ।

[4] भवित्ता णं (क, ख) ।

एगूणपण्णासइमो समवाओ

१. सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा[1] एगूणपण्णाए राइंदिएहिं छन्नउएणं[2] भिक्खासएणं अहासुत्तं[3] •अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए॰ आराहिया यावि भवइ ॥

२. देवकुरुउत्तरकुरासु णं मणुया एगूणपण्णाए[4] राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति ॥

३. तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदिया ठिई पण्णत्ता ॥

पण्णासइमो समवाओ

१. मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ॥

२. अणंते[5] णं अरहा पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३. पुरिसोत्तमे णं वासुदेवे पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

४. सव्वेवि णं दीहवेयड्ढा मूले पण्णासं-पण्णासं जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

५. लंतए कप्पे पण्णासं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ॥

६. सव्वाओ[6] णं तिमिस्सगुहाखंडगप्पवायगुहाओ[7] पण्णासं-पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पण्णत्ता ॥

७. सव्वेवि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पण्णासं-पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

एगपण्णासइमो समवाओ

१. नवण्हं बंभचेराणं एकावण्णं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो[8] सभा सुधम्मा एकावण्णखंभसयसंनिविट्ठा[9] पण्णत्ता ॥

३. एवं चेव बलिस्सवि ॥,

४. सुप्पभे[10] णं बलदेवे एकावण्णं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[11] •मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे॰ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

५. दंसणावरणनामाणं—दोण्हं कम्माणं एकावण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

---

[1] ॰पडिमाए (ग)।

[2] छन्नउइतेण य (ख, ग); छन्नउइ (क्व); स्थानाङ्गे (७।११) 'एगेण य छण्णउएणं' पाठोस्ति।

[3] सं॰ पा॰—अहासुत्तं जाव आराहिया।

[4] एकूणपण्णत्ताए (क)।

[5] अणंतस्स (ग)।

[6] सव्वातोवि (ग)।

[7] तिमिस्सगुहं खंडप्पवाया॰ (क); तिमिस्सगुहं॰ (ख)।

[8] असुरा (क); असुर (ख, ग)।

[9] ॰सयणिविट्ठा (ग)।

[10] सुप्पहे (वृ)।

[11] सं॰ पा॰—बुद्धे जाव सव्वदुक्ख॰।

बावण्णइमो समवाओ

१. मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे[1] विवाए।
माणे मदे दप्पे थंभे अत्तुक्कोसे[2] गव्वे परपरिवाए उक्कोसे[3] अवक्कोसे[4] उन्नए उन्नामे।
माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किब्बिसिए अणायरणया गूहणया वंचणया[5] पलिकुंचणया सातिजोगे।
लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे॥

२. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते॥

३. एवं दओभासस्स णं केउकस्स [य ?], संखस्स जूयकस्स [य ?], दयसीमस्स[6] ईसरस्स [य ?]॥

४. नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरातियस्स[7]—एतासि णं तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ॥

५. सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

तेवण्णइमो समवाओ

१. देवकुरुउत्तरकुरियातो[8] णं जीवाओ तेवन्नं-तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ॥

२. महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं-तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एक्कूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ॥

३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना॥

४. संमुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता॥

---

[1] भडिणे (ख)।
[2] अत्तुक्कासे (क, ख, ग)।
[3] उक्कासे (क, ग)।
[4] अवकासे (क); अवक्कासे (ख); अचक्कासे (ग)।
[5] बंभणया (क);
[6] °सीमयस्स (क)।
[7] अंतरावियस्स (ग)।
[8] °उत्तरयातो (ग); °उत्तरकुरुयाओ (क्व०)।

चउवण्णइमो समवाओ

१. भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीए एगमेगाए उस्सप्पिणीए चउप्पण्णं-चउप्पण्णं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा—चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।।

२. अरहा णं अरिट्ठनेमी चउप्पण्णं राइंदियाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ।।

३. समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसेज्जाए[1] चउप्पण्णाइं वागरणाइं वागरित्था[2] ।।

४. अणंतस्स णं अरहओ 'चउप्पण्णं गणा'[3] चउप्पण्णं गणहरा होत्था ।।

पणपण्णइमो समवाओ

१. 'मल्ली णं अरहा'[4] पणपण्णं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता[5] सिद्धे बुद्धे[6] •मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं पणपण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

३. एवं चउद्दिसिंपि वेजयंत-जयंत-अपराजियंति ।।

४. समणे भगवं महावीरे अंतिमराइयंसि पणपण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं, पणपण्णं अज्झयणाणि पावफलविवागाणि वागरित्ता सिद्धे बुद्धे[7] •मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५. पढमबिइयासु—दोसु पुढवीसु पणपण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

६. दंसणावरणिज्जनामाउयाणं—तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।।

छप्पण्णइमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पण्णं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।।

२. विमलस्स णं अरहओ छप्पण्णं गणा छप्पण्णं गणहरा होत्था ।।

---

[1] °निसाते (ग) ।

[2] वागरित्ता (ग) ।

[3] × (क, ग) ।

[4] मल्लिस्स णं अरहओ (ग) ।

[5] पालित्ता (ग) ।

[6,7] सं० पा०—बुद्धे आव प्पहीणे ।

सत्तावण्णइमो समवाओ

१. तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावण्णं अज्झयणा[1] पण्णत्ता, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे ॥

२. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

३. एवं दओभासस्स [णं ?] केउयस्स य, संखस्स[2] जूयकस्स य दयसीमस्स[3] ईसरस्स य ॥

४. मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावण्णं मणपज्जवनाणिसया होत्था ॥

५. महाहिमवंतरूप्पीणं वासधरपव्वयाणं जीवाणं धणुपट्ठा सत्तावण्णं-सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥

अट्ठावण्णइमो समवाओ

१. पढमदोच्चपंचमासु—तिसु पुढवीसु अट्ठावण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२. नाणावरणिज्जस्स वेयणिज्जस्स[4] आउयनामअंतराइयस्स[5] य—एयासि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

३. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ[6] वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं अट्ठावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४. एवं[7] °दओभासस्स णं केउकस्स [य ?], संखस्स जूयकस्स [य ?], दयसीमस्स ईसरस्स [य ?]° ॥

एगूणसट्ठिमो समवाओ

१. चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उदू एगूणसट्ठिं राइंदियाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥

२. संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता[8] मुंडे[9] °भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए[10] ॥

३. मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥

---

[1] अज्झीणे (क)।

[2] संखस्स य (ख, ग)।

[3] दयसीमयस्स (क)।

[4] वेयणिय (क, ख)।

[5] आउनाम° (ख)।

[6] चरमंताओ (क)।

[7] सं० पा०—एवं चउदिसिंपि नेयव्वं।

[8] आगारमज्झे° (क, ग); °मज्झे° (ख)।

[9] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए।

[10] पव्वतित्ति (क)।

सट्ठिमो समवाओ

१. एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए-सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाएइ ॥

२. लवणस्स णं समुद्दस्स सट्ठिं नागसाहस्सीओ[1] अग्गोदयं धारेंति ॥

३. विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

४. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ[2] पण्णत्ताओ ॥

५. बंभस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

६. सोहम्मीसाणेसु—दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

एगसट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिदुमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठिं उदुमासा पण्णत्ता ॥

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

३. चंदमंडले णं एगसट्ठिविभागविभाइए[3] समंसे पण्णत्ते ॥

४. एवं सूरस्सवि ॥

बावट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरिए[4] णं जुगे बावट्ठिं पुण्णिमाओ बावट्ठिं अमावसाओ पण्णत्ताओ ॥

२. वासुपुज्जस्स णं अरहओ बावट्ठिं गणा बावट्ठिं गणहरा होत्था ॥

३. सुक्कपक्खस्स णं चंदे बावट्ठिं भागे दिवसे-दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे-दिवसे परिहायइ ॥

४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए[5] एगमेगाए दिसाए बावट्ठिं-बावट्ठिं विमाणा पण्णत्ता ॥

५. सव्वे वेमाणियाणं बावट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पण्णत्ता ॥

तेवट्ठिमो समवाओ

१. उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झावसित्ता[6] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

---

[1] °सहस्साइं (क); °सहस्साओ (ख)।

[2] °सहस्सीओ (क); °सहसाओ (ग)।

[3] °विभागहाइएविभइए (क)।

[4] °सवत्सरि (क)।

[5] पढमावलिया (वृपा)।

[6] °मज्झे° (ख); महारायमज्झा° (ग); महारायमज्झे° (क्व)।

२. हरिवासरम्मयवासेसु[1] मणुस्सा तेवट्ठिए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति ।।

३. निसेहे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता ।।

४. एवं नीलवंतेवि ।।

चउसट्ठिमो समवाओ

१. अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं[2] °अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवइ ।।

२. चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

३. चमरस्स णं रण्णो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

४. सव्वेवि णं दधिमुहा पव्वया पल्ला-संठाण-संठिया सव्वत्थ समा 'दस जोयणसहस्साइं'[3] 'विक्खंभेणं, उस्सेहेणं'[4] चउसट्ठिं-चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं पण्णत्ता ।।

५. सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य—तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

६. सव्वस्सवि य णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते ।।

पणसट्ठिमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पण्णत्ता ।।

२. थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झावसित्ता[5] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।

३. सोहम्मवडेंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं-पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता ।।

छावट्ठिमो समवाओ

१. दाहिणड्ढमणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ।।

---

[1] हरिवरस्स° (क, ख); हरिवरस° (ग) ।

[2] सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

[3] × (क, ख, ग) ।

[4] विक्खंभुस्सेहेणं (क, ख, ग); क्वचित्तु 'विक्खंभुस्सेहेणं' ति पाठस्तत्र तृतीयैकवचनलोपदर्शनाद्विष्कम्भेनेति (वृ) ।

[5] °मज्झे° (क, ख, ग) ।

२. उत्तरड्ढमणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ॥

३. सेज्जंसस्स णं अरहओ छावट्ठिं गणा छावट्ठिं गणहरा होत्था ॥

४. आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिईं पण्णत्ता ॥

सत्तसट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा पण्णत्ता ॥

२. हेमवतेरण्णवतियाओ णं बाहाओ सत्तसट्ठिं-सत्तसट्ठिं जोयणसयाइं पणपण्णाइं तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ ॥

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ 'गोयमस्स णं'[1] दीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४. सव्वेसिंपि णं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तसट्ठिं 'भागं भइए'[2] समंसे पण्णत्ते ॥

अट्ठसट्ठिमो समवाओ

१. धायइसंडे णं दीवे अट्ठसट्ठिं चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ ॥

२. धायइसंडे णं दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्संति वा ॥

३. एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा ॥

४. पुक्खरवरदीवड्ढे णं अट्ठसट्ठिं °[3]चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ ॥

५. पुक्खरवरदीवड्ढे णं उक्कोसपए अट्ठसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्संति वा ॥

६. एवं चक्कवट्टी बलदेवा° वासुदेवा ॥

७. विमलस्स णं अरहओ अट्ठसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥

---

[1] गोयम (क, ख); यद्यपि सूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्दो न दृश्यते तथाप्यसौ दृश्यः, जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचन्द्ररविद्वीपान् विना द्वीपान्तरस्याश्रयमाणत्वादिति ।

[2] भाग भयते (ग) ।

[3] सं० पा०—विजया एवं चेव जाव वासुदेवा ।

एगूणसत्तरिमो समवाओ

१. समयखेत्ते णं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा— पणतीसं वासा, तीसं वासहरा, चत्तारि उसुयारा ।।

२. मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

३. मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं[1] एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीओ[2] पण्णत्ताओ ।।

सत्तरिमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीतिक्कंते सत्तरिए राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ[3] ।।

२. पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुण्णाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[4] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

३. वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

४. मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेगे पण्णत्ते ।।

५. माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

एक्कसत्तरिमो समवाओ

१. चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए[5] राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ ।।

२. ‘वीरियप्पवायस्स णं’[6] एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता ।।

३. अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता[7] मुंडे भवित्ता[8] °णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए ।।

४. सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व[9]°सयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए ।।

---

[1] कम्मपगडीणं (ख, ग) ।

[2] कम्मप्पगडीतो (क) ।

[3] पज्जोसविए (क, ख, ग) ।

[4] सं० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

[5] एक्कसत्तरी (क); एक्कसत्तरीतेहिं (ग) ।

[6] वीरियपुव्वस्स णं पुव्वस्स (क,ख); वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स (क्व) ।

[7] °मज्झे° (क, ख, ग) ।

[8] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए ।

[9] सं० पा०—एवं सगरेवि राया चाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए ।

बावत्तरिमो समवाओ

१. बावत्तरिं सुवण्णकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

२. लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारंति ।।

३. समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[1] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

४. थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[2] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५. अब्भंतरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा बावत्तरिं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ।।

६. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिं पुरवरसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।।

७. बावत्तरिं कलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. नट्टं ५. गीयं ६. वाइयं ७. सरगयं ८. पुक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं ११. जणवायं[3] १२. पोरेकव्वं १३. अट्ठावयं १४. दगमट्टियं १५. 'अण्णविहिं १६. पाणविहिं'[4] १७. लेणविहिं[5] १८. सयणविहिं १९. अज्जं[6] २०. पहेलियं २१. मागहियं २२. गाहं २३. सिलोगं २४. गंधजुत्तिं २५. मधुसित्थं २६. आभरणविहिं २७. तरुणीपडिकम्मं २८. इत्थीलक्खणं २९. पुरिसलक्खणं ३०. हयलक्खणं ३१. गयलक्खणं ३२. गोणलक्खणं ३३. कुक्कुडलक्खणं ३४. मिंढयलक्खणं ३५. चक्कलक्खणं ३६. छत्तलक्खणं ३७. दंडलक्खणं ३८. असिलक्खणं ३९. मणिलक्खणं ४०. काकणिलक्खणं ४१. चम्मलक्खणं ४२. चंदचरियं[7] ४३. सूरचरियं ४४. राहुचरियं ४५. गहचरियं ४६. 'सोभाकरं ४७. दोभाकरं'[8] ४८. विज्जागयं ४९. मंतगयं ५०. रहस्सगयं ५१. 'सभासं ५२. चारं'[9] ५३. पडिचारं ५४. वूहं ५५. पडिवूहं ५६. खंधावारमाणं[10] ५७. नगरमाणं ५८. वत्थुमाणं ५९. खंधावारनिवेसं ६०. निगरनिवेसं ६१. वत्थुनिवेसं ६२. ईसत्थं ६३. छरुप्पगयं[11] ६४. आससिक्खं ६५. हत्थिसिक्खं ६६. धणुव्वेयं ६७. 'हिरण्णपागं सुवण्णपागं'[12] मणिपागं धातुपागं ६८. बाहुजुद्धं दंडजुद्धं मुट्ठिजुद्धं अट्ठिजुद्धं

---

[1] सं० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

[2] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[3] जाणवयं (क); जाणवायं (ख, ग) ।

[4] अन्नविधं पाणविधं (क) ।

[5] लोणविहिं (क); लोहविहिं (ग); वत्थविहिं (क्व) ।

[6] पज्जं (ग) ।

[7] चंदलक्खणं (ख, ग) ।

[8] सोभाग° ४७. दोभाग° (क्व) ।

[9] सभावं ५२. चरं (क); सभावं ५२. चारं (ख); सभास्ना ५२. चारं (ग) ।

[10] °मामणं (ग) ।

[11] छरुप्पवायं (क्व) ।

[12] हिरण्णवयं सुवण्णवयं (क); हिरण्णवाय सुवण्णवायं (ख, ग) ।

जुद्धं निजुद्धं जुद्धातिजुद्धं ६९. सुतखेड्डं 'नालियाखेड्डं वट्टखेड्डं'[1] ७०. पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं[2] पत्तगछेज्जं ७१. सजीवं[3] निज्जीवं ७२. सउणरुयं ।

८. सम्मुच्छिमखयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।।

तेवत्तरिमो समवाओ

१. हरिवासरम्मयवासियाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं-तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं नव य एक्कुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एकूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ताओ ।।

२. विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[4] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

चोवत्तरिमो समवाओ

१. थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[5] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

२. निसहाओ णं वासहरपव्वयाओ तिगिंछिद्दहाओ[6] सीतोतामहानदी चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहुत्ति पवहित्ता वतिरामतियाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पण्णासजोयणविक्खंभाए[7] वइरतले कुंडे महया[8] घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महया सद्देणं पवडइ ।

३. एवं सीतावि दक्खिणहुत्ति[9] भाणियव्वा ।।

४. चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा[10] पण्णत्ता ।।

पण्णत्तरिमो समवाओ

१. सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ[11] पण्णत्तरिं जिणसया होत्था ।।

२. सीतले णं अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता[12] मुंडे भवित्ता[13] °णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए ।।

---

[1] नालियाखेड्डं वट्टखेड्डं धम्मखेड्डं चम्मखेड्डं (ख); वट्टखेड्डं नालियाखेड्डं धम्मखेड्डं (ग) ।

[2] कणंगच्छेज्जं (ग) ।

[3] अज्जीवं (ख); अजीवं (ग)। सजीवं (क्व) ।

[4] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[5] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[6] °द्दहाओ णं दहाओ (ख, ग) ।

[7] पण्णासं जोयण° (ख); पण्णासं जोयणं° (ग) ।

[8] 'दुहओ' त्ति क्वचित् दृश्यते तदपपाठः (वृ) ।

[9] दक्खिणाहिमुही (क्व) ।

[10] नरया° (ग) ।

[11] अरहतो पण्णत्तरिं जिणा (ख, ग) ।

[12] °मज्झे° (क, ख, ग) ।

[13] सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए ।

३. संती णं अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

छावत्तरिमो समवाओ

१. छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२. एवं—

संगहणी-गाहा

दीवदिसाउदहीणं, विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं ।
छण्हंपि जुगलयाणं, छावत्तरिमो[2] सयसहस्सा ॥१॥

सत्तत्तरिमो समवाओ

१. भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता 'महारायाभिसेयं संपत्ते'[3] ॥

२. अंगवंसाओ णं सत्तत्तरिं रायाणो मुंडे[4] °भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइया ॥

३. गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्तत्तरिं देवसहस्सा परिवारा पण्णत्ता ॥

४. एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवे[5] लवग्गेणं पण्णत्ते ॥

अट्ठसत्तरिमो समवाओ

१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणे महाराया अट्ठसत्तरीए सुवण्णकुमार-दीवकुमारावाससयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महारायत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

२. थेरे णं अंकपिए अट्ठसत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[6] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

३. उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूणचत्तालीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चारं चरइ ॥

४. एवं दक्खिणायणनियट्टेवि ॥

---

[1] अगारमज्झे° (क); अगारमज्झा° (ग)।

[2] छावत्तरिं (ख)।

[3] °भिसियपत्ते (क)।

[4] सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइया।

[5] लवा (ग)।

[6] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे।

एगूणासीइमो समवाओ

१. वलयामुहस्स णं पायालस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

२. एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि ।।

३. छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

४. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस य, एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

असीइइमो समवाओ

१. सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

२. तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

३. अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

४. तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं वाससयसहस्साइं महाराया होत्था ।।

५. आउबहुले णं कंडे असीइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

६. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो असीइं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

७. जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेई ।।

एक्कासीइइमो समवाओ

१. नवनवमिया[1] णं भिक्खुपडिमा एक्कासीइ राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं[2] °अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवति ।।

२. कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था ।।

३. विआहपण्णत्तीए[3] एकासीतिं महाजुम्मसया पण्णत्ता ।।

बासीतिइमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे दीवे बासीतं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ, तं जहा—निक्खममाणे 'य पविसमाणे'[4] य ।।

२. समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए ।।

---

[1] णवणम्मया (क) ।

[2] सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

[3] विवाह° (ग) ।

[4] पविसतिमाणे (क) ।

३. महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं बासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४. एवं रुप्पिस्सवि ॥

तेयासीइइमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे बासीइराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीइमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए ॥

२. सीयलस्स णं अरहओ तेसीति गणा तेसीति गणहरा होत्था ॥

३. थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

४. उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता[2] मुंडे भवित्ता णं[3] °अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए ॥

५. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ॥

चउरासीइइमो समवाओ

१. चउरासीइं निरयावाससयसहस्साइं पण्णत्ता ॥

२. उसभे णं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[4] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

३. एवं भरहो बाहुबली 'बंभी सुंदरी'[5] ॥

४. सेज्जंसे णं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[6] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

५. तिविट्ठू णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं[7] पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

६. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो चउरासीई सामाणियसाहिस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

७. सव्वेवि णं बाहिरया[8] मंदरा चउरासीइं-चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

८. सव्वेवि णं अंजणगपव्वया चउरासीइं-चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

---

[1] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[2] °मज्झे° (क) ।

[3] सं० पा०—भवित्ता णं जाव पव्वइए ।

[4] सं० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

[5] बंभिसुंदरि (क, ख, ग) ।

[6] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[7] परमाउं (क, ग) ।

[8] बाहिरिया (ग) ।

९. हरिवासरम्मयवासियाणं जीवाणं धणुपट्ठा[1] चउरासीइं-चउरासीइं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।।

१०. पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं चोरासीइं जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

११. वियाहपण्णत्तीए[2] णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं पण्णत्ता ।।

१२. चोरासीइं नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

१३. चोरासीइं पइण्णगसहस्सा पण्णत्ता ।।

१४. चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ।।

१५. पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पण्णत्ते ।।

१६. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा चउरासीइं गणहरा होत्था ।।

१७. उसभस्स णं कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीइं समणसाहस्सीओ होत्था ।।

१८. चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं ।।

पंचासीइइमो समवाओ

१. आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

२. धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ।।

३. रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ।।

४. नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं पंचासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

छलसीइइमो समवाओ

१. सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइं गणा छलसीइं गणहरा होत्था ।।

२. सुपासस्स णं अरहओ छलसीइं वाइसया होत्था ।।

३. दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं छलसीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

सत्तासीइइमो समवाओ

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स

---

[1] धणुपिट्ठा (क्व)।

[2] विवाह° (ग)।

पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, [1]°एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते° ॥

४. मंदरस्स[2] °णं पव्वयस्स° उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

५. छण्हं कम्मपगडीओ आतिम-उवरिल्ल-वज्जाणं सत्तासीइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

६. महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

७. एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥

अट्ठासीइइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइं-अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ॥

२. दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तं जहा—१. उज्जुसुयं २. परिणयापरिणयं ३. [3]°बहुभंगियं ४. विजयचरियं ५. अणंतरं ६. परंपरं ७. सामाणं ८. संजूहं ९. संभिण्णं १०. आहच्चायं ११. सोवत्थियं घंटं १२. नंदावत्तं १३. बहुलं १४. पुट्ठापुट्ठं १५. वियावत्तं १६. एवंभूयं १७. दुयावत्तं १८. वत्तमाणुप्पयं १९. समभिरूढं २०. सव्वओभद्दं २१. पण्णासं २२. दुप्पडिग्गहं ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगनइयाणि तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं° ॥

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

---

[1] सं० पा०—एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स पुरत्थिमिल्ले च ।

[2] सं० पा०—एवं चेव मंदरस्स ।

[3] सं० पा०—एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए ।

४. [1]°मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

५. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते° ॥

७. 'बाहिराओ णं'[2] उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे[3] चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ ॥

८. दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे[4] चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ॥

एगूणणउइइमो समवाओ

१. उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए वीइक्कंते[5] °समुज्जाए छिण्णजाइ-जरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२. समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए[6] °वीइक्कंते समुज्जाए छिण्णजाइ-जरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

३. हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणणउइं वाससयाइं महाराया होत्था ॥

४. संतिस्स णं अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासंपया होत्था ॥

णउइइमो समवाओ

१. सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

---

[1] सं० पा०—एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं ।

[2] × (क, ग) ।

[3] अयमाणे (क्व) ।

[4] अयमाणे (क्व) ।

[5] सं० पा०—वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । अत्र 'वीइक्कंते' इति विशेषणं पूर्वगतविशेषणेभ्योतिरिक्तमस्ति, तेनास्य पूर्तिर्जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (वक्षस्कार २) मनुसृत्य कृता समवायांगसूत्रस्य वृत्तिकृतास्य सूत्रस्य पूर्तिरेवं कृतास्ति—'जाव' त्तिकरणात् 'अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते' त्ति दृश्यम् ।

[6] सं० पा०—कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. अजियस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था ।।
३. [1]°संतिस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था° ।।
४. सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था ।।
५. सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं नउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

एक्काणउइइमो समवाओ

१. एक्काणउई परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ ।।
२. कालोए णं समुद्दे एक्काणउई जोयणसहस्साइं साहियाइं[2] परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।।
३. कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउई आहोहियसया होत्था ।।
४. आउय-गोय-वज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एक्काणउई उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।।

बाणउइइमो समवाओ

१. बाणउइं पडिमाओ पण्णत्ताओ ।।
२. थेरे णं इंदभूती बाणउइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ।।
३. मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।
४. एवं चउण्हंपि आवासपव्वयाणं ।।

तेणउइइमो समवाओ

१. चंदप्पहस्स णं अरहओ तेणउइं गणा तेणउइं गणहरा होत्था ।।
२. संतिस्स णं अरहओ तेणउइं चउद्दसपुव्विसया होत्था ।।
३. तेणउइं मंडलगते णं सूरिए अतिवट्टमाणे[4] निवट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेइ ।।

चउणउइइमो समवाओ

१. निसहनीलवंतियाओ णं जीवाओ चउणउइं-चउणउइं जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पण्णं जोयणसयं दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ ।।
२. अजियस्स णं अरहओ चउणउइं ओहिनाणिसया होत्था ।।

---

[1] सं० पा०—एवं संतिस्सवि ।
[2] साहितेणं (क) ।
[3] सं० पा०—बुद्धे···।
[4] अनियट्टमाणे (क) ।

पंचाणउइमा समवाओ

१. सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइं गणा पंचाणउइं गणहरा होत्था ।।

२. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरिमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं-पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायाला[1] पण्णत्ता, तं जहा—वलयामुहे केउए[2] जूवते[3] ईसरे ।।

३. लवणसमुद्दस्स उभओपासंपि पंचाणउइं-पंचाणउइं पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए[4] पण्णत्ताओ ।।

४. कुंथू णं अरहा पंचाणउइं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[5] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५. थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[6] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

छण्णउइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं-छण्णउइं गामकोडीओ होत्था ।।

२. वाउकुमाराणं छण्णउइं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

३. ववहारिए[7] णं दंडे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।।

४. [8]°ववहारिए णं धणू छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।।

५. ववहारिया णं नालिया छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।।

६. ववहारिए णं जुगे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।।

७. ववहारिए णं अक्खे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।।

८. ववहारिए णं मुसले छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं° ।।

९. अब्भंतराओ आतिमुहुत्ते छण्णउइ[9]-अंगुलछाए पण्णत्ते ।।

सत्ताणउइमो समवाओ

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स णं आवास-

---

[1] महापायालकलसा (क्व) ।

[2] केऊते (ग) ।

[3] जूयए (क्व) ।

[4] ववुस्सह° (क); वहुस्सेह° (ग) ।

[5] सं० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

[6] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[7] वावहारिए (क, ख) ।

[8] सं० पा०—एवं धणू नालिया जुगे अक्खं मुसले वि ।

[9] छण्णउइं (क, ख, ग) ।

पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्ताणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२. एवं चउदिसिंपि ॥

३. अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

४. हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइं वाससयाइं अगारमज्झावसित्ता[1] मुंडे भवित्ता णं अगाराओ[2] °अणगारिअं° पव्वइए ॥

अट्ठाणउइमो समवाओ

१. नंदणवणस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ पंडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

३. एवं चउदिसिंपि ॥

४. दाहिणभरहद्धस्स[3] णं धणुपट्ठे[4] अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते ॥

५. उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे एगूणपंचासतिमे[5] मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ॥

६. दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे एगूणपण्णासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ॥

७. रेवईपढमजेट्ठपज्जवसाणाणं[6] एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइं ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ ॥

णवणउइमो समवाओ

१. मंदरे णं पव्वए णवणउइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ॥

२. नंदणवणस्स णं पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

---

[1] अगारवासमज्झा° (क, ग)।

[2] सं० पा०—अगाराओ जाव पव्वइए।

[3] °भरहस्स (ख, ग); 'वेयड्ढस्स ण' मित्यादि य केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोऽपपाठः (वृ)।

[4] धणुपिट्ठे (क्व)।

[5] एगूणपन्नासतिमे (ग); 'एकतालीसइमे' इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोऽपपाठः (वृ)।

[6] °जेट्ठा° (क्व)।

३. [१]°नंदणवणस्स णं दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्ले° चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

४. पढमे[२] सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

५. दोच्चे सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साहियाइं[३] आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

६. तइए सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ वाणमंतर-भोमेज्ज-विहाराणं उवरिल्ले चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

सततमो समवाओ

१. दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं[४] °अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवइ ।।

२. सयभिसयानक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते ।।

३. सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

४. पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[५] °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५. थेरे णं अज्जसुहम्मे, [६]°एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ।।

६. सव्वेवि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

७. सव्वेवि णं चुल्लहिमवंत-सिहरी-वासहरपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

८. सव्वेवि णं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं, एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

---

[१] सं० पा०—एवं दक्खिणिल्लाओ उत्तरे ।

[२] पढम (वृ) ।

[३] सातिरेगाइं (क) ।

[४] सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

[५] सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

[६] सं० पा०—एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे ।

पइण्णगसमवाओ

१. चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

२. आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं पण्णत्तं ।।

३. एवं अच्चुएवि ।।

४. सुपासे णं अरहा दो धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

५. सव्वेवि णं महाहिमवंत-रुप्पी-वासहरपव्वया दो-दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो-दो गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

६. जंबुद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वयसया पण्णत्ता ।।

७. पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

८. असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

९. सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

१०. अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमार[वास ?]मज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता [अगाराओ अणगारिअं ?] पव्वइए ।।

११. वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

१२. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिण्णि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था ।।

१३. पंचधणुसइयस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता ।।

१४. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं संपया होत्था ।।

१५. अभिनंदणे णं अरहा अद्धुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

१६. संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

१७. सव्वेवि णं णिसढ-नीलवंता वासहरपव्वया चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

१८. सव्वेवि[1] णं वक्खारपव्वया णिसढ-नीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

१९. आणय-पाणएसु—दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता ।।

२०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।।

२१. अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

२२. सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

२३. सव्वेवि णं वक्खारपव्वया सीया-सीतोयाओ महानईओ मंदरं वा पव्वयं पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच-पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

२४. सव्वेवि णं वासहरकूडा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

२५. उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

२६. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।।

२७. सोमणस-गंधमादण-विज्जुप्पभ-मालवंता णं वक्खारपव्वया णं मंदरपव्वयंतेणं[2] पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच-पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।।

२८. सव्वेवि णं वक्खारपव्वयकूडा हरि-हरिस्सहकूडवज्जा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

२९. सव्वेवि णं नंदणकूडा बलकूडवज्जा पच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

३०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

३१. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा 'छ-छ'[3] जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

३२. चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहर-पव्वयस्स समे धरणितले, एस णं छ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

३३. एवं सिहरीकूडस्सवि ।।

३४. पासस्स णं अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआणं उक्कोसिया[4] वाइसंपया होत्था ।।

---

[1] सव्वेवि य (क, ग)।

[2] मंदिरेणं (क)।

[3] छ (क, ग)।

[4] उक्कोसं (क); उक्कोसा (ग)।

३५. अभिचंदे णं कुलगरे 'छ धणुसयाइं'[1] उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३६. वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं[2] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

३७. बंभ-लंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त-सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

३८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था ॥

३९. समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था ॥

४०. अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

४१. महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ महाहिमवंतस्स वासहर-पव्वयस्स समे धरणितले, एस णं सत्त जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४२. एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥

४३. महासुक्क-सहस्सारेसु—दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ-[अट्ठ ?] जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

४४. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतर-भोमेज्ज-विहारा पण्णत्ता ॥

४५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइ-कल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिआ अणुत्तरोववाइयसंपया[4] होत्था ॥

४६. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चारं चरति ॥

४७. अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥

४८. आणय-पाणय-आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव-नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

४९. निसहकूडस्स[5] णं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।.

५०. एवं नीलवंतकूडस्सवि ॥

५१. विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

५२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुपरिमे ताराखवे चारं चरइ ॥

---

[1] षट् धनुः शतानि पंचाशदधिकानि (वृ) ।

[2] × (क, ग) ।

[3] सं० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

[4] अणुत्तरोववाइयाणं संपया (ग) ।

[5] निसभ° (क, ख, ग) ।

५३. निसढस्स णं वासधरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

५४. एवं नीलवंतस्सवि ।।

५५. सव्वेवि णं गेवेज्जविमाणा दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

५६. सव्वेवि णं जमगपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस-दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

५७. एवं चित्त-विचित्तकूडा वि भाणियव्वा ।।

५८. सव्वेवि णं[1] वट्टवेयड्ढपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया, मूले दस-दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

५९. सव्वेवि णं हरि-हरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा[2] दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।।

६०. एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा ।।

६१. अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

६२. पासस्स णं अरहओ दस सयाइं जिणाणं होत्था ।।

६३. पासस्स णं अरहओ दस अंतेवासिसयाइं कालगयाइं[4] °वीइक्कंताइं समुज्जयाइं छिण्णजाइजरामरणबंधणाइं सिद्धाइं बुद्धाइं मुत्ताइं अंतगडाइं परिणिव्वुयाइं° सव्वदुक्खप्पहीणाइं ।।

६४. पउमद्दह-पुंडरीयद्दहा य दस-दस जोयणसयाइं आयामेणं पण्णत्ता ।।

६५. अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

६६. पासस्स णं अरहओ इक्कारससयाइं वेउव्वियाणं होत्था ।।

६७. महापउम-महापुंडरीयदहाणं दो-दो जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।।

६८. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरकंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ लोहियक्खस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं तिण्णि जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

६९. 'तिगिच्छ-केसरिदहा णं'[5] चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।।

---

१. य णं (ग)।

२. वक्खारपव्वयकूड° (क)।

३. सं० पा०— बुद्धे जाव सव्वदुक्ख°।

४. सं० पा०—कालगयाइं जाव सव्वदुक्ख°।

५. °द्दहा णं दहा (क,ग); दहा णं दहा (ख)।

७०. धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए[1] रुयगनाभीओ[2] चउदिसिं[3] पंच-पंच जोयणसहस्साइं अबाहाए मंदरपव्वए पण्णत्ते ।।

७१. सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।।

७२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं सत्त जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

७३. हरिवास-रम्मया णं वासा अट्ठ-[अट्ठ ?] जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेण पण्णत्ता ।।

७४. दाहिणड्ढभरहस्स ण जीवा पाईणपडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।।

७५. मंदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७६. जंबूदीवेणं दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७७. लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७८. पासस्स णं अरहओ तिण्णि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया साविया-संपया होत्था ।।

७९. धायइसंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

८०. लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं पंच जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

८१. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं रायमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।

८२. जंबूदीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ धायसंडचक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, [एस णं ?] सत्त जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्तो ।।

८३. माहिंदे णं कप्पे अट्ठ विमाणावाससयसहस्साइं पण्णत्ताइं ।।

८४ अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणिसहस्साइं[4] होत्था ।।

८५. पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

८६. समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं

---

[1] °भागाओ उ (क)।

[2] रुवगणाभीतो (क)।

[3] °द्दिसं (क); °द्दिसिं (ग)।

[4] सतसहस्साइं (ग); अमितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानिसहस्राणि, अतिरेकश्चत्वारि शतानि, इंद च सहस्रस्थानकमपि लक्षस्थानकाधिकारे यदधीतं तत् सहस्रशब्दसाधर्म्याद्विचित्रत्वाद्वा सूत्रगतेर्लेखकदोषाद्वेति (वृ)।

वासकोडिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।।

८७. उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवम-कोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

दुवालसंग-पदं

८८. दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।।

८९. से किं तं आयारे ?

आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-ट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण - जोगजुंजण-भासा-समिति-गुत्ती-सेज्जोवहि- भत्तपाण - उग्गम-उप्पायणएसणाविसोहि - सुद्धासुद्धग्गहण - वय - णियम-तवोवहाण-सुप्पसत्थमाहिज्जइ। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे ।

आयारस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो सुयक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकाला पंचासीइं समुद्देसणकाला अट्ठारस पयसहस्साइं पदग्गेणं[1], संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया[2] एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति । सेत्तं आयारे।।

९०. से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति 'लोगे सूइज्जति अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति'[3] ।

सूयगडे णं जीवाजीव-पुण्ण-पावासव-संवर-निज्जर-बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति, समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमय-मोह-मोह-मइमोहियाणं संदेहजाय-सहजबुद्धि-परिणाम-संसइयाणं पावकर-मइलमइ-गुण-विसोहणत्थं

---

[1] पयग्गेणं प° (ग) प्रायः सर्वत्र ।

[2] आवा (क); आए (ग); इदं च सूत्रं पुस्तकेषु न दृष्टं, नन्द्यां तु दृश्यते इतीह व्याख्यातमिति (वृ) ।

[3] लोगो° अलोगो° लोगालोगो° (ग) ।

'आसीतस्स किरियावादिसतस्स'[1] चउरासीए अकिरियवाईणं[2], सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं—तिण्हं तेसट्ठाणं[3] अण्णदिट्ठियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति। णाणादिट्ठंतवयण-णिस्सारं सुट्ठु दरिसयंता विविहवित्थराणुगम-परमसब्भाव-गुण-विसिट्ठा मोक्खपहोयारगा उदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूता सोवाणा चेव सिद्धिसुगइघरुत्तमस्स णिक्खोभ-निप्पकंपा सुत्तत्था।

सूयगडस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए दोच्चे अंगे दो सुयक्खंधा तेवीसं अज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला तेत्तीसं समुद्देसणकाला छत्तीसं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा[4] °अणंता गमा अणंता पज्जवा° परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति[5] °पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति° उवदंसिज्जंति।

'से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया'[6] एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[7] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति°। सेत्तं सूयगडे॥

९१. से किं तं ठाणे?

ठाणे णं ससमया ठाविज्जंति परसमया ठाविज्जंति ससमयपरसमया ठाविज्जंति जीवा ठाविज्जंति अजीवा ठाविज्जंति जीवाजीवा ठाविज्जंति लोगे ठाविज्जति अलोगे ठाविज्जति लोगालोगे ठाविज्जति।

ठाणे णं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव पयत्थाणं—

संगहणी-गाहा

सेला सलिला य समुद्द-सूरभवणविमाण[8] आगर[9] णदीओ।
णिहओ[10] पुरिसज्जाया[11], सरा य गोत्ता य जोइसंचाला॥१॥

---

[1] असीति सयस्स किरियावादिणं (ग)।
[2] अकिरियादीणं (ग)।
[3] तेअट्ठाणं (ग)।
[4] सं० पा०—अक्खरा तं चेव जाव परित्ता।
[5] सं० पा०—आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति।
[6] से एवं णाते एवं विण्णाते (क, ग)।
[7] सं० पा०—आघविज्जति।
[8] सूरा भवन विमाणा (क)।
[9] आगरा (ख)।
[10] णिवहो (क); णिधओ (ग)।
[11] पुस्सजोय (वृपा)।

एक्कविहवत्तव्वयं दुविहवत्तव्वयं जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण 'य लोगट्ठाइणं च'[1] परूवणया आघविज्जति ।

ठाणस्स णं परित्ता वायणा[2] °संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा° संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा एक्कवीसं उद्देसणकाला एक्कवीसं समुद्देसणकाला बावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा[3] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[4] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° ।

सेत्तं ठाणे ॥

९२. से किं तं समवाए[5] ?

समवाए णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति लोगे सूइज्जति अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति ।

समवाए णं एकादियाणं एगत्थाणं एगुत्तरियपरिवुड्ढीय[6], दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ[7], ठाणगसयस्स बारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेणं समायारे आहिज्जति, तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया वित्थरेण अवरे वि य बहुविहा विसेसा नरग - तिरिय-मणुय - सुरगणाणं अहारुस्सास - लेस-आवास-संख-आययप्पमाण उववाय-चयण-ओगाहणोहि-वेयण-विहाण-उवओग-जोग-इंदिय-कसाय[8], विविहा य जीवजोणी विक्खंभुस्सेह-परिरय-प्पमाणं विधिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं कुलगर-तित्थगर-गणहराणं समत्तभरहाहिवाण चक्कीणं चेव चक्कहर-हलहराण य वासाण य निग्गमा य समाए ।

---

[1] लोगट्ठाइं च णं (क, ख, ग); प्रतिषु 'लोगट्ठाइं च णं' पाठो लभ्यते । किन्तु वृत्त्यनुसारेण 'लोगट्ठाइणं च' एवं पाठो युज्यते । लिपिदोषेण वर्णविपर्ययो जात इति प्रतीयते ।

[2] सं० पा०—वायणा जाव संखेज्जा ।

[3] सं० पा०—अक्खरा जाव चरण-करण ।

[4] सं० पा०—आघविज्जति ।

[5] समाते (ख, वृ) ।

[6] °परिवुड्ढिय (ख, वृ) ।

[7] समणुवाइज्जइ (क) ।

[8] कषायाः-क्रोधादयः आहारश्चोच्छ्वासश्चेत्यादिर्द्वन्द्वस्ततः कषायशब्दात्प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः (वृ) ।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेणं अत्था समासिज्जंति[1] ।

समवायस्स णं परित्ता वायणा[2] °संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ° ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खंधे एगे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले पदसयसहस्से[3] पदग्गेणं, 'संखेज्जाणि अक्खराणि'[4] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° । सेत्तं समवाए ॥

९३. से किं तं वियाहे ?

वियाहे णं ससमया वियाहिज्जंति परसमया वियाहिज्जंति ससमयपरसमया वियाहिज्जंति जीवा वियाहिज्जंति अजीवा वियाहिज्जंति जीवाजीवा वियाहिज्जंति लोगे वियाहिज्जइ अलोगे वियाहिज्जइ लोगालोगे वियाहिज्जइ ।

वियाहे णं नाणाविह-सुर-नरिंद-रायरिसि-विविहसंसइय-पुच्छियाणं जिणेणं[5] वित्थरेण[6] भासियाणं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पदेस-परिणाम-जहत्थिभाव-अणुगम-निक्खेव-णय-प्पमाण-सुनिउणोवक्कम[7]-विविहप्पगार[8]-पागड-पयंसियाणं[9] लोगालोग-पगासियाणं संसारसमुद्द-रुंद-उत्तरण-समत्थाणं सुरपति-संपूजियाणं भविय-जणपय-हिययाभिनंदियाणं तमरय-'विद्धंसणाणं सुदिट्ठ'[10]-'दीवभूय-ईहा-मतिबुद्धि-वद्धणाणं'[11] छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणा[12] सुयत्थ-बहुविहप्पगारा सीसहियत्थाय गुणहत्था ।

वियाहस्स णं परित्ता वायणा[13] °संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

---

[1] समाहिज्जंति (क, ग) ।

[2] सं० पा०—वायणा जाव से णं ।

[3] पदसहस्से (ग) ।

[4] पूर्ववर्तित्रिषु सूत्रेषु 'संखेज्जा अक्खरा' इति विद्यते । सं० पा०—अक्खराणि जाव सेत्तं ।

[5] जिणाण (क) ।

[6] वित्थार (क); वित्थर (ख) ।

[7] सुणिउणउवक्कम (क) ।

[8] °प्पगारा (क) ।

[9] वयंसियाणं (क) ।

[10] विद्धंसणाणसुदिट्ठ° (वृ); विद्धंसणाणं सुदिट्ठ° (वृपा) ।

[11] दीवभूयाणं (वृपा) ।

[12] दंसणाओ (ग) ।

[13] सं० पा०—वायणा जाव अंगट्ठयाए ।

से णं॰ अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसते दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा[1] ॰अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा॰ सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति[2] ॰पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया॰ एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[3] ॰पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति॰।

सेत्तं वियाहे ॥

९४. से किं तं 'नाया-धम्मकहाओ'[4] ?

नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति[5] ॰पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति॰।

नाया-धम्मकहासु णं 'पव्वइयाणं विणयकरण-जिणसामि-सासणवरे'[6] संजम-पइण्ण[7]-पालण[8]-धिइ-मइ - ववसाय - दुल्लभाणं[9], तव-नियम-तवोवहाण-रण[10]-दुद्धरभर[11]-'भग्गा[12]-णिसहा'[13]-णिसट्ठाणं[14], घोरपरीसह-पराजिया[15]-ऽसह-पारद्ध-रुद्ध-सिद्धालयमग्ग - निग्गयाणं, 'विसयसुह - तुच्छ'[16]-आसावस-दोस-मुच्छियाणं विराहिय-चरित्त-नाण-दंसण-जइगुण-विविह-प्पगार-निस्सार-सुण्णयाणं संसार-अपार-दुक्ख-दुग्गइ-भव-विविहपरंपरा-पवंचा[17]।

---

१. सं॰ पा॰—अणंता गमा जाव सासया।

२. सं॰ पा॰—आघविज्जंति जाव एवं।

३. सं॰ पा॰—आघविज्जति।

४. णया॰ (क); प्रायः सर्वत्र। नाय॰ (ग)।

५. सं॰ पा॰—आघविज्जंति जाव नाया॰।

६. समणाणं विनयकरणजिणसासणंमि पवरे (वृपा)।

७. ॰पतिण्णा (ग)।

८. पायाल (वृ); पालण (वृपा)।

९. दुब्बलाणं (क, ख, वृपा)।

१०. चरण (ग)।

११. दुद्धारभर (ख, ग)।

१२. भग्गाणं (क)।

१३. इह च प्राकृतत्वेन ककारलोपसन्धिकरणाभ्यां भग्ना इत्यादौ दीर्घत्वमवसेयम् (वृ)।

१४. निविट्ठाणं (वृपा)।

१५. पराजियाणं (वृपा)।

१६. विसयसुहमहेच्छतुच्छ (वृपा)।

१७. पवंधा (क)।

धीराण य जिय-परिसह-कसाय-सेण्ण-धिइ-धणिय-संजम-उच्छाह-निच्छियाणं आराहिय-नाण-दंसण-चरित्त-जोग-निस्सल्ल-सुद्ध-सिद्धालयमग्ग-मभिमुहाणं सुरभवण-विमाण-सुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य काल-क्कम-च्चुयाणं जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया।

चलियाण य सदेव-माणुस्स-धीरकरण-करणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस-दरिसणाणि।

दिट्ठंते पच्चए य सोऊण लोगमुणिणो 'जह य ठिया'[1] सासणम्मि जर-मरण-नासणकरे।

आराहिय-संजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेंति जह सासयं सिवं सव्वदुक्ख-मोक्खं।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य।

नाया-धम्मकहासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[2] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधा एगूणतीसं[3] अज्झयणा, 'ते समासओ दुविहा पणत्ता, तं जहा—चरिता य कप्पिया य'[4]।

दस धम्मकहाणं वग्गा। तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच अक्खाइया-सयाइं। एगमेगाए अक्खाइयाए पंच-पंच उवक्खाइयासयाइं। एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं—एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खाइयकोडीओ भवंतीति मक्खायाओ। एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[5] पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा[6] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं° चरण-करण-परूवणया आघ-

---

[1] जह ठिय (क); जह य ठिय (ग)।

[2] सं० पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ।

[3] एकूणवीसं (क); एक्कूणवीसं (ग); यत्र 'नातज्झयणा' तत्र 'एगूणवीसं' इति पाठः सम्यक् स्यात्। किन्तु यत्र केवलं 'अज्झयणा' इति तत्र 'एगूणतीसं' पाठो युज्यते। प्रयुक्त 'ग' प्रतिगतवृत्तौ 'एक्कूणतीसमज्झयण' त्ति पाठांशो लभ्यते। अध्ययनानां सामान्यनिरूपणे असौ सम्यक् प्रतिभाति।

[4] असौ पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

[5] पयसहस्साइं (ख)।

[6] सं० पा०—अक्खरा जाव चरण।

विज्जति[१] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° । सेत्तं णाया-धम्मकहाओ ॥

९५. से किं तं उवासगदसाओ ?

उवासगदसासु णं उवासयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, उवासयाणं च सीलव्वय-वेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं[२] पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाई पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर-धम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगम[३]-सम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिइविसेसा य बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहण-पालणा उवसग्गाहियासणा णिरुवसग्गा य, तवा य विचित्ता[४], सीलव्वय-'वेरमण-गुण'[५]-पच्चक्खाण-पोसहोववासा, अपच्छिम-मारणंतियाऽयसंलेहणा-झोसणाहिं अप्पाणं जह य भावइत्ता, बहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेयइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवर-विमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भोत्तूण उत्तमाइं, तओ आउक्खएणं चुया समाणा जह जिणमयम्मि बोहिं लद्धूण य संजमुत्तमं तमरयोघ-विप्पमुक्का उवेंति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं ।

एते अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य ।

उवासगदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[६] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[७] पयग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं[८] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघ-

---

[१] सं० पा०—आघविज्जति ।

[२] भत्तपाण° (वृ) ।

[३] अभिगमणं (ग) ।

[४] चित्ता (क, ख, ग) ।

[५] गुण वेरमण (क, ख, ग) ।

[६] सं० पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ ।

[७] पयसहस्साइं (क, ख) ।

[८] सं० पा०—अक्खराइं जाव एवं चरण ।

विज्जति[1] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति °। सेत्तं उवासगदसाओ ॥

९६. से किं तं अंतगडदसाओ ?

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ बहुविहाओ, खमा अज्जवं मद्दवं च, सोअं च सच्चसहियं, सत्तरसविहो य संजमो उत्तमं च बंभं, आकिंचणया तवो चियाओ[2] समिइगुत्तीओ चेव, तह[3] अप्पमाय-जोगो, सज्झायज्झाणाण य उत्तमाणं दोण्हंपि लक्खणाइं।

पत्ताण य संजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लंभो, परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ[4] मुणिहिं, पायोवगओ य जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता अंतगडो मुणिवरो तमरयोघविप्पमुक्को[5], मोक्खसुहमणुत्तरं च पत्ता[6]।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थारेणं परूवेई[7]।

°अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ °।

से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा सत्त वग्गा दस उद्देसण-काला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[8] पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा[9] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघ-

---

[1] सं० पा०—आघविज्जति।

[2] चियातो किरियाओ (क); किरियाओ (ख); चाओ किरियाओ (ग)।

[3] तह य (ग)।

[4] परिपालिओ (ग)।

[5] °मुक्का (ख, ग); अत्र प्रस्तुतपाठस्य क्रमेण 'अंतगडा मुणिवरा तम-रयोघ-विप्पमुक्का' इति पाठो युज्यते, किन्तु वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'अंतगडो मुणिवरो तम-रयोघ-विप्पमुक्को' इति पाठ आसीत् तेन वृत्तिकारेण अत्रैकवचनं व्याख्यातम्, 'पत्ता' अत्र च बहुवचनम्। १२८ सूत्रे 'अंतगडा मुणिवरुत्तमा तम-रओघ-विप्प-मुक्का' इति पाठो लभ्यते, ततः पूर्वोक्ता-नुमानस्य पुष्टिर्जायते।

[6] पत्तो (ग)।

[7] सं० पा०—परूवेई जाव से णं।

[8] पयसहस्साइं (ख)।

[9] सं० पा०—अक्खरा जाव एवं चरण।

विज्जति[1], °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति°। सेत्तं अंतगडदसाओ ॥

९७. से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा[2] संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं[3] पाओवगमणाइं अणुत्तरोववत्ति[4] सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।

'अणुत्तरोववातियदसासु णं'[5] तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं[6] परिसहसेण्ण-रिउ-बल-पमद्दणाणं 'तव-दित्त'[7]-चरित्त-णाण-सम्मत्तसार-विविहप्पगार-वित्थर-पसत्थगुण-संजुयाणं[8] अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाण वण्णओ, उत्तमवरतव-विसिट्ठणाण-जोगजुत्ताणं जह य जगहियं भगवओ जारिसा य रिद्धिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं, जह य उवासंति जिणवरं, जह य परिकहेंति धम्मं लोगगुरू अमरनरसुरगणाणं[9], सोऊण य तस्स भासियं अवसेसकम्म[10]-विसयविरत्ता नरा जह अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं, जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहिय-नाण-दंसण-चरित्त-जोगा 'जिणवयणमणुगय-महियभासिया'[11] जिणवराण हियएणमणुणेत्ता, जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमं झाणजोगजुत्ता उववण्णा मुणिवरोत्तमा[12] जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थ विसयसोक्खं, तत्तो य चुया कमेणं काहिंति संजया जह य अंतकिरियं।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[13] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ।

---

[1] सं० पा०—आघविज्जति।

[2] पडिमाओ (क, ख, ग)।

[3] भत्तपाण° (क्व)।

[4] अणुत्तरोववाओ (क्व)।

[5] अणुत्तरोववाइयदसाणं (क)।

[6] थेर° (क); विर° (ग)।

[7] दवदित्त (वृ); तवदित्त (वृपा)।

[8] ज्झयाणं (ग, वृपा)।

[9] °नरासुरा° (क)।

[10] °कम्मा (क, ख, ग)।

[11] जिणवयणानुगइसुभासिया (वृपा)।

[12] मुणिपवरुत्तमा (क)।

[13] सं० पा०—अणुओगदारा संखेज्जाओ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[1] पयग्गेणं, संखेज्जाणि अक्खराणि[2] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[3] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति°। सेत्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥

९८. से किं तं पण्हावागरणाणि ?

पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।

पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमय-पण्णवय-पत्तेयबुद्ध-विविहत्थ[4]-भासा-भासियाणं अतिसय-गुण-उवसम-णाणप्पगार-आयरिय-भासियाणं वित्थरेणं वीरमहेसीहिं[5] विविहवित्थर-भासियाणं च जगहियाणं अद्दागंगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोम-आतिच्चमातियाणं विविहमहापसिणविज्जा-मणपसिणविज्जा-देवय-पओगपहाण-गुणप्पगासियाणं सब्भूयविगुणप्पभाव[6]-नरगणमइ-विम्हयकारीणं[7] अतिसयमतीतकालसमए दमतित्थकरुत्तमस्स ठितिकरण[8]-कारणाणं दुरहिगम-दुरवगाहस्स[9] सव्वसव्वण्णुसम्मयस्स बुहजणविबोहकरस्स[10] पच्चक्खय-पच्चय-कराणं पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति।

पण्हावागरणेसु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[11] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे 'एगे सुयक्खंधे [पणयालीसं अज्झयणा'[12]?] पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि[13]

---

[1] पयसहस्साइं (ख, ग)।

[2] सं० पा०—अक्खराणि जाव एवं चरण।

[3] सं० पा०—आघविज्जति।

[4] विवित्था (क)।

[5] थिर° (वृ); वीर° (वृपा)।

[6] °विविहगुण° (वृपा); °दुगुण° (क्व)।

[7] °करीणं (ख)।

[8] थिति° (क); थिर° (ग)।

[9] दुरोवगाहस्स (क)।

[10] °विबोधन° (वृ)।

[11] सं० पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ।

[12] यद्यपि समवायांगादर्शेषु नैष पाठो लभ्यते, किन्तु उद्देशनकालात्पूर्वं अध्ययनानां संख्या निर्दिश्यते, नन्दी सूत्रेऽपि प्रश्नव्याकरण-विवरणे पाठोऽसौ लभ्यते, तेनात्रासौ युज्यते।

[13] पयसहस्साणि (ख)।

पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा[1] °अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं° चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[2] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° । सेत्तं पण्हावागरणाइं ।।

९६. से किं तं विवागसुए[3] ?

विवागसुए णं सुक्कडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति ।

से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव ।

तत्थ णं दह दुहविवागाणि दह सुहविवागाणि ।

से किं तं दुहविवागाणि ?

दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं[4] नगराइं 'उज्जाणाइं चेइयाइं'[5] वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं[6] संसारपबंधे[7] दुहपरंपराओ य आघविज्जंति । सेत्तं दुहविवागाणि ।

से किं तं सुहविवागाणि ?

सुहविवागेसु सुहविवागाणं नगराइं[8] °उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया° धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा[9] संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

दुहविवागेसु णं पाणाइवाय-अलियवयण-चोरिक्क-करण-परदार-मेहुण-संसग्गयाए[10] महतिव्वकसाय-इंदियप्पमाय[11]-पावप्पओय-असुहज्झवसाण-संचियाणं[12] कम्माणं पावगाणं पाव-अणुभाग-फलविवागा णिरयगति[13]-तिरिक्खजोणि-बहुविह-वसण-सय-परंपरा-पबद्धाणं, मणुयत्तेवि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा ।

वहवसणविणास -नासकण्णोट्ठंगुट्ठकरचरणनहच्छेयण -जिब्भछेयण[14]- अंजण-कड-

---

[1] सं० पा०—गमा जाव चरण ।

[2] सं० पा०—आघविज्जति ।

[3] °सुयं (क) ।

[4] × (क, ख) ।

[5] चेइयाइं उज्जाणाइं (क, ख, ग) ।

[6] णरगगमणाइं (क, ख) ।

[7] °पवंच (क, ख) ।

[8] सं० पा०—नगराइं जाव धम्मकहाओ ।

[9] पडिमाओ (ग) ।

[10] °गताओ (क) ।

[11] °प्पवाद (क) ।

[12] संट्ठियाणं (ग) ।

[13] णरय° (क, ग) ।

[14] जति° (ग) ।

ग्गिदाहण-गयचलण-मलणफालणउल्लंबण[1]- सूललयालउडलट्ठिभंजण-तउसीसग-तत्ततेल्लकलकलअभिसिंचण -कुंभिपाग-कंपण - थिरबंधण - वेह - वज्झ - कत्तण-पतिभयकर-करपलीवणादिदारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुबद्धा ण मुच्चंति पावकम्मवल्लीए। अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइ-धणिय-बद्ध-कच्छेण सोहणं तस्स वावि होज्जा।

एत्तो य सुहविवागेसु सील-संजम-णियम-गुण-तवोवहाणेसु साहुसु सुविहिएसु अणुकंपाऽसयप्पओग-तिकाल-मइविसुद्ध-भत्तपाणाइं पयतमणसा हिय-सुह-नीसेस-तिव्वपरिणाम-निच्छियमई पयच्छिऊणं पओगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं, जह य परित्तीकरेंति नर-निरय-तिरिय-सुरगतिगमण[2]-विपुलपरियट्ट-अरति-भय-विसाय-सोक-मिच्छत्त-सेल-संकडं अण्णाणतमंधकार-चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं जर-मरण-जोणि-संखुभियचक्कवालं सोलसकसाय-सावय-पयंड-चंडं अणाइयं अणवदग्गं संसारसागरमिणं, जह य निबंधंति आउगं सुरगणेसु, जह य अणुभवंति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि, ततो य कालंतरच्चुआणं इहेव नरलोगमागयाणं आउ-वउ-वण्ण-रूव-जाति-कुल-जम्म-आरोग्ग-बुद्धि-मेहा-विसेसा मित्तजण-सयण-धण-धण्ण-विभव-समिद्धिसार-समुदयविसेसा बहुविह-कामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु।

अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकारणत्था।

'अण्णेवि य एवमाइया, बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जति'[3]।

विवागसुअस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[4] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ।

---

[1] °चलपरिमलण° (ग)।

[2] सुगति° (क, ग)।

[3] सू० ९२. एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेणं अत्था समासिज्जंति।

सू० ९४. एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य।

सू० ९५. एते अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य।

सू० ९६. एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण।

सू० ९७. एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थारेणं।

सू० ९९. अण्णेवि एवमाइया, बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जति।

एतेषु पाठेषु किञ्चित् परिवर्तनं दृश्यते। अर्थसापेक्षत्वेनेदं कृतमस्ति अथवा लिपिदोषेण जातमिति वक्तुं न शक्यम्। सर्वत्रापि आख्यायन्ते इति क्रियाशेषो ज्ञातव्यः। वृत्तिकृता 'अण्णे वि एवमाइया' इति पाठः बहुवचनत्वेन व्याख्यातः। शेषपाठ एकवचनत्वेन व्याख्यातः। तथा च वृत्तिः—अन्येपि चैवमादिकाः आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणामाद्वोत्तरक्रियया योगः एवं च बहुविधा विस्तरेणार्थप्ररूपणता आख्यायत इति (वृ)।

[4] सं०पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ।

से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[1] पयग्गेणं, संखेज्जाणि अक्खराणि[2] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[3] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति°।

सेत्तं विवागसुए ।।

१००. से किं तं दिट्ठिवाए ?

दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगे चूलिया ।।

१०१. से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. सिद्धसेणियापरिकम्मे २. मणुस्ससेणियापरिकम्मे ३. पुट्ठसेणियापरिकम्मे[4] ४. ओगाहणसेणियापरिकम्मे ५. उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ६. विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ७. चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ।।

१०२. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. माउयापयाणि २. एगट्ठियपयाणि ३. 'अट्ठपयाणि ४. पाढो'[5] ५. आगासपयाणि ६. केउभूयं[6] ७. रासिबद्धं ८. एगगुणं ९. दुगुणं १०. तिगुणं ११. केउभूयपडिग्गहो १२. संसारपडिग्गहो १३. नंदावत्तं १४. सिद्धावत्तं[7]। सेत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ।।

१०३. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ?

मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—[8]°१. माउयापयाणि २. एगट्ठियपयाणि ३. अट्ठपयाणि ४. पाढो ५. आगासपयाणि ६. केउभूयं ७. रासिबद्धं ८. एगगुणं ९. दुगुणं १०. तिगुणं ११. केउभूयपडिग्गहो १२. संसारपडिग्गहो° १३. नंदावत्तं १४. मणुस्सावत्तं[9]। सेत्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ।।

---

[1] पयसहस्साइं (क, ख, ग)।

[2] सं० पा०—अक्खराणि जाव एवं।

[3] सं० पा०—आघविज्जति।

[4] वुद्धा° (क)।

[5] पादो अद्धपयाणि (क); पढो अट्ठापयाणि (ख); पाढो अट्ठपयाणि (ग)।

[6] केउव्वयं (ग)।

[7] सिद्धावद्धं (क)।

[8] सं० पा०—ताइं चेव माउयापयाणि जाव नंदावत्तं।

[9] मणुस्सावट्टं (क); मणुस्सबद्धं (ग)।

१०४. [1]°से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ?
पुट्ठसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. पाढो २. आगासपयाणि ३. केउभूयं ४. रासिबद्धं ५. एगगुणं ६. दुगुणं ७. तिगुणं ८. केउभूयपडिग्गहो ९. संसारपडिग्गहो १०. नंदावत्तं ११. पुट्ठावत्तं । सेत्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ॥

१०५. से किं तं ओगाहणसेणियापरिकम्मे ?
ओगाहणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. पाढो २. आगासपयाणि ३. केउभूयं ४. रासिबद्धं ५. एगगुणं ६. दुगुणं ७. तिगुणं ८. केउभूयपडिग्गहो ९. संसारपडिग्गहो १०. नंदावत्तं ११. ओगाहणावत्तं । सेत्तं ओगाहणसेणियापरिकम्मे ॥

१०६. से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ?
उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. पाढो २. आगासपयाणि ३. केउभूयं ४. रासिबद्धं ५. एगगुणं ६. दुगुणं ७. तिगुणं ८. केउभूयपडिग्गहो ९. संसारपडिग्गहो १०. नंदावत्तं ११. उवसंपज्जणावत्तं । सेत्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ॥

१०७. से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ?
विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. पाढो २. आगासपयाणि ३. केउभूयं ४. रासिबद्धं ५. एगगुणं ६. दुगुणं ७. तिगुणं ८. केउभूयपडिग्गहो ९. संसारपडिग्गहो १०. नंदावत्तं ११. विप्पजहणावत्तं । सेत्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ॥

१०८. से किं तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ?
चुयाचुयसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. पाढो २. आगासपयाणि ३. केउभूयं ४. रासिबद्धं ५. एगगुणं ६. दुगुणं ७. तिगुणं ८. केउभूयपडिग्गहो ९. संसारपडिग्गहो १०. नंदावत्तं ११. चुयाचुयावत्तं । सेत्तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे° ॥

१०९. इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं छ ससमइयाणि सत्त 'आजीवियाणि, छ चउक्कणइयाणि'[2] सत्त तेरासियाणि । एवामेव सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं तेसीति[3] भवंतीति मक्खायाइं । सेत्तं परिकम्मे[4] ॥

---

[1] सं० पा०—अवसेसाइं परिकम्माइं पाढाइयाइं एक्कारसविहाइं पण्णत्ताइं ।

[2] × (क) ।

[3] × (क, ग) ।

[4] परियम्माणि (क); परिकम्माणि (ग) ।

११०. से किं तं सुत्ताइं ?

सुत्ताइं अट्ठासोतिभवंतीति मक्खायाइं, तं जहा—१. उज्जुगं[1] २. परिणयापरिणयं ३. बहुभंगियं ४. विजयचरियं[2] ५. अणंतरं ६. परंपरं ७. सामाणं[3] ८. संजूहं ९. भिण्णं[4] १०. आहच्चायं[5] ११. सोवत्थियं घंटं १२. नंदावत्तं १३. बहुलं १४. पुट्ठापुट्ठं[6] १५. वियावत्तं १६. एवंभूयं १७. दुआवत्तं १८. वत्तमाणुप्पयं[7] १९. समभिरूढं २०. सव्वओभद्दं २१. पण्णासं[8] २२. दुपडिग्गहं ॥

१११. इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अछिण्णछेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं तिकनयाणि तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाणि[9] । सेत्तं सुत्ताइं ॥

११२. से किं तं पुव्वगए ?

पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. उप्पायपुव्वं २. अग्गेणीयं ३. वीरियं ४. अत्थिणत्थिप्पवायं ५. नाणप्पवायं ६. सच्चप्पवायं ७ आयप्पवायं ८. कम्मप्पवायं ९. पच्चक्खाणं[10] १०. विज्जाणुप्पवायं[11] ११. अवंझं १२. पाणाउं १३. किरियाविसालं १४. लोगबिंदुसारं ॥

११३. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चुलियावत्थू पण्णत्ता ॥

११४. अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ॥

११५. वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ॥

११६. अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलिया वत्थू पण्णत्ता ॥

११७. नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ॥

११८. सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता ॥

११९. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ॥

१२०. कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

१२१. पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

१२२. विज्जाणुप्पवायस्स[12] णं पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता ॥

१२३. अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ॥

१२४. पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ॥

---

[1] उज्जगं (क, ग) ।

[2] विपच्चवियं (क, ग) ।

[3] समाणं (ख) ।

[4] संभिण्णं (क्व) ।

[5] अहच्चायं (ख) ।

[6] पुढपुट्ठं (क) ।

[7] वत्तमाणुपयं (ख) ।

[8] पसणं (क); पणसं (ग) ।

[9] मक्खाइयाइं (ग) ।

[10] पच्चक्खाणप्पवायं (ग) ।

[11] अणुप्पवायं (क, ग) ।

[12] अणु° (क, ख, ग) ।

१२५. किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

१२६. लोयबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं[1] वत्थू पण्णत्ता ॥

दस चोद्दस अट्ठट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि ।
सोलस तीसा वीसा, पण्णरस अणुप्पवायंमि ॥१॥
बारस एक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे, चोदसमे पण्णवीसाओ ॥२॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ, चेव दस चेव चूलवत्थूणि ।
आतिल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया णत्थि ॥३॥

—सेत्तं पुव्वगए[2] ॥

१२७. से किं तं अणुओगे ?

अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य[3] ॥

६२८. से किं तं मूलपढमाणुओगे ?

मूलपढमाणुओगे—एत्थ णं[4] अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउं, चवणाणि[5], जम्मणाणि य अभिसेया, रायवरसिरीओ, सीयाओ पव्वज्जाओ, तवा य भत्ता, केवलणाणुप्पाता[6], तित्थपवत्तणाणि य, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं[7], वण्णविभातो[8], सीसा, गणा, गणहरा य, अज्जा, पवत्तिणीओ–संघस्स चउव्विहस्स जं वावि परिमाणं, 'जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी'[9], सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य 'जत्तिया, जत्तिया'[10] सिद्धा, 'पातोवगता य'[11] जे[12]जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता अंतगडा[13] मुणिवरुत्तमा[14] तम-रओघ-विप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं[15] च पत्ता।

एए अण्णे य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । सेत्तं मूलपढमाणुओगे ॥

१२९. से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—कुलगरगंडियाओ, तित्थगरगंडियाओ,

---

[1] पुणवीस (ग) ।
[2] पुव्वगय (क, ग) ।
[3] × (क) ।
[4] सा (ग) ।
[5] चयणाणि (क, ख) ।
[6] °णुपातपा (ग) ।
[7] आउं (क) ।
[8] अण्ण° (क) ।
[9] °पज्जयतोहिणाणि (क); °पव्वज्जातोहिणाणि (ग) ।
[10] जित्तिया जित्तिया (ग) ।
[11] °गतो (क); °गतो य (ख) ।
[12] जो (क, ख, ग) ।
[13] अंतकडो (क, ख); अंतगडो (ग) ।
[14] °त्तमो (क, ख, ग) ।
[15] सिद्ध° (ग) ।

गणधरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणगंडियाओ, अमर-नर-तिरिय-निरय-गइ-गमण-विविह-परियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । सेत्तं गंडियाणुओगे ।।

१३०. से किं तं 'चूलियाओ ?

चूलियाओ'[1]—आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं । सेत्तं चूलियाओ[2] ।।

१३१. दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[3] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा° संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयखंधे चोद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू संखेज्जा चूलवत्थू[4] संखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[5] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° । सेत्तं दिट्ठिवाए । सेत्तं दुवालसंगे गणिपिडगे ।।

१३२. इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु ।

इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।

इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं विइवइंसु ।

---

[1] चूलियाणुओगे जामं (ग) ।

[2] चूलियाओ एवं विण्णाते (ग) ।

[3] सं० पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ ।

[4] चुल्ल° (ग) ।

[5] सं०पा०—आघविज्जति ।

[1]°इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं विइवयंति।

इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं विइवइस्संति° ॥

१३३. दुवालसंगे णं गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवति य, भविस्सति य। धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे।

से जहाणामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्संति। भुविं च, भवंति य, भविस्संति य। धुवा णितिया[2] °सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया° णिच्चा।

एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवति य, भविस्सइ य[3]। °धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए° अवट्ठिए णिच्चे ॥

१३४. एत्थ णं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ॥

रासि-पदं

१३५. दुवे रासी पण्णत्ता, तं जहा—जीवरासी[4] अजीवरासी य ॥

१३६. अजीवरासी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—'रूविअजीवरासी अरूविअजीवरासी'[5] य ॥

१३७. से किं तं अरूविअजीवरासी ?

अरूविअजीवरासी दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकाए[6], °धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा°, अद्धासमए ॥

१३८. जाव[7]—

---

१. सं० पा०—एवं पडुप्पण्णेवि अणागएवि।

२. सं० पा०—णितिया जाव णिच्चा।

३. सं० पा०—भविस्सइ य जाव अवट्ठिए।

४. °रासी य (क)।

५. रूवी° अरूवी° (ग)।

६. सं० पा०—धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए।

७. इह च प्रज्ञापनायाः प्रथमपदं प्रज्ञापनाख्यं सर्वं तदक्षरमध्येतव्यं, किमवसानमित्याह—'जाव से किं त' मित्यादि, केवलमस्य प्रज्ञापना-सूत्रस्य चायं विशेषः, इह 'दुवे रासी पण्णत्ता' इत्यभिलापसूत्रं तत्र तु 'दुविहा पण्णवणा पण्णत्ता—जीवपण्णवणा अजीवपण्णवणा य' त्ति (वृ)।

१३९. से किं तं अणुत्तरोववाइआ ?

अणुत्तरोववाइओ पंचविहा, पण्णत्ता, तं जहा—विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजित-सव्वट्ठसिद्धिया[1]। सेत्तं अणुत्तरोववाइआ। सेत्तं पंचिंदियसंसारसमावण्ण-जीवरासी ॥

पज्जत्तापज्जत्त-पदं

१४०. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। एवं दंडओ[2] भाणियव्वो जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

आवास-पदं

१४१. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए केवइयं ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे[4] जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं णिरयावाससयसहस्सा[5] भवंतीति मक्खायं। तेणं णरया अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा[6] °अहे खुरप्प-संठाण-संठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा° असुभा णिरया असुभातो णरएसु वेयणाओ ॥

१४२. एवं सत्तवि भाणियव्वाओ जं जासु जुज्जइ—

संगहणी-गाहा

आसीयं बत्तीसं, अट्ठावीसं तहेव वीसं च।
अट्ठारस सोलसगं, अट्ठुत्तरमेव बाहल्लं ॥१॥
तीसा य पण्णवीसा, पण्णरस दसेव सयसहस्साइं।
तिण्णेगं पंचूणं, पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥२॥

[दोच्चाए णं पुढवीए, तच्चाए णं पुढवीए, चउत्थीए पुढवीए, पंचमीए पुढवीए, छट्ठीए पुढवीए, सत्तमीए पुढवीए—गाहाहिं भाणियव्वा][7] ॥

---

[1] °सिद्धया (क, ग)।

[2] 'दंडओ' त्ति नेरइया १ असुराई १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ४ मणुया १। वंतर १ जोइस १ वेमाणिया य १ अह दंडओ एवं ॥१॥

[3] ठा० १।१४०-१६३।

[4] अट्ठट्ठहत्तरे (क)।

[5] निरयवास° (ख); नरयावास° (ग)।

[6] सं० पा०—चउरंसा जाव असुभा।

[7] कोष्ठकान्तर्गतः पाठः पुनरावृत्तिरूपो विद्यते। 'एवं सत्तवि भाणियव्वाओ' इत्यनेन गाथाभ्याञ्च गतार्थत्वात्। 'सत्तमाए णं पुढवीए' इति सूत्रस्य पृथक्करणं सप्रयोजन-

१४३. सत्तमाए ण पुढवीए[1] °केवइयं ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता° ?
गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइं बाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं वज्जेत्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु, एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नामं पंचमए । ते णं नरया[2] वट्टे[3] य तंसा य अहे[4] खुरप्प-संठाण-संठिया °णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा° असुभा नरगा असुभाओ नरएसु वेयणाओ ॥

१४४. केवइया णं भंते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं[5] एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारा-वाससयसहस्सा पण्णत्ता । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पोक्खर-कण्णिया-संठाण-संठिया उक्किण्णंतर-विपुल-गंभीर-खात-फलिया अट्टालय-चरिय[6]-दारगोउर-कवाड-तोरण-पडिदुवार-देसभागा जंत-मुसल-मुसुंढि[7]-सतग्घि-परिवारिया अउज्झा[8] अडयाल-कोट्ठय-रइया अडयाल-कय-वणमाला लाउल्लोइय-महिया गोसीस-सरसरत्तचंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितला कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-उज्झंत-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामा[9] 'सुगंधि-वरगंध-गंधिया'[10] गंध-वट्टियाभूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१४५. एवं 'जस्स जं'[11] कमती तं तस्स, जं-जं गाहाहिं भणियं तह चेव वण्णओ—

मस्ति । अत्र पूर्ववर्णितात् किञ्चिद्विशेषो विद्यते । प्रतिषु संग्रहगाथा एकत्रैव विद्यन्ते । किन्तु तेन क्रमेण पाठस्य जटिलता जायते । तेनास्माभिर्गाथानां यथा-वश्यकमायोजना कृता । भगवती (१।२१२) सूत्रेष्वेवं विभाति ।

[1] सं० पा०—सत्तमाए णं पुढवीए पुच्छा ।

[2] णिरया (क) ।

[3] वट्टा (क); 'वट्टे य तंसा य' त्ति मध्यमो वृत्तः शेषास्त्र्यस्रा इति (वृ) ।

[4] अधे (क, ग) ।

[5] उवरि (क, ग) ।

[6] चउरय (ग, वृपा) ।

[7] मुसंढि (ग) ।

[8] अवोज्झा (क); अजोहाणि (ग) ।

[9] गंधुद्धुराभि° (ख, वृ) ।

[10] सुगंधवरगंधिया (क) ।

[11] जं जस्स (वृ) ।

संगहणी-गाहा

चउसट्ठी असुराणं, चउरासोइ च होइ नागाणं ।
बावत्तरिं सुवन्नाण, वायुकुमाराण छण्णउतिं ।।१।।
दीवदिसाउदहीणं, विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं ।
छण्हंपि जुवलयाणं, छावत्तरिमो सयसहस्सा ।।२।।

१४६. केवइया णं भंते ! पुढवीकाइयावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा पुढवीकाइयावासा पण्णत्ता ।।

१४७. एवं जाव[1] मणुस्सत्ति ।।

१४८. केवइया णं भंते ! वाणमंतरावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु, एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता । ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, एवं जहा भवणवासीणं तहेव नेयव्वा, नवरं—पडागमालाउला[2] सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

१४९. केवइया णं भंते ! 'जोइसियाणं विमाणावासा'[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइं जोयणसयाइ उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा पण्णत्ता । ते णं जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया विविहमणि-रयण-भत्तिचित्ता[4] वाउद्धुय-विजय-वेजयंती-पडाग-छत्तातिछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयण[5]-पंजरुम्मिलितव्व मणि-कणग-थूभियागा विगसित-सयपत्त-पुंडरीय-तिलय-रयणड्ढचंद-चित्ता अंतो बहिं च सण्हा[6] तवणिज्ज-

---

[1] ठा० १।१५३-१६० ।

[2] प्रज्ञापनायां द्वितीये स्थानपदे वाणमंतरदेवानां वर्णने 'गंधवट्टिभूता' इति पाठस्यानन्तरं निम्नप्रकारः पाठो विद्यते— 'अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडितसद्दसंपणादिता पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समरीइया सउज्जोता पासातीता दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।' एतस्य पाठस्य संदर्भे प्रस्तुतसूत्रवर्तीपाठः पठ्यते तदा १४४ सूत्रवर्तिनः 'गंधवट्टिभूया' पाठस्यानन्तरं 'पडागमालाउला' प्रभृति विशेषणानि युज्यन्ते । 'अच्छा' प्रभृति विशेषणानि प्रज्ञापनायां विद्यन्ते, किन्तु अत्र सूत्रकृता नापेक्षितानीति प्रतीयते ।

[3] जोतिसिया वासा (क, ख) ।

[4] भित्ति° (ग) ।

[5] इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः (वृ) ।

[6] सण्ह (वृपा) ।

बालुगा-पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

१५०. केवइया णं भंते ! वेमाणियावासा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणि जोयणसयसहस्साणि बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता, एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरणच्चुएसु गेवेज्जमणुत्तरेसु य चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं[2] सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खाया । ते णं विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा[3] अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा[4] घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया[5] सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा[6] ।।

१५१. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

१५२. एवं ईसाणाइसु—अट्ठावीसं बारस अट्ठ चत्तारि—एयाइं सयसहस्साइं, पण्णासं चत्तालीसं छ—एयाइं सहस्साइं, आणए पाणए चत्तारि, आरणच्चुए तिण्णि—एयाणि सयाणि । एवं गाहाहिं भाणियव्वं—

संगहणी-गाहा

बत्तीसट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ।
पण्णा चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ।।१।।
आणयपाणयकप्पे, चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि ।
सत्त विमाणसयाइं, चउसुवि एएसु कप्पेसु ।।२।।
एक्कारसुत्तरं[7] हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए ।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ।।३।।

ठिइ-पदं

१५३. नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

---

[1] वेमाणियाणं ० (क) ।
[2] सत्ताणउइं च (ग) ।
[3] ०वण्णप्पभा (क) ।
[4] × (क) ।
[5] समिरिया (क, ख) ।
[6] पडिरूवा सूरूवा (क) ।
[7] ०सुत्तरसय (ग) ।

गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५४. अपज्जत्तगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

१५५. पज्जत्तगाणं[1] °भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा° ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१५६. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए, एवं जाव[2] विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं 'बत्तीसं सागरोवमाइं'[3] उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं[4] ॥

१५७. सव्वट्ठे अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता[5] ॥

सरीर-पदं

१५८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ॥

१५९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियओरालियसरीरे जाव[6] गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरे य ॥

१६०. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं ॥

१६१. एवं जहा ओगाहणासंठाणे[7] ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं। एवं जाव मणुस्सेत्ति उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ॥

१६२. कइविहे णं भंते ! वेउव्वियसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य ॥

१६३. एवं जाव ईसाणकप्पपज्जंतं सणंकुमारे आढत्तं जाव[8] अणुत्तरा भवधारणिज्जा तेसिं रयणी-रयणी परिहायइ[9] ॥

---

[1] सं० पा०—पज्जत्तगाणं° ।

[2] पण्ण° ४ ।

[3] इह च विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमाण्युक्तानि गन्धहस्त्यादिष्वपि तथैव दृश्यते, प्रज्ञापनायां त्वेकत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदम् (वृ) ।

[4] पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वयमिह समूह्यम् (वृ) ।

[5] एवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमैर्वाच्येति (वृ); पण्ण° ४ ।

[6] पण्ण° २१ ।

[7] ओगाहणं संठाणे (ग); अवगाहनासंस्थानाभिधानं प्रज्ञापनाया एकविंशतितमं पदम् ।

[8] पण्ण° २१ ।

[9] पुस्तकान्तरेत्विदं वाक्यमन्यथा दृश्यते (वृ) ।

१६४. आहारयसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगाकारे पण्णत्ते ।
जइ एगाकारे पण्णत्ते, किं मणुस्सआहारयसरीरे ? अमणुस्सआहारयसरीरे ?
गोयमा ! मणुस्सआहारगसरीरे, णो अमणुस्सआहारगसरीरे ।
[1]°जइ मणुस्स आहारगसरीरे, किं गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे ? संमुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे ?
गोयमा! गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे नो संमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे ।
जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अकम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?
गोयमा ! कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अकम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।
जइ कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।
जइ संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अपज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?
गोयमा ! पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतिमणुस्सआहारयसरीरे, नो अपज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।
जइ पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?
गोयमा ! सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

---

१. सं० पा०—एवं जइ मणुस्स किं······वयणावि भतियव्वा ।

जइ समद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? असंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो असंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं इड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अणिड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ? इड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अणिड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे° ।।

१६५. [1]°आहारयसरीरे णं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिए पण्णत्ते° ।।

१६६. [2]°आहारयसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं देसूणा रयणी उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी° ।।

१६७. तेयासरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

---

[1] सं० पा०—आहारयसरीरे समचउरंस-संठाणसंठिते ।

[2] सं० पा०—आहारय जह देसूणा रयणि उ पडिपुण्णा रयणी ।

गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते—एगिंदियतेयासरीरे य[1] °बेंदियतेयासरीरे य तेंदियतेयासरीरे य चउरिंदियतेयासरीरे य पंचेंदियतेयासरीरे य° ॥

१६८. एवं जाव[2]—

१६९. गेवेज्जस्स णं भंते ! देवस्स मारणंतियसमुग्घातेणं समोहयस्स तेयासरीरस्स[3] केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ती[4] विक्खंभबाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं अहे जाव विज्जाहरसेढीओ[5], उक्कोसेणं अहे जाव अहोलोइया गामा, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं, उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं[6] ॥

१७०. एवं[7] अणुत्तरोववाइया वि ॥

१७१. एवं कम्मयसरीरं पि भाणियव्वं ॥

ओहि-पदं

संगहणी-गाहा

भेदे विसय संठाणे, अब्भंतर बाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वड्ढि-हाणी, पडिवाती चेव अपडिवाती ॥१॥

१७२. कइविहे णं भंते ! ओही पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—भवपच्चइए य खओवसमिए य । एवं सव्वं ओहिपदं[8] भाणियव्वं ॥

वेयणा-पदं

संगहणी-गाहा

सीता य दव्व सारीर, साय तह वेयणा भवे दुक्खा ।
अब्भुवगमुवक्कमिया, णिदाए[9] चेव अणिदाए ॥१॥

---

[1] सं० पा०—बे ते चउ पंच ।

[2] पण्ण० २१ ।

[3] प्रयुक्तादर्शेषु 'समाणस्स' पाठः प्राप्यते, किन्तु अर्थमीमांसया नासौ समीचीनः प्रतिभाति । तेनात्र प्रज्ञापनाया एकविंशतितमपदस्थः 'तेयासरीरस्स' इति पाठः स्वीकृतः ।

[4] °मेत्ता (क्व) ।

[5] °सेढी (क, ख) ।

[6] प्रतिषु पूर्वं 'उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं' पश्चाच्च 'तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं' इति पाठो विद्यते ।

[7] एवं जाव (क, ख, ग) । अत्र 'जाव' शब्दोऽनावश्यकः प्रतिभाति । प्रज्ञापनायामपि (पद २१) 'अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव' इति पाठो लभ्यते ।

[8] पण्ण० ३३ ।

[9] णीताई (क, ग); णिताए तहा (ख) ।

१७३. नेरइया णं भंते ! किं सीतवेयणं[1] वेदंति ? उसिणवेयणं वेदंति ? सीतोसिणवेयणं वेदंति ?
गोयमा ! नेरइया[2] °सीतं वि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, णो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति° । एवं चेव वेयणापदं[3] भाणियव्वं ।।

लेसा-पदं

१७४. कइ णं भंते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—किण्हलेस्सा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा । एवं लेसापयं[4] भाणियव्वं ।।

आहार-पदं

संगहणी-गाहा

'अणंतरा य आहारे'[5] आहाराभोगणाऽवि[6] य ।
पोग्गला नेव[7] जाणंति, अज्झवसाणा[8] य सम्मत्ते ।।१।।

१७५. नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया ?
हंता गोयमा[9] ! °नेरइया णं अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया ततो परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया° । एवं आहारपदं[10] भाणियव्वं ।।

आउगबंध-पदं

१७६. कइविहे णं भंते ! आउगबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउगबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जाइनामनिधत्ताउके[11] °गतिनामनिधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके अणुभागनामनिधत्ताउके ओगाहणानामनिधत्ताउके° ।।

१७७. नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउगबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनाम[12] °निधत्ताउके गइनामनिधत्ताउके

---

[1] सीत वेयणं (ख) ।

[2] सं० पा०—नेरइया० ।

[3] पण्ण० ३५ ।

[4] पण्ण० १७ ।

[5] (क) 'अणतरा य आहारे' त्ति अनन्तराश्च-अव्यवधानाश्चाहारविषये अनन्तराहारा जीवा वाच्या इत्यार्थः (वृ० पत्र १३५) ।
(ख) 'अणंतरागयाहारे' इत्यादि, प्रथममनन्तरागताहारको नैरयिकादिर्वक्तव्यः [पन्नवणा पद ३४ वृत्ति] ।

[6] ति (क) ।

[7] मेव (क, ख, ग) ।

[8] °साणे (ग) ।

[9] सं० पा०—हंता गोयमा !

[10] पण्ण० ३४ ।

[11] सं० पा०—एवं गतिनाम······ओगाहणानाम° ।

[12] सं० पा०—जातिनाम जाव ओगाहणानाम° ।

ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके अणुभागनामनिधत्ताउके ओगाहणानामनिधत्ताउके ।।

१७८. एवं जाव[1] वेमाणियत्ति ।

उववाय-उव्वट्टणा-विरह-पदं

१७९. निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ते ।।

१८०. एवं तिरियगई मणुस्सगई देवगई ।।

१८१. सिद्धिगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे ।।

१८२. एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा ।।

१८३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं[2] °पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता° ।
एवं उववायदंडओ भाणियव्वो, उव्वट्टणादंडओ वि[3] ।।

आगरिस-पदं

१८४. नेरइया णं भंते ! जातिनामनिहत्ताउगं कतिहिं आगरिसेहिं पगरेंति ?
गोयमा ! 'सिय एक्केण सिय दोहिं सिय तीहिं सिय चउहिं सिय पंचहिं सिय छहिं सिय सत्तहिं'[4] सिय अट्ठहिं, नो चेव णं नवहिं ।।

१८५. 'सेसाणि वि'[5] आउगाणि जाव[6] वेमाणियत्ति ।।

संघयण-पदं

१८६. कइविहे णं भंते ! संघयणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तं जहा—वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे[7] नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे खीलियासंघयणे[8] छेवट्टसंघयणे[9] ।।

१८७. नेरइया णं भंते ! किंसंघयणी ?

---

[1] ठा० १।१४२-१६३ ।
[2] सं० पा०—उववाएणं एवं ।
[3] य (क, ग) ।
[4] सिय १ सिय २,३,४,५,६,७ (क, ख, ग) ।
[5] सेसाणवि (क, ख, ग) अशुद्धम् ।
[6] ठा० १।१४२-१६३ ।
[7] उसभ° (क) ।
[8] कीलिया° (क्व) ।
[9] सेवट्ट° (क्व) ।

गोयमा ! छण्हं संघयणाणं .असंघयणी—णेवट्ठी[1] णेव छिरा 'णेव ण्हारू'[2], जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा[3] अमणुण्णा अमणामा[4] ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ॥

१८८. असुरकुमारा णं भंते ? किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया सुभा[5] मणुण्णा मणामा[6] ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ॥

१८९. एवं जाव[7] थणियकुमारत्ति ।

१९०. पुढवीकाइया णं भंते ? किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसंघयणी[8] पण्णत्ता ॥

१९१. एवं जाव[9] संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति ॥

१९२. गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी ॥

१९३. संमुच्छिममणुस्सा णं छेवट्टसंघयणी ॥

१९४. गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विहसंघयणी पण्णत्ता ॥

१९५. जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया य ॥

संठाण-पदं

१९६. कइविहे णं भंते ! संठाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले सातो खुज्जे वामणे हुंडे ॥

१९७. णेरइया णं भंते ! किंसंठाणा[10] पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुंडसंठाणा[11] पण्णत्ता ॥

१९८. असुरकुमारा किसंठाणसंठिया[12] पण्णत्ता ?
गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता जाव[13] थणियत्ति ॥

१९९. पुढवी मसूरयसंठाणा पण्णत्ता ॥

२००. आऊ थिवुयसंठाणा[14] पण्णत्ता ॥

---

[1] णेतट्ठि (क) ।
[2] णवि ण्हारु (क, ग) ।
[3] × (क); अणाएज्जा असुभा (क) ।
[4] अमणा वा (क); अमणामा अमणाभिरामा (ग) ।
[5] × (क, ग) ।
[6] मणामा भिरामा (क); मणामा मणाभिरामा (ग) ।
[7] ठा० १।१४३-१५० ।
[8] सेवट्ट० (क, ख) ।
[9] ठा० १५३-१५९ ।
[10] किंसंठाणी (क्व) ।
[11] ०संठाणे (क); ०संठाणी (क्व) ।
[12] किंसंठाणी (क, ख) ।
[13] ठा० १।१४३-१५० ।
[14] ०संठाणे (क) ।

२०१. तेऊ सूइकलावसंठाणा पण्णत्ता ॥

२०२. वाऊ पडागसंठाणा[1] पण्णत्ता ॥

२०३. वणप्फई नाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता ॥

२०४. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खा[2] हुंडसंठाणा पण्णत्ता ॥

२०५. गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा पण्णत्ता ॥

२०६. सम्मुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाणसंठिया पण्णत्ता ॥

२०७. गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पण्णत्ता ॥

२०८. जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया ॥

वेय-पदं

२०९. कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तं जहा—इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसगवेए ।

२१०. नेरइया णं भंते ! 'किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया पण्णत्ता'[3] ?
गोयमा ! णो इत्थिवेया णो पुंवेया, णपुंसगवेया पण्णत्ता ॥

२११. असुरकुमाराणं भंते ! किं इत्थिवेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ?
गोयमा ! इत्थिवेया पुरिसवेया, णो णपुंसगवेया जाव[4] थणियत्ति ॥

२१२. पुढवि - आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइ-बि-ति-चउरिंदिय - संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-संमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया ॥

२१३. गब्भवक्कंतियमणुस्सा 'पंचेंदियतिरिया य'[5] तिवेया ॥

२१४. जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिया वेमाणियावि[6] ॥

समवसरण-पदं

२१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्स[7] समोसरणं णेयव्वं[8] जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा[9] वोच्छिण्णा ॥

कुलगर-पदं

२१६. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तोयाए ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा—

---

[1] पठातिया० (क); पडातिया० (ग) ।

[2] ०तिरिय (क, ख) ।

[3] किं वेए पण्णत्ते (ग) ।

[4] ठा० १।४३-१५० ।

[5] ०तिरिक्खिजोणिया (ग) ।

[6] ०याय (ख) ।

[7] पज्जुसणाकप्पस्स (वृपा); द्रष्टव्यं परिशिष्टम्, संख्याङ्क २ ।

[8] णातव्वं (ग) ।

[9] निरवच्चा य (ग) ।

संगहणी-गाहा

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥

२१७. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, तं जहा—

सयंजले[1] सयाऊ[2] य, अजियसेणे[3] अणंतसेणे य।
कक्कसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे[4] य सत्तमे ॥१॥
दढरहे दसरहे सतरहे ॥

२१८. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए[5] सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा—

पढमेत्थ विमलवाहण, चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे।
तत्तो य पसेणइए[6], मरुदेवे चेव नाभी य ॥१॥

११९. एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारिआ होत्था, तं जहा—

चंदजस चंदकंता, सुरूव-पडिरूव चक्खुकंता य।
सिरिकंता मरुदेवी, कुलगरपत्तीण णामाइं ॥१॥

तित्थगर-पदं

२२०. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तं जहा—

'णाभी य जियसत्तू य'[7], जियारी संवरे इ य।
मेहे धरे पइट्ठे य, महसेणे य खत्तिए ॥१॥

---

[1] सतज्जले (ग)।

[2] सताहू (ग)।

[3] स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ (आगमोदयसमिति पत्र ५१८ सूत्राङ्क ७६७) चतुर्थकुलकरस्य नाम 'अमितसेणे' विद्यते। किन्तु पाठशोधन-प्रयुक्तयोः 'क' 'ग' प्रत्योः 'ख' प्रतौ च क्रमशः 'अतितसेणे' 'अजितसेणे' पाठो विद्यते। समवायाङ्गे (श्रेष्ठि माणेकलाल चुन्नीलाल श्रेष्ठि कान्तिलाल चुन्नीलाल द्वारा प्रकाशित पत्र १३९ सूत्राङ्क १५७) तृतीयकुलकरस्य नाम 'अजितसेणे' विद्यते। पाठशोधन-प्रयुक्तयोः 'क' 'ख' प्रत्योरपि एष एव पाठोस्ति। स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ पञ्चमकुलकरस्य नाम 'तक्कसेणे' विद्यते। 'क' 'ग' प्रत्योरपि एष एव पाठो लभ्यते। समवायाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ 'कज्जसेणे' तथा हस्तलिखितादर्शेषु 'कक्कसेणे' पाठोस्ति। प्रतीयते स्थानाङ्गे समवायाङ्गे च 'अजियसेणे' 'कक्कसेणे' पाठ आसीत् किन्तु लिपिदोषेण पाठ-विपर्ययो जातः।

[4] महासेणे (ख)।

[5] ओसप्पिणीए समाए (ग)।

[6] पसेणइ (ख)।

[7] णाभी जियसत्तू राया (ग—हस्तलिखित वृत्ति)।

सुग्गीवे दढरहे विण्हू, वसुपुज्जे य खत्तिए।
कयवम्मा सीहसेणे य, भाणू विस्ससेणे इ य ॥२॥
सूरे सुदंसणे कुंभे, सुमित्तविजए समुद्दविजये य।
राया य आससेणे, सिद्धत्थेच्चिय खत्तिए ॥३॥
उदितोदितकुलवंसा[1], विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया।
तित्थप्पवत्तयाणं[2], एए पियरो जिणवराणं ॥४॥

२२१. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तं जहा—

मरुदेवा विजया सेणा, सिद्धत्था मंगला सुसीमा य।
पुहवी लक्खण रामा, नंदा विण्हू जया सामा ॥१॥
'सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिया देवी पभावई।
पउमा वप्पा सिवा य, वामा तिसला देवी य जिणमाया'[3] ॥२॥

२२२. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा—उसभे अजिते[4] °संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे° वद्धमाणे य ॥

२२३. एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

पढमेत्थ वइरणाभे, विमले तह विमलवाहणे चेव।
तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ॥१॥
सुंदरबाहू तह दीहबाहू, जुगबाहू लट्ठबाहू य।
दिण्णे य इंददत्ते, सुंदर माहिंदरे[5] चेव ॥२॥
सीहरहे मेहरहे, रुप्पी य सुदंसणे य बोद्धव्वे।
तत्तो य नंदणे खलु, सीहगिरी चेव वीसइमे ॥३॥
अदीणसत्त संखे, सुदंसणे नंदणे य बोद्धव्वे।
ओसप्पिणीए[6] एए, तित्थकराणं तु[7] पुव्वभवा ॥४॥

---

[1] °कुलवंस (क); °कुलदसा (ग)।

[2] °पवत्तणायाणं (ख); °प्पवत्तणयाणं (ग); ('ख' प्रतौ अग्रेपि एवम्)।

[3] सुजसा सुव्वय अइरा, सिरि देवी य पभावइ। पउमावती य वप्पा, सिव वंमा तिसलाइय (ग—हस्तलिखित वृत्ति)।

[4] सं० पा०—अजित जाव वद्धमाणे।

[5] महिमंदरे (क)।

[6] ओसप्पिणीय (क)।

[7] × (ग)।

२२४. एएसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं सीया होत्था, तं जहा—

सीया सुदंसणा सुप्पभा य, सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया चेव[1] ॥१॥

अरुणप्पभ चंदप्पभ[2], 'सूरप्पह अग्गिसप्पभा'[3] चेव ।
विमला य पंचवण्णा, सागरदत्ता तह णागदत्ता य[4] ॥२॥

अभयकर णिव्वुतिकरी, मणोरमा तह[5] मणोहरा चेव ।
देवकुरु उत्तरकुरा, विसाल चंदप्पभा सीया ॥३॥

एयातो सीयाओ, सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं ।
सव्वजगवच्छलाणं, सव्वोतुयसुभाए छायाए ॥४॥

पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहि साहट्ठरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीयं, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥५॥

चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवंदियाणं, वहंति सीयं जिणिंदाणं[6] ॥६॥

पुरओ वहंति देवा, नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि ।
पच्चत्थिमेण असुरा, गरुला पुण उत्तरे पासे ॥७॥

२२५. उसभो य विणीयाए, बारवईए अरिट्ठवरणेमी ।
अवसेसा तित्थयरा, निक्खंता जम्मभूमीसु ॥१॥

२२६. सव्वेवि एगदूसेण, णिग्गया जिणवरा चउवीसं ।
ण य णाम अण्णलिंगे, ण य गिहिलिंगे कुलिंगे व ॥१॥

२२७. एक्को भगवं वीरो, पासो मल्ली य तिहिं-तिहिं सएहिं ।
भयवंपि वासुपुज्जो, छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ॥१॥

उग्गाणं भोगाणं, राइण्णाणं च खत्तियाणं च ।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो, सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥२॥

२२८. सुमइत्थ णिच्चभत्तेण, णिग्गओ वासुपुज्जो जिणो चउत्थेणं ।
पासो मल्ली वि य, अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेणं ॥१॥

२२९. एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमभिक्खादया[7] होत्था, तं जहा—

---

[1] × (ख) ।
[2] × (ख); ओदप्पह (ग) ।
[3] सूरप्पभ सुंकप्पभ अग्गिसप्पभा (ख); सूरप्पह सुंदरप्पह अग्गिप्पभा (ग) ।
[4] × (ख) ।
[5] × (ख, ग) ।
[6] जिणंदाणं (ग) ।
[7] °दायरो (ख); °देया (ग); °दायारो(क्व) ।

सेज्जंसे[1] बंभदत्ते, सुरिंददत्ते य इंददत्ते य ।
'तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य'[2] ॥१॥
पुस्से पुणव्वसू पुण्णणंद[3], सुणंदे जये य विजये य ।
'पउमे य सोमदेवे, महिंददत्ते य सोमदत्ते य'[4] ॥२॥
अपरातिय वीससेणे, वीसतिमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्ते, धन्ने[5] बहुले य आणुपुव्वीए ॥३॥
एते विसुद्धलेसा, जिणवरभत्तीए[6] पंजलिउडा य ।
तं कालं तं समयं, पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥४॥

२३०. संवच्छरेण भिक्खा, लद्धा उसभेण लोगणाहेण ।
सेसेहिं बीयदिवसे, लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥१॥
उसभस्स पढमभिक्खा, खोयरसो आसि लोगणाहस्स ।
सेसाणं परमण्णं, अमयरसरसोवमं[7] आसि ॥२॥
सव्वेसिपि जिणाणं, जहियं लद्धाओ पढमभिक्खातो ।
तहियं वसुधाराओ, सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥३॥

२३१. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं चेइयरुक्खा होत्था, तं जहा—

णग्गोह-सत्तिवण्णे, साले पियए[8] पियंगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे, माली[9] य पिलंखुरुक्खे य ॥१॥
तेंदुग पाडल जंबू, आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे ।
णंदीरुक्खे तिलए य[10] अंबयरुक्खे असोगे य ॥२॥
चंपय वउले य तहा, वेडसिरुक्खे[11] धायईरुक्खे ।
साले य वड्ढमाणस्स, चेइयरुक्खा जिणवराणं ॥३॥
बत्तीसइं[12] धणूइं, चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो, ओच्छण्णो सालरुक्खेणं ॥४॥
तिण्णे व गाउयाइं, चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स ।
सेसाणं पुण रुक्खा, सरीरतो बारसगुणा उ ॥५॥

---

१. सेज्जंस (क) ।
२. पउमे य सोमदेवे, माहिंदे तह सोमदत्ते य (क्व) ।
३. °णंदे (ग) ।
४. तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्त तह वग्गसीहे अ (क्व) ।
५. धम्मे (क) ।
६. °भत्तीय (क, ग) ।
७. अमिय° (क्व) ।
८. पियाले (क) ।
९. साली (ख) ।
१०. × (क) ।
११. वडेस° (क्व) ।
१२. बत्तीसं (ग) ।

सच्छत्ता सपडागा, सवेइया तोरणेहिं उववेया ।
सुरअसुरगरुलमहिया, चेइयरुक्खा जिणवराणं ।।६।।

२३२. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसीसा होत्था, तं जहा—

पढमेत्थ उसभसेणे, बीए पुण होइ सीहसेणे उ ।
चारू य वज्जणाभे, चमरे तह सुव्वते[1] विदब्भे ।।१।।
दिण्णे वाराहे पुण, आणंदे[2] गोथुभे सुहम्मे य ।
मंदर जसे अरिट्ठे, चक्काउह सयंभु कुंभे य ।।२।।
'भिसए य इंद कुंभे'[3], वरदत्ते दिण्ण इंदभूती य ।
उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं, पढमा सिस्सा जिणवराणं ।।३।।

२३३. एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सिणीओ होत्था, तं जहा—

बंभी फग्गू[4] सम्मा[5], अतिराणी[6] कासवी रई सोमा ।
सुमणा वारुणि सुलसा, धारिणि धरणी य धरणिधरा ।।१।।
पउमा सिवा सुई अंजू, भावियप्पा य रक्खिया ।
बंधू[7]-पुप्फवती चेव, अज्जा धणिला[8] य आहिया ।।२।।
जक्खिणी पुप्फचूला य, चंदणऽज्जा य आहिया ।
उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं, पढमा सिस्सी जिणवराणं ।।३।।

चक्कवट्टि-पदं

२३४. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिपियरो होत्था तं जहा—

उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए य 'अस्ससेणे य'[9] ।
विस्ससेणे य सूरे, सुदंसणे कत्तवीरिए य ।।१।।

---

[1] सुज्जय (ग) ।
[2] आणंदे पुण (ख) ।
[3] इंदे कुंभे य सुभे (क्व) ।
[4] फग्गुण (ख) ।
[5] सामा (क्व) ।
[6] अजिया (क्व) ।
[7] बंधूवती (क, ख) ।
[8] वणिला (ग); अमिला (क्व) ।
[9] × (क, ख, ग); सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु 'अस्ससेणे' पाठो नास्ति 'ख' प्रतौ पाठान्तररूपेणासौ लिखितोऽस्ति । किन्तु 'विस्ससेण' पंचमचक्रवर्तिश्रीशान्तिनाथस्य पितुर्नामास्ति । यदि 'अस्ससेणे' पाठो न स्वीक्रियते तदा 'विस्ससेणे' चतुर्थचक्रवर्तिनः पितुर्नाम भवेत् । आवश्यकनिर्युक्तावपि 'अस्ससेणे' पाठो लभ्यते तेनासौ पाठः स्वीकृतः । आवश्यकनिर्युक्तौ

पउमुत्तरे महाहरी, विजए राया तहेव य ।
बम्हे बारसमे वुत्ते, पिउनामा चक्कवट्टीणं ॥२॥

२३५. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तं जहा—

सुमंगला जसवती, भद्दा सहदेवी अइर सिरि देवी ।
'तारा जाला'[1] मेरा, वप्पा चुलणी अपच्छिमा ॥१॥

२३६. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था, तं जहा—

भरहो सगरो मघवं, सणंकुमारो य रायसद्दूलो ।
संती कुंथू य अरो, हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥१॥
नवमो य महापउमो, हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ।
जयनामो य नरवई, बारसमो बंभदत्तो य ॥२॥

२३७. एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था, तं जहा—

पढमा होइ सुभद्दा[2], भद्दा[3] सुणंदा जया य विजया य ।
कण्हसिरी सूरसिरी, पउमसिरी वसुंधरा देवी ॥१॥
लच्छिमई कुरुमई, इत्थिरयणाण नामाइं ॥

बलदेव-वासुदेव-पदं

२३८. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपितरो होत्था, तं जहा—

गाथाद्वयमित्थमस्ति—

उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए अ अस्ससेणे य ।
तह वीससेण सूरे, सुदंसणे कत्तविरिए अ ॥३९९॥
पउमुत्तरे महाहरि, विजए राया तहेव बंभे य ।
ओसप्पिणी इमीसे, पिउनामा चक्कवट्टीणं ॥३४०॥

आदर्शगतं गाथाद्वयं चेत्थम्—

उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए य विस्ससेणे य ।
सूरिए सुदंसणे पउमुत्तर कत्तवीरिए चेव ॥
महाहरी य विजए य, पउमे राया तहेव य ।
बम्हे बारसमे वुत्ते, पिउनामा चक्कवट्टीणं ॥

[1] जाला तारा (क, ख, ग) । आदर्शेषु नाम-विपर्ययो विद्यते ।

[2] सुहद्दा (क) ।

[3] भद्द (ग) ।

पयावती य बंभे, रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसिहे अग्गिसिहे, दसरहे नवमे य वसुदेवे[1] ॥१॥

२३९. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमोसे ओसप्पिणीए णव वासुदेवमायरो होत्था, तं जहा—

मियावई उमा चेव, पुहवी सीया य अम्मया ।
लच्छिमती सेसवती, केकई देवई इय ॥१॥

२४०. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेवमायरो होत्था, तं जहा—

भद्दा तह सुभद्दा य, सुप्पभा य सुदंसणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराइया ॥१॥
णवमिया[2] रोहिणी, बलदेवाण मायरो ॥

२४१. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव दसारमंडला[3] होत्था, तं जहा—उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी[4] कंता सोमा सुभगा पियदंसणा[5] सुरूवा[6] सुहसीला सुहाभिगमा सव्वजण-णयण-कंता ओहबला अतिबला महाबला अणिहता अपराइया सत्तु-मद्दणा रिपुसहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचंडा मिय-मंजुल-पलाव-हसिया गंभीर-मधुर-पडिपुण्ण-सच्चवयणा अब्भुवगय-वच्छला सरण्णा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजात-सव्वंग-सुंदरंगा ससि-सोमागार-कंत-पिय-दंसणा अमसणा[7] पयंडदंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा तालद्धओव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणु-विकड्ढगा[8] महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्ध-कित्तिपुरिसा विउलकुल-समुब्भवा महारयण[9]-

---

[1] एषा गाथा स्थानाङ्गस्य नवमस्थानात् स्वीकृतास्ति । समवायाङ्गहस्तलिखितवृत्तौ निम्नप्रकारासौ वर्तते—

पयावई य बंभो सोमो,
रुद्दो सिवो महसिरो य ।
अग्गिसिहो य दसरहो,
नवमो भणिओ य वसुदेवो ॥

अस्यां गाथायां 'रोद्दे सोमे' नाम्नोर्विपर्ययोस्ति । आवश्यकनिर्युक्तावपि स्थानाङ्गस्य समर्थनं लभ्यते—

हवइ पयावइ बंभो,
रुदो सोमो सिवो महासिवो य ॥
अग्गिसीहे अ दसरहे,
नवमे भणिए अ वसुदेवे ॥४१॥

[2] नवमिया य (ग) ।

[3] दसारमंडणा (वृपा) ।

[4] जोयसी (ग) ।

[5] सुदंसणा (ग) ।

[6] सुत्तवा (क) ।

[7] अमरिसणा (क्व) ।

[8] विगरसगा (ग) ।

[9] महारण (वृपा) ।

विहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल-वंस-तिलया अजिया अजियरहा हल-मुसल-कणग-पाणी संख-चक्क-गय-सत्ति-नंदगधरा पवरुज्जल-सुक्कंत[1]-विमल-गोथुभ-तिरीडधारी कुंडल-उज्जोइयाणणा पुंडरीय-णयणा एकावलि-कंठलइय-वच्छा सिरिवच्छ-सुलंछणा वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइत-पलंबसोभंत-कंत-विकसंत-चित्त[2]-वरमाल-रइयवच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण-पसत्थ-सुंदर-विरइयंगमंगा मत्तगयवरिंद-ललिय-विक्कम-विलसियगई सारय-नवथणियमधुर-गंभीर-कोंचनिग्घोस-दुंदुभिसरा कडिसुत्तगनील-पीय-कोसेयवाससा पवरदित्त-तेया[3] नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभकप्पा अब्भहियं राय-तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

तिविट्ठू य[4] °दुविट्ठू य, सयंभू पुरिसुत्तमे ।
पुरिससीहे तह पुरिसपुंडरीए दत्ते नारायणे°कण्हे ।।१।।
अयले[5] °विजए भद्दे, सुप्पभे य सुदंसणे ।
आणंदे णंदणे पउमे°, रामे यावि[6] अपच्छिमे ।।२।।

२४२. एतेसि णं णवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था, तं जहा—

विस्सभूई पव्वयए, धणदत्त समुद्ददत्त सेवाले ।
पियमित्त[7] ललियमित्ते, पुणव्वसू गंगदत्ते य ।।१।।
एयाइं नामाइं, पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं ।
एत्तो बलदेवाणं, जहक्कमं कित्तइस्सामि ।।२।।
विसनंदी सुबंधू य, सागरदत्ते असोगललिए य ।
वाराह धम्मसेणे, अपराइय रायललिए य ।।३।।

२४३. एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभविया[8] नव धम्मायरिया होत्था, तं जहा—

संभूत[9] सुभद्दे[10] सुदंसणे, य सेयंसे कण्ह गंगदत्ते य ।
सागरसमुद्दनामे, दुमसेणे य णवमए ।।१।।

---

[1] सुकय (वृपा) ।
[2] विचित्त (ग) ।
[3] कोसेयज्ज° (ग) ।
[4] सं० पा०—तिविट्ठू य जाव कण्हे ।
[5] सं० पा०—अयले जाव रामे ।
[6] य (ख) ।
[7] पियमेत्त (क); पियमित्ते (ग) ।
[8] पुव्वभवियाए (क); पुव्वभवे (ग) ।
[9] संभूते (ख, ग) ।
[10] सुभद्द (ग) ।

एते धम्मायरिया, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
पुव्वभवे आसिण्हं[1], जत्थ निदाणाइं कासी य ॥२॥

२४४. एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव निदाणभूमिओ होत्था, तं जहा—
महुरा य[2] °कणगवत्थू, सावत्थी पोयणं च रायगिहं ।
कायंदी कोसंबी, मिहिलपुरी °हत्थिणपुरं च ॥१॥

२४५. एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था, तं जहा—
गावी जुवे[3] °य संगामे इत्थी पराइयो रंगे ।
भज्जाणुराग गोट्ठी, परइड्ढी° माउया इय ॥१॥

२४६. एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था, तं जहा—
अस्सग्गीवे[4] °तारए, मेरए महुकेढवे निसुंभे य ।
बलिपहराए(रणे?)तह रावणे य नवमे° जरासंधे ॥१॥
एए खलु पडिसत्तू[5], °कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि चक्कजोही, सव्वे वि हया° सचक्केहिं ॥२॥

२४७. एक्को य सत्तमाए, पंच य छट्ठीए पंचमा एक्को ।
एक्को य चउत्थीए, कण्हो पुण तच्चपुढवीए ॥१॥
अणिदाणकडा रामा, सव्वेवि य केसवा नियाणकडा ।
उड्ढंगामी रामा, केसव सव्वे अहोगामी ॥२॥
अट्ठंतकडा रामा, एगो पुण बंभलोयकप्पंमि ।
एक्का से गब्भवसही, सिज्झिस्सइ आगमेस्साणं[6] ॥३॥

एरवय-तित्थगर-पदं

२४८. जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा—
चंदाणणं सुचंदं च, अग्गिसेणं च नंदिसेणं[7] च ।
इसिदिण्णं वयहारिं[8], वंदिमो सामचंदं च ॥१॥
वंदामि जुत्तिसेणं[9], अजियसेणं[10] तहेव सिवसेणं[11] ।
बुद्धं च देवसम्मं[12], सययं[13] निक्खित्तसत्थं[14] च ॥२॥

---

[1] आसिनवण्हं (ख) ।
[2] सं० पा०—महरा य जाव हत्थिणपुरं ।
[3] सं० पा०—जुवे जाव माउया ।
[4] सं० पा०—अस्सगीवे जाव जरासंधे ।
[5] सं० पा०—पडिसत्तू जाव सचक्केहिं ।
[6] आगमिस्सेणं (वृ); आगमेस्साणं (वृपा) ।
[7] अत्तसेणं (वृपा) ।
[8] वयहारिं च (वृपा) ।
[9] क्वचिदयं दीहबाहुं, दीहसेणं वोच्यते (वृ) ।
[10] सयाउं (वृपा) ।
[11] सच्चसेणं, सच्चइ (वृपा) ।
[12] देवसेणं (वृपा) ।
[13] सिद्धं (ग) ।
[14] निक्खित्तसत्तं (ग); सेज्जंसं (वृपा) ।

असंजलं[1] जिणवसहं, वंदे य अणंतयं[2] अमियणाणिं।
उवसंतं च धुयरयं, वंदे खलु गुत्तिसेणं च ॥३॥
अतिपासं च सुपासं, देवेसरवंदियं च मरुदेवं।
णिव्वाणगयं च धरं[3], खीणदुहं सामकोट्ठं[4] च ॥४॥
जियरागमग्गिसेणं, वंदे खीणरयमग्गिउत्त च।
वोक्कसियपेज्जदोसं, च वारिसेणं गयं सिद्धिं ॥५॥

भावि-कुलगर-पदं

२४९. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति, तं जहा—

मित्तवाहणे[5] सुभूमे य, सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमेस्साण होक्खति[6] ॥१॥

२५०. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए ओसप्पिणीए[7] दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा—

विमलवाहणे सीमंकरे, सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे।
दढधणू[8] दसधणू, सयधणू पडिसूई संमुइत्ति[9] ॥१॥

भावि-तित्थगर-पदं

२५१. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा—

महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयंपभे।
सव्वाणुभूई अरहा, देवउत्ते[10] य होक्खति ॥१॥
उदए पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सतएति[11] य।
मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविदू जिणे ॥२॥
अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे।
चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्साए होक्खइ ॥३॥
संवरे अणियट्टी य, विजए विमलेति य।
देवोववाए अरहा, अणंतविजए ति य ॥४॥

---

[1] सयंजलं (वृपा)।
[2] सीहसेणं (वृपा)।
[3] वरं (ग)।
[4] सामकोहं (ग)।
[5] सित्तवाहणे (ग)।
[6] होक्खंति (ग)।
[7] उस्सप्पिणीए एरवए वासे (क्व)।
[8] अट्ठधणु (ग)।
[9] सुमइत्ति (क्व)।
[10] देवस्सुए (क्व)।
[11] सत्तकित्ति (क्व)।

एए वुत्ता चउवीसं, भरहे वासम्मि केवली ।
आगमेस्साण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥५॥

२५२. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं पुव्वभविया चउवीसं नामधेज्जा भविस्संति[१], तं जहा—

सेणिय सुपास उदए, पोट्टिल अणगारे तह दढाऊ य ।
कत्तिय संखे य तहा, नंद सुनंदे सतए य बोद्धव्वा ॥१॥
देवई च्चेव सच्चइ, तह वासुदेव बलदेवे ।
रोहिणि सुलसा चेव, तत्तो खलु रेवई चेव ॥२॥
तत्तो हवइ मिगाली[२], बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य ।
दीवायणे य कण्हे, तत्तो खलु नारए चेव ॥३॥
'अंबडे दारुमडे य'[३], साई बुद्धे य होइ बोद्धव्वे ।
'उस्सप्पिणी आगमेस्साए, तित्थगराणं तु पुव्वभवा'[४] ॥४॥

२५३. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पियरो भविस्संति, चउवीसं मायरो भविस्संति, चउवीसं पढमसीसा भविस्संति, चउवीसं पढमसिस्सिणीओ भविस्संति, चउवीसं पढमभिक्खादा भविस्संति, चउवीसं चेइयरुक्खा भविस्संति ॥

भावि-चक्कवट्टि-पदं

२५४. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टी भविस्संति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

भरहे य दीहदंते, गूढदंते य सुद्धदंते य ।
सिरिउत्ते सिरिभूई, सिरिसोमे य सत्तमे ॥१॥
पउमे य महापउमे, विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव ।
रिट्ठे बारसमे वुत्ते, आगमेसा भरहाहिवा ॥२॥

२५५. एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ॥

भावि-बलदेव-वासुदेव-पदं

२५६. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्संति, नव वासुदेवमायरो भविस्संति, नव बलदेवमायरो भविस्संति

---

[१] होत्था (ख) ।
[२] मिमाली (क); सयाली (क्व) ।
[३] तत्तो दारुपडिया (क); अंबडे दारुपडे या (ख) ।
[४] भावीतित्थगराणं णामाइं पुव्वभवियाइं (क्व) ।

नव दसारमंडला भविस्संति, तं जहा—उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसो एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव[1] नीलग-पीतगवसणा दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

नंदे य नंदमित्ते, दीहबाहू तहा महाबाहू।
अइबले महाबले, बलभद्दे य सत्तमे ॥१॥
दुविट्ठू य तिविट्ठू य, आगमेसाण वण्हिणो।
जयंते विजए भद्दे, सुप्पभे य सुदंसणे।
आणंदे नंदणे पउमे, संकरिसणे य अपच्छिमे ॥२॥

२५७. एएसि णं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति, नव धम्मायरिया भविस्संति, नव नियाणभूमीओ भविस्संति, नव नियाणकारणा भविस्संति, नव पडिसत्तू भविस्संति, तं जहा—

तिलए य लोहजंघे, वइरजंघे य केसरी पहराए।
अपराइए य भीमे, 'महाभीमे य सुग्गीवे'[2] ॥१॥
एए खलु पडिसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
सव्वेवि[3] चक्कजोही, हम्मिहिंति सचक्केहिं[4] ॥२॥

एरवय-भावि-तित्थगर-पदं

२५८. जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थकरा भविस्संति, तं जहा—

सुमंगले 'य सिद्धत्थे'[5], णिव्वाणे य महाजसे।
धम्मज्झए य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥१॥
सिरिचंदे पुप्फकेऊ, महाचंदे य केवली।
सुयसागरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥२॥
सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली।
सच्चसेणे य अरहा, 'आगमिस्साण होक्खइ ॥३॥
सूरसेणे य अरहा, महासेणे'[6] य केवली।
सव्वाणंदे य अरहा, देवउत्ते[7] य होक्खइ ॥४॥

---

[1] प० सू० २४१।
[2] महाभीमसेणे य सुग्गीवे य अपच्छिमे (ग)।
[3] सव्वेय (ग)।
[4] सच्चकेणं (ग)।
[5] अत्थ सिद्धे य (ग)।
[6] अणंत विजए इय इय सूरसेणे महासेणे देवसेणे (ग)।
[7] देवदत्ते (ग)।

सुपासे सुव्वए अरहा, 'अरहे य सुकोसले ।
अरहा अणंतविजए, आगमिस्साण होक्खइ'[1] ॥५॥
विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महाबले ।
'देवाणंदे य'[2] अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥६॥
एए वुत्ता चउव्वीसं, एरवयम्मि[3] केवली ।
आगमिस्साण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥७॥

एरवय-भावि-चक्कवट्टि-बलदेव-वासुदेव-पदं

२५९. बारस चक्कवट्टी भविस्संति, बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।

नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति, णव वासुदेवमायरो भविस्संति, णव बलदेवमायरो भविस्संति, णव दसारमंडला भविस्संति, उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव[4] दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति, णव पडिसत्तू भविस्संति, नव पुव्वभवणामधेज्जा, णव धम्मायरिया, णव णियाणभूमीओ, णव णियाणकारणा, आयाए, एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ॥

२६०. एवं दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ॥

निक्खेव-पदं

२६१. इच्चेयं एवमाहिज्जति[5], तं जहा—कुलगरवंसेति य, एवं तित्थगरवंसेति य चक्कवट्टिवंसेति व दसारवंसेति य गणधरवंसेति य इसिवंसेति य जतिवंसेति य मुणिवंसेति य सुतेति वा सुतंगेति वा सुयसमासेति वा सुयखंधेति वा समाएति[6] वा संखेति वा । समत्तमंगमक्खायं अज्झयणं ।

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ७१७२० ।
अनुष्टुप् श्लोक २२४१, अक्षर ८ ।

---

[1] ए महासुक्के य सुकोसले । देवाणंदे अरहा अणंत विजए इय (ग) ।

[2] देवोववाए (ग) ।

[3] एरवतवासंमि (ग) ।

[4] प० सू० २४१ ।

[5] °हिज्जंति (क, ख, ग) ।

[6] सामाएति (ग); समवाएइ (क्व) ।

परिशिष्टः

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

आयारो

संक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अहमसी जाव अण्णयरीओ	१।३	१।१
आगममाणे जाव समत्तमेव	८।९५,९६,१२३,१२४	८।७८,८०
एवं जं परिघेतव्वं ति, मन्नसि जं	५।१०१	५।१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए बालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिजाए अट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गामं वा जाव रायहाणिं	८।१२६	८।१०६
जाएज्जा जाव एवं	८।६४-६७	८।४४-४८
धारेज्जा जाव गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था	८।२३	८।२१
समारब्भ जाव चेएइ	८।२४	८।२३

आयारचूला

संक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतलिक्खजाए जाव णो	५।३७,३८	५।३६
अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं	४।११	४।१०
अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति	३।६१	२।२२
अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	३।९	२।२२
अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं	५।४७	५।४६

अणेगाहगमणिज्जं जाव णो गमणाए	३।१३	३।१२
अणेसणिज्जं जाव णो	१।१७,६३,१०९,१३६	१।४
अणेसणिज्जं जाव लाभे	१।१०८,१२१	१।४
अणेसणिज्जं···णो	१।२१	१।४
अणेसणिज्जं···लाभे	१।८५,९७;८।१;९।१	१।४
अणेसणिज्जं···लाभे संते जाव[1] णो	१।१३५	१।४
अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति	२।५१	२।२२
अण्णयरं जहा पिंडेसणाए	७।५६	१।१५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३४,३५	७।२७,२८
अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं	१।२१,५।१२	१।१७
अपुरिसंतरकडं जाव णो	१।२४	१।१७;१।४
अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा··· अन्नयरंसि	१०।९	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए (ते)	२।१०,१२	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव णो	२।१४,१६	२।८
अपुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविते	२।३	१।१२
अप्पंडए जाव संताणए	१।१३५	१।२
अप्पंडं जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३७,३८	७।३०,३१
अप्पंडं जाव मक्कडा	९।२	१।२
अप्पंडं जाव संताणगं (यं)	२।५८-६१,६९;५।२९,३०;७।२७,२८,३०,३१,३४	१।२
अप्पंडा जाव संताणगा	१।४३;३।५	१।२
अप्पंडे जाव चेतेज्जा	२।३२	२।२
अप्पापाणं जाव संताणगं	२।२	१।२
अप्पपाणंसि जाव मक्कडा	१०।२८	१।२
अप्पबीयं जाव मक्कडा	१०।३	१।२
अप्पुस्सुए जाव समाहीए	३।२६,५९,६१	३।२२
अफासुयं जाव णो	१।१२,६४,८२,८३,८७,९२,९६, १०७,११०,१११,१२८,१३३; २।४८;५।२२,२३,२५,२८,२९; ६।२६,४६;७।२६,२७,२९,३०	१।४
अफासुयं जाव लाभे	१।१०६	१।४
अफासुयं···लाभे	१।८४,१०२,१०४,१२३	१।४
अफासुयाइं जाव णो	६।१३,१४	१।४

---

[1] १. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओदगादि कंदादि तहेव	६।२२-२५	५।२३-२५
अभिकंखसि सेसं तहेव जाव णो	५।२४	५।२३
अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	१५।४७,४८	१५।४४
अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज	२।१९,४६	१।८८
अयं तेण तं चेव जाव गमणाए	३।११	३।९,१०
अयवंधणाणि वा जाव चम्मवंधणाणि	६।१४	६।१३
असणं वा ४ अफासुयं	१।९२	१।९७
असणं वा ४ जाव लाभे	१।९०	१।४
असणं वा ४ लाभे	१।३६,४१,८८,९१	१।४
असत्थपरिणयंजाव णो	१।११३,११५-११९	१।९२;१।४
असावज्जं जाव भासेज्जा	४।२२	४।११
अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियंसमुद्दिस्स अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा जाव वहिया णीहडं वा अणीहडं वा	१०।४-८	१।१२-१६
आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा	३।५५	३।५४
आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि	३।४७	२।३६
आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु	२।३४,३५	२।३३
आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि	७।४६,४७	७।२३,२४
आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज	३।३९;६।४८	१।५१
आयरिए वा जाय गणावच्छेइए	१।१३१	१।१३०
इक्कडे वा जाव पलाले	२।६५;७।५४	२।६३
ईसरे जाव एवोग्गहियंसि	७।३२,३३	७।२५,२६
उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण	२।७२	१।१३०
एवं अतिरिच्छच्छिन्ने वि तिरिच्छच्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा	७।४४,४५	७।३०,३१
एवं आउतेउवाउवणस्सइ	२।४१	२।४१

एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि	१२।२-१७	११।५-२०
एवं तसकाए वि	१।६८	१।९२
एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा	४।१९	४।१९
एवं बहवे साहम्मियया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ	२।४,५,६	२।३
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणस्स तहेव, पुरिसंतरं जहा पिंडेसणाए	५।६-११	१।१३-१८
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा	१।१३-१५	१।१२
एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा अहपुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए	५।४३-४५	१३८-४०
एवं वहिया बियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा बिइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे	६।५१-५८	५।४३-५०
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति	८।२-१५	२।२-१५
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगप्पसूयाइंति	९।३-१५	२।३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३।४०-७५	१३।३-३८
एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा	१।१८,२३;२।६४	१।५
एसणिज्जं जाव लाभे	१।७,१४३	१।५
एसणिज्जं···लाभे	२।६३;९।२	१।५
एस पइन्ना···जं	६।२८,४५	१।५६
ओवयंतेहि य जाव उप्पिजलगभूए	१५।४०	१५।१९
कंदाणि वा जाव बीयाणि	१०।१५	२।१४
कंदाणि वा जाव हरियाणि	५।२५	२।१४
कसिणे जाव समुप्पणे	१५।४०	१५।३८

कुट्टीति वा जाव महुमेहणी	४।१९	आयारो ६।८
कुलियंसि वा जाव णो	७।१२	५।३७
खंधंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे जाव णो	७।१३	५।३८
खलु जाव विहरिस्सामो	७।२५	७।२३
गंडं वा जाव भगंदलं	१३।३०-३३	१३।२८
गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए…तओ	५।४८	३।५९
गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं	५।४९	३।५९
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि	१५।६४	१५।५७
गामं वा जाव	७।२	१।२८
गामं वा जाव रायहाणिं	१।३४,१२२;२।१;३।२;८।१	१।२८
गामंसि वा जाव रायहाणिंसि	१।३४,१२२;३।२	१।२८
गामे वा जाव रायहाणी	३।४५,५७	१।२८
गाहावइं वा जाव कम्मकरिं	१।६३,५।१८;६।१७	१।२५
गाहावइ-कुलं जाव पविट्ठे	१।१६,१७	१।१
गाहावइ-कुलं जाव पविसितुकामे	१।८,४४	१।१९
गाहावइ-कुलं…पविसितुकामे	१।३७	१।१९
गाहावई वा जाव कम्मकरीओ	१।१२१, १२२, १४३; २।२२,३६,५१;७।१६	१।४६
गोलेति वा इत्थी गमेणं णेतव्वं	४।१४	४।१२
छत्तए वा जाव चम्मछेदणए	७।२४	२।४६
छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं	३।२४	२।४६
जवसाणि वा जाव सेणं	३।५६	३।४३
जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं	२।१२	१।२९
जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४५;५।१९;६।१६,१७	१।१४१
जाएज्जा जाव विहरिस्सामो	७।४९	७।२३
जावज्जीवाए जाव वोसिरामि	१५।५७	१५।४३
जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा	१०।१४	१।५१
झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि	१५।१;५।३९	१।३
झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय	१।१३५	१।३
ठाणं…चेतेज्जा	२।२८,२९	२।१
ठाणं वा जाव चेतेज्जा	२।२७,५१-५५	२।१
णगरं वा जाव रायहाणिं	८।१	१।२८

णगरस्स वा जाव रायहाणीए	३।५८	१।२८
णिक्खमणपवेसाए जाव धम्माणुओग	७।१४	१।४२
तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तंजहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अंस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहेज्जा	१।१४८-१५४	१।१४१-१४७
तहप्पगारं जाव णो	१।११४	१।४,९२
तहप्पगाराइं णो	११।१२-१४,१६	१।१५
तहप्पगाराइं···सद्दाइं···णो	११।७-११,१५	१।१५
तहेव तिन्निवि आलाधगा णवर ल्हसुणं	७।३९-४२	७।२५-२८
दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं	७।३	२।४६
दस्सुगायतणाणि जाव विहारवत्तियाए	३।९	३।८
दुब्बद्धे जाव णो	७।११	५।३६
देज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४४	१।१४१
देज्जा जाव[1] फासुयं···पडिगाहेज्जा	१।१४७	१।१४१
देज्जा जाव[2] फासुयं···लाभे	५।१८	१।१४१
दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ	१।२४	१।२१
निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु०	३।२	१।४२
निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्तं वत्थपडियाए	५।५०	३।६१
पइण्णा जाव जं	२।१६,२२;६।२८,४५	१।५६
पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा	३।४८,४९	३।४७
पडिक्कमामि जाव वोसिरामि	१५।५०	१५।४३
पडिमं जहा पिंडेसणाए	६।२०	१।१५५
पडिमाणं जहा पिंडेसणाए	५।२१	१।१५५
पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं	८।२१-३०	२।६७-७६
पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए	२।६७	१।१५५

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

पण्णस्स जाव चिंताए	२।५०-५६;७।१५,२१	१।४२
पमज्जेत्ता जाव एगं	३।३४	३।१५
परक्कमे जाव णो	३।७	३।६
पागाराणि वा जाव दरीओ	३।४७	३।४१
पाडिपहिया जाव आउसंतो	३।५७	३।५४
पाणाइं जहा पिंडेसणाए	५।५	१।१२
पाणाइं जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा । पंचमे वहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्संजए भिक्खुपडियाए वहवे समगमहणा वत्थेसणालावओ	६।४-१२	१।१२-१८;५।५-१३
पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज	२।७१	१।८८
पायं वा जाव इंदिय	२।४६	१।८८
पायं वा जाव लूसेज्ज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं	१।७,१४४	१।६
पुढविकाए जाव तसकाए	१५।४२	२।४१
पुढवीए जाव संताणए	१।१०२;५।३५;७।१०	१।५१
पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसंतरकडं जाव बहिया णीहडं अण्णयरंसि	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव आसेविए	२।९,११,१३	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा	२।१५,१७	२।९
पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा	२।३०	२।२७
पुव्वोवदिट्ठा जाव जं	१।९१;२।२३,२४,२५,२७,२८,२९;३।९,१३,४९;५।२७	१।५६
पुव्वोवदिट्ठा जाव णो	१।९५	१।९१
पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं	३।५९	१।५२
फलिहाणि वा जाव सराणि	११।५	नि० १७।१४१
फासिए जाव आणाए	१५।५६	१५।४९
फासिए जाव आराहिए	१५।७०	१५।४९
फासुयं जाव पडिगाहेज्जा	१।२२,२५,८१,१००,१४६;५।२०,३०;७।२८,३१	१।५
फासुयं···पडिगाहेज्जा	१।१४१	१।५
फासुयं···लाभे संते जाव[1] पडिगाहेज्जा	१।१०१,१२८;५।१८	१।५
बहुकंटगं···लाभे संते जाव[2] णो	१।१३४	१।४

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते ।

बहुपाणा जाव संताणगा	३।४	१।२
बहुबीया जाव संताणगा	३।१	१।२
बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं	१।८२	१।६
भगवंतो जाव उवरया	२।२५	१।१२१
भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे	१।५,६,७,११,१२,४२,६२,९२,९६,९९, १०१,१०४,१०५,१०७-१०९,१११	१।१
भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव। एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे	१।९३,९४	१।९२
भिक्खू वा जाव पग्गहियं०	१।१४६	१।१४५
भिक्खू वा जाव पविट्ठे	१।२३,४९,५०,५२	१।१
भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं	११।१६	११।२
भिक्खू वा जाव समाणे	१।५३,५५,५८,६१,८३,८४,८७,८९, ९०,९७,१०२,१०६,११०,११२-११९, १२४,१२५,१२६,१३५,१३६, १४५,१४७,१५१	१।१
भिक्खू वा २ जाव सुणेति	११।१४,१५	११।२
भिक्खू वा···सेज्जं	१।८२,१२८,१३३,१३४,१४४	१।१
मणी वा जाव रयणावली	५।२७	२।२४
मणुस्सं जाव जलयरं	४।२६	४।२५
मत्ते तहेव दोच्चा पिंडेसणा	१।१४२	१।१४१
महद्धणमोल्लाइं···लाभे	५।१४	१।४
महव्वए···	१५।५६,६३,८४,९१	१५।४९
मासेण वा जहा वत्थेसणाए	६।२१	५।२२
मूलाणि वा जाव हरियाणि	१०।१२	२।१४
रज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७३,७४	१५।७२
रज्जेज्जा जाव णो	१५।७३,७४	१५।७२
लाढे जाव णो	३।१२	३।८
वएज्जा जाव परोक्खवयणं	४।४	४।३
वत्थाणि···लाभे	५।१५	१।४
वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि	४।२१	३।४७
वायण जाव चिंताए	२।४९	१।४२
वित्ती जाव रायहाणि	३।३	१।४३;३।२
सअंडं जाव णो	७।३३	७।२६

सअंडं जाव णो	७।३६,४३	७।२९
सअंडं जाव मक्कडा	८।१;९।१	१।२
सअंडं जाव संताणयं (गं)	२।१,५७,६८;५।२८;७।२६,२९	१।२
सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा	६।२९-४२	५।२८-३९
सअंडे जाव संताणए	२।३१	१।२
संतिभेया [दा] जाव भंसेज्जा	१५।६७,६८,६९,७५	१५।६५
संतिविभंगा जाव धम्माओ	१५।६६	१५।६५
संतिविभंगा जाव भंसेज्जा	१५।७३,७४	१५।६५
संथारगं···लाभे	२।५७,५८,५९,६०	१।४
संथारयं जाव लाभे	२।६१	१।५
सकिरिया जाव भूओवघाइया	१५।४६	१५।४५
सज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७५,७६	१५।७२
सज्जेज्जा जाव णो	१५।७५	१५।७२
सत्ताइं जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए	२।७,८	१।१६,१७
सपाणं जाव मक्कडा	१०।२	१।२
सपाणे जाव संताणए	१।५१	१।२
समण जाव उवागया	३।३,४	३।२
समणमाहण जाव उवागमिस्संति	१।४३	१।४२
समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि	१५।७१	१५।४३
समारंभेणं जाव अगणिकाए	२।४२	२।४१
सम्मं जाव आणाए	१५।६३	१५।४९
सयं वा जाव पडिगाहेज्जा	६।१८	१।१४१
सयं वा णं जाव पडिगाहेज्जा	६।१९	१।१४१
ससिणिद्धेण सेसं तं चेवं एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण	१।६५-८०	१।६४
सामग्गिय	१।४८,६०,८६,१०३,१२०,१२९,१३७; २।२६,४३	१।२०
सामग्गियं	३।४६;५।४०,५१;७।२२,५८	२।७७
सामग्गियं जाव जएज्जासि	८।३१;१०।२९;११।२०	२।७७

सावज्जं जाव णो	४।२१	४।१०
सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता	५।२३	२।२०
सिणाणेण वा जाव पधंसेज्ज	५।३१	२।२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदगवियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ	५।३३,३४	५।३१,३२
सिया जाव समाहीए	३।४४	३।२६
सिलाए जाव मक्कडासंताणए	१।८२	१।५१
सिलाए जाव संताणए	१।८३	१।५१
सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्ज	५।३२	२।२१
सीलमंता जाव उवरया	२।३८	१।१२१
से आगंतारेसु वा जाव	७।६,८	७।४
सेसं तं चेव, एयं खलु० जइज्जासि	१४।३-८०	१३।३-८०
हत्थं जाव अणासायमाणे	, ३।५०,५२	२।७४
हत्थं वा जाव सीसं	२।१९	१।८८
हत्थिजुद्धाणि वा जाव कविंजल	११।१२	१०।१८
हत्थिट्ठाणकरणाणि वा जाव कविंजल	११।११	१०।१८

सूयगडो

अकेवले जाव असव्वदुक्ख०	२।५७,६२	२।३२
अकोहे जाव अलोभे	४।२४	२।५८
अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू	१।९,१०	१।८
अगाराओ जाव पव्वइत्तए	७।२१	७।२०
अज्झारोहसंभवा जाव कम्माणियाणेणं	३।७,८,९	३।२
अणारिए जाव असव्वदुक्ख०	२।७५	३।३२
अणारिया वेगे जाव दुरूवा	१।४९	१।१३
अणिट्ठं जाव णो सुहं	१।५१	१।५०
अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव णो सुहे	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव दुक्खे	१।५१	१।५०
अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे	१।५	१।३
अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं	१।७,८,९	१।६
अणुपुव्वेणं जाव सुपण्णत्ते	१।२३-२५	१।१३-१५
अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा	७।२	७।५
अपच्छिमं जाव विहरित्तए	७।२९	७।२१

अपत्ते जाव अंतरा	१।१०	१।६
अपत्ते जाव सेयंसि	१।९	१।६
अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे	२।७१	२।५८
अभिगयजीवजीवे जाव विहरइ	७।४	२।७२
अवहरइ जाव समणुजाणइ	२।२५,२९,३०	२।२४
अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वाओ परिग्गहाओ	७।२२	२।५८

अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता तेहिं चेव
(१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४) रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं
(५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं
(६) अज्झोरुहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं
(८) तणजोणिएहिं तणेहिं
(९) तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(१०-१२) एवं ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा[1]
(१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि आलावगा
(१६) पुढविजोणिएहि वि आएहिं जाव कूरेहिं।
(१) उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४-६) एवं अज्झोरुहेहिं वि तिण्णि (७-९)
तणेहिं वि तिण्णि आलावगा (१०-१२)
ओसहीहिं वि तिण्णि (१३-१५) हरिएहिं वि
तिण्णि (१६) उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव
पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं, उदगजोणियाणं
रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं
तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं

---

[1] येषां चत्वारश्चत्वार आलापकास्तेषां तृतीय आलापको न ग्राह्यः।

हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झोरुहाणं तणाणं ओसहीण हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कूरवाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं । अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं जाव वीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कूरवजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं ।	३।४४-७५	३।२-४३
अहीणं जाव मोहरगाणं	३।७९	३।७९
आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज०	४।२१	१।५६
आयहेउं वा जाव परिवारहेउं	२।९	२।३
आयाणं जाव कूराणं	३।२२	३।२२
आयारो जाव दिट्ठिवाओ	१।३५	नंदी सू० ८०
आरिए जाव सव्वदुक्ख०	२।७०,७५	२।३२
अट्टसालाओ वा जाव गद्दभ०	२।२८	२।२३
उदगजोणिया जाव कम्म०	३।८७,८८	३।८६
उदगसंभवा जाव कम्म०	३।२३,४३,८६	३।२
उदाहु······संतेगइया	७।२०	७।१७
उस्साणं जाव सुद्धोदगाणं	३।८५	३।८५
ऊसियं जाव पडिरूवं	१।६	१।३
एगखुराणं जाव सणप्फयाणं	३।७८	३।७८
एवं उदगबुब्बुए भणियव्वे	१।३४	१।३४
एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा	३।१४-१७	३।२-५
एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थि	३।७८	३।७६
एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्व	४।११-१५	४।१०,३
एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति तणजोणियंतणसरीरं च आहारेंति जाव मक्खाय	३।१२	३।४

एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव वीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा जाव मक्खायं	३।१३	३।५
एवं दुरूव संभवत्ताए एवं खुरदगत्ताए	३।८३,८४	३।८२, चूर्णि, वृत्ति
एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं	३।११	३।३
एवं विण्णू वेदणा	१।५१	१।५१
एवं सद्दहमाणा जाव इति	१।३७,३८	१।२१,२२
एवं हरियाण वि चत्तारि आलावगा	३।१८-२१	३।२-५
एवमाइक्खंति जाव परूवेंति	२।७८,७९;७।११	२।४१
एवमेव जाव सरीरे	१।१७	१।१७
एसो आलोवगो तहा णेयव्वो जहा पोंडरीए जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्तिबेमि	२।३३-५४	१।४९-७०
कच्छंसि वा जाव पव्वयविदुग्गंसि	२।६	२।४
कण्हुईरहस्सिया जाव तओ	२।५६	२।१४
कम्म जाव मेहुणवत्तिए	३।७८	३।७६
कम्म तहेव जाव तओ	३।७७	३।७६
किंचिवि जाव आसंदीपेढियाओ	७।२१	७।२०
किव्विसियाइं जाव उववत्तारो	७।२५	२।१४
किरिया इ वा जाव अणिरए	१।२६,३६	१।२०
किरिया इ वा जाव णिरए इ वा जाव चउत्थे	१।४५-४७	१।२९-३१
कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं	१।७	१।६
केइ जाव सरीरे	१।१७	१।७
केवले जाव सव्वदुक्ख०	२।५५	२।३२
कोहाओ जाव मिच्छा०	२।५८	वृत्ति
कोहे जाव मिच्छा०	४।३	२।५८
खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू	१।९,१०	२।६
गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं	२।२९	२।२४
गाहावइस्स जाव तस्स	४।६	४।५
गोहाणं जाव मक्खायं	३।८०	३।८०,२
चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं	३।८१	३।८१,२
चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा	७।२१	७।२०

जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा	३।९३-९६	३।८९-९२
जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं	३।८०	३।७९
जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं	३।८१	३।७९
जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारिगमा अज्झारोहणवि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के	३।२४-४२	३।३-२१
जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते	२।५८	२।१२
जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे	२।६३	२।५८
जावज्जीवाए जाव सव्वाओ	२।५८	ओ० सू० १६३
जीवणिकाएहिं जाव कारवेइ	४।१६	४।१६
झामेइ जाव झामेंतं	२।२६	२।२१
झामेइ जाव समणुजाणइ	२।२८	२।२३
णाणागंधा जाव णाणाविह०	३।५	३।२
णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणापण्णे जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणावण्णा जात ते जीवा	३।४	३।२
णाणावण्णा णाव भवंति	३।७६	३।२
णाणावण्णा जाव मक्खायं	३।६-९,२२,२३,४३,७७-७९, ८२,८५-८९,९७	३।२
णाणाविहजोणिया जाव कम्म०	३।८५,८९,९३,९७	३।८२
णो पाराए जाव सेयंसि	१।८	१।६
तं चेव जाव अगारं वएज्जा	७।१९	७।१८
तं चेव जाव उवट्ठावेत्तए	७।१९	७।१८
तालिज्जमाणा वा जाव उद्दविज्जमाणा	४।२१	१।५६
ते तसा•••ते चिर जाव अथंपि भेदे से•••	७।२९	७।२०
दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं	२।३०	२।२५
दंडणाणं जाव नो बहूणं	२।७९	२।७८
दंडेण वा जाव कवालेण	१।५६;४।२१	१।५६
दुक्खइ वा जाव परितप्पइ	१।४२,४३	१।४२
दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु	१।५१	१।४२
दुक्खामि वा जाव परितप्पामि	१।४३	१।४२
धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७

धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया	७।२४	२।७१
धम्माणुया जाव धम्मेणं	२।७१	ओ० सू० १६१
धम्माणुया जाव सव्वाओ	७।२३	२।६३
धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं	२।६३	ओ० सू० १६१
पउमवरपोंडरीयं जाव सव्वं परिग्गहं	१।१०	१।६
पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं	७।२१	७।२०
पत्तियमाणा जाव इति	१।३०,३१	१।२१,२२
परियाए जाव णो णेयाउए	७।३०	७।१६
पवालाणं जाव बीयाणं	३।५	३।५
पाईणं वा जाव सुयक्खाते	१।३२-३४,३९-४१	१।२३-२५
पाणाइवाए जाव परिग्गहे	४।३	१।५९
पाणाइवायाओ जाव विरए	१।५९	ओ० सू० १७१
पाणा जाव सत्ता	१।५६,५७;२।७८	१।४७
पाणा जाव सव्वे	४।२१	१।४७
पाणाणं जाव सत्ताणं	४।१७	१।४७
पाणाणं जाव सव्वेसिं	४।५,६,१७	१।४७
पाणावि जाव अयं······	७।२९	७।२०
पाणावि जाव अयं पिभे······	७।२९	७।२०
पाणा वि जाव अयं पिभेदे······	७।२९	७।२०
पासादिए जाव पडिरूवे	१।३	१।१
पासादीया जाव पडिरूवा	७।५	१।१
पुढविकाइया जाव तसकाइया	४।३,२१	१।५६
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	४।१७	१।५६
पुढविकाए जाव तसकाए	१।५६	ठाणं ७।७३
पुढविकाए जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
पुढविसंभवा जाव कम्म०	३।२२	३।२
पुढविसंभवा जाव णाणाविह०	३।१०	३।२
पुढविसरीरं जाव संतं	३।२२.२३,४३,७७-७९ ८१,८२,८५-८९, ९७	३।२
पुढविसरीरं जाव सारूविकड	३।६,७,८,७६	३।२
पुढवीणं जाव सूरकंताणं	३।९७	३।९७
पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति	३।७८	३।७६
पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं	३।७९	३।७६

पुरिसादिया जाव अभिभूय	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव चिट्ठंति	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव पुरिसमेव	१।३४	१।३४
वहुयरगा जाव णो णेयाउए	७।२७	७।१६
बोहिए जाव उवधारियाणं	७।३४	७।३४
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	७।२९	७।२०
भेत्ता जाव इति	२।१९	२।१९
मच्छाणं जाव सुंमुमाराणं	३।७७	पण्ण० १
महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव जाव एस ट्ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे	२।७३,७४	२।६९,७०
महज्जुइया जाव महासोक्खा	२।६९	२।६९
महया…जं णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयं	७।२०	७।१६
महया जाव उवक्खाइत्ता	२।२५,३०	२।१९
महया जाव णो णेयाउए	७।२८	७।१६
महया जाव भवंति	२।२२,२३,२४,२६	१।१९
मूलत्ताए जाव बीयत्ताए	३।९	३।५
मूलाणं जाव बीयाणं	३।९	३।५
रुइला जाव पडिरूवा	१।४	१।२
वुच्चंति जाव अयं	७।२१	७।२०
वुच्चंति जाव णो णेयाउए	७।२३,२४,२५	७।२०
वुच्चंति ते तसा ए महा ते चिर ते वहुतरगा आयाणसो इती से महता जेणं तुब्भे णो णेयाउए	७।२२	७।२०
समणुजाणइ……।	२।२७	२।१९
समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए	७।२६	७।१६
सरीरं जाव सारूविकडं	३।५	३।२
सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं	७।१८,	१।४७
सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं	७।१८,२९	१।४७
सिज्झिस्संति जाव सव्व०	२।७९	२।८०
सिणेहमाहारेंति जाव अवरे	३।९	३।२
सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा	३।१०	३।२
सिया जाव उदगमेव	१।३४	१।३४
सिया जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
सेए जाव विसण्णे	१।९	१।६

सेए जाव सेयंसि	१।८	१।६
सेसा तिण्णि आलावणा जहा उदगाणं	३।९०-९२,९८-१००	३।८६-८८
सोयण जाव परितप्पण	४।१७	४।१७
सोयाओ जाव फासाओ	१।५२	१।५२
सोयामि वा जाव परितप्पामि	१।५९	१।४२
हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा	४।२१	१।५६
हंतव्वा जाव कालमासे	७।२५	२।१४
हंता जाव आहारं	२।१९	२।१९
हंता जाव उवक्खाइत्ता	२।१९,२०	२।१९

ठाणं

अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती	७।२९	७।२८
अगारातो जाव पव्वतिते	४।४५०	३।५२३
अट्ठ एवं चेव	८।६६	८।६५
अड्ढाइं जाव बहुजणस्स	८।१०	वृत्ति
अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे	४।४५१	४।४५०
अणुत्तरे जाव केवलवर०	५।१९७	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	६।१०५	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पंणे	१०।१०३	१०।१०३
अणुसोतचारी जाव सव्वचारी	५।१९९	५।१९९
अत्थि जाव समुप्पणे	७।२	७।२
अपढमसमयणेरतिता एवं जाव अपढम०	८।१०५	५।१७५
अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा	९।१०;१०।१५३	५।१७५
अब्भोवगमिओ जाव सम्मं	४।४५१	४।४५१
अमणुण्णा सद्दा जाव फासा	१०।१४०	५।५
अमणुण्णे जाव साइमे	८।४२	८।४२
अमुच्छिए [ते] जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२
अयगोलसमाणे जाव सीसगोल०	४।५४६	४।५४६
अरहंतेहिं तं चेव	३।८५	३।८१
अरहा जाव अयं	१०।१०९	५।१९५;१०।१०९
अवट्ठिते जाव दव्वओ	५।१७४	५।१७०
अवलेहणित जाव देवेसु	४।२८२	४।२८२
अविसेस जाव पुव्वविदेहे	२।२७०	२।२६८

अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती	२।२७४	२।२७२
असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे	७।१३३	७।१३१
असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरिया०	४।५४८	४।५४८
असुयणिस्सिते वि एमेव	२।१०३	२।१०२
असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसं दंडओ जाव एगा	१।१४३-१६३	२।३५४-३६२;४।३६६
असोगवणं जाव चूयवणं	४।३४०	४।३३९
अहासुत्तं जाव अणुपालित्ता	८।१०४	७।१३
अहासुत्तं जाव आराहिया	७।१३;९।४१;१०।१५१	वृत्ति[1]
अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे	८।१०	८।१०
आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा	९।११	७।१३
आउक्खएणं जाव चइत्ता	८।१०	८।१०
आगमे जाव जीते	५।१२४	५।१२४
आगमेणं जाव जीतेणं	५।१२४	५।१२४
आघवइत्ता जाव ठावतिता	३।८७	३।८७
आढाति जाव बहुं	८।१०	८।१०
आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं	९।६२	९।६२
अभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल०	५।२१९	५।२१८
आभिणिबोहिय [त] णाणी जाव केवल०	६।११;८।१०६	५।२१८
आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुर०	४।४११	४।४११
आयारं जाव दिट्ठिवायं	१०।१०३	समवाओ १।२
आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता	५।११७	५।११२
आलोएज्जा जाव अत्थि	८।१०	८।१०
आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४२,३४३;८।१०	३।३३८
आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे	१०।७३	९।४२
आलोयणारिहे जाव मूलारिहे	९।४२	८।२०
आवत्ते जाव पुक्खलावती	८।६९	२।३४०
आसपुरा जाव वीतसोगा	८।७५	२।३४१

---

१. वृत्तौ किञ्चद् भेदने लभ्यते—७।१३—अहासुत्तं यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामगां अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया त्ति (पत्र ३६८)। ८।१०४—'अहासुत्ता अहाकप्पा अहामग्गा अहातच्चा सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया' ईति यावत्करणात् दृश्य अणुपालियं' त्ति (पत्र ४१७)। ९।१४१—यथासूत्रं यथाकल्प यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक् कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरित्ता कीर्त्तिता आराधिता चापि भवतीति। (पत्र ४३०) १०।१५१—अहासुत्तं……यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्यक्कायेन, फासिया पालिया शोधिता शोभिता वा तीरिया कीर्त्तिता अराधिता भवति (पत्र ४९२)।

आसाएइ [ति] जाव अभिलसति	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव मणं	४।४५०	४।४५०
आहारवं जाव अवातदंसी	१०।७२	८।१८
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	१०।१०५	४।५७८
इंदा जाव महाभोगा	१०।२६	५।२२३
इंदियाइं जाव णिज्झाइत्ता	९।१४	९।१३
इंदेथावरकाताधिपती जाव पातावच्चे	५।२०	५।१९
इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०५,१०६	५।१०४
इच्चेतेहिं जाव संचातेति	४।४३४	४।४३४
इरिताऽसमिती जाव उच्चार०	१०।१४	१०।१३
ईसाणे जाव अच्चुते	१०।१४९	२।३८०-३८४
उज्जलं जाव दुरहियासं	९।६२	वृत्ति
उत्तरासाढा एवं चेव	४।६५६	४।६५४
उण्णए णामं	४।४	४।४
उण्णत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मातमेवं चेव	४।६५३	४।६५३
उप्पण्णाण जाव जाणति	७।७८	५।१९५
उप्पायणविसोहि जाव सारक्खणविसोहि	१०।८५	१०।८४
उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उरगजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
उवचिण जाव णिज्जरा	८।१२६;९।७२	३।५४०
उवरिं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्त०	१०।८७	१०।८६
एगिंदितेहिंतो वा जाव पंचिंदिय०	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियत्ताते वा जाव पंचिंदियत्ताते	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४५	भ० २।१३९
एगिंदियणिव्वित्तिते जाव पंचिंदिय०	५।२३८	भ० २।१३९
एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४४	भ० २।१३९
एगिंदिया जाव पंचिंदिया	५।१८०,२०४;९।११	भ० २।१३९
एते चेव	५।१७९	५।१७८
एते तिण्णि आलावगा भाणितव्वा	१०।१५९	१०।१५९
एवं	२।१६८	२।१६७
एवं	२।२५६	२।२५५

एव	२।४६२	२।४६१
एवं	३।३२२	३।३२१
एवं	३।४७५	३।४७४
एवं	६।३९	६।३८
एवं अगिगच्चावि एवं रिट्ठावि	६।३६,३७	६।३५
एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि	२।९१	२।९०
एवं अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए	३।४२३,४२४	३।४२२
एवं अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसंकप्पे अज्जपण्णे अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे अज्जववहारे अज्जपरक्कमे अज्जवित्ती अज्जजाती अज्जभासी अज्जओभासी अज्जसंवी अज्जपरियाए अज्जपरियाले एवं सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा	४।२१३-२२७	४।१९६-२१०
एवं अणभिग्गहितमिच्छादंसणे वि	२।८५	२।८४
एवं असंकिलेसे वि एवमतिक्कमे वि वइक्कमे वि अइयारे वि अणायारे वि	३।४३९-४४३	३।४३८
एवं असंयमो वि भाणितव्वो	१०।२३	१०।२२
एवं आगंता णामेगे सुमणे भवति ३ एमीतेगे सु३ एस्सामीति एगे सुमणे भवति	३।१९५-१९७	३।१८९-१९१
एव उवसंपया एवं विजहणा	३।३५३,३५४	३।३५१

एवं एएणं अभिलावेणं--

संगहणी-गाहा

गंता य अगंता य, आगंता खलु तहा अणागंता।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता[1], णिसितित्ता[2] चेव णो चेव ॥१॥
हंता य अहंता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता।
बूतित्ता अबूत्तिता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥
'दच्चा य अदच्चा'[3] य, भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता।
लभित्ता अलभित्ता, पिबइत्ता[4] चेव णो चेव ॥३॥

---

१. चिट्ठित्त न चिट्ठित्ता (क)।
२. णिसितत्ता (क, ख)।
३. दत्ता अदत्ता (क)।
४. पिवइत्ता (क, ग); पिइता (ख)।

सुतित्ता असुतित्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झिता। जतित्ता अजयित्ता य, पराजिणित्ता चेव णो चेव ॥४॥ सद्दा रूवा 'गंधा, रसा य'[1] फासा तहेव ठाणा य। णिस्सीलस्स गरहिता, पसत्था पुण सीलवंतस्स ॥५॥ एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा।	३।१९८-२८४	संगहणी-गाहा; ३।१८९-१९४
एवं एसा गाहा फासेतव्वा, जाव—ससरीरी चेव असरीरी चेव सिद्धसइंदियकाए, जोगे वेए कसाय लेसा य। णाणुवओगाहारे, भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥	२।४१०	संगहणी-गाहा
एवं ओसप्पिणीए नवरं पण्णत्ते आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति	३।११०,१११	३।१०९
एवं कंता पिया मणुण्णा मणामा	२।२३३	२।२३२
एवं कुलसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य	४।४७४-४७६	४।४७१-४७३
एवं कुलेण य रूवेण य कुलेण य सुतेण य कुलेण त सीलेण य कुलेण य चरित्तेण य	४।३९७-४००	३।३९६
एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेण वि	१०।३	१०।३;२।२०३,२०४
एवं गंधा रसा फासा एवमिक्किक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा	२।२३०-२३८	२।२३४
एवं चउभंगो तहेव	४।२५०	४।२५०
एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा	२।३१०,३११	२।३०९
एवं चक्कवट्टी एवं बलदेवा एवं वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्संति	२।३१३-३१५	२।३१२
एवं चिणंति एस दंडओ एवं चिणिस्संति एस दंडओ एवमेतेणं तिण्णि दंडगा	४।९३,९४	४।९२
एवं चेव	३।४८४	३।४८३
एवं चेव	४।४२७	४।४२६
एवं चेव	४।६१७	४।६१७
एवं चेव	४।६१९	४।६१८
एवं चेव	५।१६१	५।१५९

---

[1] रसा गंधा (क, ग)।

एवं चेव	५।१६२	५।१५९
एवं चेव	६।२६	६।२५
एव चेव	८।४९,५०	८।४८
एवं चेव	८।१२४	८।१२३
एवं चेव	१०।६४	१०।६३
एवं चेव एवं तिरियलोए वि	४।४८४,४८५	४।४८३
एवं चेव एवं फासामातो वि	६।८१	६।८१
एवं चेव एवमेतेणं आभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो–– पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स । पुव्वाइं आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ॥१॥ रेवतित अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी । कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥ मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणी णमिणो य णेमिणो चित्ता । पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरे वीरो ॥३॥	५।८६-९६	५।८४
एवं चेव जाव छच्च	६।२७	६।२५
एवं चेव णवरं खेत्तओ लोगालोगपमाणमिते गुणतो अवगाहणागुणे सेसं तं चेव	५।१७२	५।१७०
एवं चेव णवर गुणतो ठाणगुणे	५।१७१	५।१७०
एवं चेव णवरं दव्वओणं जीवत्थिगाते अणंताइं दव्वाइं अरूवि जीवे गुणतो उवओगगुणे सेसं तं चेव	५।१७३	५।१७०
एवं चेव मणुस्सावि	४।६१५	४।६१४
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा	३।९०	१।१२८-१३३
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा	३।९२	१।१३५-१४०
एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते	१०।७१	८।१९
एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा	८।१४	६।३६
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरिय	७।६	५।४८
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं	७।८१	५।१६६
एवं जहण्णोगाहणगाणं उक्कोसोगाहणगाणं अजहणुक्कोसोगाहणगाणं जहण्णठितियाणं उक्कस्सट्ठितियाणं अजहण्णुक्कोसठितियाणं		

जहण्णगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालगाणं अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं	१।२३८-२४६	१।२३५-२३७
एवं जहा उण्णत पणतेहिं गमो तहा उज्जु वंकेहि वि भाणियव्वो जाव परक्कमे	४।१२-२१	४।२-११
एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा	३।२७	३।२६
एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेति	४।३७६-३७८	४।३७२-३७४
एवं जहा तिट्ठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं जहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु	४।४४२-४४९	३।७९-८६
एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किण्णरे	७।११३	५।५७
एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि	३।७१	३।७०
एवं जहा हयाणं तहा गयाणं वि भाणियव्वं पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया	४।३८५-३८७	४।३८१-३८३
एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति	३।१९१	३।१८९
एवं जातीते य रूवेण य चत्तारि आलावगा एवं जातीते य सुएण य एव जातीते य सीलेण य एवं जातीते य चरित्तेण य	४।३९२-३९५	४।३९०
एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता	१०।१५२	५।१४५
एवं जाव एगा	१।२१६-२२६	पण्ण० १
एवं जाव कम्मगसरीरे	५।२७-३०	५।२५,२६
एवं जाव काउलेसाणं	१।१९८	१।१९२
एवं जाव केवलणाणं	२।५३-६२;३।१६३-१७२	२।४२-५१
एवं जाव घोसमहाघोसाणं णेयव्वं	७।११७,११८	५।६२,६३
एवं जाव जहा से	५।१२४	५।१२४
एवं जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८२,२८३
एवं जाव दुविहा	२।१२४-१२६	७।७३
एवं जाव पच्चुप्पणाणं	७।७	७।६
एवं जाव फासाइं	१०।४	१०।३
एवं जाव फासामतेणं	१०।२२	८।३३
एवं जाव फासामातो	८।३३	६।८१
एवं जाव फासामातो	८।३४	६।८२

एवं जाव मणपज्जवणाणं	२।४०४	२।५३-६१
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।७७-७९	४।७५,७६
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८१-८३	४।७५,८०
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८५-८७	४।७५,८४
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८९-९१	४।७५,८८
एवं जाव वणस्सइकाइया	२।१२९-१३२,१३४-१३७	
	१३०-१४३	२।१२४-१२७
एवं जाव सव्वेण वि	१०।५	१०।३
एवं जाव सिद्धिगती	१०।९९	५।१७५
एवं जाव सुक्कलेसाणं	१।१९३-१९५	समवाओ ६।१
एवं जाव सेलोदग०	४।३५५	४।३५४
एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवेक्खो पुरिसजाता	४।३८१-३८३	४।३७२-३७४
एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव	४।५८	४।५८
एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसणसल्लाणं	२।४०७	१।९७-१०७;२।४०६
एवं णेसत्थियावि	२।२८	२।२७
एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा णो केवलं संजमेणं संजमेज्जा णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा णो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा एवं सुयणाणं ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलाणं	२।४४-५१	२।४३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९४-१९६	२।१९३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९८-२००	२।१९७
एवं तेइंदियाणं वि चउरिंदियाणं वि	१।१८१-१८४	१।१७९,१८०
एवं थावरकाए वि	२।१६६	२।१६५
एवं दंसणाराहणा वि चरित्ताराहाणा वि	३।४३६,४३७	३।४३५
एवं दीणजाती दीणभासी दीणोभासी	४।२०५-२०७	४।१९५
एवं दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलाचारे दीणववहारे	४।१९७-२०२	४।१९५
एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाले सव्वत्थ चउभंगो	४।२०९,२१०	४।१९५

एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसण्णिवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते	४।४३७-४४१	४।४३५,४३६
एवं देवाणं भाणियव्वं	२।१५४	२।१५३
एवं देवुक्कलिया देवकहकहए	३।७७,७८	३।७६
एवं दोग्गतिगामिणीओ सोगतिगामिणीओ संकिलिट्ठाओ असंकिलिट्ठाओ अमणुण्णाओ मणुण्णाओ अविसुद्धाओ विसुद्धाओ अपसत्थाओ पसत्थाओ सीतलुक्खाओ णिद्धुण्हाओ	३।५१७,५१८	३।५१५,५१६
एवं पडिसडंति विद्धंसंति	२।२२४,२२५	२।२२३
एवं परिणते जाव परक्कमे	५।३६-४४	४।३-११
एवं परिग्गहिया वि	२।१६	२।१५
एवं पासे वि	३।५३३	३।५३२
एवं पुट्ठियावि	२।२२	२।२१
एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी	२।४४५,४४६	२।४४३
एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ताणं एवं संवट्टइत्ताणं एवं णिवट्टतित्ताणं	२।३९९-४०२	२।३९८
एवं वलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य वलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो	४।४७७,४७८	४।४७२,४७३
एवं बलेण य सुतेण य एवं वलेण य सीलेण य एवं बलेण य चरित्तेण य	४।४०२-४०४	४।४०१
एवं मणुस्साणवि	३।६५,६६	३।६३,६५
एवं मोहे मूढा	२।४२२,४२३	२।४०१
एवं मोहे मूढा	३।१७८,१७९	३।१७६
एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झोववज्जंति	५।७-१०	५।६
एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं एक्केक छ-छ आलावगा भाणियव्वा	३।२९१-३१४	३।२८५-२९०;२।२०२-२०५
एवं रूवाइं पासइ गंधाइं अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइं पडिसंवेदेति	२।२०२-२०५	२।२०१
एवं रुवेण य सीलेण य एवं रुवेण य चरित्तेण य	४।४०६,४०७	४।४०५
एवं वइक्कमाणं अतिचाराणं अणायाराणं	३।४४५-४४७	३।४४४
एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ	४।११२	४।१११

एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं	७।१०७,१०८	७।१०६
एवं विंतंतेवि	२।२१७	२।२१६
एवं विंसोही	३।४३३	३।४३२
एवं वेदेंति एव णिज्जरेंति	२।३९६,३९७	२।३९५
एवं वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालंभे एवमेक्केके तिण्णि-तिण्णि आलावगा जहेव उवक्कमे	६।४१२-४१५	३।४११
एवं संकप्पे पण्णे दिट्ठी सीमाचारे ववहारे परक्कमे एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि	४।६-११	४।५
एवं सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ वाएइ पडिच्छति पुच्छइ वागरेति	४।११३-११९	४।१११
एवं सम्मद्दिट्ठि परित्ता पज्जत्तग सुहुम सण्णि भवियां य	३।३१८	३।३१८
एवं सव्वेसि चउभंगो भाणियव्वो	४।२०३	४।१९५
एवं सामंतोवणिवाइयावि	२।२५	२।२४
एवं सुंदरी वि	५।१६३	५।१५९
एवं सुत्तेण य चरित्तेण य	४।४०९	४।४०८
एवं मज्झोवंज्जणा परियावज्जणा	३।५०९,५१०	३।५०८
एवमणारंभे वि एवं सारंभे वि एवमसारंभे वि एवं समारंभे वि एवं असमारंभे वि जाव अजीवकाय असमारंभे	७।८५-८९	७।८४
एवमणुण्णवत्तते उवातिणित्तते	३।४२०,४२१	३।४१९
एवमभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्डा अमज्झा अपएसा	३।३२९-३३४	३।३२८
एवमाधारातिणिताते	५।४९	५।४८
एवमासणाइं चलेज्जा सीहणातं करेज्जा चेलुक्खेवं करेज्जा	३।८२-८४	३।८१
एवमिट्ठा जाव मणामा	२।२३४,२३५	२।२३३
एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पण्णत्ते एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति	२।३१०,३११	२।३०९
एवमेगसमयठितिया	१।२५५	१।२५४

एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा — सवणं णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य संजमे । अणण्हते तवे चेव वोदाणे अकिरिय णिव्वाणे ॥ जाव से णं भंते !	३।४१८	३।४१८
एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुजपरिसप्पा वि भाणियव्वा एवं चेव	३।४२-४७	३।३६-६८
एवमेतेणं गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते	५।१०८	५।१०८
एवमेतेणमभिलावेणं चत्तारि कसाया पं तं कोहकसाए ४ पंचकामगुणे पं तं सद्दे ५ छज्जीवनिकाता पं तं पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव तसकाइया	६।६२	६।६२
कंते जाव मणामे	८।१०	८।१०
कंदे जाव पुप्फे	१०।१५५	८।३२
कक्खडे जाव लुक्खे	१।८४-८६	८।१३
कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेसा	६।४७,४८;७।७३	समवाओ ६।१
कालोभासे जाव परमकिण्हे	६।६२	वृत्ति
किण्हा जाव सुक्किला	५।२३,२२५	५।३
किण्हे जाव सुक्किले	५।२६,२२८	५।३
किरियावादी जाव वेणइयावादी	४।५३१	४।५३०
कुंडला चेव जाव रयणसंजया	८।७४	२।३४१
कुलमतेण वा जाव इस्सरिय०	१०।१२	८।२१
केवली जाणइ पासइ जाव गंधं	८।२५	७।७८
कोहअपडिसंलीणे जाव लोभ०	४।१६१	४।१६०
कोहकसाई जाव लोभकसाई	५।२०८	४।७५
कोहणिव्वत्तिए जाव लोभ०	४।६२५	४।७५
कोहमुंडे जाव लोभमुंडे	१०।६६	५।१७७
कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्ल०	१।११५-१२५	१।६७-१०७
कोहसण्णा जाव लोभसण्णा	१०।१०५	४।७५
कोहे जाव एगे	१।६७,६८	४।७५
खिप्पमवेति जाव असंदिद्ध०	६।६३	६।६१
खेमपुरी जाव पुंडरीगिणी	८।७३	२।३४१

गंगा जाव रत्ता	७।५६	७।५२
गतिकल्लाणं जाव आगमे०	८।११५	पइण्णगसमवाय सू० ४५
गमणं जाव अणाउत्तं	७।१३६	७।१३५
गोमुत्ति जाव कालं	४।२८२	४।२८२
गरहेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।४४४	३।३३८
चउभंगो	४।३	४।३
चउभंगो	४।१२	४।१२
चउभंगो	४।४५	४।२४
चउभंगो	४।४६८	४।४६८
चउभंगो	४।६११	४।६११
चउभंगो एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणा वि जाव परक्कमे	४।४५-५४	४।२४-३३
चउभंगो एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा	४।२४-२६	४।२-४
चउभंगो एवं संकप्पे जाव परक्कमे	४।२७-३३	४।५-११
चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे	८।३८	७।७६
चिण जाव णिज्जरा	७।१५३	३।५४०
चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
चुल्ल हिमवंते जाव मंदरे	७।५५	७।५१
जधा सालीणं जाव केवतितं	५।२०९	३।१२५
जह पंचट्ठाणे जाव परिहरणोवघाते	१०।८४	५।१३१
जहा दोच्चा णवरं दीहेणं परितातेणं	४।१	४।१
जहेव णंसत्थियाओ	२।३०,३१	२।२८
जाणइ जाव हेउं	५।७७	५।७५
जाणइ (ति) जाव हेउणा	५।७६,७८	५।७५
जाणइ जाव अहेउं	५।७९,८१	५।७५
जाणति जाव अहेउणा	५।८०,८२	५।७५
जातिणामणिहत्ताउते जाव अणुभाग०	६।११७	६।११६
जातिसंपण्णे जाव रूवसंपण्णे	४।२२९	४।२२९
जायमाणेहिं जाव तं चेव	३।८१	३।७९
जाव केवलणाणंउप्पाडेज्जा	२।६४-७३	२।४२-५१
जाव चउरिंदियाणं	२।१५७,१५८	१।१५८;२।१५६
जाव दव्वा	२।१४६-१५०	२।१४०-१४४
जिणे जाव सव्वभावेणं	६।४	५।१९५
जीवणिकाएहिं जाव अभिभवइ	३।५२३	३।५२३

ठाणं वा जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३७-४२	५।३४
ठाणाइं जाव भवंति	५।४२,४३	५।३४
ठाणेहिं जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणेहिं जाव धरेज्जा	५।१०३	५।१०३
ठाणेहिं जाव णो खंभातेज्जा	५।२२	५।२२
ठाणेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०४	५।१०४
णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि	५।१०७	आयारचूला १।२८
णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती	९।६२	९।६२
णमंसामि जाव पज्जुवासामि	३।३६२	३।३६२
णाणत्तं जाव विउव्वित्ता	७।२	७।२
णासि जाव णिच्चे	५।१७४	५।१७०
णिक्कंखिए जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णिग्गंथीण वा जाव णो समुप्प०	४।२५४	४।२५४
णिग्गंथीण वा जाव समुप्प०	४।२५५	४।२५५
णिग्गंथे जाव णातिक्कमइ	५।१०२	५।१०२
णियमं जाव पगरेंति	६।१२२	६।११९
णिस्संकिते जाव णो कलुससमावण्णे	३।५२४	३।५२३
णिस्संकिते जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए	४।६१४	४।६१४
णेरइया जाव देवा	५।२०८	४।६०८
णेरतिआउते जाव देवाउते	४।२८६	४।६०८
णेरतिते जाव णो चेव	४।५८	४।५८
णेरतियणिव्वत्तिते जाव देवणिव्वत्तिते	७।१५३	७।७१
णेरतिय भवे जाव देवभवे	४।२८७	४।६०८
णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे	४।२८५	४।६०८
णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	३।३४०;८।१०	३।३३८
णो आसाएति जाव अभिलसति	४।४५१	४।४५०
णो चेव णं जाव करिस्सति	४।५१४	४।५१४
णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	६।३३९;८।९	३।३३८
णो महिड्डिए जाव णो चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
णो महिड्डिएसु जाव णो दूरंगतितेसु	८।१०	२।२७१
तं चेव	४।२३८	४।२३$_{८}$
तं चेव	४।२३९	४।२३$_{९}$

तं चेव जाव संकिण्णे	४।२४०	४।२४०
तं चेव विवरीतं जाव मणुण्णा फासा	१०।१४१	१०।१४०
तंजहा जाव मिच्छादंसणवत्तिया	५।११३	५।११२
तत्थेगओ जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे	४।५६	४।५६
तलवर जाव अण्णमण्णं	९।६२	९।६२
तहेव	४।४२८	४।४२६
तहेव	४।५९३	४।५९३
तहेव	४।५९४	५।५९४
तहेव चउभंगो	४।४	४।४
तहेव चत्तारिगमा	४।४२९	४।४२६
तहेव जाव अवहरति	५।७३,७४	५।७३
तहेव जाव पणते	४।२	४।२
तहेव जाव हलिद्द०	४।२८४	४।२८४,२८२
तित्ता जाव मधुरा	५।४,३३	१।७९-८१
तित्ते जाव मधु (हु) रे	५।२६,२२८	५।४
तिरियगती जाव सिद्धिगती	८।५५	५।१७५
दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव	२।४२५	२।४२४
दिणयरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
दुब्भिक्खंसि वा जाव महता	५।१९९	५।१९८
दुस्समदुस्समा जाव एगा	१।१३६-१३९	वृत्ति
दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा	६।२४	१।१३६-१३९
देवलोगे [ए] सु जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२
दो अद्धाओ एवं भाणियव्वं---		

संगहणी-गाहा

कत्तिया[1] रोहिणिमगसिर 'अद्दा य'[2] पुणव्वसू अ पूसो य।
तत्तोऽवि[3] अस्सलेसा महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई[4] विसाहा तह य होति अणुराहा।
जेट्ठा मूलो पुव्वाऽऽसाढा तह उत्तरा चेव ॥२॥

---

[1] कत्तिय (कग)।
[2] अद्दाओ (क, ग)।
[3] तत्तो य (क, ग)।
[4] साई य (क, ख, ग)।

अभिई सवणे धणिट्ठा, सयमिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवति अस्सिणि भरणी, णेयव्वा अणुपुव्वीए ।।३।।

एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव दो भरणीओ ।	२।३२३	संगहणीगाहा
दोसें जाव एगे	१।१०२-१०४	वृत्ति
धणिट्ठा जाव भरणी	९।१६	चंद० १०।११
धम्मत्थिकांतं जाव परमाणुपोग्गलं	५।१९५	५।१९५
धम्मत्थिकातं जाव सद्दं	६।४	६।४
धम्मत्थिकायं जाव गंधं	७।७८;८।२५	७।७८
धम्मत्थिगातं जाव वातं	१०।१०९	८।२५
पउमसरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
पचमहव्वतितं जाव अचेलगं	९।६२	९।६२
पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं	९।६२	९।६२
पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४१	३।३३८
पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए जाव पंचिंदियणिव्वत्तिए	१०।१७३	१०।१५२
पढमसमयणेरतितणिव्वत्तिते जाव अपढम०	८।१२६	८।१०५
पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे	१०।२४	८।३५
पण्णवेति जाव उवदंसेति	१०।१०३	१०।१०३
पण्णवेहिति………	९।६२	९।६२
पमिलायति जाव जोणी	७।९०	३।१२५
पमिलायति जाव तेण परं	५।२०९	३।१२५
पम्हकूडे जाव सोमणसे	१०।१४५	५।१५०,१५१
पम्हे जाव सलिलावती	८।७१	२।३४०
परिताले जाव पूतासक्कारे	६।३३	६।३२
पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं	७।९०	३।१२५
पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमण	१।११०-११२	१०।१३
पाणातिवाए जाव एगे	१।९२-९४	१०।१३
पाणातिवातवेरमणे जाव परिग्गह०	५।१७,१२९	१०।१३
पाणातिवाते जाव परिग्गहे	१०।१४	१०।१३
पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं	५।१६,१२८	१०।१३
पाणातिवायाओ जाव सव्वातो	५।१	१०।१३
पातीणाते जाव अधाते	६।३८	६।३७
पायत्ताणिते जाव उसभाणिते	५।६४	५।६५

पायत्ताणिते जाव रधाणिते	५।५८	५।५७
पावते जाव भूताभिसंकणे	७।१३४	७।१३२
पुढविकाइएहिंतो वा जाव तस०	६।९	७।७३
पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो	९।८	९।७
पुढविकाइएत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए	९।१२	९।७
पुढविकाइएत्ताए वा जाव पंचिंदियत्ताते	९।८	९।७
पुडविकाइयणिव्वत्तिमे जाव तस०	६।१२८	७।७३
पुढविकाइयणिव्वत्तिते जाव पंचिंदियणिव्वत्तिते	९।७२	९।७
पुढविकाइया जाव तसकाइया	६।६,८	७।७३
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	९।७;१०।१५३	७।७३
पुढविकातितअसंजने जाव तस०	७।८३	७।७३
पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सति०	५।१४१	७।७३
पुढविकातितआरंभे जाव अजीव०	७।८४	७।८२
पुढविकातितत्ताते वा जाव तस०	६।९	७।७३
पुढविकातितसंजमे जाव तस०	७।८२	७।७३
पुढविकातित [य] संजमे जाव वणस्सति०	५।१४०;१०।८	७।७३
पुप्फए जाव विमलवरे	१०।१५०	८।१०३
पुरिसे जाव अवहरति	५।७४	५।७३
पुव्वासाढा एवं चेव	४।६५५	४।६५४
पोतगत्ताते वा जाव उब्भिगत्ताते	७।४	७।३
पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते	८।३	८।२
पोतगा जाव उब्भिगा	८।२	७।३
पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिगेहिंतो	७।४	७।३
पोततेहिंतो वा जाव उववातितेहिंतो	८।३	८।२
फरिस जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
फुसित्ता जाव विकुव्वित्ता	७।२	७।२
बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति	६।६२	६।६१
बेइंदिया जाव पंचिंदिया	९।७	९।११
बेंदिता जाव पंचेंदिता	१०।१५३	९।११
भरहे जाव महाविदेहे	७।५४	७।५०
भवति जाव फासामतेणं	६।८२	६।८१.
भवित्ता जाव पव्वइए [तिते]	३।५३२;४।१,४५०;५।९७;९।६२	३।५२३
भवित्ता जाव पव्वयाहिति	९।६२	३।५२३

भवेत्ता जाव पव्वतिता	१०।२८.	३।५२३
भाषासमिती जाव पारिट्ठावणियासमिती	५।२०३	८।१७
भिण्णे जाव अपरिस्साई	४।५९५	४।५९५
मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणअपडिलंलीणे जाव इंदिय०	४।१९३	४।१९२
मण दुप्पणिहाणे जाव उवकरण०	४।१०६	४।१०४
मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरण०	४।१०५	४।१०४
मणुस्सजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणुस्साणं वि एवं चेव	२।१६०	२।१५९
मणस्सा भाणियव्वा	४।३२३,३२४,३२५,३२६	४।३२२,३२३, ३२४,६२५,३२६
मरणाइं जाव णो णिच्चं	२।४१३	२।४११
महावीरेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३५	५।३४
महिड्ढिए जाव चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितिएसु	८।१०	८।१०
महिड्ढियं जाव महासोक्खं	५।२१	२।२७१
महिड्ढिया जाव महासोक्खा	२।२७१;९।६१	वृत्ति
मातातित वा जाव सुण्हाति	३।३६२;४।४३४	सूय०[1] २।२।७
माहणस्स वा जाव समुप्पज्जंति	७।२	७।२
मुंडा जाव पव्वतिता	५।२३४	३।५२३
मुंडे जाव पव्वइए [तिते]	४।४५०,४५१;९।७९,१०४	३।५२३
मुच्छिते जाव अज्झोववण्णे	३।३६१	३।३६१
मुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	१।२४९	वृत्ति
मुसावाते जाव परिग्गहे	९।२६	१०।१३
रत्ताओ जाव अट्ठउसभकूडा	८।८४	८।८२
रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा	८।१०८	७।२४
रूवा जाव मणुण्णा	७।१४३	५।५
लोगविजओ जाव उवहाणसुयं	९।२	वृत्ति
वंजण जाव सुरूवं	९।६२	ओ०सू० १४३
वंदामि जाव पज्जुवासामि	४।४३४	३।३६२
वंशीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेह०	४।२८२	४।२८२

स्थानाङ्गवृत्तौ—'पिपा इ वा भज्जा इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेपः (पत्र १३४)। 'भाया इ वा भज्जा इ वा भइणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छद्वाक्षेपः (पत्र २३३)।

वण्णियाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	२।४१४	४११
वणस्सतिकातितअसंजामे जाव अजीवकाय०	१०।९	१०।८
वदमाणे जाव विवक्कतव०	५।१३४	५।१३३
वसित्ता जाव पव्वाहिती	९।६२	९।६२
विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे	१०।१४६	५।१५२,१५३
वीइक्कंते जाव बारसाहे	९।६२	ओ०सू० १४४
वेजयंति जाव अउज्झा	८।७६	२।३४१
वेयड्ढ……	९।५३	९।४३
वेरमणं जाव सव्वतो	४।१३७	४।१३६
संकिते जाव कलुसमावण्णे	३।५२३	३।५२३
संजमबहुले जाव तस्स णं	४।१	४।१
संवच्छराइं जाव बावत्तरिवासाइं	९।६२	९।६२
संवरबहुले जाव उवहाणवं	४।१	४।१
संवाहण जाव गातु०	४।४५०	४।४५०
सक्के जाव सहस्सारे	८।१०२	२।३८०-३८३
सत्त भयट्ठाणा पं तं	९।६२	७।२७
सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवति ३ एवं सुणमीति[1] ३ एवं सुणेस्सामीति ३ एवं असुणेत्ताणामेगे सु ३ ण सुणमीति ३ ण सुणिस्सामीति	३।२८५-२९०	३।१८९-१९४
सद्द जाव अवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव अवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
सद्दहति जाव णो से	३।५२३	३।५२३
सद्दा जाव फासा	५।१२-१५,१२५-१२७	५।५
सद्दा जाव वतिदुहता	७।१४४	७।१४३
सद्देहिं जाव फासेहिं	५।६,११	५।५
सभासुहम्मा जाव ववसातसभा	५।२३६	५।२३५
समणस्स जाव समुप्पज्जति	७।२	७।२
समणेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३६	५।३४
सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३

---

[1] सुणेमाणे (ख); सुणेमीति (ग)।

सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं	१।२४८	ज०[1] २
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	४।४५१	४।४५१
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	५।७३	५।७२
सहिस्संति जाव अहियासिस्संति	५।७४	५।७३
सहेज्जा जाव अहियासेज्जा	५।७३,७४	५।७३
सिंधू जाव रत्तावती	७।५७	७।५३
सिज्झति जाव मंतं	४।१	४।१
सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण०	४।१	४।१
सिज्झिहिति जाव अंतं	६।६१	४।१
सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिद्धसुग्गता जाव सुकुल०	४।१४१	४।१३९
सिद्धाइं जाव सव्वदुक्ख०	८।३६	१।२४९
सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख०	८।५३	१।२४९
सिद्धे जाव प्पहीणे	१०।७५,७६,७८,७९	१।२४९
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	६।१०६	१।२४९
सुंवकडसमाणे जाव कंबलकड०	४।५४९	४।५४९
सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुभाते जाव आणुगामियत्ताए	५।१३	५।१२
सुमिणे जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुवच्छे जाव मंगलावती	८।७०	२।३२६
सुवप्पे जाव गंधिलावती	८।७२	२।३२६
सुसमसुसमा जाव एगा	१।१२९-१३२	वृत्ति
सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा	६।२३	१।१२९-१३२
से जहाणामते·········	६।६२	६।६२
सेलथंभसमाणे जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८३
सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुतस्सवि णेतव्वं	७।१२१,१२२	५।६६,६७
सेसं तं चेव जाव करिस्संति	४।५१४	४।५१४
सेसं तहेव जाव भवणगिर्हेसु	५।२२	५।२२
सेसं तहेव जाव भासं	१०।१५९	१०।१५९

---

१. वृत्तो अस्य पाठस्य पूर्ति निम्नप्रकारा विद्यते—यावद्ग्रहणादेव सूत्रं द्रष्टव्यम्—सव्वब्भंतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापुयसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोन्नि सयाइं सत्तावीसाइं तिन्नि कोसा अट्ठावीसं धणुसयं तेरस अंगुलाइं (पत्र ३३)।

सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	६।१४	पण्ण० १५।१
सोइंदियत्थोग्गहे जाव णोइंदिय०	६।९८	समवायाओ २८।३
सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३५	पण्ण० १५।१
सोइंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	८।११	पण्ण० १५।१
सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्ग०	१०।११	१०।१०
सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले	१०।८८	पण्ण० १५।१
सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदित०	१०।९९	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४३	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे	८।१२	८।११
सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३८;६।१६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसाते जाव णोइंदियअसाते	६।१८	६।१४
सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	५।१७६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदिय०	५।१७७	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४२	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३७;६।१५;१०।१०	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसाते जाव णोइंदियसाते	६।१७	६।१४
सोहम्मे जाव सहस्सारे	८।१०१;१०।१४८	२।३८०-३८४
हरिवेरुलित जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
हव्वमागच्छति·········	३।८०	३।७९
हिताते जाव आणुगामित[य]त्ताते	३।५२४;६।३३	३।५२३
हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोल०	४।५४७	४।५४७
हेमवए···········	३।९३	६।८३
		········

समवाओ

अक्खराइं जाव एवं चरण	[1]प० ९५	प० ८९
अक्खरा जाव एवं चरण	प० ९६	प० ८९
अक्खरा जाव चरण-करण	प० ९१,९४	प० ८९
अक्खराणि जाव एवं चरण	प० ९७,९९	प० ८९
अक्खराणि जाव सेत्तं	प० ९२	प० ८९

---

[1] पइण्णगसमवाय-सूत्त ।

अक्खरा तं चेव जाव परित्ता	प० ९०	प० ८९
अगाराओ जाव पव्वइए	९७।४	१९।५
अजित जाव वद्धमाणे	२४।१;प० २२२	अ० सू० २२७
अणंतागमा जाव चरण-करण	प० ९८	प० ८९
अणंतागमा जाव सासया	प० ९३	प० ८९
अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ	प० ९४,९५,९८,९९,१३१	प० ८९
अणुओगदारा संखेज्जाओ	प० ९७	प० ९१
अभिणंदण जाव पास	२३।३,४	अ० सू० २२७
अयले जाव रामे	प० २४१	वृत्ति
अवसेसाइं परिकम्माइं पाढाइयाइं एक्कारसविहाइं पण्णत्ताइं	प० १०४-१०८	प० १०१,१०२
अस्सगीवे जाव जरासंधे	प० २४६	वृत्ति
अहासुत्तं जाव आराहिया	४९।१;६४।१;८१।१;१००।१	वृत्ति[1]
आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति	प० ९०	प० ८९
आघविज्जंति जाव एवं	प० ९३	प० ८९
आघविज्जंति जाव नाया०	प० ९४	वृत्ति; प० ८९
आघविज्जंति०	प० ९०,९१,९३-९९,१३१	प० ८९
आहारय जह देसूणारयणि उ,पडिपुण्णारयणी	प० १६६	पण्ण० २१
आहारयसरीरे समचउरंससंठाण सठिते	प० १६५	पण्ण० २१
उववाएणं	प० १८३	पण्ण० ६
एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए	८८।२	नंदी १०२
एवं गतिनाम…ओगाहणानाम	प० १७६	प० १७६
एवं चउदिसिंपि नेयव्वं	५८।४	५८।३;५२।३
एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं[2]	८८।४,५,६	८८।३
एवं चेव दोमासिया आरोवणा सपंचराय दोमासिया आरोवणा एवं तेमासिया आरोवणा एवं चउमासिया आरोवणा	२८।१	२८।१
एवं चेव मंदरस्स	८७।४	८७।१

---

[1] वृत्तौ किञ्चिद् भेदेन लभ्यते, यथा—६४।१ यावत्करणात् 'अहाकप्पं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्मं आणाए आराहियावि भवति। ८१।१ 'जाव' त्तिकरणाद्यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आज्ञयाऽऽराधितेति।

[2] नायव्वं (क); नातव्वं (ख, ग)।

एवं जइ मणुस्स किं गब्भवक्कंतिय संमुच्छिम गो गब्भवक्कंतिय णो संमुच्छिम जइ गब्भवक्कंतिय किं कम्मभूमग अकम्मभूमग गो कम्मभूमग णो अकम्मभूमग जइ कम्मभूमग किं संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय गो संखेज्जवासाउय णो असंखेज्जवासाउय जइ संखेज्जवासाउय किं पज्जत्तय अपज्जत्तय गोयमा पज्जत्तय णो अपज्जत्तय जइ पज्जत्तय किं सम्म मिच्छ सम्मामिच्छ गो सम्मद्दिट्ठि नो मिच्छदिट्ठि नो सम्मामिच्छदिट्ठि जइ सम्मदिट्ठि किं संजतं असंजत संजतासंजत गो संजय णो असंजय णो संजतासंजत जति संजय किं पमत्तसंजय अपमत्तसंजय गो पमत्तसंजय णो अपमत्तसं जइ पमत्तसंजय किं इड्ढिपत्त अणिड्ढिपत्त गो इड्ढिपत्त नो अनिड्ढिपत्त वयणावि भतियव्वा	प० १६४	प० १६४
एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे	१००।५	१००।४
एवं दक्खिणिल्लाओ उत्तरे	६६।३	६६।२
एवं दिवसोऽवि नायव्वो	१२।६	१२।८
एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि	६६।४-८	६६।३
एवं पंचवि	२७।१	५।२
एवं पंचवि इंदिया	२५।१	पण्ण० १५।१
एवं पंचवि रसा	२२।६	ठा० १।७८-८२
एवं पडुप्पण्णेवि अणागएवि	प० १३२	प० १३२
एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लिाओ चरिमंताओ संखस्स पुरत्थिमिल्ले च	८७।३	८७।१
एवं माणे माया लोभे	१६।२;२१।२	अस्य पूर्तिः अत्रैव
एवं संतिस्सवि	६०।३	६०।२
एवं सगरे वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए	७१।४	७१।३
कंतं वण्णं लेसं जाव णंदुत्तरवडेंसगं	१५।१३	३।२१
कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८६।२	८६।१
कालगयाइं जाव सव्वदुक्ख०	प० ६३	८६।१
कीयं आहट्टु जाव अभिक्खणं	२१।१	दसा० २

कोहविवेगे जाव लोभ	२७।१	४।१
चउरंसा जाव असुभा	प० १४१	वृत्ति
जातिनाम जाव ओगाहणानाम	प० १७७	प० १७६
जुवे जाव माउया	प० २४५	वृत्ति
णितिया जाव णिच्चा	प० १३३	प० १३३
ताइं चेव माउया पयाणि जाव नंदावत्तं	प० १०३	प० १०२
तिविट्ठू य जाव कण्हे	प० २४१	वृत्ति
धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए	प० १३७	पण्ण० १
नेरइया०	प० १७३	पण्ण० ३५
पज्जत्तगाणं०	प० १५५	प० १५४
पडिसत्तू जाव सचक्केहिं	प० २४६	वृत्ति
पढभाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु	१५।३	केवलं संख्यापूरिता
पम्हलेसं जाव पम्हुत्तरवडेंसगं	९।१७	३।२१
परूवेई जाव से णं	प० ९६	प० ९५
पुढवीकायसंजमे एवं जाव कायसंजमे	१७।२	१७।१
वलिस्स णं……	१७।८	ठा० ४।१५१
बुद्धे………	९२।२	४२।१
बुद्धे जाव प्पहीणे	५५।१,४;७२।३;८४।२;९५।४;प० ४०	४२।१
बुद्धे जाव सव्वदुक्ख०	३०।२;५१।४;प० ६१	४२।१
वे ते चउ पंच	प० १६७	प० १६७
भद्दवए णं मासे कित्तिए णं पोसे णं फग्गुणे णं वइसाहे णं मासे	२९।३-७	२९।२
भवित्ता जाव पव्वइए	७१।३;७५।२	१९।५
भवित्ता णं जाव पव्वइए	८३।४	१९।५
भविस्सइ य जाव अवट्ठिए	प० १३३	प० १३३
भूयाणंदे जाव घोसे	३२।२	ठा० २।३५५-३६१
महुरा जाव हत्थिणपुरं	प० २४४	वृत्ति
मुंडे जाव पव्वइए	५९।२	१९।५
मुंडे जाव पव्वइया	७७।२	१९।५
मुसावायाओ जाव सव्वाओ	५।२	५।६
रुइल्लप्पभं जाव रुइल्लुत्तरवडेंसगं	९।१७	३।२१
लोगप्पभं जाव लोगुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वइरावत्तं जाव वइरुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वायणा जाव अंगट्ठयाए	प० ९३	प० ९१

वायणा जाव संखेज्जा	प० ९१	प० ८९
वायणा जाव से णं	प० ९२	प० ९१
विजया एवं चेव जाव वासुदेवा	६८।४-६	६८।१-३
वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८९।१	जं० २
सणंकुमारे जाव पाणए	३२।२	ठा० २।३८१-३८४
सत्तमाए णं पुढवीए पुच्छा	प० १४३	प० १४१
सवणो जाव भरणी	९।६	चंद० १०।११
सिज्झिस्संति जाव अंतं	५।२२;७।२३;८।१८;१०।२५; १३।१७;१५।१६;१६।१६	१।४६
सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण०	३।२४;४।१८;६।१७;९।२०;११।१६; १२।२०;१४।१८;१७।२१;१८।१८; १९।१५;२०।१७;२१।१४;२२।१७; २३।१३;२४।१५;२५।१८;२६।११; २७।१५;२८।१५;२९।१८;३०।१६; ३१।१४;३२।१४;३३।१४	१।४६
सिद्धाइं जाव प्पहीणाइं	४४।२	४२।१
सिद्धे जाव प्पहीणे	७२।४;७३।२;७४।१;७८।२;८३।३; ८४।४;९५।५;१००।४	४२।१
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	४२।१	वृत्ति[1]
सुज्जकंतं जाव सुज्जुत्तरवडेंसगं	९।१७	३।२१
सेवणया [सेवित्ता] जाव सायासोक्ख०	९।२	९।१
सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स	३३।१	दसा० ३
सोइंदियधारणा जाव णोइंदियधारणा	२८।३	२८।३
सोइंदियनिग्गहे जाव फासिंदिय०	२७।१	२८।३
सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा	२८।३	२८।३
सोतिंदियावाते जाव णोइंदियावाते	२८।३	२८।३
हंता गोयमा !·········	प० १७५	प० १७५

---

[1] वृत्तौ किञ्चद्भेदेन लभ्यते यथा—

४२।१ जाव त्तिकरणात् 'बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे'त्ति दृश्यम् ।
४४।२ जाव त्तिकरणेण 'बुद्धाइं मुत्ताइं अंतयडाइं सव्वदुखप्पहीणाइं'ति दृश्यम् ।
८९।१ जाव त्तिकरणात् 'अंतगड़े सिद्धे वुद्धे मुत्ते' ति दृश्यम् ।

परिशिष्ट-२

आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर

आलोच्य-पाठ

परियावेणं [आयारो २।२, पृ० १७]

यद्यपि चूर्णौ वृत्तौ च 'परियावेणं' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति, आदर्शेष्वपि एष एव पाठो लभ्यते। तथापि 'माया मे, पिया मे' इत्यादि पदानां अर्थप्रसंगतया 'परियारेणं' इति पाठस्य परिकल्पना सहजमेव जायते । प्राचीनलिप्यां रकारवकारयोः सादृश्यात् एतत् परिवर्तनं नास्वाभाविकमस्ति ।

मानवा [आयारो ५।६३, पृ० ४३]

वृत्तिकृता 'मानवा' मनुजाः इति विवृतम् । चूर्णिकृता च नैतत् पदं विवृतम् । किन्तु 'एवं थंभे मायाए वि लोभे वि जोएयव्वं' इति निर्देशः कृतः । तेन 'माणवा' इति पदस्य स्थाने 'माणओ' इति पाठस्य परिकल्पना जायते ।

अचिरं [आयारो ८।८।२०, पृ० ७१]

चूर्णौ वृत्तौ च 'अचिरं, पदं स्थानार्थे व्याख्यातमस्ति । यद्येतत् स्थानावाची स्यात् तदा 'अइर' मिति पाठः संगच्छते । 'अजिरं प्रांगणम्,' इति तस्यार्थो भवेत् । 'अइर' इति अतिरोहितार्थवाची देशीशब्दोपि विद्यते । केनापि कारणेन इकारस्य चकारो जात इति प्रतीयते । अथवा चूर्णिकारेण वैकल्पिकरूपेण कालार्थे अचिरशब्दस्य प्रयोगो निर्दिष्टः, सोपि युक्तः स्यात् ।

एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए [आयारचूला १।२६, पृ० ६०]

आयारचूलायाः पाठ-संशोधने षड्आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिवृत्तिश्च । तत्र पञ्चादर्शेषु उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति । वृत्तौ (पत्र ३००) 'एस विलुंगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—"गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन संस्कुर्याद्—यथैष साधुः शय्यायाः संस्कारे विधातव्ये 'विलुंगयामो' त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चन इत्यतः स गृहस्थः कारणे संयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति ।" अस्माभिः 'घ' प्रत्यनुसारी पाठः स्वीकृतः । चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते । 'सेज्जाए अक्खाए'

अत्र दोषशब्दः अध्याहर्त्तव्यः । वस्तुतः उक्तपाठः व्याख्यागतः प्रतीयते । 'संथरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठः स्यात्तदानीमपि स खण्डितो न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टिर्जायते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुंगयामो' पाठ आसीत् स केषुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते, नतु सर्वेषु ।

कप्पस्स [पइण्णगसमवाय सू० २१५, पृ० ६४१]

अत्र 'कप्पस्स' इति पाठस्याशयो वृत्तिकृता कल्पभाष्यत्वेन सूचितः, वाचनान्तरे च पर्युषणाकल्पत्वेन सूचितः, यथा—'कप्पस्स समोसरणं नेयव्वं' ति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण समवसरणवक्तव्यताऽध्येया, सा चावश्यकोक्ताया न व्यतिरिच्यते, वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्त-क्रमेणेत्यभिहितम् (वृत्ति, पत्र १४४) ।

पर्युषणाकल्पे समवसरणवक्तव्यता इत्थमस्ति—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ।।२०१।।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ? समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे इंदभूई अणगारे गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वातेइ, मज्झिमे अणगारे अग्गिभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जवियत्ते भारदाये गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे अकंपिए गोयमे गोत्तेणं थेरे अयलभाया हारियायणे गोत्तेणं ते दुन्नि वि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाइंति, थेरे मेयज्जे थेरे य प्पभासे एए दोन्नि वि थेरा कोडिन्ना गोत्तेणं तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाएंति, से एतेणं अट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ।।२०२।।

सव्वे एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसंगिणो चोद्दसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधरा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तिएणं अपाणएणं कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा । थेरे इंदभूई थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धि गए महावीरे पच्छा दोन्नि वि परिनिव्वुया ।।२०३।।

जे इमे अज्जत्ताते समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वोच्छिन्ना ।।२०४।। कल्पसूत्र, पृ० ६०,६१

प्रस्तुताङ्गस्य उपसंहारसूत्रे ऋषि-यति-मुनि-वंशानां वर्णनस्योल्लेखोस्ति । वृत्तिकृतास्य संबन्धः पर्युषणाकल्पगतसमवसरणप्रकरणेन सहयोजितः, यथा—गणधरव्यतिरिक्ताः शेषा जिनशिष्या ऋषयस्तद्वंशप्रतिपादकत्वादृषिवंश इति च तत्प्रतिपादनं चात्र पर्युषणाकल्पस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रक्रमेण भणितत्त्वादत एव यतिवंशो मुनिवंशश्चैतदुच्यते, यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् । वृत्ति, पत्र १४७, १४८

पूर्वोक्तसमर्पणेन पर्युषणाकल्पस्य २०१ सूत्रात् २०४ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणं जायते, किन्तु वृत्तिकृता ऋषिवंशस्य यद् व्याख्यानं कृतं तेन २०१ सूत्रात् २२३ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणामावश्यकं भवति । अत्र महती समस्या वर्तते । यदि पूर्ववर्ति समर्पणं मान्यं क्रियेत तदा ऋषिवंशस्य वर्णनं नान्यत्र क्वापि समुपलभ्यते । यदि च ऋषिवंशस्य वर्णनं समवसरणप्रक्रमेण सह संबध्यते तदा पूर्वोक्तसमर्पणस्याप्रयोजनीयता सिध्यति । वृत्तिकारेण नास्या असंगतेः कापि चर्चा कृता । किमत्र रहस्यमिति निश्चयपूर्वकं वक्तुं न शक्यते, तथापि संभाव्यते समवसरणस्य संक्षेपीकरणसमये किंचित् परिवर्तनं जातम् ।

ऋषिवंशवर्णनम्—

समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते णं । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणसगोत्तस्स अज्जजंबुनामे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते । थेरस्स णं अज्जजंबुनामस्स कासवगोत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अंतेवासी कच्चायणसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगोत्तस्स अज्जसेज्जंभवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जसेज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगोत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगोत्ते ॥२०५॥

संखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एवं थेरावली भणिया, तं०—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगियायणसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जसंभूयविजए माढरसगोत्ते, थेरे अज्जभद्दबाहु पाइणसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—सुट्ठियसुपडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगोत्ता । थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं अंतेवासी थेरे अज्जइंददिन्ने कोसियगोत्ते । थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते । थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातिसरस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा–थेरे अज्जनाइले थेरे अज्जपोगिले थेरे अज्जजयंते थेरे अज्जतावसे । थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया, थेराओ अज्जपोगिलाओ अज्जपोगिला साहा निग्गया, थेराओ अज्जजयंताओ अज्जजयंती साहा निग्गया, थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया इति ॥२०६॥

वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभद्दाओ परओ थेरावली एवं पलोइज्जइ, तं जहा—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते, थेरे अज्जसंभूयविजये माढरसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जभद्दबाहुस्स पाईणगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे गोदासे थेरे अग्गिदत्ते थेरे जण्णदत्ते थेरे सोमदत्ते कासवगोत्ते णं । थेरेहिंतो णं गोदासेहिंतो कासवगोत्तेहिंतो

एत्थ णं गोदासगणे नामं गणे निग्गए, तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा— तामलित्तिया कोडीवरिसिया पोंडवद्धणिया दासी खब्बडिया ।।२०७।।

थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा—

नंदणभद्दे उवनंदभद्द तह तीसभद्द जसभद्दे ।
थेरे य सुमिणभद्दे मणिभद्दे य पुन्नभद्दे य ।।१।।
थेरे य थूलभद्दे उज्जुमती जबुनामधेज्जे य ।
थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पंडुभद्दे य ।।२।।

थेरस्स णं अज्जसंभूइविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमाओ सत्त अंतेवासिणीओ अहावच्चाओ अभिन्नाताओ होत्था, तं जहा—

जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह होइ भूयदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा भगिणीओ थूलभद्दस्स ।।१।। ।।२०८।।

थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयगोत्तस्स इमे दो थेरा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा— थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते, थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्छसगोत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे उत्तरे थेरे वलिस्सहे थेरे धणड्ढे थेरे सिरिड्ढे थेरे कोडिन्ने थेरे नागे थेरे नागमित्ते थेरे छलुए रोहगुत्ते कोसिए गोत्तेणं। थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो रोहगुत्तेहिंतो कोसियगोत्तेहिंतो तत्थ णं तेरासिया निग्गया। थेरेहिंतो णं उत्तरवलिस्सहेहिंतो तत्थ णं उत्तरबलिस्सहगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—कोसंबिया सोतित्तिया कोडवाणी चंदनागरी ।।२०९।।

थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—

थेरे त्थ अज्जरोहण भद्दजसे मेहगणी य कामिड्ढी ।
सुट्ठियसुप्पडिबुद्धे रक्खिय तह रोहगुत्ते य ।।१।।
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते गणी य बंभे गणी य तह सोमे ।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ।।२।। ।।२१०।।

थेरेहिंतो णं अज्जरोहणेहिंतो कासवगुत्तेहिंतो तत्थ णं उद्देहगणे नामं गणे निग्गए । तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ छच्च कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति—उदुंबरिज्जिया मासपूरिया मतिपत्तिया सुवन्नपत्तिया, से तं सहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमं च नागभूयं बीयं पुण सोमभूइयं होइ ।
अह उल्लगच्छ तइयं चउत्थयं हत्थिलिज्जं तु ।।१।।
पंचमगं नंदिज्जं छट्ठं पुण पारिहासियं होइ ।
उद्देहगणस्सेते छच्च कुला होंति नायव्वा ।।२।। ।।२११।।

थेरेहिंतो णं सिरिगुत्तेहिंतो णं हारियसगोत्तेहिंतो एत्थ णं चारणगणे नामं गणे निग्गए तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ सत्त य कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहातो ? एवमाहिज्जंति, तं जहा - हारियमालागारी संकासिया गवेधूया वज्जनागरी, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमेत्थ वत्थलिज्जं बीयं पुण वीचिधम्मकं होइ ।
तइयं पुण हालिज्जं चउत्थगं पूसमित्तेज्जं ॥१॥
पंचमगं मालिज्जं छट्ठं पुण अज्जवेडयं होइ ।
सत्तमगं कण्हसह सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥ ॥२१२॥

थेरेहिंतो भद्दजसेहिंतो भारद्दायसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उडुवाडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिन्नि कुलाइं एवमाहिज्जति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति, तं० —चंपिज्जिया भद्दिज्जिया काकंदिया मेहलिज्जिया, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति—

भद्दजसियं तह भद्दगुत्तियं तइयं च होइ जसभद्दं ।
एयाइं उडुवाडियगणस्स तिन्नेव य कुलाइं ॥१॥ ॥२१३॥

थेरेहिंतो णं कामिड्ढिहिंतो कुंडिलसगोत्तेहिंतो एत्थ णं वेसवाडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि सहाओ चत्तारि कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एव०— सावत्थिया रज्जपालिया अन्तरिज्जिया खेमलिज्जिया, से तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एव०—

गणियं मेहिय कामड्ढियं च तह होइ इंदपुरगं च ।
एयाइं वेसवाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइं ॥१॥ ॥२१४॥

थेरोहतो णं इसिगोत्तेहिंतो णं काकंदएहिंतो वासिट्ठसगोत्तेहिंतो एत्थ णं माणवगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिण्णि य कुलाइं एव० । से किं तं साहाओ ? साहाओ एवमाहिज्जंति—कासविज्जिया गोयमिज्जिया वासिट्ठिया सोरट्ठिया, से त्तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

इसिगोत्तियऽत्थ पढमं, बिइयं इसिदत्तियं मुणेयव्वं ।
तइयं च अभिजसंतं तिन्नि कुला माणवगणस्स ॥१॥ ॥२१५॥

थेरेहिंतो णं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकंदिएहिंतो वग्घावच्चसगोत्तेहिंतो एत्थ णं कोडियगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइं एव० । से किं तं साहाओ ? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

उच्चानागरि विज्जाहरी य वइरी य मज्झिमिल्ला य ।
कोडियगणस्स एया, हवंति चत्तारि साहाओ ॥१॥

से किं तं कुलाइं ? २ एव० तं जहा—

पढमेत्थ बंभलिज्जं वितियं नामेण वच्छलिज्जं तु ।
ततियं पुण वाणिज्जं चउत्थयं पन्नवाहणयं ॥१॥ ॥२१६॥

थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं इमे पंच थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं जहा—थेरे अज्जइंददिन्ने थेरे पियगंथे थेरे विज्जाहरगोवाले कासवगोत्ते णं थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते। थेरेहिंतो णं पियगंथेहिंतो एत्थ णं मज्झिमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया ॥२१७॥

थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कासवगोत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अंतेवासी गोयमसगोत्ते थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया वि होत्था, तं०—थेरे अज्जसंतिसेणिए माढरसगोत्ते थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरेहिंतो णं अज्जसंतिसेणिएहिंतो णं माढरसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उच्चानागरी साहा निग्गया ॥२१८॥

थेरस्स णं अज्ससंतिसेणियस्स माढरसगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकुवेरे थेरे अज्जकुवेरे थेरे अज्जइसिपालिते। थेरेहिंतो णं अज्जसेणितेहिंतो एत्थ णं अज्जसेणिया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जतावसेहिंतो एत्थ णं अज्जतावासी साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जकुबेरेहिंतो एत्थ णं अज्जकुवेरा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जइसिपालेहिंतो एत्थ णं अज्जइसिपालिया साहा निग्गया ॥२१९॥

थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातीसरस्स कोसियगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे धणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरहदिन्ने। थेरेहिंतो णं अज्जसमिएहिंतो एत्थ णं बंभदेवीया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जवइरेहिंतो गोयमसगोत्तेहिंतो एत्थ णं अज्जवइरा साहा निग्गया ॥२२०॥

थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोत्तमसगोत्तमस्स इमे तिन्नि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जवइरसेणिए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे। थेरेहिंतो णं अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ णं अज्जनाइली साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जपउमेहिंतो एत्थ णं अज्जपउमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जरहेहिंतो एत्थ णं अज्जजयंती साहा निग्गया ॥२२१॥

थेरस्स णं अज्जरहस्स वच्छसगोत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंतेवासी कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जपूसगिरिस्स कोसियगोत्तस्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते ॥२२२॥

वंदामि फग्गुमित्तं च गोयपं धणगिरिं च वासिट्ठं।
कोच्छिं सिवभूइं पि य कोसिय दोज्जितकंटे य ॥१॥
तं वंदिऊण सिरसा चित्तं वंदामि कासवं गोत्त।
णक्खं कासवगोत्तं रक्खं पि य कासवं वदे ॥२॥
वंदामि अज्जनागं च गोयम जेहिलं च वासिट्ठं।
विण्हुं माढरगोत्तं कालगमवि गोयमं वंदे ॥३॥
गोयमगोत्तभारं सप्पलयं तह य भद्दयं वंदे।
थेरं च संघवालियकासवगोत्तं पणिवयामि ॥४॥
वंदामि अज्जहत्थिं च कासवं खंतिसागरं धीरं।
गिम्हाण पढममासे कालगयं चेत्तसुद्धस्स ॥५॥

वंदामि अज्जधम्मं च सुव्वयं सीसलद्धिसंपन्नं।
जस्स निक्खमणे देवो छत्तं वरमुत्तमं वहइ ॥६॥
हत्थं कासवगोत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि।
सीहं कासवगोत्तं धम्मं पि य कासवं वंदे ॥७॥
सुत्तत्थरयणभरिए खमदममद्दवगुणेहिं संपन्ने।
देविड्ढिखमासमणे कासवगोत्ते पणिवयामि ॥८॥ ॥२२३॥

कल्पभाष्ये समवसरणवक्तव्यता—

गाथा ११७७-१२१७ वृहत्कल्पसूत्र, भाग २, पृ० ३६६-३७७

आवश्यकनिर्युक्तौ समवसरणवक्तव्यता—गा० ५४५-६५८

आवश्यकनिर्युक्तिमलयगिरीया वृत्ति, पत्र ३०१-३३९

वाचनान्तर

[आयारचूला १५।३५ के पश्चात् प० २४०]

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (९।६२) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे "कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलंते" इति पाठे आयारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति। वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतद् संवादि समुल्लिखितम्—"यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भावः, कियद्दूरं यावदित्याह—'जाव सुहुये' त्यादि" (वृत्ति, पत्र ४४०)।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) "वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्ययनाद्युक्ते इमे संग्रहगाथे—

कंसे सखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले ॥
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥"

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहगाथयोः सूचनं कृतमस्ति।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सन्दर्भे भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पितः पाठो नोपलब्धः। भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽसि, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि संकेतः आदर्शेषु चापि चूर्णौ उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णयः कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यातस्यानुपलब्धिरेव। तात् पाठात् आदर्शगतः पाठो भिन्नोस्ति। अयं वाचनाभेदः चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्नवेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्यं सम्बन्धः चूर्ण्यनुसारीपाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्तेः सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव।

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि 'जहा भावणाते' इति समर्पणमस्ति । तस्यापि सम्बन्धश्चूर्ण्यनुसारिपाठेन विद्यते ।

आलोच्यमानपाठः किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते । तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते । आचाराङ्गचूर्णौ पूर्णः पाठो विवृतो नास्ति । स स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तेः, आचाराङ्गचूर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः । स च इत्थं सम्भाव्यते––

संयोजित पाठः

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे गमणमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गंभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकंपे सारयसलिलं व सुद्धहियए खग्गविसाणं व एगजाए भारुंडपक्खी व अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभे इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे वसुंधरा इव सव्वभासविसहे सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते ।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ । से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा––अंडए वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुतरेणं दंसणेणं अणुतरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जेव जाणइ पासइ, तं जहा––आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाए धम्मं अक्खाइ [देसमाणे विहरइ], तंजहा––पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

स्नानाङ्ग (९।६२) :

तस्स णं भगवंतस्स[1] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंधाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे [वृ० पा० किन्नगंथे] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते ।

कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबधे भविस्सइ, सेय पडिबधे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा— अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोय-विय-[चिय ?]-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुतरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वण्णसव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोहे सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासभिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मणसमिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४,

---

[1] अस्य स्थाने 'से णं भगवं' युज्यते ।

वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिंदिए ८, खग्गिविसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुंजरो इव सोंडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकंपे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुंधरा इव सव्वभासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१। एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजरे वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा। कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा। भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा। तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए वाचीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेरेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो

माणसियं भुत्तं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए इरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्तो जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंवणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवंति, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे माया मे भगिणी में जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सच्चित्ते वा अच्चित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा अन्नयरे वा दीहकाल-पडिबंधे एवं, तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहा ससोगअरइभव-परित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेटंठुमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणाए अब्भुट्ठिए विहरइ। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरा-साढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं ताणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचि-अफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाधाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइअतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एयमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्ख-मग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हिय-सुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम सुहसमाणणे भविस्सइ। तते णं से भगवं समणाणं निग्गं-थाणं य णीग्गंथीण य पंच महव्वयाइ सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरति, तंजहा—पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वाइं सभावणागाइं भाणिअव्वाइं ति।

सूत्रकृतांगे (२।६४-६६) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५।११) रायपसेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१३-८१६) औपपातिकसूत्रे (सूत्र २७-२९, १५२,१५३,१६४,१६५) चालोच्यमानपाठेनांशिकी क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते। किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः सन्ति, ततः पूर्णा तुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१	मंदस	मंदस्स
१५	२७	सत्थ	सत्थं
१६	४	वियंति	वयंति
२६	१८	जाणे	जाण
४२	२२	पाव	पावं
४५	१७	समण०	समणुं०
४८	१५	णियाणाओ	णियाणओ
५२	७	णिज्झोसइत्ता	णिज्झोसइता
५४	३	णियट्टंति	णियट्टंति
५५	६	तितिक्खा०	तितिक्खा
६५	१	×	उवगरण-पदं
७१	१	×	पाओवगमण-पदं
८४	१८	भुंज्जियं	भुज्जियं
८६	१५	अणासेविय	अणासेवियं
९१	१०	पट्टणसि	पट्टणंसि
१०३	१६	जाणज्आ	जाणेज्जा
११५	७	उवाणिमतेज्जा	उवणिमंतेज्जा
१६४	२६	ज	जं
१७४	२१	अणसणिज्जं	अणेसणिज्जं
१७८	११	वियडण	वियडेण
१८१	१८	पहाए	पेहाए
१८७	१२	पण	पुण
२९९	५	सोसं	सीसं
३४८	३	परक्कमणण	परक्कमण्णू
३४८	१५	गंधमंत	गंधमंतं
३६३	१२	मारत्था	गारत्था
५३७	१२	मच्छा-पदं	मुच्छा-पदं
६२२	१७	अलमंथ	अलमंथू
६५२	११	मुडे	मुंडे
८९५	२३	निगर०	नगर०

पाठान्तर

२९६	पा० २६	विधीत	विधंति
३१०	„ २	समक्खाय	समक्खातं
३२०	„ २१	आय	आयं
३२१	„ ६	तेउ	तेउं
४००	„ ७	अतोमतेण	अतोमतेणं
४३५	„ १	घृत	घृतं